परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी-

अपने ब्राह्मण एवं संत को जिन्दा कीजिए

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ-

ॐ भुर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्

देवियो, भाइयो !

आप में से अधिकांश व्यक्ति यह सोच रहे होंगे कि मैं यहाँ था परन्तु व्याख्यान क्यों नहीं दिया । विशेष कारण वश व्याख्यान न दे सका । बेटे ! मैं अपने जीवन भर प्रयोग करता रहा हूँ । कौन-कौन से प्रयोग किया हूँ ।

पहले ब्राह्मण बनने का प्रयोग किया कि ब्राह्मणत्व के क्या-क्या चमत्कार हो सकते हैं । मैंने उसे अपने जीवन में इसे धारण करके देखा है और पाया है कि इसमें सफलताएँ भी हैं तथा चमत्कार भी हैं । ब्राह्मण जीवन किसे कहते हैं ? किफायतशाली जीवन को कहते हैं । ब्राह्मण उसे कहते हैं जो अपना खर्च कम से कम में चला सकता हो तथा अधिक से अधिक अपना धन, अक्ल, मेहनत, समाज में लगा सकता है जिससे उसके जीवन का लक्ष्य समाज का लक्ष्य पूरा होता हो । जिस आदमी ने अपनी जरूरतें बढ़ा कर रखी हैं , उस आदमी को कुछ बचता ही नहीं है ।

हमें यह कहना होगा कि अध्यात्मवादी बनने के लिये किफायतशाली बनना होगा, ब्राह्मण बनना होगा । हमने इसका प्रयोग किया है तथा लाभ पाया है । हमने अपना खाने, पीने तथा रहने का ढंग ब्राह्मण का रखा है । अपने जमीन के वावत जो कुछ हमें मिला था, उसे गायत्री तपोभूमि के लिये दान कर दिया । मैंने अपनी पत्नी से पेशवा ब्राह्मणों की उपमा देते हुये कहा कि आपको भी यह जीवन जीना चाहिये । पेशवा के राम टांक ने अपने गुरु के पत्नी के आदेश पर सब कुछ दे दिया था । इन्होंने भी अपने सारे गहने गायत्री तपोभूमि के लिये लगा दिया । पैसों के दृष्टि से हम खाली हाथ हो गये, परन्तु शक्ति बहुत मिल गई ।

मित्रो ! धन की और बल की शक्ति नहीं होती है । वह ब्राह्मणत्व की शक्ति होती है । यह मैं आपको यकीन दिला सकता हूँ । मैं ब्राह्मण था और अब भी ब्राह्मण हूँ । जो कुछ भी आप देख रहे हैं यह ब्राह्मणत्व का चमत्कार है । इस दुनिया में मित्रो, एक ही बिरादरी रह गई है जिसका नाम बनिया है । बाकी सारी बिरादरी मर गई हैं-एक ही जिन्दा है वह है बनिया । सारे के सारे क्षेत्र में बनिया ही बनिया छाया है । ब्राह्मण कही नहीं । परन्तु हम ब्राह्मण हैं, इस पर हमें गर्व है तथा संतोष है । अगर कोई अपने को ब्राह्मण बना सकता हो, अपने खर्च और लागत को कम कर सकता हो तथा नीयत में ब्राह्मणत्व है तो हमें प्रसन्नता होगी, परन्तु आपके नीयत में तो चंडाल बसा हुआ है । आदमी को गरीब भी होना पड़ेगा, यह हमने ब्राह्मण का प्रयोग करके देखा है ।

दूसरा वाला प्रयोग हमने किया-साधु का जिसका नाम तपस्वी है । हमने अपने सारे छिद्रों को बन्द कर दिया । यह दूसरा कदम है । कटि पर चलने वाले का नाम तपस्वी नहीं है । ठंठे पानी से नहाने वाले का नाम तपस्वी नहीं है । उस आदमी का नाम साधु और तपस्वी है जिसने अपने आप को तपाया, उसका नाम तपस्वी है, उसका नाम साधु है । हमने अपने आप को तपाया है । अकल की दृष्टि से आदमी से ज्यादा बेईमान, बहुरूपिया कोई नहीं है । हमने अपनी अकल को ठीक कर लिया है । आप भी मारे डन्डों से अपनी अकल को ठीक करें । हमने अपने हर चीज को तपाया, भीतर वाले हिस्से को भी तपाया । हमने अपने मन को, बुद्धि को तपाया है, पर आपकी बुद्धि तो ऐसी चंडाल है, ऐसी पिशाचिनी है कि क्या कहें । किसी के जिन्दगी की समस्या को हल करने का सवाल था तो आपकी अकल-आपकी बुद्धि ने ऐसी मक्कारी की, कि क्या कहना । पैसे से लेकर समय तक हमने केवल समाज के लिये खर्च किया । यह कसा हुआ जीवन हमारा तपस्वी का जीवन है । मन्त्रों में शक्ति है, गलत बात नहीं हैं । देवताओं में शक्ति है, यह भी गलत नहीं है किन्तु अगर कोई आदमी तपस्वी है तो वह हर काम को कर सकता है । अपने अनुष्ठान काल में हमने किसी से बात नहीं की, कोई भी अन्य चीज नहीं खाया । जौ की रोटी एवं छाछ बस यही दो चीजें हम खाते रहे ।

जैसे हमने अनुष्ठान खत्म किया कि एक व्यक्ति आये जो नकली रेशम बनाते थे, उन्होंने कहा कि हम आपको गुरु बनायेंगे । उन्होंने सवा रूपया हमारे हाथ पर रखा । इस पर हमने सोचा कि तब तो हम ब्राह्मण नहीं हो सकते हैं, हम मजदूर हैं । उन्होंने कहा कि ब्राह्मण को तो लेना चाहिये । यह आज से लगभग ३५-४० साल पहले सन् १९४५-१९४६ की बात है उस सज्जन को लेकर हम बाजार गये । उस जमाने में ठण्डी में बिछाने के लिये पुराने कपड़ों के तथा रुई की हाथ से बनी दरियाँ दो रुपये में मिलती थीं । उससे वही चीजें खरीद कर जरूरतमंदों में बाँट दिया, पर अपने लिये हमने उसे स्वीकार नहीं किया । हमारी अकल एवं जो भी चीज हमारे पास थी उसे हम हमेशा बाँटते चले गये । उस आदमी ने कुछ दिनों के बाद हमारे पास दो सौ रुपये भेजे । हमने उसे गायत्री तपोभूमि के मन्दिर बनाने में लगा दिया । यह वह पहला आदमी था जिसने हमें पैसा भेजा था । यह घटनाएँ सुना रहा हूँ मैं आपको अपने तपस्वी जीवन की । इसी तरह हमारे सारे कार्य होते चले गये । कोई काम हमारा रुका नहीं ।

एक प्रयोग वाणी के संयम का हम सुनाते हैं आपको हम चाहते थे कि हम मौन धारण कर लें । तथा बैखरी वाणी का प्रयोग कम करें । हमने जितना व्याख्यान दिया है, दुनिया में शायद ही कोई व्यक्ति व्याख्यान दिये होंगे । हमारे व्याख्यानों से लोगों के कायाकल्प हो गये जैसे रामकृष्ण परमहंस के व्याख्यान से हुआ था जो लोग रीछ का तमाशा, रीछ का व्याख्यान सुनने आये उनको कोई फायदा नहीं हुआ । जिन लोगों को हम व्याख्यान देते हैं, उसे सूँघ कर जब देखते हैं चखकर के देखते हैं कि आदमी वैसा है ? घटिया है या वजनदार ? तो वे हमें छोटे-छोटे आदमी-घटिया आदमी दिखाई पड़ते हैं । हमें वजनदार आदमी दिखाई नहीं पड़ता है । वजनदार आदमी माने "सिद्धान्तों के आदमी" सिद्धान्तों को सुनने वाले, मानने वाले, उस पर चलने वाले, सिद्धान्तों को जीवन में उतारने वाले कोई नहीं दिखाई पड़ता है । लोगों पर गुस्सा न करके अपने पर गुस्सा न करूँ तो क्या करूँ ? आपको मालूम है जब आदमी मरने को होता है तो बहुत से आदमी मिलने आते हैं बहुत सी शक्ति खर्च होती है । कोई कहता है ताऊ जी अच्छे हैं, कोई कहता है कि हमें आशीर्वाद दे दीजिये । इससे बातें करने में बहुत शक्ति खर्च होती है । इसमें भीतरी शक्ति बेहद खर्च होती है इसलिये हमने विचार किया है हम मिलना बन्द कर देंगे । हम अपनी वैखरी वाणी को दूसरे काम में खर्च करेंगे । वैखरी वाणी कम

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

हो जायगी, तब पश्यन्ती वाणी, मध्यमा वाणी का उपयोग करेंगे । ताकि हम ज्यादा काम कर सकें । बिना बातचीत किये ही हम जादा काम कर सकते हैं । तथा वातावरण को गर्म कर सकते हैं । बेटे ! अरविन्द घोष ने, महर्षि रमण ने इस प्रकार का प्रयोग किया था और सारा हिन्दुस्तान गर्म हो गया था ।

वैखरी वाणी के माध्यम से अनावश्यक शक्तियाँ खर्च होती चलीं जाती हैं । इसलिये मैंने विचार किया कि अब इसका खर्च कम करेंगे । भगवान की शक्ति बहुत है अबकी बार मैंने प्रयोग किया । अब बोलने की बात कम करता जाऊँगा । इस काम में समय को कम खर्च करता जाऊँगा और लोगों से बातें कम करता जाऊँगा, कारण अधिकांश लोग अपनी राम कहानी लेकर आते हैं । अनावश्यक भीड़ आ जाती है और कहती है कि हमारा मन नहीं लगता, ध्यान नहीं लगता । बेकार की बातें लोग करते हैं, यह नहीं कि मतलब की बातें करें । बेकार की बातें करने में अब हम समय खर्च नहीं करेंगे । वाणी से बात नहीं होगी । तो क्या आप निष्ठुर हो जायेंगे । नहीं बेटे हमने ब्राह्मण के बाद संत के रूप में कदम बढ़ाया है । संत उसे कहते हैं जिसका मन करुणा से लबालब भरा हुआ होता है । जो दाड़ी बढ़ा लेता है, रंगा हुआ कपड़ा पहन लेता है, ध्यान कर लेता है, उसे संत नहीं कहते हैं । करुणा से भरा हुआ व्यक्ति ही संत कहलाता है । जब तक हम हैं तब तक हम समाज के लिये काम करते रहेंगे । हमारी दुकान बराबर चालू रहेगी ।

एक हमारा प्याऊ जो कभी सूखेगा नहीं । जो पसीने से लथपथ हो गये है, थक गये हैं, हमारे प्याऊ पानी हमारे तपस्या में से उनको देते रहेंगे, उन्हें हरा-भरा बनाये रखेंगे । आप हमारे प्याऊ से सब लोग पानी पी सकते हैं । ब्राह्मण, संत का जीवन चलता रहेगा । हम प्याऊ बंद नहीं कर सकते हैं । हमने एक चिकित्सालय डिस्पेन्सरी खोला है । जो भी दु:खी हमारे पास आये, हमने उसे छाती से लगाया । उसकी बीमारी का, दु:खी का बराबर ख्याल रक्खा संत का काम भाव संवेदना का है । हमें अपने बच्चे को खिलाना है, बच्चों की देख भाल करनी है, बच्चों को गुब्बारा बाँटना है, बच्चों के चेहरे पर मुसकराहट देखनी है । ये चीजें देखकर हमको खुशी होती है हम बच्चों के स्कूल चलाते हैं । इसका मतलब क्या है । हमारा अस्पताल चलता है, डिस्पेन्सरी चलती है । प्याऊ चलाने से क्या मतलब है । यह आध्यात्मिक बात है । यह संत की बातें हैं । तो क्या आप संत की दुकान बन्द कर देंगे ? नहीं, बन्द नहीं करेंगे, जब तक हम जिन्दा हैं । आगे भी चलता रहेगा ।

आप लोगों को हमने काफी बार कहा है हजार बार कहा है कि आपकी जो समस्यायें हैं उसे आप लिखकर देवें । आप आधा घण्टे भी भगवान का नाम नहीं ले सकते हैं । आप कहते हैं कि हम आपके रास्ते पर चल सकते हैं । बेकार की बातें मत करिये । तराजू हमारे पास है । हम जानते हैं, हमारा भगवान जानता है कि आप क्या हैं । इसलिये हमने इस बार यह कहना शुरू कर दिया कि आप हमारा समय नष्ट करने के बजाय लिखकर दे जाइये । आप यहाँ न ध्यान करने आते हैं, न पूजा करने आते हैं न मतलब की बात करने आते हैं केवल घूमने आते हैं, किराये खर्च करते हैं । आप हमें बेअकल समझते हैं । हमें आपकी नस-नस जानते हैं । इसलिये हमने वैखरी वाणी से बोलना बन्द कर दिया । हमारे गुरु हम से वैखरी वाणी से नहीं बोलते पश्यन्ती वाणी से बोलते हैं परावाणी से बोलते हैं । आपकी बातों को हमने सुन लिया है, और कहा है कि बेकार की राम कहानी कहकर मेरा समय क्यों खराब करते हैं । मुझे राम कहानी से क्या मतलब है आप मतलब की बात कहिये ।

साथियो, हमारे मौन धारण करने का एक और कारण है । आप यह मत सोचिये कि मैं अपना प्याऊ बन्द करने जा रहा हूँ । हमें बच्चों को खिलाने का शौक है । हमें बच्चों को प्यार करना, उन्हें गुब्बारा देना बहुत प्यारा लगता है । स्वयं घोड़ा बन जाना तथा उसकी पीठ पर बैठ लेना तथा घुमाना बहुत प्यारा लगता है ।

हम जो भी सहायता आपकी कर सकते हैं, वह अवश्य करेंगे, परन्तु आपको भी स्वयं में संवेदना पैदा करनी होगी । हमने लोगों से वायदे कर रखे हैं, खास कर बिहार और राजस्थान वालों से जहाँ हमारा जाना हुआ नहीं । गायत्री तपोभूमि से आने के बाद हम कहीं नहीं गये । गुजरात में दो बार चक्कर लगाये, मध्यप्रदेश में दो चक्कर लगाकर आये हैं । यू. पी. में भी एक चक्कर लगा कर आये हैं, बिहार एकदम खाली पड़ा है, और हम राजस्थान में भी कहीं नहीं गये हैं । अब इन प्रांतों में जाना ही होगा । दो महीने हम जायेंगे ही, जाना ही होगा । हम जब यहाँ रहेंगे नहीं तो आपसे बातें कैसे करेंगे । इसलिये हमने कहा है कि आप उपासना करिये, जप करिये ताकि आपको उस समय परा एवं पश्यन्ती वाणी से दिशा दे सकूँ । अन्यथा मैं अपने मौन की शक्ति प्रेषित करूँगा तो आपको नुकसान होगा ।

मेरे गुरु के व्याख्यान देने का कार्य बन्द हो गया तो क्या उनकी शक्ति कम हो गई ? हम नहीं बोल रहे हैं, हमारा गुरु बोल रहा है । आप भी उनकी शक्ति से बोलेंगे । प्रज्ञापुराण जब आप पढ़ेंगे, और लोगों को सुनायेंगे तब वह आपकी वाणी में नहीं बल्कि मेरे गुरु के वाणी में होगा, जिसमें अधिक ताकत होगी । आपकी वाणी में कोई ताकत नहीं होगी, आप ऐसे ही वकवास करते रहेंगे । आपका असर दो कौड़ी का होगा, हमारे गुरु बोलेंगे तो असर होगा । प्रभाव पड़ेगा । हम मौन हो जायेंगे तो हमारी शक्ति बढ़ जायेगी । हमारी परा एवं पश्यन्ती वाणी की ताकत बढ जायेगी । आप मेरी उस वाणी सुनेंगे तो आपके आँखों में पानी आयेगा, भाव संवेदना जगेगी । इससे हम आपकी सहायता ज्यादा कर सकेंगे ।

आप क्या सोचते हैं कि आप लोगों के ऊपर हमारा कोई असर नहीं पड़ता है । यह हमारा मौन ब्राह्मणत्व है । यह तपस्वी की वाणी है । हमने सेवा करने में संत की इस प्रवृत्ति को जिन्दा रखा है, कि हम समाज की सेवा करेंगे । आज व्यक्ति की सेवा ज्यादा है, समाज का सेवा गौण हो गयी है ।

हमारे मरने के बाद आप देखेंगे कि गुरुजी के मरने के बाद उनका समय, धन, श्रम किस काम में खर्च हुआ है । हमारी शक्ति एवं सामर्थ्य बच्चों को खिलाने में, अस्पताल खोलकर मरीजों की सेवा में खर्च हुआ है । हमने अभी तक समाज को चालीस प्रतिशत दिया है और लोगों को दुखीयारे को पाँच प्रतिशत दिया है । अब हमारा मन है कि इसका हिस्सा बढ़ाया जा सके । जब हम मौन धारण कर लेंगे तो हमारा ब्राह्मण और जाग जायेगा, उस समय हम व्यक्तियों की भी ज्यादा सेवा कर सकेंगे । ठोस सेवा कर सकेंगे । अभी तक हमारी सहानुभूति का अंश ज्यादा रहा है, सेवा का हिस्सा कम रहा है । हमने सहानुभूति दिया है तथा पाया है । अगर हमने किसी की एक किलोग्राम सेवा की है तो उसमें पाँच सौ ग्राम सहानुभूति भी है । उस समय हम साधन सम्पन्न एवं समर्थ थे । पर अगले दिनों जब जीवात्मा को हम और ऊपर उठा लेंगे तब हम अधिक सेवा कर सकेंगे । आपके लिये हमने कुछ किया है या नहीं ? इसका सबूत देखना हो तो दृष्टि पसार कर देखिये कि कुछ हुआ है तो ही यह पचास लाख आदमी हमसे जुड़े हैं, अन्यथा इतने आदमी कहाँ से आते ? यह हम कहाँ

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

कहते हैं कि कुछ नहीं हुआ । ५० लाख आदमी हमारे एक इशारे पर खड़े हो सकते हैं । इतने शक्तिपीठ कहाँ से बन गये ? ५० लाख मुठ्ठियाँ ५० लाख लोगों का एक घण्टे का समयदान कुछ मायने रखता है ।

हम अपने ब्राह्मण को फिर जिन्दा करेंगे । संत दानी होता है । आदमी को दानी बनने के लिये संत बनना होगा । हम ब्राह्मण और संत, को पुनः जिन्दा करेंगे । ब्राह्मण जमा करता है, संत उसे खर्च कर देता है । हमने निश्चय किया है, विचार किया है कि जिन्दगी के उन आखिरी क्षणों में अपने ब्राह्मण एवं संत को साधकर सबके लिए एक मिसाल स्थापित कर दूँ ।

क्या हम जिन्दगी भर, अपने बीबी-बच्चों को ही खिलाते रहेंगे ? जिस पर मनुष्य का भविष्य टिका है, क्या उसके लिये कुछ नहीं कर सकेंगे ? अपने लिये अधिक, समाज के लिये इतना कम । यह कैसे होगा ? मेरे गुरु ने दुखियारों की सेवा, समाज की सेवा कम किया है, परन्तु उसने सारे विश्व को हिला दिया है । दूसरों के दुःखों को देखकर यह सोचते हैं कि इसके लिए हम क्या करें ? उस समय मैं रो पड़ता हूँ तथा उसे सहायता किये बिना मेरा मन नहीं मानता है । यह क्रम चलेगा ही । परन्तु एक काम और है इनसान को ऊँचा उठाने का हम सोचते हैं कि और वह है यदि यह काम भी किया होता तो मजा आ जाता । आप जितने लोग बैठे हैं, अगर उनको हम फुटबॉल की तरह ऊँचे उछाले होते तो मजा आ जाता । आप लोगों को उछाल दें तो आप में से हर एक आदमी हनुमान, ऋषि, विवेकानंद दिखाई पड़ेगा । आप लोगों में से एक भी आदमी ऐसा नहीं जो विवेकानंद न हो । आप में से एक भी आदमी ऐसा नहीं जो रैदास की तुलना में गरीब हो । परन्तु आप इतने भारी हैं कि आपके सेल्स काम नहीं कर रहे हैं, आपके हाथ उठ नहीं पा रहे हैं । मानसिक दृष्टि से एक-एक बेड़ियाँ इतनी भारी हैं जैसे हजार मन की हों । ऐसे में आपको कैसे उठाऊँ । आपकी बेड़ियों को मैं काटूँगा । क्योंकि हमारे बाद इन बच्चों को खिलाने वाला, नर्सिंगहोम चलाने वाला कहाँ से लायेंगे । यह अस्पताल बन्द हो जाने पर आपके अनुभव के बिना इनका आपरेशन कौन करेगा ? इनसान को उठाया नहीं जा सका तो बात कैसे बनेगी ?

इसी काम के लिये हम समय लगाना चाहते हैं । अकाल हमारे समय का है आप तो केवल पूजा-केवल पूजा के पीछे पड़े हैं । देवी-देवता के पीछे लगे हैं कि मनोकामना पूरी हो जाये । किसी दिन मेरे दिमाग में गुस्सा आ गया तो पूजा को ही बन्द कर दूँगा और कहूँगा कि इसी के पीछे पड़ा हैं । पूजा के चक्कर में पड़ा है । पूजा से आज्ञा चक्र जगेगा । सुन लेना एक दिन मैं पूजा को गालियाँ दूँगा, यदि यही रटता रहा कि सब पूजा से मिल जायेगा, और यही समझता रहा कि माला घुमाने को पूजा कहते हैं । देवी-देवता को पकड़ने का नाम पूजा है । अज्ञानी लोग भ्रमित लोग मनुष्य को दबाने तथा चक्कर में डालने के नाम को पूजा कहते हैं । देवी-देवताओं को पकड़ने के लिये, मनोकामना पूर्ण करने के लिये जो आपने पूजा का स्वरूप बना रक्खा है । वह बहुत ही घटिया रूप है । पूजा ऐसी नहीं हो सकती, देवता ऐसे नहीं हो सकते, आध्यात्म ऐसा नहीं हो सकता, ध्यान ऐसा नहीं हो सकता, जैसा कि आप लोगों ने समझ रखा है, कि अगरबत्तियाँ चढ़ायेंगे, चावल चढ़ायेंगे, शक्कर की गोली चढ़ायेंगे और मनोकामना पूर्ण हो जायेगी । इतना घटिया आध्यात्म नहीं हो सकता है जैसा कि आप लोगों ने सोच रखा है । आपकी पूजा घटिया, आपके देवता घटिया सब घटिया है । इसको समझना चाहिये ।

हर रोज चिट्ठियाँ आती हैं, हर शाखाओं में मारकाट-मारकाट । मुझे मैनेजर बनाइये, इस मैनेजर को निकालिये । हमने शाखा तथा शक्तिपीठें इसलिये नहीं बनाई थीं, देवता को इसलिये नहीं बैठाया था कि लोगों का अहंकार बढ़े । हमने ट्रस्टी इसलिये नहीं बनाया था कि इसे बरबाद करो । हमने स्वयं गलती की इन लोगों को मालिक, ट्रस्टी बना कर इनके अहंकार स्वार्थपरतों को आगे बढ़ा कर अब पंचायत समितियों में जिस प्रकार झगड़ा होते हैं । हमारे शक्तिपीठों में भी हर जगह चांडालपन है हमें क्या दिखता नहीं । क्या हमने शक्तिपीठें इसीलिये बनाई थीं, पूजा इसीलिये प्रारम्भ किया था, इसलिये संगठन बनाया था कि आप लोग अहंकारी बन जाइये और आपस में ही एक दूसरे की टाँग खिंचाई कीजिये । आप ऐसी पूजा को बन्द कीजिये । पूजा मत कीजिये, यह घटियापन बन्द कीजिये । आप नास्तिक हो जाईये, भले ही, पर आप इस तरह के संगठन बनाना बन्द कर दीजिये । आप शक्तिपीठों को बनाना बन्द कर दीजिये ।

यहाँ हम एक बात अवश्य कहेंगे कि आप आध्यात्मिकता के मौलिक सिद्धान्तों को समझिये । पूजा को पीछे हटाइये, आध्यात्मिकता के मौलिक सिद्धान्तों को समझिये । आप यह मत सोचिये कि गुरूजी ने चौवीस-चौबीस लाख का जप किया था नहीं हम और चौबीस लाख के जप करने वालों का नाम बता सकते हैं जो आज बिलकुल खाली । एवं छूछ हैं । जप करने वाले कुछ नहीं कर सकते हैं, हम ब्राह्मण की शक्ति, संत की शक्ति जगाना चाहते हैं । आप राम का नाम लें या न लें । अब तो मैं यहाँ तक कहता हूँ कि अब माला जप करें या न करें एक माला जप करे या ८१ माला जप करें, परन्तु मुख्य बात यह है कि आप अपने ब्राह्मणत्व को जगाइये । प्याऊ को कौन चलायेगा । हनुमान चालीसा पाठ करने वालों ने कितनों का भला किया है ? ब्राह्मणों ने भला किया है, संतों ने भला किया है । ब्राह्मण की वाणी में संतों की तपस्या में बल होता है । आपको इसी प्रकार कोई मिल जायेगा तो आप नास्तिक हो जायेंगे । आप पूजा का महत्व बढ़ाते हैं । खबरदार ब्राह्मणत्व का महत्व बढ़ाइये, संतों का महत्व बढ़ाइये । आध्यात्म इन लोगों के द्वारा ही टिका हुआ है ।

आपके पास बैंक में धन जमा नहीं है तो चैक कैसे काट सकते हैं । आपको बैंक में पूँजी होनी चाहिये पहले जमा तो कीजिये कुछ । केवल पूजा से ही काम चलने वाला नहीं है । हमारी सबसे बड़ी पूजा समाज की सेवा है हमें लाखों आदमियों की ही नहीं, वरन् सारे विश्व की सेवा की है । हमने अपनी अकल, धन, अनुष्ठान, वर्चस् सभी इसी में लगाया है । हमने खेती करने वालों, मकान बनाने वालों को देखा है कि सेवा के नाम पर नगण्य हैं ।

आप अकेले चले । हमारे गुरु अकेले चले हैं । हम अकेले चले हैं । आप भी अकेले चलिये संगठन के फेर में मत पड़िये । आपको बोलना नहीं आता है । आप कहते हैं कि व्याख्यान सिखा दीजिये । आप हैं कौन ? हमें बतलाइये । भाषण से क्या होगा । आप हमारी बात मानिये । आपको बोलना नहीं आता है तो हम क्या करें । आप पोस्टमैन का काम करिये । हम बोलना सिखादेंगे । लड़कियों को सिखा दिया था । महाराज जी हमें भी बोलना सिखा दीजिये । आप त्याग करके तो हमें बतलाइये । जवाहर लाल नेहरू एवं शास्त्री जी को गाँधी जी ने खादी बेचने को कहा था । वे घर-घर जाकर खादी बेंचते थे । घर-घर धकेल गाड़ी लेकर जाते थे तथा लोगों से कहते थे कि आप खादी पहनिये । बेटे खादी बेचते थे । हाँ बेटे खादी बेचते थे ।

आप अपने आप को निचोड़िये । ये हमारा बेटा, यह हमारी पत्नी । देखना यही तुझे ऐसा

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

मारेंगे कि तुझे याद रहेगा । हमारा बेटा हमारी पत्नी यही रटता रहेगा कि कुछ समाज के लिए भगवान के लिये भी करेगा । नहीं गुरूजी हम तो हनुमान चालीसा पढ़ते हैं, गायत्री चालीसा पढते हैं । अरे स्वार्थी कहीं का, तेरी तो अकल खराब हो गयी है । अहंकार बढ़ गया है ।

हमने आप में से हर किसी को कहा है कि आप ब्राह्मण बनिये । नहीं गुरुजी , हमने तो चंदा इकठ्ठा कर लिया, तो हम क्या करेंगे इसका ? आप आदमी तो बने नहीं पहले आप आदमी बनना सीखें । आप घटियापन छोड़िये, सुवह से शाम तक काम कीजिये । पात्रता बढ़ाइये ।

ऋषियों ने अपने रक्त को एक घड़े में भरा था, जिससे सीताजी उत्पन्न हुई थीं । आपको भी संस्कृति को सीता की खोज करनी है । समाज के लिए, संस्कृति के लिए आप भी अपना समय अपना पैसा निकालिये, अपना रक्त निकालिये । आप अपने आप को निचोड़िये तो सही । निचोड़ने के नाम पर अँगूठा दिखाते हैं त्याग के नाम पर जीभ निकालते हैं । बकवास के नाम पर, घूमने के नाम पर बिना मतलब के आडम्बर बना रखे हैं । अपने आप को निचोड़िये । आप अपने को यदि निचोड़ेंगें तो फिर देख लेना आप क्या बन जाते हैं । हमने अपने आप को निचोड़ा तो देखिये क्या बन गये ।

अगर आपने अपने आप को निचोड़ दिया तो हमारा एक काम जरूर करना और वह यह कि हमारे विचार-हमारी आग को लोगों तक पहुँचाना हम लेखक नहीं हैं । हमारे लिखे शब्दों में से आग निकलती है । विचारों की आग भावनाओं की-क्रांति की आग निकलती है आज जनता भी प्यासी, हम भी प्यासे हमारी विचारधारा ही आग है । हम आग उगलते हैं । हम लेखक नहीं हैं । हमारे लेखनी में से निकलती है आग, मस्तिष्क में से निकलती है आग, हमारी आँखों में से निकलती है-आग । हमारे विचारणा की आग, भावनाओं की आग, संवेदनाओं की आग को आप घर-घर पहुँचाइये । आप में से हर आदमी को लाल बहादुर शास्त्री, जवाहरलाल नेहरू , सरदार पटेल होना चाहिए । गाँधी जी के आदेश पर वे खादी थकेल पर रखकर बेचने गये थे ।

इसाई मिशन की वाली महिलाएँ भी घर-घर जाती हैं और यह कहती हैं कि हमारी १ पैसा की किताब जरूर खरीदिये । अगर अच्छा न लगे तो कल मैं वापस ले लूँगी ।

अरे यह किताब बेचना नहीं है, बाबा, मेरे विचार को घर-घर पहुँचाना है । आप लोगों के जिम्मे हमारा एक सूत्री कार्यक्रम है । आप जाइये अपने को निचोड़िये । आपका घर का खर्च यदि १०००/- रुपये है तो निचोड़िये इसको और उसमें से बचत को ज्ञान यज्ञ के लिये खर्च कीजिये । हमारी आग को बिखेर दीजिये, वातावरण को गरम कर दीजिये, उससे अज्ञानता को जला दीजिये । आप लोग जाइये और अपने आपको निचोड़िये । ज्ञान घट का पैसा खर्च कीजिये । तो क्या हम अपनी बीबी को बेच दें ? बच्चे को बेच दें ? चुप कंजूस कहीं के ? ऊपर से कहते हैं हम गरीब हैं । आप गरीब नहीं कंजूस हैं ।

हर आदमी के ऊपर हमारा आक्रोश है । हमें आग लग रही है और आप निचोड़ते नहीं हैं । इनसान का ईमान, व्यक्तित्व समाप्त हो रहा हैं । आज शक्तिपीठें, प्रज्ञापीठें जितनी बढती जा रही हैं, उतना ही आदमी का अहंकार बढ़ता जा रहा है । आपस के लड़ाई झगड़े बढ़ते जा रहे हैं, सब हविश के मालिक बनते जा रहे हैं । हम चाहते हैं कि अब पन्द्रह-बीस हजार में फूस के शक्तिपीठ प्रज्ञापीठ बन जाते तो कम से कम लोगों का राग-द्वेष, अहंकार तो नहीं बढ़ता । आज आप लोगों से एक ही निवेदन है कि आप हमारी आग स्वयं बिखेरिये, नौकरी से नहीं । सेवा से आप जाइये एवं हमारा साहित्य पढ़िये तथा लोगों को पढ़ाइये, और हम क्या कहना चाहते थे । हम दो ही बात आपसे कहना चाहते हैं-पहला हमारी आग को घर-घर पहुँचाइये । दूसरा ब्राह्मण एवं संत को जिन्दा कीजिये ताकि हमारा प्याऊ एवं अस्पताल चल सके । ताकि लोगों को अपने बच्चों को खिला सकें तथा उन्हें जिन्दा रख सकें तथा मरी हुई संस्कृति को जिन्दा कर सकें । आप ११ माला जप करते हैं-आपको बहुत-बहुत धन्यवाद । यह जादूगरी नहीं है । किसी माला में कोई जादू नहीं है । मैं तो यहाँ तक कहता हूँ कि मनोकामना की मालायें, जादूगरी की माला में आग लगा दीजिये आग मनोकामना की माला, जादूगरी की माला, आज्ञा चक्र जागृत करने की माला को पानी में बहा दीजिये ।

तो क्या करें महाराज जी ? आप अपने ब्राह्मणत्व को जगा दीजिए, साधु को जगा दीजिये ताकि आप अपनी नाव स्वयं पार कर सकें । अन्यथा हम यहीं कहेंगे कि शायद हमारा तप कम है नहीं तो इसमें से कहीं न कहीं हमें ब्राह्मण , साधु मिल ही जाते ।

आपके पास धन नहीं तो अपनी भावना, विचार, श्रद्धा तो समाज में बिखेर ही सकते हैं। वही बखेरिये, संत बनकर अपना परिचय दीजिये । संत दानी होता है, संत उदार होता है ।

हमारा मन था कि अपने बचे हुए शेष दिनों में ब्राह्मण तथा संत का काम अधिक से अधिक कर सकूँ । लोगों की मध्यमा वाणी से-परावाणी से अधिक से अधिक सेवा कर सकूँ यह हमारा मन है, मैं आप को एक ही बात कह सकता हूँ कि आप अपने को निचोड़िये निचोड़िये बचत कीजिए-आपके श्रम, समय, धन और विचारणा-भावना की समाज को जरूरत है संस्कृति को जरूरत है । इसे बिलासिता में खर्च मत दीजिये । अगर किसी में ब्राह्मणत्व एवं संत जिन्दा है तो उसे निचोड़िये । उसे आप बिखेर दीजिये । हमने प्रार्थना की है कि यदि आप लोगों में कहीं भी किसी भी कोने में यदि ब्राह्मणत्व या संत जिन्दा हो तो वह जग जाये । उपासना-साधना के नाम पर आप जादूगरी बन्द कीजिये । देवता को गुमराह करने वाली, मनोकामना सिद्ध करने वाली पूजा बन्द कीजिये ।

साधना किसे कहते हैं आपको मालूम नहीं ? आप हनुमान जी की पूजा करते हैं, संतोषी माता की पूजा करते हैं । यह मंत्र हैं, न यंत्र है, न पूजा है । आप हनुमान जी, संतोषी माता को साधते हैं । अरे पहले अपने आपको तो साधिये न, पर यह जो जादूगरी आप करते हैं वह बदमाशी के सिवा कुछ नहीं है । अगर आप पूजा-उपासना करते हैं तो ठीक यह आपकी मर्जी है, पर यह न तो कोई मंत्र जप है, न भजन है यह मात्र धूर्तगीरी है । पूजा के नाम पर यदि आप ऐसी बदमाशी करते हैं तो आपकी मर्जी पर इससे कुछ होने वाला नहीं है । पहले आप समर्पण करना सीखिये, यह मोटी-मोटी बातें थीं , जो हमने किसी तरह से आपसे कह दिया ।

हमारे गुरुजी की यही मर्जी है कि हम आप में से हर आदमी में से ब्राह्मण तथा संत को जिन्दा करें और हम यही चाहते हैं कि अगर हमारे अन्दर बल हो तथा आपके अन्दर ब्राह्मणत्व तथा साधु हो तो वह जिन्दा हो जाय । इस विदाई के अवसर पर यही कहकर हम आप लोगों को विदा कर रहे हैं । मित्र, गुरुजी ने हमेशा दिया है आगे भी देते रहेंगे शर्त एक ही है कि आप अपनी ब्राह्मण तथा संत की प्रवृत्ति जिन्दा करे । आप जाइये एवं अपने-अपने कामों में जुट जाइये । ॐ शांति 卐

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी-

साधना समर्पण एवं वातावरण

(कल्प साधना सत्र १९८२-८३ में शांतिकुंज परिसर में दिया गया प्रवचन)

गायत्री मन्त्र हमारे साथ-साथ

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

मित्रो, कुछ काम ऐसे होते हैं जिसे बाहर के लोग कर सकते हैं, किन्तु कुछ काम ऐसे हैं जो स्वयं करने चाहिए । दोनों मिलकर एक पूर्णता बनाते हैं । अकेले बाहर के आधारों से आज तक किसी का काम नहीं चला और न ही अकेले के प्रयास से ही कोई आदमी आज तक सम्पन्न बना है । जब दोनों का सहयोग होता है अर्थात् बाहर का अनुदान और अपना पुरुषार्थ दोनों को मिलाकर के फिर एक बात बन जाती है । खाना पकाकर किसी ने दिया, भोजन बहुत सुन्दर और पौष्टिक भी है, लेकिन उसे हजम तो आपको ही करना पड़ेगा । मुँह से तो उसे आप ही चबायेंगे । ऐसा नहीं हो सकता कि बाहर दाला ही चबाकर उसे आपके मुँह में डाल जाय और फिर आपके पेट में बैठकर उसे हजम करके खून में शामिल कर दे । यह काम मुश्किल ही नहीं असम्भव भी है । यह काम तो हर हालत में आपको ही करना चाहिए । बाहर का आदमी अधिक से अधिक यह कर सकता है कि आपको बहुमूल्य भोजन बिना कीमत के भी पकाकर दे दे और आपको सम्मान पूर्वक खिलाये । इतने से ही उसका काम पूरा हो जाता है, अब आपका काम है कि उसको आप संभालें । आपकी जब शादी हुई थी तब आपको एक अच्छी-खाशी धर्म पत्नी मिली थी न किसने दी थी उसे ? उस लड़की के माता-पिता ने बड़ी मेहनत से अच्छी सुयोग्य लड़की बना करके, पाल-पोश कर सुशिक्षित बनाकर उसे आपके हवाले किया था । उनका काम पूरा हो गया, लेकिन आपका काम बाकी रह गया है कि घर में धर्म पत्नी के आने के बाद उसकी देखभाल करें, उसकी जिम्मेदारियों को वहन करें । अगर आप उसकी जिम्मेदारियाँ वहन नहीं कर सकते, उसके रहन-सहन एवं खान-पान का प्रबन्ध नहीं कर सकते और आप उसको पूरी इज्जत देकर सहयोग प्राप्त नहीं कर सकते तो उनके माता-पिता का दिया हुआ अनुदान आपके लिए निरर्थक चला जायगा और वह जो धर्म पत्नी आपको मिली है, आपके कोई खाश काम न आ सकेगी । आपके लिए भार बनकर रहेगी ।

मित्रो, हमने यहाँ जो कुछ भी बनाया है-आपके लिए बहुत कुछ बनाकर रखा है, वह बहुत सुन्दर और शानदार है, लेकिन उसे महसूस तो आपको ही करना है, हजम तो आपको ही करना है । हमारी करने की जो सीमा थी वह हमने पूरे तरीके से कर दिया । क्या कर दिया ? आपके लिए एक वातावरण बनाकर के हमने रख दिया यहाँ शांतिकुंज में । यहाँ क्यों बुलाया है आपको ? वातावरण का लाभ उठाने के लिए बुलाया है । यहाँ जो भी क्रिया-कृत्य आपसे कराये जा रहे हैं वह तो आप अपने घर पर भी कर सकते हैं । कौन सी ऐसी चीज है जो आप घर पर नहीं कर सकते थे ? खान-पान सम्बन्धी जो नियम-बन्धन आपको बताये गये हैं, क्या आप उसे घर पर नहीं कर सकते थे ? क्यों नहीं कर सकते थे । कौन सी ऐसी वजह है जो आप नहीं कर सकते हैं ? यहाँ जो जप और अनुष्ठान कराया जाता है, क्या आप घर पर नहीं कर सकते थे ? जरूर कर सकते थे । जो नियम और मर्यादा पालन करने के लिए यहाँ कहा गया है, वह हमारी पुस्तकें पढ़कर आप घर पर भी कर सकते थे, लेकिन यहाँ क्यों करना पड़ा ? यहाँ का वातावरण ही ऐसा है [illegible] वातावरण को बनाने के लिए हमने बहुत मेहनत की है । आप जानते की कीमत समझिये । वातावरण की कीमत यदि आप नहीं समझते तो बहुत बड़ी भूल करते हैं ।

एक बार गुरु वशिष्ठ ने रामचन्द्रजी से कहा है राम अब बुढ़ापे का समय आ गया है, अब भगवान की भक्ति और जीवन को ऊँचा उठाने के लिए कुछ प्रयत्न करना चाहिए । रामचन्द्र जी ने कहा तो फिर बताइये इसके लिए क्या किया जाय ? उन्होंने कहा-यहाँ कैसे बताऊँ, इसके लिए तो उपयुक्त वातावरण में चलना पड़ेगा यहाँ वातावरण कहाँ हैं ? यहाँ अयोध्या जिस वातावरण में आप रहते हैं वहाँ ऐसी कोई गुंजायश नहीं है जो बताया जा सके । क्योंकि यहाँ आपके कुटुम्बी रहते हैं, सम्बन्धी रहते हैं राजपाट के लोग आते रहते हैं कितने ही आप से विचार विमर्श करते रहते हैं । कितनों से आकर्षण खीझ पैदा होती है । कितनों से आपको सहयोग-समर्थन मिलता रहता हैं । कितनों से आपका [illegible] हैं तो कितनों से आपको [illegible] यहाँ के वातावरण में आध्यात्मिकता को पनप पाने की कोई सम्भावना नहीं है । अतः आपको अयोध्या छोड़नी चाहिए । अनेकों से जुड़े हुए जो बन्धन आपके साथ हैं वह जब तक आपको जकड़े हुए रहेंगे, मन भगवान की तरफ चलेगा ही नहीं । भक्ति आप कर सकेंगे ही नहीं और न अध्यात्म की तरफ का रास्ता ही खुल सकेगा । इसलिए आपको यहाँ से चलना पड़ेगा रामचन्द्र जी ने कहा-तो फिर कहाँ चलना पड़ेगा । गुरु वशिष्ठ ने कहा-'हमारे नजदीक ही, जहाँ हम रहते

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

हैं । गुरु वशिष्ठ की गुफा हिमालय पर थी । वहीं उन्होंने चारों भाइयों को बुला लिया । रामचन्द्र जी देव प्रयाग में रहने लगे, लक्ष्मण जी वहाँ रहने लगे, जहाँ आज लक्ष्मण झूला है । भरत जी ऋषिकेश में जाकर जम गये और शत्रुघ्न ने मुनि की रेती पर अपना स्थान बना लिया । चारों भाई अलग-अलग रहकर गुरु वशिष्ठ के मार्गदर्शन में शिक्षण प्राप्त करने लगे । तो अयोध्या में क्या कमी थी ? अयोध्या में वह वातावरण नहीं था जो हिमालय का वातावरण है- संस्कारी वातावरण, जिसमें कि हजारों वर्षों से लोगों ने तप किये हैं, साधनायें की हैं । वह वातावरण अयोध्या में कहाँ था । वहाँ तो राजपाट होता था, लड़ाई-झगड़े होते थे, मुकदमे होते थे, दूसरी बातें होती थीं, पर वहाँ तप का वातावरण नहीं था । हजारों वर्षों से विश्वामित्र सहित अन्यान्य ऋषि-मुनियों ने जो तप किया है उससे हिमालय का वातावरण उच्चस्तरीय बन गया। अतः श्री रामचन्द्र जी को भी गुरुवशिष्ठ की आज्ञा मानकर देव प्रयाग में रहना पड़ा । अयोध्या में रहकर गुरुवशिष्ठ भी रामचन्द्रजी को योग वाशिष्ठ नहीं पढ़ा सकते थे । वहाँ वे केवल सलाह दे सकते थे कि राजपाट इस तरह से चलाइये, लेकिन आध्यात्मिक विषयों के लिए उन्होंने भी देव प्रयाग को मुनासिब समझा और हिमालय के उसी वातावरण में साधना करायी । चारों भाइयों समेत भगवान वहीं रहे ।

आध्यात्मिक जीवन में उच्च स्तरीय वातावरण की अपेक्षा होती है । केवल आध्यात्मिक जीवन में ही नहीं, सांसारिक जीवन में भी वातावरण की जरूरत होती है । आप सांसारिक जीवन की बात जानते हैं न ? सांसारिक जीवन में भी अगर वातावरण न मिले तो बहुत मुश्किलें पैदा हो जाती है । खुशबूदार चन्दन मैसूर और केरल में पाया जाता है । इसी चन्दन के पेड़ अगर आप वहाँ से ले आयें और दूसरी जगह लगा दें तो चन्दन तो पैदा हो जायगा, पर उसमें से वह सुगन्धि नहीं आयेगी जो पहले वाले पेड़ में थी । ऐसी क्या बात है जो सुगन्ध को भी बदल देती है ? वह है वातावरण जो जलवायु पर टिका हुआ है । नागपुर के संतरे और बम्बई के केले के बारे में आप जानते हैं न । क्यों साहब वही संतरे और केले आप यहाँ ले आइये और लगा कर देखिये कि वैसे मीठे वे नागपुर में और बम्बई में होते हैं, यहाँ भी हैं क्या ? नहीं, वैसे मीठे वे आपके यहाँ नहीं हो सकते । कारण एक ही है कि वहाँ के वातावरण की अपनी विशेषता है । बंगाल निवासियों के स्वास्थ्य आपने देखे होंगे वे दुबले पतले और कद में छोटे होते हैं और सीमा प्रान्त के लोग लम्बे और मोटे होते हैं । क्या खाते हैं वे लोग ? वही दाल-रोटी खाते हैं । फिर क्या बात है कि वे इतने मोटे हो जाते हैं । वे इतने मजबूत कैसे हो जाते हैं और बंगाल वाले कैसे कमजोर रह जाते हैं । यह सब वातावरण का कमाल है ।

इस सन्दर्भ में एक और भी पुरानी बात याद है । श्रवण कुमार अपने माता-पिता को कंधे पर बिठाकर उन्हें तीर्थयात्रा कराने के लिए ले जा रहे थे । यू. पी. मेरठ के पास एक जगह है जहाँ आकर वह रुक गये और अपने माता-पिता से कहा-क्यों जी ! आपकी आँखें ही तो खराब है, टाँगें तो खराब नहीं हैं । हम आपकी लकड़ी पकड़ लेंगे और आप लोग हमारे पीछे-पीछे चलिये न क्यों हमारे कंधे पर सवार होते हैं श्रवण के माता-पिता अचंभे में रह गये । कंधे पर बैठकर चलने से उनका तो मतलब यह था कि हमारा लड़का सारे संसार भर में अजर और अमर होकर रहे, सारी दुनिया उसका नाम लिया करे, अपने बच्चों को प्यार देने के लिए उसका जीवन एक गाथा बन जाय, उदाहरण बन जाय । उनका मतलब सवारी गाँठने से थोड़े ही था । उन्होंने कहा-अच्छा बेटे जैसे तुम कहोगे हम वैसा ही करेंगे । पर काम करो आज रात को हम ठहरेंगे नहीं यहाँ । यहाँ से हमको बहुत दूर चलना चाहिए और इस क्षेत्र को पार कर लेना चाहिए । श्रवण कुमार ने अपने माता-पिता का कहना माना और उस इलाके से बहुत दूर चला गया । जैसे ही वह इलाका खत्म हुआ, वैसे ही श्रवण कुमार को बहुत आश्चर्य हुआ अपने ऊपर और वह फूट-फूट कर रोने लगा । उसने कहा पिताजी मैंने कैसे कह दिया था कि आप अपने पैरों पर चलिये । मुझे यह कितना बड़ा सौभाग्य मिला था जिसे मैं छोड़ना चाहता था । पिता ने कहा- बेटे डरने की कोई बात नहीं है । वस्तुतः जहाँ तुम्हारे मन में वह विचार आया था वह स्थान ऐसा था जहाँ एक 'मय' नाम का दानव था । वहाँ उसने अपने माता-पिता को मार डाला था । बस उसी स्थान से होकर हम चल रहे थे और उसके संस्कार भूमि में पड़े हुए थे । भूमि के संस्कारों की वजह से तुम्हारे मन में वह विचार आये थे । अब हम उस क्षेत्र से निकल आये हैं अतः सब कुछ सामान्य हो गया है ।

अब आप समझ गये होंगे कि वातावरण का कितना भारी असर होता है । आपको हमने इसलिए यहाँ के वातावरण में बुलाया है हिमालय के नजदीक बुलाया है । हिमालय यहीं से शुरू होता है । यहीं शिव और सप्तर्षियों का स्थान था । स्वर्ग कहाँ था ? स्वर्ग हिमालय के उस इलाके में था जिसको 'नन्दनवन' कहते हैं । गोमुख से आगे । स्वर्ग जमीन पर था । सुमेर पर्वत भी वहीं है । देवता भी इसी इलाके में रहते थे हिमालय वाले क्षेत्र में । सारे के सारे महत्वपूर्ण ऋषि व सप्तर्षियों से लेकर सनक-सनन्दन तक एवं नारद से लेकर आदि गुरु शंकराचार्य तक जितने भी महत्वपूर्ण व्यक्ति हुए हैं, उनकी साधना इसी स्थान में हुई है । इसलिए हिमालय का अपना वातावरण है । गंगा की महत्ता तो आप जानते हैं न ? गंगा की कितनी बड़ी महत्ता है । गंगा को सारा संसार जाने क्या-क्या मानता है । भौतिक दृष्टि से भी और आध्यात्मिक दृष्टि से भी । यहाँ गंगा जी प्रवाहित होती हैं । जिस स्थान पर

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

हमने यह शांतिकुंज बनाया है । हमारे गुरुदेव ने इस स्थान का महत्व बताया था कि यहाँ सात ऋषियों का तप हुआ था । यहाँ सात ऋषियों की सात गंगाएँ थी । दो गंगाएँ गायब हो गयी हैं, परन्तु पाँच गंगाएँ अभी भी दिखायी देती हैं । दो गंगाएँ जो गायब हो गयी है, वह कहाँ गयी ? वह इसी स्थान पर थीं जहाँ आज शांतिकुंज बना हुआ है । एक धारा यहाँ बाहर बहती थी जिसे बाँध बनाकर रोक दिया गया था तब भी गंगा का पानी जमीन में से उछलता रहता है । शांतिकुंज के पीछे एक नाला बहता है, वह जमीन में के उछलता रहता है । आप कहीं भी जरा सा गड्ढा खोदिये, गंगा जल तैयार है । यह गंगाजी की विशेषता है । शांतिकुंज हिमालय के द्वार पर बना है । यहाँ ऐसा प्राणवान सान्निध्य है जहाँ शेर और गाय प्राचीनकाल की भाँति एक साथ पानी पीते हैं । ऐसा ही वातावरण है यहाँ शांतिकुंज में । यहाँ ऐसे लोगों का सान्निध्य आपको मिला है जिसके लिए अगर आप सारे हिन्दुस्तान में घूमें और यह तलाश करें कि ऐसे प्राणवान सान्निध्य कहीं मिलेंगे क्या ? ऐसे प्राणवान सान्निध्य प्राचीनकाल में तो शायद हुए हों, पर आज आपको ऐसा आध्यात्मिकता का सही वातावरण अन्यत्र मिलेगा नहीं जैसे कि शांतिकुंज में हमने बनाकर रखा हैं और आपको यहाँ साधना करने के लिए बुलाया है ।

तो गुरुजी क्या इतने भर से बात पूरी हो जायेगी ? नहीं बेटे, इतना ही पर्याप्त नहीं । आपको इसके साथ में अपनी श्रद्धा सँजो करके रखनी पड़ेगी । श्रद्धा को आप संजोकर अगर नहीं रखेंगे तब फिर यह जमीन भी वैसी ही है जैसे कि मछली पकड़ने वाले गंगा जी में घूमते रहते हैं, पर श्रद्धा उनमें नहीं है तो उससे कोई फायदा नहीं । अगर श्रद्धा और भक्ति का अभाव तो अच्छे वातावरण से भी कोई फायदा नहीं । अगर श्रद्धा के भाव हैं तो यही गंगा तरण-तारिणी बन जाती है और अपने बच्चों का उद्धार कर देती है और श्रद्धा के अभाव में यही केवल नहर रह जाती है, सामान्य सा पानी रह जाती है । आपको अपनी श्रद्धा समुन्नत करनी पड़ेगी । अगर आप यहाँ निवास करते हैं तो कृपा करके अपनी श्रद्धा को जीवंत कीजिये और यह अनुभव करना शुरू कीजिये कि आप किसी ऐसे स्थान पर निवास करते हैं जहाँ का वातावरण आपकी साधना को सफल बनाने में समर्थ है । यह सप्तर्षियों की तपस्थली गायत्री के ऋषि विश्वामित्र, जिन्होंने गायत्री महामंत्र का साक्षात्कार किया था, ठीक इसी स्थान पर तप करते थे । सात ऋषि हैं, उनमें से एक विश्वामित्र भी हैं । विश्वामित्र कहाँ रहते थे ? उनकी कुटिया कहाँ थी ? यहीं थी, जहाँ आज शांतिकुंज है । यह विश्वामित्र का स्थान है ।

वातावरण का कितना असर पड़ता है, देखा है न आपने । टिड्डा, बरसात के दिनों में हरे रंग का होता है और गर्मी के दिनों में पीले रंग का हो जाता है । क्यों पीला हो जाता है ? इसलिए हो जाता है कि चारों ओर सूखी हुई घास, फैला हुआ रेत दिखाई पड़ता है । उसको देखते-देखते वह पीले रंग का हो जाता है, जबकि बरसात में चारों ओर हरा रंग छाया रहता है, अतः वह हरा हो जाता है । भट्टी के नजदीक बैठे हैं न आप । भट्टी गरम होती है तो उसके नजदीक बैठने वाले भी गरम हो जाते हैं । बरफ की छतरी में आप कभी घुसे तो उसमें ठंडक पड़ती रहती है और जो भी घुसता है वह भी ठंडा हो जाता है । आपको भी यही अनुभव होगा यहाँ । यह आपको तो अनुभव करना ही है, लेकिन एक बात और रह जाती है जिसके बिना यदि आप चाहें कि यहाँ के वातावरण का पूरा लाभ मिल जाय तो वह मिल नहीं सकेगा । इसके लिए श्रद्धा बहुत जरूरी है । श्रद्धा अगर आपके अन्दर न हो और आप केवल इसकी इमारत देखते हों, आश्रम देखते हों, कोई क्वार्टर देखते हों, कोई होटल या धर्मशाला देखते हों तो फिर आपके लिए ठीक वही है जो आप देखते हैं । आपकी श्रद्धा अगर जमी तो वह तीर्थ है । गायत्री का हमने इसे तीर्थ बनाया है । इसमें तीर्थों की जो भी विशेषताएँ होती हैं, वह सब विशेषताएँ पैदा की है । हमने इसमें कोई कमी नहीं छोड़ी है कि जो एक शानदार, श्रेष्ठ समर्थ तीर्थ बनाने के लिए किसी स्थान के लिए जो प्रयत्न किए जाने चाहिए, वह सारे प्रयत्न किये गये हैं ।

रामचन्द्र जी ने दस अश्वमेध यज्ञ किये थे, इसलिए दशाश्वमेध घाट तीर्थ हो गया । दुनिया में और भी बड़ी-बड़ी बातें होंगी, बड़े-बड़े स्थान होंगें, पर सब तीर्थ थोड़े ही हो जायेंगे । प्रकृति के सभी स्थान ऐसे ही थे, लेकिन जब कोई महान घटना घटित हो गयी और कोई महानकार्य सम्पन्न हो गये तो वही स्थान तीर्थ बन गये । तीर्थ के लिए भूमि को संस्कारवान बनाना पड़ता है । प्राचीनकाल में ऋषियो ने गुरुकुल बनाये थे, आश्रम एवं आरण्यक बनाये थे, जहाँ साधना के बड़े-बड़े अनुष्ठान सम्पन्न होते थे । हम भी यही कर रहे हैं । यहाँ चौबीस- चौबीस लक्ष्य के कितने अनुष्ठान हो चुके हैं, आप जानते हैं न । हर साल यहाँ नवरात्रि में चौबीस करोड़ का पुरश्चरण हो जाता है । हर दिन वहाँ नौ कुण्डीय यज्ञ में हजारों आहुतियाँ दी जाती हैं । यहाँ अखण्ड दीपक जलता रहता है । यहाँ हमारी और माताजी की नियमित रूप से कठोर तपश्चर्या अभी भी चलती रहती है । इससे वातावरण बनता है तो हमारे गुरुदेव परोक्ष रूप से आते ही रहते हैं । आपके अन्दर श्रद्धा हो तो यहाँ गायत्री माता का प्रकाश और आलोक आप चाहे जिधर अनुभव कर सकते हैं । हमारे गुरुदेव की और हमारी प्राणचेतना यहाँ के कण-कण में छायी रहती है । हमने आपसे कहा है कि यह अनुभव कीजिये कि आप यहाँ माताजी के गर्भ में निवास करते हैं । मुर्गी अपने अंडे को छाती से लगाकर जिस तरह बैठी रहती है और अंडे पकते रहते हैं, हम लोग भी उसी तरह से आपको

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अपनी छाती से लगाये बैठे रहते हैं और आपको पकाते रहते हैं । इतना होते हुए भी इस बात के लिए विशेष रूप से निवेदन किया जा रहा है कि आपकी स्वयं की श्रद्धा जीवन्त रहनी चाहिए । अगर आपने अपनी श्रद्धा का परित्याग कर दिया तो इस वातावरण से आपको कतई कोई लाभ नहीं मिलेगा । जैसे दूसरे लोग भी यहाँ आते हैं, कोई चोर, उचक्के-उठाईगीर भी आते होंगे, कोई मेहनत मजदूरी करने वाले भी आते होंगे । स्कूटर वाले, मोटर, ड्राइवर भी आते हैं, बीड़ी पीते रहते हैं और खाली हाथ चले जाते हैं । कारण उनके लिए शास्त्र का, श्रद्धा का कोई महत्व नहीं । श्रद्धा के अभाव में बाहरी चीजें कोई ज्यादा लाभ नहीं दे सकती ।

आपको आज मैं भावश्रद्धा के ऊपर बहुत जोर देना चाहता हूँ । अगर आप यहाँ से लाभ उठाना चाहते हों तो आप श्रद्धा मत छोड़ना, श्रद्धा को जागृत-जीवन्त कर लिया तो आप यहाँ के कण-कण में से अमृत-बरसता हुआ और आलोक उछलता हुआ उभरता हुआ देखेंगे अगर श्रद्धा है तो, नहीं है तो फिर सब कुछ मिट्टी है और दूसरी इमारतें जैसी होती हैं, वैसी ही यह भी दिखेगी । मीरा को एक पत्थर का टुकड़ा दे दिया गया था । उस पत्थर के टुकड़े को लेकर के मीरा ने यह मान लिया था कि ये हमारे पति हैं, और ये भगवान हैं । उनकी श्रद्धा ने उस पत्थर को साक्षात् भगवान बना दिया । उस गिरधर गोपाल ने मीरा को भेजा गया जहर का प्याला पी लिया था और मीरा बचे हुए पानी को पीकर के ज्यों की त्यों बनी रही ! साँप का पिटारा आया था तो गिरधर गोपाल साँपों से खेलते रहे । मीरा ने आखिर में पिटारे को बन्द कर दिया । मीरा को किसी ने नहीं काटा और न ही कोई नुकसान हुआ । यह कैसे हो गया ? गिरधर गोपाल के कारण । गिरधर गोपाल कौन ? पत्थर का टुकड़ा । नहीं, मीरा की श्रद्धा सिक्त प्रगाढ़ भावना के मिल जाने से ही पत्थर गिरधर गोपाल बन सका । अब वही पत्थर जहाँ का तहाँ पड़ा हुआ है । आप जाकर देख सकते हैं, उसमें कोई चमत्कार नहीं है । पत्थरों में क्या चमत्कार हो सकता था, और क्या होगा ? श्रद्धा ही है जो पत्थर को भी भगवान बना सकती है । एकलव्य की बात सुनी है न आपने । वह भील का एक लड़का था जिसने मिट्टी के द्रोणाचार्य बना दिये थे और मिट्टी के वह द्रोणाचार्य इतने समर्थ हुए कि जो कौरवों और पाण्डवों को बाण विद्या असली द्रोणाचार्य ने सिखायी थी उससे कहीं ज्यादा उस एकलव्य को आ गयी ।

रामकृष्ण परमहंस काली के अनन्य उपासक थे । लोगों ने रानी से शिकायत कर दी कि जो भोग है वह स्वयं खा जाते हैं और जूठन फैला देते हैं । रानी रासमणि एक दिन छत पर गयीं और वहाँ से छिप करके देखती रहीं सारा नजारा । सही बात यह हुई कि रामकृष्ण काली से कहने लगे-'माँ आप भोजन कीजिए ।' वह चुप रहीं क्या कहतीं । रामकृष्ण ने कहा-'अच्छा पहले बेटा खालेगा तब माँ खायेगी ।' उन्होंने ऐसा ही किया । आधा भोजन स्वयं कर लिया और जब काली से कहा-'माता अब आपको करना पड़ेगा ।' तभी रानी रासमणि ने देखा कि पत्थर की मूर्ति के हाथ हिलने लगे और उन्होंने थाली में जो भोजन था वह उठाया और निगल लिया । सारा भोजन वे खा गयीं । खाली थाली धोने के लिए रामकृष्ण परम हंस बाहर निकल रहे थे तब रानी रासमणि आयीं और उनके चरणों पर गिर पड़ीं । उन्होंने कहा-'देव आप साक्षात् काली हैं । यह बात सही है, कि रामकृष्ण परमहंस साक्षात् काली थे, क्योंकि अपनी श्रद्धा से उन्होंने पत्थर की मूर्ति को साक्षात् काली बना दिया था । रामकृष्ण ने जब विवेकानन्द से कहा कि काली माँ के पास जा और नौकरी माँग ले तो विवेकानन्द ने वहाँ जाकर देखा कि विशालकाय काली जमीन से लेकर आकाश तक को छू रही थी । वह कहाँ से पैदा हुई थीं-उसी पत्थर में से पैदा करदी थी रामकृष्ण परमहंस ने । वह उनकी श्रद्धा से बनी थीं । अब भी वही मूर्ति है वहाँ, पर अब उसमें कोई दम नहीं है । चोर एक बार उस मूर्ति की सोने की जीभ चुरा ले गये थे । तब वह पत्थर ही रह गयी थीं पत्थर को साक्षात् काली बना देने का श्रेय रामकृष्ण परमहंस को है ।

कबीर को दीक्षा देने के लिए स्वामी रामानन्द तैयार नहीं थे । कबीर सीढ़ी पर जाकर सो गये । रामानन्द उधर से निकले तो उनका पैर अँधेरे में कबीर के ऊपर पड़ गया । राम-राम कहकर वे पीछे हट गये । कबीर ने कहना शुरू कर दिया कि मेरे गुरु स्वामी रामानन्द है । उन्होंने मुझे मंत्र दे दिया है दीक्षा दे दी है । स्वामी जी ने पूछा-तू गलत-सलत बात क्यों कहता है । कबीर ने कहा-नहीं आपने मेरे सीने पर पैर रख दिया था और आपने सीढ़ियों पर राम-राम कह दिया था । बस मेरे लिए तो आप ही गुरु हो गये । आप लोग भी इस श्रद्धा के महत्व को समझें । अगर श्रद्धा का अभाव रह गया तो आप बिलकुल खाली हाथ चलें जायेंगे और हमारा परिश्रम बेकार चला जायेगा और आपका सौहार्द्र भी बेकार चला जायेगा । आप कृपा करके अपनी श्रद्धा जगाइये । आपको अन्ध श्रद्धा के लिए यहाँ कुछ नहीं कहा जा रहा है । यहाँ का परिपूर्ण वातावरण है । आप चाहें ते सच्चाई के साथ इसको परख भी सकते हैं । परखने लायक स्थान यदि न हो तो भी इसको श्रद्धा से अपने लायक बना सकते हैं । श्रद्धा उत्पन्न कीजिए, अभी आपके हिस्से का काम बाकी पड़ा है । हमने अपने हिस्से का काम पूरा कर दिया । आप और हम दोनों अपने-अपने हिस्से का काम पूरा कर लें तो हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि यह कल्प साधना आपके लिए सौभाग्य से भरा पूरा होगा और हमारे लिए संतोष का । आज की बात समाप्त ।

ॐ शान्ति 卐

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

(वसंत पर्व १९८१ पर शांतिकुंज परिसर में दिया गया प्रवचन)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो ! भाइयों !!

कैसा शुभ अवतरण का दिन रहा होगा वह, जिस दिन भगवती सरस्वती ने अवतरण लिया होगा इस धरती पर । भगवती सरस्वती हम देखें, प्रकृति के अन्तर्गत वसन्त के रूप में । पदार्थों में एक उल्लास आता है, उमंगें आती हैं, पत्ते झड़ते हैं एवं फूल खिलते हैं । बच्चों में हम देखते हैं कि वसन्त किस तरीके से हँसता और मुस्कराता है । कोयल में देखते हैं, भौंरों में देखते हैं, दूसरे प्राणियों में देखते हैं थिरकन और पुलकन किस प्रकार दिखाई पड़ती है ।

वसन्त के दिनों में हर प्राणी में एक उल्लास एवं उमंग दिखाई पड़ती है । सृष्टि का सृजन क्रम इन दिनों ज्यादा होता है । गर्भधारण, प्राणियों से लेकर वनस्पतियों तक में इस अवसर पर अधिक होता है । मनुष्यों में भी वसन्त पर्व इस प्रकार आता है कि उमंग और उत्फुल्लता पैदा होती है । इसी रूप में भगवती सरस्वती ने इस धरती पर अपने खुशी की, उत्साह की तरंगें पैदा की हैं ।

आज से बहुत दिन पहले कैसा शुभ दिन रहा होगा, जिसे हम भगवती सरस्वती के अवतरण का दिन ज्ञान के अवतरण का दिन कहते हैं । मनुष्य के अन्दर सरस्वती आयी होगी ज्ञान के रूप में । मनुष्य कभी असभ्य रहा होगा, वनमानुष की तरह रहा होगा, नर-वानर की तरह घूमता होगा, दूसरे प्राणियों से कहीं कमजोर और दुर्बल रहा होगा ।

वह कुत्ते की तरह से दौड़ नहीं सकता, हिरण की तरह कुलांचे नहीं भर सकता, बन्दर की तरह उछल कर झलांग पेड़ पर नहीं लगा सकता, पक्षियों की तरह से उड़ान नहीं भर सकता, मछली की तरह तैर भी नहीं सकता । इस तरह की सामर्थ्य उसमें नहीं है । आदमी बहुत कमजोर है । इतना कमजोर होते हुए भी वह विकसित होता चला गया तथा सारी सृष्टि का मुकुटमणि हो गया । आज तो प्राणियों का ही नहीं, सृष्टि का भी स्वामी होने का वह दावा करता है । मनुष्य यह कैसे हो गया ? यह उसकी बुद्धि का चमत्कार, विचारों का चमत्कार का प्रतिफल है ।

कैसा वह सौभाग्य का दिन रहा होगा, जब अन्य प्राणियों की तुलना में बुद्धि विकसित हुई होगी, जिसका हम खुशी मनाते हैं । आनन्द मनाते हैं कि हमें वनमानुष से आदमी बनाने का यह वसन्त बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है । भगवती सरस्वती की कृपा से हमें भावना-विचारणा प्राप्त हुई । इसे दूसरे नामों से भी पुकारते हैं- विद्या-शिक्षा भी कहते हैं । यह खुशी का दिन हम हर साल मनाते हैं । हर शिक्षा-संस्थान में मनाते हैं । वहाँ सरस्वती की वन्दना करते हैं । यह परम्परा बहुत दिनों से चली आ रही है । हम भी उसके अन्तर्गत यह पर्व मनाते हैं-ज्ञान-प्रेमी के तरीके से, विद्या-प्रेमी के तरीके से, लेकिन अपने वसन्त पर्व की कुछ विशेषता है ।

हमारे व्यक्तिगत जीवन में एक वसन्त आया था, आज से लगभग ५५ वर्ष पूर्व, जिसमें सामान्य पतझड़ जैसे, एक ठूँठ जैसे इन्सान में नवीन पल्लव आ गये, नया उत्साह आ गया ।

एक छोटे-से देहात में रहने वाले लड़के के समक्ष वसन्त पर्व के दिन एक दैवी शक्ति आयी, उससे बातचीत हुई । उस दैवी शक्ति ने कहा-तुमसे हमें कुछ विशेष काम कराने हैं, बड़े काम कराने हैं, तुम्हें समर्थ बनाना है । हमने कहा-आप बनाइये । मजबूत बनने के लिए, ताकतवर बनने के लिए हम तैयार हैं । समर्थ बनने के लिए ताकतवर आदमी की आवश्यकता पड़ती है । आप हमें इस योग्य बनाइये ।

उनके साथ बातचीत शुरू हो गई । जिन्हें मैं बॉस, मार्गदर्शक, गुरु कहता हूँ-ठीक वे वसन्त पर्व के दिन आये थे, एक छोटे-से कमरे में । तब हमारी उम्र १५ वर्ष की रही होगी । हमने पूछा-आप क्या सहायता करेंगे ? उन्होंने कहा-हम एक ही सहायता करेंगे, तुम्हारी कामनाओं को भावनाओं में बदल देंगे । कामनाएँ किसे कहते हैं ? कामनाएँ उसे कहते हैं, जिसके बारे में हम कह रहे थे । यह दो हैं । एक है पेट की भूख, जो पेण्डुलम की घड़ी के तरीके से खट-खट, खट-खट चलती रहती है । यह रोटी माँगती है । रोटी की भूख का परिष्कृत रूप वह है, जिसे 'लोभ' कहते हैं । लोभ का इच्छुक प्राणी इकट्ठा करना चाहता है, बड़ा आदमी बनना चाहता है, सेठ बनना चाहता है । अन्य प्राणी पेट भरना चाहते हैं ।

दूसरी वृत्ति प्राणियों में यह होती है कि वह जोड़े के साथ रहना चाहता है । इन्सान में उसका रूप कुछ विकसित हो गया है । विकसित रूप यह है कि वह विवाह-शादियों की बात करता है । दूसरे प्राणियों में यह बात नहीं बनती । वहाँ सिर्फ चयन होता है । चयन के बाद मिलन । दोनों के मिलन से बच्चे पैदा होने लगते हैं । दोनों की मोहब्बत बच्चों को मिलने लगती है, तत्पश्चात् कोई भी उनसे अलग रहना पसन्द नहीं करता । इसे 'मोह' कहते हैं ।

मित्रो ! प्रत्येक प्राणी के भीतर लोभ-मोह विकसित होते चले जा रहे हैं । प्रकृति की दी हुई प्रत्येक प्राणी के भीतर दो ही चीजें हैं, जिसे हम लोभ और मोह कहते हैं । जानवरों के अन्दर उसे पेट तथा प्रजनन कह सकते हैं । आदमी चूँकि समझदार है, अतः पेट और

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

प्रजनन का विकसित रूप लोभ एवं मोह हैं । इन्हें ही 'कामना' कहते हैं । इन कामनाओं की लोग तरह-तरह की गुत्थियाँ बुनते रहते हैं ।

कामनाओं के स्थान पर दूसरी चीजें की जरूरत है, अगर आदमी अपने आप को विकसित बनाना चाहता हो तब । बड़ा आदमी होना चाहता हो, सुसंस्कृत होना चाहता हो, मजबूत होना चाहता हो, देवता होना चाहता हो, तो उसे पात्रता सिद्ध करनी होगी । उसे अपनी कामना को बदल करके भावना में विकसित करना होगा । कामना वह होती है, जो शरीर से ताल्लुक रखती है ।

मित्रो ! मैं आपसे लोभ-मोह यानी वासना-तृष्णा का जिक्र कर रहा था । ये चीजें आदमी के शरीर से सम्बन्ध रखती हैं । शरीर से आदमी जब विकसित होता है तो उसके अन्दर दूसरे तरह की भूख उत्पन्न हो जाती है, वह भूख जीवात्मा की होती है । जीवात्मा की जो भूख है, उसे हम 'भावना' कहते हैं । हमारे गुरु ने कहा कि तुम्हें भावना के क्षेत्र में प्रवेश तथा विकसित होना चाहिए तथा कामनाओं से ऊँचा उठना चाहिए ।

कामनाओं को छोटा नहीं कहा जा सकता, उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती, क्योंकि हमारे पास शरीर है । शरीर को जिन्दा रखने के लिए दूसरी चीजों की भी जरूरत है- कुटुम्ब, परिवार की सेवा की भी जरूरत है । पेट भरने के लिए रोटी कमाने की भी जरूरत है, लेकिन हर चीज की एक मात्रा है । पेट भरने के लिए मुट्ठी भर अनाज चाहिए । मनुष्य कम खर्चे में भी अपने कुटुम्ब को सुसंस्कारी बना सकता है । नहीं हम अपने बच्चों को सुसंस्कारी बनाने के लिए पब्लिक स्कूल में भर्ती करना चाहते हैं । कितने बच्चे हैं आपके ? तीन बच्चे हैं । आपको २५०० रुपये देना चाहिए । आपकी बात भी ठीक हो सकती, परन्तु अगर हमारे अन्दर सुसंस्कारिता हो तो हम कम पैसे में भी काम चला सकते हैं ? विनोबा की माँ की तरह से । विनोबा की माँ का मन था कि उसके बच्चे सुयोग्य तथा सुसंस्कारी बनें । बच्चों को आगे बढ़ाने तथा पढ़ाने के लिए पैसों की जरूरत पड़ती है ? नहीं, पैसों की नहीं, सुसंस्कारों की आवश्यकता पड़ती है, जिसका नाम 'भावना' है । अगर सुसंस्कार हो, तो कोई महिला, कम पढ़ी-लिखी भी महिला अपने बच्चों को ब्रह्मज्ञानी बना सकती है । विनोबा की माँ सुसंस्कारी थी, अतः उसने तीन बच्चों को पैदा किया तथा तीनों को महान बना दिया । एक का नाम था विनोबा, दूसरे का बाल्कोबा, तीसरे का विठोबा । तीनों बच्चे ब्रह्मज्ञानी, ब्रह्मचारी संत बन गये तथा समाज के काम आ गये । क्यों साहब पैसे की जरूरत पड़ी ? नहीं भाई साहब पैसों की जरूरत नहीं पड़ती है ।

शकुन्तला जब कण्व ऋषि के आश्रम में पाली-पोसी गई थी, तो कण्व ऋषि के पास कितना पैसा था ? नहीं भाई साहब, कुछ नहीं था । शकुन्तला को सुसंस्कार का वातावरण मिला था, जिसके द्वारा उसने अपने बच्चे को 'भरत' बना दिया ।

सीता के जब लव-कुश पैदा हुए थे, तो सीता बाल्मीकि के आश्रम में थी । वहाँ क्या-क्या सुविधा तथा व्यवस्था थी-आप बता सकते हैं ? नहीं, कोई सुविधा नहीं थी । इन्सान को विकसित करने के लिए भावना की जरूरत है । शरीर को पोषण देने, सुन्दर बनाने, सुखी बनाने के लिए कामनाओं की जरूरत हो भी सकती है, जिसको आप दौलत कह सकते हैं, सुविधा कह सकते हैं, लेकिन आत्मा को विकसित करने के लिए दौलत की कोई खास जरूरत नहीं है । हम ऋषियों के तरीके से संतों के तरीके से कुटुम्ब का पालन करते हुए बड़ी आसानी से जी सकते हैं एवं बड़ी आसानी से शान्ति से गुजारा कर सकते हैं, लेकिन हम क्या करें ? एक हविश हमारे ऊपर ऐसी हावी हो गई है, जिसको हम एक तरह का 'नशा' कह सकते हैं । हम नशे में धुत आदमी की तरह से घूमते रहते हैं । यह कामनाएँ हैं । कामनाओं को दूसरे शब्दों में एक तरह से नशा कह सकते हैं, जिसकी न जरूरत है, न आवश्यकता । यह जब हमारे दिमाग पर हावी होती है, तो बुरी तरह से जकड़ लेती है, दिमाग को पकड़ लेती है, समझदारी को पकड़ लेती है, हाथ-पाँव को पकड़ लेती है, चप्पे-चप्पे को पकड़ लेती है ।

आज वसन्त के दिन, जिसे मैं अपने सौभाग्य का दिन मानता हूँ, हमारे गुरु ने कहा- तुम्हें अपने आपको कामनाओं की दिशा से मोड़ कर दूसरी दिशा में बढ़ाना चाहिए । तुम्हें अपने चिन्तन की दिशाधारा को दूसरी दिशा में मोड़ देना चाहिए और भावना के क्षेत्र में प्रवेश करना चाहिए । उस दिन से उनकी जो इच्छा, वह हमारी इच्छा । उस दिन से हमारा सौभाग्य उदय हो गया । मैं तब से क्रमशः मजबूत होता चला गया ।

उन्होंने कहा-सिद्धान्तों का पालन करने के लिए आदमी को कठोर होना चाहिए, बलवान होना चाहिए, मजबूत होना चाहिए । मजबूती आयेगी, तो हम जो दूसरी चीज देना चाहते हैं, उसे पाने का हकदार हो जाओगे । तभी से हमने अपनी भावना को परिपक्व करने के लिए, मजबूत करने के लिए संकल्प लिया । उन्होंने जो संकल्प दिया, उसे जीवन भर निबाहा । संकल्प छोटा-सा था । उन्होंने कहा- तुझे २४ साल तक जौ की रोटी और छाछ पर निर्भर रहना होगा । खाने के संदर्भ में, जीभ के संदर्भ में दो ही चीजें इस्तेमाल करनी होंगी, तीसरी नहीं । जीभ पर हुकूमत कर सकते हो ? हमने कहा-हाँ । जीभ पर जो दिमाग हुकूमत करता है, उसे चलायमान करता है, उस पर हुकूमत कर सकते हो ? हमने कहा-हाँ, हम जीभ और दिमाग दोनों पर हुकूमत कर सकते हैं ।

हमने दिमाग पर नियन्त्रण किया । जिन लोगों को खाते देखा, दिमाग ने कहा-हमें भी चाहिए । सब लोग बड़े मजे में खाते हैं, पसन्द करते हैं, आपको भी खाना चाहिए । हमने दिमाग से कहा-आप हमारे हैं या हम आपके हैं ? दिमाग ने कहा-हम तो आपके हैं । हमने कहा-तब तो आपको हमारी बातें, हमारा कहना मानना चाहिए । उसे समझा दिया-जो स्वास्थ्य की दृष्टि से आवश्यक है, वही हमें करना चाहिए । जीभ को आज्ञा हमने नहीं मानी । कहा-हमारे गुरुदेव की आज्ञा है आदर्श सिद्धान्तों की उनकी आज्ञा बड़ी जबरदस्त है, उसे हमें माननी चाहिए । इस प्रकार क्रमशः हमारे संकल्प मजबूत होते चले गये और हम संकल्पवान बनते चले गये ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

सिद्धान्तों का पालन करने में अपनी कमजोरियाँ कैसे तंग करती हैं ? अपने पड़ोसी कैसे तंग करते हैं ? रिश्तेदार, खानदान कैसे तंग करते हैं ? २४ साल के इस अन्तराल में हमने उसे जाना । दुनिया अपने साथ न चलने वाले का कैसा मजाक उड़ाती है, कैसा बेवकूफ बनाती है, उपहास करती है, यह भी मैंने देखा, परन्तु मैं क्या कर सकता था ? कुटुम्बियों से लोहा लिया, मुहल्ले वालों से लोहा लिया, मंच के साथ लोहा लिया, इन्द्रियों के साथ लोहा लिया, परिवार वालों के साथ लोहा लिया । हर एक से टक्कर लेते-लेते आज हमारा सौभाग्य, उन्होंने हमें लोहे का बना दिया । यह क्या चीज थी ? भावना थी । किसने दी ? हमारे गुरुदेव ने दी । इसको मैं वसन्त कहता हूँ । जब से होश सँभाला तब से अब तक ५५ वसन्त देखे । यह हमारा ५६ वाँ वसन्त पर्व है । ७० साल का मैं हो गया । इसमें १५ वर्ष का तो मैं नहीं जानता, क्योंकि उस समय से हमारा सम्बन्ध पारस से नहीं हुआ था । उस समय तक तो हम साधारण इन्सान की तरह से थे । परन्तु जब हमने १५ वर्ष के बाद पारस को छूना प्रारम्भ किया, तो हमारी शक्ल बदल गई । शक्ल का मतलब है-हमारा ईमान, हमारा दृष्टिकोण, हमारा चिन्तन । दूसरे आदमी जैसे विचार करते हैं, वैसा मैं नहीं करता । दूसरे आदमी की जैसी आकांक्षा है, वैसी मेरी नहीं है । वे जिस दृष्टिकोण के आधार पर फैसले करते हैं, मैं उस आधार पर फैसले नहीं करता । यह क्या हुआ ? पारस को छू जाना हुआ । यह मेरा सौभाग्य कि मैं पारस को छू गया । मैं कौन ? लोहा । वसन्त मेरे जीवन में आ गया । पतझड़ पर सिद्धान्तों के, आदर्शों के, मर्यादाओं के, संकल्पों के जो वसन्त के कोंपल और पत्ते आये थे आज से ५५ वर्ष पूर्व- यह मेरा सौभाग्य था । आज तो इसमें फूल आ रहे हैं और न जाने क्या-क्या चीजें आ रही हैं, उन संकल्पों के कारण, कामना को भावना के रूप में बदल देने के कारण कि मैं क्या कहूँ । मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई । इसे मैं भगवती सरस्वती का वरदान मानता हूँ, कि मुझ ठूँठ जैसे व्यक्ति में भी पल्लव पैदा कर दिये । कौन-कौन-सी चीजें आ गई ? बहुत-सी चीजें आ गई । कोयल आ गई बौर को देखकर । भौंरे आ गये गीत गाने, खिले हुए फूलों को देखकर । कितने आदमी आ गये इन फूलों को देखकर कि मैं क्या बताऊँ । बच्चों ने ललचाई आँखों से फूल को देखा, फलों को देखा । हर एक ने इसे देखा एवं पसन्द किया । यह मैं अपने जीवन की बात बता रहा हूँ, अपने सौभाग्य की बात बता रहा हूँ, अपने वसन्त की बात बता रहा हूँ । यह वसन्त एक-से एक बढ़ते हुए चले आये मेरे जीवन में । आज ५६ वें वसन्त के दिन हम एवं आप मिलकर के खुशी मना रहे हैं, उसका आयोजन सम्पन्न करने के लिये हम एवं आप बैठे हुये हैं । इसमें आप भी खुश हैं, मैं भी खुश हूँ । वसन्त में पेड़ भी खुश हैं, पत्ते भी खुश हैं- कोयलें, भौंरे, इन्सान सभी खुश हैं । इसमें एक तीसरी धारा और भी जुड़ जाती है, वह है प्रकृति की धारा । इसमें तीन धारा गंगा की तरह हो जाती है । तीसरी धारा प्रकृति की सरस्वती का इस समस्त सृष्टि में अवतरण । दूसरी धारा हम जैसे नाचीज व्यक्ति के जीवन में वंसत की उमंगें, वसंत की भावना । एक और भी वसंत आ गया । भगवान की इस सुन्दर सृष्टि को हम नष्ट नहीं होने देंगे । भगवान ने इसे बड़े परिश्रम से बनाया है । हमने भूगोल पढ़ा है, खगोल विद्या पढ़ी है । हमने देखा है कि यह दुनिया जिसमें हम एवं आप रहते हैं, सबसे सुन्दर एवं बढ़िया है, बहुत खूबसूरत है और ऐसा मालूम पड़ता है, मानो भगवान ने बड़ी समझदारी के साथ इस सृष्टि को बनाया है । इसमें उनकी बड़ी-बड़ी तमन्नाएँ तथा उम्मीदें हैं।

इस धरती पर जब कभी भी असंतुलन आता है, भगवान अपनी सृष्टि को सँभालने के लिए अपने वासंती खिलौने इस धरती पर भेजते हैं । क्या भगवान व्यक्ति के रूप में आते हैं ? नहीं, भगवान व्यक्ति के रूप में नहीं आते, व्यक्ति उन्हें धारण करते हैं । क्या चीजें आती हैं ? हूक आती है, उमंगें आती हैं प्रकृति में और ढेरों-के-ढेरों आदमी उसमें लग जाते हैं । नेतृत्व कौन करता है ? मैं नहीं जानता । श्रेय किसे मिलता है ? यह मैं नहीं जानता । एक हवा आती है, जो एक आदमी को अवतार बनने का श्रेय भले दे दे, वास्तव में वह असंख्यों को अवतार बना देती है । भगवान राम को हम श्रेय देते हैं, परन्तु क्या अकेले राम की बात थी ? केवट, भील से लेकर गिलहरी-तक, गीध से लेकर रीछ, वानरों तक-सबके भीतर एक उमंग थी-हम सृष्टि का संतुलन बनाये रखने के लिए अनाचार के विरुद्ध लोहा लेंगे । गिलहरी, जिसकी कोई हैसियत नहीं, एक ढेला मारने से मर जाती है, वह कहती थी कि हम लोहा लेंगे । यह कौन कहता था ? अवतार कहता था । अवतार, शरीरधारी को-व्यक्ति को नहीं कहते । अवतार एक उमंग को कहते हैं, एक तरंग को कहते हैं, जो उठती है और इन्सान के ऊपर छा जाती है । अवतार बहुत बार आये । राम के जमाने में आये, कृष्ण के भी जमाने में आये । उस समय छोटे-छोटे आदमी ग्वालबाल गोवर्धन उठाये । लोग कह सकते थे हम क्यों गोवर्धन उठायेंगे ? क्यों जोखिम उठायेंगे ? परन्तु अवतार कहता था कि आपको करना चाहिए । उन छोटे- छोटे लोगों में उमंगें थी. उन्होंने वैसा किया । इसी प्रकार जब भी कोई अवतार आये होंगे, ऐसे ही हजारों-लाखों व्यक्तियों के भीतर हूक आयी होगी । क्या भगवान बुद्ध ने दुनिया पलट दी थी ? आपने देखा नहीं ? उनके साथ ढेरों-के-ढेरों आदमी जुड़े थे । उनके परिव्राजक नालंदा और तक्षशिला के विश्वविद्यालय में शिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् बिखर गये थे । रेगिस्तान को पार करते हुए मंचूरिया, मंगोलिया तथा चीन जा पहुँचे थे । कौन ? भगवान बुद्ध ? हाँ, भगवान बुद्ध । एक लाख नर एवं एक लाख नारियाँ अपने घरों को छोड़कर भिक्षुक बन गये थे । लोगों ने कहा- वे पागल हो गये हैं । उसकी उन्होंने कोई चिन्ता नहीं की । धर्म की स्थापना और अधर्म के उन्मूलन के लिए जो हूक उठती है, अवतार इसी को कहते हैं । गाँधी जी भी अवतार थे-यह मत कहिये । गाँधी जी स्वराज्य अकेले लेकर नहीं आ गये । उनके लाखों सत्याग्रहियों की हूक थी , जिसके कारण स्वराज्य प्राप्त हुआ । हूक को ही अवतार कहते हैं । मेरी बात समाप्त ।

ॐ शान्ति । 卐

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी-

वसंत की वेला में गुरुवर का वासंती संदेश

इस अंक में १५/२/७८ को शांतिकुंज परिसर में, जब यहाँ गायत्री नगर का निर्माण हो रहा था, परमपूज्य गुरुदेव के श्रीमुख से निकली अमृतवाणी दो भागों में पाठक बन्धु पढ़ेंगे । पहला भाग इस अंक में अविकल जा रहा है जिसमें उन स्थापनाओं की, जिनने आज सारे विश्व में धूम मचा रखी है, भावी फलश्रुतियों का वर्णन है । पढ़ें अमृतवाणी ।

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो, भाइयो ! वसंत पर्व के समय पर हमारी यह शिविर शृंखला जिस उद्घाटन प्रयोजन के लिए चल रही है, उसमें सम्मिलित करने के लिए आपको दूर-दूर से बुलाकर क्यों कष्ट दिया गया, आइये जरा इस पर विचार करें । इस समय इधर तीन कार्य चल रहे हैं, जिनमें सम्मिलित होने के लिए आप लोगों को बुलाया गया है । वह तीन कार्य हैं-

(१) ब्रह्मवर्चस का उद्घाटन (२) प्रज्ञा मंदिर का उद्घाटन और (३) गायत्री नगर का उद्घाटन । आँख से देखने पर यह तीनों ही चीजें बहुत छोटी मालूम पड़ती हैं, लेकिन अगर आप विवेक की आँख से देखें तो इनमें कायाकल्प करने वाले युग और व्यक्ति को बदल देने वाले सारे के सारे तत्व मौजूद हैं, भले ही बाहर से देखने में ये छोटी-छोटी प्रतीत होती हों, इनमें से एक ब्रह्मवर्चस आश्रम का निर्माण है, जो बाह्य दृष्टि से एक मन्दिर जैसी चीज है जिसे बिलकुल एक सामान्य सा निर्माण कहा जा सकता है, पर भीतर की दृष्टि से यह बहुत बड़ी एवं अभूतपूर्व बात है । यह एक प्रतीक है कि उलट-पलट करने वाली कोई बहुत बड़ी चीज आने वाली है । मनुष्यों को दिशा देने वाली कोई नयी चीज उत्पन्न होने वाली है, इसका यह प्रतीक है ।

प्रतीक किसे कहते हैं ? प्रतीक बेटे उसे कहते हैं जैसे कि सम्राट जार्ज पंचम जब इंग्लैण्ड की गद्दी पर बैठे थे तब हमको बचपन की यह कहानी याद है कि उनके हाथ में एक चाँदी की छड़ी या डण्डा रहता था । लोगों ने जब उनसे पूछा कि यह डण्डा किस काम आता है तो उन्होंने कहा कि यह राजसत्ता का प्रतीक है । हम सम्पूर्ण राष्ट्र मण्डल के बादशाह हैं । उसका यह प्रतीक है-रोल । रोल को लिए बिना वे गद्दी पर नहीं बैठ सकते थे । इसी तरह हिन्दुस्तान की राजसत्ता जब ट्रांसफर हुई थी और अँग्रेज सरकार अपना शासन हिन्दुस्तान की सरकार को देकर गयी थी तो क्या चीज देकर गयी थी-फाइलें-नहीं ? तब लार्ड माउण्टबेटन ने राजगोपालाचार्य को गवर्नर बनाया था और उनके हाथ में एक रोल थमा दिया था । यह रोल या डण्डा क्या है ? यह हिन्दुस्तान के शासन की बागडोर का प्रतीक है, सिम्बल है । वह सिम्बल हमें सौंप दिया गया और किलों पर से यूनियन जैक उतार दिया गया एवं वहाँ पर तिरंगा झण्डा फहरा दिया गया । झण्डा भी एक प्रतीक है चाहे वह तिरंगा हो या यूनियन जैक । यूनियन जैक पर जो तिरछी नीली और लाल लकीरें बनी हुई थीं वे अँग्रेजी शासन की प्रतीक थीं और तिरंगा हिन्दुस्तान के शासन का प्रतीक है जिसमें तीन पट्टियाँ लगा दी गयी हैं । इनमें एक पट्टी शौर्य और साहस की प्रतीक है, दूसरी सादगी की और तीसरी श्रम की-समृद्धि की प्रतीक है । तीनों प्रतीकों से तिरंगा झण्डा बना दिया गया है । प्रतीक सबमें माने जाते हैं और जब तक दुनिया है, तब तक प्रतीक पूजा भी कायम रहेगी । मुसलमान प्रतीक पूजा को नहीं मानते हैं, लेकिन "संगे अक्सद" जो काबा शरीफ में एक काले रंग का पत्थर रखा हुआ है, प्रत्येक मुसलमान जब वहाँ हजयात्रा के लिए जाता है तो उसे उस काले पत्थर का चुम्बन लेना पड़ता है-'बोसा' लेना पड़ता है जिस पर मोहम्मद साहब बैठा करते थे । जो उसका बोसा नहीं लेता उस व्यक्ति की जियारत कबूल नहीं मानी जाती । यह क्या है ? प्रतीक है ।

आइये हम और आप अब प्रतीक की उस गहराई में प्रवेश करें जिसके लिए उक्त तीनों प्रतीक बनाये गये हैं । जीवन के अन्तिम दिनों में भगवान ने, महाकाल ने-त्रिपदा गायत्री ने तीन महत्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ प्रतीक रूप में हमारे मजबूत कंधों पर डाल दी हैं और हमने आपको बुलाया है कि आइये इस सेतुबन्ध को बाँधने में हम और आप मिलजुल कर काम करें, गोवर्धन पहाड़ को मिलजुल कर उठायें । इसी के लिए आपको इस उद्घाटन सत्र में बुलाया गया है । बेटे यह उद्घाटन नहीं, वरन् एक प्रकार की प्रतीक पूजा है । इस प्रतीक पूजा के पीछे जो उद्देश्य काम करते हैं और जिसके लिये हम व्याकुल हैं और सारा श्रम, सारी अकल और सारे मनोयोग के आधार पर उनको पूरा करने में लगे हुए हैं, उसमें हम आपको भी दावत देते हैं कि इनके पीछे जो विचारणायें क्रम करती हैं, आइये उसको पूरा करने में मदद कीजिए ।

ब्रह्मवर्चस क्या चीज है ? बेटे, ब्रह्मवर्चस एक फैक्ट्री है, एक कारखाना है, एक भट्टी है । इस भट्टी में क्या होगा ? गलाई और ढलाई । भट्टियाँ कई तरह की होती हैं । कहीं

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

काँच की भट्ठी है तो कहीं लोहे की भट्ठी है, तो कहीं अमुक भट्ठी है, लेकिन हमने जो भट्ठी बनाई है उसमें गलाई का काम और ढलाई का काम हम करेंगे । इस कारखाने में हम दो चीज तैयार करेंगे-एक तो ताकत और दूसरी बिजली, जिसके आधार पर नये युग का ढाँचा खड़ा होगा । प्रत्येक मशीन-प्रत्येक क्रिया किसी न किसी ताकत से चलती है । कोई भी तंत्र किसी न किसी ताकत से घुमाया जाता है । ताकत न हो तो वह चलेगा ही नहीं । जिस ताकत के द्वारा नये युग के निर्माण करने का तंत्र चलने वाला है, 'क्रेन' जिसके आधार पर उठायी जाने वाली है, 'ड्रिलिंग' मशीन-जिसके द्वारा जमीन में सुराख किया जाने वाला है-यह किस ताकत से चलेगी ? बेटे -यह जिस ताकत से चलेगी वह 'एटामिक' ताकत नहीं है, वरन् वह आत्मिक ताकत हैं । आत्मिक ताकत के बिना हम नया युग नहीं ला सकेंगे । नया युग लाने के लिए हम ऐसी बात नहीं करते जिसके लिए हमको पैसे की जरूरत हो । हम आत्मबल की जरूरत समझते हैं । आत्मबल अगर हमारे पास होगा तो हम मनुष्यों की चेतना को बदल सकेंगे ।

परिवर्तन में क्या बदलना है ? क्या खाने-पीने के तरीके बदलने हैं ? नहीं-बेटे, यही दाल-रोटी सब खायेंगे चाहे नया युग आ गया तो भी और नहीं आया तो भी । तो फिर क्या बदलेंगे ? हम लोगों की विचारणायें बदल देंगे, चिन्तन बदल देंगे, आस्थायें बदल देंगे, दृष्टिकोण बदल देंगे और आदमी का ईमान बदल देंगे । ईमान को बदलने के लिए किस ताकत की जरूरत पड़ेगी । बेटे, हमको रूहानी ताकत की जरूरत पड़ेगी, क्योंकि बदलना हमको चिन्तन है-खाना कपड़ा नहीं । आदमी का चिन्तन बदलने के लिए लकड़ी की, पैसे की जरूरत नहीं है । जरूरत है रुहानी बल की - आत्मबल की जिससे विचारों को बदलना है । विचारों को कोई और दूसरी चीज नहीं बदल सकती । पैसा विचारों को नहीं बदल सकता । दुनिया की कोइ भी चीज विचारों को नहीं बदल सकती । विचारों को बदलने के लिए जिस आत्मबल की जरूरत है उसे हम पैदा करेंगे । युगशक्ति केवल आत्मबल की शक्ति होगी । आत्मबल की शक्ति आप कैसे पैदा करेंगे ? इसके लिए हमने ब्रह्मवर्चस की छोटी सी फैक्ट्री लगायी है । इसमें हम यह कोशिश करेंगे कि आत्मबल सम्पन्न मनुष्यों का निर्माण करें ।

गुरुजी ! आप कैसे मनुष्यों का निर्माण करेंगे ? उनमें किस चीज का निर्माण करेंगे ? उन्हें क्या सिखायेंगे ? क्या आप उन्हें इंजीनियरिंग सिखायेंगे ? नहीं-इंजीनियरिंग नहीं सिखायेंगे । हम दो तरह के आदमी बनायेंगे-एक का नाम होगा-'मनस्वी' और दूसरे का नाम होगा-'तपस्वी' । तो क्या आप मनस्वी और तपस्वी केवल इसी जगह बनायेंगे या और कहीं अन्यत्र भी ? नहीं बेटे, यह तो हमारी नर्सरी है । इस नर्सरी में हम छोटे-छोटे पौधे उगायेंगे और फिर उनको सारे संसार भर में भेज देंगे । यहाँ हम एक नमूने की-मॉडल की चीजें तैयार करेंगे और फिर सारे विश्व का ध्यान आकर्षित करने के लिए-हर आदमी को विचार देने के लिए उन्हें भेज देंगे । नये युग के लिए इन मॉडलों को हमने देवता कहा है । देवता की शर्त क्या होती है ? देवता के दो हिस्से हैं-एक मनस्वी और दूसरा तपस्वी । मनस्वी पूर्वार्द्ध है और तपस्वी उत्तरार्ध । मनस्वी मैट्रिक स्कूल, हाई स्कूल है तो तपस्वी कॉलेज कोर्स है । तपस्वी स्तर के मनुष्य जिसको हम देवत्व सम्पन्न कहते हैं, अगले दिनों तैयार करने पड़ेंगे । उन्हें तैयार करने के लिए हम शिक्षण करेंगे । क्या-क्या शिक्षण करेंगे इस ब्रह्मवर्चस में जिसका, उद्घाटन कराया है आपसे ? बेटे इसके पीछे हमारे बड़े-बड़े ख्वाब हैं । यद्यपि कम्पनी जरा सी है, कारखाना जरा सा है, इमारत जरा सी है, लेकिन हम जो काम करने वाले हैं वह केवल इस इमारत भर के लायक नहीं, हिन्दुस्तान के लायक नहीं, हिन्दुओं के लायक नहीं, वरन् सारे विश्व के लिए है । यह जगह हमारे बैठने के लिए है । बैठने के लिए-खड़े होने के लिए कहीं न कहीं तो जगह चाहिए । यह हमारे खड़े होने की जगह है, लेकिन हमें जो काम करना है वह थोड़े से दायरे में नहीं करना है, वरन् सारे संसार में करना है । व्यापक रूप से-विस्तृत रूप से करना है ।

क्या काम करना है ? एक तो हमको मनस्वी तैयार करने हैं और दूसरे-तपस्वी तैयार करने हैं । मनस्वी कैसे होते हैं ? मनस्वी ऐसे होते हैं जो मन के गुलाम नहीं होते वरन् मन के स्वामी होते हैं । मन के स्वामी का नाम है-मनस्वी । पर आज तो सारा मानव समाज ही मन का गुलाम है । मन के गुलाम से मतलब है-लोभ का गुलाम और मोह का गुलाम । सिद्धान्तों से उन्हें कोई मतलब नहीं । सिद्धान्त उनके लिए केवल कहने और सुनने भर के लिए हैं । सिद्धान्त उनके जीवन में से बहुत दूर है । वे नर-वानरों, नर-पशुओं और नर-कीटकों की तरीके से जिन्दा रहते हैं । सिद्धान्त उनके लिए कोई मायने नहीं रखते । उनके लिए लोभ मायने रखता है, मोह मायने रखता है, लेकिन ईमान कोई मायने नहीं रखता । इस पीढ़ी को हम बदल देना चाहते हैं और नया युग लाना चाहते हैं । इसलिए हम गलाई करेंगे और ढलाई करेंगे । गलाई-ढलाई क्या होती है ? बेटे, गलाई वह है जैसे कि छापेखाने के टाइप जब घिस जाते हैं तो उनको गलाने और ढालने के लिए फैक्ट्री में भेज देते हैं । जैसे ही वह भट्टियों में गला, उसे ढालकर नया टाइप बना देते हैं । इसी तरह टूटे-फूटे पुराने बर्तनों को भट्टियों में गलने भेज दिया जाता है जहाँ उन्हें दुबारा ढालकर नया बर्तन बना देते हैं । पुराना गलाकर ढालने के बाद बिलकुल नया आ जायेगा । हम भी नया युग लाने के लिए नया इंसान बनाना चाहते हैं । नये इंसान को मनस्वी बनाना चाहते हैं ।

मनस्वी कैसा होता है ? मनस्वी ऐसा होता है जो मन का मालिक होता है और अपने इशारे से मनको चलाता है और कहता है कि भाई साहब हम आपके गुलाम नहीं हैं । हमको यह शरीर और मन सहित ग्यारह इन्द्रियाँ काम करने के लिए मिली हैं । वे हमारे इशारे पर चलेंगी । इन्द्रियों को हमारा इशारा मानना पड़ेगा । आपका इशारा क्या होगा और आप क्या करायेंगे ? हम भगवान के यहाँ से आते हैं । भगवान ने हमारे जिम्मे सिद्धान्त दिये हैं, आदर्श दिये हैं । उन आदर्शों और सिद्धान्तों पर चलने के लिए हम मन को हुक्म देंगे कि आपको हमारा आदेश मानना ही पड़ेगा । शरीर को हमारा हुक्म मानना पड़ेगा । इस तरीके से जो आदमी अपने जीवन की बागडोर और अपने जीवन की गतिविधियों की बागडोर अपने हाथ में सँभाल लेते हैं-उनका नाम होता है-मनस्वी । अब हम मनस्वी बनायेंगे । मनस्वी से क्या हो जायेगा ? बेटे, मनस्वी से ऐसा हो जायेगा कि इंसान के भीतर जो हम ख्वाब देखते हैं कि देवता का उदय होना चाहिए तो उसके भीतर देवत्व का उदय हो जायेगा । अपने मन का जो मालिक है वही देवता होता है । देवता कैसे होते हैं ?

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

देवता ऐसा होता है कि उसके सामने उसकी महत्वाकांक्षायें, इच्छायें, उसकी कामनायें, भावनायें, उमंगें जो उठती हैं, वे यह उठती हैं कि हमारा जीवन आदर्शों के लिए है, सिद्धान्तों के लिए है। जहाँ से हम चले हैं, उसके लिए है।

साथियो, भगवान ने मनुष्य को जो बहुमूल्य जीवन दिया है वह मौज उड़ाने के लिए-मजा उड़ाने के लिये नहीं दिया है। अगर इतने भर के लिए भगवान ने मनुष्य को जन्म दिया होता तो फिर भगवान को जितनी गालियाँ दी जा सकें, उतना ही कम है। फिर भगवान को पक्षपाती कहा जाता, अन्यायी कहा जाता। चौरासी लाख योनियों में से जो चीजें किसी को नहीं मिलीं, लेकिन इंसान को मिलीं, तो निश्चय ही वह मौज-मजा उड़ाने के लिए स्वार्थ सिद्ध करने के लिए, अय्यासी करने के लिए नहीं मिली हैं, वरन् एक अमानत के रूप में आपको मिली हैं। जिस दिन आदमी को यह ख्याल आ जाये कि यह जो अमानत मिली है इसका इस्तेमाल हमको ईमानदार आदमी के तरीके से करना चाहिए बेईमान या बदमाश आदमी के तरीके से नहीं, तो समझना चाहिए कि वह मनस्वी हो गया। बेईमान कौन होता है ? बेईमान उस मुनीम का-खजांची का नाम है जिसके हाथ में बहुत सारा पैसा दिया गया कि वह इसे सरकारी कामों में खर्च करेगा, लेकिन उसने इसे सरकारी कामों में खर्च न करके अपने लिए खर्च कर डाला। वह आदमी क्या हो सकता है आप समझ सकते हैं। वह आदमी एक 'क्रिमिनल' है। इसी तरह वह आदमी भी 'क्रिमिनल' है जो अपनी अकल को, दौलत को, अपने प्रभाव को, विशेषताओं को अपनी अय्यासी में, अपने लोभ और मोह में खर्च कर डालता है। ऐसा आदमी कानून की दृष्टि में न सही, आध्यात्मिक दृष्टि से 'क्रिमिनल' है। सरकारी कानून जिसके आधार पर मुकदमे चलते हैं वे तो चोरों और चालाकों द्वारा चोरों के लिए बना दिये गये हैं। हम सरकारी कानूनों की बावत नहीं कहते कि ये बातें जुर्म हैं कि नहीं, लेकिन बेटे, आध्यात्मिक दृष्टि से जो बातें जुर्म हैं, उसकी बावत हम आपका ध्यान आकर्षित करते हैं।

आदमी की अकल भगवान की धरोहर है। आदमी की क्षमतायें भगवान की धरोहर हैं और वे सिर्फ इस काम के लिए मिली हुई हैं कि उसे भगवान की सुन्दर दुनिया को खूबसूरत बनाने के लिए, सुन्दर-समुन्नत बनाने के लिए, संस्कारवान बनाने के लिए खर्च करनी चाहिए। यह उसकी जिम्मेदारी है जो भगवान ने उसके जिम्मे सौंपी है। अगर आपका यह ख्याल हो कि मरने के बाद आपसे सवाल-जवाब पूछा जायगा कि आपने कोई भजन-पूजन किया या नहीं तो, बेटे, भगवान के यहाँ ऐसा कोई एकाउण्ट नहीं है। भगवान के यहाँ तो केवल एक ही सवाल जवाब होता है कि आपने इंसानी जिंदगी किन-किन कामों में खर्च-की जवाब दीजिए। हमने आपको दुनिया को सुन्दर-समुन्नत बनाने के लिए, ऊँचा उठाने के लिए, आदर्शवादी बनने और बनाने के लिए अपने सहायक-असिस्टेण्ट के रूप में भेजा था, आपने वे काम किये कि नहीं ? आपको हमने इतनी सुन्दर अकल-दिमाग, इतने सुन्दर हाथ-पांव दिये थे जो धरती पर और किसी को नहीं मिले। आपको हमने पेट भरने और तन ढकने लायक इतनी चीजें दे दी थीं कि घण्टे-आध घण्टे की मेहनत से ही आप अपना गुजारा कर सकते थे और बाकी समय को-क्षमता और सम्पदा को हमारे काम में खर्च करना चाहिए था। पर आपने ऐसा क्यों नहीं किया ? कर भी क्या सकते थे ? यह जो हमारा मन है, यह ऐसा बेईमान, बदमाश, दुष्ट, दुराचारी, अन्यायी-अत्याचारी नौकर और साथी है जो बेकाबू है। मिला तो यह हमको इसलिए था कि इसकी मदद से हमको अपने जिन्दगी की नाव पार लगानी है, पर हमने इसे ऐसे घसीट-घसीट कर मारा है जैसे कोई-कोई लड़के अपने बाप को जब वह बुड्ढा हो जाता है तो पैसा छीनने के लिए मारते पीटते और पैसा छीन लेते हैं। कोई-कोई होता है ऐसा बदमाश।

गुरुजी ! कौन-कौन सा है ऐसा बदमाश उसका नाम बताइये ? बेटे, उस बदमाश का नाम है-आपका मन, जिसने आपके ईमान को, आपकी जीवात्मा को मार-पीटा है, लातें लगायी हैं, गालियाँ दी हैं और जितना भी पीड़ित कर सकता था, उत्पीड़न दे सकता था, जितना भी गिरा सकता था, वह सब गिरा दिया। यदि यह हमारा और आपका मन यदि काबू में होता तो आज हमारी हैसियत कुछ दूसरी ही होती। अगर आपका मन काबू में होता तो आपमें से अधिकांश व्यक्ति विवेकानन्द होते, कबीर होते, रैदास होते, पर यह नहीं मानता है कसाई-हत्यारा-हमारे ऊपर दिन-रात हावी रहता है और भगवान के बारे में भी न जाने क्या-क्या ऊल-जलूल पट्टी पढ़ाता रहता है हमको। भगवान का भजन करने से मतलब केवल एक ही है कि हम अपने मन की सफाई करें और यह याद रखें कि भगवान के यहाँ से हम किस काम के लिए आये हैं और किस काम के लिए जाना पड़ेगा। लेकिन यह चालाक और बेईमान मन न जाने क्या पट्टी पढ़ा देता है। ये यों कह देता है कि भगवान को धूपबत्ती और चावल खिला दीजिए, फूल माला सुँघा दीजिए, भगवान को हनुमान चालीसा सुना दीजिए और भगवान को उल्लू बना दीजिए फिर भगवान से चाहे जो काम करा लीजिए। हमारा मन बड़ा चालाक बड़ा बेईमान, बड़ा दुष्ट और जालिम है जो हमको न जाने क्या-क्या पढ़ाता और कराता रहता है ?

मित्रों, हम मनस्वियों की नयी पीढ़ी बनाने के इच्छुक हैं। ऐसे मनस्वी, ऐसे हिम्मत वाले अपने मन के स्वामी आदमी अगले दिनों ढालने के लिए हम बड़े इच्छुक हैं जो सिद्धान्तों के लिए-आदर्शों के लिए जियें। सिद्धान्त और आदर्शों के लिए जीने वाले का स्वरूप क्या होना चाहिए ? बेटे एक स्वरूप बता सकता हूँ कि एक बात जिस आदमी के भीतर हो, समझना चाहिए कि वह आदमी मनस्वी है और वह भगवान का काम कर सकता है। ऐसे ही व्यक्ति की आध्यात्मिक शक्तियाँ बढ़ेंगी और वह दुनिया के लिए महत्वपूर्ण कार्य करेगा और अपने जीवन की नाव को खेकर पार लगा देगा, पर एक बात आ जाये तब। बताइये उस मनस्वी की क्या पहचान है ? मनस्वी की पहचान एक है-सिर्फ एक-कि वह अपनी महत्वाकांक्षाओं की धुरी बदल दे ? अभी तो चौबीसों घण्टे यही राक्षस हमारे ऊपर हावी बना रहता है कि हमारी महत्वाकांक्षायें-हमारा अहंकार रावण के बराबर होना चाहिए, हमारी अमीरी हिरण्यकश्यपु के बराबर होनी चाहिए और हमारी ताकत भस्मासुर के बराबर होना चाहिए। हमारी वासना बढ़नी चाहिए, तृष्णा बढ़नी चाहिए, अहंता बढ़नी चाहिए। हमारे लोभ-मोह की पूर्ति होनी चाहिए। अहंकार की पूर्ति होनी चाहिए। अगर हम इसे बदल सकें और मनस्वी बन सकें तो हमारे चिन्तन की दिशा अलग बदल जायगी। फिर मैं समझ लूँगा कि अब आप कल्याण की दिशा में चल पड़े और

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

आपके पास बहुत सारी चीजें आ गयीं । क्या-क्या चीजें बदल जायँ ? बस एक ही चीज बदल जाय और वह यह कि महत्वाकांक्षाओं का प्वाइंट बदल जाये तब ।

इन दिनों मनुष्य को भौतिक इच्छायें खाये जा रही हैं । उसने आपके शरीर को खा लिया, आपकी अकल को खा लिया, आपके प्रभाव को खा लिया, आपकी प्रतिभा को खा लिया । तो क्या भौतिक महत्वाकांक्षायें खराब हैं ? नहीं बेटे, वे खराब उस सीमा तक नहीं हैं जिसमें कि आदमी को शरीर के गुजारे के लिए जितना धन आवश्यक है, अकल, समय, श्रम आवश्यक है, बस उतना उसमें लगाये और बची हुई चीजें भगवान के लिए लगाये । मनस्वी आदमी वे हैं जो अपने जीवन का निर्धारण और जीवन की दिशाधारा को सही कर सकते हैं । उनको मैं मनस्वी कहता हूँ जो अपने मन और अकल को सलाह देते हैं, परामर्श देते हैं कि आपको क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए । मनस्वी की पहचान एक ही है कि उसके जीवन में सदा "सादा जीवन उच्च विचार" के ऊँचे विचार आते हैं । ऊँचे विचार लाने के लिए सादा जीवन आवश्यक है । आध्यात्मिक महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए सांसारिक महत्वाकांक्षाओं को गिराया जाना आवश्यक है । सांसारिक महत्वाकांक्षायें आप नहीं गिरायेंगे तो आपको दो शिकायतें हमेशा बनी रहेंगी । ये कभी दूर नहीं हो सकतीं । कौन-कौन सी ? पहली शिकायत तो यह आपको हमेशा बनी रहेगी कि हमको अच्छे कामों के लिए समय नहीं मिलता । दूसरी शिकायत यह बनी रहेगी कि अच्छी बातों में, भजन-पूजन में हमारा मन नहीं लगता । फिर आप कहेंगे कि गुरुजी कोई विधि बता दीजिए जिससे मन लगने लगे । बेटे, मन लगाने की विधि यह है कि जिन महत्वाकांक्षाओं में तेरा मन लगा हुआ है वहाँ से उस प्वाइंट को हटाकर दूसरे प्वाइंट पर लगा, फिर देखना तेरा मन लगता है या नहीं । एक जगह से मन हटाकर दूसरी जगह लगा, सफलता का यही रहस्य है ।

अध्यात्म क्या है ? अध्यात्म कोई जादू नहीं है, भजन, प्राणायाम, ध्यान जैसी कोई क्रिया नहीं है, वरन् जीवन जीने की शैली है, सोचने का एक तरीका है और जीवनयापन करने की एक पद्धति है । पर आप तो इसे एक जादूगरी समझते हैं कि हाथ को यहाँ धर देंगे, नाक में से इत्र निकाल देंगे, ये मुद्रा कर लेंगे, हाथ की हेराफेरी करेंगे, चावल, रोली को यहाँ धरेंगे, इसको यों जोड़ देंगे । हाथों की बाजीगरी और जीभ की नोंक से रंग-बिरंगें अक्षरों को कह करके हम भगवान को काबू में रखेंगे । बेटे यह अध्यात्म नहीं हो सकता । ये सिद्धान्त गलत है । सही बात एक ही है कि हमारे जीवन का स्वरूप, जीवनयापन का तरीका, स्तर, ढंग एवं सोचने का तरीका अगर बदल जाता है तो फिर हमको भगवान को तलाशना नहीं पड़ता । भगवान हमको तलाश करता है । हमारा जीवन इस बात का साक्षी है । हमने भगवान को नहीं तलाश किया । भगवान ने हमको तलाश किया । गुरु को हमने तलाश नहीं किया है, गुरु ने हमको तलाश किया । फूल ने शहद की मक्खी को तलाश नहीं किया शहद की मक्खी ने ही फूल को तलाश किया । भौंरे को बुलाने के लिए फूल नहीं गया. भौंरा फूल के पास आया । तितलियों की खुशामदें करने के लिए उन्हें बुलाने के लिए इश्तहार देने के लिए फूल नहीं गया था, तितलियाँ फूल के पास आयी थीं ।

साथियो, मैं यह कह रहा था कि मनस्वी व्यक्ति अपने जीवन को उस स्तर का बनाते हैं, जिसके हम ख्वाब देखते हैं, कल्पना करते हैं जिसका हम प्रयास करते हैं । नये युग में जिन देवताओं की जरूरत पड़ेगी, उन देवताओं की शुरूआत करने के लिए हमने ब्रह्मवर्चस की स्थापना की है जिसका कि अभी उद्घाटन कराया है । उसके आधार पर हम विचार करते हैं कि नये-युग का आदमी कैसा होगा ? मनुष्य में से देवता उदय होगा तो कैसा होगा ? मनुष्य में से देवता उदय होने से सिर्फ एक बात होगी कि आदमी की महत्वाकांक्षायें बदल जायेंगी । आदमी की खुशी कहाँ टिकी हुई है ? खुशी टिकने के ये प्वाइंट बदल जायेंगे । आज हमारी खुशी पैसे पर टिकी हुई है । पैसे को पूरा करने के लिए हम हनुमान जी का इस्तेमाल करते हैं, संतोषी माता, साईंबाबा का इस्तेमाल करते हैं, जो भी आदमी आ जाता है उसका इस्तेमाल करते हैं । हर किसी से माँगते हैं । हर किसी को बहकाते हैं कि बहकावे में आकर वह मेरा उल्लू सीधा कर जाय । यह बात मैं भलीभाँति जानता हूँ कि आपके मन में क्या है । पर मैं चाहता हूँ कि जिस अध्यात्म से मनस्वी पैदा होते हैं, जिसको हम देवता कहते हैं, आप वह बनें । मनुष्य में से देवता उदय हो । मनुष्य में से जब देवता पैदा होगा तो वह अपने आप में दिव्य होगा और जो कोई भी उसके समीप आवेगा वह भी उसी तरह का बनता चला जायगा

नये युग के मनुष्य को बनाने के लिए हम मनस्वी पैदा करेंगे । मनस्वी पैदा करने का मतलब यह है कि वह व्यक्ति अपने मन से कहेगा कि जिस देश में हम पैदा हुए हैं उसके औसत नागरिक के स्तर के जीवनयापन का मापदण्ड बनाना चाहिए । भारत का औसत नागरिक क्या खाता है, वह खाइये । वह जिस स्तर का जीवनयापन करता है, आप भी उसी स्तर पर करिये । औसत नागरिक स्तर की आवश्यकतायें क्या हैं ? आप तय कीजिए और अपना मापदण्ड बनाइये । मनस्वी व्यक्ति ऐसे ही होते हैं और ऐसे ही होने चाहिए । ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का मैं मनस्वियों में नाम लेता हूँ । वे पाँच सौ रुपया महीने कमाते थे, लेकिन ५० रुपये में अपना और अपने कुटुम्ब का खर्च चलाते थे । शेष बचे हुए ४५० रुपये गरीब विद्यार्थियों, मुसीबतग्रस्तों के लिए सुरक्षित रखते और उससे उनकी मदद करते थे । मनस्वी उसे नहीं कहते जो प्राणायाम करता है और ग्यारह माला जप करता है । मनस्वी वह होता है जो बहादुरों और ईमानदार आदमियों की तरीके से अपने जीवनयापन के सम्बन्ध में, अपने जीवन पद्धति के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण फैसले कर लेता है । अगर आप यह फैसला कर लें तो आपके जीवन में कायाकल्प हो जायेगा । कैसे हो जायेगा ? अभी तो चौबीसों घण्टे आपकी अकल एक ही बात के सपने देखती रहती है कि लोभ-मोह की पूर्ति कैसे हो । सारी की सारी अकल, सारी की सारी इच्छायें आकांक्षायें उसी काम में लगी रहती हैं । क्या आप इसे खाली नहीं कर सकते ? अकल को खाली कीजिए । अकल को अगर खाली करेंगे तो आप मनस्वी कहलायेंगे । गुजारे से सब्र कीजिये-संतोष कीजिये, तब आपका बचा हुआ मन जो चौबीसों घण्टे महत्वाकांक्षाओं में, लिप्साओं में और लालसाओं की पूर्ति में लगा रहता है, बदल जायेगा और फिर बदले हुए मन के सामने वे सिद्धान्त काम आयेंगे जिसको मैं अध्यात्म कहता हूँ, भगवान कहता हूँ, ईमान कहता हूँ, धर्म कहता हूँ । धर्म के लिए, ईमान के लिए, भगवान के लिए फिर आपकी अकल काम करेगी, श्रम

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

काम करेगी, श्रम काम करेगा, आपकी क्षमता, कुशलता और सम्पदा काम करेगी ।

इससे क्या हो जायेगा ? इससे आप महामानव हो जायेंगे, ऋषि हो जायेंगे । ऋषि उस आदमी का नाम है जिसे नयी वस्तु संग्रह करने की जरूरत नहीं है । उसके लिए न नया धन चाहिए न नया बल चाहिए, जो चीजें पास में हैं वे इतनी ज्यादा हैं-"टूमच"-बहुत ज्यादा हैं आप उनका इस्तेमाल करना सीखिये । अभी तो आप उनका गलत कामों के लिए इस्तेमाल करते हैं, पर जिस दिन आप सही इस्तेमाल करने लगेंगे, पायेंगे कि आपके भीतर कितनी शांति, कितना संतोष, कितनी क्षमता, कितनी प्रतिभा विकसित होती है । जिस दिन आपके भीतर यह क्षमता और प्रतिभा विकसित होगी, उस दिन मैं आपसे वायदा करता हूँ कि देवता आपकी सहायता करने के लिए आयेंगे । देवता आपकी आरती उतारने के लिए आयेंगे । रामायण में मैंने पढ़ा है कि श्रेष्ठ दिशा में जीवनयापन करने वालों पर देवता फूल बरसाने आये थे । रामचन्द्र जी का जन्म हुआ तो, ब्याह हुआ तो देवता विमान से फूल बरसाने लगे । जब रामचन्द्र जी ने धनुष तोड़ा तो स्वर्गलोक से देवता फूल बरसाने लगे । इस बात पर मैं विचार करता रहा कि देवता क्या कोई माली है, या इनके पास फूलों की दुकान है जो फूल बरसाने का ही काम करते हैं । पीछे मैंने समझा कि फूल बरसाने से क्या मतलब है ? फूल बरसाने से मतलब होता है-दैवी शक्तियाँ, श्रेष्ठ मनुष्य और आदर्श मनुष्य उनकी सहायता करते हैं । किनकी सहायता करते हैं ? उन व्यक्तियों की जिन्होंने अपने व्यक्तित्व की धुरी बदल दी, चिन्तन का स्वरूप बदल दिया, आकांक्षाओं को बदल दिया । जो व्यक्ति अपनी प्रियता को, चिन्तन की दिशाधारा को बदल देता है, वही देवता हो सकता है ।

हमने मनुष्य में देवत्व के उदय का सपना देखा था । आइये उस पर विचार करें कि हम उस सपने को साकार कैसे कर सकते हैं ? इस सन्दर्भ में हमने ब्रह्मवर्चस के माध्यम से एक फिलॉसफी बनायी है क्रिया पद्धति बनाई है । ब्रह्मवर्चस में क्या होगा ? प्रशिक्षण होगा । कैसे होगा ? इसमें प्रातःकाल ढाई घण्टे की साधना है जिसे पंचकोषी साधना एवं कुण्डलिनी साधना कहते हैं । इसमें योगाभ्यास भी करायेंगे और दोपहर को ब्रह्मज्ञान का प्रशिक्षण जिसे हम आत्मज्ञान कहते हैं । यह भी ढाई घण्टे का प्रशिक्षण है । इसमें ब्रह्मविद्या के-ईश्वर, जीवन, प्रकृति से लेकर धर्म और विज्ञान के बारे में ऋषियों ने जो कहा है, उनकी बातें बतायेंगे । इस तरह सबेरे हम तप करायेंगे, योगाभ्यास करायेंगे और दोपहर को शिक्षण करेंगे । शाम को लोकमंगल के लिए लोकशिक्षण करेंगे कि आज की परिस्थितियों में हमें क्या करना चाहिए ? उसकी गतिविधियाँ, स्वरूप और क्रियाशैली क्या हो ? ऋषि केवल भजन ही नहीं करते थे, वरन् उसके साथ लोकमंगल की सेवा-साधना भी किया करते थे । ब्रह्मवर्चस में भी सेवा, स्वाध्याय एवं साधना-तपश्चर्या वाले तीनों अंशों की समन्वित साधना चलेगी । हम तपश्चर्या कराना चाहते हैं । तपश्चर्या में सबसे पहले एक काम करना पड़ता है-महाभारत की लड़ाई लड़नी पड़ती है । अर्जुन को श्रीकृष्ण बार-बार यही कहते थे कि **"ततो युद्धाय युज्यस्व"** किन्तु अर्जुन बार-बार बहाने बनाता रहा और कहता रहा कि मैं नहीं लड़ूँगा । पीछे भगवान के बार-बार समझाने पर उसने कहा-**"करिष्ये वचनं तव"** अर्थात् आपकी आज्ञा मानूँगा । तो उनने कहा तो फिर उतर कुरुक्षेत्र में और लड़ाई कर । अर्जुन लड़ने लगा और विजयी हुआ ।

बेटे, अध्यात्म क्षेत्र में भी लड़ना पड़ता है । किससे लड़ना पड़ता है ? अपने मन से । हमारा यह मन बड़ा कमीना है । इस लड़ाई में अगर हमारी विजय हो जाती है तो समझना चाहिए कि हमने तीनों लोकों पर विजय प्राप्त कर ली । कहा भी है-***"न मारा आपको जो खाक हो अक्सीर बन जाता । अगर पारे को ए अक्सीर गर मारा तो क्या मारा ।। न अंगो अशणवाहो शेर नर मारा तो क्या मारा । न मारा आपको जो खाक हो अक्सीर बन जाता । अगर पारे को ए अक्सीर गर मारा तो क्या मारा ।।"*** तात्पर्य यह कि अगर हम अपने आपको मार लें, अपने मन को काबू में कर लें, अपने मन को हम अपनी इच्छानुसार चला लें तो मजा आ जाय । तो फिर आप कौन हो जायेंगे-मनस्वी हो जायेंगे, संत हो जायेंगे और देवता का पूर्वार्द्ध पूरा कर लेंगे । अपने आप से लड़ाई लड़ने अपने मन पर कंट्रोल करने, इन्द्रियों पर काबू करने वालों और जन्म-जन्मान्तरों के हैवानी कुसंस्कारों से पीछा छुड़ाने वालों को हम मनस्वी कहते हैं । मनस्वी ही अपने जीवन को बदल सकेंगे और समय को युग-को बदल सकेंगे । यदि वे मनस्वी नहीं होंगे तो न अपनी जिन्दगी को बदल सकेंगे और न दूसरों को बदल सकेंगे । इसलिए मनस्वी पैदा करना हमारा काम है ।

मनस्वी व्यक्तित्व पैदा करने के लिए ही ब्रह्मवर्चस संस्थान की स्थापना की गयी है । यहाँ पर हम लोगों को बुलायेंगे और बतायेंगे कि मनस्वी कैसा होना चाहिए ? मन से कैसे लड़ना चाहिए ? मन के विकृत होने से जिन्दगी कैसे खराब हो जाती है और मन को काबू में लाने से मनुष्य कैसे मुक्त हो जाता है ?-**"मन एव मनुष्याणां कारणं बन्ध मोक्षयो"** यह मन ही है जो हमको बाँधता है और यही हमको मुक्त भी बना देता है । यह मन ही है जो हमको राक्षस बना देता है, देवता बना देता है । चाहे हम इसको विधाता कह लें, चाहे पिशाच कहलें, वह एक ही है । इसे किस तरीके से निग्रहीत कर सकते हैं, यह विधि यहाँ सिखायेंगे और यहाँ से सारे संसार में फैलायेंगे । इसलिए ब्रह्मवर्चस का पहला वाला अध्याय, पहला उद्देश्य हमारा यह है कि हम आदमियों को मनस्वी बनायें । मन से लड़ने वाला, मन पर काबू करने वाला, मन को हीरा बना देने वाला बनायें । आदमी का मन ही है जो उसे आत्महत्या के लिए प्रेरित करता है, नींद नहीं आने देता, शराबी, नशेबाज बनाता है, डाकू बनाता है और यही वह पारस भी है जो हमको ऋषि बना देता है, संत बना देता है, देवता बना देता है । इसलिये मन के साथ जद्दोजेहद करना, मन को परिष्कृत करना-यह एक कला है, फिलासफी है, एक साइंस है, एक विधि-विधान है । उसको हम ब्रह्मवर्चस में सिखायेंगे । यह एक नमूना है मॉडल है, प्रयोगशाला है, फैक्ट्री है, फार्महाउस व नर्सरी है । जहाँ प्रयोग करने के बाद में विश्वभर को बतायेंगे कि मन को काबू में करके मनस्वी कैसे बना जा सकता है और स्वयं को तथा अन्यान्यों को कैसे ऊँचे उठाया जा सकता है ? हमारी यह प्रयोगशाला विश्व में अपने आप में एक अनोखी प्रयोगशाला है । यह आश्रम हमारी शुरुआत का एक केन्द्र है जहाँ हम शिक्षण करेंगे और नवयुग की एक हवा पैदा करेंगे । मनस्वियों को ढालने की यह एक बहुत बड़ी फैक्ट्री है जिसका प्रत्यक्ष परिणाम आगे के दिनों सबके सामने आने वाला है ।

(क्रमशः-अगले अंक में)

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

वंसत की वेला में गुरुवर का वासंती संदेश

(विगत अंक में दी गयी अमृतवाणी का उत्तरार्ध)

१५ फरवरी १९७८ के पावन दिन पूज्यवर द्वारा दिया गया उद्‌बोधन विगत अंक में पूर्वार्ध के रूप में परिजनों ने पढ़ा इस ऐतिहासिक प्रवचन का उत्तरार्ध इस अंक में प्रस्तुत है । इस समग्र प्रवचन में पूज्यवर के इस विराट अभियान जिसे युग-निर्माण, प्रज्ञा-अभियान नाम से जाना जा सकता है का मर्म समा गया है । ब्रह्मवर्चस के शुभारंभ की वेला में दिया गया यह उद्‌बोधन भावी मनुष्य के नवनिर्माण का संविधान भी एक प्रकार से बन गया है । पढ़ें, अमृतवाणी ।

साथियो, ब्रह्मवर्चस प्रशिक्षण के उत्तरार्ध में हम एक और तरह का आदमी ढालना चाहते हैं जिसका नाम होगा "तपस्वी" । तपस्वी किसे कहते हैं? बेटे, तपस्वी उसे कहते हैं जो अपने व्यक्तिगत जीवन को ठीक कर लेता है । उसका दूसरा नाम है -ब्राह्मण, ब्राह्मण किसे कहते हैं ? ब्राह्मण किसी वंश का नाम नहीं है । ब्राह्मण कोई कौम नहीं होती, जाति नहीं होती । जाति तो न जाने किसने बना दी । ब्राह्मण एक वर्ग होता है, एक तबका होता है । ब्राह्मण उस तबके को कहते हैं जो अपने मन को काबू में रख करके अपने जीवन की विधि और प्रक्रिया को ऐसे व्यतीत करता है जिसको सिद्धान्तवादी जीवन कहना चाहिए । कहते हैं कि ब्राह्मण अपने आप तक सीमित रहता है, अपने को ठीक करने में लगा रहता है । अपने आपको ही सही करता है, अपने आपको ही संस्कारवान बनाता है । तो क्या यह काफी है, नहीं, बेटे इतना ही काफी नहीं है । यह तो पहला अध्याय है, अपने आप को सही बनाना, लेकिन जब मैट्रिक हो जाय तो फिर ग्रेजुएट भी होना चाहिए ।

ग्रेजुएट कौन होता है ? ग्रेजुएट तपस्वी होता है । तपस्वी किसे कहते हैं ? संत को तपस्वी कहते हैं । संत किसे कहते हैं ? जैसे मक्खन के ऊपर जब धूप पड़ती है तब वह पिघल जाता है, ठीक उसी तरह जो व्यक्ति अपने युग की- अपने समय की, मनुष्य जाति की, समस्त प्राणियों की पीड़ाओं को देखकर के पिघल जाता है, उसे संत कहते हैं । संत रोता नहीं है, वरन् उसके भीतर एक हूक उठती है, टीस उठती है, संकल्प जाग्रत होता है और पीड़ा एवं पतन के रोने के जो कारण थे, उनको दूर करने के लिए वह कष्ट उठाता है । वह उनसे मोर्चा लेने के लिए सीना तानकर खड़ा हो जाता है । रामचन्द्र जी तपस्वी का जीवन जी रहे थे । एक बार उन्होंने ऋषियों की हड्डियों का एक समूह देखा तो उनकी आँखों में आँसू आ गये तपस्वियों के आँसू कैसे होते हैं ? उनके आंसू में से टपकती है आग-ऐसी आग कि जिसके ऊपर मुसीबत है उसे दूर करने में हमको मदद करनी चाहिए । फिर वह आदमी मदद के लिए तन कर खड़ा हो जाता है । रामचन्द्र जी ने ऋषियों की हड्डियों के समूह को देखकर भुजा उठाकर प्रण किया कि अब इस पृथ्वी पर राक्षसों को नहीं रहने दूँगा । या तो मैं मरूँगा या उनको मार कर छोड़ूँगा-"डू और डाई" या तो हम करेंगे या मरेंगे । मित्रो! इतना साहस जिसके अन्दर होता है वह आदमी तप करने, कष्ट उठाने के लिए तैयार हो जाता है । उसे हम तपस्वी कहते हैं ।

तपस्वी कैसे होते हैं ? तपस्वी उस प्रकाश स्तंभ की तरह होते हैं जो एकाकी समुद्र के बीच में खड़ा रहता है और उसके ऊपर एक बत्ती सदैव जलती रहती है चाहे रात हो, या ठण्डक हो या बरसात हो । यह बत्ती बताती रहती है कि जहाजों को नावों को इधर से आना चाहिए, उधर से नहीं जिधर चट्टान है वहाँ जोखिम है, आप वहाँ डूब जायेंगे, टक्कर खा जायेंगे- आप दूसरे रास्ते से आइये । प्रकाश स्तंभ यही बताते रहते हैं । तपस्वी भी एक प्रकार के प्रकाश स्तंभ हैं । वे स्वयं मुसीबत उठाते रहते हैं और अकेले खड़े रहते हैं । उन्हें न सिनेमा देखने का मौका है, न खाने-पीने का शौक है, न कोई यार-दोस्त है, न चौपड़ है न शतरंज । वे अकेले खड़े रहते हैं और रास्ता बताते रहते हैं । इन्हें हम तपस्वी कहते हैं । इनके भीतर एक हूक उठती है, दर्द उठता है कि हमको दूसरों के दुख दर्द को दूर करने के लिए, भगवान की इच्छा पूरी करने के लिए क्या करना चाहिए । फिर उनकी गति-विधियों में फर्क पड़ जाता है । कैसा फर्क पड़ जाता है ? जब वे ऊपर आसमान की ओर देखते हैं तो कहते हैं कि भगवान की बनायी हुई मूल्यवान चीजें किस तरीके से जीवन यापन करती हैं, हमको भी इसी तरीके से जीवन यापन करना चाहिए । वे इसका अभ्यास करते हैं कि भगवान के दूत किस तरीके से काम करते हैं और हमें किस तरह से करना चाहिए । समुद्र में से पानी का गट्ठर लादकर के बादल रवाना होते हैं और दौड़ते हुए कहाँ-कहाँ तक चले जाते हैं जहाँ खेत रूखे पड़े हुए हैं । बादल अपनी हस्ती को, अपने परिश्रम को मेहनत को बिना कीमत के सूखे खेतों में गलाते हुए चले जाते हैं । ये कौन हैं ? ये संत हैं और तपस्वी हैं। तपस्वी- जिनका काम ही है कि हम अपने आपका नुकसान उठायेंगे, पर समाज को, दुखियारों को, पिछड़े हुओं को, पतितों को सुखी बनाने के लिए अपने आपको हम खतम कर देंगे, खपा देंगे । वे ऊपर को देखते हैं तो उनकी हिम्मत बड़ी हो जाती है और उसी तरह के वे काम करने लगते हैं ।

देवता बराबर काम करते रहते हैं । यह जमीन, यह आसमान, यह संसार देवताओं से रहित नहीं है, तपस्वियों से रहित नहीं है । जमीन की ओर निगाह डालकर देखते हैं तो

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

मालूम पड़ता ह ाक यहा तपास्वया का कमी नहीं है । यह जमीन वजन उठाती है, टट्टी पेशाब उठाती है, लात खाती है, फिर भी अपने भीतर से अनाज उगाती है, घास उगाती है, फूल पैदा करती है । यह अपने भीतर से लोहा पैदा करती है, सोना, चाँदी, रसायन आदि हर चीज देती चली जाती है । ये कौन है ? तपस्वी है । संत को चारों ओर तपस्वियों की परंपरा दिखाई पड़ती है । तपस्वियों की वजह से ही दुनिया जिन्दा है । जो दुनिया में खूबसूरती है, खुशहाली है, आनन्द है, शराफत है, अच्छाई है, केवल तपस्वियों की वजह से जिन्दा है । कौन-कौन तपस्वी है ? तपस्वी मनुष्य भी हो सकते हैं, लेकिन दुनिया में तपस्वियों की बहुत सारी सत्तायें हैं जो दुनिया में शान्ति कायम रखती हैं । दुनिया में जो खुशहाली आती है वह तपस्वियों के बलबूते पर आती है । पेड़ों की ओर जरा निगाह डाल कर देखिये- वह हमेशा फल पैदा करता है । पत्ता जानवरों को खिला देता है, अपनी छाया में पक्षियों को विश्राम देता है । अपने फलों को जमीन पर गिराता जाता है । कौन हैं ये ? तपस्वी हैं ।

तपस्वियों की बिरादरी अभी दुनिया में से खतम नहीं हुई है । तपस्वी जब निगाह उठा कर देखता है तो नदियाँ लहलहाती हुई दिखती हैं और प्यासों की प्यास बुझाने, पक्षियों को पानी पिलाने, खेतों की सिंचाई करने का काम करती हैं । तपस्वी जब घर आता है तो एक और बात देखता है - अपनी माँ को और अपनी धर्म पत्नी को । माँ कौन है ? तपस्विनी है जिसने अपने रक्त को- मांस को, हड्डियों को गलाकर के अपने बच्चे के लिए सौंप दिया और अपनी छाती का लाल रक्त सफेद रंग के दूध में बदल कर अपने बच्चे को पिला दिया । ये कौन है ? तपस्विनी है । क्या दाम लिया ? कोई दाम नहीं लिया, वरन् अपने प्यार की वजह से अपने को न्यौछावर कर दिया । माँ तपस्या की मूर्ति होती है और कौन होती हैं तपस्या की मूर्ति- निगाह उठाकर देखते हैं तो धर्मपत्नी- दूसरी तपमूर्ति नजर आती है । चौबीसों घंटे काम करने वाली, प्रेम देने वाली, श्रम करने वाली, सेवा करने वाली, अपने शरीर का रस निचोड़ कर देने वाली, सारी जीवन और अपनी महत्वाकांक्षाओं को अर्पित कर देने वाली और बदले में गालियां खाने वाली-ये कौन है ? ये तपस्विनी है । यदि यह तपस्वी न होती तो दुनिया राक्षस हो जाती, आदमी पिशाच हो जाता और उसका कहीं ठिकाना न रहता । इसलिए तपस्विनी है- मेरी माँ, तपस्विनी है धर्म पत्नी, तपस्विनी है धरती । तपस्वी हैं पेड़, बादल, घास सब जगह तपस्वियों की बिरादरी है । सच्चा तपस्वी अपनी सारी जिंदगी को लोकहित के लिए- देश के लिए, श्रेष्ठ कार्यों को पूरा करने के लिए खर्च कर डालता है । तपस्वी वे नहीं हैं जो नंगे बैठे रहते हैं और धूनी रमाते हैं । वे और कुछ हो सकते हैं, पर तपस्वी नहीं ।

तपस्वी अपने लिए ही नहीं दूसरों के लिए भी कष्ट उठाते हैं, लेकिन किसलिए उठाते हैं, यह आप लोगों को मालूम होना चाहिए । हमारी माँ एकादशी के दिन उपवास रखती थीं । उस दिन कुछ भी नहीं लेती थीं । दूसरे दिन द्वादशी को हम बच्चों को बुलाती थीं और जो सामग्री खाने के काम आती थीं- जैसे आटा, दाल, चावल, गुड़, घी आदि थाली में रखकर कहती थीं, जाओ बेटा, इसे मंदिर में देकर आओ । हम दे आते थे तब माँ पानी पीती थीं । क्या मतलब है इसका ? इसका मतलब यह है कि हम तपस्वी हैं और कष्ट उठायेंगे । कष्ट उठाने की वजह से जो आपने बचत की है,उसे अच्छे कामों में लगायेंगे । तू जानता है उपवास किस लिए करते हैं ? उपवास इसलिए करते हैं- पेट पर पट्टी बाँधते हैं कि अमुक दिन हम नहीं खायेंगे और उससे जो बचत होगी उसे अच्छे कामों में खर्च कर देंगे इसका नाम है - तप । हम अगले दिनों ऐसी ही पीढ़ी पैदा करना चाहते हैं जो तपस्वियों की पीढ़ी हो । तपस्वियों में क्या बात होती है ? बेटे- तपस्वी साक्षात् देवता होते हैं । वे स्वयं तो मुसीबत उठा लेते हैं, लेकिन अपने पुण्य की वजह से, तप की वजह से, अपनी शक्ति की वजह से असंख्यों का बेड़ा पार कर देते हैं अगले दिनों हम असंख्यों का बेड़ा पार करने वाले तपस्वियों की नयी पीढ़ी बनायेंगे । कैसे बनायेंगे ? क्या इसी में बना देंगे ? नहीं बेटे, इसी में तो नहीं बनाते, पर हाँ हम एक ऐसी विचारधारा, एक ऐसी कार्य पद्धति , विचार करने का ढंग और एक ऐसी फ़िजा पैदा करेंगे जो सारे के सारे समाज में छाती हुई चली जायेगी और लोगों की लिप्साओं को लोभ और मोह के दृष्टिकोण को बदलती हुई चली जायगी । यह आदमी को झकझोर कर रख देगी और कहेगी कि हे इंसान ! तू इंसान की तरीके से जी । वनमानुषों, नर पशुओं और नर-कीटकों की तरीके से मत जी । एक ऐसी पैनी हवा उठेगी जो हर आदमी के कान पकड़ेगी और झकझोरेगी और यह कहेगी कि आपको नये युग के अनुरूप जीना चाहिए, सिद्धान्तों, आदर्शों, लोकहित एवं संसार की शांति के लिए जीना चाहिए ।

ऐसे व्यक्ति पैदा करने के लिए हमने ब्रह्मवर्चस बनाया है । इसमें मन की मलीनता को धोने के लिए उपासनायें भी करायेंगे । हमारे भीतर का भगवान सो गया है - देवता सो गया है हमारे भीतर की शक्तियाँ सो गयी हैं, सिद्धियाँ सो गयी हैं, चमत्कार सो गये हैं। हमारे भीतर का आनन्द सो गया है, हमारे भीतर का शिव सो गया है । सौन्दर्य सो गया है, भीतर की कला सो गयी है । सब कुछ सो गया है । अभी तो इस ढांचे में कोई पिशाच, कोई भूत-मसान लाल-पीले कपड़े पहने हुए घरों में घूम जाया करता है । इस पिशाच के भीतर से ही हम देवता को जगायेंगे । इन सारे के सारे क्रियाकलापों को करने के लिए हमने ब्रह्मवर्चस बनाया है । यहाँ से हम एक विचार, एक कार्य पद्धति, प्रोसीजर पैदा करेंगे और न जाने क्या से क्या पैदा करेंगे । नये युग का आह्वान करने के लिए एक ऐसे फैक्ट्री की जरूरत थी जिससे युग शक्ति का उदय किया जा सके । ब्रह्मवर्चस की स्थापना इसी के लिए की गयी है ।

हमने बहुत पहले तीन घोषणाएँ की थीं कि हम व्यक्ति निर्माण के लिए, परिवार निर्माण के लिए और समाज निर्माण के लिए काम करेंगे । यह हमारे मिशन का एक स्वरूप है । व्यक्ति निर्माण के लिए हम ब्रह्मवर्चस और उसकी कार्य पद्धति बनाते हैं । मानव उत्कर्ष की सारी की सारी प्रक्रिया हम यहाँ से पैदा करेंगे इंसान को मनस्वी और तपस्वी बनाने के लिए तपस्वी अर्थात् मनुष्य में देवत्व उदय होने की प्रक्रिया अर्थात् व्यक्ति निर्माण । व्यक्ति कैसे बनाया जा सकता है, यह प्रक्रिया हमारे छोटे से आश्रम ब्रह्मवर्चस से आरंभ होगी। आप इसके भविष्य को देखिये, इसके पीछे छिपी महानता को

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

देखिये, झण्डे के इस प्रतीक को देखिये । यह है तो एक प्रतीक, पर इसके पीछे न जाने क्या से क्या सत्ता भरी पड़ी है । एक बड़ी चीज की जिम्मेदारी भगवान ने हमारे ऊपर सौंपी है और इसके लिए हमने एक बड़ा प्लान बनाया है । इस बड़े काम में सहायता देने के लिए ही आपको बुलाया गया है । आपको इसके लिए बुलाया गया है कि हम समाज में एक ख्वाब पैदा करेंगे,नया युग लाने के लिए नये मनुष्यों को पैदा करेंगे । युगशक्ति पैदा करेंगे । आध्यात्मिक शक्ति पैदा करेंगे । लोगों में मनस्वी तत्व पैदा करेंगे जो मन से लोहा ले सकने में समर्थ हो सकें । हम मनुष्यों में तपश्चर्या का माद्दा-अर्थात् श्रद्धा और उदारता पैदा करेंगे, करुणा पैदा करेंगे, सेवा की वृत्ति पैदा करेंगे । अभी आदमी के भीतर तो निष्ठुर पिशाच बैठा हुआ है और कहता रहता है कि ला हमारे लिए धन, ला हमारे लिए मोह । यह पिशाच न तो सिद्धान्तों को भीतर आने देता है, न आदर्शों को आने देता है, न करुणा को आने देता है, न सेवा को आने देता है । चाहे भजन करने जायँ, चाहे मन्दिर में जायँ, हर जगह से यह अपना उल्लू सीधा करता रहता है ।

मित्रो ! हम मनुष्यों को बदलना चाहते हैं । इसके लिए हम आपको भी दावत देते हैं । इसके लिए क्या करना पड़ेगा ? इसके लिए आप अपने जीवनक्रम में थोड़ा सा हेर-फेर कर दें और भगवान को अपने जीवन में हिस्सेदार बना लें । हमने कई बार अपील की है कि आप लोग अपने जीवन में ईश्वर को साझीदार बना लें । बैंक को आप हिस्सेदार बना लेंगे तो आपका काम अच्छा चलेगा । बड़ी-बड़ी मिलें ऐसे ही चल रही हैं । उनमें पचास प्रतिशत पैसा बैंक का लगा हुआ है । बैंक उनको पैसा देती है, उसकी बिल्टियों पर एडवांस देती है, तब सारे काम चल रहे हैं । आप भी भगवान की बिल्टी लें, भगवान को हिस्सेदार बनायें और मालदार बनें । यदि कोई यह कहता है कि नहीं महाराज जी, भगवान की हमें कोई जरूरत नहीं है और हम तो ऐसे ही थोड़ा बहुत चालाकी से- बेईमानी से काम चला लेंगे, तो बेटा इससे काम चलेगा नहीं । सम्पन्न बनना हो, मालदार बनना हो तो भगवान को हिस्सेदार बनाना ही होगा । मैंने बार-बार लोगों से कहा है कि आप अपने जीवन में से थोड़ा सा हिस्सा भगवान के लिए खर्च करें और थोड़ा सा अपने लिए । भगवान के लिए जो हिस्सा खर्च करेंगे, उसके बदले में आप पायेंगे । भगवान को बहकायेंगे तो नहीं पायेंगे, वह सब भगवान को बहकाना है जो आप अब तक करते रहे हैं, ध्यान रखिये । भगवान को जिन्दगी में हिस्सेदार बनाने का मतलब यह है कि आप अपने समय का एक हिस्सा, अपनी अकल का एक हिस्सा, अपनी क्षमता का- प्रतिभा का एक हिस्सा, अपने प्रभाव का एक हिस्सा और अपने पैसों का एक हिस्सा भगवान के कामों में लगाइये । नहीं, महाराज जी, हम इस चक्कर में नहीं फंस सकते । चक्कर में नहीं फंस सकते तो आप तालाब की तरीके से सड़ेंगे और कोई बड़ी चीज नहीं पा सकेंगे ।

साथियो, मनुष्यों को श्रेष्ठ बनाने के लिए, सुखी और समुन्नत बनाने के लिए, नवयुग के अनुरूप शांति से रहने और रहने देने में सहायता करने वालों के लिए ब्रह्मवर्चस का यह प्रशिक्षण आरंभ किया गया है । व्यक्ति निर्माण हमारे आधार है । ब्रह्मवर्चस के पीछे जो एक छोटी इमारत के रूप में बनाया गया है, हमारा एक ही उद्देश्य है - युग शक्ति का उदय, आध्यात्मिक शक्ति का उदय, व्यक्ति को मनस्वी और तपस्वी बनाना और मनुष्य के भीतर उन शक्तियों को उदय करना जिससे वह अपने जीवन की नाव पार कर सके और असंख्यों की नाव पार करा सके ।

दूसरे नम्बर पर है-प्रज्ञा मंदिर, जिसका कि उद्घाटन करने के लिए हमने आपको बुलाया है । कौन सा प्रज्ञा मंदिर-गायत्री ज्ञान मंदिर । गुरु जी, गायत्री की मूर्ति तो हमारे यहाँ पहले से ही रखी हुई है, फिर दुबारा क्यों ? बेटे, ये मूर्ति नहीं है, यह प्रज्ञा मंदिर है । प्रज्ञा को हम सर्वोपरि मानते हैं । प्रज्ञा से बढ़कर और कोई चीज नहीं है -"नहि ज्ञानेन सदृशपवित्रमिह विद्यते ।" इसलिए हम भगवान को प्रज्ञा के रूप में पूजा करते हैं । "प्रज्ञा" किसे कहते हैं ? "प्रज्ञा" विवेकशीलता को कहते हैं- दूरदर्शिता को कहते हैं । अकल तो हमारे पास है, पर प्रज्ञा हमारे पास नहीं है- विवेक हमारे भीतर नहीं है । अकल किसे कहते हैं- और प्रज्ञा किसे कहते हैं ? अकल बेटे, वही होती है जो बी० ए०, एम०ए० पास करने के बाद में खरीदी जा सकती है । कैसी होती है अकल ? अकल ऐसी होती है जो हमारे लिए तुरन्त फायदा कराती है और यह नहीं देखती कि कल जो नुकसान होगा वह होता रहे । प्रज्ञावान कौन होता है ? किसान होता है । वह अभी नुकसान उठाता है और छह महीने बाद फायदा उठाता है । प्रज्ञावान विद्यार्थी होता है तुरन्त नुकसान उठाता है, दस-पन्द्रह साल तक पढ़ता है और फिर वह गजटेड अफसर बन जाता है । प्रज्ञावान दुकानदार होता है जो अपना धर खाली कर देता है, फिर उसके बाद कमाता है । जो दूर की बात सोचता है, उस दूरदर्शी को हम प्रज्ञावान कहते हैं । सिद्धान्तवादी को हम प्रज्ञावान कहते हैं और जो अपने छोटे-छोटे स्वार्थों के लिए छोटे-छोटे सामयिक स्वार्थों के लिए अपने भविष्य को अंधकारमय बना लेते हैं, उनको मैं अकलमंद कह सकता हूँ । विनाश की जड़ अकल ही है ।

अकलमंद कैसे होते हैं ? अकलमंद ऐसे होते हैं जैसे आप । आप बहुत अकलमंद हैं, आपकी जितनी प्रशंसा की जाय कम है । आपकी अकल का मुकाबला कोई और कर सकता है क्या ? नहीं और कोई नहीं कर सकता सिवाय कौआ के ? कौआ बड़ा अकलमंद होता है, बहुत चालाक होता है । मनुष्य की सारी की सारी अकल ऐसे ताने-बाने बुनती रहती है कि क्या कहा जाय । बेटे, ताने-बाने बुनने वाली इस अकल के स्थान पर हम एक नयी सत्ता को स्थापित करना चाहते हैं, उसका नाम है -प्रज्ञा । प्रज्ञा के सामने हम मस्तक झुकाते हैं, प्रज्ञा की देवी को हम नमस्कार करते हैं । प्रज्ञा की देवी कौन है - गायत्री माता । गायत्री माता कौन है —प्रज्ञा । प्रज्ञा किसे कहते हैं- ऋतम्भरा प्रज्ञा को-दूरदृष्टि को विवेकशीलता को, न्यायदृष्टि को । इसी गायत्री माता की हम साधना करते हैं । तो महाराज जी, गायत्री माता वह है जो थैली में रुपये लेकर आती है ? नहीं बेटे, वह रुपये वाली नहीं है । मित्रो, आपको यह जानना चाहिए कि वस्तुतः गायत्री किसका नाम है ? गायत्री है श्रद्धा का नाम- प्रज्ञा का नाम । हम इसी प्रज्ञा की स्थापना करेंगे और जन-जन से कहेंगे कि आप प्रज्ञा के सामने मस्तक झुकाइये, विवेकशीलता के सामने मस्तक झुकाइये ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

हमने जो भी स्थापनायें की हैं, उसका नाम है - श्रद्धा । हम श्रद्धा की स्थापना करते हैं । श्रद्धा क्या ? श्रेष्ठता के प्रति असीम प्यार- इसका नाम है श्रद्धा । श्रद्धा मनुष्यों के भीतर से चली गयी । श्रेष्ठता के लिए हम जबान से भले ही प्रशंसा कर दें, लेकिन असीम प्यार करने वाली वह श्रद्धा चली गयी जिसके लिए आदमी त्याग कर सके, कष्ट उठा सके । यह देवी कौन है जिसकी हमने स्थापना की है । इसका नाम है श्रद्धा । ये कौन है ? बेटे ये नारी की गरिमा की स्थापना है । नारी की गरिमा कैसी होती है ? नारी की गौरव-गरिमा सत्य, शिव और सुन्दर की तीनों विशेषताओं से सम्पन्न, एक प्रतीक है । नारी का एक प्रतीक है- एक सम्बल है जो हमारी बेटी के रूप में, भगिनी, धर्म पत्नी और हमारी माता के रूप में विद्यमान है । श्रद्धा नारी के प्रति श्रेष्ठता के भाव-गरिमा के भाव जाग्रत करती है । नारी के प्रति श्रद्धा, नारी के प्रति नमन्, नारी के प्रति सम्मान , आस्था उत्पन्न करने के लिए ही हमने गायत्री माता को नारी के रूप में बना दिया, तो क्या आप नर के रूप में भी बना सकते थे ? हाँ, हम नर के रूप में भी बना सकते थे, क्योंकि ब्राह्मी शक्ति, ब्रह्मा और गायत्री एक ही शक्ति है । सरस्वती, लक्ष्मी और विष्णु एक ही बात है । पार्वती और शंकर एक ही बात है । इस माध्यम से हम नारी की गरिमा बढ़ाते हैं और यह कहते हैं कि नारी के प्रति अर्थात् पवित्रता के प्रति, करुणा के प्रति कला के प्रति, सौन्दर्य के प्रति, तपश्चर्या के प्रति नमन करें । हमने यही स्थापना की है ।

देश भर में हमने प्रज्ञा मंदिरों की स्थापना की है । प्रज्ञा मंदिरों से आप क्या करेंगे ? प्रज्ञा मंदिरों से बेटे हम वह काम करेंगे जो बहुत दिनों पहले मिशन के लिए यह घोषणा की थी कि हम नया समाज बनायेंगे । तो नये समाज का आधार क्या होगा- बताइये ? हर एक के मेनीफेस्टो होते हैं । नया समाज बनाने का आधार हमारा यह है कि हम आदमी का चिन्तन बदल देंगे और जनमानस का परिष्कार करेंगे । हम हर आदमी का मन बदल देंगे । मन बदलने से क्या होगा ? मन बदलने से व्यक्ति की समस्याएँ और समाज की परिस्थितियाँ दोनों बदल जायेंगी । हमने आपको कितनी बार बताया है । कि हर आदमी की व्यक्तिगत समस्याएँ और समाज की असंख्य समस्याएँ- इन सबका एक ही कारण है - आदमी का मन । आदमी का मन अगर सड़ेगा तो उसमें से कीड़े, मच्छर, मक्खी आदि बीसों चीजें पैदा होंगी, बदबू पैदा होगी । कीचड़ को आप साफ कर दीजिए, फिर मच्छर भगाने की जरूरत नहीं पड़ेगी । हमारे चिन्तन की मलीनतओं सारे के सारे समाज में असंख्य परिस्थितियाँ पैदा करती हैं-- राष्ट्रीय, सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन में । इसलिए हम समाज निर्माण के लिए इस बात का शिक्षण करते हैं कि शालीनता, सज्जनता, भलमनसाहत, ईमानदारी, और शराफत आदि तत्वों को आगे बढ़ाना चाहिए । समाज का अभिनव निर्माण इन्हीं आधारों पर खड़ा होगा ।

मित्रो, गायत्री माता क्या है ? यह ईमानदारी और नेकनीयती, सज्जनता और शराफत की देवी है । इसके माध्यम से हम सबको समझायेंगे । राजहंस इसका वाहन है । इसे यह पसंद करती है, दुलार करती है और चौबीसों घंटे साथ लिए फिरती है । यह राजहंस ऐसा है जो नीर-क्षीर का विवेक करता है, जो मोती खाता है-कीड़े नहीं खाता । नहीं गुरुजी, हंस तो कीड़े खाते हैं। हाँ बेटे, हंस कीड़ खाते हैं, पर गायत्री माता का राजहंस अलग है गायत्री माता की स्थापना करके हम राजहंस पैदा करना चाहते हैं । हम गायत्री उपासकों में राजहंस की वृत्ति पैदा करना चाहते हैं । सावित्री की उपासना करने वालों को सत्यवान् बनाना चाहते हैं । गायत्री का ही नाम सावित्री है और सावित्री का वरण करने के लिए- माला पहनने के लिए सत्यवान की जरूरत पड़ती है । गुरु जी ! आप तो सिद्धान्तों का प्रतिपादन कर रहे हैं, देवी-देवताओं की बात नहीं कहते ? क्या देवी-देवता फायदा नहीं कराते ? हाँ बेटे, देवी-देवता फायदा कराते हैं, लेकिन वे देवी-देवता सिद्धान्त होते हैं, आदर्श होते हैं । मनुष्य की महानता -मनुष्य के गुण होते हैं, श्रेष्ठतायें होती हैं । देवी वह नहीं होती जो पहाड़ पर गंदिर में बैठी रहती है और बकरे खाती है । देवी ऐसी नहीं हो सकती - वह तो कोई डाकिन होगी, भूतिन होगी । आपकी देवी और हमारी देवी में फर्क है । हमारी देवी देवत्व की निष्ठायें हैं, देवत्व के प्रति आस्थायें हैं । देवत्व के संकल्प, देवत्व की मान्यताएँ, भावनाएँ हैं । इन्हीं का हम विस्तार करना चाहते हैं । प्रज्ञा मंदिर हमने इसी लिए बनाया है । तो क्या आप इसी मंदिर में से गायत्री उपासना सबको सिखा देंगे ? नहीं बेटे, हमने तो ये प्रतीक बनाया है यह एक सिम्बल है । हम चाहते हैं कि इसका विस्तार हो ।

प्रज्ञा-विस्तार के लिए क्या-क्या काम करने होंगे ? इसके लिए हमें बहुत काम करने होंगे । हमने आप लोगों को इसीलिए बुलाया है । कि लोगों की अकल को बदलने के लिए कई कार्यक्रम हाथ में लेने चाहिए । आदमी को विवेक की विचारधारा, अकल की नहीं- विवेक की न्याय की, सिद्धान्तों की, आदर्शों की विचारधारा को बताने के लिए- हृदयंगम कराने के लिए हमको और आपको दो काम करने चाहिए । एक तो लोगों को अपने पास बुलाना चाहिए और दूसरा लोगों के घरों पर जाना चाहिए । यह प्रज्ञा की देवी गायत्री माता की सबसे बड़ी सेवा है । तो क्या भजन करें ? हाँ भजन तो करना ही पड़ेगा । भजन तो हम भी करते हैं, लेकिन उतने से ही काम पूरा नहीं होगा । भजन के साथ-साथ में उसको चरितार्थ करना भी बेहद जरूरी है । इस वास्ते हमने एक आन्दोलन आपको दिया है कि आप ज्ञानरथ चलायें- गायत्री माता का ज्ञान रथ । ज्ञानरथ कैसा होता है ? ज्ञान रथ ऐसा होता है जैसा कि जगन्नाथ जी का रथ निकलता है और रथ यात्रा होती है । वृंदावन में रंग जी का एक मंदिर है । उस मंदिर से जब रथ यात्रा निकलती है तो वह घर-घर जाती है । बूढ़े और बच्चे जो मन्दिर नहीं पहुँच पाते, उनके लिए भगवान को रथ पर बिठाकर घर-घर ले जाते हैं और कहते हैं कि देखिये साहब, आप तो रंग जी के मंदिर नहीं पहुँच पाये थे, अब हमने भगवान को आपके घर में लाकर रख दिया है, आप दर्शन कीजिए ।

युग के अनुरूप विचार क्रान्ति के लिए- ज्ञानयज्ञ के लिए हम भी अलख निरंजन कहते हुए बादलों की तरीके से, तीर्थ यात्रा की तरीके से घर-घर जायेंगे अपने साहित्य को लेकर। जो लोग पढ़े-लिखे नहीं हैं, समझ भी नहीं सकते, उनके लिए लेखनी के अलावा एक और चीज रह जाती है । उसका नाम है वाणी । वाणी को हम घर-घर लेकर जायेंगे और अलख जगायेंगे । तीर्थ यात्रा प्राचीन काल में इसीलिए होती थी ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

पदयात्रा का और कोई उद्देश्य नहीं था । यह मात्र धर्म प्रचार के लिए अर्थात् ज्ञान-प्रचार के लिए होती थी । चाहे वह ब्रज चौरासी कोस की परिक्रमा हो या नर्मदा की परिक्रमा । धर्म क्या होता है-अच्छे ज्ञान और अच्छे विचार । अच्छे विचारों को फैलाने के लिए घर-घर जाना पड़ता है । ये क्या है ? ये बेटे वही है जिसे हम प्रज्ञा का -गायत्री माता का प्रचार कहते हैं । प्रज्ञा का प्रसार करने के लिए सम्मेलनों की बात कहते हैं घर-घर जाना जब मुश्किल पड़ता है तब लोगों को एक जगह जमा कर लेते हैं और अपनी बात उनसे कम समय में कह देते हैं । आप क्या बोलते हैं ? बेटे हम गायत्री मंत्र बोलते हैं-चौबीसों घंटे । नहीं गुरु जी, आप तो व्याख्यान करते हैं । नहीं बेटे हम व्याख्यान नहीं करते - गायत्री मंत्र बोलते हैं- केवल गायत्री मंत्र । हमारी वाणी से और कोई दूसरा शब्द नहीं निकलता । हमारा सारा जीवन गायत्री माता को समर्पित है । इसलिए हम गायत्री के अलावा दूसरा शब्द बोल ही नहीं सकते । एक स्वामी जी केवल एक ही शब्द बोलते थे- **' श्रीकृष्णः शरणं मम ।'** इसी तरह एक और स्वामी जी थे जो यह बोलते थे- **'हरे राम-हरे कृष्ण'** इसका अलावा और कोई दूसरा शब्द नहीं बोलते थे, मात्र इशारा कर देते थे । हम भी गायत्री मंत्र बोलते हैं । हमारा मिशन गायत्री मंत्र बोलता है ।

गायत्री मंत्र का अर्थ क्या है ? गायत्री मंत्र का अर्थ है - अवांछनीयता के विरुद्ध संघर्ष । गायत्री मंत्र के ''भर्गो'' शब्द के माने हैं- जो अवांछनीय तत्व है उसको भून डालना, उसके विरुद्ध लोहा लेना, संघर्ष करना । यही विचार क्रान्ति है । और ज्ञान यज्ञ क्या है ? ज्ञान यज्ञ वह है जिसमें से सद्भावना का उदय होता है, श्रेष्ठता, का उदय होता है । यही काम हमको और आपको करना है । बहुत से कार्यक्रमों के लिए हम आपको बुलाते रहते हैं । ये सब क्या है ? बेटे, यह गायत्री मंत्र की उपासना के अतिरिक्त और कुछ नहीं है । आपको तो इसलिए मालूम नहीं पड़ता कि आप माला घुमाने को ही गायत्री मंत्र कहते हैं और अच्छे विचारों के विस्तार के लिए जो प्रयास किये जाते हैं उसको आप गायत्री मंत्र नहीं मानते । वस्तुतः अच्छे विचारों का-अच्छी भावनाओं का संवर्धन करना विशुद्ध गायत्री मंत्र की उपासना करना है । मैं चौवीसों घंटे इसी महामंत्र की उपासना करता हूँ-जप करता हूँ । सोलह घंटे काम करता हूँ नहाने-धोने, खाने-पीने, सोने सबमें गायत्री मंत्र की उपासना करता हूँ । अच्छे विचारों को फैलाना, जन-जागरण करना, लोगों की भावनाओं को परिवर्तित करना उसके लिए परामर्श देना- ये सारे के सारे कार्य हैं जो आपको करना चाहिए ।

ब्रह्मवर्चस में प्रज्ञा मंदिर की स्थापना करने के लिए जो आप आये हैं, इसमें हम आपको गायत्री मंत्र की उपासना, गायत्री मंत्र का साक्षात्कार, गायत्री मंत्र का दर्शन, गायत्री मंत्र की विशेषता और गायत्री मंत्र को जीवन में समावेश कर लेना- इसकी विधियाँ सिखायेंगे । सारे विश्व में हम गायत्री मंत्र की एक हवा पैदा करेंगे । चारों ओर गायत्री मंत्र की हवायें पैदा करेंगे जिसे सभी मानेंगे । गायत्री मंत्र की जो निष्ठाएँ हैं, जो प्रेरणायें हैं, गायत्री मन्त्र की जो दिशा है, जो कल्पना है, वह हर एक को हृदयंगम करायेंगे और उनसे यह कहेंगे कि यह सार्वभौम मंत्र है - सर्वजनीन मंत्र है और इसमें व्यक्ति विशेष के लिए कोई अंतर नहीं पड़ता । ज्ञानरथ चलाने से लेकर सम्मेलन करने तक सभी हमारे कार्यक्रम गायत्री माता को घर-घर पहुँचाने के लिए हैं । हमारे सम्मेलन राजनैतिक सम्मेलन नहीं हैं । हमारे सम्मेलनों में केवल मनुष्यों के भीतर से सद्भावना जगाना, सत्प्रेरणा जगाना, सत्प्रवृत्तियाँ जगाना- बस यही एक उद्देश्य है । इसी के लिए हम आपको कार्यक्रम देते हैं, क्षेत्रीय सम्मेलन बुलाने के लिए कहते हैं । क्षेत्रीय सम्मेलनों में हम गायत्री माता के सद् विचारों का प्रसार करेंगे । इसके लिए जो भी व्यक्ति भेजे जायँ, हम चाहते हैं कि वे हमारे शब्दों में बोलें, हमारी वाणी में बोलें और हमारे जैसे बोलें । अगले दिनों समाज का नया निर्माण करने के लिए- विचारों को विस्तार देने के लिए प्रज्ञा मंदिरों का विस्तार होगा । आज तो एक शुरुआत है जिसका कि अभी-अभी उद्घाटन हुआ है ।

साथियो, गायत्री एक परिवार है । परिवार निर्माण करने की प्रणाली है । परिवारों का निर्माण कैसे करना चाहिए- इस संबंध में हमने एक बार ''लार्जर फेमिली'' नाम से एक लेख छापा था । उसमें घर-परिवार कैसे बनने चाहिए, कुटुम्ब -समाज कैसे बनने चाहिए, यह बताया गया था । गायत्री परिवार, युग निर्माण परिवार,अखण्ड ज्योति परिवार जैसे शब्द हमें बहुत प्यारे लगते हैं । बेटे, यह हमारा परिवार है जिसमें स्वर्ग का अवतरण होने वाला है । स्वर्ग का अवतरण सबसे पहले कहाँ होगा ? परिवार में होगा, फिर वहाँ से व्यक्तियों में फैलेगा और समाज में फैलेगा । स्वर्गीय वातावरण वाले पारिवारिक खदानों से ही नर-रत्न पैदा होते हैं । कॉलेज में से-गुरुकुल में से नर-रत्न पैदा नहीं होते । हाँ गुरुकुल यदि कोई परिवार होगा तो वहाँ से पैदा हो जायेंगे । परिवार नहीं होगा तो वहाँ भी पैदा नहीं होंगे । परिवार कैसे बनने चाहिए ? परिवार ऐसे बनने चाहिए जैसे कि एक महिला ने परिवार की पाठशाला में- प्रयोगशाला में तीन ब्रह्मज्ञानी बना दिये थे, जिनका नाम था- बिठोवा, बिनोवा और बालकोवा । परिवार को कौन चला सकता है ? परिवार को चलाने का स्वामी-अधिकारी एक ही है और उसका नाम है- नारी । नारी के पास वो शक्ति है जो मनुष्य के अकल को तो नहीं, पर हृदय को ठीक कर सकती है । नारी के पास अकल तो कम है, पर हृदय तत्व बहुत विशाल है । शरीर से ताकत से भी वह कमजोर पड़ती है, लेकिन श्रद्धा में बढ़ी-चढ़ी ही होती है । मनुष्य के भीतर की मनुष्यता को शालीनता को विकसित करने के लिए एक ही तत्व काम करता है और उसका नाम है - श्रद्धा । श्रद्धा-भावना से भरी हुई नारी को हम जगाना चाहते हैं । परिवार संस्था को जीवित करना चाहते हैं ।

आज परिवार संस्था खतम हो गयी है और रह गये हैं बस स्त्री-पुरुष । स्त्री-पुरुष कौन होते हैं- वासना के शिकार । ब्याह किसके लिए होता है- वासना के लिए - प्रेम के लिए नहीं । प्रेम किसे कहते हैं ? बेटा, प्रेम तो चला गया, प्रेम तो दुनिया में रहा ही नहीं, श्रद्धा तो है ही नहीं, सहयोग तो रहा ही नहीं । परिवार संस्था खतम हो गयी । परिवार कैसे होने चाहिए ? इस संस्था को जीवित रखने के लिए हम नया प्रयोग करते हैं और अपने कुटुम्बियों कार्यकर्त्ताओं को बुलाकर कहते हैं कि आप अपने कुटुम्ब हमारे हवाले

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

कीजिए, हम उनका शिक्षण करेंगे । गुरु जी, आप तो संत हैं । हाँ बेटे, हम संत हैं, इसलिए हम कुटुम्बों का शिक्षण कर सकते हैं । भगवान राम के बीबी-बच्चों का शिक्षण महर्षि वाल्मीकि ने जैसे अच्छी तरह से किया था, वैसा कोई और दूसरा नहीं कर सकता था । लव, कुश और सीता को जिस सुख और शान्ति से उनने रखा, वैसा और कोई नहीं रख सकता था । यह काम केवल संत ही कर सकते हैं । परिवारों का निर्माण कैसे करना चाहिए इसके लिए हमने एक प्रयोगशाला बनायी है- एक कॉलोनी बसाई है- नाम है उसका गायत्री नगर । इसमें हम शिक्षण देंगे कि नारी को कैसे विकसित करना चाहिए ? नारी-शिक्षण कैसे होने चाहिए ? लार्जर फेमिली सिस्टम कैसे बनने चाहिए ? घरों में स्वर्गीय वातावरण कैसे बनाने चाहिए ? इसके लिए हम सौ क्वार्टरों की सौ फैमिली की एक प्रयोगशाला बना रहे हैं । आप भी अपने घरों में लार्जर फैमिली का परिवार निर्माण करने की प्रक्रिया का पालन करेंगे ।

अपने कुटुम्बों का निर्माण करने के लिए आपको क्या करना चाहिए ? इसकी शुरुआत करने के लिए हम तिनके के बराबर सबसे छोटा एक प्रोग्राम बताते हैं । आप अपने परिवार में आस्तिकता, धर्म और श्रद्धा- इन तीनों को प्रवेश कराने का प्रयत्न कीजिए । इसके लिए आप अपने घरों में गायत्री माता के, भगवान के चित्र स्थापित कीजिए । चौकी पर स्थापित कर सकें तो अच्छा है, अन्यथा यदि जगह कम है तो जरा सा ऊँची दीवार के ऊपर गायत्री माता के एक चित्र लगा दें जहाँ कि छोटे बच्चों के हाथ न पहुँच सकें । अब एक नियम बना लें कि घर का कोई भी सदस्य तब तक खाना नहीं खायेगा जब तक कि भगवान को गायत्री माता को प्रणाम नहीं कर लेगा । दो मिनट-पाँच मिनट गायत्री माता का जप कर लें, पर यदि समय न हो तो भी चित्र के सामने नंगे पैर जाइये हाथ जोड़िये, माथा झुकाइये । यह न्यूनतम उपासना है । पाँच बार गायत्री मंत्र का जप मन ही मन करें और प्रकाश अथवा गायत्री माता का ध्यान करें । आस्तिकता की शुरुआत के लिए यह न्यूनतम मर्यादा है । हम चाहते हैं कि आप लोगों के घरों में ऐसा एक भी व्यक्ति न बचे जिसमें आस्तिकता की शुरुआत न हो गयी हो । गायत्री महामंत्र क्योंकि सार्वभौम मंत्र है, अत: अगले दिनों जब नया विश्व बनेगा तो एक आधार जरूर रखना पड़ेगा किसी न किसी उपासना का । अपना भगवान यह कहता है कि सारे विश्व में अगले दिनों जो उपासना होने वाली है, वह गायत्री मंत्र की होने वाली है । अत: आप अभी से अपने घरों में वह आस्तिकता पैदा करें और अपने पड़ोसियों तक इसे फैलायें । न्यूनतम गायत्री उपासना का यह क्रम अवश्य अपनाएँ ।

एक बात और रह जाती है और वह है- यज्ञ । यज्ञ का क्रिया कलाप भी हर घर में चलना चाहिए । भले से वह न्यूनतम ही क्यों न हो । यज्ञ का क्रिया कलाप कम से कम क्या हो सकता है ? बेटे, यज्ञ का कम से कम क्रिया कलाप इतना सरल है जिसे स्त्रियाँ कर सकती हैं और गायत्री को तथा यज्ञ को जिंदा रख सकती हैं । इसलिए मैंने आपसे प्रार्थना की है कि आप इसमें मदद करें । आप यज्ञ और गायत्री माता का पूजन न कर सकते हों तो अपने घर की स्त्रियों को इसके लिए प्रोत्साहित करें । उनकी हिम्मत बढ़ा दें । इतने से भी काम चल सकता है । यज्ञ की परम्परा इतने से भी जिंदा रह सकती है । इसके लिए करना यह है कि खाना बनाते समय चूल्हे में से थोड़ी सी अग्नि निकालें और उसमें जरा सा दो बूंद घी की आहुति स्वरूप डाल दें । अब रोटी के छोटे-छोटे पाँच टुकड़े किये जायँ और प्रत्येक बार गायत्री मंत्र बोलते हुए पाँच बार उन टुकड़ों में जरा सा घी और शक्कर या गुड़ मिलाकर स्वाहा के साथ चूल्हे की अग्नि में समर्पित कर दिया जाय । प्रारम्भ में हथेली की अंजली सी बनाकर उसमें थोड़ा जल भर लें और गायत्री मंत्र बोलते हुए अग्नि के चारों ओर छिड़क दें । दो बूंद शुरू में और दो बूंद आखिर में घी डाल दें तथा एक बूंद पूर्णाहुति की एवं एक बूंद बसोधारा की डाल दें । प्रारम्भ में अग्नि को प्रज्वलित करने का मंत्र 'ॐ अग्नेनय सुपथा राये .....।' आता हो तो बोल लीजिए, अन्यथा कोई जरूरत नहीं है । गायत्री मंत्र से ही पूरा हवन कर लीजिए । अब आपको यज्ञ से बचा हुआ भोजन-संस्कारित भोजन मिलेगा ।

आप सिद्धान्तों को लेकर चलिए, प्रतीक को देखिये । बड़ा यज्ञ नहीं कर सकते तो कोई बात नहीं, लेकिन प्रतीक तो चलना ही चाहिए । प्रतीक को जिंदा रखिये, मेरा उससे भी काम चल जायेगा । समय आयेगा तो हम प्रतीक को आगे बढ़ा देंगे । आप अपने घरों में यज्ञीय परम्परा को जिंदा रखिये । स्त्रियाँ खाना पकाते समय गायत्री मंत्र का जप किया करें । मातायें अपने बच्चों को दूध पिलाते समय गायत्री मंत्र का जप किया करें । यह अन्न, यह आहार और यह दूध आप में और बच्चों में नये युग के अनुरूप नयी बुद्धि पैदा करेगा । देखने में यह छोटी सी बात मालूम पड़ती है, परन्तु इसके सत्परिणाम और फलितार्थ असाधारण हैं । आप यह छोटी सी शुरुआत तो करें, फिर देखें क्या परिणाम मिलता है । अभी हम आपके ऊपर बड़ी चीज लादना नहीं चाहते । बच्चों के ऊपर बड़ी एवं भारी चीज का वजन लादना बड़ा मुश्किल है, अत: आप छोटी सी चीज से शुरु कीजिए और फिर क्या काम करें ? आप फिर एक और कदम यह बढ़ाइये कि प्रात: और सायंकाल गायत्री माता की सामूहिक प्रार्थना-आरती किया करें । यदि दोनों वक्त सामूहिक आरती हो सके तो अति उत्तम है अन्यथा सुबह या शाम में से एक बार सामूहिक रूप से गायत्री माता की आरती- भगवान की प्रार्थना अवश्य किया करें । प्रार्थनाएँ सामूहिक रूप से गायी जायें । इसके साथ ही घर के सभी सदस्य मिलकर सहगान के आधार पर एक - दो गीत गा दें, प्रार्थना गा दें । इससे जो वातावरण बनेगा वह व्यक्ति को अन्दर तक झकझोर कर रख देगा, अन्दर तक हिला कर रख देगा । हमारे यहाँ इसी तरह की सामूहिक प्रार्थनाएँ होती हैं, आपने देखा होगा कि कैसे मन को कँपा देती हैं, हृदय को झंकृत कर देती हैं । यही संगीत परम्परा आप अपने घरों में जारी रखें । इससे न केवल घर-परिवार में आस्तिकता का वातावरण बनेगा वरन् पड़ोस में -समाज में भी वह प्रचलन चल पड़ेगा जिसकी आवश्यकता धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के उदय के लिए है । नया युग लाने के लिए-नया समाज बनाने के लिए आध्यात्मिक शक्ति पैदा करना अनिवार्य है । हम और आपको इसमें जी-जान से जुट पड़ना चाहिए । आज की बात समाप्त ।

ॐ शान्ति

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

इसी माह महावीर एवं हनुमान जयंती दोनों हैं । उसी उपलक्ष्य में परमपूज्य गुरुदेव के श्रीमुख से निकली अमृतवाणी जो ६ अप्रेल १९७४ की पावन वेला में शांतिकुंज में गुंजायमान हुई थी, प्रस्तुत है । पढ़ें और प्रेरणा पायें ।

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो, भाइयो ! आज भगवान महावीर का और रामभक्त हनुमान का जन्म दिन है । जैन धर्म के प्रथम संस्थापक भगवान महावीर का यह जन्म दिवस है और आज ही हनुमान जी का भी है । भगवान भक्त हनुमान भी आज ही जन्मे थे । वे हमारे प्रेरणा के स्रोत हैं । आज का दिन कितना शुभ है । भगवान महावीर राजकुमार थे । उनने सोचा कि राजकुमार होने की अपेक्षा संत होना अच्छा है, अतः हमें संत बन कर जीना चाहिए, क्योंकि राजकुमार की-राजा की शक्ति की अपेक्षा संत की शक्ति बड़ी है । संत समाज की जो सेवा कर सकता है वह राजा नहीं कर सकता । यह विचार करने के बाद उन्होंने बुद्ध भगवान की तरह अपना राजपाट छोड़ दिया और तपश्चर्या में निमग्न हो गये । यद्यपि वे चाहते तो राजसत्ता के माध्यम से समाज की सेवा कर सकते थे, लेकिन उन्होंने देखा कि राजसत्ता का दायरा बहुत सीमित है-बड़ा क्षुद्र है । धर्म तंत्र की शक्ति राजतंत्र की तुलना में असंख्य गुनी अधिक है । राजसत्ता केवल भौतिक जीवन पर प्रभाव डाल सकती है, लेकिन हमारे अन्तःजीवन में प्रवेश नहीं कर सकती ।

साथियो, हृदय-हृदय पर शासन किसका होता है ? हृदय-हृदय पर शासन धर्मतंत्र का था, है और रहेगा । भौतिक वस्तुओं पर शासन सरकार का रहेगा और सरकार का था । बहुत दिन पहले की बात है जब हमने राजनीति त्याग करके धर्मतंत्र में प्रवेश किया था । इसके पहले कांग्रेस आन्दोलन में जब तक रहे, तब बार-बार जेल जाता रहा । इसके पश्चात् जब इसको छोड़ा और धर्मतंत्र की ओर बढ़ा तब लोगों ने बार-बार यही कहा कि राजसत्ता में जो आदमी होता है वह मिनिस्टर बन जाता है और उसके पास मोटरें होती हैं और दुनिया उसका कहना मानती है । दुनिया में उसकी इज्जत होती है । तब मैंने कहा था-कि मैं यह तो नहीं कहता कि राजसत्ता में कोई बुराई है और वह समाज की कोई सेवा नहीं कर सकती, लेकिन मैं यह अवश्य कहता हूँ कि राजसत्ता सीमित है सीमाबद्ध है । इसमें व्यक्ति किसी प्रान्त का मिनिस्टर हो सकता है और उसी प्रान्त के लोगों को प्रभावित कर सकता है । दक्षिण भारत का मुख्यमंत्री कौन है जरा बताइये ? अगर वह मंत्री आये और आपके ऊपर प्रभाव डाले तो क्या कोई प्रभाव पड़ सकता है ? नहीं, कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता । लेकिन दक्षिण भारत के रहने वाले केरल निवासी जगतगुरु शंकराचार्य केरल को छोड़ कर जब बाहर निकल गये और सारे हिन्दुस्तान में काम करते चले गये, चारों धाम की स्थापना करते चले गये, तो सारा देश उनके चरणों में नतमस्तक हो गया । यह धर्म की शक्ति का द्योतक है । अभी भी लोग हमसे बार-बार पूछते हैं कि आप राज सत्ता से दूर क्यों हैं ? बेटे राजसत्ता से राजतंत्र से उसके घपलों से हमारा कोई ताल्लुक नहीं है । हम उन लोगों में से हैं जो यह जानते हैं कि मनुष्य के जीवन में राजनीति का क्या स्थान है ।

राजनीति और आदमी अब जुड़ गया है । तिब्बत के दलाई लामा को राजनीति के कारण तिब्बत छोड़कर भाग जाना पड़ा । भगवान बुद्ध का जन्म स्थान था तिब्बत जहाँ से पैदा होने के बाद बुद्धावतार न जाने कहाँ से कहाँ चला गया । चीन में न जाने क्या से क्या हो गया । कभी चीन में बौद्ध धर्म इतना फैला हुआ था कि हिन्दुस्तान से भी अधिक बौद्ध लोग चाइना में रहते थे । वहाँ अभी भी बौद्ध विहारों के खण्डहर बहुत ज्यादा हैं । चीन की लाइब्रेरियों में बौद्ध धर्म की इतनी अधिक पुस्तकें हैं कि दुनिया में और कहीं भी नहीं है । लेकिन क्या हो गया ? चाइना से बौद्ध धर्म का सफाया हो गया । वहाँ अब कोई धर्म नहीं है-न हिन्दू धर्म है, न मुसलमान धर्म है, न ईसाई धर्म है सब धर्म साफ हो गये । ऐसा इसलिए हो गया क्योंकि धर्मतंत्र अपनी गरिमा को क्षमता को भूल गया । राजसत्ता की शक्ति कितनी बड़ी है और वह क्या कर सकती है, इसे देखना हो तो जर्मनी में पिछले दिनों हिटलर की शासन सत्ता को देख सकते हैं । उसने सारी की सारी शिक्षा प्रणाली को बदल कर रख दिया था और थोड़े ही दिनों में सारे देश को नाजी बना दिया था । राजसत्ता की शक्ति बड़ी जबर्दस्त है, इससे मैं इनकार नहीं करता हूँ, पर मैं यह कहता हूँ कि राजसत्ता को अच्छा बनाने के लिए ऊपर से काम करना ही काफी नहीं है । राजसत्ता की जड़ें जमीन में होनी चाहिये । आप ऊपर से देख भाल करेंगे, डालियों को झाड़ेंगे, पत्तों को साफ करेंगे, लेकिन जड़ों की ओर ध्यान नहीं देंगे तो पेड़ के चरमराकर गिर जाने का अंदेशा बना ही रहेगा । फिर बाग किस तरीके से बनेगा ? यह काम केवल धर्मतंत्र कर सकता है । असली शक्ति-क्षमता धर्मतंत्र के हाथों में है । राजतंत्र केवल कानून बना सकता है, लोगों को रोक सकता है,

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

लोगों को गिरफ्तार कर सकता है, लेकिन सारे देश में विद्यमान मुख्य समस्याओं को हल नहीं कर सकता ।

कल मैं आपसे निवेदन कर रहा था कि कोई भी काम केवल कानून बना देने से पूरा नहीं हो सकता । कोई भी बुरा काम ऐसा नहीं है दुनिया में जिसके खिलाफ गवर्नमेन्ट ने कानून न बनाये हों और जेलखाने न बनाये हों, पुलिस न बनाये हों । पर बताइये कौन से कानून से कौन सा पाप रुक गया ? भ्रष्टाचार रुक गया ? रिश्वतखोरी रुक गयी ? मिलावट रुक गया ? बताइये एक भी पाप रुक गया हो तो जब कि सारे के सारे कानून बने हुए हैं । कानून इनसान के ऊपर हुकूमत नहीं कर सकता और इनसान की इच्छाएँ नहीं बदल सकता । इनसान की इच्छायें बदलने की शक्ति धर्मतंत्र में है । राजतंत्र की अपेक्षा धर्म तंत्र बड़ा है । धर्मतंत्र की शक्ति का ठिकाना नहीं । उसकी ताकत बड़ी है, प्रभाव बड़ा है, अतः समस्याओं के समाधान में भी वही सफल हो सकता है । धर्मतंत्र के बिना मनुष्य के ऊपर और कोई अंकुश नहीं रख सकता । समाज के ऊपर जब कभी अंकुश रखा जायेगा तो धर्म के द्वारा-भगवान के द्वारा रखा जायेगा । धर्म के अलावा और कोई अंकुश ऐसा नहीं है जिससे मनुष्य को काबू में रखा जा सके और सही राह पर चलाया जा सके । समाजशास्त्र के कायदे कानून चाहे जितने बनाइये, लेकिन कायदे और कानून बनाने के बाद में भी ऊँचे से ऊँचे आदमी भी गलत काम करते पाये और देखे गये हैं ; कितने ही उच्चपदस्थ लोगों ने अपने-अपने देशों की मिट्टी पलीद कर दी है, यह किसी से छिपा नहीं है । कानूनों के नाम पर चाहे जो कुछ करते रहिये, कोई रोक-टोक नहीं है । अतः इससे कोई गारंटी नहीं कि कानून से अच्छे मनुष्य बन सकते हैं । अच्छे और शिष्ट मनुष्य जब कभी भी बनेंगे तो धर्मसत्ता के माध्यम से बनेंगे । राजसत्ता जनता के हृदय पर शासन नहीं कर सकती । जनता के हृदय के ऊपर शासन करने की क्षमता केवल धर्मतंत्र में है वही करेगा ।

तो क्या करना पड़ेगा मित्रो राजनीति को परिपुष्ट बनाने के लिए और राजनीति को सही बनाने के लिए हमको एक काम करना पड़ेगा जो गाँधी जी ने हमको सलाह दी थी । गाँधी जी ने कहा था कि हमको-कांग्रेस संस्था को लोक संस्था के रूप में बदल जाना चाहिए और राजनीति के काम और किसी के सुपुर्द कर देना चाहिए, ताकि उस पर अंकुश रखा जाय । हमको लोकशक्ति के रूप में जिसमें कांग्रेस का उदय हुआ था, उसी रूप में माना और जाना चाहिए । असली राजनीति की जड़ जमीन में है, जनता के पास में है । जनता को प्रभावशाली बना नहीं सके, जनता में उत्साह भर नहीं सके, जनता को नागरिकता की बात समझा नहीं सके, जनता को यह समझा नहीं सके कि क्रियाशीलता क्या होती है, इसका परिणाम यह हुआ कि जैसी हमारी जनता वैसी ही हमारी सरकार बनती चली आयी । दूध जैसा होगा मक्खन भी तो वैसा ही बनेगा, मलाई भी तो वैसी ही आयेगी । जनता का स्तर, जनता के विचार करने का क्रम, जनता का चरित्र जैसा जो कुछ भी होगा, गवर्नमेन्ट भी वैसी ही बनती चली जायेगी । गवर्नमेन्ट को आप बदलना चाहें तो पहले जनता को बदलना पड़ता है ! जनता जब बदल जाती है तो गवर्नमेन्ट बदल जाती है ; उसकी इच्छा बदल जाती है, स्वरूप बदल जाता है ।

गवर्नमेन्ट बनाने की जिम्मेदारी किसकी है ? आपकी और हमारी पाँच वर्ष बाद हमको यह अधिकार मिलता है कि हम किस तरीके से हुकूमत बदल सकते हैं और कैसे शासन बदल सकते हैं । अगर हमारे पास ईमानदारी न हो और हम कर्तव्यों को समझते न हों, हमको अपने हित का ध्यान न हो, ज्ञान न हो, नागरिक कर्तव्यों-अधिकारों का अनुभव न हो, तो क्या होगा कि जब कभी भी वोट देने का वक्त आयेगा तो इस बात की जिम्मेदारी का अनुभव हम नहीं करेंगे कि कहाँ और किसको वोट देना चाहिए और किसे नहीं देना चाहिए । तब हम क्या करेंगे ? तब हम सिर्फ यही करेंगे कि जहाँ हमारा स्वार्थ प्रेरित करेगा, जो कोई आदमी जीप में बैठा कर ले जायेगा, जो कोई भी हमको मिठाई खिला देगा, शराब पिलायेगा, उसी आदमी को हम वोट देते चले जायेंगे । वोट देने का यदि हमारा यही क्रम रहा तो मैं यह पूछता हूँ कि फिर हमको अच्छी गवर्नमेन्ट सरकार कैसे मिल सकती है ? अच्छी सरकार कभी नहीं मिल सकती । अगर यही क्रम बना रहा और जनता अपने नागरिक कर्तव्यों को नहीं समझती, नागरिक जिम्मेदारियों को नहीं समझती तो फिर यही होगा कि जो कोई व्यक्ति या पार्टी अमुक लोभ दिखायेगा, कोई पैसा दिखायेगा, कोई भय दिखायेगा, कोई जाति-विरादरी की बातें कहेगा, कोई क्या कहेगा-कोई क्या कहेगा, उसी को समर्थन मिलता जायेगा । इस तरीके से क्या होता जायेगा कि जिस आदमी के अन्दर देश-भक्ति और नागरिक कर्तव्यों का उदय नहीं हुआ और उसे इस बात की जिम्मेदारी एवं जानकारी भी नहीं है कि वोट के नाम पर राष्ट्र की हुकूमत हमारे हाथ में सौंपदी गयी है, वह अपनी जिम्मेदारियों को कैसे निभा सकता है ? अच्छी राजनीति चलाने और अच्छी गवर्नमेन्ट बनाने के लिए शासन सत्ता में अच्छे व्यक्ति पहुँचने चाहिए । अच्छे व्यक्ति शासन में भेजने के लिए वोटों के इस्तेमाल का स्तर भी ऊँचा उठना चाहिए । क्रियापद्धति भी यही है । अच्छा देश और अच्छी राजनीति बनाने के लिए अगर हम जनता का चरित्र अच्छा नहीं बना सकते तो फिर यह उम्मीद नहीं रखनी चाहिए कि देश को अच्छी गवर्नमेण्ट मिल सकती है । अगर आप रिश्वत लेकर वोट दे सकते हैं तो फिर आपको क्यों उम्मीद करनी चाहिए कि अच्छी सरकार मिल जायेगी । फिर तो यही समझना चाहिए कि जो बीज आपने बोये हैं वही काटना पड़ेगा ।

लोग हमसे बार-बार यही पूछते हैं कि आप राजनीति में क्यों नहीं जाते ? मित्रो, हम राजनीति से अलग नहीं है, किन्तु हमारी राजनीति वह राजनीति नहीं है जो सत्ता हथियाने वाली होती है । सत्ता हथियाने के बाद कोई भी आदमी बड़ा काम नहीं कर सकता, अगर जनता उसका साथ देने को तैयार न हो तब । जनता का साथ देने वाला पक्ष बहुत बड़ा पक्ष है

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

और इस बड़े पक्ष की ओर आज तक किसी ने भी ध्यान नहीं दिया । हर आदमी का ध्यान केवल इस ओर गया कि अमुक आदमी को मिनिस्टर, अमुक आदमी की गवर्नमेण्ट बनायेंगे । आप किसी भी पार्टी की गवर्नमेण्ट बना दीजिये, किसी को मिनिस्टर बना दीजिए, उससे किसी का कुछ बनने वाला नहीं है । आपका काम तो जनता से बनेगा । बनना तो जनता को है, उठना तो जनता को है । जनता को अपने कर्तव्यों और अधिकारों का अगर हम बोध नहीं करा सके तो फिर कोई भी पार्टी चुन लीजिये किसी का कुछ भला नहीं होने वाला है । कोई पार्टी ईमानदार तभी हो सकती है जब जनता ईमानदार होगी । तब गलत काम करने वाला कोई भी मिनिस्टर या अधिकारी क्यों न हो, जनता उसे गलत काम करने से रोक देगी और यह कहेगी कि आपको गलत काम नहीं करना चाहिए । अगर जनता कमजोर है और अपने अधिकारों, नागरिक कर्तव्यों का ज्ञान उसे नहीं है तो फिर जो कोई भी पार्टी आएगी, जो कुछ करेगी, जनता मूकदर्शक बनी देखती और उसके दुष्परिणामों को भुगतती रहेगी । जनता को कैसे बहकाया जा सकता है, कैसे पैसा लिया जा सकता है और किस तरीके से उलटी पट्टी पढ़ाई जा सकती है, वह सब कुछ होता रहेगा । यदि जनता समझदार और जागरूक है तो फिर इन चालाकियों की बारीकी को वह समझ जाएगी और नेताओं के मनसूबों पर पानी फेर देगी ।

मित्रो, वास्तविक शक्ति जनता के हाथ में है । जनता से बड़ा दैत्य, जनता से बड़ा राक्षस, जनता से बड़ा जालिम, जनता से बड़ा शक्तिशाली और कोई नहीं है । जनता के पास जो शक्ति है वह और किसी के पास नहीं है । वह चाहे जिसे शासन के शीर्ष पर बिठा दे और चाहे तो धूल में मिला दे । जनता के साहस से हमने आजादी की लड़ाई जीती । जनता के साहस से हमने गवर्नमेंट बनाया और कांग्रेस पार्टी को शासन पर बिठा दिया । शक्ति किसकी रही ? गांधी जी की ? नहीं, गांधी जी की नहीं, जनता की रही । हुकूमत की शक्ति जब-जब होगी जनता की होगी । किंतु हमारे कर्तव्य क्या हैं, अधिकार क्या हैं और जनता को कैसा होना चाहिए, जब तक यह समझ विकसित नहीं होती, तब तक प्रयास सफल नहीं हो सकते । अभी तक लोगों ने इस ओर ध्यान नहीं दिया । ध्यान गया है तो केवल इतना कि गवर्नमेंट इस तरीके से बना देना चाहिए, पार्टी इस तरीके से बना देना चाहिए, हुकूमत इस तरीके से चलाना चाहिए, संविधान इस तरह से बना देने चाहिए और कानून ऐसे बना देने चाहिए । इस बात की ओर ध्यान देना चाहिए, उस बात पर ध्यान देना चाहिए । मित्रो, असली बात यह नहीं है, असली बात वह है जो जनता से ताल्लुक रखती है । जनता जहाँ जिस तरीके की होगी, वहाँ उसी तरीके की चीजें बनती चली जाएँगी । जहाँ जनता की मनोदशा अच्छी नहीं है, जहाँ जनता को अपने नागरिक कर्तव्यों और नागरिक जिम्मेदारियों का ज्ञान नहीं है, वहाँ अच्छी गवर्नमेंट नहीं हो सकती ।

नागरिक कर्तव्यों, जिम्मेदारियों को समझाना, प्रत्येक नागरिक को उसके अधिकारों का बोध कराना, दूसरों के कष्ट-कठिनाइयों में भागीदार बनाना और उन्हें राष्ट्रीय दायित्वों को समझाने की जिम्मेदारी किसकी है ? साथियो, यह धर्म की जिम्मेदारी है, यह हमारी जिम्मेदारी है और आपकी जिम्मेदारी है कि हम हर आदमी को वह काम करना सिखाएँ जिससे एक अच्छे राष्ट्र का विकास हो सकता है । कानून इस काम को नहीं कर सकता, जनता इस काम को करेगी । जनता का ईमान जब जाग्रत होगा तब लोगों को यह भय होगा और दुख भी होगा कि हम मसाले में मिलावट करेंगे तो जो खरीद कर उसे खाएगा, पेट में पथरी हो जाएगी । जो आदमी बीमार पड़ा हुआ है और अगर वह मिलावट वाला दूध पियेगा तो उसके जीवन-मरण का प्रश्न पैदा हो जाएगा । जब ये बातें हमारे दिमाग में आएँगी, अंतः करण में आएँगी, विचारों में आएँगी दूध में पानी और मिर्च-मसालों में मिट्टी व अनाज में कंकड़ मिलाना बंद कर देंगे । क्या इसे सरकार बंद कर सकती है ? नहीं, सरकार नए-नए कायदे-कानून और नीतियाँ बनाती चली जायेगी और लोग अपने बचाव के लिए नए-नए तरीके ईजाद करते चले जाएँगे । अच्छा राष्ट्र बनाने के लिए जनता को अच्छा बनाया जाना नितान्त आवश्यक है । अच्छी जनता वह नहीं है जो सम्पन्न होती है मालदार होती है, वरन् अच्छी जनता वह है जो अपने फर्ज को समझती है, अपने कर्तव्यों को समझती है और अपनी जिम्मेदारी को समझती है । फर्ज, कर्त्तव्य और जिम्मेदारियों को समझना-यही, मित्रो ! धर्म का उद्देश्य है यही अध्यात्म का उद्देश्य है ।

धर्म और अध्यात्म का उद्देश्य बहुत लोगों ने समझा और समझाया है, पर खाली उद्देश्य के बारे में मेरी कोई गम्भीर निष्ठा नहीं है । जब लोगों को खाली उद्देश्य समझाये जाते हैं कि मरने के बाद हम कौन से लोक में चले जाते हैं और वह लोक किस तरह के हैं ? स्वर्ग कहाँ है ? स्वर्ग की लम्बाई, चौड़ाई कितनी है ? हमको नहीं मालूम । हमको तो जिन्दगी की जानकारी है, जमीन की जानकारी है । हमको जमीन की जिम्मेदारी जाननी चाहिए, अपने कर्तव्यों को जानना चाहिए । भगवान महावीर जिनका कि आज जन्म दिन है, उन्होंने यही समझा और लोगों को समझाया । उन्होंने यह जान लिया था कि राजसत्ता की अपेक्षा धर्म सत्ता की शक्ति अपार है और इसे ही उन्होंने अंगीकार किया । धर्मसत्ता लोगों के दिलों पर हुकूमत करती है और राजसत्ता जमीनों पर हुकूमत करती है, पैसे पर हुकूमत करती है, किलों पर हुकूमत करती है, व्यापार पर हुकूमत करती है और चीजों पर हुकूमत करती है, परन्तु दिलों पर हुकूमत नहीं कर सकती । दिलों पर हुकूमत करने की क्षमता केवल धर्म में है । इसलिए भगवान महावीर ने यही किया और राजसत्ता को त्याग दिया । राजसत्ता त्यागने के पश्चात् उन्होंने धर्मसत्ता को सम्भाला और जगह-जगह घूम करके धर्म की बात अध्यात्म की बात, ईमानदारी की बात, नेकी की बात, शराफत की बात, कर्त्तव्य की बात लोगों को समझाते चले गये । लोगों में धर्म को जानने की इच्छा पैदा कर दी । यह

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

सबसे बड़ी सेवा थी जो भगवान महावीर ने की ।

हनुमान जी जिनका कि आज जन्मदिन है, क्या वे मिनिस्टर नहीं बन सकते थे ? हाँ, वे भगवान राम की हुकूमत में मिनिस्टर बन सकते थे, उनके मंत्री बन सकते थे, लेकिन वे मिनिस्टर नहीं बने । उन्होंने कहा-इस काम के लिए तो ढेरों आदमी विद्यमान है, लेकिन जो मुश्किल का काम है, कठिनाई का काम है, कष्ट का काम है त्याग का काम है, बलिदान का काम है, वह कौन करेगा ? हनुमान जी ने सेवा को सबसे बड़ा काम समझा सत्ता को नहीं, और शुरू से अंत तक उसी में निमग्न रहे । सत्ता की अपेक्षा सेवा को जब लोग अच्छा समझने लगेंगे तब मजा आ जायेगा और हमारा राष्ट्र राजनीति की दृष्टि से ही नहीं, आर्थिक दृष्टि से, सामाजिक दृष्टि से नेकी की दृष्टि से उन्नति के शिखर पर जा पहुँचेगा और तब समस्त समस्याओं का समाधान होता हुआ चला जायेगा । हर समस्या का समाधान मित्रो, व्यक्ति के दृष्टिकोण के साथ जुड़ा हुआ है । गवर्नमेंट हमारे रिश्तों को अच्छा कर देगी ? नहीं कर सकती । हमारे सेहत को गवर्नमेण्ट अच्छा नहीं कर सकती । हमारा खान-पान ठीक नहीं है, ब्रह्मचर्य के ऊपर हमारा संयम नहीं है, आहार-विहार के ऊपर हमारा संयम नहीं है, सफाई-स्वच्छता का ज्ञान हमें नहीं है, तो क्या आप समझते हैं कि किसी भी देश की जनता के स्वास्थ्य की रक्षा करने की जिम्मेदारी कोई गवर्नमेण्ट उठा सकती है । नहीं उठा सकती है । यह तो स्वयं ही समझना होगा कि हमें क्या करना चाहिए, क्या खाना चाहिए और कैसे रहना चाहिए । अगर यह बातें समझ में आजायेंगी तब हमारे स्वास्थ्य की समस्या का समाधान हो जायेगा । जनता के मन में यदि एक जागृति का भाव आ जाये कि हमें अपने प्रति, राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को निभाना है तो फिर क्या कुछ नहीं हो सकता । हर बात के लिए गवर्नमेण्ट से शिकायत करना या और किसी का मुख देखना मुनासिब नहीं है । कुछ काम ऐसे हैं जिन्हें हमें स्वयं करना चाहिए ।

जनता की शक्ति अपने आप में सबसे बड़ी शक्ति है । जनता की इस शक्ति को हम जाग्रत करेंगे और लोगों को यह बात बतायेंगे कि अपनी समस्याओं का समाधान आप स्वयं कर सकते हैं और आपको करना ही चाहिए । स्वामी केशवानन्द जी के तरीके से हम हर एक आदमी से कहेंगे कि आप अपनी शिक्षा की व्यवस्था अपने तरीके से चलायें तो वह अच्छे तरीके से चल सकती है । स्वामी केशवानन्द बाइस वर्ष की उम्र में संत हो गये थे, और जनता की शक्ति को संगठित करने में जुट गये थे । वे गाँव-गाँव घूमकर लोगों को शिक्षित करने लगे । जगह-जगह प्राथमिक पाठशालाएँ खुलवायीं, अध्यापक नियुक्त किये । घर-घर से बच्चों को लाते और उन्हें स्कूल में दाखिल कराते । अध्यापकों की तनख्वाह की पूर्ति घर-घर से एकत्र मुट्ठी-मुट्ठी भर अनाज से की जाती । इस तरह उनके प्रयास से साढ़े तीन सौ गाँवों में स्कूल चालू हो गये और सात कालेज । यह किसी राजनेता का नहीं, एक संत का प्रयास था जिसने जनता को जगाकर रख दिया था ।

मित्रो, क्या करना पड़ेगा ? करना हमको वह पड़ेगा और वही महत्वपूर्ण काम है जो स्वामी केशवानन्द करने में समर्थ हुए थे । अगर स्वामी केशवानन्द कलेक्टर होते तो क्या वे इतने महत्वपूर्ण कार्य करने में समर्थ हो सकते थे ? उन्होंने साढ़े तीन सौ गाँवों में स्कूल बना दिये, सात कॉलेज बना दिये और जनता को स्वावलम्बी बना दिया । स्कूल बनाना, कॉलेज बनाना उतनी बड़ी बात नहीं है, जितनी कि जनता की स्वावलम्बी वृत्ति को जगाना । यह सबसे बड़ी बात है । जो भी राष्ट्र कभी उठे हैं स्वावलम्बी होकर उठे हैं, अपने बलबूते पर उठे हैं, अपनी ताकत के आधार पर उठे हैं । दुनिया में जहाँ कहीं भी तरक्की हुई है, जनता ने अपने बाजुओं के बल से की है । परायी सहायता से न तो आज तक कोई उठा है और न कभी उठेगा । इसमें गवर्नमेण्ट भी शामिल है । गवर्नमेण्ट कहाँ तक सहायता कर सकती है । हम हर गाँव में जायेंगे, हर घरों में जायेंगे और लोगों से यह कहेंगे कि समाज को ऊँचा उठाने के लिए आप सरकार का मुँह मत ताकते रहिए । आप हर रोज अपना एक घण्टा समाज के लिए दीजिए । हमारे पास २४ घण्टे होते हैं । २३ घण्टे हम अपने विभिन्न काम में लगायें, पर एक घण्टे का पसीना-एक घण्टे की मेहनत क्या हम समाज के लिए खर्च नहीं कर सकते ? हाँ, हम एक घण्टा रोज अपने समाज, देश, धर्म जाति और संस्कृति के लिए खर्च कर सकते हैं एक घण्टा कोई बड़ी चीज नहीं होती । इससे क्या हो सकता है ? जिस गाँव में चार सौ घर हैं तो क्या उस गाँव के प्रत्येक घर से एक-एक व्यक्ति एक-एक घण्टा समय समाज, देश और संस्कृति के लिए नहीं निकाल सकते ? चार सौ घण्टे का मतलब साठ आदमियों की पूरी मेहनत । साठ आदमी एक साथ मिलकर बाग लगाने के लिए, सफाई के लिए, स्कूल चलाने के लिए खड़े हो जायें तो फिर आप देखिये कि साल भर में क्या हो सकता है । जनता की इस शक्ति को हमें जगाना पड़ेगा । जनता के पास कर्तव्यों का उद्‌बोधन करने के लिए हमको जाना पड़ेगा । घर-घर जाकर लोगों को सफाई की स्वच्छता की बात बतानी होगी । रहन-सहन की, खान-पान की बातें बतानी होंगी । गन्दगी की-बदबू की, अशिक्षा की कलंक-कालिमा जो देश पर छायी हुई है, उसे यदि दूर कर दें तो इससे बड़ा और कोई काम नहीं हो सकता ।

तो गुरुजी क्या यही अध्यात्म है ? हाँ बेटे, यही अध्यात्म है और यही धर्म है । यही भगवान की भक्ति है । हमको और आपको भगवान की यही भक्ति लोगों को सिखानी पड़ेगी । नागरिक कर्तव्यों का ज्ञान और समाज के प्रति जिम्मेदारी का आभास प्रत्येक व्यक्ति को कराना होगा । आध्यात्मिक ख्वाब दिखाने से काम नहीं बनेगा । इस बारे में मत पूछिये क्योंकि हिन्दू अलग तरीके से सोचता है और मुसलमान अलग तरीके से । एक कहता है कि मरने के बाद हम मृत्युलोक में जायेंगे तो दूसरा कहता है कि कयामत तक हम यहीं खड़े रहेंगे जब तक एक फरिश्ता नहीं आता । एक कहता है कि जब तक पिण्डदान नहीं दिया जायेगा तब तक मृतात्मा चक्कर मारता फिरता है और

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

पिण्डदान खा करके स्वर्ग को चला जाता है । हमसे मत पूछिये इन बेकार की बातों को । हमसे तो यह पूछिये कि असली धर्म क्या है ? बेटे, असली धर्म उस चीज का नाम है जो मनुष्य की जिम्मेदारी को प्रभावित करता है, और कर्तव्य का ज्ञान कराता है । इस धर्म को, इस अध्यात्म को, भगवान की इस भक्ति को हम भूल गये, परिणाम स्वरूप हम गरीब हो गये, दीन-दुर्बल हो गये, असंगठित हो गये, अशिक्षित हो गये । ये अभिशाप हैं भगवान की उस भक्ति को त्याग देने के, धर्म को त्याग देने के । धर्म अगर हमारे पास होता, भक्ति हमारे पास होती तो अविद्या और अशिक्षा क्यों आती ? आपके लिए नहीं कहता, मैं अपने लिए कहता हूँ । आज हमारी संख्या-हम पंडितों की, संतों की बाबाजियों की संख्या छप्पन लाख है और गाँव कितने हैं-सात लाख । हर गाँव पीछे आठ संत आते हैं । यदि हम उस धर्म के मूल स्वरूप को लेकर हर गाँव में चले जायँ तो क्या हम लोग देश की समस्या को हल नहीं कर सकते ? जब अकेले एक स्वामी केशवानन्द साढ़े तीन सौ गाँवों की अशिक्षा की समस्या को हल कर सकते थे तो हमारी संख्या तो उससे कई गुना अधिक है । इस समस्या को हमें ही दूर करना होगा और हम करेंगे । सरकार इसे दूर नहीं कर सकती । उसके लिए प्राइमरी स्कूल चलाना ही मुश्किल पड़ रहा है । हमारा देश इसलिए पिछड़ा हुआ है कि यहाँ अशिक्षा की भरमार है । इसे दूर करने के लिए हमें जनता को जाग्रत करना पड़ेगा । उसके कर्तव्यों का उद्‌बोधन करना पड़ेगा और उसके साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करना पड़ेगा । यही हमारा कुरान है, यही हमारी गीता है, और यही हमारी भागवत है । इसके लिए हमको बहुत कुछ करना है मित्रो, आज भगवान महावीर का जन्म दिन हमको यह सिखाने के लिए आया था कि धर्म सत्ता को राजनीति में जाने की कोई आवश्यकता नही हैं । इस माध्यम से जो काम हम जनता में जाकर कर सकते हैं, जनता को ऊँचा उठा सकते हैं, जनता की भावना को कर्तव्य को ऊँचा उठा सकते हैं, वह हजार गवर्नमेण्ट मिलकर भी नहीं कर सकती । यही भगवान महावीर का संदेश था और इसी क्रियाकलाप को उनने अपने जीवन में धारण किया और सारी जिन्दगी को इसी काम में लगा दिया ।

आज ही हनुमान जी का जन्म दिन है । जिस दिन से उनने सेवाव्रत धारण किया, उस दिन से जहाँ भी जरूरत पड़ी, वे चले गये । सीता, खोज के लिए पुल बनाने की जरूरत पड़ी तो पुल बनाने के लिए चले गये । जब रावण के साथ लड़ने की जरूरत पड़ी तो उससे लड़ने चले गये । जहाँ पहाड़ उठाने की जरूरत पड़ी, वहाँ पहाड़ उठाने के लिए चले गये । जहाँ वैद्य को लाने की आवश्यकता पड़ गयी, वहाँ उसे घर सहित उठा लाये । हनुमान जी ने सारी जिन्दगी भर सेवाव्रत को धारण करके रखा ? उन्होंने कहा-हमारा काम सेवा करना है, और मुसीबत उठाना है । राजसत्ता का सुख, वैभव, मजा और लोभ-प्रलोभन क्या है, इससे उनने अपने आपको सदैव दूर ही रखा । तो क्या राजनीति की कोई सेवा नहीं की हनुमान जी ने ? भला हनुमान जी से बढ़कर राजनीति की सेवा और कौन कर सकता था । रावण को उखाड़ करके विभीषण की स्थापना करने की भूमिका किसने निभाई ? हनुमान ने, नल-नील अंगद और जामवन्त ने निभाई । यदि वे इस बात का झगड़ा करते कि हमको मिनिस्टर बना दीजिये तब तो चकल्लस खड़ी हो जाती । उन्होंने कहा नहीं, राज तो विभीषण को करना चाहिए, हम तो सेवा करेंगे, व्यवस्था जमायेंगे । व्यवस्था जमाना और सेवा करना-मित्रो यह बहुत बड़ा काम है । बार-बार जो लोग हमसे पूछते हैं कि आप राजनीति में क्यों नहीं जाते ? उनसे हमारा यही कहना है कि किसी जमाने में हम राजनीति में थे । उस जमाने में राजनीति में बहुत बड़ी जिम्मेदारी थी जब तक हिन्दुस्तान को स्वराज नहीं मिला था । राजनीति हमको बहुत प्यारी थी । कब ? जब सेवा की राजनीति थी त्याग की राजनीति थी, कष्ट उठाने की राजनीति थी, फर्ज की राजनीति थी । आजादी के लिए जेल पर जाने पिटाई खाने और फाँसी के फन्दे झूलने की राजनीति थी तब हमको राजनीति बहुत प्यारी लगती थी ।

मित्रो, अब राजनीति में वह चीज आ गयी है जिसे हुकूमत की भूख कहते हैं, सत्ता की हवस कहते हैं, जिस में वोट माँगेंगे, दूसरों का हक मारेंगे तब हमने राजनीति छोड़ दिया । हमने देखा इसको लेने के लिए तो ढेरों लोग तैयार हैं । उस एक ही डिब्बे में सारी की सारी भीड़ घुसी जा रही है । उसमें बैठने के लिए कोई कोहनी मारता है तो कोई कुछ करता है । ऐसी स्थिति में हमको वहाँ क्यों जाना चाहिए ? हमको वहाँ क्यों नहीं जाना चाहिए जहाँ पूरा का पूरा डिब्बा खाली पड़ा है । धर्म का क्षेत्र खाली पड़ा हुआ है । लोक सेवा का क्षेत्र खाली पड़ा हुआ है । जनता का क्षेत्र खाली पड़ा हुआ है । कर्तव्यों को जगाने वाला क्षेत्र खाली पड़ा हुआ है । मित्रो ! हम वहीं चलेंगे और आपको भी वहीं चलना चाहिए । आज की राजनीति में जिसमें सत्ता की भूख है, उससे आपको दूर ही रहना चाहिए और वहाँ चलना चाहिए जहाँ राष्ट्र को ऊँचा उठाने वाला क्षेत्र मौजूद है । हमको जनता के पास जाना चाहिए और उन्हें प्रेरित करना चाहिए । इससे बड़ी राजनीति और राष्ट्र सेवा कोई और हो नहीं सकती जो कि आप करने के लिए चले हैं । मित्रो, वानप्रस्थी बन करके आप समाज में जाना, लोगों के पास जाना और उन्हें उनके कर्तव्यों को सिखाना, फर्जों को सिखाना लोगों को उनके नागरिक अधिकार समझाना और यह बताना कि भला आदमी शरीफ आदमी कैसा होना चाहिए । प्रत्येक आदमी को अपने राष्ट्रीय जिम्मेदारियों के प्रति कैसे रहना चाहिए । अच्छा समाज बनाने के लिए गुण्डागर्दी तथा अन्य दूसरी बुराइयों के विरुद्ध कैसे खड़े होना चाहिए, यह शिक्षण करना हमारा और आपका काम है ।

गुण्डागर्दी पुलिस से नहीं रुक सकती । इसे जब कभी रोकेंगे तो हम और आप ही रोकेंगे । कैसे और कब ? जैसे जटायु ने सीता जी को रावण के चंगुल से छुड़ा कर उदाहरण प्रस्तुत किया था । उसने देखा कि कोई बदमाश एक सती सी स्त्री को चुरा

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

सबसे बड़ी सेवा थी जो भगवान महावीर ने की ।

हनुमान जी जिनका कि आज जन्मदिन है, क्या वे मिनिस्टर नहीं बन सकते थे ? हाँ, वे भगवान राम की हुकूमत में मिनिस्टर बन सकते थे, उनके मंत्री बन सकते थे, लेकिन वे मिनिस्टर नहीं बने । उन्होंने कहा-इस काम के लिए तो ढेरों आदमी विद्यमान है, लेकिन जो मुश्किल का काम है, कठिनाई का काम है, कष्ट का काम है त्याग का काम है, बलिदान का काम है, वह कौन करेगा ? हनुमान जी ने सेवा को सबसे बड़ा काम समझा सत्ता को नहीं, और शुरू से अंत तक उसी में निमग्न रहे । सत्ता की अपेक्षा सेवा को जब लोग अच्छा समझने लगेंगे तब मजा आ जायेगा और हमारा राष्ट्र राजनीति की दृष्टि से ही नहीं, आर्थिक दृष्टि से, सामाजिक दृष्टि से नेकी की दृष्टि से उन्नति के शिखर पर जा पहुँचेगा और तब समस्त समस्याओं का समाधान होता हुआ चला जायेगा । हर समस्या का समाधान मित्रो, व्यक्ति के दृष्टिकोण के साथ जुड़ा हुआ है । गवर्नमेंट हमारे रिश्तों को अच्छा कर देगी ? नहीं कर सकती । हमारे सेहत को गवर्नमेण्ट अच्छा नहीं कर सकती । हमारा खान-पान ठीक नहीं है, ब्रह्मचर्य के ऊपर हमारा संयम नहीं है, आहार-विहार के ऊपर हमारा संयम नहीं है, सफाई-स्वच्छता का ज्ञान हमें नहीं है, तो क्या आप समझते हैं कि किसी भी देश की जनता के स्वास्थ्य की रक्षा करने की ज़िम्मेदारी कोई गवर्नमेण्ट उठा सकती है । नहीं उठा सकती है । यह तो स्वयं ही समझना होगा कि हमें क्या करना चाहिए, क्या खाना चाहिए और कैसे रहना चाहिए । अगर यह बातें समझ में आजायेंगी तब हमारे स्वास्थ्य की समस्या का समाधान हो जायेगा । जनता के मन में यदि एक जागृति का भाव आ जाये कि हमें अपने प्रति, राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को निभाना है तो फिर क्या कुछ नहीं हो सकता । हर बात के लिए गवर्नमेण्ट से शिकायत करना या और किसी का मुख देखना मुनासिब नहीं है । कुछ काम ऐसे हैं जिन्हें हमें स्वयं करना चाहिए ।

जनता की शक्ति अपने आप में सबसे बड़ी शक्ति है । जनता की इस शक्ति को हम जाग्रत करेंगे और लोगों को यह बात बतायेंगे कि अपनी समस्याओं का समाधान आप स्वयं कर सकते हैं और आपको करना ही चाहिए । स्वामी केशवानन्द जी के तरीके से हम हर एक आदमी से कहेंगे कि आप अपनी शिक्षा की व्यवस्था अपने तरीके से चलायें तो वह अच्छे तरीके से चल सकती है । स्वामी केशवानन्द बाइस वर्ष की उम्र में संत हो गये थे, और जनता की शक्ति को संगठित करने में जुट गये थे । वे गाँव-गाँव घूमकर लोगों को शिक्षित करने लगे । जगह-जगह प्राथमिक पाठशालाएँ खुलवायीं, अध्यापक नियुक्त किये । घर-घर से बच्चों को लाते और उन्हें स्कूल में दाखिल कराते । अध्यापकों की तनख्वाह की पूर्ति घर-घर से एकत्र मुट्ठी-मुट्ठी भर अनाज से की जाती । इस तरह उनके प्रयास से साढ़े तीन सौ गाँवों में स्कूल चालू हो गये और सात कालेज । यह किसी राजनेता का नहीं, एक संत का प्रयास था जिसने जनता को जगाकर रख दिया था ।

मित्रो, क्या करना पड़ेगा ? करना हमको वह पड़ेगा और वही महत्वपूर्ण काम है जो स्वामी केशवानन्द करने में समर्थ हुए थे । अगर स्वामी केशवानन्द कलेक्टर होते तो क्या वे इतने महत्वपूर्ण कार्य करने में समर्थ हो सकते थे ? उन्होंने साढ़े तीन सौ गाँवों में स्कूल बना दिये, सात कॉलेज बना दिये और जनता को स्वावलम्बी बना दिया । स्कूल बनाना, कॉलेज बनाना उतनी बड़ी बात नहीं है, जितनी कि जनता की स्वावलम्बी वृत्ति को जगाना । यह सबसे बड़ी बात है । जो भी राष्ट्र कभी उठे हैं स्वावलम्बी होकर उठे हैं, अपने बलबूते पर उठे हैं, अपनी ताकत के आधार पर उठे हैं । दुनिया में जहाँ कहीं भी तरक्की हुई है, जनता ने अपने बाजुओं के बल से की है । परायी सहायता से न तो आज तक कोई उठा है और न कभी उठेगा । इसमें गवर्नमेण्ट भी शामिल है । गवर्नमेण्ट कहाँ तक सहायता कर सकती है । हम हर गाँव में जायेंगे, हर घरों में जायेंगे और लोगों से यह कहेंगे कि समाज को ऊँचा उठाने के लिए आप सरकार का मुँह मत ताकते रहिए । आप हर रोज अपना एक घण्टा समाज के लिए दीजिए । हमारे पास २४ घण्टे होते हैं । २३ घण्टे हम अपने विभिन्न काम में लगायें, पर एक घण्टे का पसीना-एक घण्टे की मेहनत क्या हम समाज के लिए खर्च नहीं कर सकते ? हाँ, हम एक घण्टा रोज अपने समाज, देश, धर्म जाति और संस्कृति के लिए खर्च कर सकते हैं एक घण्टा कोई बड़ी चीज नहीं होती । इससे क्या हो सकता है ? जिस गाँव में चार सौ घर हैं तो उस गाँव के प्रत्येक घर से एक-एक व्यक्ति एक-एक घण्टा समय समाज, देश और संस्कृति के लिए नहीं निकाल सकते ? चार सौ घण्टे का मतलब साठ आदमियों की पूरी मेहनत । साठ आदमी एक साथ मिलकर बाग लगाने के लिए, सफाई के लिए, स्कूल चलाने के लिए खड़े हो जायँ तो फिर आप देखिये कि साल भर में क्या हो सकता है । जनता की इस शक्ति को हमें जगाना पड़ेगा । जनता के पास कर्तव्यों का उद्‌बोधन करने के लिए हमको जाना पड़ेगा । घर-घर जाकर लोगों को सफाई की स्वच्छता की बात बतानी होगी । रहन-सहन की, खान-पान की बातें बतानी होंगी । गन्दगी की-बदबू की, अशिक्षा की कलंक-कालिमा जो देश पर छायी हुई है, उसे यदि दूर कर दें तो इससे बड़ा और कोई काम नहीं हो सकता ।

तो गुरुजी क्या यही अध्यात्म है ? हाँ बेटे, यही अध्यात्म है और यही धर्म है । यही भगवान की भक्ति है । हमको और आपको भगवान की यही भक्ति लोगों को सिखानी पड़ेगी । नागरिक कर्तव्यों का ज्ञान और समाज के प्रति जिम्मेदारी का आभास प्रत्येक व्यक्ति को कराना होगा । आध्यात्मिक ख्वाब दिखाने से काम नहीं बनेगा । इस बारे में मत पूछिये क्योंकि हिन्दू अलग तरीके से सोचता है और मुसलमान अलग तरीके से । एक कहता है कि मरने के बाद हम मृत्युलोक में जायेंगे तो दूसरा कहता है कि कयामत तक हम यहीं खड़े रहेंगे जब तक एक फरिश्ता नहीं आता । एक कहता है कि जब तक पिण्डदान नहीं दिया जायेगा तब तक मृतात्मा चक्कर मारता फिरता है और

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

कर ले जा रहा है । वह किसी और की नहीं हमारी बेटी है, हमारे ही साथ गुण्डागर्दी की जा रही है, अतः हमको चलना चाहिए और आततायी से लड़ना चाहिए । हमारे पास तलवार नहीं है और रावण के पास है, पर इससे क्या हुआ हमारे पास आत्मबल तो है । आत्मबल बड़ा होता है, तलवार नहीं । वह रावण से लड़ने लगा । रावण ने उसके पंख काट दिये । जटायु घायल जमीन पर गिरा हुआ था । रामचन्द्र जी आये और उसे उठाकर अपनी छाती से लगा लिया और कहा हम तुम्हें स्वर्ग भेज देते हैं । उसने कहा-स्वर्ग तो आप भेजिये मत, हमने तो केवल लोगों के सामने अपने फर्ज का-कर्तव्य का उदाहरण पेश किया है कि जहाँ कहीं भी गुण्डागर्दी या अत्याचार किया जा रहा है, उसका मुकाबला करने के लिए हर आदमी को उसके विरुद्ध उठ खड़ा होना चाहिए । अभी क्या होता है मित्रो कि इतनी सारी बुराइयाँ होती रहती हैं, गुण्डे-बदमाश छुट्टल घूमते रहते हैं, यदि सारे के सारे लोग निश्चय कर लें कि हम सब मिलकर उनका मुकाबला करेंगे तो जनता भी साथ देगी और तब समाज में एक भी गुण्डा दिखाई नहीं देगा ।

जनता के सहयोग के बिना राष्ट्र की समस्या का समाधान नहीं हो सकता । जनता का सहयोग कौन जगायेगा ? जनता का सहयोग सरकार जगा नहीं सकती, इसे हम जगायेंगे । जिस तरह पक्षी के दो पंख होते हैं उसी तरह एक पंख राजसत्ता है तो दूसरी धर्मसत्ता जिसको हम जनसत्ता लोक सत्ता कहते हैं । लोकसत्ता का उतनी ही अच्छा होना आवश्यक है जितना कि सरकार का अच्छा होना । एक ही पंख से पक्षी उड़ नहीं सकता । फिर राजसत्ता में काम करने के लिए ढेरों व्यक्ति हैं । अतः दूसरे पंख का अर्थात् धर्मसत्ता का क्षेत्र हमें ही सम्भालना पड़ेगा । जनता को धर्म का, कर्तव्यों का, ईमानदारी का, जिम्मेदारी का, बहादुरी का ज्ञान हमको ही कराना चाहिए और हम वही करेंगे भी । आप लोग वानप्रस्थ का शिक्षण लेकर जाना और लोगों को धर्म का वास्तविक स्वरूप समझाना जो कि हम आपको अभी तक समझाते रहे हैं और आगे भी समझाते रहेंगे । धर्म का मतलब ईमानदारी, धर्म का मतलब कर्तव्यनिष्ठा, धर्म का मतलब सेवा, धर्म का मतलब उत्तरदायित्व की सम्भावना को जगाना । इस तरह का धर्म हम हर आदमी को सिखायेंगे और समझायेंगे ताकि हमारा हर व्यक्ति अच्छा बन सके, ताकि हमारा परिवार अच्छा बन सके ताकि हमारा समाज और राष्ट्र अच्छा बन सके । यही प्रेरणा है भगवान महावीर की जिन्होंने राजसत्ता को तिलांजलि देकर धर्म सत्ता को ग्रहण किया और समाज में अलख जगाते हुए लोगों को धर्मसत्ता के कर्तव्यों का ज्ञान कराया ।

भगवान बुद्ध भी राजसत्ता को छोड़ करके राजसत्ता को ठोकर मारकर चले गये थे । उन्होंने गाँव-गाँव में अलख जगाया था । अलख जगाने के बाद में क्या उन्होंने राजसत्ता को अच्छा नहीं बनाया था ? हाँ, अशोक से लेकर हर्षवर्धन तक सैकड़ों के सैकड़ों जनता को उन्होंने अच्छा बना दिया था । धर्मसत्ता को लेकर गुरुवशिष्ठ चले थे । क्या उन्होंने रघुवंशियों से लेकर अनेकों राजाओं की राजसत्ता को अच्छा नहीं बना दिया था ? हाँ, उन्होंने बना दिया था । सारे महामानव धर्मसत्ता को लेकर चले थे । चाणक्य ने क्या चन्द्रगुप्त को अच्छा नहीं बना दिया था ? हाँ बना दिया था । समर्थ गुरु रामदास धर्मसत्ता को लेकर चले थे । क्या उन्होंने शिवाजी और दूसरे लोगों को अच्छा नहीं बना दिया ? हाँ, बना दिया था । हम भी सरकारों को अच्छा बना देंगे, जनता को अच्छा बना देंगे । जनता को अच्छा बनाने के लिए और सरकारों को अच्छा बनाने के लिए जो कार्य हम और आप मिलकर कर रहे हैं वह बहुत बढ़िया बहुत शानदार और बहुत उच्चकोटि का है । इनको कम किसी से भी नहीं समझना चाहिए और न ही आपमें इसे किसी को अपने मन में यह भाव आने देना चाहिए कि हमको राजसत्ता पर हावी होना है और राजसत्ता में अपना कोई आदमी भेजना है । जनता को ही जब हम जनसत्ता बना देंगे लोकशक्ति बना देंगे तो फिर आप देखना सरकार को अपने आप बदलना पड़ेगा । यदि जनता बदल गयी तो फिर सरकारें अपने आप बदल जायेंगी ।

यही है हमारा भावी संदेश । यही है हमारे भगवान महावीर का संदेश । यही है हमारा लोगों को जवाब, जो हमारे इतने बड़े संगठन और कार्यक्रमों की स्थिति को देखकर बराबर कहते रहते हैं कि आप अपने आदमी चुनाव में खड़े क्यों नहीं करते ? आप राजनीति में क्यों नहीं आते ? हम बार-बार यही कहते रहते हैं कि राजनीति का क्षेत्र बहुत छोटा-बहुत कम है और धर्म का क्षेत्र बहुत बड़ा है । राजनीति के पास शक्ति नगण्य है । इसके पास वैभव कम है । हमारे पास धर्मतंत्र के पास सामर्थ्य बड़ी है । धर्मसत्ता बड़ी है । हमारे पास आदमियों की सत्ता बड़ी है । उसके पास तो पच्चीस-चालीस हैं । हमारे पास तो ५६ लाख आदमी हैं । ५६ लाख संतों की सत्ता को बेकार राजसत्ता की अपेक्षा समाजहित में लगायेंगे । हमारा कार्यक्षेत्र बड़ा है । साथियो, हममें से किसी व्यक्ति को यह भाव मन में नहीं लाना चाहिए कि यदि हम राजनीति में गये होते राजसत्ता के क्षेत्र में गये होते तो हमको सेवा करने का ज्यादा अवसर मिलता अथवा हमारा ज्यादा सम्मान हो जाता । हमारा सम्मान धर्मक्षेत्र में प्रेवश करने पर है, क्योंकि हम जनता की खासतौर से पिछड़ी जनता की सेवा उस क्षेत्र में प्रवेश करके जितनी कर सकते हैं और जन शक्ति को जाग्रत कर सकते हैं, उतनी राजनीति में प्रवेश करके हम नहीं कर सकते । इसलिए मित्रो, हमारा लोगों को यही जवाब है कि हम क्यों राजनीति में नहीं जाते हैं और राजनीति को छोड़ कर धर्मसत्ता में क्यों आ गये । भगवान महावीर और भगवान भक्त हनुमान जो दोनों ही आज के दिन पैदा हुए थे, उनके जीवन से भी हमको यही जवाब मिल जाता है । आज के उद्‌बोधन से आपको शिक्षा और प्रेरणा लेनी चाहिए कि हम राजनीति की इच्छा के विपरीत धर्मनीति की ओर चलेंगे और उन महत्वपूर्ण कार्यों को करेंगे जो राजसत्ता के बलबूते के बाहर है । आज की बात समाप्त ॐ शान्ति 卐

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

कैसे होगा समन्वय, विज्ञान और अध्यात्म का?

एम. जी. एम. मेडीकल कालेज, इन्दौर (म. प्र.) में प्रबुद्ध वर्ग के समक्ष मई, १९७० में दिया गया उद्‌बोधन पाठकों के लिए प्रस्तुत है। यह बौद्धिक सन्देश ही आगे चलकर ब्रह्मवर्चस् शोध संस्थान का मूलभूत आधार बना; - पढ़ें ।

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ--

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

मित्रो! विकास क्रम में आज हम कहाँ जा पहुँचे हैं, आइये जरा इस पर विचार करें। विज्ञान के इस युग में आज से पाँच सौ वर्ष पूर्व का व्यक्ति यदि कहीं हो और वह आकर हमारी इस दुनिया को देखे तो कहेगा कि यह कितने अचंभे की दुनिया है, यह भूत-पलीतों की दुनिया है। यदि वह सड़कों पर, रेल पटरियों पर जायेगा तो वहाँ से भाग खड़ा होगा, क्योंकि लोहे की पटरियों पर भागने वाली रेलगाड़ियाँ और आसमान में उड़ने वाले हवाई जहाज पुराने जमाने के लोगों के लिए अचंभे की बातें थीं। दिल्ली से बोलने वाला व्यक्ति इन्दौर में बैठे हुए व्यक्ति से ऐसे बातें करता है जैसे वह सामने ही बैठा हो। आज के इस विज्ञान की प्रगति के क्या कहने? उसने टेलीविजन से लेकर न जाने क्या-क्या बना लिया है। एक जमाना था जब तीर कमान से लड़ाइयाँ लड़ी जाती थीं और जब आदमी के शरीर में तीर चुभ जाता था तो उसे निकालने के लिए घोड़े की पूँछ से रस्सी बाँध दी जाती थी और घोड़े को भगा दिया जाता था, तब कहीं जाकर तीर बड़ी मुश्किल से शरीर में से बाहर निकलता था। व्यक्ति बच गया तो बच गया - मर गया तो मर गया। पुराना जमाना था। आज मेडिकल साइंस ने - सर्जरी की साइंस ने न जाने क्या से क्या चमत्कार दिखा दिये शरीर के भीतर की चीजें दिखाने से लेकर निकाल बाहर करने तक के कितने चमत्कार विज्ञान ने कर दिखाये हैं। यह मनुष्य की बुद्धि का चमत्कार है- विज्ञान का चमत्कार है। यह हमारा जमाना वैज्ञानिक चमत्कारों का जमाना है।

पिछली शताब्दियों में मनुष्य ने जो प्रगति की और जो विकास किया उसकी तुलना में आज की दुनिया कुछ मायने में बहुत आगे है। संसार के बारे में कहा जाता है कि इसको बने हुए दस लाख वर्ष हो गये। इन दस लाख वर्षों में ऐसा वक्त कभी नहीं आया जैसा कि आज हमारे और आपके सामने सुख और सुविधाओं से भरा हुआ है। टेक्नालॉजी और बौद्धिक दृष्टि से हमारा युग और समय कितना प्रगतिशील और समृद्धिशाली है, कहा नहीं जा सकता। पिछले दिन प्रगति के दिन तो नहीं थे, अवसाद के दिन थे, लेकिन गिरावट के दिन तो नहीं ही थे। मनुष्य इतना नीचे कभी भी गिरा नहीं था जितना कि वह आज गिरता हुआ चला जा रहा है। शरीर की दृष्टि से इतना खोखला वह कभी नहीं हुआ जितना कि आज हो गया। आज हमारे लिए एक मील चलना भी मुश्किल हो जाता है। सवारी अगर हमारे पास न हो तो हम किस तरीके से चल सकते हैं? अपनी अटैची और होल- डाल लेकर किस तरीके से स्टेशन से घर तक पहुँच सकते हैं? यह बहुत मुश्किल है हमारे लिए। हमारे बुजुर्ग कैसे थे? मैंने अपने नाना जी को आँख से देखा था जब वे चालीस मील तक सफर करते थे और पूर्णमासी के दिन गंगाजी नहाने जाया करते थे। उन्होंने जवानी के दिनों से ही ये कसम खायी थी कि मैं पूर्णमासी के दिन गंगा जी नहाने अवश्य जाया करुँगा। चालीस मील दूर हमारे गाँव से गंगा है। हमारे नाना जी सबेरे सफर करने के लिए निकलते थे और रात में ही गंगाजी जा पहुँचते थे। सबेरे स्नान किया और वहाँ से रवाना होकर चालीस मील दूर शाम को घर आ जाते थे। अस्सी मील का दो दिन का यह सफर आज हमारे लिए मुश्किल है, आज हम नहीं चल सकते। शारीरिक दृष्टि से हम दुर्बल होते हुए चले गये ।

दाम्पत्य जीवन जिसमें कि सुख और सौभाग्य की गरिमाएँ रहती थीं और संतोष की धाराएँ बहती थीं। जहाँ राम और सीता हुआ करते थे। जहाँ एक-दूसरे के प्रति निष्ठा और विश्वास का क्या कहना। रामायण में एक प्रसंग आता है जब लव-कुश ने देखा कि हनुमान जी और लक्ष्मण जी अश्वमेध के घोड़े को लिए चले जा रहे हैं तो उन्होंने पूछा आप लोग कौन हैं? उत्तर मिला मैं लक्ष्मण हूँ और मैं हनुमान हूँ। उन्होंने कहा- आप वही लोग हैं जिन्होंने हमारी माँ को जंगल में वनवास में अकेला और असहाय छोड़ दिया था। लक्ष्मण ने आँखें नीची कर लीं। बच्चों ने कहा अच्छा तो हम अब आपको इसका मजा चखाते हैं। बस लव-कुश ने हनुमान जी को पकड़ लिया और उनको पूँछ पेड़ से बाँध दी। लक्ष्मण जी को भी पकड़ा और एक रस्सी से पेड़ से बाँध दिया और माँ के पास गये। माँ से कहा- माँ! तो यही वे आदमी हैं जिन्होंने आपको जंगल में अकेला छोड़ दिया था। माँ ! हम इनको अब मजा चखाते हैं। माँ ने कहा-नहीं बच्चो! ये तुम्हारे पिता के भाई हैं और तुम्हारे पिता के प्रति मेरी कितनी गहन निष्ठा है, तुम नहीं जानते मुझे बनवास में किस लिए छोड़ा गया? संसार के

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

इतिहास में दाम्पत्य जीवन के आदर्श उपस्थित करने के लिए। तुम्हारे लिए यह मुनासिब नहीं कि अपने बुजुर्गों का अपमान करो, इनको छोड़ देना चाहिए। राम ने जब मुझे बनवास भेजा था तब भी उनका मन-मेरा जीवन, मेरा स्वरूप और मेरे आदर्श विश्व के सामने एक अभूतपूर्व उदाहरण रखने का था। उन्होंने कष्ट उठाये तो क्या, पर पुराने जमाने के दाम्पत्य जीवन की आज के हमारे दाम्पत्य जीवन के तुलना नहीं हो सकती। आज जिसकी आग में सारा विश्व जल रहा है। यूरोप जल चुका, अमेरिका जल चुका और वही आग धधकती हुई हमारे हिन्दुस्तान की तरफ बढ़ती चली आ रही है। रूप का भूखा मनुष्य, धन का भूखा मनुष्य, सेक्स का भूखा मनुष्य, दाम्पत्य जीवन के महान आदर्शों को भूलता हुआ चला जा रहा है और सारी दुनिया में एक तहलका मचता चला जा रहा है। शमशान के तरीके से मनुष्य जलता चला जा रहा है। हर वक्त लम्बी चौड़ी प्रेम की चिट्ठी लिखी जाती रहती है और लम्बे चौड़े आश्वासन दिये जाते रहते हैं; लेकिन यकीन नहीं होता किसी स्त्री को कि छः महीने बाद हमारे गृहस्थ जीवन का क्या होगा? इसी तरह किसी मर्द को यकीन नहीं होता कि छः महीने बाद हमारे गृहस्थ का क्या होगा? लम्बे-चौड़े प्रेम-पत्रों को लिखे जाने के बावजूद हर मनुष्य इतना अशान्त होता हुआ चला जा रहा है।

अमेरिका जैसे सम्पन्न देश में जहाँ हमारे बच्चे भाग करके वहाँ न जाने क्या-क्या सीखने जाते हैं। वहाँ की जितनी प्रशंसा की जाय कम। लेकिन वहाँ का दाम्पत्य जीवन व गृहस्थ जीवन इतना जटिल और घटिया होता चला जा रहा है। आदमी के मस्तिष्क पर टेन्शन ही टेन्शन सवार रहता है। सारी रात वहाँ आदमी को चैन नहीं पड़ता। ट्रेंक्युलाइजर की गोलियाँ खाकर लोग रात गुजारते हैं। ब्लड प्रेशर, हार्ट डिज़ीज, डायविटिज न जाने क्या-क्या बीमारियाँ घेरे रहती हैं। खाने की चीजों का ठिकाना नहीं। मेरा एक मित्र है वहाँ इंजीनियरिंग कालेज में पढ़ाता है, कहता है-हम पानी नहीं पीते, यहाँ बराबर फलों के जूस की बोतलें आती रहती हैं और सारे दिन हम पानी की जगह पर फलों का जूस पीते रहते हैं। पहले आदमी सूखी रोटी खाकर के सुख चैन की सांस लिया करता था और विश्वास दिलाया करता था कि हम सुखी लोगों में से हैं, पर अब हमारा दाम्पत्य जीवन न जाने कैसा है? हमारे गार्हस्थ जीवन में न जाने कैसी लग गई आग ? हमारे बच्चे अभिभावकों के प्रति जैसे निष्ठावान होने चाहिए थे, नहीं हैं। अब श्रवण कुमार की सिर्फ कहानियाँ हैं । ये चाहें तो आप पढ़ सकते हैं; चाहें तो आप सुन सकते हैं। आपको श्रवण कुमार देखने का सौभाग्य अपने घर में अब नहीं मिल सकता। आपको रामायण काल की कहानी किताब में पढ़नी चाहिए, पर आपको ये उम्मीद नहीं रखनी चाहिए कि आपके घर में बच्चे राम और सीता जैसे हों। पर पिता का मन संदेह से भरा हुआ पड़ा है कि हमारे पाँच बच्चे हैं लेकिन बड़े होने पर न जाने क्या होगा? हमारा सामाजिक जीवन, राष्ट्रीय जीवन, हमारा आर्थिक जीवन कितना जटिल और कितना जकड़ा हुआ बनता चला जा रहा है। विज्ञान की प्रगति के बावजूद, धन की प्रगति के बावजूद इनसान के लिए एक अजीब समस्या उत्पन्न होती चली जा रही है। इसे आपको समझना पड़ेगा, इस पर विचार करना पड़ेगा कि ऐसा आखिर क्यों है?

मित्रो! आप लोगों के ऊपर, नई पीढ़ी के ऊपर वो ज़िम्मेदारियाँ आ रही हैं, आयेंगी और आनी चाहिए। आप लोगों को व्यक्तिगत जीवन, राष्ट्रीय जीवन, सामाजिक जीवन और आर्थिक जीवन की कठिनाइयों को हल करना पड़ेगा । आप लोगों में से अधिकांश को वह रोल अदा करना पड़ेगा जो कि राष्ट्रीय जीवन और व्यक्तिगत जीवन को विकसित करने के लिए किया जाना चाहिए। जिम्मेदारियाँ अपनी जगह पर रहेंगी और इसके लिए श्रम बहुत करना पड़ेगा। आज राष्ट्र के सामने, व्यक्ति के सामने अनेकानेक समस्यायें हैं जो यह कहती हैं कि हमको हल किया जाय। किस तरीके से हल किया जाय मैं आपको एक छोटा का फार्मूला देकर जाना चाहता हूँ। आप लोगों में से किसी आदमी को खासतौर से विद्यार्थियों को अगले दिनों कुछ जिम्मेदारियों के वजन अपने कंधे पर उठाने पड़ेंगे और आप लोगों को वे काम करने पड़ेंगे जो कि राष्ट्र निर्माताओं को करने पड़े हैं। तब आपको किस आधार पर व्यक्ति का निर्माण, समाज का निर्माण, राष्ट्र का निर्माण और आज की उलझी हुई समस्याओं को हल करने के लिए क्या करना होगा? इसके लिए एक फार्मूला यह है कि व्यक्ति को अपने अन्तःकरण में प्रवेश करना पड़ेगा। समस्याओं के हल बाहर नहीं, बल्कि भीतर तलाश करने पड़ेंगे। समस्याएँ बाहर से पैदा नहीं होतीं। समस्यायें भीतर की हैं और बाहर दिखायी पड़ती हैं। आदमी अपने भीतर से समस्याएँ पैदा करता है और बाहरी जीवन में वे केवल प्रस्तुत हो जाती हैं। मेरे भीतर एक रूह काम करती है। मेरा एक तार काम करता है। वही काम कर रहा है भाषण वही दे रहा है, पुस्तकें उसी ने लिखी हैं, समाज के नव निर्माण के ख्वाब उसी ने देखे हैं। बाहर जो भी क्रिया-कलाप आप देखते हैं वह बाहर का नहीं है मेरे भीतर के अंतरंग-चेतना के हैं। समस्याओं के बारे में भी यही बात है। बीमारियाँ भी बाहर से दिखाई पड़ती हैं, बुखार बाहर से आया मालूम पड़ता है, खाँसी बाहर से खाँसने में दिखाई पड़ती है पर वस्तुतः वह भीतर से पैदा होती है।

समस्यायें वे उलझनें हैं जिन्होंने हमारे राष्ट्र को, समाज को, व्यक्ति को और सारे विश्व को जकड़ कर रखा है। ये हमारे भीतर से पैदा हुई हैं। मैं आपसे एक निवेदन करना चाहता हूँ कि जब आपको इनके समाधान ढूँढने पड़ें तो सिर्फ आपको बाहर की ओर ही नहीं, भीतर की ओर भी गौर करना चाहिए कि मनुष्य का व्यक्तित्व और समाज का अंतरंग कहीं गड़बड़ तो नहीं हो गया। यदि गड़बड़ हो तो उसे सुधारने की कोशिश करनी चाहिए। समाज की और व्यक्ति की उलझी हुई समस्याओं को हल करने के लिए बाहरी उपचार करना ही काफी नहीं है। इलाज की सामग्री ढूंढी जानी चाहिए, रिसर्च की जानी चाहिए कि दवाइयों के द्वारा बीमारियों से छुटकारा कैसे पाया जाय? आदमी की सेहत को कैसे अच्छा बनाया जाय? लेकिन आपको ये भुलाना नहीं

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

चाहिए कि अंतरंग जीवन अगर सुव्यवस्थित न हो सका तो हमारे स्वास्थ्य की समस्या नहीं हल हो सकेगी।

सेण्डो का नाम आपने सुना होगा जिसकी की सैण्डोकट बनियान अक्सर पहनी जाती हैं। अपने जमाने में वह यूरोप का एक ख्यातिप्राप्त पहलवान हुआ हैं। एक समय था जब पहलवानों में सेण्डो का नाम पहले लिया जाता था। अब तो दूसरे लोग भी हो गये हैं। बचपन में वह बीमार रहा करता था- सर्दी-जुकाम से पीड़ित रहा करता था। अपने पिता के साथ एक दिन वह म्यूजियम देखने गया। वहाँ पहलवानों की तस्वीरें देखकर पूछा-पिताजी क्या मैं भी पहलवान बन सकता हूँ? पिता ने कहा हाँ! ये सुनकर जिज्ञासा भरे स्वर में सैण्डो ने कहा - पिताजी बताइये हमको पहलवान बनने, मजबूत बनने के लिए क्या करना चाहिए? उन्होंने कहा- बेटे मजबूती के सारे आधार, दीर्घ जीवन के सारे आधार मनुष्य के भीतर सन्निहित हैं, पर आदमी इस चीज को भूल गया। आदमी अगर अपनी भूलों को सुधार सके तो बेहतरीन स्वास्थ्य प्राप्त कर सकता है। बेटे! हमने अपना पेट खराब कर डाला । खुराक से ज्यादा खाकर और वे चीजें खायीं जो हमारे लिए मुनासिब नहीं थीं। इन्द्रियाँ हमारे लिए काम करने को थीं, पर हर इन्द्रिय के भीतर से हमने अपनी शक्ति का इतना हिस्सा खर्च कर डाला जितना कि पैदा नहीं होता था। हमने अपने दिमाग को इस तरीके से चिन्ताओं से, दूसरी चीजों से उलझाये हुए रखा कि हमारे स्वास्थ्य को नियन्त्रित करने वाला नर्वस सिस्टम अस्त व्यस्त हो गया। हम इन तीन बुराइयों को अगर दूर कर सकें तो लम्बी जिन्दगी जी सकते हैं और कोई भी आदमी पहलवान बन सकता है। पेताजी! हमें दवा खाने की जरूरत नहीं है? उन्होंने कहा- नहीं बेटा दवाएँ तो सिर्फ बीमारियों को ठीक करने के लिए हैं। ये टेम्पोरेरी एनर्जी दे सकती हैं। किसी आदमी को मजबूत व दीर्घजीवी बनाने के लिए दवाएँ कारगर सिद्ध नहीं हो सकतीं। अगर दवा कारगर रही होतीं तो जितने भी डाक्टर हैं वे दूसरे लोगों का इलाज करने से पहले अपना इलाज करते और जन सामान्य से बेहतरीन एवं पहलवान दिखायी देते। सैण्डो ने स्वास्थ्य के उन नियमों का जिनको मैं अध्यात्म का अंश कहता हूँ पालन किया और पहलवान बना।

आप इसको संयम कहिए। शब्दों से क्या होता है? मुझे उसको अध्यात्म कहने दीजिए। जुबान का संयम, इन्द्रियों का संयम, मस्तिष्क की विचारधाराओं का संयम, उठने-बैठने का संयम और अपने आहार-विहार का संयम, अगर आदमी इतना कर सकता हो, तो उसकी सेहत ठीक की जा सकती है। पुराने जमाने में डॉक्टर भी नहीं थे। तब तो कोई-कोई हकीम जड़ी-बूटी, नीम की पत्ती और काली मिर्च बताने वाले ही पाये जाते थे। इन्हीं से बीमारियाँ अच्छी हो जाती थीं। इन सारी वजहों में एक वजह ये है कि आदमी अपने आपको खोखला बनाता हुआ चला जा रहा है। आप नई पीढ़ी के लोगों में से संभव है किसी को राष्ट्र का स्वास्थ्य मंत्री बनना पड़े। तो मैं आपसे एक निवेदन करके जाना चाहता हूँ कि चाहे आप अस्पताल खुलवाना, मेडिकल साइंस पर रिसर्च कराना, पर ये मत भूलना कि आदमी के स्वास्थ्य का मूलभूत आधार संयम ही होता है? जिसको हमने कई बार आध्यात्मिकता कहा है और पुराने लोग पुकारते थे- संयमशीलता ! संयमशीलता लोगों को सिखायी जानी चाहिए। बेहतरीन स्वास्थ्य और स्वास्थ्य की समस्या का हल निश्चित रूप से इस बात पर टिका हुआ है कि आदमी अपने आहार-विहार, इन्द्रियों और दिमाग के इस्तेमाल, पेट के इस्तेमाल के बारे में, पुनः जाने, इनको ठीक तरीके से काम में लायें। आप लोगों को कभी स्वास्थ्य मंत्री बनना पड़े तो मेरे इस छोटे से नाचीज फार्मूले को याद रखना।

एक अन्य दूसरी बात की ओर भी मैं आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ कि हमारे कहने के अनुसार प्लानिंग की जाय और इसकी एक योजना बनायी जाय और हर आदमी को सिखाया जाय कि आपको गृहस्थ बनने से पहले सौ बार विचार करना चाहिए कि आप बच्चों की जिम्मेदारी उठाने में समर्थ हैं या नहीं। आप अपनी पत्नी को वह स्नेह और प्यार देने में समर्थ हैं, जिसके आधार पर वह नन्हा सा फूल नन्हा सा पौधा, जो आपके घर में आया है, उसके सर्वांगीण विकास पर ध्यान दे सकें। आपके अन्दर वह योग्यता है क्या? इन्सान की खुराक अनाज नहीं, रोटी नहीं, दूध नहीं, ये सिर्फ जिस्म की खुराक है। आदमी जिस्म नहीं है। आदमी में शरीर के अलावा भी एक चीज है- जिसको जीवात्मा कहते हैं और रूह कहते हैं और वह जीवात्मा प्रेम की मुहब्बत की प्यासी है। प्रेम और मुहब्बत धर्मपत्नी को नहीं मिल सके तो उसकी प्रतिक्रियाएँ गलत होती चली जायेंगी और हमारे घरों में वह निष्ठाएँ पैदा न हो सकेंगी जो कि छोटे-छोटे घरोंदों को छोटे-छोटे किराये के मकानों को ऐसा बेहतरीन बनाती हैं जिस पर स्वर्ग न्यौछावर किया जा सके। दो आदमी का स्नेह एक और एक मिलकर ग्यारह हो सकते हैं। राम और लक्ष्मण मिलकर दो नहीं थे एक और एक ग्यारह थे। जानदार चीजें एक और एक दो नहीं होती, एक और एक मिलकर ग्यारह होती हैं-अगर उनके भीतर निष्ठाएँ हों और एक-दूसरे के प्रति वफादारी हो। हमारे दाम्पत्य जीवन- हमारे गृहस्थ जीवन गरीबी में भी सुख के आधार बन सकते हैं और एक दूसरे से इतना प्रसन्न-संतुष्ट रह सकते हैं इसका कोई ठिकाना नहीं।

यूरोप में एक गरीब दम्पत्ति थे। विवाह का दिन आने वाला था। दोनों एक-दूसरे को उपहार देने के इच्छुक थे, पर साधन कैसे जुटायें? पति के दिमाग में बहुत दिनों से ख्वाब था कि अपनी स्त्री के सुनहरे रेशम जैसे बालों के लिए सोने की क्लिप लाकर दूँ और पत्नी का मन था कि विवाह के दिन अपने पति की घड़ी के लिए सोने की चेन लाकर दूं, लेकिन दोनों की जेबें खाली थीं। स्त्री बालों के व्यापारी की दुकान पर गयी और बाल बेचकर घड़ी की चेन खरीद लाई। उधर उसका पति अपनी घड़ी बेचकर क्लिप खरीद लाया। विवाह का दिन आया तो पति ने पत्नी से कहा, "हम आपके लिए सोने की क्लिप लाये हैं पर आपने सिर पर रुमाल क्यों बांध रखा है? इसे खोलिए हम आपके बालों में क्लिप लगायेंगे ।" पत्नी बोली हम आपके लिए घड़ी की चेन लाये

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

हैं लेकिन आज आपके हाथ पर ये रुमाल कैसे बंधा है? दोनों ने एक-दूसरे के रुमाल खोले तो देखा कि बाल कटे हुए हैं और कलाई खाली। एक के हाथ में क्लिप और दूसरे के हाथ में चैन । दोनों की आँखों में वफादारी और एक-दूसरे के प्रति निष्ठा के आँसू बहने लगे। भाइयो, जिन लोगों में इस तरह की भावनायें-निष्ठायें हैं, वहाँ हम यही कह सकते हैं कि दाम्पत्य जीवन में स्वर्ग आ गया।

एक और अभी थोड़े दिनों पूर्व झांसी की घटना है। एक आदमी का विवाह हुआ बीबी घर में आयी और तीन महीने स्वस्थ रही। उसके बाद उसे टी. बी. हो गयी, भगवान की माया! बाईस साल तक वह स्त्री जिन्दा रही। टी. बी. से हालत ऐसी हो गयी थी कि उस को करवट लेना तक मुश्किल हो गया था। लेकिन उसके पति का एक ही काम था। आफिस जाने से पहले स्त्री को नहलाना, कपड़े साफ करना, सिर में कंघी करना, चाय पानी पिलाना, खाना पकाना शाम को आकर फिर घर का सारा काम करना, उसका सारा का सारा समय उसी में चला जाता था। मित्रों ने कहा- आप सिनेमा नहीं जाते? उसने कहा- हमारी बीबी बीमार है और मैं उसकी सेवा वफादारी से करता हूँ। इससे अधिक संतोष कहाँ मिल सकता है। सिनेमा में क्या है जिसे देखकर चैन और खुशी प्राप्त हो सके । उसमें भी तो हम यही देखने जाते हैं कि हमारा दाम्पत्य जीवन खुशहाल कैसे हो? मेरी कर्त्तव्यपरायणता देखकर जब उसकी आँखों में से आँसू की बूंदें ढुलक पड़ती हैं तो मैं तो ये समझता हूँ कि ये हीरे मोती से ज्यादा बड़े उपहार हैं और जब उसकी हालत देखकर मेरी आँखों में मुहब्बत के आँसू छलक उठते हैं तो वह समझती है कि स्वर्ग उस पर न्यौछावर हो गया?

साथियो! पारिवारिक जीवन की सुख-शांति शक्ल सूरत पर नहीं टिकी है, ये तो आदमी की सीरत पर टिकी हुई है। मनुष्यों को कहिए जब आपको विवाह करना पड़े तो सूरत देखने की अपेक्षा सीरत और रंग देखने की अपेक्षा उसकी भावनाओं को देखना पसंद करें। अपने साथी का 'कट' ढूंढ़ने की अपेक्षा गुण-कर्म और स्वभाव ढूँढ़ना पसंद करें । अगर आप को बच्चों के निर्माण की राष्ट्रीय जिम्मेदारी उठानी पड़े, अगर आपके पास मुहब्बत है तो आप बच्चे पैदा करने से पहले यह भलीभाँति समझ लें कि बच्चे के विकास के लिए खुराक काफी नहीं हैं बोर्नविटा काफी नहीं है, अच्छे कपड़े काफी नहीं हैं स्कूलों के जेलखानों में भेज देना काफी नहीं है। इन जेलखानों में बच्चे सिर्फ एटीकेट सीख सकते हैं। कपड़े की क्रीज कैसे खराब हो जाती है? कैसे ठीक रखी जा सकती है, ये सभ्यता और शिष्टाचार सीख सकते हैं, पर उनका भावात्मक विकास नहीं हो सकता? क्योंकि जिन माँ- बाप के मनों में परिवार के प्रति, एक दूसरे के प्रति प्यार-मुहब्बत और आदर्श कर्त्तव्यनिष्ठा भरी है, उनके व्यवहार से ही बच्चे में भावनात्मक विकास हो सकता है। आज परिवारों में इनका अभाव है। इंग्लैण्ड और अमेरिका में ऐसे बहुत सारे बच्चे पैदा होते हैं जिन्हें माँ- बाप संभालने की स्थिति में नहीं होते और उन्हें अनाथालय में भर्ती करा दिया जाता है। सरकार उनको बेहतरीन शिक्षा, बेहतरीन खुराक देती है। फिर भी प्यार- मुहब्बत की कमी से उनका भावनात्मक विकास नहीं हुआ। इसीलिए जो सरकारी अनाथालयों में पाले गये, उनमें से कोई भी बच्चा राष्ट्र का कर्णधार नहीं हो सका, कोई भी महापुरुष नहीं हुआ, कोई लेखक-कवि नहीं हुआ। अधिकांश आदमी उनमें से फौजी होते हैं। ये वही व्यक्ति हैं जिन्होंने मुहब्बत को नहीं पिया। आदमी को मुहब्बत पिलायी जानी चाहिए, खासतौर से बच्चों को, बोर्नविटा नहीं!

मुहब्बत अगर हम पिला सकते हों तो हमारे बच्चे बेहतरीन राष्ट्र निर्माण के लिए कितने उपयोगी और व्यक्ति के लिए कैसे उपयोगी बन सकते हैं, इसका एक छोटा सा उदाहरण मैं आपको सुनाता हूँ। विनोबा भावे की माँ को अपने बच्चे भी पालने पड़े और अपने पड़ोसी का एक बच्चा भी। उनकी पड़ौसिन एक बच्चा दे गयी और कह गयी थी कि अब हम दुनिया से जा रहे हैं, मेरे बच्चे का तुम पालन करना। विनोबा भावे की माँ उस बच्चे का भी पालन करने लगी उसको वे घी से चुपड़ कर गरम-गरम रोटी खिलाती थी और अपने बच्चों को सूखी और बासी रोटी। विनोबा ने एक दिन अपनी माँ से पूछा माँ ! हम बच्चे एक जैसे हैं फिर तुम फर्क क्यों करती हो, एक को गर्म रोटी खिलाती हो और एक को ठण्डी; एक को घी की, एक को बिना घी वाली। इस फर्क का क्या कारण है? हम बच्चे हैं तो एक जैसा खाना क्यों नहीं देतीं? माँ ने कहा बेटे ये मेरी पड़ौसिन का बच्चा है, इसलिए ये भगवान का बच्चा है। तू मेरा बच्चा और तेरे साथ मेरी ममता जुड़ी हुई है, और इसके साथ भगवान की जिम्मेदारियाँ जुड़ी हुई हैं। क्योंकि एक माँ अपने बच्चे को मेरी गोद में सौंप कर गयी थी, सो भगवान के बच्चे के लिए जो करना चाहिए मैं वही इसके साथ करती हूँ। मुहब्बत से भरी विनोबा की माँ उस बच्चे का पालन करती रही, उनने स्वार्थ को नहीं देखा। विनोबा जी की जीवन कथा में लिखा है कि सुबह के वक्त जब माँ चक्की पीसती थी, मैं उनके पास जाता था और मुझे भूख लग आती थी तो जो चने वे पीसती थीं, उसी को खाकर रह जाता था। विटामिन ए, विटामिन बी और विटामिन सी प्राप्त नहीं कर सके विनोबा जी। लेकिन भोजन के साथ-साथ वह खुराक खाते रहे जो कि इनसानी खुराक है- मतलब मुहब्बत! अगर आपके पास वह मुहब्बत है तो आपको बच्चे पैदा करने चाहिए, बच्चों के निर्माण पर ध्यान देना चाहिए अन्यथा नहीं ! ईसा मसीह से एक आदमी ने पूछा आपने भगवान देखा है? उन्होंने कहा हाँ, हमने देखा है। क्या आप हमें भी दिखा सकते हैं? उन्होंने कहा- हाँ, तो दिखाइये। ईसा एक छोटा बच्चा उठाकर ले आये, और बोले यही भगवान है। इसका मन निर्मल, भावनायें निश्चल हैं, काम, क्रोध, मद मोह, मत्सर इत्यादि बुराइयों से यह बचा हुआ है। जो इनसान इन बुराइयों से बचा हुआ है उसे भगवान होना चाहिए और इनसान के रूप में भगवान देखना हो तो ये बच्चा है।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

बच्चों के पालन के लिए जो निष्ठायें और वफ़ादारी होनी चाहिए थीं, वह हमारे पास नहीं हैं। यही कारण है कि हमारे बच्चे बागी हो गये। बच्चा बैठा था इन्तजार में कि पिताजी आयेंगे, चन्दर-भालू और खरगोश की कहानियाँ सुनायेंगे, गोदी में लेंगे, कंधे पर बिठायेंगे, घुमाने ले जायेंगे और पिताजी साइकिल से आये। बच्चे दौड़े पापा आ गये, किसी ने पायजामा पकड़ा, किसी ने कुर्त्ता और उछलने लगे और पत्थर जैसे हम बच्चों को डाटने फटकारने लगे- भागो यहाँ से सारे कपड़े गन्दे कर दिये। बच्चे सहम कर माँ की गोद में छिप गये सोचा शायद माँ आँखों के आँसू पोंछ देगी। पिता ने कहा- इन शैतानों को संभालो, हमें सिनेमा जाना है, क्लब जाना है। जिन बच्चों ने स्नेह पाया ही नहीं, उनका विकास कैसे होगा? हम शिकायत करते हैं बच्चे अनुशासनहीन है, कहना नहीं मानते, बुजुर्ग की इज्जत नहीं करते और मास्टरों को धमकाते हैं, यूनिवर्सिटी के शीशे फोड़ देते हैं और यह नहीं करेंगे तो और क्या करेंगे बेचारे। छोटेपन से यही देखा और सीखा है। इसे रोकने की जिम्मेदारी मास्टरों, अध्यापकों की नहीं, वरन् उन लोगों की है जिन्होंने बच्चे पैदा किये, किन्तु उससे पहले ये नहीं सोचा कि हमारे पास मुहब्बत नहीं है तो भगवान को क्यों बुलायें। ये विचार करना चाहिए था कि लोहे के दिल, पत्थर के दिलवाले, हम विलासी और कामी व्यक्ति बच्चों की जिम्मेदारी नहीं उठा सकते। ऐसे लोगों को यह कहना चाहिए कि भावी नागरिकों को महापुरुषों के रूप में विकसित करना चाहते हों और ये चाहते हों कि सारे देश के नागरिक महान बनें, तेजस्वी बनें, शक्तिवान बनें, नेता में और महत्ता एवं महिमा को भर प्रकट हों तो उनके लिए दौलत जमा करना काफी नहीं है, बल्कि उसमें गुणों का विकास करना जरुरी है। गुणों का विकास ही वह प्रमुख तत्व है जो छोटे और गरीब आदमियों को दुनिया की निगाहों में अजर अमर बना सकता है । छोटे घरों में पैदा हुए मनुष्यों को बादशाह बना सकता है ऊँचे पदों पर पहुँचा सकता है।

राजस्थान में हीरालाल शास्त्री नाम के ४५ रुपये मासिक वेतन पाने वाले एक संस्कृत के अध्यापक हुए हैं। २६ वर्ष की उम्र में उनकी पत्नी का देहान्त हो गया। लोगों ने कहा- दूसरी शादी कर लीजिए। उन्होंने कहा- पहली पत्नी की सेवा और वफादारी का तो कर्ज चुका नहीं पाया और आप लोग दूसरी शादी की बात करते हैं। वे नौकरी छोड़कर अपनी पत्नी के गाँव में चले गये और निश्चय किया कि इस गाँव की एक लड़की ने मेरी सेवा-सहायता की, मैं इस गाँव की सेवा करुँगा और कन्या पाठशाला खोलने के इरादे से गांव की लड़कियों को एक पेड़ के नीचे पढ़ाने लगे। कुछ लोगों ने मजाक भी उड़ाया पर वे अपनी निष्ठा पर अडिग रहे। यह देख गाँव के भले लोगों ने छप्पर डाल दिया, बच्चियाँ पढ़ने लगीं। लोगों ने सोचा जो आदमी कष्ट मुसीबतों को सहकर दूसरों की सुविधा और राष्ट्र की प्रगति, गाँव की प्रगति के लिए काम कर रहा है, उसका नाम इंसान के रूप में भगवान होना चाहिए। फिर क्या था- रुपया-पैसा, सोना-चाँदी, लोहा-सीमेंट भागते चले आये और उस स्थान पर वनस्थली नाम का विद्यालय बनकर खड़ा हो गया। हिन्दुस्तान में यह महिला विश्व विद्यालय पहले नम्बर का है जिसमें हवाई जहाज उड़ाने से लेकर स्कूटर चलाने तक और विभिन्न विषयों का प्रशिक्षण दिया जाता है। स्वाधीनता के बाद जब पहली गवर्नमेंट बनायी गयी तो इन्हीं हीरालाल शास्त्री को राजस्थान का मुख्यमंत्री बनाया गया। मनुष्य का आध्यात्मिक विकास इस बात में नहीं कि उसके पास धन कितना है, ऐय्याशी और विलासता के साधन कितने हैं? ये मनुष्य की महानताएँ या प्रगति की निशानियाँ नहीं हैं! प्रगति की निशानियाँ आदमी के अंदर की हिम्मत और जीवट है जिसके आधार पर आदमी सिद्धान्तों का पालन करने में समर्थ हो पाता है।

कोरिया के एक किसान यांग का नाम सुना है आपने ? जिस तरह हमारे यहाँ गांधी जी की तस्वीरें घरों में टंगी रहती हैं, दक्षिण कोरिया में यांग की तस्वीर टंगी रहती हैं। नयी फसल जब तैयार होकर आती है तो पहले यांग की पूजा होती है और बाद में अनाज का उपयोग किया जाता है। १८२१ में जब कोरिया में अकाल पड़ा, उस बुरे समय में लोग भूखों मरने लगे, एक दूसरे को लूट-मारकर खाने लगे। यांग ने अपने बच्चों और बीबी को बुलाकर कहा- देश में पन्द्रह बीस लाख लोग भूख से तड़प कर मर रहे हैं, हमारे पास अनाज है जिसे खाकर हम जिन्दा रह सकते हैं लेकिन अगले वर्ष वर्षा हुई और अगर बीज न मिल सका तो सारे का सारा कोरिया मनुष्यों से रिक्त हो जायगा इसलिए अनाज खाने की अपेक्षा बीज के लिए रखा जाय। अनाज के कोठे को बन्द करके सरकारी बैंक की सील लगवा दी और कहा- वर्षा होने पर जब बीज की जरुरत पड़े तभी इसे खोला जाय । बीबी बच्चों सहित पाँचों प्राणी भूखों मर गये वर्षा होने पर बीज को बोया गया और यांग वहाँ का देवता बन गया क्योंकि उसने अपने स्वार्थ और हविश का त्याग किया था।

महानतायें सिखायी जाती हैं, बड़प्पन नहीं। अमीरी नहीं महानता। हमें लोगों के मस्तिष्क बदलना चाहिए। अगर राष्ट्र को महान बनाना हो, व्यक्ति को महान बनाना हो, राष्ट्र को समर्थ और मजबूत बनाना हो तो हमको लोगों से यह कहना चाहिए कि पहले हर व्यक्ति स्वयं बदले, अपने परिवार को बदले तब अपने आस-पास के परिकर को बदले। दुनिया बदल रही है- सुधर रही है, ऐसे में हम कैसे बच सकते हैं? हमको महत्वाकांक्षायें नहीं, महानतायें जगानी चाहिए। आज आदमी के भीतर महत्वकांक्षायें भड़क गयी हैं। हर आदमी महत्वाकांक्षी है और बड़ा आदमी बनना चाहता है- अमीर बनना चाहता है। हर आदमी खुशहाल बनना चाहता है। मैं खुशहाली और अमीरी के खिलाफ नहीं हूँ, लेकिन मैं यह कहता हूँ कि अमीरी ही काफी नहीं है। अमीरी के साथ-साथ मनुष्य के भीतर जो महानतायें प्रसुप्त पड़ी हैं, उन्हें भी जगाया जाना चाहिए जैसे इंग्लैण्ड के नेलसन एवं जापान के गांधी कागावा ने अपने भीतर से जगायी थी।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

नेलसन इंग्लैण्ड की सेना में एक सामान्य सिपाही था, किन्तु जब उसने देखा कि उसके देश की सेनायें बुरी तरह दुश्मनों के हाथों पिट रही हैं तो वह अपने अफसरों के पास गया और बोला- सिपाहियों को बन्दूकें ही काफी नहीं हैं। सिपाहियों में जोश, देशभक्ति की भावना और कट कर मरने की भावना ही विजय दिलाती है। यह काम मुझे सौंपा जाय। बड़े अफसरों ने उसे यह काम सौंप दिया और नेसलन जिस निष्ठा के साथ, देश भक्ति के साथ, जिस उमंग के साथ लड़ा वे उमंगें हमने भारतीय सैनिकों में पाकिस्तान के साथ लड़ाई के समय देखी हैं जो टैंकों से टकराने में भी पीछे नहीं रहे और अपनी जान की बाजी तक लगा दी। नेलसन ने यही किया । उसने अपने सीने पर बम बाँधे और दुश्मनों के टेंकों के सामने आ गया। टैंक द्वारा उसे कुचला गया। लेकिन टैंक भी बमों के धमाके के साथ उड़ गये। घायल एवं लहु लुहान नेलसन जब खड़े होने योग्य नहीं रह गया तो उसने अपने आपको एक पेड़ से बँधवा लिया और अपनी सेना का मार्गदर्शन करने लगा। शरीर से, फेफड़े से खून के फव्वारे छूट रहे थे, फिर भी वह मोर्चे पर डटा रहा। इंग्लैण्ड जब जीत गया तो खुशियों का समाचार नेलसन के कान में सुनाया गया, तो उसने कहा- अब मुझे मरने में कोई डर नहीं, मेरी मौत खुशी का उपहार है। अब मैं शांति के साथ - अपनी अच्छाई के साथ मरूँगा और इतना कहकर उसने अंतिम सांस ली।

इसी तरह कागावा ने अपना पेट काट कर बीमारों, भिखारियों, अपाहिजों, कोढ़ियों और शराबियों की दशा सुधारने में सारा जीवन खपा दिया। जैसे हिन्दुस्तान में गांधी जी की तस्वीरें हर जगह टंगी हुई मिलेंगी, वैसे ही जापान के हर घर में कागावा का चित्र टंगा हुआ मिलेगा। जैसे हर हिन्दुस्तानी बच्चे को गांधी जी का नाम मालूम है, वैसे ही जापान के हर नागरिक को कागावा का नाम मालूम है। इसलिए मालूम है कि उसने देश के पिछड़े लोगों के लिए सारी जिन्दगी जद्दोजेहद की। कागावा का नाम अजर-अमर हो गया । इंग्लैण्ड का हर नागरिक कृतज्ञता के भावों से भरा हुआ है नेलसन के लिए और जापान का कागावा के लिए, कोरिया का हर नागरिक कृतज्ञता के भावों से भरा हुआ है यांग के लिए। यही महानता है।

भाइयो, हमें महत्वाकांक्षाओं को भूल जाना चाहिए और मनुष्य के भीतर उन्नति की भावना, महानता की भावना विकसित करनी चाहिए- अमीरी की नहीं, अय्याशी की नहीं। कारण अमीरी आदमी के अंदर व्यसन पैदा कर देती है और उनके बच्चों को चोर बना देती है। आदमी को बीमार बना देती है और साथ ही सामाजिक जीवन में दुष्ट पम्परायें कायम हो जाती हैं। अतः इस बात को हमें और आपको जानना चाहिए। अगर आपको समाज विज्ञान का काम सौंपा जाय, लेक्चरर या प्रोफेसर बना दिया जाय, या किसी विश्व विद्यालय का डीन बना दिया जाय और फिर आपको देश की- संसार की समस्याओं को हल करने के लिए कहा जाय तो आप हमारी इस बात को ध्यान रखना-नोट करके रखना कि कोई भी राष्ट्र केवल पैसों के कारण गरीब या अमीर नहीं होता। फ्रांस के पास पैसा था, चारों ओर विलास, वैभव था। कितनी ही भव्य इमारतें बनी हुई थीं, लेकिन हिटलर ने जब चढ़ाई की तो तीन दिन के अंदर सारा का सारा फ्रांस तहस-नहस हो गया और वहाँ का हर नागरिक इस बुरी तरीके से पड़ोस वाले देशों में भागा कि त्राहि-त्राहि मच गयी। पड़ोस वाले देशों के नागरिक बोले- फ्रांस के ये नागरिक जो अमीर कहलाते थे। पेरिस दुनिया का स्वर्ग कहा जाता था किसी जमाने में, आज उस पेरिस के नागरिक अपने देश की रक्षा करने के लिए पूरी हिम्मत और जोश से- ताकत से क्यों नहीं लड़े? जब कि रूस वालों ने, ब्रिटेनवासियों ने एक-एक इंच की लड़ाई लड़ी। ऐसा क्या कारण हो सकता है जो उनकी पराजय का कारण बना? उत्तर मिला- फ्रांसीसियों के दिमाग पर अय्यासी और विलासिता छायी थी।

अमीरी से राष्ट्र मजबूत नहीं होते, मनुष्य मजबूत नहीं होते, राष्ट्र की समस्याओं का हल नहीं होता और राष्ट्रीय परम्परा का विकास नहीं होता इसलिए आपके जिम्मे यदि कभी यह काम सौंपा जाय तो कृपा करके इस बात का ध्यान रखें। अगर मेडिकल कॉलेज में पढ़ने वाले विद्यार्थियों में से किसी को धर्माचार्य बना दिया जाय, जगत गुरु शंकराचार्य बना दिया जाय तो आपको एक काम करना पड़ेगा- हर साधु संत और बाबा जी को यह कहना पड़ेगा कि आध्यात्मिकता के सिद्धान्तों को काम में लायें। अध्यात्मिकता की नकल बनाना, ढोंग बनाना, दाढ़ी- जटा बढ़ाना और तिलक छापा लगाना ही काफी नहीं है। धर्म की चिन्ता करना ही काफी नहीं है, वरन् धर्म की नीति पर भी विचार करना चाहिए। हिन्दुस्तान में सात लाख गाँव हैं और छप्पन लाख साधु, संत-महात्मा, पुरोहित, पंडित, बाबाजी। एक गाँव पीछे आठ साधु-संत आते हैं। यदि आठ साधु संत एक गाँव में चले जायँ और उस छोटे से गाँव में सफाई करने लगें, साक्षरता का विस्तार करने लगें तो जिन असंख्यों सामाजिक समस्याओं कुरीतियों ने सारे राष्ट्र को तबाह करके रखा है, जकड़ कर के रखा है, उसे हम ठीक कर सक्ते हैं। मगर भाइयो, ये साधु- संत न जाने कहाँ खो गये, आध्यात्मिकता की चेतना न जाने कहाँ लुप्त हो गयी। यदि यह राष्ट् के निर्माता का काम करें, आध्यात्मिकता का काम करें तो यह अपने देश को न जाने कहाँ से कहाँ ले जा सकते हैं। आध्यात्मिकता के इस सूत्र को मैं सेवा सहायता कहता हूँ, कर्तव्य परायणता कहता हूँ। हमारे जीवन में यदि यह आ जाये तो हमारा राष्ट्र न जाने कहाँ से कहाँ पहुँच जाय। आपको कभी ऐसा काम करना पड़े तो कृपा करके ध्यान रखिये।

अगर आपको कभी धर्म का- अध्यात्म का काम सौंपा जाय तो आपको भगवान बुद्ध के तरीके से यही कहना चाहिए कि हमारा स्वर्ग गरीबों के बीच है, दुखियों के बीच है, सेवा के बीच है। भगवान बुद्ध से जब पूछा गया कि क्या आप स्वर्ग जायेंगे? उन्होंने कहा नहीं, मुझे स्वर्ग जाने की जरुरत नहीं है। स्वर्ग में जो आनन्द है उससे हजार गुना आनन्द वहाँ है जहाँ दीन-दुखियारे रहते हैं, पीड़ित लोग रहते हैं, अज्ञान और

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अभाव ग्रस्त लोग रहते हैं। मैं उनकी सेवा किया करुँगा और संसार के सभी मनुष्यों को स्वर्ग भेजने की कोशिश करुँगा। अभी मुझे बार-बार जन्म लेना है और दुखियारों को, पिछड़े हुओं को, कर्तव्य से भटके हुओं को रास्ता दिखाना है। अगर ये भाव हमारे भीतर आ जायँ तो स्वर्ग की समस्या हल हो जाय, फिर हमें साधु- बाबाजीओं की तरह से स्वर्ग का टिकट नहीं बाँटना पड़ेगा।

इन दिनों व्यक्ति के जीवन की असंख्य समस्याएँ हैं, राष्ट्रीय जीवन की असंख्य समस्यायें हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेकों समस्यायें हैं। युद्ध के बादल चारों ओर मँडरा रहे हैं। हर मनुष्य एक-दूसरे के खून का प्यासा बना हुआ है, एक दूसरे को बैरी समझ रहा है। यदि अंतर्राष्ट्रीय जिम्मेदारियाँ कभी आपके ऊपर आवें तो आपको युद्ध व घृणा की बातें मन में से निकाल देने के लिए हर राष्ट्र को मजबूर करना चाहिए और ये कहना चाहिए कि देश जमीनों के टुकड़ों में बँटे हुए नहीं हैं। इनसान के दिल को जमीन के टुकड़ों से बाँटा नहीं जा सकता। इन्सान को -इन्सानी मोहब्बत को जमीनों की वजह से बाँटा नहीं जा सकता है। आदमी के बीच में मनमुटाव है तो इसे प्यार व मोहब्बत के साथ इन्साफ के साथ आराम से सुलझाया जा सकता है। लड़ाई करने की जरुरत नहीं है। (अगर आप लोगों को यह समझा सकें कि इन्सान - इन्सान का भाई है और भाई को भाई से मोहब्बत करनी चाहिए, भाई को भाई के लिए त्याग करना चाहिए। यदि यह बात हमारे जीवन में आ जाय, तो हम युद्धों से बच सकते हैं और सारी समस्याओं को हल कर सकते हैं। आज जबकि एक देश दूसरे देश से हर वक्त काँपता रहता है, इस विभीषिका को हम इस तरह प्यार और मोहब्बत से हल कर सकते हैं। अभी जो ज्ञान और सम्पदा टैंक बनाने में लगा हुआ है उससे हम ट्रेक्टर बना सकते हैं। जो विज्ञान आज मशीनगनों को बनाने में लगा हुआ है उससे हम पानी निकालने के पंप बना सकते हैं और जो ज्ञान एवं शक्ति एक दूसरे को मारने की- काटने की शिक्षा देने में लगा हुआ है उसे एक-दूसरे के प्रति प्यार - मोहब्बत पैदा करने और बच्चों का शिक्षण देने में लगाया जा सकता है यदि इनसान के भीतर मोहब्बत पैदा की जा सके और उसे यह समझाया जा सके कि सारा विश्व ही अपना कुटुम्ब है परिवार है तो फिर दुनिया में हजारों वर्ष तक शान्ति कायम रखी जा सकती है।

साथियो, अगर ऐसा न हो सका जैसा कि मैंने इन सूत्रों में अभी आपको बताया है तो फिर बर्टेण्ड रसेल के शब्दों में ऐसा होगा कि पहले लड़ाई तीर कमान से लड़ी जाती थी फिर बन्दूकों से लड़ी गई और तीसरी लड़ाई एटमबमों से लड़ी जायगी और चौथी लड़ाई के लिए आदमी के पास इतनी ही शक्ति बाकी रह जायेगी कि वह ईंट और पत्थरों का इस्तेमाल कर सके। बन्दूक और लाठियाँ चलाने लायक तब इसके पास न अकल बाकी रह जायेगी, न साधन बाकी रह जायेंगे और न सामर्थ्य बाकी रह सकेगी। ये अक्ल, ये विज्ञान जिसकी मैं प्रशंसा कर रहा था और जिस टेक्नॉलाजी के बारे में शुरु से बता रहा था, ये सब इस तरह से जल कर खाक हो जायेंगे जैसे कि कागज का रावण अपने आप जलकर खाक हो जाता है। इस विज्ञान की तरक्की को सुरक्षित रखने के लिए इस टेक्नालॉजी के लाभ और हानि को ठीक प्रकार से समझने के लिए इस बात की आवश्यकता है कि इस उन्मत्त हाथी के ऊपर अंकुश रखा जाय, सरकस के शेर को तमाशा दिखाने के लिए रिंग मास्टर के तरीके से एक हंटर रखा जाय। अगर भौतिक विज्ञान और भौतिक प्रगति के इस बाघ को खुला हुआ छोड़ा गया तो यह किसी को छोड़ने वाला नहीं है, सबको खा जायेगा। फिर इनसानियत जिन्दा रहने वाली नहीं है। इनसानियत को जिन्दा रखने के लिए इस टेक्नालॉजी और इस बौद्धिक विकास-आर्थिक विकास के पीछे आध्यात्मिकता का अंकुश उसी प्रकार रखा जाना चाहिए, जिस प्रकार से एक पागल हाथी के सूँड़ के ऊपर एक अंकुश रखा जाता है और उसकी दिशा निर्धारित की जाती है।

बच्चो, भविष्य में आपके ऊपर बहुत बड़ी जिम्मेदारियाँ आने वाली हैं जिसे आपको उठाना होगा। अगले दिनों समस्याएँ उभरेंगी और आपसे अपना हल माँगेंगी और ये कहेंगी कि हमारी समस्याओं का हल किया जाय। आपको इन समस्याओं के समाधान ढूंढने और करने पड़ेंगे और करना चाहिए। मैं तो एक बढ़ा आदमी हूँ जो न जाने कब किनारे लग जाय। पर मैं आपको एक छोटा सा फार्मूला बताकर जा रहा हूँ। इसे आपको याद रखना चाहिए कि विश्व की हर समस्या का समाधान, राष्ट्रों की हर समस्या का समाधान एक ही है कि मनुष्यों के भीतर मनुष्यता को जिंदा रखा जाय, इंसानियत को जिंदा रखा जाय, भौतिक विकास के साथ-साथ महानता को विकसित किया जाय जिसे मैं आध्यात्मिकता का विकास कहता हूँ। आप चाहें तो उसको नेकी कहिए, भलमनसाहत कहिए, धर्म-नीति कहिए- कुछ भी कहिए। आप किन्हीं शब्दों का इस्तेमाल कीजिए। मैं तो इसे आध्यात्मिकता के नाम से पुकारता हूँ और यह कहता हूँ कि इस महानता को, आदर्श कर्तव्यनिष्ठा को मनुष्य के भीतर जिन्दा रखा जा सके, समाज के भीतर जिन्दा रखा जा सके तो खुशहाली कायम रह सकती है और भौतिक उपलब्धियों का हम परिपूर्ण आनन्द उठा सकते हैं।

सुख-सुविधा उपलब्ध कराने वाले इस भौतिक विज्ञान को धन्यवाद, भौतिक प्रगति को धन्यवाद, टेकनालॉजी की प्रगति को धन्यवाद, लेकिन तब तक ये सभी अपूर्ण हैं जब तक कि हम इसके दूसरे पक्ष को भी विकसित नहीं करेंगे जिसको मैं आध्यात्मिकता कहता हूँ। इस महत्वपूर्ण दूसरे पक्ष को भुलाया नहीं जाना चाहिए। यही सब कहने के लिए आप सबों के सामने एक चेतन -व्यक्ति आया जिसके ऊपर समाज के नवनिर्माण की जिम्मेदारी है। ये जिम्मेदारी आपको भी उठानी ही चाहिए और उठानी ही पड़ेगी। इस सुझाव को यदि आप इस्तेमाल कर सके तो मुझे उम्मीद है कि अपने देश की, मानव जाति की और विश्व की महानतम सेवा करने में आप समर्थ हो सकेंगे। आप लोगों ने एक घंटे तक अपना मूल्यवान समय देकर मेरी छोटी सी बात सुनी, इसके लिए आप सबका बहुत-बहुत आभार मानता हूँ। ॐ

।। ॐ शान्तिः।।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी–

आत्मशोधन, आत्मपरिष्कार एवं कायाकल्प

(कल्प साधना सत्र के दौरान शान्तिकुंज परिसर में दिया गया उद्‌बोधन-मई, १९८२)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ–

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो, भाइयो !

आपको यह बताया गया है कि अपने पापों का प्रायश्चित करना पड़ेगा। प्रायश्चित कैसे होगा? इसके लिये आपको घटनाएँ सुनाता हूँ। आम्रपाली ने प्रायश्चित किया। आम्रपाली ने सैकड़ों आदमियों की जिन्दगियाँ खराब कीं, कुमार्ग पर चलाया, बहुत सारा धन कमाया और उस पाप से निदान पाने के लिए भगवान बुद्ध की शरण ली। भगवान बुद्ध ने शरण में तो ले ली; किन्तु साथ-साथ यह भी कहा कि पिछले जो गुनाह हैं, उनकी भरपाई तो करनी ही पड़ेगी, आध्यात्मिक उन्नति का केवल मंत्र लेने से या जप करने से रास्ता थोड़े ही सुलझेगा? आम्रपाली ने कहा– "ठीक है, मैंने जो कुछ भी गुनाह किए हैं, जो कुछ भी पैसा मैंने गुनाहों के द्वारा कमाया है, उस समस्त सम्पदा को मैं दुनिया में ज्ञान के संवर्धन में खर्च कर दूँगी। उसके पास करोड़ों रुपये की सम्पत्ति थी, उसे लाकर वह भगवान बुद्ध के चरणों में रख गयी और यह कहा– जिस तरीके से मैंने अनेकों को गुमराह किया है, आप अनेकों को अच्छे मार्ग में लगा देने के लिए इस पैसे को खर्च कर डालिए। बस ऐसा ही हुआ । भगवान बुद्ध ने आम्रपाली की करोड़ों रुपये की सम्पत्ति से बुद्ध विहार बनवा दिए, धर्म प्रचारकों के शिक्षण का प्रबन्ध कर दिया। इस तरीके से जो अनीति का धन था वह सब उसमें लग गया, प्रायश्चित हो गया।

यही तरीका एक और व्यक्ति ने अपनाया, उसका नाम था– अंगुलिमाल। अंगुलिमाल ने अपने जीवन में बहुत हत्याएँ की थीं, न जाने कितने कत्ल किए थे और कत्ल करने के बाद बहुत सारा धन कमा लिया। बहुत धन था उसके पास । वह भगवान बुद्ध का शिष्य बनने के लिए आया, मंत्र माँगने के लिए आया। भगवान बुद्ध ने मजाक में ही कहा–' 'लगता है आप मंत्र जानकर बैकुण्ठ जाना चाहते हैं।" वह बोला– "हाँ प्रभु! मैंने सुना है जो कोई मंत्र जप कर लेता है, राम नाम लेता है, बैकुण्ठ को जाता है। भगवान बुद्ध बहुत हँसे, उन्होंने कहा– जिस आदमी ने आपको ऐसी सलाह दी है, वह बहुत बड़ा पागल आदमी मालूम पड़ता है और आपने विश्वास कर लिया, आप उससे भी ज्यादा पागल मालूम पड़ते हैं। केवल राम-नाम का जप करने से अथवा उसके शब्द का उच्चारण करने से या देवी-देवता के आगे नाक रगड़ने से अथवा किसी क्रिया-कृत्य को पूरा करने से आप आध्यात्मिकता का लक्ष्य प्राप्त करने में कभी समर्थ नहीं हो सकते। रास्ता एक ही है– आपने जो गल्तियाँ की हैं, उसको बराबर कीजिए, खाइयों को पाटिए। कैसे पाटें? जो धन आपने अनीति से कमाया है, उसे खर्च कर डालिए। बस उन्होंने ऐसा ही किया। अंगुलिमाल ने करोड़ों रुपये की सम्पत्ति को ऐसे ही खर्च किया। भगवान बुद्ध ने सारे संसार में, उन्हीं की भाषा में बौद्ध धर्म के ग्रन्थों को अनुवाद कराके और उन ग्रन्थों को दूसरे देशों में नाव में रखकर भेजने का प्रयत्न किया। अंगुलिमाल का सारा धन उसमें खर्च हो गया।

इन लोगों ने धन के अलावा भी तो अनेक गुनाह किये थे, लोगों का ईमान खराब किया था, चरित्र खराब किया था, दुःख और दारिद्र्य की आग में उन्हें धकेल दिया था। इतने आदमियों का कत्ल करने के बाद में कितनी आत्माओं ने चीत्कार किया होगा, उसकी भरपाई केवल पैसे से कैसे हो सकती है? वह केवल पैसा ही तो चुका दिया और रूह का क्या हुआ? आम्रपाली ने अपने भावी जीवन को भूतकाल की खाई पाटने के लिए समर्पित कर दिया। वह सन्त हो गई और स्वामी विवेकानन्द की तरह सारे एशिया में और सारे हिन्दुस्तान में गाँव-गाँव घूमती फिरी, ज्ञान की शिक्षा देने के लिए, सत्कर्म की शिक्षा देने के लिए। इस तरह उन्होंने न केवल अपने धन को उत्सर्ग कर दिया, बल्कि अपने समय को, अपने पसीने को भी उसी में खर्च कर दिया। जो उत्साह उन्होंने बुरे कर्म करने में, गन्दी जिन्दगी जीने में लगाया था, वही उत्साह उन्होंने भावी जीवन को पुनीत और पवित्र करने में भी खर्च कर दिया। जो श्रम और समय उन्होंने पाप कर्म कमाने में खर्च था, वही श्रम और समय उन्होंने पुण्य कमाने के लिए खर्च कर दिया । तब आम्रपाली सच्चे अर्थों में सन्त हो गई। अंगुलिमाल ने भी ऐसा ही किया। अंगुलिमाल के पास जो था, वह तो उन्होंने खर्च कर ही डाला, बौद्ध धर्म के ग्रन्थों को सारे विश्व की भाषाओं में अनुवाद कराने में केवल धन से ही थोड़े काम चलता है। उन्होंने केवल धन थोड़े ही अपहरण किया था, कई आत्माओं को दुःखाया भी तो था। न जाने कितनों को कुमार्ग के रास्ते पर धकेला भी तो था। उसका प्रायश्चित यही हो सकता था कि अपने समय, श्रम एवं बचे हुए जीवन को उचित कामों में खर्च कर दिया जाय। वैसा ही हुआ। अंगुलिमाल एक संत हो गये। संत के रूप में सारे संसार में काम करते रहे और बराबर प्रायश्चित के लिए चलते रहे। इससे बढ़िया प्रायश्चित का कोई तरीका

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

नहीं हो सकता, इसलिए आप अपना समय-दान दे दें। समय न दें, क्षतिपूर्ति न करें। फिर क्या हुआ। यह तो प्रायश्चित का मखौल हुआ, दिल्लगी-बाजी हुई और विधि की व्यवस्था के साथ में उपहास हुआ। भगवान के यहाँ अंधेर नहीं है। पाप करने वाले हाथ-पाँव जोड़ेंगे, नाक रगड़ेंगे, पूजा करेंगे, पंचामृत पीयेंगे तो पाप-मुक्त हो जायेंगे, फिर भगवान की दुनिया में नियम कहाँ रहा, व्यवस्था कहाँ रही। फिर ऐसे हो लोग कर लिया करेंगे। पाप कर लिया करेंगे और बस प्रार्थना कर लिया करेंगे, पंच कर्म कर लिया करेंगे, डुबकी मार लिया करेंगे। फिर पापों का डर तो कुछ है ही नहीं। तब संसार की व्यवस्थाओं को कौन कायम रखेगा? आप ऐसा मत सोचिए। आपको केवल यह सोचना चाहिए कि यह चित्त भ्रम का एक ढंग है और कुछ नहीं।

यहाँ जो कल्पसाधना आपको कराई जा रही है, इसमें भी अन्न को, आहार को कम करना पड़ता है, भोजन पर नियन्त्रण रखना पड़ता है, स्वाद की रोकथाम करनी पड़ती है, वही आपको करनी पड़ी है। दोनों में एक ही बात है, इसलिए आपको यह प्रायश्चित करने के साथ में तितिक्षा करने के साथ-साथ गें अब एक नया काम शुरू कर देना चाहिए- पापों का प्रायश्चित समयदान देकर।

समयदान के लिए क्या करना चाहिए? इस विषय में एक पुरानी परम्परा है, तीर्थयात्रा करनी चाहिए। पापों के लिए तीर्थयात्रा-तीर्थयात्रा तीर्थयात्रा। आप कहीं भी पता कर लीजिए प्रायश्चितों में तीर्थयात्रा करनी चाहिए, लोग यही कहेंगे। यह तीर्थयात्रा क्या होती है? तीर्थयात्रा कहते हैं धर्म प्रचार की पदयात्रा को। तीर्थयात्रा का अर्थ है- गाँव-गाँव घूमना, जगह-जगह जाना, लोगों को अच्छे-अच्छे उपदेश करना। प्राचीन-काल में जो गौ हत्याएँ हो जाती थीं, तो लोग गायों की पूँछ लाठी से बाँधकर गाँव-गाँव घूमते थे, मुँह ढक करके, फिर कहते थे हमसे गाय की हत्या हो गई है और हम कलंकी हैं। हमको कलंक लग गया है! इस प्रकार अपने पापों को गाँव-गाँव बताते थे, लेकिन इसके साथ-साथ लोगों को यह भी कहते थे कि हमने गलती की है, लेकिन आप में से कोई मत करना। हमने गलती में, गुस्से में आ करके गाय पर हमला किया और उसे मार डाला, आप ऐसा मत करना - यह उपदेश भी करता था और अपनी गलती को बताता भी था।

आपको यही करना चाहिए। आपको हर जगह जा करके तीर्थयात्रा के रूप में पदयात्रा करनी चाहिए। पदयात्रा के रूप में, गाँव-गाँव घूमना चाहिए, पदयात्रा का एक रूप- तीर्थयात्रा का एक रूप अभी भी विद्यमान है। आपने कभी वैद्यनाथ धाम जाने के बारे में सुना है? अपने यहाँ उत्तर प्रदेश में भी ऐसा रिवाज है कि शिवरात्रि के समय लोग गंगाजी से गंगाजल चढ़ाने के लिए लाते हैं और अपने यहाँ किसी देवालय पर चढ़ाते हैं। कंधे पर काँवर रख करके लाते हैं। काँवर लेकर चलने वाले रास्ते भर अच्छे-अच्छे गीत सुनाते जाते हैं। राहगीरों को हर वक्त अच्छी शिक्षा देते जाते हैं। जहाँ भी राहगीर मिलते हैं, जिस किसी भी गाँव में प्रवेश करते हैं, वहाँ अच्छे दोहे, ज्ञान के दोहे, भक्ति के दोहे वैराग्य के दोहे और कर्त्तव्य पालन के दोहे सुनाते चलते हैं। यह उनका धर्मोपदेश भी साथ-साथ चलता रहता है, पदयात्रा भी चलती रहती है और जनसम्पर्क का कार्य भी होता रहता है। जन सम्पर्क एक, पदयात्रा दो, धर्मप्रचार तीन। इन तीन बातों को मिला दें, तो आपकी सच्चे अर्थों में पदयात्रा हो जाएगी। जो इस समय चल रहा है यह तो केवल भगदड़ है, पर्यटन है। पर्यटन के लिए घुमक्कड़ लोग, देश-विदेश में घूमने के लिए जाते हैं, इसको देखते हैं, उसको देखते हैं। वे केवल देखने के लिए जाते हैं, दर्शन करना उन्हें कहाँ आता है। दर्शन करने की बुद्धि कहाँ है उनमें, केवल देखने के लिए जाते हैं कि बद्रीनाथ कहाँ है, केदारनाथ कहाँ है? मंदिरों में रखे हुए खिलौनों को देखने के लिए जाते हैं। देखने की दृष्टि उनमें है कहाँ? दर्शन के लिए दृष्टि चाहिए। श्रीकृष्ण भगवान ने अर्जुन को देखने की दृष्टि दी थी। अर्जुन ने कहा था हमको भगवान का रूप दिखा दीजिए तो उन्होंने कहा- पहले दृष्टि तो ला, देख काहे से लेगा। देखने को हम हैं तो सही! नहीं साहब, आप भगवान नहीं हैं। हम तो भगवान देखना चाहते हैं, तो फिर दृष्टि विकसित कर दृष्टि से दर्शन होता है। जिनके पास दृष्टि नहीं है उनको खुलकर कह सकतें हैं-यह तो घुमक्कड़ है। घुमक्कड़ी से क्या फायदा? यह तो केवल मनोरंजन है। यह मान लीजिए कि कलकत्ता, बम्बई नहीं गए, बद्रीनाथ हो आए। इसमें बिल्कुल भी फर्क नहीं। दोनों से घूमने की ही आवश्यकता पूरी होती है, फिर तीर्थयात्रा का पुण्य कैसे मिल सकता? तीर्थयात्रा के पीछे तो उद्देश्य जुड़ा हुआ है, क्रियाएँ जुड़ी हुई हैं। क्रियाओं का अर्थ यह है कि आपको धर्म प्रचार की पदयात्राओं में संलग्न होना चाहिए। धर्म प्रचार की पद-यात्रा में अगर आप संलग्न हैं तो आपकी तीर्थयात्रा फलदायी मानी जायेगी।

प्राचीनकाल के ऋषि भी यही करते थे। घर-घर अलख जगाते थे। अलख क्या? अलख ऐसे करते थे, घर-घर दरवाजे पर खड़े हो करके गीत गाते थे। एक हो तो अकेले- अगर दो आदमी हों तो दोनों साथ-साथ, इसे अलख जगाना कहते हैं। हर आदमी जो घर के निवासी थे, घर से निकलकर बाहर आते थे, महात्माजी की बात सुनते थे, गाना सुनते थे, उपदेश सुनते थे। इसे अलख जगाना कहते हैं। घर-घर जाकर सम्पर्क बनाना कहते हैं। वे आपके पास आयेंगे? नहीं, आपके पास नहीं आयेंगे। बादलों के पास खेत कैसे आ पायेंगे? बताइए । खेतों के पास इतनी सामर्थ्य होती, तो फिर क्यों किसी का इन्तजार करते। मित्रो, बादलों को ही आना पड़ेगा? घर-घर आपको ही जाना पड़ेगा। वे आपके पास नहीं

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

आयेंगे। दुर्घटना से घिरे हुए आदमी किस तरह आपके पास आ पायेंगे। टाँग टूट गई है, एक्सीडेंट हो गया है और आप कह रहे हैं आइए साहब! हमारे यहाँ आइये, प्रार्थनापत्र लिखिए पैसे दीजिए, तब हम आपकी सहायता करेंगे। इतनी ही हैसियत होती तो बेचारा टाँग टूटा हुआ क्यों आता? तो फिर घुड़सवार न होता। घुड़सवार नहीं है, टाँग टूटा हुआ आदमी है, इसलिए चल नहीं सकता। जाना आपको ही पड़ेगा। बाढ़ें आती हैं, दुर्घटनाएँ होती हैं और भी मुसीबतें आती हैं, भूकम्प आते हैं, महामारी फैल जाती है, उसमें अधिकारी लोग यह इन्तजार नहीं करते कि जो दु:खी है, हमारे पास आयें। अर्जी दें और हमसे प्रार्थना करें। नहीं, आपको ही भागकर जाना पड़ेगा। हवा हर आदमी के पास भागकर जा पहुँचती है, नाक में घुस जाने के लिए। सूरज की रोशनी हर आदमी के पास अपने आप चली जाती है और उसे गर्मी देकर आती है, रोशनी देकर के आती है। आपको सूरज की तरह, हवा की तरह और बादलों की तरह उन सभी जगहों पर जाना चाहिए,जहाँ ज्ञान की आवश्यकता है।

यह आवश्यकता पिछड़े हुए आदमियों को भी है और पढ़े-लिखों को तो उससे भी ज्यादा है। पिछड़े हुए आदमी एक ढंग के बेहूदे और पढ़े हुए आदमी दूसरे ढंग के बेहूदे हैं। उनमें कोई खास फर्क नहीं है। चरित्र की दृष्टि से, चिन्तन की दृष्टि से, आदर्शों की दृष्टि से, सारा समाज लगभग एक ही स्तर पर जा पहुँचा है। इसमें धनी और निर्धन का भेद करना बड़ा मुश्किल है, पढ़े और बिना पढ़े का भेद करना बड़ा मुश्किल है। जहाँ तक गफलत का सम्बन्ध है, दुर्भावनाओं का सम्बन्ध है, दोनों ही क्षेत्र एक-दूसरे से बाजी मारने पर तुले हुए हैं। पढ़े-लिखे ज्यादा कमा लेते हैं, बिना पढ़े-लिखे कम कमा पाते हैं, यह बात अलग है। पढ़े-लिखे आदमी ज्यादा चालाक होते हैं, बिना पढ़े-लिखे कम चालक होते हैं, यह बात और है। पढ़े-लिखे आदमियों के पास अच्छे महल, मकान और पैसे होते हैं, गाँव वालों के पास फटे-पुराने कपड़े होते हैं, टूटी-फूटी झोंपड़ियाँ होती हैं, लेकिन जहाँ तक चरित्र का सम्बन्ध है, वहाँ तक दोनों एक ही स्तर के हैं, इसलिए हम और आप में से हर आदमी, जिसको प्रायश्चित करना हो, उसे तीर्थयात्रा की तैयारी करनी चाहिए, घर-घर जाना चाहिए और जनसम्पर्क करना चाहिए।

जनसम्पर्क किसके लिये? धर्मधारणा जाग्रत करने के लिये, विचार क्रान्ति के लिये, जनमानस का परिष्कार करने के लिये, लोकमानस में आदर्शवादिता की प्रतिष्ठापना करने के लिये। यही उद्देश्य होना चाहिए। घर-घर आप जायेंगे, किसके लिये जायेंगे? भीख माँगने के लिये ? नहीं साहब! भीख तो नहीं, ऐसे ही जायेंगे। आप घर-घर एक उद्देश्य के लिये जाइए, गाँव-गाँव एक उद्देश्य के लिये जाइए कि हमको जन-जागरण की हवा पैदा करनी है। तीर्थयात्रा का यही उद्देश्य है। इसमें पैदल चलना पड़ता है जिससे कि ज्यादा से ज्यादा लोग रास्ते में मिलें और उनसे सम्पर्क सधे।

आपको भी ऐसी ही तीर्थयात्रा की तैयारी करनी चाहिए। आप यहाँ से जायें, तब एक योजना बना करके जाइए कि किस तरीके से एक लम्बा सफर तय करेंगे और उसमें किस तरह अधिक से अधिक लोगों से मिलेंगे, उनको अच्छा उपदेश देंगे? इसका एक ही तरीका है- आप साइकिल यात्रा करें। साइकिल चलाने को तो मैं पदयात्रा ही मानता हूँ। यह मानता हूँ कि इस यात्रा में आपको बिस्तर लेकर चलना पड़ेगा, कपड़े लेकर चलना पड़ेगा। उन्हें साइकिल पर लादकर चलिए, तो ज्यादा सुविधा रहेगी और आप यह कीजिए जगह-जगह शिक्षण देने के लिए, अलाव जगाने के लिये एक योजना बनाकर ले जाइए। दीवालों पर आदर्श वाक्य खड़िया, मिट्टी से लिखने की आप आदत डालिए। उससे आप असंख्यों आदमियों को, रास्तागीरों को प्रेरणा देने में समर्थ हो सकेंगे।

प्रायश्चित का यह भी एक तरीका है और क्या काम करें? यहाँ के शिविरों में ढपली बजाना सिखाया जाता है, सड़क पर खड़े होकर गाने वाले स्टेज सिंगरों की एक नई पीढ़ी और नई पौध हमने लगाई है। आप भी उसमें शामिल हों, तो एक दो आदमियों के साथ ढपली और खंजड़ी लेकर चले जायँ। किसी भी गाँव के लोगों को कहीं भी इकट्ठा कर लें, जहाँ प्याऊ है, वहाँ पानी पीने के लिए जा बैठें, ढपली बजाने लगें बस में सफर करना है तो आप बस में भी ऐसा कर सकते हैं। रास्ते में बैठे हुए हैं तो कोई अच्छा सा भजन गाना शुरू कर दीजिए। इससे लोगों के दिलों में एक नई जाग्रति पैदा होगी। यह छोटी-छोटी बातें हैं। आप कहीं जाकर के प्रज्ञा पुराण की कथाएँ भी कह सकते हैं, रात को सत्संग कर सकते हैं इस तरह आप में से हर एक आदमी को, जहाँ भी, जिस भी क्षेत्र में ज्ञान की दृष्टि से अभावग्रस्त आदमी दीखे, वहाँ ही जन-जागरण का काम आरम्भ कर दें। पढ़े और बिना पढ़े का फर्क मत कीजिए। इसलिए आपको शिक्षण करने में फर्क करने की जरूरत नहीं है कि आप किसको कहें, किसको न कहें आप सभी से कहिए। हर आदमी इन मामलों में दरिद्र है। हर आदमी को आपके ज्ञान की आवश्यकता है। इसलिए आपको तीर्थयात्रा की योजना बना लेनी चाहिए। संभव हो सके तो अपने घर से हरिद्वार के लिये चलिए, मथुरा के लिये चलिए। यह भी दो गायत्री के बड़े तीर्थ हैं। दर्शन करने के लिये तो तीर्थ बहुत सारे हैं, लेकिन ऐसे तीर्थ जिनमें प्रेरणा मिलती हो, कहीं नहीं है। तीर्थों में जा करके तप करते हैं, तीर्थों में जा करके प्रायश्चित करते हैं। लाखों आदमी अभी भी जाते हैं और प्रायश्चित्त की विधि पूरी करते हैं, मुंडन संस्कार कराते हैं, तीर्थ में नहाते हैं, वहाँ जा करके गऊदान करते हैं, ब्राह्मण भोजन कराते हैं- यह सब बातें यह बतातीं हैं कि तीर्थयात्रा का स्वरूप क्या होना चाहिए? तीर्थयात्रा

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

से पाप कटते हैं अर्थात् पापों का खामियाजा पूरा होता है। कैसे? मैंने बताया न आपको कि जनसम्पर्क साधना चाहिए और अलख जगाना चाहिए। इसके अलावा तीर्थयात्रा में और भी कई बातें बतायी गई हैं। आप उस समय एकांत में रहकर अपने प्रायश्चित की साधनाएँ कीजिए, उपासनाएँ कीजिए, आत्म-परिष्कार के लिए पृष्ठ-भूमि बनाइए।

प्राचीनकाल में तीर्थों में दो तरह के लोगों के शिक्षण का प्रबंध था। एक बच्चों का शिक्षण जिनको गुरुकुल कहते थे। गुरुकुलों में जितने भी गुरुकुल थे, सब तीर्थ स्थानों में बने हुए थे। तीर्थ स्थानों की वजह से गुरुकुल बनाये गये अथवा गुरुकुलों की वजह से तीर्थ स्थान बन गए- यह समय इस तरह की बहस करने का नहीं है। दोनों एक ही बात हुई। प्राचीनकाल में जहाँ गुरुकुल थे, वहाँ स्कूल खुलवा दिए गये, वे तीर्थ बना दिए गये। राजस्थान का वनस्थली विद्यालय को हम तीर्थ कहते रहे हैं। बाबा साहब आम्टे के अपंग चिकित्सालय को हम तीर्थ कहते रहे हैं। तीर्थ पहले थे? पहले तो नहीं थे, अब अच्छे व्यक्तियों से तैयार हो गए अथवा प्राचीनकाल में वे तीर्थ बने थे, तो किसी श्रेष्ठ कार्य से बने थे।

आप हरिद्वार की तैयारी कर सकते हैं, आप मथुरा की गायत्री तपोभूमि जाने की तैयारी कर सकते हैं। साइकिल से आप चलें, गाँव-गाँव जायें, घर-घर रुकें, दीवारों पर आदर्श वाक्य लिखें, ढपली से गीत और संगीत सुनायें, रात को प्रवचन की व्यवस्था करें, यज्ञ आदि की बात सोचें, अच्छे साहित्य को लोगों तक पहुँचाने का प्रयत्न करें। अगर आप ऐसे कार्य करते हों, जिससे जन-जीवन में नव चेतना भरने का मौका मिलता हो और आपको सेवा करने का, श्रम करने का, त्याग करने का एवं रास्ता दिखाने का मौका मिलता हो तो समझना कि तीर्थयात्रा के पीछे का उद्देश्य सफल हुआ। मुंडन कराते थे तीर्थों में लोग। इसका यही मतलब था कि हमने पुराने विचारों को, बुरे विचारों को बदल दिया है। मस्तिष्क के ऊपर उगे हुए बालों को पहले कुविचारों का प्रतीक मानते थे और प्रतीक मानकर ऐसा कहते थे। यही था जिसके लिए लोगों को अभी तक प्रोत्साहन मिलता है। शास्त्रों में तीर्थों का इतना ज्यादा माहात्म्य बताया गया है कि शायद और किसी चीज और किसी पुण्य फल का न बताया हो। तीर्थ अवश्य जाना चाहिए! मुसलमान धर्म में भी ऐसी मान्यता है। मक्का एक जिन्दगी में वे अवश्य जाना पसंद करते हैं। हिन्दू धर्म में भी ऐसा ही मत है कि तीर्थयात्रा जरूर करनी चाहिए। लेकिन तीर्थयात्रा उद्देश्यपूर्ण होनी चाहिए तभी उसका लाभ है, अन्यथा नहीं।

आप जिस तीर्थ में जायँ, वहाँ कुछ दिन निवास कीजिए, साधना कीजिए, तपस्या कीजिए, उपासना कीजिए और ऐसे वातावरण और सत्संग में रहिए, जिससे कि आप पिछले वाले घिनौने भूतकाल को छोड़ करके उज्ज्वल भविष्य में प्रवेश करने में समर्थ हो सकें। यह कार्य वातावरण से ताल्लुक रखता है, यह कार्य उसकी सामग्री से ताल्लुक रखता है, यहाँ यह कार्य प्राणदायक प्रक्रिया से ताल्लुक रखता है। तीर्थों में पहले सारी बातों की सुविधाएँ होती थीं। इसलिए लोग तीर्थों में जाते थे और वहीं निवास करते थे। अनुष्ठान तो अपने घर रहकर भी किया जा सकता है, पर अच्छे वातावरण में रह करके अनुष्ठान करना एक बात है और घिनौने वातावरण में, घिसे-पिटे वातावरण में, कामवासना के वातावरण में, लोभ और मोह के वातावरण में रहकर कर लें तो वह एक चिह्न-पूजा जैसी प्रक्रिया होगी। वातावरण का भी बड़ा महत्व था, इसलिए प्राचीनकाल में तीर्थयात्रा के लिए वातावरण को भी देखा जाता था। ऋषियों का सान्निध्य, तपश्चर्या का उपक्रम, यह सारी बातें होती थीं। आप यह मानकर चल सकते हैं कि आप यहाँ जो कल्प-साधना शिविर में आये हैं, वह वास्तव में एक महीने के तीर्थसेवन सत्र जैसा है। इसे तीर्थसत्र भी कह सकते हैं। तीर्थों में ऐसी ही परम्परा होती थी। अभी भी ऐसा होता है। प्रयाग में माघ के महीने में इससे ही मिलते-जुलते शिविर होते हैं, सत्र होते हैं, जैसे कि आप यहाँ रहकर कर रहे हैं। एक महीने तक त्रिवेणी में, बालू में झोंपड़ी डालकर रहते हैं। न कहीं बाहर जाते हैं, न बाहर आते हैं- न किसी के घर-गृहस्थी की चिन्ता करते हैं, न अपनी चिंता में डूबे रहते हैं। सिर्फ आत्म-कल्याण की चिंता करते हैं। आत्म कल्याण, लोक कल्याण की चिंता में डूबे रहने के कारण, घर-गृहस्थी से जुड़े हुए सम्बन्धों के बारे में एक महीने के लिए बैरागी हो जाते हैं। घर वालों से कह देते हैं कि घर-गृहस्थी के समाचारों की चिट्ठी-पत्री मत डालना, हमें किसी लेन-देन की खबर मत देना, कोई विकट परेशानी आती हो तो अपने ढंग से हल करना, हम तक मत आना और हमारे सपने में विघ्न मत डालना। घर वाले भी इन बातों का ध्यान रखते हैं। जरूरत पड़ने पर सिर्फ इतना ही पूछते हैं कि किसी सामान की आवश्यकता तो नहीं है, कोई चीज तो नहीं चाहिए? बस जिस सामान की जरूरत होती है, लाकर दे देते हैं। बाकी एक-एक क्षण तीर्थयात्री या कल्प साधक त्रिवेणी तट पर गुजारा करते हैं।

आप भी इसी तरह मानकर चलिए कि आपको अपने गुनाहों को ठीक करना है। अपने भावी कुसंस्कारों को धो करके साफ करना है तथा भावी जीवन के लिए कोई ऐसी रूपरेखा निर्धारित करनी है, जिसको इष्टपूर्ति कहा जा सके, क्षतिपूर्ति कहा जा सके। इस कल्प साधना में आत्म परिष्कार, आत्म परशोधन की प्रक्रिया उससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण है जैसा कि आपको पूजा, उपासना, जप और योग करने के लिए बताया गया है। यह बहुत ही मूल्यवान है, इसलिए आप इस ओर भी ध्यान रखें और ऐसी जिन्दगी प्राप्त करें जिस पर संतोष ही नहीं गर्व और गौरव भी अनुभव किया जा सके। बस आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी–

तीर्थ सेवन एवं परिव्राजक धर्म

(परमपूज्य गुरुदेव द्वारा जुलाई, १९८२ में शांतिकुंज परिसर में दिया गया प्रवचन)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ–

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो! भाइयो !!

तीर्थ शब्द याद करके कितना आनंद आता है, कितनी प्रसन्नता होती है । प्राचीनकाल में तीर्थ जब अपने वास्तविक स्वरूप में रहे होंगे, तब कैसा मजा आता होगा। वहाँ जाने के बाद लोग अपने कषाय और कल्मष को धोकर के पुनीत और पवित्र होकर कैसे निकलते होंगे? गंगा के बारे में तो मुझे ज्यादा मालूम नहीं है कि उसके पानी में नहाकर आप पुनीत और पवित्र हो जाते हैं कि नहीं, लेकिन एक और ज्ञान गंगा के बारे में बतला सकता हूँ। उस ज्ञान गंगा में, वास्तविक तीर्थ में अगर आपको रहने का अवसर मिल जाय, तो यकीन रखिये आप अपने आपको तो धोकर जायेंगे ही, भविष्य में आपका कपड़ा धुला हुआ रहेगा। क्यों ? इसलिए कि आपने वहाँ रहकर उपासना की है, साधना की है और उपासना-साधना करने के साथ-साथ में अपनी समस्याओं का समाधान करने के लिये वहाँ के वातावरण का लाभ उठाया है, वहाँ जो ऋषि रहते हैं, उनके परामर्श से आप रास्ता भी तलाश करते हैं और उस तलाश में एक रास्ता यह भी है कि आपने अब तक जो गलतियाँ की हैं उनका प्रायश्चित कैसे हो? भरपाई कैसे हो? आप उसके लिये क्या करें? मित्रो इसके लिये आप अपने गुण, कर्म और स्वभाव में शालीनता का समावेश करें, इस निमित्त ऐसी कौन-सी गतिविधियाँ अपनायेंगे, जो आपके संस्कारों के रूप में परिणित हो सकें? जप नहीं नहीं, जप से संस्कार नहीं बनते, रामायण पाठ से भी संस्कार थोड़े ही बन जायेंगे। विचार के साथ-साथ आपको कुछ पुण्य कृत्य भी करने पड़ेंगे: विचार और कृत्य दोनों का समावेश करने के बाद ही यह संभव है कि समग्र प्रक्रिया पूर्ण हो जाये। वास्तव में अध्यात्म का मतलब संस्कार पैदा करना है और संस्कार ज्ञान और कर्म दोनों के समन्वय से ही होते हैं। ज्ञान में पूजा आती है, पाठ (रामायण पाठ) आता है, सत्संग आता है, स्वाध्याय आता है– यह ज्ञान पक्ष है और कर्म पक्ष! कम पक्ष! उसे कहते हैं जिसमें सेवा का समावेश होता है, परोपकार का समावेश होता है, पुण्य-कर्मों का समावेश होता है, जन-कल्याण का समावेश होता है। इन दोनों बातों को अगर आप मिला देंगे, तो आपकी प्रक्रिया पूर्ण हो जायेगी। बिजली के दो तार मिल जाने से करंट चालू हो जाता है । आप ज्ञान और कर्म का समावेश अगर कर पायें, तो आपकी पूर्ण उपासना हो जायेगी। आप उस अध्यात्म के चमत्कार को देख पायेंगे जिसकी चर्चा शास्त्रों में की गई है।

कल आपको तीर्थों का महत्व बताते हुये प्राचीनकाल के तरीके से यह बताया गया था कि अगर कहीं तीर्थ मिल जायें और आपको उस तीर्थ में रहने का सौभाग्य मिल जाय, तो आप वहाँ उसी प्रक्रिया को ग्रहण करना, जो करनी चाहिए। अगर आप शांतिकुंज को गायत्री तीर्थ मानते हैं तो यहाँ रह करके अपना समय सुव्यवस्थित रूप से व्यय कीजिए। यहाँ सुव्यवस्थित रूप से व्यय करने का एक क्रम बैठा हुआ है। सुबह उठने से लेकर सायंकाल सोने तक का एक टाइम टेबुल बना हुआ है। यह पूरा का पूरा टाइम-टेबुल इस बात पर निर्भर रहता है कि आपकी गतिविधियाँ क्या होनी चाहिए, आपको अनुशासित कैसे होना चाहिए? आपको संयमी कैसे रहना चाहिए? आपको तपस्वी की तरह जीवन-यापन कैसे करना चाहिए? यह जीवनयापन करने की पद्धति दिनचर्या का जो प्रावधान है इसको आप भंग कर लेते हैं, इसलिये जीवन में कुछ विशेष करने और पाने में सफल नहीं हो पाते हैं। यहाँ का एक वातावरण भी है, सेनिटोरियमों का एक वातावरण भी होता है। इलाज तो कहीं भी कराये जा सकते हैं, पर सेनिटोरियम जिसमें डॉक्टर भी रहते हैं, वातावरण भी अनुकूल है, क्लाइमेट भी उपयुक्त है, वहाँ रहने से आदमी जल्दी अच्छे हो जाते हैं। सेनिटोरियम में रह करके जो फायदा उठाया जा सकता है, वही प्राचीनकाल के बच्चे गुरुकुलों में रहकर उठाते थे। बड़ी उम्र के आदमी आरण्यकों में रहते थे। आरण्यक बड़े आदमियों के लिये सेवा-साधना के निमित्त बनाये गये थे। बुद्ध ने बहुत सारे संघाराम बनाये थे, विहार बनाये थे। उसमें लोकसेवा के लिये इच्छुक लोगों की शिक्षाओं का निवास करने का प्रबंध था। यह आरण्यक कहलाते थे। आरण्यक कहिये या बुद्ध-विहार कहिये, नाम और शब्दों से क्या फर्क पड़ता है। ऐसे स्थान जहाँ कहीं भी हों, वहाँ आदमी को अपनी आत्मसाधना करनी पड़ती है। तीर्थ वे थोड़े ही हैं कि जहाँ खिलौना देखा, पैसा फेंक दिया बस, यहाँ से वहाँ, वहाँ से यहाँ धक्के खाते फिरे और जहाँ-तहाँ

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

दान-पुण्य के बहाने जेब कटाते फिरे यह सब तो भाई साहब अज्ञानियों का जंजाल है। आप इस जंजाल से दूर रहकर के तीर्थयात्रा की गहराई जानने की कोशिश कीजिए। तीर्थयात्रा की गहराई यह है कि आप उतने समय, जितने समय तीर्थ सेवन करें, उतने समय के लिये अपने आपका परिशोधन करें। भूतकाल के गड्ढे भरने की कोशिश करें और भावी योजनाओं को बनाने की कोशिश करें। भविष्य में हम क्या बनेंगे, इसके लिये वर्तमान में हमको तपश्चर्या करनी चाहिए। वर्तमान की तपश्चर्या का मतलब है-भावी जीवन के लिये नीति-निर्धारित करने का संकल्प। ऐसा करेंगे तो आपका तीर्थसेवन सशक्त हो जायेगा।

आप यहाँ आये हैं, तो यह मानकर चलिये कि यहाँ कल्प-साधना शिविर में बुड्ढे से जवान बनने के लिये नहीं, बल्कि अपने अन्तरंग परिष्कार के लिये आये हैं। इसलिए जितना भी समय है, आप इसको स्वाध्याय में लगाइये, आत्मचिंतन में लगाइये, चिंतन में लगाइये, मनन में लगाइये, पूजा में लगाइये, उपासना में लगाइये, और अच्छे लोगों के सम्पर्क में लगाइये, अच्छी बातों के सोचने में लगाइये, गंगा के किनारे जा करके रहिये। पूरा का पूरा समय आपका ऐसा हो जिसमें कहीं अवांछनीयता के लिये जगह न हो। आपका चिन्तन ऐसा हो, जिसमें अवांछनीयता के लिये कोई गुंजाइश न हो। बस, यही एक तीर्थ हमने बनाया है। गान्धाता की सहायता से जगत्गुरु शंकराचार्य ने चार धाम बनाये थे, चार तीर्थ बनाये थे। वह शानदार तीर्थ बनाने के इच्छुक थे, इसलिये उन्होंने शानदार ही बना डाले। भगवान बुद्ध ने बहुत सारे तीर्थ बनवाये थे। कहाँ बनवाये थे? सारे भारतवर्ष में विनिर्मित किये थे। भगवान महावीर ने भी ऐसा ही किया था। समर्थ गुरु रामदास ने भी ऐसा ही किया था। समर्थ गुरु रामदास ने महाराष्ट्र के हर गाँव में दौरा किया था और वहाँ की उस समय की परिस्थिति के हिसाब से हनुमान जी के मंदिर बनवा दिये थे-महावीर मंदिर बनवा दिये थे। पैसे का प्रबंध कहाँ हो सकता था? विचारशील बातों में कोई आदमी कहाँ पैसा खर्च करता है? गरीबों को चाहें, तो आप बहका दीजिये, मालदार को बहकाने के तरीके अलग हैं। उन तरीकों को अख्तियार कर लीजिये, मालदार भी खूब बहकते हैं, कम बहकते हैं क्या? गरीबों की जेब कटती है तो उनकी भी जेब कटती है और मालदारों को उल्लू बनाया जाये तो मालदार और भी ज्यादा उल्लू बनते हैं। इसीलिये मैं उसकी बात नहीं कहता। किसकी? कि बड़े शानदार मंदिर बनाना जरूरी है या बना सकते हैं क्या? समर्थ गुरु रामदास ने महावीर मंदिर बनवाये थे। कैसे बनवाये? मिट्टी की दीवारों से फूँस के झोंपड़ों के बने हुए थे। हनुमान जी की मूर्तियाँ कैसे बनायीं? हनुमान जी की मूर्तियाँ उन्होंने गांव में पड़े हुये पत्थरों के टुकड़ों से, स्थानीय कारीगरों के माध्यम से जैसे-तैसे बना लीं। उनके पास लिबास कहाँ से आये? शृंगार कहाँ से आया? उन्होंने सिंदूर से उनको लपेट दिया और सिंदूर से उन पत्थरों को लपेट देने के बाद में हनुमान जी की मूर्ति, बालाजी की मूर्ति बनकर तैयार हो गई। फिर क्या हुआ उनका? वहाँ लोग पूजा करते थे? हाँ, पूजा भी करत थे तथा और भी कार्यक्रम चलाते थे।

आजकल खराबी यह है कि हमारे मंदिरों में अब केवल पूजा ही होती है, होना यह चाहिए कि पूजा भी हो, बाकी समय में कुछ और भी हो। समर्थ गुरु रामदास ने जगह-जगह इस तरह का प्रबंध किया कि उन्होंने हर महावीर मंदिर के साथ व्यायामशाला अभिन्न रूप से जोड़े रखी। स्वास्थ्य संवर्धन और अनुशासन का परिपालन इसके लिये उन्होंने हर जगह व्यायामशालाएँ बनवायीं। व्यायामशाला एक तरह के विद्यालय थे जिसमें गाँव के बच्चे, बड़े आदमी, छोटे आदमी, औरतें, जिस किसी को भी विद्या का शौक था, वह जाये और वहाँ के पुजारी से विद्या प्राप्त करे। इसके अलावा रात्रि को कक्षाएँ होती थीं। कक्षाओं का अर्थ है- प्राचीनकाल के ऐतिहासिक घटनाक्रमों को सुना करके आज की समस्याओं का समाधान। कथा का मतलब यह नहीं है कि आप इधर की गपबाजी करें, उधर की गपबाजी करें, कि श्रीकृष्ण भगवान ने सोलह हजार एक सौ आठ रानियों से शादी की, एक-एक से आठ-आठ बच्चे पैदा हुए। यह सब बेकार की बातें, बेसिलसिले की बातें हैं। जिनका कि न कोई मायने है, न कोई मतलब है। न इन शिक्षाओं की आज कोई उपयोगिता है, न प्राचीनकाल में उपयोगिता थी। आप कथाएँ इन्हीं को कहते हैं कि शंकर जी ने गणेशजी का सिर काट दिया और हाथी का चिपका दिया! इन बातों से क्या मतलब है! न यह पुराण है, न सत्संग है। कथा के पीछे उद्देश्य और लक्ष्य होना चाहिए। प्राचीनकाल में समर्थ गुरु रामदास की लिखी 'दासबोध' की कथाएँ हर महावीर मंदिर में होती थीं। उन्हें एक नया ही शास्त्र बनाना पड़ा, नया ही वेद बनाना पड़ा। क्या करते बेचारे! उस कूड़े-कचरे में से क्या चीज पल्ले पड़ती। आज आपको इस कूड़े-कचरे में से क्या चीज पल्ले पड़ने वाली है? कुछ भी तो नहीं है, सिवाय आफत पैदा करने के और दिमाग खराब करने के, पुरानी गपबाजियाँ खड़ी करने के, अपना समय और दूसरों का समय बरबाद करने के अलावा क्या है, कथा ! इसलिए कथा भी उन्होंने बनाई और कथा की परंपरा को जिंदा रखा और ऐसे शानदार ढंग से जिन्दा रखा कि मजा आ गया। शिवाजी की सारी सेना को समर्थन वहीं से मिला, हथियार वहीं से मिले, अनाज वहीं

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

से मिला और आजादी की लड़ाई उन महावीर मंदिर से भी लड़ी गई।

उसी तरीके की पुनरावृत्ति आज भी हुई है। हमने दो धाम पहले बनवाये थे। मथुरा का धाम बनवाया और यहाँ का बनवाया। एक संगठन के लिए बनाया, एक शिक्षण के लिये बनाया। फिर क्या किया? जगत्गुरु शंकराचार्य ने चार तीर्थ बनाये थे, महावीर भगवान के समर्थ गुरु रामदास ने सारे महाराष्ट्र में दो हजार के करीब मंदिर बनाये थे। आज हमारे भी मंदिरों की बहुत बड़ी संख्या है और बढ़ती ही चली जा रही है। गायत्री शक्तिपीठ के नाम से चौबीस सौ मंदिर बना दिये। अभी और भी बहुत से मंदिर बनने जा रहे हैं। इनके लिये कोशिश हमारी यही थी कि इनको गायत्री तीर्थ का रूप दिया जाये और तीर्थों में मंदिर नहीं, बल्कि वहाँ इनको शिक्षण संस्थान के रूप में विकसित किया जाये। वहाँ शिक्षण चले, ज्ञान वृद्धि के उपदेश चलें, रचनात्मक कार्यक्रमों का प्रयोग चले। ठीक उसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये हमारा यह स्थानीय गायत्री तीर्थ है। आप ऐसे तीर्थों को मजबूत बनाने की कोशिश कीजिये। तीर्थयात्री करें यह तो बहुत अच्छी बात है। तीर्थयात्रा में आपको समय लगाना चाहिए; लेकिन मैं यह पूछता हूँ कि तीर्थ नहीं होंगे फिर आप कहाँ जायेंगे? कहाँ हैं तीर्थ? आपको कहीं दिखाई पड़ते हैं क्या? तीर्थ कहीं दिखाई नहीं पड़ते। पुरानी ऐतिहासिक घटनाएँ जरूर उनसे जुड़ी हुई हैं। लेकिन वे जीवंत तो दिखाई ही नहीं पड़ते। लोगों को साधना कराने वाले, मार्गदर्शन करने वाले, परामर्श देने वाले ऋषि-तीर्थ और आरण्यक कहीं भी दिखाई नहीं पड़ते। इसलिये आपको एक काम और भी करना है, जहाँ तीर्थयात्रा करनी हो, वहाँ तीर्थों की स्थापना करने में भी योगदान देना चाहिए। तीर्थों की मरी हुई परम्परा को पुनर्जीवित भी करना चाहिए? कोई आदमी आये और तलाश करे कि कैसे होते हैं तीर्थ तो आप दिखा तो सकें। आज तीर्थों के स्थान पर सब जगह बड़े-बड़े विशालकाय मंदिर बने हुये हैं और लोग उनके माध्यम से अपना पेट भरते रहते हैं, झगड़ा करते रहते हैं। तीर्थों के वातावरण, तीर्थों के गुण, तीर्थों के कर्म, तीर्थों के उद्देश्य और तीर्थों के लक्षण सब ऐसे हो गायब हो गये, डुबकी लगाइये, खिलौना देखिये, पैसा चढ़ाइये, मंदिर देखिये। इसके अलावा भी कुछ होता है तीर्थ? नहीं भाई साहब! यह तो बिल्कुल उलटा है। असली बात तो तीर्थ की अलग होती है। उसमें ज्ञान गंगा बहती है, जहाँ प्रेरणा मिलती है, दिशा मिलती है, जहाँ भावनाओं को उभारा जाता है, आदमी को समुन्नत स्तर का बनाया जाता है-ऐसे तीर्थों की स्थापना और पुनर्जीवन आवश्यक पड़ गया, इसीलिए हमने तीर्थों की स्थापना की है। आप भी इन तीर्थों की स्थापना में योगदान दीजिये। जहाँ तीर्थ बन चुके हैं, उनको मजबूत बनाने की कोशिश कीजिए, जहाँ नहीं बने हैं वहाँ बनाने की कोशिश कीजिये।

यहाँ के सारे गायत्री तीर्थों में हमने शिक्षण का प्रबंध करने के लिये प्रावधान रखा है। यहाँ बच्चों की पाठशाला, बुड्ढ़ों की पाठशाला, बड़ों की पाठशाला, महिलाओं की पाठशाला चलनी चाहिए। यहाँ आसनों और प्राणायामों के केन्द्र होने चाहिए। यहाँ जड़ी-बूटियों के सहारे चिकित्सालय चलने चाहिए। यहाँ रात्रि को कक्षाएँ होनी चाहिए। यह सारे काम होने चाहिए तभी तो हम यह कह सकेंगे कि इन तीर्थों को गायत्री मंदिर कहिये या तीर्थ कहिये बात एक ही है। आप अपने ही केवल तीर्थयात्रा पर न निकलें, बल्कि नये आदमियों के लिए रास्ता भी बनायें, तीर्थयात्रा के लिए कोई आदमी जाने वाला हो, तो उसको यह मालूम हो कि तीर्थ कहाँ है? किस जगह जायें? किसके पास जायें? क्या करेंगे वहाँ जा करके? सैरगाहों में क्या करेंगे जा करके? सैरगाहों में कितने आदमी आते हैं, आपने देखे होंगे? विदेशों में भी घुमक्कड़ लोग जाते हैं। कोई नैनीताल जाता है, कोई कहीं जाता है, कोई दार्जिलिंग जाता है, कोई आगरे का किला देखने जाता है, कोई दिल्ली की सैर करने जाता है. कोई बंबई जाता है। आप भी चले जाइये, धामों में चले जाइये, कोई फर्क नहीं है। इसलिए फर्क करने वाले तीर्थ तो बनाने ही पड़ेंगे। उनको नवजीवन देना पड़ेगा, उसमें नए प्राण-संचार करने पड़ेंगे। हमने इस दिशा में कदम बढ़ाया है। आप हमसे कंधा मिलाइये, हमारे कदम से कदम मिलाइये। थोड़ा-सा हमने प्रयत्न किया है, थोड़ा आप इसमें सहयोग कीजिए, कर सकते हैं? जरूर कर सकते हैं। आप मान्धाता तो नहीं हैं; लेकिन उसके बनाने में कुछ तो कर ही सकते हैं। इसके निर्माण में किसी तरह का योगदान तो दे ही सकते हैं। अपने पास धन न हो, तो पड़ोसियों से माँग सकते हैं, मित्रों-रिश्तेदारों से लेकर भी इसमें लगा सकते हैं। आप दूसरे लोगों को तीर्थयात्रा करने के लिए ऐसे मौके दें, स्थान बनायें, वातावरण बनायें- यह आपको एक बहुत बड़ा काम करना है। आप मान्धाता की तरह तीर्थों की स्थापना करने के लिए कुछ कर सकें, तो जरूर करें। अहिल्याबाई की तरह तीर्थों का उद्धार करने के लिए फिर से कुछ कर सकते हों, तो अपने ढंग से अवश्य करें। अहिल्याबाई ने मंदिरों के जीर्णोद्धार कराये थे। अब उनके फिर से जीर्णोद्धार कराने हैं और जीर्णोद्धार ही क्या मैं तो कहता हूँ कि इन मरे हुओं को जिंदा करना है। उनके लिये कम से कम जीर्ण तो था, यहाँ तो जीर्ण भी नहीं है, खण्डहर पड़े हैं। खण्डहरों की तरह थोड़े से नाम-निशान पड़े हैं। जहाँ कभी तीर्थ रहे होंगे।

उनको जीवन्त करने के लिये मित्रो क्या करना चाहिए? उनको

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अपने प्रायश्चित्त में सम्मिलित कर लीजिये। प्रायश्चित्त प्रक्रिया पूरी करने का एक तरीका और भी है। जहाँ अब तक शक्तिपीठें बन गई हैं, उनमें एक काम की बहुत कमी है कि वहाँ ऐसे प्राणवान परिव्राजक नहीं हैं, जो वहाँ रहें और वातावरण को हिला दें, वातावरण को जगा दें। बड़ी मुश्किल से कहीं पण्डा मिल गया. कहीं पुजारी मिल गया, कहीं आरती करने वाला मिल गया, कहीं नौकर मिल गया, कहीं कर्मचारी मिल गया, कहीं झाड़ू लगाने वाला मिल गया। बस इसी तरह बेचारे जैसे वैसे काम चला रहे हैं। ऐसे प्राणवान् परिव्राजकों का घोर अभाव है जो वहाँ रहें और अपनी निष्ठा के, अपनी सेवा-भावना के आधार पर उस सारे क्षेत्र को जगा दें और सारे क्षेत्र का वातावरण ऐसा बना दें, जैसा कि तीर्थों का होना चाहिए। तीर्थों का एक विशेष वातावरण होता है। वहाँ जो कोई भी पहुँच जाता है, वह उस ढाँचे में ढलने लगता है। वातावरण बनाना नौकरों का काम नहीं है, कर्मचारियों का काम नहीं है, पुजारियों का काम नहीं है, प्राणवानों का काम है। आप प्राणवान मालूम पड़ते हैं। इस कायाकल्प चिकित्सा की कल्प-साधना में आये हुए हैं। प्राणवान न होते तब आप क्यों आ पाते, कष्ट कैसे उठा पाते? हर आदमी तो माल मारने के लिये, भगवान जी के मंदिरों में फोकट का प्रसाद पाने के लिये घूमता रहता है। त्याग कौन करता है? भूखा कौन रहता है ? अपने घर का काम कौन छोड़ता है? आपके अन्दर वह शराफत मालूम पड़ती है और जिन्दगी भर मालूम पड़ती रहेगी। आध्यात्मिकता का परिचय मालूम पड़ता है तथा और भी कई चीजें मालूम पड़ती हैं अगर यह बात सही है, तो आपको अगला वाला समयदान देने के लिये एक ही स्थान चुनना चाहिए, वह है शक्तिपीठ। परिव्राजक के अलावा, घूम-घूम कर प्रचार करने के अतिरिक्त एक तरीका यह भी है कि आप किसी समीपवर्ती शक्तिपीठ में चले जायँ, वहाँ कुछ समय तक निवास करें और निवास करने के बाद में अपने जीवन को न केवल परिष्कृत करें, बल्कि उस क्षेत्र को जगा देने की सेवा-साधना में भी संलग्न हो जायँ। यह भी आपका बढ़िया वाला प्रायश्चित्त है। यदि ऐसा आप करें, तब मैं बराबर यह कहूँगा कि आपने तीर्थयात्रा का मर्म समझ लिया और उसे करने के लिये कदम बढ़ा लिया, दो काम तो यह कीजिये।

और क्या करें? और यह कीजिये कि इन तीर्थों की देश-विदेशों में स्थापना करने का हमारा बड़ा मन है। आप हमारा हाथ बँटाइये। हाथ बँटा देंगे, तो आपके सहयोग से हम इतना बड़ा काम कर सकेंगे कि तीर्थों का पुण्य, जैसा कि धर्म-ग्रन्थों में लिखा हुआ है वास्तव में सही हो जाये। आप उसमें सहयोग दोनों ही तरीके से कर सकते हैं। तीर्थों में दान-पुण्य की भी परम्परा है, क्षतिपूर्ति के लिये आर्थिक सहयोग की भी परम्परा है, ब्राह्मण भोजन की परम्परा है। पहले लोग जब तीर्थयात्रा जाते थे तो घर लौटने पर जप कराते थे, कथा कराते थे, भागवत कराते थे, दान भी कराते थे। तीर्थों में भी दान कर देते हैं, घर में भी दान कर सकते हैं। आखिर यह दान है क्या? वास्तव में यह समयदान का ही दूसरा रूप है। समयदान जो आदमी नहीं कर सकता, वह अर्थदान कर सकते हैं, समयदान और अर्थदान दोनों सम्भव हो सकें तो और अच्छा, लेकिन नहीं हो सके, तो आप समय के बदले दूसरे आदमियों का समय खरीद कर भी ऐसा कर सकते हैं। आप नहीं करना चाहते, ऐसा तो मत कीजिए, आपके स्थान पर कोई और आदमी काम कर देगा। आप उसके गुजारे का प्रबन्ध कर दीजिये। गुजारे का प्रबंध कर देते हैं तो अपने काम करने के बराबर बात बन गई। अपने यहाँ गायत्री परिवार में सैकड़ों-हजारों ऐसे लोग हैं, जो सेवा करने के बड़े इच्छुक हैं, पर क्या करें। घर-गृहस्थी की जिम्मेदारियाँ ऐसी हैं कि इनको कुछ दिये बिना, कपड़ा दिये बिना, निर्वाह व्यय दिये बिना इनका काम नहीं चलता। कपड़ा हम अपने घर से ले आये हैं, खाना अपने घर से ले आये हैं, बच्चों का प्रबंध अपने घर से कर आये हैं, ऐसे आदमी हो तो सकते हैं लेकिन बहुत कम हैं। अधिकांश लोग ऐसे हैं जिनको खर्च चाहिए पेट भरने को अन्न चाहिए । इस तरह समाजसेवियों, लोकसेवियों की कितनी बड़ी संख्या रुकी पड़ी है; उनका हम गुजारे का प्रबंध नहीं कर सके, कपड़े पहनाने का साधन हमारे पास नहीं है और जिनकी बहुत जरूरत पड़ रही है उनके बच्चों के लिए नमक रोटी का इंतजाम करने में हम समर्थ नहीं हो सके इसलिए हजारों-लाखों कार्यकर्त्ता जो आज समाज के नये उत्थान, नये निर्माण करने के लिए आवश्यक थे, हमको नहीं मिल पा रहे हैं, क्योंकि उन ब्राह्मणों के लिए रोटी हमारे पास नहीं है। आप अपने खर्चे में कटौती करके दान भी दे सकते हैं, यह प्रायश्चित्त के तरीके हैं।

तीर्थयात्रा में डुबकी मारना ही जरूरी नहीं है, जप करना ही जरूरी नहीं है, पंचामृत पीना, मंदिरों के दर्शन करना यह सब आवश्यक नहीं है। असली बात भी तो सोचिए, बिल्ली के गले में घंटी भी तो बाँधिये। आप कुछ त्याग भी तो कीजिए, सेवा की बात भी तो सोचिए, मन से उदार तो बनिये, कुछ कष्ट भी उठाइये, कुछ मेहनत भी कीजिए। कुछ करके भी तो दिखाइये। नहीं, साहब! हम तो पंचामृत पियेंगे, बेकार की बात करेंगे। ऐसे कहीं प्रायश्चित्त होते हैं। खामियाजा चुकाने के लिए तीर्थ सबसे अच्छे माने गये हैं, इसीलिये तीर्थयात्रा के लिए मैंने आपसे निवेदन किया । बस आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परम पूज्य गुरुदेव की अमृत वाणी

वातावरण के परिशोधन के लिए युगशिल्पियों का दायित्व

गायत्री जयन्ती-जून, १९८५

यह सन्देश परम पूज्य गुरुदेव ने वीडियो टेप के माध्यम से अपनी हीरक जयन्ती के अवसर पर गायत्री जयन्ती- जून, १९८५ में दिया था।

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो! भाइयो! यह समय इस तरह का है जिसको सामान्य नहीं, असामान्य कहना चाहिए। यह युग संधि का समय है। युग बदल रहा है। युग बदलता है तो आप जानते हैं कि कुछ-न-कुछ हेर-फेर अवश्य होता है। जब बच्चा पैदा होता है और पेट में से निकलकर बाहर आता है, तो कितनी पीड़ा होती है। पुराना युग जा रहा है और नया युग चला आ रहा है। ऐसे समय में दो काम होते हैं- एक बनाव होता है और दूसरा बिगाड़ होता है। परिवर्तन की इस संधिवेला में बिगाड़ क्या होने वाले हैं? बिगाड़ वे होने वाले हैं जिनके बारे में बाइबिल में कहा गया है- "सेवन टाइम आयेगा और दुनिया तबाह हो जायेगी।" जिसके बारे में इस्लाम धर्म के कुरान शरीफ में कहा गया है- "चौदहवीं सदी आयेगी और दुनिया तबाह हो जायेगी।" भविष्य पुराण में यह लिखा हुआ है- "दुनिया उस मोड़ पर आयेगी जहाँ पूर्णतया तबाह हो जायेगी।" यह तबाही का भी समय है और बनाने का भी समय है। यह युग परिवर्तन का समय है । संधिकाल का समय है।

संधिकाल में निर्माण और ध्वंस के कार्य साथ-साथ चलते हैं। इन दिनों भी एक ओर निर्माण हो रहा है तो दूसरी ओर बिगाड़ हो रहा है। मकान बनाना होता है तो नींव खोदने वाले नींव खोदते जाते हैं और चिनाई करने वाले चिनाई करते जाते हैं। एक तरफ खोदने का काम शुरू होता है और दूसरी ओर उसको बनाने का भी काम शुरू हो जाता है। इन दिनों भी बनाने और बिगाड़ने के दो काम एक-साथ शुरू हो रहे हैं और इन शुरू हो रहे कामों के समय पर कोई एक बड़ी जरूरत पड़ती है। बच्चा जब पैदा होता है तो दाई की जरूरत पड़ती है- डाक्टर की नर्स की जरूरत पड़ती है। देखभाल करने के लिए और लोगों की जरूरत पड़ती है। इसी तरह बदलते हुए समय में बहुत-सी देखभाल करने की आवश्यकता है। बड़े बिगाड़ जो होने वाले हैं। आपको मालूम नहीं है कि 'नेचर' नाराज हो गई है। 'नेचर' के नाराज होने की वजह से कहीं बाढ़ आती है, कहीं अतिवृष्टि होने लगती है, तो कहीं सूखा पड़ने लगता है। कहीं तूफान आ जाते हैं, कहीं भूकम्प आ जाते हैं। कहीं क्या होता है तो कहीं क्या? हर तरह से नेचर हमसे नाराज हो गयी है। वातावरण भी ऐसा हो गया है कि जो नई पीढ़ियाँ पैदा होती हैं, नये बच्चे पैदा होते हैं, ऐसे कुसंस्कार जन्म से ही लेकर आते हैं कि न तो माँ का कहना मानते हैं, न बाप का कहना मानते हैं, न मास्टर का कहना मानते हैं। जरा-जरा-सी उमर से ही जाने क्या-क्या खुराफातें करना शुरू कर देते हैं। यह सब खराब वातावरण का प्रभाव है।

इससे बचने के लिए वातावरण को परिशोधित करने के लिए हमने कुछ काम करना शुरू कर दिया है। कुछ तो काम हमने अपने जिम्मे लिए हैं और कुछ काम आपके जिम्मे किए हैं। हमने अपने जिम्मे क्या लिया है? हम एक उस तरह की तपश्चर्या कर रहे हैं, जिस तरह की भगीरथ ने की थी। भगीरथ ने तपस्या की तो क्या हुआ? गंगा स्वर्ग लोक में रहती थी। उनकी तपश्चर्या से जमीन पर आयीं। गंगा जब जमीन पर बहीं तो तमाम जगह हरियाली हो गयी, पेड़ पैदा हो गये, बगीचे पैदा हो गये, गेहूँ पैदा हो गया। इस तरह भगीरथ ने जिस तरीके से तप किया था, ठीक उसी तरीके से एक तप हम भी कर रहे हैं। एक और समय ऐसा था, जब दैत्यों ने देवताओं को मारकर भगा दिया था और देवता बेचारे मारे-मारे फिर रहे थे। दैत्यों ने स्वर्गलोक पर अधिकार कर लिया था। देवता ब्रह्माजी के पास पहुँचे। उन्होंने कहा- "धरती पर महर्षि दधीचि नामक एक तपस्वी रहते हैं। उसकी बनावट ऐसी हैं कि यदि उसकी हड्डियाँ तुमको मिल जायँ तो उन हड्डियों से इन्द्र वज्र बनाया जाय। उस इन्द्र वज्र से आपके लिए राक्षसों से मुकाबला करना तब सरल हो जायेगा। उन्होंने यही किया। दधीचि ने ऐसा विशेष तप किया था, जिससे उनकी अस्थियाँ इस लायक बन गयी थीं कि यदि वृत्तासुर जैसे राक्षस जिसने सारी दुनिया में तहलका मचा रखा था, पर उन अस्थियों से बने वज्र से प्रहार किया जाय तो उसका प्राणान्त हो जाय और सब उससे छुट्टी पाएँ। हम भी यही कह रहे हैं। आजकल हमारा यही कार्य है। पूरे दो वर्ष हो गये हैं। दो वर्ष से हम मौन रख रहे हैं। एकांत में रहते हैं। अपना कुछ काम करते हैं, भगवान का भजन करते हैं। इस तरह से हमारी तपश्चर्या और एकांत सेवन चल रहा है।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

यह तो हमारे जिम्मे का काम है और आपके जिम्मे का क्या है? आपको भी कुछ करना चाहिए। आप नहीं करेंगे तब? रानी मक्खी शहद के छत्ते में बच्चे दिया करती है, लेकिन वह अकेले ही सब काम थोड़े ही कर लेती है? बाकी मक्खियाँ जाती हैं और जहाँ-तहाँ से फूलों का रस इकट्ठा करके ले आती हैं। सेनापति होते हैं, लड़ाई लड़ा करते हैं पर सेनापति की वजह से ही अकेले युद्ध में विजय नहीं पायी जा सकती। लड़ने वाले तो सिपाही होते हैं। लंका पर चढ़ाई से पूर्व समुद्र पर पुल बनाया गया था। अकेले नल-नील ने वह थोड़े ही बनाया था, वरन् उनके साथ कितने ही रीछ-वानर थे। महाभारत को अर्जुन ने लड़ा था। अकेले लड़ा था क्या? नहीं ! अकेले नहीं लड़ा, उनके साथ बहुत सारे सहयोगी भी थे। गोवर्धन पहाड़ उठाया गया था। क्या भगवान कृष्ण ने अकेले ही उठा लिया था? नहीं; अकेले नहीं उठाया था, गोप-ग्वाल सबने अपनी-अपनी लाठी का सहयोग किया था। भगवान बुद्ध ने जो धर्म प्रवर्तन चक्र चलाया था, सो अकेले ही चला लिया था क्या ? नहीं! अकेले नहीं, बौद्ध-भिक्षु सबने मिलकर चलाया था। गाँधीजी ने सत्याग्रह किया था और स्वराज्य को यहाँ लाये थे। आजादी प्राप्त की थी, लेकिन क्या आजादी ऐसे ही प्राप्त हो गयी थी? नहीं; हजारों आदमी उसमें सहयोगी थे। इसी तरीके से हमारी तपश्चर्या चल रही है, क्या हमारे अकेले की चल रही है? नहीं! अकेले की नहीं। हमारे कुटुम्बियों को, हमारे भाइयों को, हमारे भतीजों को, हमारे बच्चों को, हमारे बड़े-बुजुर्गों, हमारे सभी उम्र के अनुयायी परिजनों को काम करना पड़ेगा। क्या काम करना पड़ेगा? यह हमारा पचहत्तरवाँ वर्ष है। हीरक जयन्ती वर्ष है। इस हीरक जयन्ती वर्ष में हमने अपने प्रत्येक कार्यकर्त्ता को कुछ काम सुपुर्द किये हैं। ये काम ऐसे हैं जो अभी-अभी करने होंगे। क्या-क्या काम सुपुर्द किये हैं?

पहला काम तो हमने नालन्दा विश्वविद्यालय के तरीके से, तक्षशिला विश्वविद्यालय के तरीके से एक लाख धर्म प्रचारक बनाने का निश्चय किया है। यह काम सबसे बड़ा काम है, क्योंकि ये प्रचारक जो हैं, अगर बिगाड़ने पर तुल जाते हैं तो दुनिया को तबाह कर देते हैं। नशेबाजी सिखा देते हैं, व्यभिचार सिखा देते हैं और न जाने कितनी बुरी बातें सिखा देते हैं। यदि अच्छी बातें सिखाने को तैयार हो जाते हैं तो वे अच्छी से अच्छी बातें भी सिखा देते हैं। अच्छी बातें सिखाना न आता हो, ऐसी बात नहीं है। अच्छी बातें सिखाने के लिए सारी दुनिया में एक लाख आदमियों की आवश्यकता है। इससे कम की जरूरत पड़ेगी? नहीं। कभी गाँधी जी ने कहा था- सौ आदमी मिल जायें, तो हमारा काम चल जायेगा।हमारा काम नहीं चलेगा, क्योंकि सात लाख गाँव तो हिन्दुस्तान में ही हैं। अब एक आदमी के हिस्से में सात गाँव तो देंगे ही, इसलिए एक लाख के बिना हमारा काम नहीं चलेगा। एक लाख आदमियों को शिक्षित करने का काम हमने प्रारम्भ किया है। इसके लिए जो भी हमारे मिलने वाले हैं, हमारे मित्र हैं, जो भी हमारे सहायक हैं, कुटुम्बी हैं, उन सबको एक काम यह करना चाहिए कि एक-एक आदमी अपने डिवीजन से यहाँ अध्यापक की ट्रेनिंग के लिए भेजने चाहिए। हम युगशिल्पी को एक महीने में पढ़ा देंगे और एक महीने में इस लायक बना देंगे कि संगीत के माध्यम से वे सारे क्षेत्र की जनता को नये युग का सन्देश देने में समर्थ हो सकें।

आगे से हमारा प्रशिक्षण व्याख्यान प्रधान नहीं होगा, वरन् संगीत प्रधान होगा। गायन के विषय संगीत को लेकर हम चलेंगे। आप एक काम यह कीजिए कि एक आदमी अपने डिवीजन से ऐसा भेजिए जो कि मुस्तैद हो, जिसके पास समय भी हो, सेवाभावी भी हो और सीखने में उसकी रुचि भी हो। कोई बुड्ढा-बीमार व्यक्ति भेज देंगे, तो वह क्या सीखेगा? न चला जाता है, न दिखाई देता है- ऐसे व्यक्ति का हम क्या करेंगे? मुस्तैद आदमी वहाँ से युग-शिल्पी शिविर में भेजने के लिए आप लोगों से प्रार्थना की है और आप लोगों से यह प्रार्थना भी की है कि जब वह आदमी यहाँ से सीख करके चला जाये, तो अपने यहाँ एक विद्यालय बनाइये। उस विद्यालय में क्या होगा? वह प्रचारक विद्यालय होगा। वह संगीत भी सिखायेगा और व्याख्यान देना भी सिखायेगा, यज्ञ करना भी सिखायेगा। जन्म-जयन्तियाँ भी मनाना सिखायेगा। वहाँ सारे क्षेत्र में वह एक जाग्रति लावेगा, युग का सन्देश लोगों को सुनायेगा। यह काम आप सब लोगों को मिलजुल कर करना है। पहला काम हमारा यही है कि नालन्दा विश्वविद्यालय, तक्ष-शिला विश्व-विद्यालय के तरीके से एक लाख प्रचारक हम तैयार करें और इन प्रचारकों से हम प्रत्येक गाँव में इस तरह का वातावरण बनाएँ, जिससे हर आदमी को मालूम पड़े कि आज हमारे कर्त्तव्य क्या हैं? आज हमारी जिम्मेदारी क्या है? और आज हमको करना क्या चाहिए? इसके लिए आदमी को उठा करके, झकझोर करके, चैतन्य करके तैयार कर दें। प्रज्ञा प्रशिक्षण विद्यालय के बारे में अखण्ड ज्योति के संपादकीय लेखों में लिखा गया है और भी अनेक जगहों पर बताया गया है कि आपके गाँव में एक विद्यालय चलना चाहिए। उसमें संगीत की एक टीम होनी चाहिए। एक आदमी संगीत गा करके काम नहीं चला सकता । कई आदमी मिल जायें तो विचारों का विस्तार ठीक प्रकार से होता है, गाने का समा भी बन जाता है। यह हुआ पहला काम?

दूसरा काम? दूसरा काम हमने यह तय किया है कि एक लाख यज्ञ होने चाहिए। लाख? हाँ, लाख होने चाहिए । कैसे होंगे? किसी स्थान पर आप इस तरीके से यज्ञ कर सकते हैं कि अमावस्या, पूर्णिमा, एकादशी, रविवार में से कोई ऐसा एक दिन तय कर लें, जिसमें आप सभी को सुगमता हो- सुविधा हो। उस दिन आप पाँच कुण्ड की वेदियाँ बना लें

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

और हवन कर लें। हमने तो हवन को बेहद सुगम कर दिया है। बहुत खर्चीला है, बहुत पंडित आयेंगे, बहुत दक्षिणा लेंगे? नहीं, कोई दक्षिणा नहीं लेगा। आप सब मिल-जुलकर श्लोक बोलेंगे। मिलजुल करके बाँसों का पांडाल बना लेंगे। चमचम की पत्नी आती है, उससे उसकी शोभा-सज्जा करके वेदी बना देंगे। कुण्ड बनाने की भी जरूरत नहीं है। चौकोर वेदी बना लें, चौबीस अंगुल लम्बी और चौबीस अंगुल चौड़ी एवं तीन अंगुल ऊँची बना लें। इस वेदी के ऊपर चौक पूर करके सजा लें और हवन करें। हवन सामग्री आपके पास न हो तो आप गुड़ और घी दो चीजों की बेर के बराबर गोली बना लें और एक-एक गोली का हवन करते जायें। इसकी सुगन्ध से वातावरण सुगन्धित और पवित्र बन जायेगा, क्योंकि घी, गुड़, शक्कर में यह विशेष गुण है कि इसे लोगों की बीमारियों को दूर करने के लिए सबसे उपयुक्त वस्तु माना गया है। इसे हवन सामग्री में भी मिला सकते हैं। अनाज! अनाज के लिए तो हमने पहले ही मना किया है कि गेहूँ नहीं जलाना चाहिए, तिल नहीं जलाने चाहिए, चावल नहीं जलाने चाहिए और जौ नहीं जलाने चाहिए। अनाज जलाने के हम सख्त खिलाफ रहे हैं और इन चीजों को जलाने की आपको कोई आवश्यकता भी नहीं है। जो चीजें मनुष्य के खाने की हैं उनका आप हवन करें, ऐसा हमने कभी नहीं कहा। हमारा यह हवन बहुत सरल और सुगम है।

इसके साथ ही जन्मदिन भी मनाने चाहिए। हमारे गायत्री परिवार के चौबीस लाख आदमी हैं। उन चौबीस लाख आदमियों में से एक-एक का एक-एक दिन, एक-एक व्यक्ति का जन्म दिन मना लिया जाय तो चौबीस लाख यज्ञ हो सकते हैं और चौबीस आदमी पीछे एक यज्ञ कर लें तो? तो एक लाख यज्ञ हो जाते हैं। यज्ञों से हमारा मतलब यह नहीं है कि बड़ा भारी धूम-धड़ाका होगा और बड़ा भारी जुलूस निकलेगा और बड़ी भारी रैली होगी अथवा बड़ा सौ-सौ कुण्ड का, इक्यावन कुण्ड का या पच्चीस कुण्ड का यज्ञ होगा। इसकी तो हमने सख्त मनाही कर दी है, क्योंकि इस जमाने में बड़े यज्ञों का करना बड़ा खर्चीला है। बड़े यज्ञों में जितना सामान खर्च होता है और जिस तरीके से उसमें से लूट-मार होती है और जिस तरीके से चन्दा इकट्ठा होता है, उसको लोग हजम कर जाते हैं। इसके हम बेहद खिलाफ हैं। कुछ लोग हमारे पास आये थे, उन्होंने कहा- कि हम सौ कुण्ड का यज्ञ करेंगे। हमने कहा- नहीं, एकदम नहीं। एक हजार कुण्ड का यज्ञ करेंगे। हमने कहा- नहीं एकदम नहीं। हमने हर एक को मना कर दिया और कहा कि पाँच कुण्ड से ज्यादा का नहीं। हमारा कहना जो मानता है, हमारे कहने पर जो चलता है, उसको पाँच कुण्ड से ज्यादा का यज्ञ करने की बिल्कुल इजाजत नहीं, कोई जरूरत नहीं है। जो ऐसा नहीं करते उसके लिए हमारी कोई आज्ञा नहीं है, हमारी कोई सलाह नहीं है, कोई परामर्श नहीं और हमारा कोई सहयोग नहीं है। आपको पाँच कुण्ड की वेदियाँ बना करके, जिस को कि लागत दो-एक रुपये आती हो, उसमें आप बड़े मजे से हवन कर सकते हैं। इस प्रकार से हमारे एक लाख हवन इस साल में जरूर पूरे हो जायेंगे। यह संसार के इतिहास में एक अनोखी बात होगी कि एक लाख कुण्ड का हवन हुआ था। इसका एक तरीका यह भी हो सकता है कि हर जगह महीने में एक बार पाँच कुण्ड का हवन कर लिया करें और सबका जन्मदिन मना लिया करें, जिसमें संगीत भी हो जाये, प्रवचन भी हो जाये, प्रज्ञा-पुराण की कथा भी हो जाये, बस! महीनेभर में एक सम्मेलन और पाँच कुण्ड का यज्ञ इतना काफी है।

इस तरीके से एक लाख यज्ञों की हमारी योजना है। गाड़ियाँ हमारे पास हैं। यहाँ से गाड़ियों में प्रचारक जत्थे भी भेजने हैं। गाड़ियों के प्रचारक जत्थे हम उन्हीं-उन्हीं जगहों में भेजेंगे जहाँ-जहाँ बड़े आयोजनों की जरूरत समझी जायेगी। उसमें आपको केवल गाड़ी का पेट्रोल खर्च देना पड़ेगा और कोई खर्च नहीं देना पड़ेगा। हमारे कार्यकर्त्ता जायेंगे, उनको दक्षिणा देनी पड़ेगी? नहीं, बिलकुल नहीं! माइक-लाउडस्पीकर, यज्ञशाला-पांडाल, टेप आदि जितनी भी जरूरत की चीजें हैं, हर चीज हम यहाँ से भेजेंगे; पर अभी थोड़ी देर है। इस समय में दंगे-फसाद ज्यादा हो रहे हैं। कहीं पंजाब में दंगे हो रहे हैं, कहीं हिन्दू-मुस्लिम दंगे हो रहे हैं। इसलिए अभी इसको स्थगित कर दिया है। जब दंगे शान्त हो जायेंगे तब कार्यक्रमों के लिए टोलियाँ अवश्य भेजेंगे। हिन्दुस्तान में शान्ति जल्दी आ जायेगी, उसके आने में बहुत देर नहीं है। दो कार्यक्रम समझ में आ गये न आपके? पहला काम तो यह कि आपको प्रज्ञा प्रशिक्षण आयोजन के लिए सबसे ज्यादा जोर देना है अपने यहाँ झोला पुस्तकालय और संगीत विद्यालय चलाना है। बस, ये दो काम आप अपने यहाँ कर लेते हैं तो समझना चाहिए कि सब काम ठीक हो गया।

इस साल के लिए जो आपके जिम्मे काम दिये गये हैं, उनमें से तीसरा काम है-वृक्षारोपण। हवन करना और वृक्षारोपण लगभग एक ही बात है। वातावरण में कितना मिल गया है जहर? हवा में, पानी में कितना जहर मिल गया है। हर जगह जहर ही जहर है । इस जहर का समाधान करने के लिए या तो यज्ञ ही काम देगा या काम देगा पेड़ों का लगाना। नहीं साहब हमारे पास तो जमीन नहीं है, खेत भी नहीं है । तो आप ऐसा कीजिए कि अपने घर में शाक-वाटिका लगा लीजिए। छोटे-छोटे तुलसी के पौधे लगा लीजिए। यहाँ हमारे शांतिकुंज में आप आये होंगे तो आपने देखा होगा कि हमने जड़ी-बूटियों का कितना बड़ा उद्यान लगाया हुआ है और इस उद्यान में से कितने आदमी फायदा उठाते हैं। आप भी घरेलू जड़ी-बूटी पैदा करके लोगों को दे सकते हैं, इलाज कर सकते हैं। चिकित्सक बनकर लोगों की बीमारियाँ भी दूर कर सकते हैं।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

साथ-साथ जब आगे आप लोगों को हवन करने पड़ेंगे तो उन पौधों से उनके पत्तों से हवन सामग्री भी तैयार कर सकते हैं। यह बात हमने हर एक से कही है। इसलिए आप से भी कह रहे हैं। एक पेड़ तो आप लगा ही सकते हैं। कहीं पर लगा दीजिए। घर-आँगन में लगा लीजिए, सरकारी जमीन में लगा दीजिए अथवा पड़ौस में लगा दीजिए और कहिए भाई साहब यह पेड़ तो हम लगा देते हैं पर यह आगे चलकर तुम्हारा हो जायेगा। वातावरण के परिशोधन के लिए हमने इस बार वृक्षारोपण पर जोर दिया है। यह हुआ काम नम्बर तीन।

चौथे नम्बर का काम यह है कि पहले जो शक्तिपीठें बनीं थीं, वे तो बहुत बड़ी-बड़ी बनी थीं। उनमें तो लाखों रुपये खर्च हुए थे, लेकिन लाखों रुपये खर्च होने के बावजूद भी जो काम होने चाहिए थे वे नहीं हुए। अब उनके स्थान पर आप ऐसा कर सकते हैं कि कहीं किराये का मकान ले लें, धर्मशालाएँ भी जगह-जगह खाली पड़ी रहती हैं, उनमें से आप दो कमरे माँग सकते हैं। किसी भले आदमी से कह दीजिए कि आप चार घण्टे के लिए यह स्थान दे दीजिए, इसमें हमको प्रौढ़-शिक्षा चलानी है, बाल-संस्कारशाला चलानी है और अपना प्रज्ञा प्रशिक्षण विद्यालय चलाना है। हमें तो चार घण्टे के लिए चाहिए, बाकी समय आप अपने काम में इसका इस्तेमाल कीजिए। जब आप काम पर जायेंगे तब हम अपने प्रशिक्षण इसमें चला लेंगे, ऐसा स्थान भी मिल सकता है। अगर ऐसे नहीं मिलता तो, आप कहीं एक टीन शेड या खपरैल, छप्पर डालकर ऐसी एक झोंपड़ी बना लें, जिसमें कोई पच्चीस-तीस आदमी बैठ सकते हों।

शक्तिपीठों का हमने नया पैटर्न दिया है। ये शक्तिपीठें सौ रुपये में भी बन सकती हैं। इसमें आप गायत्री माता का एक फोटो लगा दें। उसी को सब प्रणाम कर लिया करें, वहीं बैठकर गायत्री मंत्र का उच्चारण कर लिया करें तो यह भी शक्तिपीठ हो जायेगी। सौ रुपये मूल्य में भी शक्तिपीठ बन जायेगी। उसमें यह प्रशिक्षण- शिक्षण कार्य चलना चाहिए। शिक्षणक्रम चलेगा तो हमारी जीवात्मा प्रसन्न होगी, शक्तिपीठों को बनाने का हमारा उद्देश्य पूरा होगा। इससे देश के ऊँचा उठने में, आगे बढ़ने में तो सहायता मिलेगी ही पर, साथ ही व्यक्तित्व के विकास में सुगमता रहेगी। हम व्यक्ति में श्रेष्ठ संस्कारों का बीजारोपण करें, उन्हें आगे बढ़ायें तभी हमारा व्यक्ति निर्माण और समाज निर्माण का उद्देश्य पूरा हो सकेगा। हमारे शक्तिपीठ जन- जाग्रति के केन्द्र बनें। ये चार काम हमने आपको बताये हैं और अब पाँचवाँ काम बता करके हम अपनी बात समाप्त करेंगे।

पाँचवाँ काम यह है कि जब भी आपको हरिद्वार आना हो तो आप शांतिकुंज जरूर आइये। शांतिकुंज में हम रहेंगे? हाँ, शांतिकुंज में हम बराबर बने रहेंगे। अभी जब तक युग संधि का समय है, तब तक हम यहाँ बराबर बने रहेंगे। माताजी का प्राण और हमारा प्राण एवं यहाँ की तपश्चर्या की ऊर्जा, यह सारे वातावरण में भरी रहेगी। जब कभी आपको आना हो तो प्रसाद लेकर जरूर जाइये, यहाँ ठहरकर जरूर जाइये, इसे देखकर जरूर जाइये, शांतिकुंज में, ब्रह्मवर्चस में कितने बड़े काम होते रहते हैं, ऐसे बड़े काम हो रहे हैं, जो संसार में कभी नहीं हुए होंगे। न कभी आपने ऐसे तीर्थ देखे होंगे, न कभी ऐसे कोई और स्थान देखे होंगे। इन स्थानों को देखने के लिए अपने कुटुम्बियों सहित आइये। शांतिकुंज बहुत ही उपयोगी जगह है। हम चाहते हैं कि ब्याह- शादियों में अनावश्यक खर्च होना बंद हो जाये। हम चाहते हैं कि हिन्दुस्तान की गरीबी खत्म होनी चाहिए। गरीबी दूर करने के लिए आप की आमदनी बढ़नी चाहिए। आमदनी बढ़ाने का एक तरीका यह भी है कि खर्च घटना चाहिए। खर्च हिन्दू समाज में सबसे ज्यादा ब्याह-शादियों में होता है। ब्याह-शादियों का खर्च आप कम कीजिए। वहाँ घर में आपके पड़ोसी और रिश्तेदार अगर आपको हैरान करते हों, तो अपने बच्चों की शादी आप यहाँ शांतिकुंज में सम्पन्न कराइये। आप अपनी बच्ची और वर एवं उसके माँ-बाप के साथ यहाँ आ जायें। गाड़ी का किराया-भाड़ा तो लगेगा आपका, लेकिन संस्कार सम्पन्न कराने का न आपको पैसा खर्च करना पड़ेगा, न ही किसी को दक्षिणा देनी पड़ेगी। सारी की सारी व्यवस्थाएँ यहाँ हर समय तैयार रहती हैं। आपको बच्चों का मुण्डन संस्कार कराना हो, अन्नप्राशन संस्कार कराना हो, विद्यारम्भ संस्कार कराना हो, यज्ञोपवीत संस्कार कराना हो तो आप सहर्ष यहाँ के वातावरण में आकर सम्पन्न करा सकते हैं।

मित्रों, यह दिव्य वातावरण का क्षेत्र है। यहाँ शांतिकुंज में उच्चस्तर का माहौल मौजूद है। गंगा का तट, हिमालय की छाया और सप्तऋषियों की तपोभूमि है यह। यहाँ साधना से ओत-प्रोत वातावरण है। यहाँ अखण्ड दीपक स्थापित है और अखण्ड जप भी निरन्तर चलता रहता है। नित्य- नियमित रूप से नौ कुण्ड की यज्ञशाला में अग्निहोत्र होता है, यह बात आप सभी लोग जानते ही हैं। इन्हीं सब विशेषताओं के कारण यह स्थान ऐसा बन पड़ा है, जिसमें रहने वाला, निवास करने वाला, साधना करने वाला व्यक्ति सहज ही उच्चस्तरीय प्राण-ऊर्जा से भर उठता है और उसे जीवनोत्कर्ष की भावभरी प्रेरणाएँ मिलती हैं। आध्यात्मिक दृष्टि से अपने स्तर का अनुपम स्थान है यह शांतिकुंज। सप्तऋषियों की तपोभूमि, सप्तधारा वाले क्षेत्र में गायत्री महातीर्थ का निर्माण किया गया है। इस संस्कारित भूमि में अभी भी गायत्री के तत्वदृष्टा ऋषि विश्वामित्र की पुरातन संस्कार चेतना मौजूद है। शांतिकुंज में रहने वाले तथा बाहर से आने वाले आगन्तुक सभी बड़ी मात्रा में साधना करते हैं और आत्मबल प्राप्त करते हैं। आत्मबल को अन्य सभी बलों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। ओजस्-तेजस् और वर्चस् उसकी विशेष उपलब्धियाँ हैं। यहाँ

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

के वातावरण में रहने पर भाव सम्वेदना का उभार सहज ही होने लगता है। यह प्रत्यक्ष उपलब्धियाँ हैं और परोक्ष वे हैं जिसमें हिमालय की सूक्ष्म शरीरधारी सत्ताओं और सप्तऋषियों के अनुदान बरसते रहते हैं। जिस दैवी सत्ता ने महान परिवर्तन की रूपरेखा बनायी है, उसी ने इस भूमि का चयन और निर्धारण भी किया है। इस भूमि का पूजन और परिशोधन किया है। उसी दैवी-सत्ता ने यहाँ बैटरी चार्ज करने जैसी अतिरिक्त व्यवस्था भी बनायी है। जिसके प्रवाह से सभी को अनुप्राणित होने का अवसर मिलता है। जो इसके साथ भावनापूर्वक जुड़ जाते हैं, वे यहाँ के वातावरण में व्याप्त दिव्य प्राण- ऊर्जा से लाभान्वित होते हैं और थोड़े समय में ही बहुत कुछ प्राप्त कर लेते हैं। शांतिकुंज की शिक्षण व्यवस्था दैवी कृपा से ऐसी है जिस पर रामायण की यह चौपाई अक्षरशः लागू होती है, जिसमें कहा गया है कि-

गुरु गृह गये पढ़न रघुराई।
अलप काल विद्या सब आई।।

साथियो! यह गंगोत्री का वह क्षेत्र है- जहाँ से ज्ञान-गंगा निकलती है। गोमुख से गंगा निकलती है। आप यह मानकर चलिए कि यह गोमुख है। कौन सा? शांतिकुंज। यहाँ से चारों ओर को ज्ञान का प्रकाश फैला है। चारों ओर को गंगा की धाराएँ बही हैं और चारों ओर हरियाली फैली है। यहाँ से हमने चारों ओर को जनरेटरों के तरीके से प्रकाश फैलाया है। यह प्रकाश का केन्द्र है, यह सामान्य नहीं, असामान्य है। आपने कई तीर्थ देखे होंगे, कई बार गंगा स्नान किये होंगे, कई मंदिर देखे होंगे, पर आपको शांतिकुंज में दुबारा आये बिना चैन नहीं पड़ेगा और न पड़ना चाहिए। जो कोई भी आपके मिलने-जुलने वाले हों, मित्र हों, उनसे एक बार यह जरूर कहिए कि जब कभी हरिद्वार जाना हो तो आप शांतिकुंज हो करके जरूर आना। ब्रह्मवर्चस् में क्या गतिविधियाँ चलती हैं? उन्हें देख करके आना। यह भी देखकर आना कि जो आदमी कई हजार रुपया महीना कमाते थे, उन्होंने नौकरी को ठोकर मार दी और औसत भारतीय स्तर का कैसा ब्राह्मणोचित जीवनयापन कर रहे हैं? साधु, बाबाजी तो ऐसे होते हैं, जो कभी भीख माँग लेते हैं, कभी यह कह कर लेते हैं, कभी वह कहकर लेते हैं पर, वे बिना पढ़े-लिखे होते हैं; लेकिन हमारे यहाँ ग्रेजुएट हैं, पोस्ट ग्रेजुएट हैं, नौकरियों वाले हैं। ऐसे होनहार बच्चे सब कुछ छोड़-छाड़ करके निष्ठा-पूर्वक बारह-बारह घण्टे काम करते हैं और भगवान का भजन भी करते हैं। आपको यहाँ हर समय हर व्यक्ति मिशन के कार्य में व्यस्त दिखेगा। यहाँ कोई आदमी आपको हाथ पसारता हुआ या यह कहता हुआ नहीं पाया जायेगा कि हमको भीख दीजिए, हमको पैसा दीजिए, हमको दान दीजिए, हमको दक्षिणा दीजिए- इनका कोई जिक्र नहीं करेगा। वह आपकी सेवा करेगा। इसलिये यहाँ शांतिकुंज में जब कभी भी आपका आने का मन हो, या आप जब कभी हरिद्वार आयें तो शांतिकुंज देखना न भूलें।

जो कोई भी आपके मिलने वालों में से यहाँ आये तो शांतिकुंज देखना न भूले। बस यही आपके लिए आज का संदेश था।

एक बार फिर सुन लीजिए कि आपको क्या-क्या करना है? पहली बात यह कि आपको यहाँ के लिए एक आदमी-एक युगशिल्पी भेजना है जो यहाँ से महीनेभर में सीख करके जाये और वहाँ जाकर शिक्षण कार्य करे। वह आपके क्षेत्र का अध्यापक होगा- मास्टर होगा। फिर आपको हमें बुलाना नहीं पड़ेगा। आप उसी के द्वारा काम चला लेंगे। दूसरा काम आपको यह बताया है कि प्रज्ञा प्रशिक्षण विद्यालय हमारी एक लाख शाखाओं में चलने चाहिए। शाखाएँ तो बहुत हैं, हमारे प्रज्ञा संस्थान तो हैं, स्वाध्याय मंडल तो बहुत हैं, शक्तिपीठें तो बहुत हैं, पर इन सबमें प्रज्ञा प्रशिक्षण विद्यालय अवश्य चलने चाहिए। फिर आपसे यह कहा है कि आप अपने यहाँ पाँच कुण्ड का हवन कराने की व्यवस्था करें। प्रत्येक आदमी का जन्म दिन मनाएँ, गायत्री परिवार के प्रत्येक आदमी का जन्म दिन मनना ही चाहिए और महीनेभर में पाँच कुण्ड का हवन प्रत्येक शाखा में, प्रत्येक जगह, प्रत्येक स्थान पर होना ही चाहिए। इसके अतिरिक्त वहाँ जो संगीत मंडलियाँ तैयार हुई हैं, उन्हें गाने का मौका मिलना चाहिए, बजाने का मौका मिलना चाहिए, कहने का मौका मिलना चाहिए।

मित्रो, एक बात मैंने और कही है और वह यह कि आपको पेड़ लगाना चाहिए। जितने अधिक से अधिक पेड़ आप लगा सकते हों जरूर लगाइये। अपने पुरखों के नाम पर पेड़ लगाइये और पुण्य कमाइये। इन पेड़ों को आप खेतों में लगाइये, आँगन में लगाइये, बेकार पड़ी जमीन में लगाइये। इसके अलावा हमने यह कहा था कि शांतिकुंज आपको निमन्त्रण देता है। आप यहाँ आइये और यहाँ के वातावरण में विद्यमान प्राण-ऊर्जा से लाभ उठाइये। आप हमारा ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान देख करके जाइए कि यहाँ कितना बड़ा रिसर्च हो रहा है। आप यहाँ देखिये कि नौ कुण्ड का हवन किस तरीके से होता है? आप यहाँ देखिये कि सारे हिमालय को केन्द्रीभूत करके मन्दिर कैसे बनाया गया है? आप यहाँ देखिये कि गायत्री माता और अन्य देवी-देवताओं, संबंधी तथ्य किस प्रकार व्यक्त हैं और कैसे विद्यमान हैं? आप यहाँ आइये और देखिये कि सन्त किसे कहते हैं? ब्रह्मचारी किसे कहते हैं- जिन्होंने अपने घर को त्याग करके, हजारों रुपयों की नौकरी को ठोकर मार कर यहाँ दिन-रात काम करते हैं। आपसे यह निवेदन है कि इन सब बातों को आप यहाँ जरूर देख कर जाइये। आप से यह आशा-अपेक्षा है कि आप ये हमारी चारों-पाँचों बातों को ध्यान रखेंगे। यदि आप इतना करेंगे तो हम आपको अपना मित्र समझेंगे, सहयोगी समझेंगे और यह समझेंगे कि हमारे कन्धे से कंधा और पैरों से पैर मिलाकर चलने वाले हमारे भाई हैं, कुटुम्बी हैं। आपसे हमें ऐसी उम्मीद है और आपको यह करना ही चाहिए। आज की बात समाप्त।

।।ॐ शांति।।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

विषम परिस्थिति में नवयुग की तैयारी

(पू. गुरुदेव द्वारा अगस्त १९८८ में दिया गया वीडियो संदेश)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो, भाइयो! गज-ग्राह का आख्यान तो आपने सुना होगा; गज-ग्राह के मुँह में फँसा हुआ जब बेबस हो गया, बेहाल हो गया और कोई रास्ता उसको दिखायी नहीं पड़ा तो उसने भगवान को पुकारा, क्योंकि भगवान के सिवाय कोई और सहायता करने वाला था नहीं, उसके पास। तो भगवान को किस तरीके से पुकारा ? भगवान को पुकारने के लिए अनेकों उपाय हैं। कहीं कीर्तन किये जाते हैं, कहीं यज्ञ किये जाते हैं, कहीं अनुष्ठान किये जाते हैं, कहीं जप किये जाते हैं, लेकिन बेचारा गज! यह सब नहीं कर सकता था। उसने एक फूल उसी पानी में से कहीं से उठा लिया और अपनी सूँड़ को ऊँचा करके भगवान को जोर-जोर से पुकारा । भगवान ने उसकी भावना को समझा, हृदय को समझा, मुसीबत को समझा, उसके कष्ट को समझा, अन्तरात्मा को समझा और दौड़ करके आये तथा अपने सुदर्शन चक्र से ग्राह को मार डाला और गज को छुड़ा लिया। आपको यह कथा मालुम है न ?

ठीक यही कथा, मनुष्य जाति के सामने इस समय भी उपस्थित हुई है। मनुष्य जाति को आप गज के तरीके से मान सकते हैं, जो फिलहाल अनेकों मुसीबतों में फँसी हुई है। बहुत-सी मुसीबतें तो पहले भी हमने बतायी थीं। फिर बता रहे हैं! वातावरण बिगड़ रहा है, वायुमण्डल बिगड़ रहा है, जनता की संख्या अंधाधुंध पैदा होती हुई चली जा रही है। विकिरण बढ़ रहा है, युद्ध की सामग्रियाँ बढ़ रही हैं, जिससे कि हर आदमी की मुश्किलें बढ़ती चली जा रही हैं। यह सब बातें तो पहले भी आपको बतायी थीं, लेकिन इस साल, जिस साल कि आप सब सामने बैठे हुए हैं, इसकी कुछ विशेष मुसीबतें हैं। उन विशेष मुसीबतों की ओर आपका ध्यान जाना चाहिए, आपको उनका अनुभव करना चाहिए। अभी इस साल कितनी महँगाई है, आपको मालुम है? टमाटर बाजार में बीस रुपया किलो मिल रहा है, आपको मालुम है न, महँगाई का क्या हाल है? महँगाई के मारे सामान्य आदमी का सौ में से निन्यानवे आदमियों का कचूमर निकल रहा है। यह एक मुसीबत इस समय की है।

दूसरी मुसीबत इस समय की क्या है? प्रकृति हमसे नाराज हो गयी है और उसने नाराज होकर वर्षा के ऊपर अपना प्रभाव डाला है। समय पर वर्षा न होने की वजह से क्या-क्या मुसीबतें आ रहीं हैं, आपको मालुम है न ? खेती सूख रही है, कुँओं का पानी नीचा होता चला जा रहा है, डेम और नदियों का पानी पहले की अपेक्षा घटता चला जा रहा है। पानी की कमी से बिजली कम पैदा होने की मुसीबत आ रही है। बिजली की कमी से बत्ती, पंखे, कल-कारखानों की पचासों समस्याएँ उठ खड़ी होती हैं और गाँवों में तो बिजली के बिना ट्यूबवैल चल नहीं पाते। कोई और तरीका तो है नहीं सिंचाई का, क्योंकि नहरों, तालाबों के सूखने से पानी का कोई और इंतजाम नहीं है। हमारे यहाँ ज्यादातर बिजली पानी से ही बनती है। पानी का अभाव हुआ तो बिजली बनाना तो दूर पीने का पानी, नहाने का पानी, खेती का पानी और ट्यूबवैलों से जो कुछ निकल सकता था वह सब भी दैनिक आवश्यकता की पूर्ति नहीं कर सकता। पानी की एक बड़ी भारी मुसीबत है।

महँगाई एक, पानी दो, इनके अतिरिक्त एक और तीसरे नम्बर की मुसीबत है जो कि आप लोगों के सामने है । वह कौन-सी है? वह यह है कि पुराने जमाने में जब अकाल पड़ते थे और खाने-पीने की चीजों का अभाव होता था, तो लोग भीख माँगने लगते थे या कुछ और काम करने लगते थे, पर आजकल तो आप जानते ही हैं कि चोरी, उठाईगीरी और डकैतियों के अलावा और कोई तरीका ही नहीं रह गया है। एक ही सबसे सस्ता तरीका है कि हत्या, चोरी और उठाईगीरी की जाये। अवांछनीय तत्वों की वृद्धि होने की इस साल विशेष संभावना है, आक्रमण बढ़ेंगे और तरह-तरह की मुसीबतें भी बढ़ेंगी। यह तीसरे तरह की मुसीबत है।

क्या साम्प्रदायिकता कुछ ठंडी हुई है? नहीं, यह बिल्कुल ठण्डी नहीं हुई? विवाद एक जगह ठण्डा नहीं होने पाता कि कहीं और तैयारियाँ शुरू हो जाती हैं। यह साम्प्रदायिक उपद्रव कृष्ण जन्मभूमि से लेकर बाबरीमस्जिद तक, हर जगह इसी के लिए धुआँ निकल रहा है, हर तरफ आग लग रही है। यह आग विकराल रूप धारण कर ले तो कोई अचम्भे की बात नहीं मानी जाएगी।

आतंकवाद ! आतंकवाद को आप देख रहे हैं न? कहीं बम फट रहे हैं, कहीं गोलियाँ चल रही हैं, कहीं कुछ और हो रहा है। ये सारी की सारी मुसीबतें-पाँचों मुसीबतें इस तरह की हैं जो कि आजकल हम सब लोगों के ऊपर ठीक उसी तरीके से छायी हुई हैं, जैसे गज के ऊपर मुसीबत आयी थी। अब हम लोग क्या करें? जो कोई उपाय होगा, वह किया भी जाएगा। जनता करेगी, गवर्मेन्ट करेगी, समाज से भी किया जाएगा। जो कुछ भी उपाय संभव है, हम सब लोग करेंगे ही । उसके बारे में तो मुझे कुछ कहना नहीं है। गवर्मेण्ट इसके सम्बन्ध में मार्गदर्शन करती ही है। समाज के नेता भी बताते रहते हैं कि इस मुसीबत के वक्त में पानी कम खर्च

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

करना चाहिए। बिजली भी कम खर्च करनी चाहिए। तालाब बनाना चाहिए, कुएँ खोदने चाहिए। सब अलग-अलग उपाय बताते ही हैं। ये भौतिक तरीके हैं। लेकिन इससे भी बड़ा एक आध्यात्मिक उपाय है, जो गज ने अपनाया था। वह क्या ? उसने भगवान को पुकारा था। देवताओं और दैत्यों में जब भी लड़ाई हुई, देवता मुसीबत में आये, तो वे भाग कर के भगवान के पास में गये और यह कहा कि हमारी मुसीबत को आप दूर कर दीजिए। तब भगवान ने कोई न कोई उपाय निकाला, चाहे दुर्गा का निर्माण किया हो, चाहे सीता का, दधीचि की अस्थियों से इन्द्र वज्र बनाया हो, चाहे स्वर्ग से गंगा को धरती पर लाया गया हो, जो भी उपाय किया गया हो, लेकिन किया जरूर गया।

ऐसे बड़े उपाय भगवान के द्वारा ही संभव हैं, इनसान के द्वारा यह संभव नहीं है। भगवान को पुकारने के लिए हमने इस समय में एक बड़ा उपयोगी और बड़ा ही आवश्यक उपाय निकाला है। यह जोश बढ़ाने वाला उपाय आपके सामने है और आपको बताया भी जा चुका है कि अब यज्ञ वैसे नहीं होने चाहिए, जिनमें कि सैकड़ों-हजारों रुपये खर्च हो जाते हैं। जनता भी देने लायक स्थिति में नहीं है और यदि देने लायक भी हो, तो जनता में से हरेक का यह ख्याल है कि यज्ञ से पानी बरसना चाहिए और यज्ञ से पानी बरसने की संभावना के बारे में हम आपको कोई विश्वास नहीं दिला सकते। फिर इस साल का पूरा समय कैसे कटेगा? हम आपको इस बात की ठीक जानकारी दे करके डराना नहीं चाहते, हैरान नहीं करना चाहते, पर यह जरूर कहेंगे कि वर्षा का सम्बन्ध उससे जुड़ा हुआ है। यज्ञ के सम्पन्न होने पर-वर्षा न होने पर जनता क्या कहेगी आपको? आपका उपहास होगा और यज्ञ का अपमान होगा, हमारा अपमान-जिनने स्कीम बनायी है। इसलिए यज्ञों को तो हरेक जगह जैसे पिछले साल हुए थे वैसे ही करना है। अन्तर सिर्फ इतना है कि उनके स्थान पर नये यज्ञों की शैली प्रचलित की है, जो गरीब से गरीब व्यक्ति के यहाँ भी आसानी से सम्पन्न करा सकते हैं।

वे कौन से यज्ञ हैं? वे दीपयज्ञ हैं। दीपयज्ञ में एक थाली में पाँच दीपक रखे जाते हैं। यह यज्ञ का सामान हुआ । थाली अपने घर से लेकर के चौक पूर कर उसे सजा लें, एक रुपये का सामान उसमें रख लें, तो बड़े मजे से यह यज्ञ हो सकता है। यज्ञ के कर्मकाण्ड तो सब वही हैं, जो सामान्य यज्ञ में हुआ करते हैं। दो एक बातें कम कर दी हैं जैसे घृत-अवघ्राणम्, भस्मधारणम्, वसोधारा आदि। बाकी यज्ञ के देव आवाहन मंत्र और यज्ञ का सारा स्वरूप वही है। केवल वस्तुएँ कम कर दी गयी हैं। यज्ञ की वस्तुएँ कम किये जाने में कोई बुराई है? नहीं कोई बुराई नहीं है। यहाँ याज्ञवल्क्य-जनक का संवाद कुछ ऐसा ही है। जनक ने पूछा कि कोई खराब वस्तु हो और हम यज्ञ न कर पायें, तो कैसे हवन करें? तब याज्ञवल्क्य जी ने कहा- "यज्ञ करना तो आवश्यक है। वह तो करना ही चाहिए। गायत्री और यज्ञ तो हमारी भारतीय संस्कृति के माता-पिता हैं। इनका पूजन तो करना ही चाहिए। इनको तो भोजन कराना ही चाहिए। वायुमण्डल, वायु संशोधन के कार्य के लिए तो इन्हें करना ही चाहिए। वातावरण संशोधन का काम तो हाथ में लेना ही चाहिए, पर वस्तुएँ कम कर सकते हैं।" तब राजा जनक ने पूछा - क्या वस्तुएँ कम कर सकते हैं? उन्होंने कहा- "घी अगर आपके पास न हो, तो केवल हवन सामग्री से जो वनस्पतियों से बनती है, उससे ही आप हवन कर लें।" इस तरह बिना घी के आप हवन कर लें। उन्होंने फिर कहा- वर्षा नहीं होगी तो वनस्पतियाँ भी पैदा नहीं होंगी। तो फिर कैसे हवन करेंगे ? तो याज्ञवल्क्य जी ने कहा- "आप लकड़ियों की समिधाओं से भी हवन कर सकते हैं।" कहने का आशय है कि कम से कम वस्तुओं से हवन कर सकते हैं। इसी तरह मुसीबत के समय में आपातकालीन परिस्थितियों में हमने दीपयज्ञ करने के लिए कहा है लोगों से और लोगों ने स्वीकार भी किया है । इसको आपको भी करना चाहिए । इसमें जो श्लोक बोले जाएँगे, भावनाएँ जो आपको मिलेंगी, उसके कारण से पुण्य उतना ही मिलेगा जितना कि यज्ञ कुण्डों को खोदकर के हजारों रुपया इकट्ठा जो किया करते थे। लगभग उतना ही पुण्य मिल जाएगा इस यज्ञ से।

यह यज्ञ का तरीका है- एक । यज्ञ का तरीका नम्बर दो- सबेरे प्रातः काल सूर्योदय के समय पर यज्ञ प्रारंभ हो जाना चाहिए। जब तक धूप फैलती है और ठण्डक रहती है। अपने घर के काम का वक्त होता है, दुकान खोलने का वक्त होता है। उस समय से सबेरे का कार्यक्रम तो वैसे ही समाप्त हो जाएगा, यह भी आपको भुला नहीं देना चाहिए। सायंकाल का एक और कार्यक्रम है। सायंकाल का कार्यक्रम क्या है? वह कार्यक्रम यह है कि सायंकाल को कीर्तन किया जाये। पुराने कीर्तनों और हमारे कीर्तनों में थोड़ा फर्क है। पुराने कीर्तनों में तो केवल रामभज हुआ करते थे। 'रामभज' में हरे रामा, हरे रामा, हरे कृष्णा, हरे कृष्णा; बस केवल रामधुन होती थी। हमारे कीर्तनों में विचार और टिप्पणियाँ भी जुड़ी हुई हैं। भगवान का नाम भी है और भगवान के नाम के साथ में विचार भी जुड़े हुए हैं और टिप्पणियाँ भी जुड़ी हुई हैं। यह आपको सौ-सौ कुण्डीय यज्ञ के समय भी बताया गया था। सौ कुण्डीय यज्ञ के लिए हमने बुलाया भी था। सौ कुण्डीय यज्ञ में आप भी उत्साहपूर्वक भाग ले करके आये थे । अब भी आप सौ कुण्डीय यज्ञ कर सकते हैं। सौ रुपये लागत आयेगी इसमें । बड़े मजे से इसे आप कर सकते हैं।

यज्ञ के बाद में व्याख्यान के बाद में देवदक्षिणा आवश्यक है। देवदक्षिणा में यह आवश्यक है कि आप अपनी बुराइयों का त्याग करें और अपनी अच्छाइयों को बढ़ायें। ये भी वातावरण संशोधन का एक बड़ा कार्य है। जो प्रकृति हमसे नाराज हुई है, जो मुसीबतें आयी हैं, ये सब मनुष्य के स्वभाव, मनुष्य के गुण, मनुष्य के कर्म, मनुष्य की वृत्तियों में फर्क आ जाने के कारण आयी हैं। आप इसको भी ठीक कर सकते हैं। यानि कि यज्ञ के बाद में जब देवदक्षिणा दी जाये तो उसमें अपनी कोई न कोई एक बुराई छोड़ी जाये और कोई न कोई एक अच्छाई बढ़ायी जाये। ये काम करना भी आवश्यक है। यही देवदक्षिणा है। दक्षिणा के लिए पंड़ित

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

जी को एक हजार रुपये देंगे और उनको पाँच कपड़े देंगे, खाना देंगे, नहीं। ऐसा करने की कोई जरूरत नहीं है। ये सामूहिक यज्ञ है। देवी-देवताओं का हम आह्वान करेंगे, उनका पूजन और सम्मान करेंगे। यज्ञ में जो आदमी आयेंगे, जो भी यज्ञ में सम्मिलित होंगे, जो भी हवन के मंत्र बोलेंगे, जो भी आहुतियाँ देंगे वे सारे के सारे सहकर्मी होंगे, सहयोगी होंगे। इनमें से कोई ऐसा पंडित नहीं होगा जो दक्षिणा के लिए आया हो। यदि कोई पैसे की नौकरी के लिए आता है वह देवता नहीं हो सकता, ब्राह्मण नहीं हो सकता! पैसे की नौकरी की जरूरत नहीं है आपको! लेकिन देवी-देवताओं को दक्षिणा तो देनी ही पड़ेगी, जिनको आपने बुलाया है, जिनसे आपने उम्मीद रखी है कि इन्द्र देवता हैं, वर्षा करें तो आखिर उनके चरणों पर हमें फूल तो रखना चाहिए। देवता आयेंगे तो कुछ पूजन-अर्चन तो करना ही चाहिए आपको। पूजन करने की विधियों में ये भी शामिल है कि आपको देवदक्षिणा के रूप में कोई न कोई बुराई त्यागनी पड़ेगी और कोई एक अच्छाई धारण करनी पड़ेगी।

ये सौ कुण्डीय यज्ञ क्वार की पूर्णिमा यानी कि शरद पूर्णिमा को प्रारम्भ करेंगे और चैत्र की पूर्णिमा को समाप्त करेंगे। ये पूरे छह महीने हो जाते हैं। छह महीने के बीच आपको एक कार्य करना चाहिए कि अपने गाँव में, अपने नगर में, अपने मोहल्ले में प्रत्येक घर के साथ सम्पर्क बढ़ाना चाहिए। यह सम्पर्क यज्ञ है। सम्पर्क यज्ञ का अर्थ है है कि प्रत्येक घर में आप जाइये और प्रत्येक घर के लोगों की तैयार कीजिए। आपके कुटुम्ब को, आपके परिवार को, आपके घर के लोगों को भी हमको ये कुछ शिक्षाएँ देनी हैं और साथ-साथ में भगवान का स्मरण भी कराना है। आपके घर में सुख-शांति भी लानी है। अत: प्रत्येक घर में एक यज्ञ का आयोजन करने का कार्यक्रम आपको इन छह महीनों में जारी रखना चाहिए। आवश्यकता हुई तो फिर कहेंगे कि छह महीने से भी ज्यादा जारी रखिए। फिलहाल आपको छह महीने का संकल्प तो दिला ही रहे हैं। इन छह महीनों में अपने नगर में, अपने गाँव में, अपने मोहल्ले में कोई घर ऐसा मत रहने दीजिए, जहाँ यह एक कुण्डी यज्ञ न हुआ हो।

एक कुण्डी यज्ञ का आप मतलब तो समझ ही गये हैं न? एक थाली में पाँच धूपबत्तियाँ और पाँच दीपक रखें। थाली को हल्दी, रोली अथवा आटे द्वारा सजा भी सकते हैं। ये दैनिक उपयोग की वस्तुएँ हर घर में रहती ही हैं। यदि आपको ये मालुम पड़ता हो कि एक घण्टे के समय में पाँच धूपबत्तियों में खर्च ज्यादा हो जाएगा, पाँच दीपक में खर्च ज्यादा हो जाएगा, तो आप किफायत भी कर सकते हैं पाँच दीपक हैं पहले एक जलाइये। पहला बुझने लगे तो दूसरा जला दीजिए। दूसरा बुझने लगे तो तीसरा जला दीजिए। तीसरा बुझने लगे तो चौथा जला दीजिए, फिर पाँचवाँ जला दीजिए। इस तरीके से एक-एक दीपक से काम चल सकता है। पाँच दीपक की स्थापना तो करनी ही पड़ेगी क्योंकि यह पाँच देवों का आह्वान है। इसमें पाँच प्राणों का आह्वान है, पाँच तत्वों का आह्वान है। अत: पाँच दीपकों की यह स्थापना तो करनी ही पड़ेगी। धूपबत्ती के संदर्भ में भी यही बात है। अगर आपको कहीं किफायत की बात मालूम पड़े और ये मालूम पड़े कि गरीबी बहुत ज्यादा है तो पैसे का खर्च और भी कम कर सकते हैं। तब पाँच धूपबत्तियों में से एक जला दीजिए, चार बिना जली रहने दीजिए, एक धूपबत्ती जलाकर खत्म होने को हो तब दूसरी जला दीजिए। जब वह खत्म हो तो तीसरी फिर चौथी और पाँचवीं जलाएँ। इस तरीके से पाँच बार में पाँच धूपबत्तियों के जो आपने बंडल बनाये और पाँच दीपक बनाये, उनको एक-एक करके पाँच हिस्से में जलाएँ तो पाँचवें हिस्से से आपका काम चल जाएगा और किफायत भी हो जाएगी। मैं किफायत की बात इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि अगले दिनों आपको पैसे की तंगी पड़ेगी, ज्यादा खर्च करना मुसीबत लायेगा। जो आदमी ज्यादा खर्च करता है वह ज्यादा फायदे की भी उम्मीद करता है, लेकिन जिसका थोड़ा खर्च हुआ है उस बेचारे का थोड़ा समाधान हो जाये तो भी काम चल जाता है। यज्ञ इसीलिए लोगों को अखरता है । यज्ञ के नाम पर कम से कम खर्च कराना चाहिए। जो विधियाँ आपको बतायी गयी हैं, उसी के हिसाब से हर घर में जाकर के यज्ञ कराना चाहिए।

घरों में जो यज्ञ आप करायें, उसमें ये कुछ बातें शामिल करें। वास्तव में यह हम परिवार गोष्ठियों के रूप में पारिवारिक यज्ञ कर रहे हैं। इसमें परिवार निर्माण का उद्देश्य छिपा हुआ है, जो कि समाज निर्माण से भी सम्बन्धित है और यज्ञ के निर्माण से भी सम्बन्धित है। यज्ञ के निर्माण और समाज-निर्माण के बीच की इकाई यह परिवार निर्माण है। परिवार निर्माण पारिवारिक यज्ञों के माध्यम से होगा। इसमें सुबह परिवार यज्ञ किया जाये और शाम को कीर्तन की व्यवस्था की जाये। भले ही महिलाएँ मिल-जुलकर कर लें। कोई बात नहीं है, पर करना जरूर चाहिए। लेकिन साथ में जो देव दक्षिणा वाला प्रकरण है उसे नहीं भूलना चाहिए। देवदक्षिणा हर घर के यज्ञ में भी होनी चाहिए। और क्या-क्या होना चाहिए? कुछ खास बातें हैं जो जरूर करनी चाहिए। प्रथम तो यह कि प्रात:काल सूर्योदय के समय पर भगवान का स्मरण करना । इस समय यह बहुत ही आवश्यक है। सूर्योदयकाल की अपनी खास विशेषता है। चाहे सुबह कर लेंगे, दोपहर को कर लेंगे, शाम को कर लेंगे! नहीं भाईसाहब ! बिल्कुल सबेरे ही सूर्योदय के समय पर ही नाम स्मरण करना होगा, चाहे आप नहाये हों या न नहाये हों। सूर्योदय काल में एक ही तरीके से एक ही समय में, एक ही प्रकार का कार्य करने से उसकी शक्ति सौ गुनी हो जाती है, इसलिए यह प्रात:काल का जप आवश्यक बताया गया है। उसके बारे में आप घर-घर में जाकर हर आदमी से मिलकर कहिए कि प्रात:काल का जप करना शुरू करें, चाहे दस मिनट का ही क्यों न हो।

इसके सिवाय एक और बात है। हमारे देश को गिराने वाली कुछ चीजें हैं। उनसे अपने आपको उबारने की कोशिश करनी चाहिए। शिक्षा की कमी इस तरह की है कि आदमी जानवर की तरह भयानक हो जाता है। न उसके

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

ज्ञान के कपाट खुलते हैं, न उसको नयी जानकारियाँ मिलती हैं, न समाज में क्या हो रहा है ये पता चलता है, न उसे, लोग किस तरीके से आगे बढ़ रहे हैं ये जानकारियाँ मिलती हैं। वह एक तरीके से कुएँ का मेढ़क बनकर रहता है। इसलिए आपको शिक्षा के बारे में प्रौढ़-शिक्षा आन्दोलन को इन्हीं यज्ञों के साथ में जोड़कर प्रारम्भ कर देना चाहिए। आप लोगों में से जो कोई पढ़े-लिखे हों, उन्हें यह प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि "हम पाँच बिना पढ़े-लिखों को तो जरूर ही पढ़ा देंगे।" चाहे तो आप उनके घर जाइये, चाहे उन्हें अपने घर बुलाइये, चाहे एक महीने पढ़ाइये या छह महीने पढ़ाइये, चाहे दो वर्ष पढ़ाइये। आप यहाँ से एक संकल्प लेकर के जाइये कि "पाँच व्यक्तियों को तो पढ़ायेंगे ही।" परिवार में होने वाले यज्ञों की यह प्रमुख बात है। जो व्यक्ति पढ़ा नहीं सकते, वे पढ़ तो सकते हैं। घरों में बुड्ढे-बुढ़ियाँ, जवान स्त्रियाँ बिना पढ़ी होती हैं। उनको पढ़ाने का एक आन्दोलन हमें इसी यज्ञ योजना में शामिल करना है।

दूसरा एक और आन्दोलन है जो इससे भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। वह क्या है? जो कुछ भी हम कमाते हैं वह सब पेंदे के छेद में से होकर निकल जाता है। फूटे हुए घड़े में पानी चाहे जितना डालते जाइये, पर पेंदे में बने छेद में से होकर सब निकल जाएगा और घड़ा खाली का खाली बना रहेगा। इस पेंदे का छेद है- हमारे समाज में ब्याह-शादियों में होने वाला खर्च। खर्चीली शादियाँ हमें दरिद्र, बेईमान बनाती हैं। यह तो हमने आपको पच्चीसों बार कहा है और कहते रहेंगे हमेशा ! हमारा देश जो तबाह हुआ है, जो गरीब हुआ है, जो बर्बाद हुआ है इसमें ब्याह-शादियों वाली बात ऐसी है कि इसको अगर खर्चीला बनाये रखा गया तो आप समझिये कि हम आमदनी बढ़ाने का चाहे जितना प्रयत्न करें तो भी हम गरीब के गरीब बने रहेंगे। इसके लिए क्या करना चाहिए? आप सब लोगों को इसके लिए ये प्रतिज्ञाएँ करनी चाहिए, अभिभावकों को ये प्रतिज्ञाएँ करनी चाहिए कि "हम अपने बच्चे और बच्चियों की शादियों में धूमधाम नहीं करेंगे- एक। दिखावा नहीं करेंगे- दो। दहेज नहीं लेंगे और न देंगे- तीन और जेवर नहीं चढ़ायेंगे --चार।"

ब्याह-शादियों में जेवर और दहेज का कितना बड़ा सम्बन्ध है, ये आपको मालुम नहीं है। लड़के वाला माँगता है-दहेज। क्यों माँगता है? क्योंकि उससे जेवर माँगा जाएगा । लड़की वाला माँगता है जेवर और लड़के वाला माँगता है दहेज। ये दोनों ही बातें मरेंगी तो एक साथ ही मरेंगी। अगर जिन्दा रहेंगी तो दोनों ही बातें जिन्दा रहेंगी। आप अकेले दहेज को बंद करना चाहें और ये चाहें कि हमारी लड़की पर जेवर जरूर चढ़ाये, तो बेचारा बेटे वाला कहाँ से लायेगा जेवर के लिए सोना? आज सोने का कितना महँगा भाव है। चार हजार रुपये का दस ग्राम बिक रहा है। इसमें अगर मान लो कोई आदमी पचास ग्राम का भी जेवर बनवाना चाहे तो उसको बीस हजार रुपया चाहिए। यह कहाँ से आएगा? अतः जेवर के लिए वह दहेज माँगता है, तो क्या बुरा करता है। दहेज के बंद करने की यदि बात करनी चाहिए, तो जेवर को बंद करने की बात भी करनी चाहिए, अतः आप ब्याह-शादियाँ इस तरीके से कराइये जिसमें न दहेज दिया जाये, न जेवर लिए जाएँ। जिसमें न बारात चढ़ाई जाये, न धूमधाम की जाये। न बैण्डबाजे बजाएँ और न बेकार के काम किये जाएँ। घरेलू उत्सव होते हैं। हमारे घर में होली-दीपावली होती है, तीज-त्यौहार होते हैं, उसी तरीके से पाँच आदमी उस तरफ के आ जाएँ और पाँच यहाँ घर के हों। अपने घर में छोटा-सा हवन कर लिया जाये और शांति से ब्याह कर दिया जाये और दूसरे दिन विदा कर दी जाये। इस तरह के विवाह बहुत कम दाम पर होते हैं। किसी को दहेज ही देना हो तो अपनी बेटी के लिए इंदिरा विकास पत्र में रकम जमा कर सकता है, जो पाँच साल में दूनी हो जाएगी।

इस तरह की ब्याह-शादियों की परम्परा चलाना भी हमारा इस वक्त का कार्यक्रम है। दहेज हिन्दू समाज का कोढ़ है। यह हिन्दू समाज का कलंक है। शिक्षा का अभाव होना हमारे देश के लिए कलंक है। दहेज का, ब्याह-शादियों में फिजूलखर्चियों का होना हमारे देश का कलंक है। इसको दूर करने के लिए आप लोगों को इसी तरह के कार्यक्रम का प्रयास करना पड़ेगा और इन्हीं यज्ञों के साथ में इन दो कार्यक्रमों को भी मिलाना पड़ेगा।

ब्याह-शादियों का एक और भी तरीका है। ज्यादातर होता यह है कि मोहल्ले वाले, पड़ोसी, यार-दोस्त, मित्र और सम्बन्धी ये कहते हैं कि नहीं साहब नाक कट जाएगी, बात बिगड़ जाएगी। ऐसा तो नहीं होना चाहिए। धूमधाम तो होनी ही चाहिए। मोहल्ले में फलाने का इतना बड़ा ब्याह हुआ था, आपको क्यों नहीं करना चाहिए? जहाँ इस तरह की मुसीबतें हों, जहाँ इस तरह के गिद्ध-कौए चारों ओर से घेरे हों आपको और आपको यह मालुम पड़ता हो कि इस मुसीबत से निकलने का कोई उपाय नहीं है, तो हम आपको निमन्त्रित करते हैं कि आप कन्या को ले आइये, लड़के को ले आइये और पाँच-पाँच आदमी दोनों पक्षों के आ जाइये और यहाँ शांतिकुंज में आप बड़े मजे में विवाह करके ले जाइये- बिना खर्च किये । यहाँ किसी तरह का खर्च नहीं पड़ेगा। न यहाँ किसी तरह का दिखावा करना पड़ेगा, न फर्नीचर देना पड़ेगा। न कोई दहेज माँगने की हिम्मत करेगा, न कोई जेवर चढ़ाने का नियम है। पाँच आदमी आएँगे। आप यहाँ खाना खाइये। यहाँ के चौके में एक हजार आदमी खाना खाते हैं। पाँच आदमी बारात के आ जाएँ, वे हमारे मेहमान की तरह खाना खा जाएँगे तो हमारा क्या बिगड़ जाएगा। इसलिए इस तरह के विवाहों का, मेरी समझ से ये ज्यादा अच्छा है कि इस रिवाज को फैलाने के लिए आप स्थानीय स्तर में सफल नहीं हो पाते हैं, तो आप इसमें तो बड़ी आसानी से सफल हो जाएँगे कि हमारे जो विवाह होंगे वे हमारे गुरुद्वारे में होंगे और वे शांतिकुंज में होंगे। शांतिकुंज में विवाहों का यही प्रचलन चलेगा। यह तीर्थस्थान भी है। देवताओं का यहाँ निवास भी है। यहाँ यज्ञ भी होता है, ऐसे शुद्ध स्थान पर विवाह संस्कार सम्पन्न करें। जैसे शुभ मुहूर्त की बात सोची जाती है वैसे ही आप शुद्ध स्थान की बात सोचिए। मुहूर्त

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

की बात मत सोचिए? आप कभी भी ले आइये। यहाँ हमेशा ब्याह हो जाता है क्योंकि यहाँ शुभ वातावरण है, शुभ भूमि है, शुभ एवं पुनीत स्थान है। इसलिए यहाँ मुहूर्त की जरूरत नहीं है, आप इस बात को जान लीजिए।

दो बातें और रह जाती हैं इसके सिवाय। पहली है नशेबाजी की बात, आप नशेबाजी को छुड़ाइये, नहीं तो अगली पीढ़ियाँ घटते-घटते, गिरते-गिरते किसी काम की न रह जाएँगी। आपको यह तो मालुम ही है कि नशे से शरीर मारा जाता है, बुद्धि भी मारी जाती है, पैसा भी बर्बाद हो जाता है। कुटुम्ब भी तबाह हो जाता है और बच्चों का भविष्य भी खराब हो जाता है। आदमी ऐसा बन जाता है जिसका न कोई विश्वास करता है, न कोई पास बैठने देता है। पीढ़ियों की यह गिरावट अगर बनी रही तो पचास-चालीस वर्ष में एक पीढ़ी के बाद दूसरी पीढ़ी कमजोर होगी। दूसरी के बाद तीसरी कमजोर होगी और हम वास्तव में फिर इस लायक हो जाएँगे कि हमको अपने शरीर को धकेलना मुश्किल हो जाएगा। इसीलिए करना आपको यह चाहिए कि नशेबाजी के विरुद्ध भी जो कुछ आपके लिए संभव हो, उसको जरूर करना चाहिए।

नशेबाजी के सिवाय एक और बात है। साग-भाजी उगाने की तो हम कह नहीं सकते, क्योंकि जब वर्षा का अभाव होगा तो आप साग-भाजी कहाँ से उगा पायेंगे? साग-भाजी मनुष्य के जीवन के लिए उतनी ही आवश्यक है- जितना अनाज। अनाज से कम आवश्यक नहीं है। आप साग-भाजी उगाने के लिए अपने घरों में इंतजाम कीजिए। पानी आप पीते हैं सो ठीक है, पर जब आप कुल्ला करते हैं, नहाते हैं तो पानी बहकर बेकार चला जाता है। उस पानी को इकट्ठा कर लीजिए और अपने घरों में, गमलों में, टोकरों में, पिटारों में, किसी में जो आपने उगा रखा है, उसी में उस पानी को आप डाल दीजिए। जो आपके स्नान से बचा हुआ है, जो आपके पीने से बचा हुआ है,जो आपके हाथ धोने से बचा हुआ है- उस पानी को भी साग-भाजी में डाल दें, तो साग-भाजी पैदा हो सकती है। मान लीजिए कि उस साग-भाजी से आप घर का पूरा खर्चा नहीं भी चला सकते हैं, तो उससे कम से कम चटनी का काम तो चल ही सकता है। रूखी रोटी खाने के बजाय आप चटनी से तो काम चला सकते हैं। चटनी ही एक ऐसी चीज है कि जिससे हमारे लिए बड़ी सहूलियत मिलती है। आपको ये-धनियाँ है, पोदीना है, पालक है, अदरक है, मिर्च है और टमाटर है। ये चीजें तो आसानी से लगा सकते हैं। कोई और साग नहीं बो सकते आप, चटनी का सामान तो आसानी से इकट्ठा कर सकते हैं।

तो साहब ! साग-भाजी का लगाना एक, नशेबाजी का विरोध करना दो, ब्याह-शादियों में खर्च न होने देना-सादगी के साथ ब्याह करना तीन और प्रौढ़ शिक्षा के बारे में ज्यादा से ज्यादा प्रचार करना- चार । छोटे बच्चों का तो यह भी है कि गवर्मेण्ट स्कूलों में पढ़ा लेते हैं लेकिन बड़ों की संख्या तो दो तिहाई है। दो तिहाई हमारे देश के बिना पढ़े-लिखे लोग हैं। उनको शिक्षित करने की बात पर हम लोगों को ध्यान देना चाहिए, तैयारी करनी चाहिए। अब इन सभी बातों को ध्यान में रखकर के हमारे यज्ञों की पूर्णता इन बातों में जोड़नी चाहिए कि आपके यज्ञ के साथ-साथ में भावनाएँ जुड़ी हुई हों, सेवाएँ जुड़ी हों। देश को ऊँचा उठाने, आगे बढ़ाने की मनोवृत्ति भी जुड़ी हुई हो। यज्ञ भी जुड़ा हुआ हो, कीर्तन भी जुड़ा हो और भगवान का नाम स्तवन भी जुड़ा हुआ हो। साथ ही अपनी बुराइयों को छोड़ने और अच्छाइयों को बढ़ाने का प्रयत्न भी जुड़ा हुआ हो। इन सब को मिलाकर चलेंगे तो आप यह मान लीजिए कि यज्ञ में जो भी बड़े से बड़ा कार्यक्रम होगा- इन कार्यक्रमों के आधार पर ही वह पूरा हो जाएगा और वही फल मिलेगा आपको, जो बड़े यज्ञों से मिलना चाहिए। मुझे आशा है कि आप इन बातों को ध्यान से सुनेंगे और उसको कार्यान्वित करने में कुछ कसर उठा नहीं रखेंगे- इतना ही निवेदन है आप सब लोगों से।

।। ॐ शान्ति।।

अज्ञान का निवारण ही सबसे बड़ा पुण्य-परमार्थ है। वह स्वाध्याय से, ज्ञानार्जन से ही संभव है। उत्तराखण्ड के एक प्राचीन नगर में सुबोध नामक राजा राज्य करते थे। महाराज का नियम था- राजकीय कार्य प्रारम्भ होने से पूर्व वे आये हुए याचकों को दान दिया करते थे। इस नियम में उन्होंने कभी भूल नहीं की । एक दिन जब सब लोग दान पा चुके, तो एक विचित्र स्थिति आ खड़ी हुई। एक व्यक्ति ऐसा आया जो दान के लिए हाथ तो फैलाये था, पर मुँह से कुछ न कहता था। सब हैरान हुए, इसे क्या दिया जाय? एतदर्थ बुद्धिमान् व्यक्तियों का सलाहकारी बोर्ड बैठाया गया। किसी ने कहा वस्त्र देना चाहिए, किसी ने अन्न की सिफारिश की। कोई स्वर्ण देने को कहता तो कोई आभूषण । समस्या का यथार्थ हल न निकला। सुबोध की कन्या उपवर्गा भी वहाँ उपस्थित थी, उसने कहा- राजन् ! जो व्यक्ति न बोल सकता है, न व्यक्त कर सकता है उसके लिए द्रव्याभूषण सब व्यर्थ हैं। ऐसे लोगों के लिए सर्वश्रेष्ठ दान तो ज्ञान-दान ही है। ज्ञान से मनुष्य अपनी सम्पूर्ण इच्छाएँ, आकांक्षाएँ आप पूर्ण कर सकता है और दूसरों को भी सहारा दे सकता है। इसलिए इन्हें ज्ञान दान दीजिये। उपवर्गा की बात सबने पसन्द की। व्यक्ति के लिए शिक्षा की व्यवस्था की गई। राजा ने उस दिन अपने दान की सार्थकता समझी। यही व्यक्ति आगे चलकर उसी नगरी का विद्वान मन्त्री नियुक्त हुआ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

(बसंत पंचमी, सन् १९८८)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ –

ॐभूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

भाइयो, देवियो ! समय सभी के पास है। उसको, ठीक मौके को, कोई-कोई समझ पाते हैं, कोई-कोई देख पाते हैं। उस मौके को जो देख लेते हैं, समझ लेते हैं, उसका ठीक उपयोग कर लेते हैं वही मजे में रहते हैं। बाकी लोगों की जिन्दगियाँ तो ऐसे ही व्यतीत हो जाती हैं, जानवरों के तरीके से पेट भरने में और बच्चे पैदा करने में। इन दो कामों में ही चिड़िया का, जानवरों का, मनुष्यों का, पशुओं का, सबका समान रूप से समय व्यतीत हो जाता है; लेकिन उसका सुयोग और सौभाग्य उठाना उन्हीं लोगों के हिस्से में आया है, जो मौके को ठीक तरीके से समझ पाते हैं और ठीक तरीके से इस्तेमाल कर लेते हैं।

रेलगाड़ी टाइम पर आती है। आप टाइम पर प्लेटफार्म पर पहुँचें तो उसमें सवार हो सकते हैं और अगर समय चूक जाते हैं तो चौबीस घण्टे तक इंतजार कीजिए। कल गाड़ी आयेगी, तब देखा जाएगा और टिकट भी बेकार हो जाएगी। कल नयी टिकट खरीदनी पड़ेगी। इस तरीके से समय को ध्यान में रखना हमेशा आवश्यक है। फसल का, बीज बोने का एक खास समय आता है। उस समय को आप चुका दें और किसी भी वक्त बहुत सा बीज बो दें, ठीक है बो दीजिए, लेकिन वह पैदावार नहीं हो सकती, वह आमदनी नहीं हो सकती, जो ठीक समय पर बीज बोये जाने पर हुआ करती है। फसल काटने का भी एक निश्चित समय आता है। उस समय पर अगर फसल काट ली, तो अनाज आपके घर आ जाएगा और आपने महीना-पन्द्रह दिन ऐसे ही गँवा दिये तो बाद में थोड़ा-सा अनाज ही हाथ लग पाएगा।

जिन्दगी में बहुत से ऐसे मौके आते हैं जैसे-आपके पड़ौस में किसी की मृत्यु हो गयी है और वहाँ से बुलावा आया है कि हमारे घर में गमी हो गयी है, जरा श्मशान घाट तक चलिए। आपने कहा– "नहीं साहब, अभी समय नहीं है। परसों देखा जाएगा, परसों आयेंगे। फिर वह व्यक्ति जिन्दगी भर ख्याल रखेगा कि हमारे घर में हमारी माताजी की मृत्यु हुई थी और ये नहीं आये। 'ये नहीं आये' जिन्दगी भर यह कलंक आपके साथ लगा ही रहेगा। समय चूक जाने पर आप उसको पूरा नहीं कर पायेंगे। किसी के यहाँ शादी-ब्याह हो और वह कहे, हमारे यहाँ सब मेहमान आये हैं, आप भी आइये ! अरे साहब, पन्द्रह दिन बाद आयेंगे। इस वक्त तो हम नहीं आ सकते, अभी छुट्टी नहीं है, इस वक्त तो हमें बहुत काम है। ठीक है, फिर आपसे जिन्दगी भर कहने को रह जाएगा कि आप ब्याह के मौके पर नहीं आये थे। घर में बच्चा पैदा होता है। सारे घरवाले, पड़ोसी महिलाएँ सब इकट्ठी हो जाती हैं और देखती हैं कि बहू को कोई परेशानी न पैदा हो जाये। समय पर जा पहुँचती हैं तो ठीक है। बच्चा पैदा हो गया और उसके बाद में वे कहें अरे साहब, हमें खबर तो हो गयी थी, पर हम सो गये थे, हम आये नहीं।

समय का बड़ा महत्व है। समय की कीमत है। समय पर सही काम कर लेना मनुष्य की सबसे बड़ी बुद्धिमानी और सबसे बड़ी खुशहाली है। आप के लिए भी यह समय खास समय है। इस समय को अगर आप पहचान लें और उसका ठीक उपयोग कर लें, तो समझिये आप बड़े भाग्यवान निकले और आपने अपने जीवन को सार्थक कर लिया। समय रूपी सम्पदा को पाकर आप निहाल हो गये, अगर आप मौके को समझ नहीं पाये, देख नहीं पाये और किस समय में आपको क्या करना चाहिए, इस बात को भुला दिया तो आपको पश्चाताप के अलावा और कुछ हाथ लगने वाला नहीं है। ये बड़ा कीमती समय है। कैसा कीमती समय है ? ये ऐसा कीमती समय है जैसे-एक बार रामचन्द्रजी के ऊपर मुसीबत आयी। उन्होंने बन्दरों से कहा, हनुमानजी से कहा, सुग्रीव से कहा था–"भाइयो, हमारी मदद करो। " हनुमानजी चले गये मदद करने के लिए रामचन्द्रजी की। थे तो हनुमानजी भी एक बन्दर। वे सुग्रीव के यहाँ नौकरी करते थे। किसी तरीके से अपना गुजारा करते थे, लेकिन जब रामचन्द्रजी के पुकारने पर चले गये, मौके को उन्होंने पहचान लिया तो क्या परिणाम हुआ ? फिर वे ऐसे बड़े हो गये जैसे सारी जिन्दगी में कभी नहीं हुए थे। उन्होंने पहाड़ को उखाड़ा, समुद्र को लाँघा, लंका को जलाया और सीताजी की खोज की। रामराज्य की स्थापना के लिए उन्होंने सारे का सारा जीवन लगाया और अपने आप में धन्य हुए। अब उनकी पूजा हर जगह की जाती है। उस समय को हनुमानजी चूक गये होते और रामचन्द्रजी से यह कह दिया होता कि साहब, अभी तो समय नहीं है, साल भर बाद देखा जाएगा। इस समय तो हमें नौकरी से छुट्टी नहीं मिल रही है। अभी तो लड़की का ब्याह नहीं हुआ है। अभी तो ये काम करने को पड़ा हुआ है। तब तो हनुमानजी उस मौके को चुका देने के बाद में सुग्रीव के यहाँ नौकरी ही करते रहते। बन्दर के बन्दर बने रहते और हनुमानजी देवता के रूप में शायद फिर पूजित न हो पाते।

जिन्होंने भी मौके का लाभ उठाया, वे धन्य हो गये ! मगर वह समय कौन-सा होता है ? वह असामान्य समय होता है जब भगवान पुकारता है और सामान्य समय वह होता है, जब मनुष्य भगवान को पुकारता है। यह मनुष्य अपनी मुसीबतें दूर करने के लिए भगवान् को पुकारता ही रहता है, पैसा दीजिए, बाल-बच्चे दीजिए, मुकद्दमे से छुड़ा लीजिए, झगड़े से बचा लीजिए, बीमारी दूर कर दीजिए। उसके पुकारने पर भगवान् भी कुछ दिया ही करता है। ये बात नहीं कि मना कर देता हो। भिखारी हमारे दरवाजे पर आते हैं तो उन्हें मना नहीं कर देते। किसी को रोटी, किसी को पैसा, किसी को कुछ और वस्तु दे

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

करके विदा कर देते हैं। लेकिन, एक मौका ऐसा भी आता है जब माँगने के लिए कोई शक्ति आती है और शक्ति से भी कोई बड़ी शक्ति आ जाये तो, उसे कुछ देने के बाद व्यक्ति धन्य हो जाता है। दशरथजी के यहाँ विश्वामित्र आये। क्यों आये मालूम है न ? माँगने के लिए आये। क्या माँगने के लिए आये ? बच्चे माँगने के लिए आये। उन्होंने कहा-यज्ञ की रक्षा के लिए हमको इनकी बड़ी आवश्यकता है। स्वयं विश्वामित्र असुरों से लड़ सकते थे। राजा थे वे भी। पहले भी उन्होंने सैकड़ों लड़ाइयाँ लड़ी थीं, अपनी जिन्दगी में। वे सभी राक्षसों को मार सकते थे, पर स्वयं तो नहीं मारा, क्योंकि ऋषि का धर्म अलग है। ऋषि को अपने-आप पर मानसिक संतुलन बनाये रखना चाहिए। ऋषि को अपनी क्षमाशीलता कायम रखनी चाहिए, लेकिन राक्षसों से लड़ने के लिए तो कोई चाहिए था। उसके बिना तो काम नहीं चलेगा न ? ऋषि नहीं लड़ेगा तो दूसरे तो लड़ेंगे।

दशरथजी के मन में पहले तो यह आया कि हमारे बच्चे हैं, हमारे पास रहेंगे, बड़े होंगे, हमारी सेवा करेंगे, हमारा घर देखेंगे, राज-पाठ सम्भालेंगे। क्यों हम ऋषि के यहाँ भेजें ? पीछे उनके गुरु वशिष्ठ ने उनको सलाह दी। उनकी समझदारी ने कहा-नहीं इस समय विश्वामित्र माँगने के लिए आये हैं। ये बार-बार नहीं आयेंगे। महर्षि को सहायता देने के लिए सिपाही-सहयोगी तो कहीं और भी मिल जाएँगे, लेकिन आप इस वक्त अपने बच्चों को देकर के धन्य हो सकते हैं। ऐसा मौका दोबारा नहीं आयेगा। इसलिए आप इन्हें खुशी से दे दीजिए और राजा दशरथ ने अपने दोनों बच्चों को विश्वामित्र के हवाले कर दिया।

परिणाम क्या हुआ ? परिणाम ये हुआ कि विश्वामित्र के साथ जाने के बाद दोनों का भला हुआ। ऋषि ने उन्हें अनेकों विद्याएँ सिखायीं, अमोघ अस्त्र-शस्त्र प्रदान किये। शंकरजी का धनुष जिसे तोड़ना बहुत मुश्किल था। उस धनुष को तोड़ने में रामचन्द्रजी सफल हुए। परशुरामजी नाराज हुए थे कि हमारे गुरुजी का धनुष किसने तोड़ दिया ? सीताजी के साथ रामचन्द्रजी का विवाह हुआ। लंका का विनाश करने में, सारी असुरता का निवारण करने में रामचन्द्रजी सफल हुए। रामराज्य की स्थापना करने में सफल हुए। ये सब कैसे हुआ ? अगर राम राजकुमार रहे होते तो शायद इतना न हो पाता। विश्वामित्र की शक्ति और दशरथ की बुद्धिमानी से ही सम्भव हुआ। ठीक समय पर अगर किसी ठीक काम के लिए अपने बच्चे तक देने पड़ें तो हर्ज की क्या बात है? ऐसा राजा दशरथ ने गुरु वशिष्ठ की आज्ञा से किया, फिर गुरु निहाल हो गये, दशरथजी निहाल हो गये, विश्वामित्र निहाल हो गये, रामायण लिखने वाले बाल्मीकिजी और रामचन्द्रजी निहाल हो गये और वे सब निहाल हो गये जो भगवान् राम का नाम लेकर भवसागर से पार हो गये। राम अगर विश्वामित्रजी के साथ नहीं गये होते और उन्होंने अपनी अयोध्या में ही समय काटा होता तो राजा बन जाते और नाती-पोतों को खिला रहे होते तब परशुराम और रामचन्द्रजी का हम और आप शायद ही नाम ले पाते, शायद ही जान पाते। सम्भव है कि उनके मन्दिर भी नहीं बनते और रामायण भी नहीं लिखी जाती। मौका था, जिसको गुरु वशिष्ठ ने पहचान लिया, राजा दशरथ ने पहचान लिया और राम-लक्ष्मण ने भी पहचान लिया। सबने पहचान लिया और उस मौके का ठीक लाभ उठा लिया गया। लाभ उठाने का परिणाम यह हुआ कि सब के सब धन्य हो गये और एक बड़ा काम सम्पन्न हुआ।

सुनिये, और भी कुछ हुआ। क्या-क्या हुआ ? बड़े गजब की बातें हुईं। देव मानव थे राजा इन्द्र। महर्षि दधीचि के पास हड्डियाँ माँगने आये। दधीचि ने ठीक मौका देखा, सोचा ये हड्डियाँ तो देनी ही पड़ती हैं। बुखार में आदमी मर जाते हैं। एक्सीडेंट में कई बार मोटरों के आगे आ जाते हैं, रेलगाड़ियों के आगे आ जाते हैं, हड्डियों का कचूमर निकल जाता है। रोज हत्याएँ होती हैं। उन्होंने खुशी-खुशी ठीक मौके पर उच्च उद्देश्य के लिए अपनी हड्डियों का दान कर दिया। उसका क्या शानदार परिणाम हुआ ? ऐसा शानदार परिणाम हुआ कि महर्षि दधीचि धन्य हो गये। राजा इन्द्र धन्य हो गये और वृत्तासुर जैसी मुसीबत से त्राण पाने के बाद सारी दुनिया अपने आप में धन्य हो गयी। देवता धन्य हो गये, क्योंकि दधीचि ने ठीक मौके पर ठीक काम किया।

और कोई घटना बताइये ! मैं आपको कौन-कौन सी घटनाएँ बताऊँ ? जिन्होंने सही समय पर सही काम किया। एक थे रामकृष्ण परमहंस। वे एक लड़के के पास गये। वह उनके यहाँ आया करता था बार-बार। सो उसके पास जा पहुँचे। उन्होंने कहा- नरेन्द्र , इस समय मुझे बहुत सख्त जरूरत है और तू इम्तहान देने में लगा हुआ है, पढ़ाई में लगा हुआ है। मेरा कितना काम हर्ज हो रहा है, तुझे समझ में नहीं आता। उसने कहा-अच्छा स्वामीजी। मैं आपके साथ चलता हूँ। आप जहाँ कहीं भी लगा देंगे वहीं जा पहुँचूँगा और वे स्वामीजी के पास चले गये। विवेकानन्द स्वयं नहीं गये, वरन् रामकृष्ण परमहंस उन्हें बुलाने के लिए उनके घर गये और कहने लगे वत्स, हमारे साथ चल। हमारा बहुत जरूरी काम पड़ा हुआ है। भगवान् भी माँगने आते हैं कई बार। इन्सान तो माँगते ही रहते हैं, भिखारियों के तरीके से। हमको ये दीजिए, हमको वो दीजिए ! लेकिन कभी-कभी ऐसे भी मौके आते हैं जब भगवान् माँगने आते हैं।

राजा बलि के यहाँ भगवान् माँगने गये थे। आपको मालूम है कि नहीं ! तब बलि राजा बना अपने सिंहासन पर बैठा रहा और भगवान् बावन के रूप में, छोटे से होकर के बच्चे के रूप में, बौने के रूप में गये थे। भगवान् छोटे रह गये। बलि बड़े हो गये। माँगने के लिए जो भी जाता है, छोटा हो जाता है और देने वाला बड़ा हो जाता है। इसी तरह के मौके कितने सारे आये ? चाणक्य ने भी ऐसा ही किया था। वे चन्द्रगुप्त को तलाशते उसके घर जा पहुँचे थे और कहने लगे-बेटा, हमारा बड़ा काम हर्ज हो रहा है। तुझे चक्रवर्ती शासक बनना है और भारत को बहुत ऊँचा उठाना है। हमारे उद्देश्य के लिए, बड़े काम के लिए जीवन देना पड़ेगा। उस समय चन्द्रगुप्त ने कहा होता-अरे साहब, मुझे नौकरी करनी है, शादी करनी है, बाल-बच्चे पैदा करने हैं, दुकान चलानी है। तो सम्भव है, न वह मौका चन्द्रगुप्त के जीवन में आया होता और न वह मौका चाणक्य को मिला होता। न ही भारत भूमि को वह सौभाग्य मिला होता। वह सौभाग्य सब को इसलिए मिला कि उन्होंने ठीक मौके को पहचान करके ठीक-ठीक बात की और अपने आपको ठीक तरीके से समर्पित कर दिया।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

और कौन-कौन सी घटनाएँ हैं ? मैं तें घटनाएँ, ढेरों कहानियाँ सुना सकता । कौन-कौन सी घटनाएँ सुनेंगे आप ? लिए आपको और सुनाता हूँ। रामदास ने क लड़के को पकड़ लिया। वह इधर-धर घूम रहा था। उससे कहा-बेटा, तुझे त्रपति बनना है। तुझे बड़ा काम करना है। हीं साहब, मेरी माँ इन्तजार कर रही गी, मुझे घर का कुछ काम करना है। झे फुर्सत नहीं है, दो महीने बाद ाऊँगा। अगर ये बहानेबाजी बनायी ाती, तो शिवाजी को ये सौभाग्य नहीं ाला होता, जो उनको जीवन में मिला। ावाजी की घटना आपको बतायी। ाणक्य और चन्द्रगुप्त की घटना आपको ताायी और विवेकानन्द और रामकृष्ण रमहंस की घटना सुनायी। दशरथ और मचन्द्रजी की और ऋषि की बात बतायी। सब बातें इसलिए आपको बतायीं कि ोक उसी तरह का मौका इस समय भी । इस तरह के मौके पर आप चूक जाते हैं । फिर हमेशा पछताना ही पछताना ापके हाथ में रह जाएगा। फिर आप यह ौभाग्य दोबारा जब प्राप्त करना चाहेंगे, । नहीं कर सकेंगे।

आपको मालूम है, राम-रावण युद्ध पूर्व गिलहरी ने देखा कि ये ठीक मौका , जब रामचन्द्रजी को जरूरत पड़ी है, न पर मुसीबत आयी है। सब सहयोग रें, ये रामचन्द्रजी की इच्छा है, इसलिए झे भी उनकी मदद करनी चाहिए। ालहरी ने अपने बालों में बालू भरकर ल पर बिखेरना शुरू कर दिया, बस ालहरी धन्य हो गयी। सब उसकी गाथा ते हैं और रामायण में मुख्य हो गयी। ालहरी के फोटो छपते हैं। गिलहरी के शज औलाद की पीठ पर जो कालेपन के शान पाये जाते हैं, ये रामचन्द्रजी द्वारा ाह से हाथ फेरने की वजह से बने थे। ये से हो गया ? क्योंकि ठीक समय पर ने ठीक काम किया।

और किन-किन ने समय पहचाना ार भगवान का काम किया ? रीछ-नरों की घटनाएँ तो आपको याद ही हैं। धीजी की कल-परसों की बात है। ाधीनता संग्राम में जिन-जिन लोगों ने ग लिया, उन स्वतन्त्रता सेनानियों को ाप जानते ही हैं कि वे कौन-कौन हैं। हें स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी होने का ीफिकेट मिला है। उन्हें पेन्शन मिलती है। उनको सम्मान मिलता है। उन्हें हर जगह बुलाया जाता है। यात्रा के लिए 'फ्री पास' मिला हुआ है। यदि उस समय उनको ध्यान नहीं आता होता, उस समय वे चूक गये होते, तो ये सुविधाएँ और ये सम्मान उन्हें थोड़े ही मिलता। नहीं साहब, अब हमें भी स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी बना लीजिये। भाई साहब, अब कैसे बना लें, वह मौका तो उसी वक्त था। उस वक्त जो आ गया सो आ गया, जो नहीं आया वह रह गया। भगवान गौतमबुद्ध के साथ में जो भिक्षु संघों में शामिल हो गये थे, उन्होंने उस समय के धर्म-चक्र प्रवर्तन के लिए बड़ी भूमिकाएँ निभायीं, जो उस समय नहीं आये, वे रह गये। इसी प्रकार से अन्यान्य लोग हैं। उनमें से जो आ गये रीछ-बन्दर, वे रामचन्द्रजी की सेना में भर्ती हो गये सो हो गये। उनको कितना श्रेय और सौभाग्य मिला, यह आप सभी जानते हैं। उनका नाम लिया जाता है, वे अमर हो गये। जो नहीं आये, ऐसे ढेरों रीछ-बन्दर रहे होंगे, लोमड़ियाँ रही होंगी, खरगोश रहें होंगे, हाथी और शेर रहे होंगे जो अपनी-अपनी माँदों में, अपने-अपने घरों में बैठे रहे होंगे। उन्होंने समय को नहीं पहचाना और युद्ध में भाग नहीं लिया। फिर क्या हुआ उनका ? वे बेचारे वैसे के वैसे जानवर के जानवर ही रह गये, पर जो अपनी जान हथेली पर रखकर उसमें शामिल हो गये, वे रीछ और बन्दर देवता हो गये और वे रामचन्द्रजी के साथ विमान में बैठकर अयोध्या चले गये। देवलोक चले गये। ऐसा मौका बार-बार नहीं आता।

हनुमानजी की तरह अर्जुन की भी ऐसी ही कहानी है। गीता में अर्जुन यह कहता था कि "मैं भीख माँगकर खा लूँगा और अपना गुजारा कर लूँगा। मुझे क्या अधिकार मिलने से-राज्य मिलने से ?" लेकिन भगवान ने कहा-नहीं हमको आवश्यकता है। तुम्हें आवश्यकता नहीं है तो न सही। तुम तो दुकान खोलकर भी अपना गुजारा कर लोगे, पर हम कैसे गुजारा कर लेंगे ? हमें तो भारत को महाभारत बनाना है। छोटे से भारत को विशाल भारत के रूप में परिणत करना है। उसमें तुम्हारी आवश्यकता है। अर्जुन पहले तो आनाकानी करते रहे, पीछे विवेकबुद्धि जाग्रत होने पर उन्होंने कहा- "**करिष्ये वचनं तव**" आपका कहना मानूँगा, आपके आदेशानुसार चलूँगा। बस यही घटना हमारे जीवन की भी है। हमारा जीवन जो आज वसन्त पंचमी के दिन आप लोगों के सामने आया, इसकी क्या विशेषता है ? इसकी कोई विशेषता नहीं है। मात्र एक विशेषता है-'**करिष्ये वचनं तव**' की। एक ऐसी सर्वशक्तिमान सत्ता ने हमारा आह्वान किया और यह कहा कि तुम्हारे पास जो कुछ भी है, वह हमारे हवाले कर दो। हमारे पास क्या था ? कुछ भी नहीं था। समय था खाली, सो समय को हमने उनके चरणों पर रख दिया और ये कहा-"हम आपके साथ-साथ चलेंगे। जो आप आज्ञा देंगे, हम वही करेंगे।" और वैसा ही हुआ। सारी जिन्दगी उसी प्रकार से बीत आयी। हमने क्या पाया ? क्या खोया ? आप समझते हैं न हमने क्या गँवाया ? कुछ भी नहीं गँवाया हमने। आप हमारे गाँव चले जाइये, देखिये-हमारे साथ पैदा हुए लोग, दूसरे लोग-कोई दुकान कर रहा है, कोई व्यापार कर रहा है, कोई खेती कर रहा है। सभी जैसे-तैसे मामूली आदमी की जिन्दगी जी रहे हैं, लेकिन हम अच्छी जिन्दगी, शानदार जिन्दगी जी रहे हैं। ये कैसे सम्भव हुआ ? यह इसलिए कि ठीक समय पर, ठीक वस्तु का, ठीक पात्र के हाथ में समर्पण हुआ।

आज इसी की माँग है। युग बदल रहा है। सवेरा निकलने वाला है। रात्रि समाप्त होने वाली है। फूल खिलने वाले हैं। चिड़ियाँ चहचहाने वाली हैं। उषाकाल सन्निकट है। ऐसे पुण्य समय में प्रातःकाल में आपको उठने की जरूरत है। चेतने की जरूरत है। मुर्गा बाँग लगाता और कहता है कि 'प्रातःकाल हो गया उठिये।' मन्दिरों में शंख-घड़ियाल बजते हैं और कहते हैं उठिये। मस्जिदों में आवाज लगायी जाती है, कहती है उठिये, सोइये मत। यह सोने का समय नहीं है, पड़े रहने का समय नहीं है। वक्त बर्बाद करने का यह समय नहीं है, यह समय गँवाने का नहीं है। यह समय अपने पेट भरने का नहीं है। यह समय बहानेबाजी करने का नहीं है। यह समय लोभ-मोह का नहीं है। यह समय इसका है कि हम नये विश्व की नयी संरचना के लिए अपने समय को और शक्ति को लगा दें। बस एक ही माँग है-अगर आप मौके को समझ पायें, अपने समय को दे पायें तो आपका कुछ काम

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

हर्ज होने वाला नहीं है। ये आपका बेकार का भय है कि हम चले जाएँगे तो हमारे बाल-बच्चे भूखे मर जाएँगे। हम पर मुसीबत आ जाएगी, हमारा काम हर्ज हो जाएगा। ये सब आपके मन की कमजोरी है। "**क्षुद्रं हृदय दौर्बल्यं**" आपके हृदय की दुर्बलता के अलावा और कुछ भी नहीं है।

इस समय, समय की माँग ये है कि आप अपने समय का, श्रम का, अपनी शक्ति का बड़े से बड़ा भाग समाज की संरचना के लिए, महाकाल की पुकार को पूरा करने के लिए, युग की चुनौती स्वीकार करने के लिए लगाएँ, अपने आप को पेश करें। फिर क्या काम करें ? ढेरों के ढेरों काम करने के लिए पड़े हैं। आप जहाँ रहते हैं, वहाँ पेट भरने के लिए काम करने के अतिरिक्त थोड़ा समय बचाना चाहिए। उस बचे समय से आप अपने क्षेत्र में कुछ महत्त्वपूर्ण काम कर सकते हैं। आप ज्यादा समय लगाना चाहें तो हमारी शक्तिपीठें हैं। हमारे पेट का हर्जा होगा। बाबा, पेट-पेट मत चिल्लाइये। पेट नहीं, आदमी की नीयत खराब है। आदमी के पेट की कोई समस्या नहीं है। चिड़िया के सामने, हाथी के सामने पेट भरने की कोई समस्या नहीं है, फिर इन्सान के सामने क्या आयेगी ? आप ये बहानेबाजी मत बनाइये कि हमारा गुजारा कैसे होगा, घर का क्या होगा, हमारी जिम्मेदारियाँ कौन पूरी करेगा ? आप नहीं भी रहेंगे, मर जाएँगे, तो भी आपके बच्चों का, घर बालों का पालन-पोषण होगा। आपके बिना कोई भूखा नहीं मरने वाला, न हो तो आप विश्वास करके देख लीजिए।

और कुछ कहना है आपसे ? बस एक ही बात कहनी है कि आप अपने समय का थोड़ा हिस्सा अपने लिए रखिए और ज्यादा हिस्सा समाज के लिए, देश के लिए, धर्म के लिए, जन-जाग्रति और लोकमंगल के लिए लगाइये। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आप नफे में रहेंगे। हम नफे में रहे हैं, यकीन कीजिए। हमें देख लीजिए और महापुरुषों की गवाहियाँ देख लीजिए। गाँधीजी ने वकालत की होती, तो वकील के वकील रह गये होते। बिनोवा भावे ने अगर उसी तरह की जिन्दगी जी होती, तो शायद कहीं अध्यापक बन गये होते। जवाहर लाल नेहरू भी कहीं वकालत कर रहे होते। सरदार बल्लभ भाई पटेल मामूली वकील थे, वकील ही रहे होते, लेकिन इन सारे के सारे महापुरुषों ने अपने आप को लोकमंगल के लिए आगे बढ़ाया तो मजे में और नफे में रहे। एक भी नुकसान में नहीं रहा। आज लोगों में यदि साहस हो, हित त्याग की, देशभक्ति की भावना हो, अगर आप मौके को पहचानते हों, तो समझ लीजिए यह युगसंधि की बेला है। युग बदल रहा है। इस समय आप जैसे भावनाशील व्यक्तियों की बेहद आवश्यकता है। आप जन-जागरण के लिए खड़े हो जाइए, कार्यक्रम क्या करने पड़ेंगे ? कार्यक्रम तो बहुत सरल हैं और हमने सबको बता दिये हैं। इस वक्त के लिए बस चार कार्यक्रम रखे हैं- किस तरीके से जकड़ रखा है। नशेबाजी और दहेज जैसी प्रथाओं में कितना पैसा बर्बाद होता है ? फैशन-परस्ती में लोग कितना पैसा लगा देते हैं ? ये ऐसी मुसीबतें हैं जिनसे हमें स्वयं निकलना पड़ेगा और जनता को निकालना पड़ेगा। सरकार मदद करेगी, ठीक है। सरकार अपना काम करेगी, लेकिन ये जन-मानस की, घर-घर में जाने की, लोक-चिन्तन बदलने की बात है। जन-जागरण की बात है। इसके लिए आपको ही आगे आना पड़ेगा। इसे कोई और नहीं कर सकता, आप ही कर सकते हैं। आपको करना भी चाहिए।

मैं ये अनुरोध लेकर आपके सामने हाजिर हुआ हूँ कि आप समय को

भगवान श्रीकृष्ण ने किसी बात पर प्रसन्न होकर कुन्ती से वरदान माँगने को कहा। कुन्ती बोली- "मुझे कठिनाइयों से जूझने और समस्याओं को सुलझाने के अवसर मिलते रहें।" कृष्ण ने आश्चर्य से पूछा- ऐसा तो कोई नहीं माँगता।

कुन्ती का उत्तर था- "तभी तो लोग साहसी, दूरदर्शी और प्रतिभावान नहीं बन पाते। कष्टों का अपना स्वाद और प्रतिफल है।"

नारी जागरण के लिए आपको समय लगाना है। नारी जागरण के बिना पुरुष जाति अधूरी है। पुरुष अधूरा रहेगा तो दुनिया अधूरी रहेगी। आधी दुनिया कैदखाने में पड़ी रहे तो बाकी दुनिया किस तरीके से उठेगी। गरीबी उन्मूलन के लिए हमको बड़ा काम करना है। हमारे यहाँ अधिकांश लोग केवल खेती पर निर्भर हैं और खेतिहर मजदूर बिचारे थोड़े दिनों के लिए मेहनत-मजदूरी पाते हैं। फिर उनके लिए कोई काम नहीं रह जाता, अत: कुटीर उद्योगों का विकास करना है। कुटीर उद्योग हमारे देश में कृषि के सहायक बन सकते हैं। आज हर आदमी कमजोर-बीमार होता चला जा रहा है, क्योंकि रहन-सहन, खान-पान आहार-विहार के बारे में उसको जानकारी ही नहीं है। स्वास्थ्य ठीक हो, इसके लिए स्वास्थ्य संगठन हमारा कार्यक्रम है। अत: स्वास्थ्य संगठन के लिए खड़े होना है। चौथा कार्यक्रम है जन-जागरण। इसका अर्थ है-हर आदमी के विचारों को बदल देना, चेतना को बदल देना, भावना को बदल देना। लोगों को देखा है आपने, कैसी घटिया और गन्दगी से भरा जीवन जी रहे हैं। आदमी को कुरीतियों और लोक-मान्यताओं ने पहचानिये और उसे भगवान् के काम में लगाइये। भगवान् ने- महाकाल ने आपको पुकारा है। इसलिए आपको पुकारा है कि आप दुनिया की समस्याओं को सुलझाने के लिए, गये-गुजरे लोगों को ऊँचा उठाने, आगे बढ़ाने के लिए कदम बढ़ायें। अपने आपको त्याग के लिए, बड़े कामों के लिए समर्पित कीजिये। फिर देखिये आप कितने मजे में और कितने खुशहाल रहते हैं। कितने प्रसन्नचित्त रहते हैं। कितना आपको संतोष मिलता है, सम्मान मिलता है, कितना आपको भगवान का अनुग्रह मिलता है। यही तो परीक्षा का समय है। अगर आपमें हिम्मत है और आपका विवेक साथ देता है तो मेरी आपसे यही प्रार्थना है कि आप जरूर कदम बढ़ाइये। नये युग के निर्माण जैसे बड़े कामों में अपना समय लगाइये-हिम्मत कीजिए। यह हिम्मत आपके लिए इतनी बड़ी सावित होगी जैसे हनुमानजी के लिए सावित हुई थी, अर्जुन के लिए सावित हुई थी और वे धन्य हो गये थे। बस, यही आपसे अनुरोध करना था। आज की बात समाप्त।

।। ॐ शान्ति।।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी-

असामान्य समय हेतु असामान्य तैयारी

(अक्टूबर १९७९ में शान्तिकुंज में दिया गया उद्‌बोधन)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो, भाइयो! कभी साधनाएँ समयानुकूल और पात्रता के अनुकूल हुआ करती थीं। एक-सी साधनाएँ कभी नहीं रहीं। बहुत पुराने जमाने की साधनाओं को जब हम देखते हैं तो एक मुख्य तपस्विनी पार्वतीजी तप करती रहती थीं। कितने ही वर्ष वे हवा पर रहीं, पत्ते खाकर रहीं, पानी पीकर रहीं। कभी तपस्वियों की ऐसी साधनाएँ होती थीं। कभी ज्ञान की साधनाएँ होती रहीं। सूत और शौनक से ऋषि नैमिषारण्य क्षेत्रों में जाकर कथा-प्रसंग करते थे। वहाँ अनेकानेक भक्तजन आते थे और कथा श्रवण करते थे, सत्संग की बातें करते थे। कभी शिक्षण का सिलसिला चला तो ब्राह्मणों के आरण्यक स्थापित हुए और उनमें जाकर के लोग ज्ञानार्जित करने लगे। साधनाएँ उस समय की अजीब थीं। हजारों तरह की साधनाएँ प्रचलित थीं। जिनमें तांत्रिक साधनाओं से लेकर सकाम साधनाएँ तक होती थीं, लेकिन शार्गिद के हिसाब से साधना का चयन करना, गुरुजनों और ऋषियों का काम था। ऋषि समय की जानकारी प्राप्त करने वाले द्रष्टा होते थे। वे जो साधनाएँ बताते थे लोग उन्हें अपनाना अपना सौभाग्य मानते थे और सफलता भी प्राप्त करते थे।

आज का समय सामान्य समय नहीं है। यह संधि का समय है। इस संधि के समय को आप आपातकालीन समय भी कह सकते हैं। कभी-कभी आपत्तिकाल भी आते हैं जैसे-भूकम्प आ जाय तो लोग भाग खड़े होंगे, कुछ जमीन के नीच दब जाएँगे, हाहाकार मच जाएगा, बिजली चली जाएगी, नल पानी देना बन्द कर देंगे, ऐसे समय को आपत्तिकाल कहेंगे। दुर्भिक्षों को भी आपातकाल कहेंगे-जब खाना नहीं मिलता, अनाज पैदा होना बन्द हो जाता है, कुएँ का पानी सूख जाता है, तो आदमी जान बचाने के लिए या तो भाग खड़े होते हैं या वहीं प्राण त्याग देते हैं। ऐसे ही कहीं अग्निकाण्ड हो जाय और किसी का छप्पर जलने लगे, उस आपत्तिकाल में आप अपना व्यक्तिगत काम बन्द कर दीजिए, अग्नि बुझाने के लिए दौड़िए। नहाना, कपड़े धोना, खाना खाना बन्द कीजिए, पहले पड़ौस में लगी आग बुझाने जाइए। आप दुकान जाने को थे और किसी बस का एक्सीडेंट हो गया, कितने आदमियों की टाँग टूटी, कितने ही घायल हो गये, कितने ही मर गये। आज आप दुकान मत जाइये क्योंकि पहले इन घायलों को पानी पिलाइये, इन्हें मरहमपट्टी के लिए अस्पताल पहुँचाने में मदद कीजिए। इस आपात स्थिति में आप इनकी सहायता कीजिए। क्योंकि असामान्य समय में आदमियों को असामान्य कार्यों में प्रवृत्त होना पड़ता है। महामारियाँ फैल जाती हैं, बाढ़ आ जाती है, कोई बड़ी दुर्घटनाएँ हो जाती हैं तो भावनाशील व्यक्ति अपना सामान्य-क्रम बदल देते हैं और दूसरों की सहायता करने के लिए दौड़ पड़ते हैं। इसको आपत्तिजन्य स्थिति कहेंगे।

आज के इस समय में हम सबको आपत्ति धर्म निवाहने के लिए तैयार रहना चाहिए। इस संधि के समय में एक ओर कौरवों की सेना खड़ी है और एक ओर पाण्डवों की। एक ओर असुरता एवं विनाश मुँहबाये खड़े हैं। सर्वनाश की चुनौतियाँ एक पार्टी में खड़ी हुई हैं तो दूसरी पार्टी में नवनिर्माण करने के लिए युगशिल्पी पूरी तैयारी के साथ कमर बाँधकर खड़े हुए हैं। ये कौरवों-पाण्डवों की लड़ाई-महाभारत का समय है। इस आपत्तिकाल में आपको विशेष धर्म और ध्यान अपनाना चाहिए। अर्जुन कोई धर्म और ध्यान करने का पेशा थोड़े ही करते थे। गीता में लिखा है कि जब भगवान ने अर्जुन से लड़ने को कहा तो वे आना-कानी करते रहे। बेकार में लड़ने से क्या फायदा? लेकिन वह तो आपत्तिकाल था अगर वहाँ लड़ाई नहीं लड़ी गयी होती तब, तब कर्ण, दुर्योधन, दुशासन और शिशुपाल मिलकर के न जाने कैसा हाहाकार मचा देते। अपनी ललक-लिप्सा से न जाने कितनों को तहस-नहस कर देते और सारे के सारे वातावरण को इस तरह का बना देते जिसमें आदमियों का जिन्दा रहना मुश्किल हो जाता। इसीलिए भगवान ने महाभारत की तैयारी की और अर्जुन से कहा कि इस समय सामान्य बातों को छोड़ दो।

अर्जुन बोले-"**श्रेयो भोक्तुं भैक्ष्यमपीह लोके।**" मैं तो भिक्षा माँग करके भी खा सकता हूँ, कुछ और काम करके भी पेट भर सकता हूँ, फिर मैं क्यों लड़ूँगा। भगवान ने कहा-"यह आपत्तिकाल है। इसके धर्म विशेष होते हैं।" उन्होंने आपत्ति धर्म निवाहने के लिए अर्जुन को तैयार किया और वह भगवान का कहना मानकर अपनी मर्जी थी कि नहीं थी, यह बात अलग है, लेकिन अर्जुन ने भगवान की मर्जी में अपनी मर्जी मिला दी। मर्जी मिलाने के बाद वे लड़ाई के मैदान में गये और गाण्डीव द्वारा तीर चलाने लगे और सारे के सारे विरोधियों को मार गिराया। वे अपने साम्राज्य के स्वामी हुए और भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति के भी अधिकारी बने। ये आपतधर्म बता रहा हूँ। पूजा, उपासना की थी अर्जुन ने, आप ही बताइये? कोई अनुष्ठान, जप, तप, ध्यान, धारणा, समाधि, दैनिक पूजा भी नहीं की थी। बस भगवान की आज्ञा मानी थी। उन्होंने कहा कि इस समय सबसे बड़ी साधना महाभारत की है और अर्जुन उसी में लग गये। तब भगवान की बतायी साधना मनुष्यों द्वारा की गयी साधना की अपेक्षा लाखों गुनी श्रेयस्कर सिद्ध हुई। ऐसी ही दूसरों की भी बात है।

अच्छा बताइये, हनुमानजी ने कौन-सी साधना की? कोई अनुष्ठान, जप, तप किये होंगे या ध्यान-धारणा की थी? कुछ भी नहीं किया था, सुग्रीव के साथ एक

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

गुफा में छिपे बैठे थे। जब भगवान राम से मुलाकात हो गयी, मिलना-जुलना हुआ तो कहने लगे-मैं आपकी शरण में आ गया हूँ, मुझे आज्ञा बताइये। आज्ञा बता दी कि सीताजी को खोज कर लाइये। कोई अनुष्ठान, जप, तप अथवा रामायण, गीता, नारायण मंत्र का पाठ नहीं बताया। भगवान राम ने कहा-इस समय आपके साथी आपत्ति में हैं, सीताजी आपत्ति में फँसी हुई हैं और सारे देश के ऊपर अनीति, अनाचार, अधर्म के बादल छाये हैं, उन्हें दूर करना पड़ेगा। आज की यही साधना है। हनुमानजी ने स्वीकार कर लिया। कोई आग्रह नहीं किया कि कोई जप, तप, ध्यान बताइये। यह आग्रह तो उन लोगों का रहता है जो कुछ पुरुषार्थ नहीं कर सकते, जिन्हें मेहनत से कोई लगाव नहीं है, सेवा के प्रति जिनके अन्तःकरण में कोई उत्साह, कोई उमंग नहीं होती। ऐसे आदमी खाली बैठे रहें तो कुछ बताना ही पड़ेगा-कि लकड़ी की माला ही घुमाते रहें। अरे बाबा, खाली पड़े रहने की अपेक्षा माला घुमाना और राम का नाम लेना क्या बुरा है लेकिन उपासना का मतलब राम नाम लेना, माला घुमाना ही नहीं होता। हर जगह माला काम नहीं आती। माला भी कभी काम आती है, लेकिन माला हो काम आती है, ऐसी बात नहीं।

उपासना की दृष्टि से सामयिक कर्तव्यों, सामयिक जिम्मेदारियों का परिपालन करना बहुत जरूरी है। हनुमान जी ने यही किया और जिस दिन से भगवान की शरण में आये, उनकी आज्ञानुसार जीवनभर साधना करते रहे। अपनी मर्जी की साधना की? नहीं, अपनी मर्जी की साधना नहीं की। भगवान ने हुकुम दिया-सीता को ढूँढ़ लाइये और वे सीताजी को ढूँढ़ लाये, अँगूठी दे आये और माँ की निशानी लाकर दी और कहा देखिये हम पता लगा लाये। बस काम नम्बर एक पूरा हो गया। दूसरा अध्याय साधना का शुरू-अब चलें राक्षसों से लड़ने के लिए, युद्ध की तैयारी करें-साधन जुटाएँ। हनुमानजी अपने मोहल्ले में गये और सारे रीछ-बन्दरों से बोले चलिए, हम तो भगवान के काम के लिए जा ही रहे हैं, आप सब भी चलिए। हनुमानजी ने ऐसा उत्साह भरा कि सब के सब उनके साथ चल दिये, उनमें नल-नील जैसे अच्छे-खासे इन्जीनियर भी थे, जो बड़ी इमारत भी बना सकते थे। ये सब अपने आप आये थे? कोई अपने आप क्यों आने लगा, हनुमानजी लाये थे सबको। हनुमान जी ने लड़ाई के सारे साधन जुटाये और राक्षसों को तवाह करने के लिए पेड़ तक उखाड़े। जब लक्ष्मणजी मूर्छित हो गये और सुषेण वैद्य ने बूटी बतायी तो पूरा पहाड़ ही उखाड़ ले आये। जप-जप-जप, एक ही बात सीखी है आपने, दूसरी बात नहीं सीखी। सबसे सुगम वाला काम बैठे-बैठे लकड़ी हिलाने, सिर हिलाने, जीभ की नोक हिलाने का। इतनी सस्ती उपासना समझ ली है आपने? उपासना इतनी सस्ती होती है कहीं? जिसमें कष्ट न उठाना पड़ता हो, पुरुषार्थ न करना पड़ता हो, इतनी सस्ती साधना भी कहीं होती है क्या? इतनी कीमती चीजें आप इतनी सस्ती कीमत पर खरीदने की कोशिश करेंगे? ऐसा मत कीजिए। वास्तविकता के नजदीक आइये।

एक सूफी कथा है-किसी प्रेमी ने अपनी प्रेयसी के द्वार को खटखटाया। भीतर से पूछा गया-कौन है? प्रेमी ने उत्तर दिया-मैं हूँ तुम्हारा प्रेमी। प्रत्युत्तर मिला-इस घर में दो का स्थान नहीं है। कुछ दिनों बाद प्रेमी पुनः उसी द्वार पर लौटा। इस बार "कौन है" के उत्तर में उसका जवाब था-"तू ही है।" और वे बन्द द्वार उसके लिये खुल गये। ईश्वर और जीव के सम्बन्ध ऐसे ही होते हैं।

भगवान को प्राप्त करना चाहते हों तो भगवान का कहना भी मानिये! शरणागति इसी का नाम है, समर्पण इसी का नाम है। समर्पण और शरणागति यह कि हम भगवान का कहना मानें, न कि भगवान को अपने कहने पर मजबूर करें कि भगवान आप हमारी मनोकामना पूरी कीजिए। आप अपनी मर्जी पर भगवान को चलायेंगे? आपकी मर्जी पर चलेंगे वे? आप कौन हैं? अपना नाम तो बताइये? आप हैं कौन जो आपको यह जुर्रत, यह हिम्मत होती है कि आप भगवान के ऊपर यह हुकुम चलायें कि हमारी मनोकामना अभी पूरी कर दीजिए? शरीर और मन आपको मिल गया, कुटुम्ब आपको मिल गया, कला आपको मिल गयी, साधन आपको मिल गये, फिर भी आपकी यह जुर्रत और यह हिमाकत कि आप भगवान से कहें कि हमारी दैनिक जरूरतें पूरी कीजिए। इन चीजों की पूर्ति आप स्वयं आसानी से कर सकते हैं, अन्यथा एक दिन आप कहेंगे भगवानजी हमारी गन्दगी साफ कीजिए, हमारे कपड़े धोइये। मनोकामना में ये बात भी शामिल हैं। आप क्यों पुरुषार्थ करने लगे, क्यों योग्यता सम्पादन करने लगे? आप तो अपने सब काम भगवान से करा लीजिए। खाना चबाने के लिए भी भगवान जी से कहिए कि आप खाना चबाकर हमारे मुँह में डाल दिया कीजिए। मित्रो, आपको ये बातें शोभा नहीं देतीं। आपको अपना पुरुषार्थ जाग्रत करना पड़ेगा और भगवान का कहना मानना पड़ेगा।

ग्वाल-वालों की बात सुनी है न आपने? ग्वाल-वाल भगवान के परमप्रिय मित्र थे, उनके सहयोगी थे, सहचर थे, सखा थे, लेकिन ग्वाल-वालों को उन्होंने रामायण पाठ कराने की बजाय, अखण्ड कीर्तन कराने की बजाय उनसे कहा-आओ दोस्तो! गोवर्धन पहाड़ को उठायेंगे। ग्वाल-वालों ने उनका ही कहना माना। किसी ने भी यह नहीं कहा कि साहब रामायण का अखण्ड पाठ कराइये, हमको तो सत्संग कराइये, हमको भण्डारा कराइये। भगवान तो भगवान हैं, यदि उनके प्रति समर्पण है तो उनकी आज्ञा-उनकी आज्ञा है। हुकुम दिया कि पहाड़ उठाना है तो उन्होंने पहाड़ को टेका लगाना और पत्थरों को जमा करना ऐसा ही कृत्य समझा- मानो कोई बड़ा भारी पुण्य कर रहे हों, दान कर रहे हों।

पहले हम इस बात का फैसला कर सकें कि हमको क्या करना चाहिए? कुछ करने के लिए किसी महती शक्ति के साथ में अपना सम्बन्ध जोड़िए और कठपुतली के तरीके से उसका कहना मानकर उसके पीछे-पीछे चलिए? यही सही और मुनासिब तरीका है, लाभदायक भी यही है। इसलिए इस संधि के समय में हम सबको बड़ा महत्वपूर्ण काम करना है। आज जन-जन के मन को परिष्कृत करने की आवश्यकता है। आदमी का मन, आदमी का चिन्तन ऐसा भ्रष्ट हो गया है

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

कि अपने आचरण को दृष्ट बनाने में उसे कोई हया-शर्म नहीं आती। विचार आदमी के हैं ही नहीं। विचार सब अस्त-व्यस्त हो गये हैं। आज की सबसे बड़ी आवश्यकता विचार-क्रान्ति की है, जन-मानस के परिष्कार की है, लोकमंगल के लिए जन-जागरण की है। आप यदि इस काम को करते हैं तो सही माने में युग संधि की साधना करते हैं।

आप जिस परिवार के मेम्बर हैं, यह परिवार बड़ी मुसीबत से, बड़ी मुश्किल से और बड़ी देखभाल से बनाया गया है। इसमें हमने ढूँढ़-ढूँढ़ करके ऋषि-महर्षियों को, कितनी डुबकी लगाकर के एक-एक मोती कहाँ-कहाँ से इकट्ठा किया है। आपको किसने इकट्ठा किया और किसलिए साधना में लगाया है? इसलिए, ताकि आप भगवान के ऊपर अहसान करने में समर्थ हो सकें कि आपका अहसान भगवान कभी नहीं भूलें। भगवान अहसान भूलते नहीं, हनुमान को उन्होंने अपने राज कुटुम्ब का सदस्य बना लिया। आपने राम पंचायतन के चित्र देखे हैं न? उसमें पाँच तो वे चार भाई और सीताजी हैं, पाँच नाम से पंचायतन हो जाता है, लेकिन आपने हर चित्र में हनुमानजी को शामिल देखा होगा। छठवें हनुमानजी क्यों थे, क्या वजह थी? सिर्फ एक ही वजह थी कि 'राम काज कीन्हें बिना मोहि कहां विश्राम।' उन्होंने ये नहीं सोचा कि अपनी इच्छा से, अपने मन से बैकुण्ठ को जाएँगे। अपनी मुक्ति कराएँगे, अपना फायदा कराएँगे, अपना चमत्कार-अपनी सिद्धि देखेंगे। क्योंकि जब अपनापन मिटा दिया तो अपनी मर्जी कहाँ रही? भगवान की जो कुछ मर्जी थी, वही उन्होंने पूरी की और रामचन्द्रजी के कुटुम्बियों में शामिल हो गये। आप भी अपनी मर्जी छोड़कर ऐसा ही कीजिए।

कभी इस बाबाजी के पास, कभी उस पंडाजी के पास, कभी गुरुजी के पास कहीं झक मत मारिये। आपके भीतर बैठा हुआ, अन्तःकरण में बैठा हुआ भगवान मार्गदर्शन कर सकता है और वह ऐसा विलक्षण मार्गदर्शन होगा जैसा कि अर्जुन के घोड़ों को चलाने के लिए कृष्ण भगवान ने किया था। गाण्डीव चला रहे थे अर्जुन, लेकिन घोड़ों को चलाने का, सही रास्ता बताने का, मोर्चे की जानकारी कराने का काम भगवान कृष्ण का था। आप भी ऐसा ही कर सकते हैं। ज्यादा बहस में पड़ने की बजाय कि हमको ये करना है, यह स्कीम, वह स्कीम। ये नौ सौ निन्यानवे की स्कीम मत बनाइये। आप एक ही स्कीम बनाइये, क्योंकि किसी महती सत्ता की छाया में बैठेंगे तभी तो कहना मानेंगे। बच्चे बड़ों का कहना मानें, इसी में लाभ है। बन्दर का एक बच्चा उछल-कूद कर रहा था। बन्दर मना कर रहा था कि ये बड़ी-बड़ी चीजें हैं, इनसे दूर रह, पर वह मानता ही नहीं। एक दिन दो लकड़ियों को चीरने के लिए मशीन के बीच में खाँचा लगा हुआ था। बन्दर के बच्चे ने उसे उखाड़ डाला। उखाड़ते ही उसका हाथ दब गया और चीं-चीं करता रहा। उसके घरवालों ने बड़ी मेहनत से हाथ निकाला। यदि बन्दर की बात मानी होती तो शायद हाथ घायल न होता।

आप भी इसी तरीके से अपनी मर्जी कहाँ तक करेंगे कि हमको ये साधना बताइये, हमको बीजमंत्र बताइये। मत पूछिये, हमने तो ऐसा नहीं पूछा है। अपने जीवन की साधनाओं के बारे में हमने कभी अपने बॉस से नहीं पूछा कि आप हमें ये बता दीजिए, इसका मंत्र बताइये, उसका तंत्र बताइये। हमने अपनी मर्जी खतम कर दी और उनसे कहा-हुकुम कीजिए। उन्होंने जो कुछ भी कहा हम बिना सोचे-समझे, आँखें मूँदकर उस रास्ते पर चलते रहे। हमें विश्वास था कि हमको रास्ता दिखाने वाली सत्ता हम से सही और समर्थ है। आज हम कहाँ से कहाँ पहुँच गये, आप देख रहे हैं न? आपके लिए भी यही रास्ता है। आपके सामने समय की माँग इस तरीके की है, जिसे आपको पूरा करना चाहिए।

रामचन्द्रजी ने जब जन्म लिया था तो उनके साथ में देवतागण भी आये थे। देवताओं ने भगवान से कहा कि मनुष्य तो बड़े चालाक होते हैं। उनमें त्याग,

---

दक्षिण भारत की यात्रा करते समय एक बार गाँधीजी, महादेव भाई और काका कालेलकर जी को एक साथ काम करने का अवसर पड़ा। एक दिन सभाओं और विचार-गोष्ठियों का कुछ ऐसा ताँता बँधा कि उन्हें दिनभर एक क्षण का भी विश्राम करने का अवसर नहीं मिला। लौटे भी काफी रात गये। थकावट के मारे उनके शरीर बुरी तरह शिथिल हो चुके थे। वहाँ से आते ही तीनों चारपाइयों पर पड़ गये और पड़ते ही सो गये।

चार बजे नींद टूटी। गाँधीजी का नियम था कि वह सायंकाल सोने के पूर्व और प्रातःकाल जगते ही प्रार्थना किया करते थे। उनके सभी साथी और अनुयायी भी इस नियम का पालन किया करते थे। प्रातःकालीन प्रार्थना के लिये एकत्रित हुए, काका कालेलकर से गाँधीजी ने बड़े दुःख भरे स्वर में पूछा-"शाम की प्रार्थना का क्या हुआ?" काका जी ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया-"बापू जी! मैं तो थकावट के मारे आते ही सो गया, प्रार्थना करना बिलकुल भूल गया।"

महादेव भाई ने भी डरते-डरते कहा-"बापू जी! थकावट के कारण मैं भी सो गया। मेरी बीच में नींद टूटी, तब मैंने चारपाई में बैठकर मन-ही-मन प्रार्थना कर ली, भगवान् से क्षमा माँगकर फिर सो गया।"

गाँधीजी का दुःख बहुत गहरा था। उन्होंने कहा-"मेरा मन तो आज बहुत ही अस्वस्थ है। मैं कल की प्रार्थना क्यों नहीं कर सका? क्या सोना इतना आवश्यक था कि भगवान् का स्मरण तक न किया जाता?" इसके बाद प्रातःकालीन प्रार्थना सम्पन्न की गई। सब लोग प्रसन्न हो गये, पर उस दिन बापू का चेहरा उदास ही बना रहा। काका साहब ने उन्हें समझाते हुए-"बापूजी, आप ही तो कहते हैं कि भगवान् के नाम से उनका काम बड़ा है। आप उनका काम करते हुए सो गये, इसमें बुरा क्या हो गया?" "माँ की इस सिखावन को कि भगवान् का नाम लेना कभी न भूलना, मैं कैसे भूल गया, इसी बात का मुझे विशेष दुःख है। दूसरा दुःख इस बात का है कि आलस्य और प्रमाद, जिससे मेरी माँ ने मुझे सदैव दूर रहने की शिक्षा दी थी, में डूबकर मैं भगवान् का नाम और काम कहीं दोनों न भूल जाऊँ।"

उस दिन सभी उपस्थित लोगों ने एक शिक्षा ग्रहण की। संस्कारों की जीवन-साधना में महत्ता की व छोटी-सी बात समझकर कभी किसी की भी उपेक्षा न करने की।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परोपकार और सेवा का माद्दा कहाँ? मनुष्य तो केवल अपने स्वार्थ की बात सोचते रहते हैं। आप जो काम करने जा रहे हैं उसके लिए स्वार्थियों से थोड़े ही काम चलेगा, परमार्थियों के दल चाहिए। परमार्थियों के दल कहाँ से आएँगे? आजकल संसार में तो हैं भी नहीं, चलिए हम आपके साथ चलते हैं। बस, शंकरजी हनुमानजी के रूप में और अन्य देवता रीछ-वानरों के रूप में आ गये। इस तरह कौन-कौन, किस-किस रूप में देवताओं ने अपनी भूमिका निभायी। आप को भी प्रज्ञा अवतार के साथ में उन्हीं देवताओं के तरीके से भगवान के काम में हाथ बँटाना, हिस्सा बँटाना और भगवान के स्नेह में, प्रसन्नता में, उनकी हस्तियों में हिस्सा बँटाना है। ऐसा करने के लिए जरूरी है कि आप उसकी कीमत चुकायें और भगवान की मर्जी पर इस समय चलना स्वीकार कर लें।

समाज के नये निर्माण के लिए समाज को नये ढाँचे में ढाला जाना है। पुराना ढाँचा इतना जीर्ण-शीर्ण हो गया है कि अब उसे गलाने और नया ढालने के अलावा कोई रास्ता नहीं बचा है। इस गलाई-ढलाई में आप हिस्सा बँटाइये। आप अपने समय, अपनी शक्ति, अपने मन, अपनी भावना, अपने विचारों को लेकर आइये और इस काम में जुट जाइये। आज के इस युग का भगवान जिसको हम प्रज्ञावतार कहते हैं। उस प्रज्ञावतार की मर्जी क्या है ये आँख खोलकर देखिये और कान खोलकर सुनिये। कुछ ऐसी जानकारियाँ आपको प्रज्ञा अभियान के अन्तर्गत बार-बार बतायी जा रही हैं जो भगवान की प्रेरणा, भगवान की दिशाधारा है। देवताओं ने भगवान कृष्ण के साथ भी जन्म लिया था। कृष्ण भगवान ने सोचा कि धरती पर उनका सहयोग कौन करेगा, अकेले कैसे क्या कर पायेंगे? देवताओं ने कहा-प्रभु, हमें भी चलने की आज्ञा दीजिए, हम भी आपके साथ-साथ चलेंगे और आपके काम में हाथ बँटायेंगे। भगवान ने हाँ कर दी, बस फिर सारे देवताओं ने जन्म लेकर उनका सहयोग किया।

पाण्डव कौन थे, आपको मालूम है, कथा पढ़ी है? शायद नहीं पढ़ी है। पाण्डव पाँच देवताओं के बेटे थे। कर्ण भी देवता का बेटा था। कुन्ती के गर्भ से देवता सिर्फ इसलिए पैदा हुए थे कि भगवान श्रीकृष्ण के काम आयें। धर्मराज ने क्या किया? अर्जुन ने कौन-सा बड़ा काम किया? भीम ने किसका क्या किया? नकुल-सहदेव किस काम में लगे रहे? इन सबने मिल-जुलकर सिर्फ एक काम किया कि भगवान की आज्ञा मानी, भगवान के काम आये। ये कैसे सम्भव हुआ? क्योंकि वे देवता थे। देवताओं की भावनाएँ इसी तरह की होती हैं! स्वार्थियों, चालाकों, मोहग्रस्तों की भावनाओं को पाप की कीचड़ में डूबी हुई भावनाएँ कह सकते हैं। उनको ज्यादा पैसा, ज्यादा इज्जत मिलनी चाहिए। उनकी औलाद साधन सम्पन्न होनी चाहिए। बस, इससे आगे कुछ है ही नहीं। देवताओं की भावनाएँ बड़ी होती हैं। वे समझते हैं कि हमको परोपकार करना चाहिए। भगवान की आवश्यकताओं को समझकर योगदान करना चाहिए। पाण्डवों ने सारी जिन्दगी यही किया। आप भी ठीक उसी तरह के हैं। आप अपने आप को देवता मानें तो कोई हर्ज नहीं है।

आज प्रज्ञावतार का युग है। भगवान की नयी शक्तियों ने जन्म लिया है। ज्ञान की गंगा भी बहा दी है। इस समय जिन शक्तियों का जन्म हुआ है वे बराबर ये कोशिश कर रही हैं कि लोग अपने ख्यालात बदल दें और नये विचारों की स्थापना हो। प्रज्ञा अभियान इसी का नाम है? यह योजना भगवान की है और भगवान वास्तव में इसका संचालनकर्त्ता है। तो फिर अवतार से इसका क्या मतलब है? हवाई जहाज पेट्रोल से उड़ता है, ठीक है पायलट उड़ाता थोड़े ही है, वह तो मशीन घुमा देता है। ठीक इसी तरह हम हैं और दूसरे लोग हैं। ये तो अपनी मशीन घुमा देते हैं पर ताकत कहाँ से आती है? वह ताकत भगवान की है, महाकाल की है। हवाई जहाज तो करोड़ों रुपये का आता है, लेकिन करोड़ों रुपये के इस हवाई जहाज को पैदा करने की शक्ति किसी और में है। आप इसी तरह की शक्ति पैदा कीजिए। आप इस समय अपनी सारी इच्छाओं और आकांक्षाओं को सिर्फ इस काम में लगा दीजिए कि हमें समय की माँग पूरी करनी है, युगस्रष्टा की भूमिका निभानी है। युगस्रष्टा की भूमिका निभाने के लिए आप आगे-आगे बढ़ेंगे तो आपको पूरा-पूरा सहयोग मिलेगा। आप जाग्रत देवदूतों की रीति-नीति अपनाएँ और आगे बढ़ें।

देवदूतों ने इन्तजार नहीं किया और न ही यह देखा कि दूसरे करेंगे तो हम करेंगे। हिमालय के ऊँचे शिखर पर सबसे पहले जो धूप चमकती है उसकी आभा निराली होती है। उसका दर्शन करके लोग अपने को धन्य समझते हैं। आप भी अपनी धूप चमकाइये, सबसे पहले! झंडा आगे-आगे चलता है तो दूर से दिखायी पड़ता है। आप आगे-आगे चलिए और दूसरों को रास्ता बताइये। लड़ाई में बैण्ड-बाजे, बिगुल बाजे आगे-आगे चलते हैं। आप भी आगे-आगे चलिए और बिगुल बजाइये ताकि सारी सेना में हिम्मत पैदा हो सके। आप जिस युग में पैदा हुए हैं वह संक्रांति काल है। इस समय युग प्रहरी की भूमिका निभाने वालों की पीढ़ियाँ सदैव याद रखेंगी और श्रद्धानत हो उन्हें नमन करेंगी। आप सब देवात्मा हैं, युग प्रहरी हैं। युग आत्माओं को, युग प्रहरियों को यह देखना पड़ेगा कि युग की जरूरतें क्या हैं। और आप की इच्छा क्या है? अरे बाबा, हम कहते हैं कि अपनी इच्छा को एक कोने में रखिए। भगवान की इच्छा क्या है। समय की माँग क्या है? प्रज्ञावतार की माँग क्या है। आप कान खोलकर सुनिये उसे और सुनने के बाद पूरी हिम्मत के साथ, पूरी वफादारी और जिम्मेदारी के साथ उसे निभाने में जुट जाइये। जिस तरह भगवान राम और भगवान कृष्ण की आवाज सुनने और उनके रामराज्य तथा महाभारत की स्थापना के उद्देश्य को पूरा करने में सहयोग देने वाले रीछ-वानर एवं ग्वाल-बाल धन्य हो गये। उसी तरह बुद्ध के धर्मचक्र प्रवर्तन में सहयोगी चीवरधारी भिक्षु एवं गाँधी के असहयोग आन्दोलन में भाग लेने वालों की लोग इसी श्रेणी में गणना करते और उनके प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हैं। महाकाल के युग प्रत्यावर्तन प्रक्रिया में भाग लेने वालों को हमारा यह आश्वासन है कि वे भी मनुष्य में देवत्व के उदय एवं धरती पर स्वर्ग के अवतरण के लक्ष्य को पूरा करने में सफल होंगे और धन्य बनेंगे । आने वाली पीढ़ियाँ उनसे इस कृत्य की न केवल सराहना करेंगी, वरन् उनसे प्रेरणा प्राप्त कर अपने जीवन का सही लक्ष्य निर्धारित करेंगी। आज की बात समाप्त।

ॐशान्ति।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी–

खाई खोदी है तो पाटिये ना

(कल्पकाल के सत्रों में अप्रैल १९८२ में शांतिकुंज परिसर में उद्बोधन)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ–

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्

देवियो! भाइयो!!

उन्नति के मार्ग पर सबसे बड़ी रुकावट वह है, जिसके कारण से हमारे पैर रुक जाते हैं, प्रायश्चित की प्रक्रिया इसीलिए है, कि हमने भूतकाल में जो गलतियाँ की हैं, उनकी रोकथाम कर सकें। इस संसार का यह नियम है कि जब गलतियाँ होती हैं, भूलें होती हैं, उसका दण्ड तो मिलता ही मिलता है। हमारे लिए सबसे बड़ा व्यवधान यही है कि पिछली गलतियाँ, वह रास्ता रोककर खड़ी हो जाती हैं और हमको उन्नति नहीं करने देतीं। अगर हम अपने ध्यान, जप और साधना में समर्थ हो जाएँ तब ? तब फिर उन गलतियों का दण्ड कैसे मिलेगा ? पापों का प्रायश्चित कैसे होगा ? उज्ज्वल भविष्य तो सुख और शान्ति का हो जाये फिर पापों का क्या होगा ? पाप इतनी छोटी बात नहीं है कि आप गंगा नहा करके या उसका प्रायश्चित करके, प्रार्थना करके खत्म कर सकें। वह आपके जीवन की कोई महत्त्वहीन घटना नहीं है। बुरे कामों का भी फल उसी तरह निश्चित है जैसे अच्छे कामों का। अच्छे फलों की ही फिर क्यों आशा करते हैं ? जब आप अच्छे फलों की आशा करते हैं कि हमने यह अच्छा किया है, विद्या पढ़ी है तो हमको उत्तीर्ण होना चाहिए, हमने मेहनत की है तो हमको इनाम मिलना चाहिए, हमने ब्याह-शादी की है, तो हमारी घर-गृहस्थी चलनी चाहिए। जब आप श्रेष्ठ कार्यों के बारे में यह विश्वास करते हैं कि हमको अपने कर्मों का अच्छा फल मिलना ही चाहिए, फिर आप एक और बात क्यों भूल जाते हैं कि हमने जो बुरे कर्म किए हैं या भूलें की हैं, उनका दण्ड भी मिलना चाहिए। उनके बारे में फिर क्यों उपेक्षा करते हैं ? इसकी उपेक्षा कीजिए न कि हम खेती करेंगे नहीं, पैदा हुआ तो क्या हुआ, हम विद्या पढ़ेंगे नहीं, पढ़ना आया तो क्या हुआ। आप यह क्या सोचने हैं कि हमारे अच्छे कर्मों का फल तो हमको मिलना चाहिए और बुरे कर्मों के बारे में इतने ज्यादा लापरवाह हैं कि आप यह ख्याल कर लें कि हम राम-नाम ले लेंगे, पंचामृत पी लेंगे, गंगाजी में डुबकी मार लेंगे, फलाना कर लेंगे तो ऐसे दिल्लगी, मजाक जैसे छोटे-छोटे कारणों से आप छुटकारा पा जाएँगे ? ऐसा कैसे हो सकता है ? यह मुमकिन नहीं है। जहर खाया है तो आपको मरना पड़ेगा अथवा जहर को सारी नसों में से निकालना पड़ेगा। नहीं साहब जहर खा लिया है, तो क्या हुआ, प्रार्थना कर लेंगे। फाँसी लगा ली है तो क्या हुआ, प्रार्थना कर लेंगे रेल की पटरी पर बैठ करके सिर कटा लिया है, तो क्या हुआ प्रार्थना कर लेंगे। नहीं भाईसाहब, ऐसी कल्पना मत कीजिए बच्चों जैसी। आप जरा समझदारों की तरह बात कीजिए। पाप भी आपके जीवन की एक इकाई है। आपने गलतियाँ की हैं और अपने शरीर को कमजोर बना डाला है। आप पढ़ने कर्म से कैसे बचेंगे ? पढ़ने के समय में और पढ़ने के दिनों में लापरवाही बरती आपने और पढ़ने से इन्कार कर दिया। आप बिना पढ़े हैं, कर्म के दंड से बचिए न जरा। नहीं साहब, हम तो प्रार्थना करेंगे, भगवान की पूजा करेंगे और विद्वान हो जाएँगे। आपने विद्वान बनने के लिए जो करना चाहिए था, वह किया था क्या ? नहीं किया था फिर क्या मतलब है ? नहीं, हम तो पूजा से बन जाएँगे। नहीं भाईसाहब, ऐसा नहीं हो सकता। आप वास्तविकता को समझिए तो सही। यहाँ आकर के भी वास्तविकता को नहीं समझेंगे, आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रवेश करने के बाद भी वास्तविकता और सच्चाई अगर आपकी समझ में न आ सकी, तो इसमें प्रवेश करने का क्या फायदा हुआ ? आप अज्ञान में ही फँसे रहे, भ्रम में ही फँसे रहे और आप अज्ञान और भ्रमों को ही छाती से लगाए रहे, तो क्या बात बनी ? आप यहाँ अध्यात्म को सच्चाई का प्रतीक मानिये और यह मानकर चलिए कि कर्मफल एक वास्तविकता है और उसमें जो भूतकाल के कर्म हैं, वह भी ज्यों-के-त्यों हैं।

पिताजी ने आपके लिए कर्ज लिया था और उससे आपने डिग्री हासिल की थी; लेकिन पिताजी के मरने के बाद में वह डिक्री आपको भुगतानी पड़ेगी चाहे आपका मकान बिके या आपकी जमीन बिके। साहब हम तो क्षमा माँगेंगे, पुरानी बात तो पुरानी हो गई। पुरानी बात कैसे हो गई ? बैंक से आप कर्जा लाए थे और बैंक का कर्जा बढ़ते-बढ़ते दुगुना हो गया है; अब आप चुकाएँगे कि नहीं चुकाएँगे। नहीं साहब, बैंक मैनेजर से प्रार्थना करेंगे, हाथ जोड़ेंगे, पैर छुयेंगे, पंचामृत पिलायेंगे और माफ करा लेंगे। आप यह बेकार की बात मत कीजिए, बेकार की बात करने से आपको भ्रमित, घृणित और अज्ञानियों की श्रेणी में गिना जाएगा। आप भ्रमग्रस्त मत रहिए और अज्ञानियों की श्रेणी में अपने आपको शामिल मत कराइए। भूतकाल के पापों से या भूतकाल की घटनाओं से आप प्रभावित हैं, तो भूतकाल को आप मजाक में नहीं उड़ा सकते। भूतकाल में जो आपने किया था, लड़ाई-झगड़े किए थे पर किसी आदमी का कत्ल कर दिया था, तो आप पर मुकदमा चलेगा और आप फाँसी के लिए तैयार रहिए। नहीं साहब, भूतकाल को छोड़िए, जो मार डाला, सो मार डाला और मर गया, सो मर गया। आप यों कहेंगे कैसे ? भूतकाल ऐसे मजाक की चीज है। मजाक की चीज नहीं है। आप ऐसा मत कीजिए। आप वास्तविकता से इतनी दूर रहेंगे, तो फिर वहाँ नहीं पहुँच सकेंगे, जहाँ आपको वास्तविकता के सहारे पहुँचना है। पापों का प्रायश्चित एक बहुत बड़ी बात है। हिन्दू धर्म में पाप का एकमात्र उपचार प्रायश्चित ही है। गंगा में स्नान के बारे में जो कहा गया है, उसका मतलब केवल यह है कि उससे हमारी पाप करने की प्रवृत्ति पर अंकुश लगे, हमारा पाप करने को जो मन चलता है, वह न चले, भविष्य में हम वह सब काम न करें, जिससे हमारे अहं को प्रेरणा मिल जाय, प्रोत्साहन मिल

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

जाय । ठीक वातावरण मिल जाय, यह मतलब है । यह मतलब नहीं है कि आप भूतकाल में जो कर चुके हैं, उसके दंडों से आपको राहत मिल जाएगी । ऐसा नहीं हो सकता । आपके ऊपर जो बुरे कर्मों का किया हुआ कर्ज है, उससे भी निपटिए और जिन बुरे कर्मों का वातावरण बना रखा है, जरा उसको भी ठीक कीजिए । आपने जो-जो गलतियाँ कर रखी हैं, जरा उनको भी फिर से एक बार सुधारिये । नहीं सुधार पायेंगे, तो भावी उन्नति का दरवाजा बंद है ।

मैं आपसे यह कह रहा था, कि आप आध्यात्मिक उन्नति के लिए पूजा करते हैं, तो आपको मुबारक । आप उपवास रखते हैं, बहुत अच्छी बात । आप यहाँ अनुष्ठान करते हैं, इससे अच्छी बात क्या हो सकती है । लेकिन इसके साथ-साथ यह मत भूलिये कि इनके जो मुनासिब लाभ हैं, वह आपको उस समय तक नहीं मिल सकेंगे, जब तक कि पिछले वाले दबाव आप पर पड़े हुए हैं । पिछले वाले पाप एक ऐसा वातावरण बनाते हैं, जिससे न आपकी पूजा सफल हो सकती है, न उपासना सफल हो सकती है, न आपका मन लग सकता है, न ध्यान लग सकता है । क्यों ? क्योंकि आपको दंड मिल रहे हैं । दंड नहीं मिलेंगे तो आपका ध्यान पुनः उस ओर जाएगा, फिर पाप का दंड कहाँ जाएगा ? इसीलिए समस्त आसुरी शक्तियाँ बराबर शुभ कर्मों में विघ्न उपस्थित करती रहती हैं । आसुरी शक्तियों से क्या मतलब है ? आसुरी शक्तियों से कोई मतलब नहीं है, आपका किसी से बैर नहीं है, फिर कोई आपको बेकार ही हैरान नहीं कर सकता । आसुरी शक्तियाँ बेकार ही हैरान क्यों करेंगी ? केवल आपके पाप कर्म ही वह आसुरी शक्तियाँ हैं, जो आपको हैरान कर देती हैं और आपको अच्छे कर्म में सफलता मिलने पर अवरोध खड़ा कर देती हैं उनसे आपको लड़ना ही पड़ेगा । भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए आप जप करते हैं, तप करते हैं, अनुष्ठान करते हैं-भगवान को प्राप्त करने के लिए, मनोकामनाएँ पूरी करने के लिए, तो फिर उज्ज्वल भविष्य में रुकावट डालने वाले जो पिछले वाले पाप कर्म हैं वहीं हैं, आसुरी शक्तियाँ उन्हीं का नाम है । उन आसुरी शक्तियों से निपटने की भी कोशिश कीजिए । आसुरी शक्तियों से निपटने की कोशिश नहीं करेंगे, तो वह बार-बार हमला करेंगी और हमला करके आपके अच्छे प्रयासों को मटियामेट करके रख देंगी । खेती आपने की है । जंगली जानवर जो हमला करते हैं, तो रात भर में सारी की सारी फसल खा-पी करके बराबर कर देते हैं । आप जानवरों को रोकेंगे नहीं ? कृपा करके रोकिए, नहीं तो फिर यह हो जाएगा कि आप चाहे जितना पानी लगाते रहिए, खाद लगाते रहिए, बीज बोते रहिए, फसल के नाम पर आपको कोई भी चीज हाथ लगने वाली नहीं है । तब ? मैं यही कह रहा था आपसे, कि आपको इस महत्त्वपूर्ण बात के ऊपर गौर करना चाहिए ।

आपको एक घटना सुनाता हूँ, एक बार स्वामी माधवाचार्य जी वृन्दावन रहते थे । उन्होंने तेरह साल तक गायत्री के अनुष्ठान किए; लेकिन उन अनुष्ठानों का कोई परिणाम उनको नहीं मिला । न उनको आत्मशांति मिली, न भगवान का साक्षात्कार हुआ, न कोई मनोकामना पूरी हुई, न कोई संतोष हुआ, कुछ नहीं हुआ । तब ? तब बड़े खिन्न हुए, दुःखी हुए कि हमको सफलता के कोई चिन्ह नजर नहीं आते हैं, तो स्तुति करने का क्या फायदा ? उन्होंने गायत्री अनुष्ठान तेरह वर्षों तक करने के बाद में वृन्दावन त्याग दिया और वृन्दावन त्यागने के बाद में बनारस चले गए । वह वहाँ काशी के मणिकर्णिका घाट पर बैठे हुए थे, आँखों में आँसू भरे हुए थे, बड़े दुःखी थे । एक साधक का रूप और दुःखी देखकर के एक महात्मा उधर से निकले, उन्होंने पूछा-भाई क्या बात है ? कैसे दुःखी हो रहा है ? कौन है तू ? तो वह बोले-हम साधना करने वाले एक व्यक्ति हैं और तेरह वर्ष तक गायत्री की उपासना करते रहे; लेकिन उसका कोई परिणाम नहीं निकला, हम बहुत खिन्न हैं और यह सोचते हैं कि उपासना से कोई लाभ नहीं है । खासतौर से गायत्री का कोई फल नहीं हो सकता, ऐसे हमारे विचार हैं । महात्माजी हँसने लगे । उन्होंने कहा-अच्छा एक काम कीजिए, गायत्री के बारे में तो हमारी कोई जानकारी नहीं है, हम तो तांत्रिक और कापालिक विद्याओं को जानते हैं, तू तांत्रिक और कापालिक विद्या को सीख ले, एक साल के अन्दर तुझे कुछ चमत्कार दीखने लगेंगे, अनुभव हो जाएगा तथा चमत्कार दीखने पर तेरा विश्वास बढ़ जाएगा । इसलिए चमत्कार दिखाने की दृष्टि से तुझे हम एक साल की तांत्रिक उपासना करने की सलाह देते हैं । स्वामी माधवाचार्य जी ने मान लिया । फिर उनको मणिकर्णिका घाट पर तंत्र सम्बन्धी आवश्यक ज्ञातव्य बताया और यह कहा-एक साल तक तुमको इसी मर्यादा में रहना पड़ेगा । इससे बाहर जाना मना है । इसी में नहाना है, इसी में टट्टी जाना है, इसी में खाना पकाना है, इसी में सोना, उठना, बैठना, किसी भी कीमत पर मरघट की सीमा से बाहर मत जाना । ऐसा ही उन्होंने किया । एक साल तक उनको जो भैरव का मंत्र बताया गया था, वह जपते रहे ।

भैरव कभी शेर के रूप में आते, कभी औरत के रूप में आते, कभी डराते, कभी पैसा लेकर के आ जाते, लेकिन माधवाचार्य जी से उन्होंने कह दिया था कि तू अपने काम में ही लगा रहना, दुनिया की बातों से प्रभावित नहीं होना चाहिए । अपनी साधना को ही सब कुछ मानकर चलना चाहिए । वैसा ही हुआ माधवाचार्य अपने गुरु के कहने के मुताबिक सब कुछ करते रहे । जो कोई आते रहे, सबको फटकारते रहे-आप लोग चले जाएँ, हम तो साधना कर रहे हैं । एक दिन करते-करते साल जब पूरा हो गया, तब भैरव जी ने दर्शन दिए, उन्होंने कहा-"जिसका तू जप कर रहा है, वह मैं ही हूँ । हमारा नाम भैरव है और हम आ गए । अब तू हमसे वरदान माँग ।" उन्होंने कहा कि "पहली माँग तो यह है कि आप मुझे यह यकीन करा दीजिए कि आप भैरव ही हैं । अब तक पूरी साल में यही खुराफात होती रही है कि कोई शेर बनकर आ गया, तो कोई भूत-पलीत बनकर आ गया, कोई भैंसा बनकर आ गया, तो कोई औरत बनकर आ गया । रोज यहाँ मेरे साथ दिल्लगीबाजी होती है । अगर आप भैरव हैं, तो फिर मैं आपकी सूरत देखना चाहता हूँ और यह विश्वास करना चाहता हूँ कि आज मेरे साथ दगाबाजी तो नहीं हो रही है । आप सामने आइए और प्रगट हो जाएँ, पहला वरदान यही दीजिए । फिर आपकी उपासना करूँगा, तब दूसरा वरदान माँगूँगा । आज तो बस इतना ही माँगना है ।" भैरव ने कहा-"हम आपको दर्शन

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

तो नहीं दे पायेंगे, आपकी पीठ पीछे खड़े होकर बात कर सकते हैं ।'' माधवाचार्य ने संदेह से पूछा कि ''दर्शन क्यों नहीं दे पायेंगे ?'' उन्होंने कहा–''तेरे चेहरे पर गायत्री का तेजस्व चमचमा रहा है और आँखों से निकल रहा है । इसलिए सामने आने की हिम्मत नहीं है । पीठ पीछे तू जो कुछ हमसे पूछना चाहता है वह पूछ। बात तो कर ही रहे हैं, यकीन भी कर ले कि हम भैरव हैं ।'' ''नहीं, महाराज जी मुझे यकीन नहीं, सामने क्यों नहीं आ सकते ? वजह क्या है ?'' ''तुझे बता तो दिया, तेरी आँखों में इतना गायत्री का तेज, चेहरे के सामने इतना ओजस और तेजस्व छाया हुआ है कि उसके सामने रह सकना हमारे लिए मुमकिन नहीं है ।'' उनको बहुत आश्चर्य हुआ कि हमारी आँखों में गायत्री का इतना जबरदस्त तेज है, जिसकी वजह से भैरव हमारे सामने तक नहीं आ सकते ? तो उन्होंने कहा–''महाराज फिर एक वरदान और माँगता हूँ मैं आपसे । आप दर्शन नहीं देना चाहते, तो मत दीजिए । आप एक इच्छा और पूरी कर दीजिए ।'' ''क्या ?'' ''आप यह जिज्ञासा पूरी कर दीजिए, कि मेरा गायत्री का तेरह वर्षों का जप और अनुष्ठान क्यों बेकार चला गया ?'' तो भैरव ने कहा–''तेरे इस सवाल का मतलब हम बता देंगे, चल आँखें बन्द कर ।'' आँखें बन्द कर लीं, फिर उन्होंने एक के बाद दूसरा, दूसरे के बाद तीसरा, तीसरे के बाद चौथा इस तरह तेरह जन्मों का दृश्य दिखाया । उसमें उन्होंने बुरे-बुरे कर्म किये थे । किसी में हत्या, किसी में चोरी, किसी में डाका, किसी में कुछ-किसी में कुछ । उनकी तेरह जन्मों में बड़ी घिनौनी जिन्दगी थी । उन्होंने कहा–''देख तेरह वर्ष का जो तेरा उपवास है, अनुष्ठान है, एक-एक वर्ष का उपवास-अनुष्ठान है, एक-एक जन्म के लिए पूरे हो गये । अब तू जा, चौदहवीं बार फिर अनुष्ठान कर । अबकी बार तेरा साक्षात्कार होगा । अबकी बार जो गायत्री का लाभ मिलना चाहिए था, मिल जाएगा ।'' माधवाचार्य प्रसन्न हो गए, फिर वह वापस चले आये, अपनी छोड़ी हुई साधना को फिर करने लगे । गायत्री उपासना का चौदहवाँ वर्ष जो उन्होंने किया, उसका परिणाम मिला, गायत्री का साक्षात्कार हुआ । गायत्री महाशक्ति ने पूछा क्या वरदान चाहते हो ? तो माधवाचार्य ने कहा–मैं कोई अजर-अमर ऐसा काम करके दिखा दूँ, जिससे दुनिया मुझे याद करती रहे । उन्होंने फिर 'माधवनिदान' नाम का प्रख्यात ग्रन्थ लिखा। इसे गायत्री ने माधवाचार्य के सिर पर अदृश्य रूप में प्रकट होकर लिखवाया ।

आप समझ गए ना, उनकी इच्छा कब कैसे पूरी हुई ? आप यह बात नोट कीजिए, आपको पिछले वाले पापों से निजात पाने के लिए कुछ न कुछ करना ही होगा । क्या करना चाहिए ? इस ओर ध्यान दीजिए । भविष्य के निर्माण की ओर ध्यान दें, यह तो बहुत अच्छी बात है, पर भूतकाल को भुला मत दीजिए । आप यह विचार कीजिए कि आपने कितनी गलतियाँ कीं, उनकी एक बार लिस्ट बना लीजिए । गलतियाँ दो तरह की होती हैं, एक गलतियाँ वह जो आपने दूसरों को नुकसान पहुँचाने के लिए की हैं और एक गलतियाँ वह, जो आपने अपने उन्नति में रुकावट डाल करके आलस्य और प्रमाद के रूप में की हैं । इन दोनों गलतियों को आप नोट कर लीजिए और एक फेहरिस्त बना लीजिए । आप नोट कर लेंगे और फेहरिस्त बना लेंगे तो, पता चलेगा कि कितना बड़ा जखीरा अपनी बुराइयों का, अपने ही सिर पर लाद के रखा है; इसको दूर करने की कोशिश कीजिए । क्या कोशिश करें ? यही तो एक विकल्प है । एक काम कीजिए कि अपना जी खोल करके अपने मन की गाँठ को हल्का कर लीजिए, जैसे कोई चीज खा जाते हैं, गन्दी चीज खा जाते हैं, तो उल्टी कराई जाती है । आप मुँह के रास्ते उल्टी कर दीजिए आपने जो कुछ भी पाप कर्म किए हैं, उन सब को एक बार जी खोल के कह दीजिए । किससे कहें ? दूसरों के सामने तो मैं आपको सलाह नहीं दे सकता कि आप हर एक के सामने कहते फिरें, क्योंकि दूसरे आदमी इसका गलत फायदा उठाते हैं, नाजायज फायदा उठाते हैं । हमको हजारों घटनाएँ याद हैं । स्त्रियों से उनके पतियों ने कसम खिलाकर उगलवा लिया कि उनसे क्या गलती हो गई, फिर जिन्दगीभर के लिए उनकी ऐसी फजीहत की कि वह बेचारी सोचती रहीं कि सच्चाई अगर हम न बताते, तो नफे में रहते । दुनिया बड़ी निकम्मी है, दुनिया बड़ी पाजी है । आप हर आदमी से अपनी कमजोरियाँ कहते फिरें, ऐसा तो मैं नहीं कहूँगा, लेकिन आपको मेरी एक सलाह है कि एक बार अपना जी खोलकर हमसे सब कुछ कह दीजिए । अपनी हर घटना को बता दीजिए, विस्तार से बता दीजिए, कहा दुराव न हो, कहीं छुपाव न हो । आप क्या करेंगे ? अरे भाईसाहब ! हमें क्या करना है । हर आदमी गलतियों से भरा पड़ा है । आपकी गलतियों में मुझे जायका लेने की, मजा लेने की, दिल्लगीबाजी करने की और बकवास करने की हमारे पास कहाँ फुरसत है ? हमारे यहाँ तो केवल दुःखी ही दुःखी आते हैं । धोबी की दुकान है । हर आदमी मैला कपड़ा ले करके आता है और हम धोते रहते हैं । हमको न किसी से व्यंग्य करने की फुरसत है, न मजाक करने की फुरसत है, न घृणा करने की फुरसत है । केवल धोबी के तरीके से लोगों के कपड़े धोने की फुरसत है, इसलिए आपको अपने मन के पापों को एक बार ठीक कर लेना चाहिए । हमें न बता पायें तो माताजी को बता दीजिए हमारे प्रतीकों के समक्ष लिखकर रखकर फाड़ दीजिए ।

यही ईसाई धर्म में भी होता है । ईसाई धर्म में जब आदमी मरने को होता है, तो जीवन की सारी की सारी बातें, बुरे से बुरी घटनाएँ पादरी के सामने कह देते हैं । पादरी प्रार्थना करता है–इन्होंने जी खोलकर कह दिया, पाप हल्का हुआ । भगवान तुम्हारे मन को शान्ति दे । आप भी जो यहाँ कल्प-साधना शिविर में आये हैं, तो अपने भीतर के संचित किए हुए पाप कर्मों को जी खोलकर कह दें । एक तो काम यह हुआ – दूसरा-आपने जो पाप कर्म किये थे, भविष्य में वह न करें, इसके लिए ऐसा दबाव डालिए, ताकि आपको यह ख्याल रहे कि हमने गलती की थी और अब गलती नहीं करेंगे । इसके लिए यदि मन पर दबाव नहीं डालेंगे, तो फिर आप ऐसे ही हो जाएँगे, जो पहले करते रहे हैं, फिर वैसा ही करने लगेंगे । जब आपको नफरत ही नहीं हुई, जब आपको कोई दुःख ही नहीं हुआ, जब कोई प्रायश्चित ही नहीं हुआ, तब फिर यह कैसे विश्वास करें कि भविष्य में आप ऐसा नहीं करेंगे । इसलिए भविष्य में न करने की दृष्टि से एक काम बहुत जरूरी है कि आप अपने आपको थोड़ा-सा कष्ट दें । चान्द्रायण व्रत इसी कष्ट का नाम है आपको भी यहाँ तपश्चर्या कराई जा रही है । तपश्चर्या का मतलब यही है कि आपको जो कष्ट मिले, उससे आपको याद बना रहे कि, हमने जिस पाप के प्रायश्चित के निमित्त किया था, वह पाप

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

आइन्दा नहीं करेंगे । आइन्दा नहीं करने के लिए कष्ट उठाना पड़ता है ? आइन्दा याद बनी रहे, इसलिए तपश्चर्या की जाती है पिछला जो हो गया है, गलती हो गई है, वह स्वतः दूर हो जाएगी,यह बहम निकाल दीजिए । इसका तो एक ही उपाय है कि आपने जो गड्ढा खोदा है, उसको पूरा करना चाहिए । गड्ढे को अगर पूरा नहीं करेंगे, तो गड्ढा बना रहेगा, आप खाई में गिरेंगे, आपकी टाँग टूट जाएगी और दूसरों की टाँग टूटेगी । इसका दूसरा कोई उपाय है ही नहीं सिवाय इसके कि आपने जो खाई खोदी है, उसको पूरा कीजिए, जो गड्ढा बना दिया है, उसमें मिट्टी डालिए, उसे समतल बना दीजिए । यही तो प्रायश्चित है और क्या प्रायश्चित हो सकता है ? इस प्रायश्चित को हमारे यहाँ इष्टापूर्ति कहते हैं, क्षतिपूर्ति भी कहते हैं । आपने जो नुकसान किया है चुकाइए । बैंक से रुपया लेकर के भाग गए हैं ? हाँ, साहब पन्द्रह हजार ले करके भाग गए थे और हमारा वारंट है । आप ऐसा कीजिए बैंक वालों से मिलिए और खबर भेजिए । पन्द्रह हजार में से एक हजार रुपया हमने खर्च कर डाला है और चौदह हजार बचा है । चौदह हजार रुपया उसके रिफंड कर दीजिए, बाकी एक हजार रुपये की किस्तें कर लीजिए । फिर आप पर जो मुकदमा चलने वाला है, दस साल की, आठ साल की जेल होने वाली है, शायद उससे आप बच जाएँगे । इसलिए क्या करना चाहिए कि आप उस खामियाजे को पूरा कीजिए । खामियाजे का, इष्टापूर्ति का मतलब क्षतिपूर्ति होता है, जो प्रायश्चित का बहुत महत्त्वपूर्ण अंग होता है । इसलिए कर्ज आपको चुकाना ही चाहिए । किसको चुकायें ? जिसका नुकसान किया था, उसी को तो आप चुकायेंगे । नहीं ऐसी बात नहीं । सारा समाज एक है, एक कड़ी में जुड़े हुए सारे समाज को यह मानकर चलिए कि किसी भी हिस्से पर नुकसान पहुँचाया है, तो कोई बात नहीं, दूसरे तरीके से पूरा कर देंगे ।

मान लीजिए आप किसी के कान पकड़ने की गुस्ताखी करें तब ? तब उसके पैर छू करके प्रणाम कर लीजिए । अरे साहब ! हमसे गलती हो गई, माफ कर दीजिए, पैर छू रहे हैं आपके । कान पकड़ा था तो कान छूना जरूरी नहीं है, आप पैर को छू सकते हैं । सारा समाज एक है । इसके किसी हिस्से को आपने नुकसान पहुँचाया है, तो आप उस नुकसान को पूरा करने के लिए किसी दूसरे व्यक्ति के साथ में भलाई का सलूक कर सकते हैं । जो आदमी मर गया, जिसका आपने बेईमानी के साथ पैसा हजम कर लिया था, अब कैसे उसका पैसा चुकायेंगे ? नहीं साहब, हम तो उसी को चुकायेंगे, लेकिन कैसे चुकायेंगे ? वह तो मर गया । किसी लड़की का चाल-चलन खराब किया था । अब आप बताइए उसके चाल-चलन को ठीक कैसे करेंगे ? नहीं साहब, हम तो क्षमा माँगेंगे । क्षमा माँगेंगे, लेकिन वह लड़की अब किसी की घरवाली हो गई है और जिसके बेटे भी बड़े हैं, सास-ससुर भी हैं, वहाँ उनसे कहते फिरें, साहब हमने इस लड़की का चाल-चलन खराब किया था और अब हम माफी माँगते हैं । इस तरह आप भी पिटेंगे और वह लड़की भी मरेगी । जरूरी नहीं कि जिस आदमी का आपने नुकसान किया है, उसी को लाभ दें । सारा समाज एक है, इसलिए यहाँ एक बात सही है कि सारे के सारे संसार के तालाब में एक बड़ा ढेला फेंका तो लहरें पैदा हो जाती हैं । बुराई पैदा करने का मतलब एक व्यक्ति को ही नुकसान पहुँचाना नहीं है, बल्कि सारे समाज को नुकसान पहुँचाना है । बुरी आदतें आपने एक को सिखा दीं, शराब पीना आपने एक को सिखा दिया, वह फिर दूसरे को सिखायेगा; दूसरा तीसरे को सिखायेगा, तीसरा चौथे को सिखायेगा यह तो एक लहर है । बुराइयों की भी एक लहर है और अच्छाइयों की भी एक लहर है । आपने बुराइयों की एक बार लहरें पैदा की थीं, अब उसका प्रायश्चित एक ही हो सकता है कि आप अच्छाइयों की लहरें पैदा करें और उस अच्छाइयों की लहर को पैदा करके वातावरण ऐसा बनायें, जिससे कि उसका खामियाजा पूरा हो सके । खाई पाटी जा सके, उस छेद को बन्द किया जा सके ।

आप इस प्रायश्चित की तैयारी कीजिए । आपने क्या-क्या नुकसान पहुँचाया, उसका मूल्यांकन कीजिए आपने कितने लोगों का समय खराब किया, दिल दुःखाया, कितने आदमियों को आर्थिक हानि पहुँचाई, कितने आदमियों के चाल-चलन खराब किये । इन सारी बातों को एक कागज पर नोट कर लीजिए और आप उसी के समान लाभ, ब्याज दे सकते हों तो क्या कहना ! आपने जो कर्जा लिया है, उसे ब्याज समेत चुकाइये । नुकसान पहुँचाना है, उसे ब्याज समेत चुकाइए और अगर ब्याज समेत नहीं चुका सकते, तो कम से कम उतना तो फायदा कीजिए, उतनी तो सेवाएँ कीजिए, उतना तो पुण्य कीजिए, जितना कि आपने पाप कमाया है । पाप और पुण्य को बराबर कर देना है । यदि ज्यादा हो सके तो, फिर ज्यादा कर दीजिए । फिर वह ब्याज चुकाने वाली ईमानदारी में शामिल हो जाएगा । ऐसा करने से आपके पुण्य का पलड़ा भारी हो जाएगा और अगले जन्म में काम आयेगा । फिलहाल इतना न कर सकें तो आपको किसी न किसी रूप से यहाँ इस शिविर में आ करके यह विचार करना चाहिए कि हमने पिछले दिनों जो गलतियाँ की हैं और आज तक जो करते रहे हैं, इसका इस समय तो हम प्रायश्चित करते हैं, दण्ड भुगतते हैं, थोड़ा-सा अपने-आपको कठिनाई में डालते हैं,

> ***बात स्वतंत्रता आंदोलन के दिनों की है, काँग्रेस ने देशवासियों से गाँधी दिवस मनाने और तिलक स्वराज्य फण्ड के लिए चन्दा जमा करने की अपील की । लाहौर में पुलिस का कड़ा प्रबंध था। अतः कोई व्यक्ति जब हिम्मत न कर सका तब वहाँ महिलाओं ने सभा की, भाषण दिये, खद्दर बेचा और चन्दा इकट्ठा किया । यह देखकर सारा लाहौर गाँधी दिवस मनाने उमड़ पड़ा ।***

कसम खाते हैं भविष्य में ऐसा न करने की । यह तो करना ही करना चाहिए, लेकिन मूल बात खामियाजा अगर चुका देंगे, तब आपके पाप दूर हो जाएँगे और आपको उपासना के मार्ग में, आत्मिक उन्नति के मार्ग में पग-पग पर जो रुकावटें आती हैं, उनके आने का सिलसिला बंद हो जाएगा । रुकावटें आप पार कर लेंगे, तो उन्नति आपकी कोई कठिन नहीं है, भगवान बनना आपके लिए कठिन नहीं है । शर्त एक ही है कि आपने अपने पिछले पाप और गुनाहों की जो खाई इकट्ठी कर ली है, पर्वत इकट्ठे कर लिए हैं, उसको पाटें । लेविल एक ही करें और फिर आप रास्ता चलते चले जाएँ । यह करना बहुत आवश्यक है । इस शिविर में आप यह बात विशेष रूप से ध्यान में रखें । बस हमारी बात समाप्त ।

ॐ शान्ति

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

(बसंत पर्व ८फरवरी, ८९ पर दिया गया वीडियो संदेश)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो, भाइयो! संसार के इतिहास में दो प्रमुख बड़ी क्रान्तियाँ हुई हैं। एक क्रान्ति आज से हजारों वर्ष पूर्व राम-रावण के समय हुई थी। उस समय चारों ओर रावण का आतंक फैला हुआ था। सर्वत्र त्राहि-त्राहि मची थी। इस आतंक से जनता को बचाने और उसे सांत्वना देने के लिए एक ऐसा समय आया, जिसने सारे वातावरण को बदल दिया। सोने की लंका, एक लाख पूत, सवा लाख नातियों वाले रावण के राक्षस साम्राज्य को राम ने समाप्त कर दिया। उस समय रामराज्य की स्थापना हुई। अपने समय की यह सबसे बड़ी क्रान्ति थी।

दूसरी एक और बड़ी क्रान्ति हुई। उसे महाभारत का काल कहते हैं। उस समय भी जरासंध, कंस, चाणूर से लेकर दुर्योधन तक का आतंक सारी दुनिया में फैला हुआ था। उस समय के आतंक को समाप्त करने की हिम्मत किसी साधारण व्यक्ति में नहीं थी। तब एक शक्ति, एक क्रान्ति आयी और उस समय के दुर्दान्त जरासंध, कंस एवं दुर्योधन जैसों का कहीं ठिकाना नहीं रहा। इसके बाद ही कृष्ण भगवान की भारत को महान भारत बनाने की कल्पना सार्थक हो सकी थी। इसके बाद चाणक्य के सान्निध्य में चन्द्रगुप्त ने भी कोशिश की थी। हम यह कह सकते हैं कि इसमें भी भगवान का योगदान था, अन्यथा महाभारत-निर्माण का काम साधारण नहीं था। एक महान शक्ति के सहयोग से ही यह कार्य हो सका। इन दोनों क्रान्तियों के बारे में आपने रामायण में और महाभारत में पढ़ा होगा। इस पर आजकल टी. वी.सीरियल भी बनाया गया है।

एक तीसरी क्रान्ति इस समय आयी है, जिस समय में हम और आप रह रहे हैं। रामायण [illegible] की क्रान्ति एवं महाभारत की क्रान्ति आपने देखी नहीं है, केवल टी. वी. पर देखी है, सुनी है, तथा किताबों में पढ़ी है। परन्तु यह क्रान्ति रामायण एवं महाभारत से भी ज्यादा बड़ी है। आप चाहें तो इसे अपनी आँखों से भी देख सकते हैं।

बीसवीं सदी इसी परिवर्तन को लेकर आयी है। दो हजार वर्षों से हमारे देश में विदेशी शासन था। धर्म का कोई स्थान ऐसा नहीं बचा था जहाँ मंदिरों, विद्या केन्द्रों को तोड़ा नहीं गया था। मुसलमान आये, अँग्रेज आये और भारत पर शासन किया। अँग्रेजों से हम कैसे आजाद हो गये, यह एक बहुत बड़ा प्रश्न है। जिसका साम्राज्य सात समुद्रों तक फैला था, उसका शासन कैसे समाप्त हो गया तथा भारत कैसे स्वतंत्र हो गया? यह प्रश्न सोचने-विचारने योग्य है। इसके पीछे भगवान की शक्ति काम करती रही है। चाहे यह काम गाँधी ने किया हो या किसी और ने किया हो, परन्तु यह काम शक्ति का था-व्यक्ति का नहीं। व्यक्ति की सामर्थ्य उतनी नहीं हो सकती है कि इतनी बड़ी ताकतवर सत्ता को उखाड़कर फेंक दे। इस सदी में यह एक बहुत बड़ी क्रान्ति आयी।

परतंत्रता की लम्बी अवधि में, विशेषकर इस सदी में भारतीय संस्कृति प्रायः मृतप्राय हो गयी थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद एक दूसरी क्रान्ति-बौद्धिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक क्रान्ति की हुई। भारतीय धर्म-अध्यात्म का नया स्वरूप बतलाया गया। संस्कृति की जानकारी लोगों को मिली; लोगों ने प्रयास किया तो भारतीय संस्कृति का सार, वेदों का ज्ञान घर-घर जा पहुँचा। आपने सुना होगा कि अगस्त्य नामक एक ऋषि थे, जो समुद्र के अत्याचार को देखकर समुद्र के सारे जल को पीने के लिए उद्यत हो गये थे। ठीक उसी प्रकार इस युग में भी एक साधनहीन व्यक्ति सारे वेदों का सार घर-घर पहुँचाने में समर्थ हो गया। आपको इन बातों पर विश्वास नहीं हो सकता कि इसने हमारी संस्था भी एक है, जिसको प्रारंभ हुए अभी केवल पचास वर्ष हुए हैं। इतने समय में क्या सभी काम पूरे हो गये? कदापि नहीं। अभी तो भारतीय संस्कृति की जानकारी केवल भारत के लोगों को मिली है, बाकी विदेश के लोगों को इसका ज्ञान भी नहीं है। इसे उन तक पहुँचाने का कार्य शेष है, उसे भी पूरा करना है। राम-राज्य की स्थापना -सतयुग की स्थापना करना बाकी है। कुछ कठिनाइयों का निवारण तो हुआ है, किन्तु अभी ढेरों काम बाकी है, जिसे पूरा करना है।

आप जिस समय यहाँ बैठे तथा इस महापुरश्चरण में भाग ले रहे हैं, उसे युग संधि का समय, युग परिवर्तन का समय कह सकते हैं। इस-युग परिवर्तन के समय महाकाल का संदेश हर बसंत पंचमी पर आता रहा है। इस प्रकार हमारे जीवन में ६५ बसंत पर्व क्रमशः आते चले गये और हर बसंत पंचमी पर एक काम का आदेश आता चला गया तथा वह पूरा होता चला गया। इस प्रकार ६५ बसंत पंचमी में महत्वपूर्ण कार्य होते चले गये। अगर इसे हम देखें तो यह देश, समाज और संस्कृति के लिये उतनी ही बड़ी क्रान्ति हुई जितनी कि रावण काल में हुई थी, जिसे भगवान राम ने सम्पन्न किया था। अभी जितना काम हो गया है, उससे भी कहीं ज्यादा काम अभी बाकी है। अभी युग संधि का बहुत बड़ा काम भगवान को, हमको और आपको मिलकर पूरा करना है। ये बारह वर्ष जो आज बसंत पंचमी से प्रारम्भ होते हैं, अगले दिनों सन् २००० तक चलते रहेंगे। इसमें बहुत बड़े-बड़े काम होंगे, बड़े-बड़े परिवर्तन होंगे जो लोगों को बाद में दिखाई पड़ेंगे। राम को तथा बन्दरों को भी १२-१४ वर्ष का वनवास हुआ था। आपको भी सन् २००० तक यानी १२ वर्ष का वनवास होगा।

वनवास क्या होता है? वनवास वह होता है जिसमें व्यक्ति को मात्र अपना लक्ष्य याद रहता है और बाकी चीजें गौण हो जाती हैं। रामराज्य की स्थापना के समय भी हर व्यक्ति जो उसमें सहयोगी था, अपनी घरेलू समस्या को भूल गया था। राम, सीता और लक्ष्मण सब कामों को भूल गये थे और उस एक

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

महत्वपूर्ण कार्य में लग गये थे। पाण्डव भी इसी प्रकार अपना व्यापार, काम-काज भूल गये थे और भगवान के कामों में लग गये थे। अत: हम सबको भी बारह वर्षों के लिए अपने अन्य तमाम कामों को छोड़कर भगवान के काम में लग जाना है। इसके बाद क्या होना है? इसके बाद आप देखेंगे कि जिसे हम इक्कीसवीं सदी कहते हैं, उसमें विशाल भारत, जो महाभारत काल में बना था, उससे भी ज्यादा विशाल एवं विख्यात भारत बनकर सामने आयेगा। जिस प्रकार रावण के मरने के पश्चात् रामराज्य की स्थापना हुई थी, उसी प्रकार की कल्पना आप इक्कीसवीं सदी में कर सकते हैं। अगले दिनों इतिहास में एक बहुत बड़ा समय आने वाला है, जिसकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। यह समय महत्वपूर्ण एवं अनोखा होगा। इस समय आपको क्या-क्या करना होगा? कौन-कौन से काम करने होंगे? इक्कीसवीं सदी में क्या-क्या चीजें समाप्त होने जा रही हैं तथा क्या-क्या होने वाला है? इस पर एक पुस्तक लिखी जा रही है, जिसे आप देखकर सब बातें समझ सकते हैं।

मित्रो, यहाँ पर हम इक्कीसवीं सदी की बात न करके युग संधि पर विशेष चर्चा करेंगे। यह १२ वर्ष बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। जिस प्रकार लक्ष्मणजी ने १४ वर्ष ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए राम एवं सीता को सहयोग देकर पूरा-पूरा क्रान्ति में सहयोग दिया था, आपको भी लक्ष्मण की तरह होना चाहिए। बड़े काम के लिए बड़ी तैयारी करनी पड़ती है। शादी-ब्याह के समय, मकान बनाने के समय, किसी शत्रु देश से लड़ाई हो जाने पर बड़ी तैयारी करनी पड़ती है। उसी प्रकार इस समय आपको बड़ा काम करना है और इसके लिए आपको बड़ी तैयारी करनी चाहिए। क्या तैयारी करनी चाहिए? आपको मालूम होना चाहिए कि बड़ी शक्तियाँ, दैवी शक्तियाँ इस कार्य हेतु अपने ढंग से काम करेंगी, परन्तु आपको भी गिलहरी, रीछ-बन्दर, ग्वाल-वालों की तरह अपने जिम्मे का काम करना होगा। आप छोटे हैं तो क्या हुआ? आपको अपने हिस्से का काम करना है।

क्या करना है? इस बार बारह वर्ष के लिए भगवान की यह प्रेरणा आई है कि इन बारह वर्षों में हम सबों को ज्यादा से ज्यादा समय लोकमंगल के लिए देना चाहिए। भगवान का कार्य करना चाहिए। अपना ज्यादा से ज्यादा श्रम, समय, अक्ल भगवान के कार्य में लगाना चाहिए, ताकि हम लोग अधिक से अधिक भगवान का कार्य कर सकें। अगर आप यह समय न भी लगायें तो भी यह कार्य महाकाल का है, जो पूरा होकर ही रहेगा, इसमें राई-रत्ती भर संदेह नहीं है। परन्तु एक बात यहाँ आपको बतला देना आवश्यक है कि आपको तो निमित्त मात्र बनना है। राम और कृष्ण में इतनी शक्ति थी कि वे सारा काम अकेले कर सकते थे, परन्तु उसमें उन्होंने छोटे-छोटे लोगों का सहयोग लिया था । इस कारण से वे लोग भी धन्य हो गये थे।

महाभारत में एक कथा आती है कि भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को बार-बार कह रहे थे कि देख दुर्योधन को तथा विरोधियों को हमने पहले ही मार दिया है। हम तो तुम्हें केवल श्रेय देना चाहते हैं। उठ और युद्ध कर। उस पर भी अर्जुन नहीं उठे तो भगवान श्रीकृष्ण ने उन्हें नपुंसक तक कह डाला और बोले- अगर मुझे श्रेय नहीं लेना तो दूसरे ले लेंगे, परन्तु तू मुझे यह बता कि युद्ध में श्रेय लेने में तुझे क्या आपत्ति है?

मित्रो, ऐसे अवसर कभी-कभी ही आते हैं जब लोगों को श्रेय मिलता है। पिछले दिनों आजादी की लड़ाई के बाद जो भी काँग्रेस के टिकट पर चुनाव में खड़े हो गये, वे चाहे गरीब आदमी रहे हों या पिछड़े आदमी रहे हों, वे जीत गये और एम.एल. ए., एम. पी. बन गये, मिनिस्टर बन गये। उस समय काँग्रेस की धाक थी। भगवान की प्रेरणा तथा लोगों की श्रद्धा उसके साथ थी। उस समय आजादी की लड़ाई में जो भी लोग सम्मिलित हुए, वे लाभ में रहे हैं। एक बात हम आपको यह बतलाना चाहते हैं कि यह जो क्रान्ति होने वाली है, बीसवीं सदी का समापन होने वाला है, इक्कीसवीं सदी आने वाली है, उसमें भी कुछ भी इसी प्रकार का होने वाला है। इस क्रान्ति में यदि आप सम्मिलित रहे तो हम आपको यकीन दिलाते हैं कि आप नफे में रहेंगे। आप श्रेय और यश के भागीदार होंगे। भगवान के काम में जो भी व्यक्ति हाथ बँटाता है, वह नफे में रहता है। हम भी तो नफे में रहे हैं, यह आप देख ही रहे हैं। हमने अपना शरीर भगवान के काम में लगाया तो हम कमजोर नहीं हुए। हमारा अस्सी वर्ष का शरीर अभी भी बारह घंटे काम करता रहता है। हमारा शरीर तथा मन अभी भी कमजोर नहीं हुआ है। अगर हमने अपना शरीर भगवान के काम में नहीं लगाया होता तो हम नहीं कह सकते कि हम जिन्दा रहते या नहीं। जब हम पीछे की ओर मुड़कर देखते हैं तो पाते हैं कि हजारों लोग जो हमारी उम्र के थे वे मर गये। किसी को कैंसर हो गया, किसी को मधुमेह आदि की बीमारी हो गयी, पर हम पूर्ण स्वस्थ हैं।

साथियो, हमने अपना शरीर भगवान के काम में लगाया और भगवान ने हमारे भीतर अपना शरीर लगा दिया। और क्या हुआ? हमने जो बोया वह हजार गुना हो गया। हमने बोया और काटा है। हमने अपना सारा का सारा जीवन भगवान के लिए लगा दिया है। जहाँ हमारा जन्म हुआ था, उस भूमि पर आज इन्टर कालेज बना है। एक गायत्री कुंड बना हुआ है, जिसमें बारहों महीने पानी भरा रहता है। आँवलखेड़ा छोड़ने के बाद भगवान की कृपा से न जाने क्या-क्या होता चला गया। हमने चौबीस सौ गायत्री शक्तिपीठें बनायी हैं। इसमें कितनी लागत लगी है, इसका आप अनुमान कर लेवें। यह कहाँ से आ गया? हमने जो बोया है, उसे काटा है । धन के साथ में हमने अपनी अक्ल, बुद्धि, चिन्तन, वाणी, लेखनी सभी कुछ केवल भगवान के लिए लगाया, तो आपने देखा न कि हमारी बुद्धि, लेखनी का कितना विकास हुआ। यह सारा भगवान को सौंपने के कारण हुआ है। हमने तो एक साधारण परिवार में जन्म लिया, परन्तु भगवान ने हमें न जाने कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया। आज संसार भर में लोग हमें एक महापुरुष के रूप में, एक महान व्यक्ति के रूप में जानते हैं। हमारे विचार अभी सात भाषाओं में प्रकाशित हो रहे हैं। पाँच लाख ग्राहक तथा पच्चीस लाख पाठक हमारी पत्रिका के हैं। अगर हम किसी स्कूल-कॉलेज में पढ़े होते तो किसी तरह से हमारी बुद्धि का विकास इतना संभव नहीं होता जो

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

आज हो रहा है। यह सारा भगवान के लिए, समर्पित होने का लाभ है तथा समय की माँग के अनुसार कार्य करने का है।

किन-किन ने समय को पहचाना और समय की माँग के अनुरूप अपने को समर्पित किया? हनुमानजी की मूर्तियाँ आपने देखी हैं। उन हनुमानजी ने समय को माँग को देखा तथा राम के कार्य के लिए समर्पित हो गये। जामवंत ने कहा- **''रामकाज लगि तव अवतारा। सुनतहिं भये पर्वताकारा।''** इसका नतीजा यह हुआ कि हनुमानजी जो एक बन्दर थे और उन्होंने जब संकल्प कर लिया कि **''रामकाज कीन्हें बिनु, मोहि कहाँ विश्राम''** तब वे भगवान हो गये। सारे जगहों में आज उन्हीं की पूजा होती है। उन्होंने सीता का पता लगाया, लंकादहन किया, समुद्र को लाँघ गये। पर्वत को उखाड़ लाये तथा संजीवनी बूटी लाकर लक्ष्मणजी के प्राण बचाये । यह सारे कठिन एवं असंभव कार्य वे कैसे कर पाये? यह सभी कार्य केवल भगवान को समर्पण करने के कारण ही वे कर पाये, अन्यथा किसी भी हालत में एड़ी-चोटी एक करने के बाद भी नहीं कर पाते। हमने अपनी सारी जिन्दगी में एक ही चीज ढूँढ़ी है कि जो व्यक्ति समय की माँग को समझता है तथा भगवान के कार्य में अपनी अक्ल, श्रम, समय, धन-सम्पदा लगा देता है, वह महान बन जाता है, उसकी शक्ति बढ़ जाती है। जो समय के महत्व को समझता है, वह धन्य हो जाता है। भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा, ''तू खड़ा हो जा।'' तो वह खड़ा हो गया और निहाल हो गया। हनुमान को भगवान राम ने कहा था कि तू खड़ा हो जा तो वे निहाल हो गये। हमारे गुरु ने हमसे कहा था कि तू खड़ा हो जा, तो उसने हमें निहाल कर दिया।

मित्रो, आज सन् १९८९ के बसंत पंचमी के दिन आपके लिए भी ऐसा ही संदेश आया है कि आप भी खड़े हो जाइये । आप लोग यह नहीं सोचें कि हमारा पेट कैसे भरेगा? हमारी औलाद का क्या होगा? हम आपको पूर्ण विश्वास दिलाते हैं कि आपका पेट भी भरेगा तथा आपकी औलाद भी ठीक रहेगी। हमारा पेट भी भर रहा है तथा हमारी लाखों औलादें भी बड़े आनन्द में हैं और फल-फूल रही हैं। अगर इस बसंत पंचमी के दिन आप अपनी संकीर्णता को निकाल दें तथा भगवान के कार्य के लिए आगे आवें तो आप, हम और भगवान- तीनों धन्य हो सकते हैं।

हमने आपको भगवान के छोटे-छोटे काम सौंपे हैं। आप छोटे-छोटे संगठन बनायें। आप पाँच आदमियों का प्रज्ञामंडल बनायें। सत्संग, हवन प्रारंभ कर दें, ताकि आपके माध्यम से हमारी विचारधारा, युग परिवर्तन की विचार-धारा जो अगले समय में होने वाला है, आपके माध्यम से घर-घर पहुँच जाये। आप अपनी भूमिका अदा करें। आप अपना समय, साधन, श्रम का एक अंश युग परिवर्तन के लिए निकालने का प्रयास करें। हम चाहते हैं कि आप प्रज्ञामंडल के माध्यम से युग परिवर्तन का संदेश पहुँचाने का प्रयास करें। हम चाहते हैं कि किसी जमाने में दुर्गाजी शक्ति संगठन के रूप में प्रकट हुई थी- आप भी उसी प्रकार की शक्ति अपने प्रज्ञामंडल द्वारा युग परिवर्तन के लिए इकट्ठा करें। आप भगवान के कार्य में सहयोग देने के लिए आगे आवें। इसके द्वारा ही यानी कि इस संगठन के द्वारा ही युग की समस्या का समाधान हो सकता है । अतः इस महान अवसर पर आपका आह्वान किया जा रहा है।

आज हमने ६५ बसंत पूरे कर लिये। हमारी अखण्ड ज्योति की साधना अनवरत रूप से चल रही है। हमने हर बसंत पर्व पर एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है तथा उसे पूरा किया है। इस बसंत पर भी हमने तीन कार्यों के लिए कदम बढ़ाया है। पहला प्रज्ञा-मंडल का गठन, दूसरा साप्ताहिक दीप यज्ञ-सत्संग की शृंखला प्रारम्भ करना। तीसरा है- बुराइयों का, दुष्प्रवृत्तियों का उन्मूलन करना। इसके द्वारा ही हम इक्कीसवीं सदी- उज्ज्वल भविष्य का निर्माण कर सकते हैं। युग संधि की वेला में बुराइयों का उन्मूलन अनिवार्य है, ताकि जो कुछ भी आपको खेत में बोना है, वह सुगमता के साथ फलता-फूलता रहे और इक्कीसवीं सदी में नई फसल आवे। इक्कीसवीं सदी नये फल-फूलों से लदी हुई आवे। इसके लिए अब केवल बारह वर्ष रह गये हैं। आप लोग अधिक से अधिक अपना समय, श्रम, अकल, धन जब तक आप जिन्दा रहें, लगाते रहें। हम चाहते हैं कि आप इन चीजों को भगवान के खेत में बोयें एवं लाभ प्राप्त करें। जैसे कि लाभ और चमत्कार हमारी जिन्दगी में आये, आपके जीवन में भी वैसे ही लाभ और चमत्कार आयें।

मित्रो, आपसे हमारा निवेदन है कि आप हमारे हाथ से हाथ, कन्धे से कन्धा, पैर-से-पैर मिलाकर चलें। जिस रास्ते पर हम चले हैं तथा लाभ प्राप्त किया है, उसे आप भी प्राप्त करें। यह इतना बड़ा व्यापार है जितना बड़ा कभी भी इस संसार में नहीं हुआ । यह बारह वर्ष समर्पण करने, त्याग करने, बीज बोने के लिए महत्वपूर्ण हैं। यदि आप यह कर सके, तो हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि भावी पीढ़ियाँ श्रद्धानत हो आपको याद करेंगी। इस बसंत पंचमी के पावन अवसर पर हमें आपसे जो कहना था, हमने आपको बतला दिया। अब आप पालन करते हैं तो निश्चित ही श्रेय प्राप्त करेंगे। क्या करना है, आप सोचें व शीघ्र निर्णय लें। यह समय अब बार-बार आने वाला नहीं है। आशा है आप हमारी अंतः की हूक को पीड़ा को समझेंगे। हमारी बात समाप्त।

ॐ शांतिः ।

लन्दन की एक सभा में स्वामी विवेकानन्द भाषण कर रहे थे- मानव धर्म की प्रतिष्ठा के लिए सच्चे ज्ञान-प्रसार की जरूरत है और इस महत् कार्य के लिए त्यागी, सेवाभावी आत्माएँ चाहिए। यदि मुझे ऐसी सात महान आत्माएँ मिल जाएँ तो संसार का काया-पलट हो सकता है।

सभा में बैठी मार्गेट नोबुल ने सभा समाप्त होने पर स्वामी जी से कहा- ''मैं नहीं जानती कि आपको ऐसे छह व्यक्ति मिलेंगे या नहीं पर सातवें की पूर्ति करने के लिए मेरा जीवन समर्पित है।''

इसी मिस नोबुल ने भारत आकर घर-घर ज्ञान का प्रकाश फैलाया और सिस्टर निवेदिता के रूप में भारतवासियों से सच्चा प्यार पाया।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

(गायत्री तपोभूमि में अक्टूबर १९६८ के साधना शिविर में दिया गया व्याख्यान)

गायत्री महामंत्र हमारे साथ-साथ-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो, भाइयो,

यहाँ गायत्री तपोभूमि में गायत्री माता का मंदिर है। यहाँ गायत्री मंत्र की साधना होती है। मंत्र बड़े सार्थक एवं सामर्थ्यवान होते हैं। इसके द्वारा बड़े-बड़े काम हो सकते हैं। साधारण-मंत्र, जो सपेरा जानता है, वह साँपों के जहर को मंत्र पढ़कर उतार देता है। भौतिक जगत में यंत्रों का भी बहुत महत्त्व है। आज यंत्रों के द्वारा भारतवर्ष के अन्तर्गत बड़े-बड़े कल-कारखाने चलते हैं। यंत्रों का भी एक इतिहास है। मंत्र का भी एक इतिहास है। इसकी शक्ति भी पैटन टैंक की तरह होती है। हमारे पूर्वज इस महत्त्व को जानते थे। इस कारण से उन्होंने मंत्रों का उपयोग किया तथा उसकी जानकारी लोगों को दी। मंत्रों का भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों तरह का महत्त्व है।

इस संबंध में राक्षसों एवं देवताओं दोनों में विवाद था। राक्षस यंत्र को बड़ा बतलाते थे, अर्थात् उनकी दृष्टि में भौतिकता का महत्व ज्यादा था। देवता कहते थे कि मंत्र बड़ा है अर्थात् अध्यात्म बड़ा है। मंत्र मनुष्य को विचार देता है। मंत्र विद्या का वैज्ञानिक महत्व है। जीभ से जो शब्द निकलते हैं, उनका उच्चारण कंठ, तालु, ओष्ठ, दाँतों यानी कि मुख के विभिन्न अंगों द्वारा होता है। इस उच्चारण काल में मुख के जिन भागों से ध्वनि निकलती है, उन अंगों से नाड़ी तन्तु शरीर के विभिन्न भागों तक फैलते हैं। वास्तव में मंत्र की दो दिशाएँ हैं- (१) यंत्र और (२) मंत्र। इस दुनिया में जो चीजें वस्तु के द्वारा बनी हैं, वह नाशवान हैं। हम लोग सभी यंत्र हैं। हमारे खान-पान का ढंग एक यंत्र की प्रक्रिया है। वास्तव में हलचल पर दुनिया टिकी है। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि हलचल से दुनिया बनी है।

इस धरती की हर चीज प्रायः नाशवान है। हम बच्चे के रूप में धरती पर आते हैं। वह बच्चा १५-१८ साल तक नवयुवक की स्थिति में होता है, तो अच्छा लगता है। पर वही बच्चा जब ५५वें-६०वें वर्ष में पहुँच जाता है तो वह सुन्दर नहीं लगता है। वास्तव में यह चीजें टिकाऊ नहीं हैं। जब तक आपका शरीर युवा है, तब तक आपकी पत्नी आपको देवी, अप्सरा मालूम पड़ती है, परन्तु जब आप बड़े हो जाते हैं। वासनाएँ शिथिल पड़ जाती हैं, तो वही पत्नी एक नौकरानी मात्र शेष रह जाती है।

मनुष्य सोचता है कि हमारे पास पैसा होगा तो हमें सुख-शान्ति मिलेगी, परन्तु ऐसा नहीं होता है। उसके पास जब पैसा आ जाता है तो चोर, डाकुओं का डर बना रहता है। मनुष्य जब बी. ए., एम. ए. पास कर लेता है तो उसे बड़ी-बड़ी नौकरियों का ख्वाब होता है। हमारा सुख केवल कल्पना के सागर में डूबा रहता है, जो शेखचिल्ली की तरह कभी भी पूरा नहीं होता है। अगर हम देखें, तो यह पायेंगे कि मनुष्य समस्या लेकर आता है और उसी समस्या में जिन्दगी भर लगा रहता है तथा अंत में समस्याओं को लिये हुए ही दुनिया से चला जाता है। मनुष्य कल्पनाओं के सागर में डूबा रहता है। यह यंत्र- जो मनुष्य शरीर है, उसको थोड़ी देर शांति मिलती है, परन्तु अन्ततोगत्वा उसे शान्ति नहीं मिलती है। अगर मनुष्य को शान्ति मिलेगी तो मंत्र से मिलेगी अर्थात् अध्यात्म की ओर मुड़ने से मिलेगी।

मंत्र जप करने की प्रवृत्ति को नहीं कहते हैं, वरन् वह विचार करने की प्रवृत्ति है। मनुष्य इन मंत्रों को अपनाकर अपने दुःखों को सुखों में बदल सकता है। मनुष्य अपनी दिशाधारा को बदल सकता है। अधिकांश दुःख मनुष्यों को मंत्रों की कमजोरी के कारण होता है और उसका जीवन कष्टों से घिर जाता है। मंत्र उसे कहते हैं जो दुःखों को दूर करता है। इससे भौतिक आवश्यकता भी पूरी होती है। एक व्यक्ति को साँप काटता है, एक तांत्रिक सपेरा आता है और वह कुछ मंत्र पढ़ता है। साँप आकर विष वापस ले लेता है और वह आदमी स्वस्थ-सानन्द हो जाता है । यह मंत्र का भौतिक प्रयोग कहा जा सकता है।

मंत्रों का सागर इससे कहीं अधिक अध्यात्म के लाभों के बारे में हमें इंगित करता है। अध्यात्म क्षेत्र बड़ा विशाल है। इस क्षेत्र के अंतर्गत गायत्री मंत्र की महत्ता सर्वोपरि है, जो मनुष्य के बुद्धि के स्रोत को खोल देता है। मंत्र की आराधना प्रारम्भ करने के बाद वह मनुष्य को महानता की ओर अग्रसर करते हुए उसे देवता बना देता है। गायत्री मंत्र के एक-एक अक्षर में अनेक प्रकार के ज्ञान-विज्ञान का तत्व भरा पड़ा है। इसमें रहस्यमय तत्व छिपे पड़े हैं। इसका ही वेद, उपनिषद, दर्शन, स्मृतियों, रामायण आदि ग्रंथों में विवेचन है।

गायत्री को वेदमाता कहा गया है। चारों वेद गायत्री के पुत्र हैं। शास्त्रों में कहा गया है कि ब्रह्माजी ने अपने एक-एक मुख से गायत्री के एक-एक चरण की व्याख्याएँ की हैं। इस प्रकार चार मुखों से चार वेदों का वर्णन किया गया है।

ॐ भूर्भुवःस्वः-	**ऋग्वेद**
तत्सवितुर्वरेण्यं -	**यजुर्वेद**
भर्गो देवस्य धीमहि-	**सामवेद**
धियो यो नः प्रचोदयात्-	**अथर्ववेद**

बाद में इन वेदों के द्वारा दर्शन, आरण्यक, उपनिषद्, पुराण, स्मृति आदि का निर्माण हुआ। जिस प्रकार मनुष्य के एक बूँद भ्रूण-कलल में मनुष्य का पूरा-पूरा स्वरूप होता है, उसी प्रकार गायत्री मंत्र के चौबीस अक्षरों में समस्त संसार का ज्ञान-विज्ञान भरा पड़ा है। इसमें सोना बनाने का भी विधान भरा पड़ा है।

गायत्री मंत्र की उपासना सर्वश्रेष्ठ है। इसमें बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करने के लिए प्रार्थना है । मनुष्य को सद्बुद्धि आ जाये तो उसे भौतिक एवं आध्यात्मिक

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

दोनों लाभ प्राप्त होते हैं। उपासना का अर्थ होता है- पास बैठना, यानी कि भगवान के पास बैठना। अगर बछड़ा गाय के पास न बैठे तो उसे दूध कहाँ से मिलेगा? माँ की छाती से बच्चा नहीं लिपटे तो माँ का दूध उसे कहाँ से मिलेगा? पारस से छुये बिना सोना लोहा कैसे बनेगा? उसी प्रकार ईश्वर के समीप गये बिना आत्मा की भूख कैसे मिटेगी? यह उपासना की पद्धति है, जो मनुष्य को तृप्त करती है। जिस प्रकार मनुष्य के शरीर में प्राण का महत्त्व है, उसी प्रकार आत्मा में ईश्वर का है। परमात्मा से रहित आत्मा शरीर का आवरण ओढ़े पशु के समान है।

परमात्मा के नजदीक जब साधक पहुँच जाता है तो वह अपनी वेदनाओं को भक्तिभाव से उनके सामने रखता है। उस समय भगवान भक्त की जो आवश्यक मनोकामनाएँ हैं उन्हें पूरा कर देता है। उसकी तृष्णा, वासना, अहंता को समाप्त कर देता है। साधक को भौतिक लाभों के अन्तर्गत चिरस्थायी संतोष, मनोविकारों का शमन, संकटों का निवारणं, सुखी गृहस्थ-जीवन, हँसता-हँसाता जीवन, लोकसम्मान जैसे लाभ प्राप्त होते हैं। इसके साथ ही साथ उसका परिष्कृत स्वभाव, दैवी अनुग्रह, सेवा की भावना जैसे आध्यात्मिक लाभ साधक को मिलने लगते हैं, जिससे वह नर से नारायण बन जाता है।

हमारे पास तपोभूमि में नित्य एक न एक लोग आते रहते हैं, जिनकी समस्याएँ होती हैं। हमने गायत्री उपासना के माध्यम से उन्हें राहत पहुँचाने का काम किया है। एक म. प्र. की प्रधानाध्यापिका आती थीं। उन्हें नींद नहीं आती थी तथा हमेशा रोती रहती थीं। हमने उन्हें ठीक किया। अब उनको नींद आ जाती है। एक बार हमारे पास एक सेठजी आये। उनका इनकम टैक्स का घोटाला था। वे परेशान थे। उनके पास कुल पूँजी ३२ लाख रुपये थी। इनकम टैक्स का १० लाख रुपये देना था। वे परेशान थे। हमारे कहने पर उन्हें शान्ति मिली। हमने कहा कि आपके १० लाख चले जाएँगे तो भी आपके पास २२ लाख बचेंगे। आप परेशान क्यों हैं? फिलहाल तो जाएगा नहीं, अगर चला भी जाएगा तो भी तेरी कमी पूरी हो जाएगी। हमने उसे गायत्री मंत्र के जप के लिये कहा और उनके बुद्धि में बदलाव आ गया।

बेटे, इस मंत्र की शक्ति महान है। पहले जमाने के संत-महात्माओं के पास गायत्री मंत्र का बल होता था, इसके कारण वे हर जगह विजयी होते थे। एक बार सिकन्दर हिमालय की ओर गया और एक महात्मा से कुछ माँगने को कहा। उसने कहा- आप शक्तिशाली हो तो धूप निकाल दो। सिकन्दर चुप खड़ा हो गया। अच्छा, तो तेरे में इतनी शक्ति नहीं तो दूर हट जा और पूरब दिशा से हमें धूप लेने दे। बेटे, यह साहस एवं आत्मबल गायत्री मंत्र का था जिसके बल पर उस महात्मा ने विश्व-विजयी सिकन्दर को परास्त कर दिया था।

गायत्री महामंत्र एक महान एवं महत्वपूर्ण मंत्र है। जब वह किसी के हृदय में प्रवेश कर जाता है, तो अन्तः-कपाट को खोल देता है और उसका कायाकल्प हो जाता है। आम्रपाली के अन्दर प्रवेश किया तो वह बुद्ध की महान शिष्या बन गयी। उसने अपना तन, मन, धन- सब कुछ उनके चरणों में समर्पित कर दिया। एक बार वह बुद्ध के चरणों में गई, उसने कहा कि प्रभु हम अशुद्ध हैं, आपकी शरण में आये हैं। क्या आप हमारा उद्धार कर सकेंगे। भगवान बुद्ध ने उसे कुछ मंत्र बतलाया और कहा कि आप इसका जप करें एवं अपने जीवन में उसे लायें । वह महिला जो अपने शरीर का व्यापार करती थी, उस दिन से अपने जीवन को बदलने का संकल्प लिया। वह महान बन गई। बुद्ध की महान शिष्या बन गयी और "**बुद्धं शरणं गच्छामि**" "**संघं शरणं गच्छामि**" "**धम्मं शरणं गच्छामि**" का नारा लगाते हुए करोड़ों लोगों तक बुद्ध का संदेश पहुँचा दिया। बेटे, यह है गायत्री मंत्र की शक्ति, जिसके द्वारा विचारों में बदलाव आता है और उसे संतोष मिलता है।

वास्तव में गायत्री मंत्र भगवान की एक श्रेष्ठ प्रार्थना है। जिसके अन्तर्गत हम प्रार्थना करते हैं-

"हे तेजस्वी परमात्मा! हम आपके प्रकाश को अपने में धारण करते हैं। आप हमारी बुद्धि को सन्मार्ग पर प्रेरित करें।"

ब्रह्माजी द्वारा दिये गये इस गायत्री महामंत्र को जिस दिन से इस धरती पर विद्यमान लोगों ने अपने जीवन में अपनाया, उसे चैन, सन्तोष, प्रेम, नैतिकता एवं सहयोग मिलने लगा। आज भी इस मंत्र को ग्रहण करके कमजोर वर्ग के लोग भी महानता की ओर बढ़ रहे हैं। यह ठीक है कि इसके लाभ मिलने में कुछ समय लगता है। इस मंत्र के द्वारा हथेली पर पौधे नहीं उगाये जा सकते हैं। मनुष्य के कषाय-कल्मष जब धुल जाते हैं तथा उसकी पात्रता का विकास हो जाता है तो उसे लाभ मिलता है। ऐसी अनेक कथाएँ आती हैं।

गायत्री की साधना का चमत्कार अवर्णनीय है। एक समय अकबर ने महामंत्री मानसिंह को बुलाया एवं कहा कि हमारा प्रयाग का किला अठारह बार ढह गया, उसका कोई उपाय करो ताकि वह सुरक्षित रह सके। अकबर के आदेश को पाकर मानसिंह निकले और गंगा तट पर भ्रमण करने लगे। उन्होंने देखा कि इस वीरान स्थान पर एक महात्मा तप कर रहे हैं। वे उनके पास पहुँचे। इस समय वे ध्यानावस्था में थे। उन्होंने देखा कि एक अजगर उधर से आया और उन्हें निगलने का प्रयास करने लगा, परन्तु वह तपस्वी को निगल न सका। थोड़ी देर में उस तपस्वी का ध्यान टूटा और उसने अपने तप-बल से उस अजगर से अपने को मुक्त कर लिया। यह सब तमाशा देखने के बाद मानसिंह वहाँ पहुँचे। थोड़ी देर बैठने के बाद महात्माजी, जिनका नाम देवमुरारी बाबा था, ने उनका कुशल समाचार पूछा। उन्होंने कहा कि मैं अकबर का महामंत्री मानसिंह हूँ और एक विकट समस्या के हल हेतु आपके पास आया हूँ। उस महात्मा ने कहा कि आप निःसंकोच अपनी समस्या को बतलावें । हम उसके समाधान हेतु प्रयास करेंगे। मानसिंह ने बतलाया कि महात्मन् प्रयाग के किले का निर्माण महाराज ने १८ बार कराया, परन्तु पता नहीं किस कारण से या कोई देवी-देवता के अभिशाप के कारण वह बन नहीं पा रहा है तथा बार-बार ढह जाता है। महात्माजी थोड़ी देर मौन रहे और अपनी ध्यान अवस्था में चले गये। उसके बाद मानसिंह के हाथ पर कुछ रख दिया। उन्होंने कहा कि इसे आप नींव में डाल देंगे और उसके बाद निर्माण करेंगे तो किले का कुछ नहीं

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

होगा। उन्होंने वैसा ही किया और किला तैयार हो गया। वह वस्तु जो मानसिंह की हथेली पर महात्माजी ने रखी थी, वह तुलसी की मंजरी थी। देवमुरारी बाबा गायत्री के बहुत बड़े उपासक उस जमाने में रहे हैं तथा उनका चमत्कार सर्वविदित था। सभी लोग उनके पास आते थे और वे सिद्ध किये हुए मंजरी के गुच्छे सबको देते थे।

मंत्रों का सूक्ष्म प्रभाव बहुत ही महत्वपूर्ण है। उसमें गायत्री महामंत्र की महत्ता तो और भी विलक्षण है। इसके जप से उत्पन्न होने वाली शक्ति सारे वातावरण को कँपा देने में समर्थ है। इसी महाशक्ति का लाभ जिन्होंने प्राप्त कर लिया है वे धन्य हो गये हैं। इस महान् मंत्र में सद्बुद्धि ही वह तत्व है, जिसके आधार पर व्यक्तित्व निखरता है तथा उभरता है। इस साधना के द्वारा लोग ऋषि, तपस्वी बन जाते हैं। उनके जीवन का कायाकल्प हो जाता है। इसी कारण से हम आप लोगों को गायत्री तपोभूमि मथुरा बुलाते हैं, जो गायत्री का एक सिद्धपीठ है। जहाँ अखंड अग्नि एवं ४०० तीर्थों के जल-रज की स्थापना है। यहाँ हम गायत्री अनुष्ठान कराते हैं ताकि आपके पूर्व जन्म के संस्कार कम हों तथा इस जन्म में आप महानता की ओर बढ़ सकें। आपके अंदर पूर्व जन्मों का काफी कषाय-कल्मष जमा है, जिसे हमें साफ करना है ताकि नये संस्कार उसमें भरे जा सकें। हम यहाँ पर बुलाकर आपको यज्ञोपवीत भी धारण कराते हैं। यह गायत्री की मूर्तिमान प्रतिमा है। इसके नौ धागे गायत्री मंत्र के नौ शब्दों के प्रतीक हैं। यज्ञोपवीत गायत्री की प्रतिमा है। इसे ऋषियों ने रिसर्च करके बनाया है। अगर यह लोहे, पत्थर का होता तो हम धारण नहीं कर पाते। इस धागे का वैज्ञानिक महत्व है। यह धागा हमारी आध्यात्मिक माँ के रूप में हमेशा हमारी छाती से लिपटा रहता है। यह हमारा मार्गदर्शन करता है।

आपको भी हमेशा गायत्री मंत्र का जप करना है तथा अपने इलाके, मुहल्ले, शहर के लोगों को प्रेरणा देकर, उसके महत्व समझाकर इस मंत्र को जपने की प्रेरणा देना चाहिए। यह वह मंत्र है जिससे हमारी भौतिक तथा आध्यात्मिक समस्याओं का हल होता है तथा बड़ी-बड़ी समस्याओं का भी हल होता है। पुराणों में अनेक कथाएँ हमारे ऋषियों ने इस मंत्र के लाभ के बारे में लिखी हैं।

एक समय की बात है कि इस पृथ्वी पर अनावृष्टि के कारण बहुत बड़ा अकाल पड़ा। सारे सरोवर सूख गये, पशु-पक्षी मरने लगे। लोग दाने-दाने के लिए मोहताज हो गये। अनेकों लोग भूखों मरने लगे। उस स्थिति में लोग त्राहि-त्राहि करने लगे। वे गौतम ऋषि के पास समाधान के लिए पहुँचे । उस समय गौतम ऋषि बहुत पहुँचे हुए गायत्री साधक थे । लोग उनके आश्रम में पहुँचे तथा चरणों में प्रणाम करते हुए अपनी समस्याओं को सुनाया। गौतम ऋषि ने उन्हें एक अक्षय पात्र दिया जो उन्हें गायत्री माता से प्राप्त हुआ था, उन्होंने कहा- आप इसे ले जाएँ, आपका समाधान हो जाएगा।

लेकिन आप यह लोग यह न समझें कि हम गायत्री तपोभूमि हो आये, आचार्यजी के पास रहकर हमने अनुष्ठान, जप , तप, हवन कर लिया और हमारी गायत्री सिद्ध हो गई और हम जो चाहेंगे वह हमें प्राप्त हो जाएगा। आपका यह सोचना व्यर्थ है। इसके लिए हमें अपनी पात्रता का विकास करना परम आवश्यक है। इसके बिना आध्यात्मिक जगत में हमारा विकास नहीं हो सकता है। जितने भी प्राचीन ऋषि हुए हैं, उन्होंने गायत्री साधना के द्वारा आत्मशोधन, आत्मपरिमार्जन किया है। योग, तप के माध्यम से अपने को गलाया है। बीज जब गलता है तभी पेड़ का रूप लेता है। अगर बीज को खाद, पानी न मिले तो बीज कभी भी पेड़ का रूप नहीं ले सकता है। हम यह बताना चाहते हैं कि आपके अंदर अभी कितनी कमियाँ हैं। इसे निकाले बिना आपको हम कुछ नहीं दे सकते। इसके परिमार्जन एवं आत्मशोधन के लिये हम आपको गायत्री तपोभूमि समय-समय पर बुलाते रहते हैं।

आप जानते हैं कि ऊसर भूमि में कोई बीज न तो उगता है और न कोई उपज होती है। उसी प्रकार भावनारहित उपासना करना निरर्थक है-बेकार है। इससे कोई भी फायदा नहीं हो सकता। मनुष्य के अन्दर राग, द्वेष, अहंकार, कटुता आदि भरा हुआ है। इसके रहते गायत्री मंत्र का लाभ नहीं मिल सकता है। यह निकालने का कार्य गुरु करता है। गुरु यानी प्रकाश। अर्थात् प्रकाश की स्थापना होने पर अन्धकार स्वयं भाग जाता है। आप जानते हैं कि विरजानंद जी ने दयानंद का, रामकृष्ण परमहंस ने विवेकानंद का, समर्थ रामदास ने छत्रपति शिवाजी का, हमारे गुरु ने हमारा अन्धकार दूर किया और आज गायत्री मंत्र का लाभ हमें कितना मिला, यह आपके सामने है।

हम भी समर्थ हैं। हम भी आपका अन्धकार समाप्त करना चाहते हैं, प्रकाश भरना चाहते हैं, आप अपने को खाली करें । यहाँ आये हैं तो आप यहाँ से कुछ लेकर जाएँगे। आज हम कुछ देकर आपको विदा कर रहे हैं। आप जायें और थोड़ा भगवान के लिये भी जीना सीखें। अपने पेट के लिये ही न जियें। थोड़ा इस सामान्य जीवन से ऊपर उठकर कार्य करें। हमें आपके इस कार्य से प्रसन्नता होगी। भगवान को भी प्रसन्नता होगी। आप विश्वास रखें, आपने जो अपनी व्यक्तिगत समस्याओं के बारे में हमें बतलाया था उसका हमें पूरा-पूरा ध्यान है। हम उसे दूर करते रहेंगे। आप निश्चिन्त होकर जाएँ।

आज की बात समाप्त।

ॐ शान्तिः। 卐

यों तो अमेरिका से दास प्रथा की जड़ उखाड़ने में अब्राहिम लिंकन का नाम लिया जाता है, परन्तु सच पूछा जाय तो उस दास प्रथा की जड़ साफ करने में अहं भूमिका 'टाम काका की कुटिया' ग्रन्थ लिखने वाली महिला हैरियट स्टो की थी। सबसे बड़ी विडम्बना तो यह थी कि हैरियट स्टो को परिवार का खर्च चलाने के लिए कठिन श्रम करना पड़ता था। गरीबी और कठिनाई के बीच घिरे रहकर भी उन्होंने थोड़ा-थोड़ा समय निकालकर पुस्तक पूरी की थी। अन्तःप्रेरणा से अभिप्रेरित होकर लिखी गई उनकी यह पुस्तक अमेरिका से गुलामी प्रथा के अन्त के लिए वरदान साबित हुई।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी—

आज की समस्याओं का हल यज्ञीय दर्शन

१३ फरवरी, १९६९ को गाँधी आश्रम अहमदाबाद में दिया गया गया प्रवचन

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ:—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो, भाइयो ! एक समय की कथा है कि एक भूखा चाण्डाल एक ब्राह्मण के यहाँ आया । वह बहुत भूखा था। उस ब्राह्मण ने, उनकी पत्नी तथा सभी बच्चों ने अपने-अपने हिस्से की रोटी उस चाण्डाल को दे दी । चाण्डाल रोटी खाकर संतुष्ट हो गया । उसने रोटी खाई, पानी पिया और उसके बाद एक स्थान पर कुल्ला किया, अपनाने हाथ धोये। उसके हाथ धोने के बाद एक नेवला आया । कहते हैं कि वह वहाँ पर लोटने लगा और लोटते ही उसके काले बाल सुनहरे हो गये। उस नेवले से लोगों ने पूछा कि तू तो काला था, सुनहरा कैसे हो गया? उसने कहा-एक स्थान पर यज्ञ हुआ है। वहाँ मैं गया था और लोट लगायी तो मेरे बाल सुनहरे हो गये ।

मित्रो, यज्ञ महान् चीज है, जो बड़े आदमी ही नहीं छोटे आदमी भी कर सकते हैं। आप समझते हैं कि लोग हवन करें तथा पैसे खर्च करें तो ही यज्ञ होगा, पर यह आवश्यक नहीं है। आप अगर किसी बुढ़िया के, किसी बहिन या भाई के आँखों के मोतियाबिन्द का आपरेशन करा देते हैं तो वह भी यज्ञ है । आप यदि इस प्रकार का यज्ञ करने वाले हैं या करते हैं तो आपको हम एक श्रेष्ठ यजमान, श्रेष्ठ होता कहेंगे तथा आपका स्वागत करेंगे। आपने उस बुढ़िया को जिसे आँखों से नहीं दिखता था, अगर अपने ढाई सौ रुपये खर्च करके उसकी आँखों में नई ज्योति ला दी है, तो हम आपको होता कहेंगे, यजमान कहेंगे और यह कहेंगे कि आप सच्चे हवनकर्त्ता हैं। यह हमारी संस्कृति है, तथा हर इनसान का कर्त्तव्य है कि वह दूसरों की मुसीबतों के समय पर सहयोग करें। आदमी दूसरों के दुःखों, मुसीबतों एवं तकलीफों का ध्यान रखे ।

अगर इस प्रकार का हमारा दृष्टिकोण होगा तो क्या हमारे समाज में समस्याएँ रहेंगी? क्या यहाँ कोई चोरी करेगा? क्यों कोई कहीं डकैती डालेगा? नहीं मित्रो, कोई नहीं करेगा। इनसान के सामने तब कोई समस्या नहीं रहेगी । उसकी भावनाओं में परिवर्तन आयेगा। वह यह सोचेगा कि वह जंगलों में नहीं चल रहा है, वरन् ट्रेन में चल रहा है। चोरी करने से पूर्व व्यक्ति सोचेगा कि जिसे वह नुकसान पहुँचाने जा रहा है, तो क्या आवश्यकता के पैसे उसके पास हैं जिसकी हम जेब काटकर उसे परेशान करने जा रहे हैं। वह बेचारा कहाँ भीख माँगेगा, कहाँ मारा-मारा फिरेगा। आज अगर हमारी स्थिति में ऐसा ही परिवर्तन हो जाये तो फिर इस प्रकार की समस्याएँ कहाँ रहेंगी? बर्बादी कहाँ रह जाएगी? मित्रो ! अपराध कैसे रह पायेगा अगर मनुष्य अपने दिल के अन्दर इस भावना को जोड़े ले तो अभी हमारे शरीर तो इनसान के हैं परन्तु दिल हैवान के हैं। अगर दिल इनसान के होते तो कोई समस्या नहीं होती । अगर रामायण की एक चौपाई आपको याद हो जाए तो हम समझेंगे कि आपने पूरी रामायण पढ़ ली : वह है "**सियाराम मय सब जग जानी। करहुँ प्रणाम जोरि जुग पानी**"। यदि यह दृष्टिकोण आ जाय तो कैसे कोई किसी के स्वास्थ्य को चौपट कर देगा । धनिया खरीदने आये हैं राम-उसे गधे की लीद मिला हुआ धनिया कैसे दे दें ? अरे हम अगर गायत्री के सिद्धान्तों पर, आध्यात्मिकता के सिद्धान्तों पर चलने वाले हों तो क्या हम पाप कर सकते हैं? नहीं, कभी नहीं कर सकते और न ही अपराध कर सकते हैं। अगर पाप और अपराध समाज से मिट जाए तो चहुँओर खुशहाली अपने आप आ जाएगी। आज अगर इस प्रकार के सिद्धान्त लोगों में आ जाते, गायत्री और यज्ञ की फिलासफी लोगों की समझ में आ जाती तो इनसान महान बन जाते ।

आपने नाच क्या सीख लिया, बर्बादी को न्यौत बुलाया। यह बेकार की चीज है। मित्रो आज नृत्यांगना आपके देश एवं समाज की तबाही कर रही है। अगर नृत्यांगना आपके जीवन में न आती तो मजा आ जाता। उसके स्थान पर मोहब्बत आ जाती तो हम यह समझते कि आपके जीवन में यज्ञ का सिद्धान्त आ गया । अगर आप मोहब्बत अपनी धर्मपत्नी से कर लेते तो मजा आ जाता । आप तथा आपकी धर्मपत्नी एक दूसरे के लिये जान देकर जिया करते तो मजा आ जाता। तब आपके परिवार में एक नया उत्साह एवं उमंग पैदा हो जाती। मित्रो, यह भी यज्ञ का ही सिद्धान्त है। अभी तो आपकी धर्मपत्नी यदि आपके भोजन में थोड़ा कम या ज्यादा नमक डाल देती है, बर्तन साफ करने में थोड़ी-सी कमी रह जाती है, तो आप उसे भला-बुरा कहते हैं और उसे मारने तक उतारू हो जाते हैं। यह कैसी विडम्बना है। आपने यह कभी नहीं सोचा कि वह अपने माँ-बाप को छोड़कर आयी है । वह आपसे न पेमेण्ट माँगती है न पेन्सन माँगती है, न सण्डे की छुट्टी माँगती है।

कितनी महान् है यह नारी जाति । ऐसी देवी को आपने नहीं देखा होगा। आपने पत्थर की देवी को देखा होगा, जो बकरे तक खा जाती है। अगर आप इस देवी की आरती नहीं उतार सकते हैं, पूजा नहीं कर सकते हैं तो कम से कम भाव-संवेदना भरी आँखों से देख तो लिया करें। अगर इस प्रकार जीवन जीना सीख लें, प्यार भरा जीवन जीना सीख लें तो मजा आ जाएगा ।

अगर आपने अपने घर-परिवार, बीबी-बच्चों को संस्कारवान नहीं बनाया, अपनी भाव-सम्वेदना प्रगट नहीं की तो आपके लिये तबाही आयेगी। आप जब बुड्ढे हो जाएँगे तो आपको कोई नहीं पूछेगा। याद रखिये आप में से अधिकांश व्यक्ति अब बुड्ढे होने वाले हैं। आपके बाल भी हमारे जैसे सफेद होने वाले हैं।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

आपकी दाढ़ी सफेद होने वाली है। आपकी आँखों में भी चश्मा अब लगने वाला है। आपका बच्चा भी जब बड़ा हो जाएगा तो आपको मजा चखायेगा कि आपने उसकी माँ को भला-बुरा कहा है। माँ जब गुस्से में अपने बच्चे को दूध पिलाती है तो उस समय बच्चे को भी माँ-बाप के प्रति क्रोध आता है। आपका व्यवहार जो इस समय हुआ है-आप देखना कि बुढ़ापे में आपकी बहू और आपकी पत्नी कैसे गुस्सा निकालती हैं। अगर घर में लोग आपस में प्रेम करना सीखते, मोहब्बत करना सीखते तो मजा आ जाता तथा उनका जीवन धन्य हो जाता, आध्यात्मिकता हमारे घर में भर जाती । सारे घर में आनन्द-उल्लास का वातावरण रहता । आपस में प्रेम-भाव होते। घर-परिवार ही स्वर्ग बन जाता ।

अध्यात्म का मतलब होता है प्रेम, आत्मीयता । एक समय की बात है-स्वामी रामतीर्थ जापान गये। वे एक फैक्टरी देखने गये। सभी अपने-अपने कामों में लगे थे। एक बार मुस्कान के साथ बाबाजी को देख लिया तथा अगले ही क्षण पूरी तत्परता के साथ हर आदमी अपने-अपने कामों पर लग गया । किसी के पास इतना समय नहीं था कि उन्हें देखे, बात करे। जापान के लोग बड़े परिश्रमी होते हैं। सप्ताह में ५ दिन काम करते हैं, परन्तु उससे ही जापान नित्य प्रगति पर बढ़ता जा रहा है। वे पूरे मनोयोग के साथ काम करते हैं । वे राष्ट्र का महत्व समझते हैं। उनका कहना है कि हम मजदूर हैं तो क्या ? हमें अपने देश को आगे बढ़ाना है। हम सप्ताह में ५ दिन परिश्रम करेंगे तथा देशहित में उत्पादन बढ़ायेंगे। दो दिन अपने परिवार के साथ हँसी-खुशी का जीवन जियेंगे। कारखाने से आने के बाद सब हँसी-खुशी का जीवन जीते रहते हैं। कोई चाय बनाता है, कोई गीत गाता है। सब आनन्द से विभोर हो जाते हैं। रामतीर्थ बहुत ही प्रभावित हुए । आपको प्यार आता है? कभी नहीं । आप तो अपनी बीबी की हमेशा शिकायत करते हैं। वह काली है, मोटी है। शादी के समय भी दहेज लेकर नहीं आयी। आप कभी खुश नहीं रहते हैं।

स्वामी रामतीर्थ का वहाँ व्याख्यान हुआ । उन्होंने कहा-"हम संस्कृत के श्लोकों को पढ़कर आपको वेदान्त का, अध्यात्म का शिक्षण क्या दें। आपको देखकर हम नतमस्तक हैं। आप सब सच्चे अर्थों में अध्यात्मवादी हैं। आप में से हर आदमी काम के प्रति इतना ईमानदार है कि उसका क्या कहना? आप कार्य को भगवान की पूजा समझते हैं।" आपको हम कहना चाहते हैं कि आपसे हमें शिकायत नहीं है। आप शंकर जी के मन्दिर में जाते हैं या नहीं, यह हम नहीं कह सकते हैं, परन्तु आप पक्के अध्यात्मवादी हैं। यदि आप जापान वालों की तरह कर्म-योगी हैं। आपके काम करने के ढंग, फर्ज तथा जिम्मेदारी सराहनीय एवं अनुकरणीय है। आपको भगवान ने जो चीज दी है, उसका उपयोग जानते हैं। भगवान ने मनुष्य को हँसने की कला दी है, यह आप बखूबी जानते हैं । आपका त्याग सराहनीय है जो आपस में प्रेम-मोहब्बत का जीवन जीते हैं। यदि ऐसा जीवन है तो आप सचमुच भगवान की पूजा करते हैं।

हमारे देश में हम ३५० रुपये पाते हैं। उसमें से ५० रुपये आप सिनेमा में खर्च कर देते हैं। २० रुपये आप सिगरेट में फूँक देते हैं। आपको तो बजट बनाना भी नहीं आता है। अगर आप पूरे ३५० रुपये बच्चों के विकास के लिये, प्रगति के लिये खर्च देते तो आपक परिवार की स्थिति कुछ और ही होती। अगर किसी को हँसना आता है, हँसाना आता है, प्यार करना आता है, बजट बनाकर खर्च करना आता है, तो वह हमारे शब्दों में सच्चा अध्यात्मवादी है, गायत्री का उपासक है, यज्ञकर्त्ता है।

सारे विश्व की समस्या का हल यज्ञीय दर्शन से सम्भव है। इसके द्वारा ही युद्ध की समस्या, चीन, पाकिस्तान की समस्या हल हो सकती है तथा विश्व में शान्ति आ सकती है। दुनिया के अंतर्राष्ट्रीय समस्या का हल इस यज्ञीय दर्शन द्वारा हो सकता है। आज विश्व के सामने जो प्रमुख समस्याएँ हैं वे हैं-(१) युद्ध (२) दुश्मन (३) पराजय । अगर आपस में मिल-बैठकर विचार करें-जैसे पंचायत में होता है, तो दुनिया की हर समस्या का हल हो सकता है। दुनिया में खून-खराबा समाप्त हो सकता है। समुद्र के खारे जल को मीठा बनाया जा सकता है । उसमें एक प्रकार की 'काई' उगाई जा सकती है, जिससे खाद्य समस्या का हल हो सकता है। बंजर एवं बेकार पड़ी जमीन को रहने योग्य बनाकर जनसंख्या अभिवृद्धि की समस्या का हल हो सकता है। आदमी अगर मेहनत तथा मसक्कत करे तो पहाड़ों पर भी खेती की जा सकती है। अगर हम पानी की व्यवस्था पूरी कर लें तो प्यासों को नया जीवन दे सकते हैं। हम युद्ध के लिये जो खर्च करते हैं, उसे मनुष्य के विकास में खर्च कर दें तो इनसान के अन्दर खुशी आ सकती है। मित्रो, यही है यज्ञीय फिलॉसफी। इससे रेगिस्तान को हरा-भरा बना सकते हैं। अभी जो गोला-बारूद बनाया जा रहा है, अस्त्र-शस्त्र बनाये जा रहे हैं, उसके स्थान पर अगर ट्यूबवेल बनायी जाय तो मनुष्य को कितना फायदा होगा। इस प्रकार हर गाँव में खुशहाली आ सकती है। अगर हम युद्ध के खर्चे को बन्द कर दें तो अभी जितना अकल और पैसा मिसाइल और राकेट बनाने में खर्च होता है, अगर वह खेती के विकास में, अन्न उगाने में, बच्चों की शिक्षा, गरीबों के विकास में खर्च हो जाये तो मजा आ जावे।

हम सारी समस्याओं का हल अकल, पैसा तथा राजनीति के द्वारा नहीं कर सकते हैं, अगर कर सकते हैं तो केवल इनसानियत से । इसके द्वारा ही राष्ट्रीयता के झगड़े, युद्ध के झगड़े, भाषा, प्रान्तवाद, जातिवाद, सीमा विवाद आदि सारी समस्याओं का हल हो सकता है। आप महात्मा गाँधी की जय बोलते हैं, परन्तु उनके आदर्शों को धारण नहीं करते हैं। आप कुर्सी के लिये इस तरह से लड़ते हैं जैसे कुत्ते रोटी के लिए लड़ते हैं। अरे भले आदमी, अगर आप भारतीय-संस्कृति के संरक्षकों को याद करते, उनके कार्य, त्याग, सेवा को याद करते तो मजा आ जाता। अगर आप यह कहते कि आप कुर्सी पर बैठो, हम इधर ही रहकर सेवा करेंगे । जैसा कि राम को भरत ने कहा था, वैसा आदर्श प्रस्तुत करते तो मजा आ जाता । आदमी के छोटे दिल और व्यवहार के कारण न जाने कितनी समस्याएँ खड़ी हो गई हैं। राजनीति पैदा करके नेताओं ने प्रान्त को, देश को बर्बाद कर दिया। काहे का विवाद-एक ही भूमि में भारत में लोग पैदा हुए, अगर ये विचार आ जाते तो मजा आ जाता ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

जरा-सी दीवाल की समस्या ने एक ही देश के निवासियों को हिन्दुस्तानी और पाकिस्तानी बना दिया और वे एक दूसरे को अपने-अपने क्षेत्र से निकालने लगे। एक ओर पाकिस्तानी तो दूसरी ओर हिन्दुस्तानी हैं। कमोवेश वही झगड़ा अब प्रान्तीयता के नाम पर हो रहा है। यदि मध्यप्रदेश का पानी महाराष्ट्र में चला गया । कर्नाटक का पानी मद्रास चला गया । तो क्या हुआ? अरे भले आदमियो, छोटी-छोटी समस्याओं के लिये अपने जीवन का सर्वनाश क्यों कर रहे हो। आपस में एक दूसरे का गला क्यों काट रहे हो। धिक्कार है तुम्हारी इनसानियत को । मित्रो, थोड़ी-सी अकल हमारे अन्दर आ जाती तो हम सारी समस्याओं को हल कर लिया करते ।

मित्रो ! इन समस्याओं का हल किसी असेम्बली से नहीं होने वाला है। इसका हल मनुष्यों के बड़े दिल तथा उदारता से ही सम्भव है। इसके लिये यज्ञीय दर्शन को समझना होगा। उसे आचरण में लाना होगा । आज समूची मानव जाति, सारे देश विश्वयुद्ध के शिकंजे में इस तरह फँसे हुए हैं कि उसका क्या कहना ? आज हर जगह तलवार लटकी हुई है। न जाने कब तलवार गिर जाये और गला कट जाये । कोई भी किसी समय भी इसका भुक्तभोगी बन सकता है ।

मित्रो! आज चौबीसों घण्टे मानवता त्राहि-त्राहि कर रही है। उसे ही शांति तथा चैन को नींद हराम हो गयी है। सभी मछलियों की तरह तड़प रहे हैं। मित्रो, इस मानवता को त्राहि से बचाने के लिए कौन काम करेगा? इसमें काम करेगा बड़े दिल वाला तथा उदारता सम्पन्न मानव। यदि मनुष्य का दिल तथा उदारता बढ़ती चली जाएगी तो 'एटम बम' भागते हुए चले जाएँगे, छिपकली की तरह से और तब उस समय मनुष्य के त्याग की सराहना होगी। आदमी मौत को घृणा की दृष्टि से देखेगा। लोगों की निगाह, दृष्टिकोण, बाप, भाई, भतीजे की तरह होगी। उस परिस्थिति में कौन बरसायेगा मौत किसी के लिये, आप बतलाइए न । मित्रो, इसे ही कहते हैं त्याग, सद्भावना, यज्ञ । यह त्याग ही दुनिया में नया रूप लायेगा । बड़े दिल एवं उदारता से ही दुनिया का कायाकल्प होगा। यह आज नहीं तो कल आयेगा ही। कल नहीं तो परसों अवश्य आयेगा। परसों नहीं तो १००० वर्ष बाद आयेगा, परन्तु वह दिन जब भी आयेगा, सभी लोग भारतीय संस्कृति के अनुयायी होंगे तथा बड़ा दिल तथा उदारता उनके अस्त्र-शस्त्र होंगे। उसी दिन विश्व की मानवता शान्ति पा सकेगी तथा अमन-चैन की जिन्दगी जी सकेंगे। उस समय इस धरती पर स्वर्ग होगा। मानवता का विकास उनके आदर्श-सिद्धान्त होंगे। मित्रो, जब कभी भी दुनिया में शान्ति आयेगी, वह दिन भारतीय संस्कृति के विकास का दिन होगा तथा लोग भारतीय संस्कृति के आधार यज्ञ के दर्शन का झण्डा फहरायेंगे। हर आदमी के दिल एवं दिमाग में यज्ञीय भावना जाग्रत हो रही होगी। हमारे समाज एवं परिवार का निर्माण यज्ञीय आधार पर हुआ है, अतः उसका विकास तदनुरूप ही होना चाहिए। मैं आपको बतला देना चाहता हूँ कि जिस दिन लोगों के मन में यज्ञीय भावना जाग्रत हो जाएगी, उस दिन से ही शांति आयेगी। लोग अमन-चैन का जीवन जी सकेंगे। समाज और देश का वातावरण बदल जाएगा। हम उसी दिन का ख्वाब देखते रहेंगे। आप से भी मेरा अनुरोध है कि आप भी उसी दिन का ख्वाब देखें । हम चाहते हैं कि यह भारतीय अध्यात्म, भारतीय विचारधारा दुनिया में फैले, विश्व में फैले तथा दुनिया में शांति आवे, खुशी आवे ।

मित्रो, यह दिन अवश्य आयेगा ऐसा हमारा विश्वास है। आपका हमने थोड़ा-सा कीमती समय लिया, भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता की थोड़ी-सी मोटी बातों को समझाने का प्रयास किया । भारतीय परम्पराओं के आधार पर गायत्री एवं यज्ञ की वास्तविकता एवं परम्पराओं को थोड़ा-बहुत समझने में शायद आपको यह काम आये। शायद यह विचार पसन्द आये, शायद आप ऊँचे आदर्शों पर चलने की कोशिश करें।

हमें विश्वास है कि सारी दुनिया में जब भी खुशी आयेगी, सारी दुनिया में जब शांति आयेगी, जब भी सारी दुनिया की समस्याओं का हल होगा, तो लोगों को इसी सिद्धान्त को अपनाना होगा जो हमारे ऋषियों ने हजारों वर्ष पूर्व गायत्री एवं यज्ञ के सिद्धान्त के रूप में बतलाया था। हमारे ऋषियों ने इस सिद्धान्त को सारे विश्व को दिया था तथा सारे विश्व के लोग इस गायत्री एवं यज्ञ के सिद्धान्त को जिसे हम सद्विचार एवं सत्कर्म के सिद्धान्त, सद्भावना एवं सद्विवेक का सिद्धान्त कहते हैं, लोगों ने इस खुशी के साथ अपनाया था तथा इसे सर्वसम्मति से माना था। इस प्रकार की भावनाओं के कारण ही हमारे पूर्वज सब जगह वंदनीय तथा पूजनीय थे। उनका सब जगह आदर-सत्कार था। उनकी बातों को सब माना करते थे। **"धियो यो नः प्रचोदयात्"** एवं **"इदं न मम्"** का नारा सारे विश्व में गूँजता रहता था। आज भी वह सिद्धान्त ज्यों का त्यों है। युग बदल गया हो, कलियुग आ गया हो, सतयुग चला गया हो, परन्तु आसमान जहाँ का तहाँ है । सारे जहाँ के तहाँ हैं। सूर्य, चन्द्र जहाँ के तहाँ हैं। उसी प्रकार गायत्री एवं यज्ञ के सिद्धान्त जिसे हम आदर्श या मानवता के विकास का सिद्धान्त कह सकते हैं, वह भी जहाँ के तहाँ हैं। दुनिया को संदेश देने के लिये यह दोनों झण्डे फहरा रहे हैं तथा फहराते रहेंगे। विश्व के प्रत्येक लोगों को अंततः इसी झण्डे के नीचे आना होगा तभी वे स्थायी शांति प्राप्त कर सकते हैं, ऐसा हमें विश्वास है। आज की बात समाप्त । **ॐ शान्ति ...।** 卐

धैर्यं यस्य पिता क्षमा च जननी शान्तिश्चिरं गेहिनी ।
सत्यमनुसूयं दया च भगिनी भ्राता मनः संयमः ।।
शय्या भूमितलं दिशोऽपि वसनं ज्ञानामृतम् भोजनमेते
यस्य कुटुम्बिनो वद सखे कस्माद् भयं योगिनः ।

अर्थात्--"धैर्य जिनका पिता तथा क्षमा जननी है। चिरशान्ति जिनकी पत्नी है, सत्य पुत्र है, दया भगिनी है, मन का संयम भ्राता है, पृथ्वी ही जिनकी शय्या है, दिशाएँ वस्त्र हैं, ज्ञानामृत भोजन है, जिसके ये सब कुटुम्बी हैं ऐसे योगीजनों को किससे भय हो सकता है ।"

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी-

आद्यशक्ति गायत्री की युगान्तरीय चेतना

इस गायत्री जयन्ती (१५ जून १९९७)की पावन वेला में गुरुसत्ता की अमृतवाणी उनके १९८० की गायत्री जयंती के पावन दिन शान्तिकुंज हरिद्वार की पुण्यभूमि में दिए गए उद्‌बोधन के रूप में प्रस्तुत है।

गायत्री मंत्र हमारे साथ- साथ-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो, भाइयो!!

आज गायत्री जयंती का पुण्य पर्व है तथा गंगा दशहरा भी आज है। गायत्री को आत्मा कहते हैं तथा गंगा को काया कहते हैं। आत्मा एवं काया का जन्म एक ही दिन हुआ था। आज गायत्री जयंती का पर्व मनाने के लिए हम एकत्रित हुए हैं। आज के दिन हम इतिहास पर नजर डालते हैं तो यह पाते हैं कि आज के दिन ही गंगा का भी अवतरण हुआ था। आज के दिन गंगा इस धरती पर आई थीं। मित्रो! हमारा ख्याल है कि गंगा सर्वप्रथम भगीरथ के अंतरात्मा में कैसे आयी होंगी? सामान्य मनुष्य बड़ा तेज एवं चालाक होता है। उसे अपने अलावा किसी की बात समझ में नहीं आती है। उसे तो केवल स्वार्थ ही दिखाई पड़ता है। ऐसे मनुष्य को कर्त्तव्य, समाज की सेवा, परमार्थ तथा भगवान समझ में नहीं आते हैं। उसके मन में हमेशा शैतान हावी रहता है। उसे पेट के अलावा कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता है परन्तु भगवान जब एक इनसान के मन में आये होंगे, जिसका नाम था भगीरथ, तो उसने यह सोचा होगा कि एक मनुष्य की सुख-सुविधा से ज्यादा महत्त्व का है- समाज की- संस्कृति की सेवा। उसने यही सोचा और क्या कर डाला? उसने गंगा से भक्ति का नाता जोड़ डाला। यह भक्ति का प्रतीक है।

यह भक्ति अंतरात्मा में से उमँगती है। भगीरथ एक राजकुमार था। उसके राज-पाट थे, परंतु उसने आदमी की खुशहाली के लिए अपना स्वार्थ, लोभ त्याग दिया। भगवान की भक्ति आती है तो करुणा के रूप में आती है, दया के रूप में आती है। गायत्री को हम माता कहते हैं, गंगा को भी हम माता कहते हैं। माता कोई देवी या औरत का नाम नहीं है। माता एक आदर्श का नाम है, सिद्धान्त का नाम है। गायत्री माता इसलिए कहलाती हैं कि उनके भीतर करुणा एवं दया है। माता का अर्थ करुणा एवं दया है। माता प्यार के लिये गलने का नाम है। आज तो लोग संतोषी माता की पूजा करते हैं, पता नहीं ये कहाँ के लोगों ने गढ़ा है। कितनी रोचक कहानियाँ बनायी हैं। एक औरत थी । उसकी सास उसे तंग करती थी। संतोषी माता आयीं और उसने सास की पिटाई की। उसके बाद उसका पति तंग करता था। संतोषी माता आयीं एवं पति की पिटाई कर दी। यह मक्कार लोगों की कथा है। माता जब आती है तो एक मस्ती के रूप में, आदर्श के रूप में इनसान के पास आती है।

भगीरथ के हृदय में भी माता का उदय हुआ था। उसके सीने में, कलेजे में करुणा बही होगी। यह भावना की गंगा थी जो विशाल होती चली गयी। हिमालय में से निकली विशाल गंगा बन गई। भगीरथ ने गंगा को मजबूर कर दिया कि आप स्वर्ग में बैठी हैं तथा धरती के लोग एक-एक बूँद पानी के लिए मजबूर हो रहे हैं, आपको शर्म आनी चाहिए। भगीरथ ने गंगा को मजबूर कर दिया। स्वर्ग की गंगा जो महलों में रहती थीं, आराम का जीवन जीती थीं, वह भगीरथ के करुणा, त्याग एवं परमार्थ की भावना को देखकर मजबूर हो गई इस धरती पर आने के लिए । आज का यह ऐतिहासिक दिन महत्त्वपूर्ण है। गंगा कितनी विशाल है? क्या आपने कभी सोचा? वह हिमालय से भगीरथ की आवाज पर इस धरती पर आईं तथा इस धरती के लोग जो त्राहि-त्राहि कर रहे थे उन्हें राहत दी, उन्हें नया जीवन दिया। यह भगीरथ की त्याग तपस्या का फल था जिसके फलस्वरूप गंगा के अवतरण के साथ धरती धन्य हुई। आज का दिन गंगा अवतरण का महत्त्वपूर्ण दिन है। गंगा अगर स्वर्ग में रहती तो आज जो लोग गंगा के तट पर व्रत करते हैं, आरती करते हैं, वह कौन करता? गंगा ने सारे समाज को धन्य कर दिया। हम किसी औरत की जयंती मनाने नहीं आये हैं, हम आज आदर्शों की, सिद्धान्तों की जयंती मनाने आये हैं। उदारता की, इनसानियत की जयंती मनाने आये हैं। आप चाहें तो इसे गायत्री माता कह सकते हैं। आज गायत्री के अवतरण का भी दिन है।

शेर खौफनाक होते हैं। उन्हें एक बार शिकार मिल जाये तो लम्बा पैर करके सोते रहते हैं। आप को ऐसा नहीं होना चाहिए। हमारा विचार है कि शेर से भी ज्यादा खौफनाक इक्कड़ व्यक्ति होता है जो केवल अपने पेट, अपने बच्चे आदि को ही देखता है। समाज का उसे कुछ ध्यान नहीं होता है। अकेला हाथी इतना खतरनाक होता है कि उसका क्या कहना? उसी प्रकार इक्कड़ आदमी होता है। ऐसे आदमी ही आज समाज को तहस-नहस कर रहे हैं। जो आदमी यह सोचते हैं कि मेरा पैसा बढ़ना चाहिए, मेरी तरक्की होनी चाहिए। मेरे परिवार का विकास होना चाहिए। उन्हें हम इनसान नहीं, शैतान कहते हैं। ऐसे खतरनाक आदमी सारे समाज को बर्बाद कर देते हैं। संत भी हैं, परंतु वह भी इक्कड़ हैं। इनको भी निरन्तर यही ध्यान रहता है कि मेरी सिद्धि होनी चाहिए, मेरा ही विकास होना चाहिए। ऐसा व्यक्ति भी इक्कड़ होता है।

आज गायत्री जयंती का दिन है जिसे विश्वामित्र ने सिद्ध किया था। अपनी तपश्चर्या का लाभ उन्होंने सारे समाज को

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

दिया। एक दिन उन्होंने अपने शिष्य हरिश्चन्द्र से पूछा, कि क्या हम आपको मार डालें, आपको तबाह कर दें? तो उन्होंने कहा कि आपने जब इसके द्वारा ही महानता प्राप्त की है तो हम भी जलने के लिये तैयार हैं, आप सहर्ष इस कार्य को करें एवं हमारी आध्यात्मिक परीक्षा लें। गुरुवर! हम भी इस मस्ती का लाभ उठायेंगे। राजा हरिश्चन्द्र अपनी परीक्षा में सफल हो गये और इस धरती पर धन्य हो गये। राजा हरिश्चन्द्र का ड्रामा देखकर महात्मा गाँधी रो पड़े थे और उन्होंने यह निश्चय किया कि हम भी इसी प्रकार का [illegible] जिएँगे। मित्रो! मुसीबतों का जीवन [illegible] बिगाड़ नहीं सकता है। आदमी की जिन्दगी में से मुसीबतें निकल जाएँ तो, उसका जीवन दो कौड़ी का होता है। आदमी की जिन्दगी में इसके कारण ही निखार आता है, उसका विकास होता है। महापुरुष संत इसी कारण से महान बने हैं और बढ़े हैं। अगर इनसान अपने लिए मुसीबत न उठायेगा तो दूसरों के लिए वह क्या कर सकता है? हमने भी ऐसी मुसीबतें उठायी हैं। मित्रो! ऐसी मुसीबत का ही नाम तप है, जो हर इनसान के विकास के लिए आवश्यक है। आप इसके लिए घबड़ाएँ नहीं, उसे बुलायें। इसके द्वारा आदमी में पैनापन आता है, आदमी में निखार आता है। यह आदमी को सोने का बनाती है। आदमी को प्रामाणिक बनाती है। विश्वामित्र पर गायत्री आई तो उन्हें मुसीबतों से गला-तपाकर महान बना दिया।

हम आपको प्राचीनकाल की बात न करके आज की बात करना चाहते हैं। आज गायत्री जयंती का दिन एक ऐतिहासिक दिन है। यह भगवान का दिन है। आपको दिखलाई नहीं पड़ता है। रामचन्द्रजी जब पालने में झूल रहे थे तो कब आपको भगवान दिखलाई पड़े? आपको तो तब भगवान दिखलाई पड़े, जब वे रावण को मारकर आये और रामराज्य स्थापित कर दिया था। परन्तु कुछ ऐसे आदमी भी होते हैं जिन्हें भगवान पहले दिखाई पड़ जाते हैं। उसी प्रकार आज भी भगवान का अवतार हो गया है। यह प्रज्ञा अवतार समय की आवश्यकता है। जब कभी भी पृथ्वी पर अनीति, अत्याचार बढ़ता है, भगवान का अवतार होता है। आज की ऐसी ही स्थिति है तथा इस कारण से 'प्रज्ञा अवतार' हो गया है। इसे भी कुछ लोगों ने राम की तरह पहचान लिया है तथा वे प्राणपण से उनके कार्यों में लगे हैं।

आज का दिन महत्त्वपूर्ण है। आज गायत्री जयंती का दिन है। अगले दिनों आज के दिन से ही इनसान के अंदर एक दिव्य हलचल होगी। कुरीतियाँ मिटेंगी, अनीति समाप्त होगी। सभी धर्म एवं संस्कृतियाँ एक हो जाएँगी। धरती पर स्वर्ग का अवतरण होगा। जमाना एक हो जाएगा। भगवान एक हो जाएँगे। आज तरह-तरह की वेश-भूषा पहने, विभिन्न भाषाओं को बोलते हुए लोग दिखाई पड़ते हैं। अगले दिनों ऐसा मालूम पड़ता है कि ये सब चीजें समाप्त होने वाली हैं। आचार, संस्कृति, भाषा सब एक हो जाएँगे। सारे के सारे धर्म, राष्ट्र, संस्कृति एक होने वाली हैं। अगले दिनों विशाल परिवर्तन होने वाला है। "**वसुधैव कुटुम्बकम**" की भावना पनपने वाली है, कमाने वाला अकेला नहीं खा सकता है, उसे समाज, परिवार, राष्ट्र को देखकर चलना होगा। हम कमाते तो जरूर हैं, लेकिन हमारे इस पैसे पर केवल हमारा ही हक नहीं है। हमारी बूढ़ी माता कमाती नहीं है, उसके लिये भी हमें देना होगा, उसकी व्यवस्था बनानी होगी। आप कमा तो सकते हैं, परन्तु खाने पर आपके ऊपर अंकुश लगा है। आप केवल अकेले खा नहीं सकते हैं। आप समाज को, परिवार को, नौकर को खिलाकर खायें। आने वाला दिन आपको दिखलाई पड़ता है कि नहीं, यह पता नहीं, परन्तु हमें दिखलाई पड़ता है कि ऐसा ही होना वाला है।

आज गायत्री माता का जन्मदिन है। यह बहुत ही शानदार दिन है। गायत्री माता किसी समय वेदमाता बनी थीं जिन्होंने सारे वेदों को जन्म दिया था। सारी संस्कृति एवं सभ्यता को जन्म दिया था। उस समय यह गायत्री माता वेदमाता बनी थीं। उसके बाद गायत्री माता देव-माता बनीं। हिन्दुस्तान के निवासी देवता थे। वे स्वयं तो खाते कम थे, पर खिलाते अधिक थे। उन्होंने खाया कम, खिलाया ज्यादा। ब्राह्मणों ने खाया कम खिलाया ज्यादा। ऋषियों ने खाया कम, खिलाया ज्यादा। यहाँ के नागरिकों ने खाया कम, खिलाया ज्यादा। यहाँ के नागरिकों ने सारी दुनिया में अपनी सम्पदा को बाँट दिया। वे विदेशों में चले गये, इण्डोनेशिया, अमेरिका आदि सारी दुनिया में चले गये और अपनी प्रतिभा को बिखेरते चले गये। वे देवमानव थे, उन्हें अकेले खाते समय मन में अप्रसन्नता होती थी तथा खिलाते समय वे प्रसन्न होते थे। अकेले खाने के समय वे शर्मिन्दा होते थे। एक बार हमें भी शर्मिन्दा होना पड़ा। माताजी ने किसी के कहने पर हमें एक गिलास मौसमी का रस दे दिया था। हम काम में व्यस्त थे, माताजी ने दिया तो हम उसे पी गये, परन्तु थोड़ी देर के बाद पेट में ऐसा लगा कि किसी ने हमें तेजाब पिला दिया। हमें मालूम पड़ा कि ये तो मौसमी का रस था। हमने अपने मुँह में अँगुलियाँ डालकर उल्टी कर दी तथा उस समय तक चैन नहीं आया जब तक कि मौसमी का रस पेट से न निकल गया। माताजी ने पूछा कि क्या मक्खी आ गई? हमने कहा कि नहीं, हम इसे कैसे पी सकते हैं? हमारे बच्चे जो गायत्री तपोभूमि में हमारे कहने से, हमारी आवाज पर आ गये हैं, उनको न दूध मिलता है, न घी। उनके बच्चे बिना दूध के रहते हैं। तब हम मौसमी का रस कैसे पी सकते हैं?

मित्रो! अगले दिनों लोगों को खाने से ज्यादा मजा खिलाने में आयेगा। अकेले खाने वालों को अगले दिनों लोग यह कहेंगे कि आपको शर्म नहीं आती है, आप खाते चले जाते हैं, खाते चले जाते हैं। आपको शर्म आनी चाहिए। पड़ोसी तथा पीड़ित-पतित एवं भूखे लोग आपको दिखलाई नहीं पड़ते हैं, मक्कार कहीं का। केवल अपना पेट, अपनी बीबी, अपने बच्चे ही दिखलाई पड़ते हैं। आपके भीतर से जब गायत्री माता उदय होंगी तो आपको चकमका कर रख देंगी। आपके विचारों में परिवर्तन कर देंगी। आपको सारा परिवार, समाज, देश दिखलाई पड़ेगा। आप देवता बनते चले जाएँगे। गायत्री माता हंस पर बैठकर कमण्डल लेकर नहीं आती है, वह केवल करुणा के रूप में, दया के रूप में आपके अंदर आएँगी। यही उनका स्वरूप है। जो आपको देवता बनाकर जाएँगी। उस समय आपको देवता की तरह से जीना पड़ेगा। आप हैवान तथा शैतान की तरह से नहीं जी सकते हैं। आप मालदार एवं पूँजीपति की तरह से जी नहीं सकेंगे। आपके जीने

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

एवं रहने का ढंग अजीब हो जाएगा। आप बाँटकर खाएँगे तथा दूसरों की मुसीबतों को बँटाने का काम करेंगे। आप अपनी खुशहाली को बाँट देंगे तब प्रसन्नता आपके अंदर से आ जाएगी।

आज करुणा की माता जन्म लेने वाली है। आज गायत्री माता जन्म लेने वाली है। आज प्रज्ञावतार जन्म लेने वाला है। अवतार कब जन्म लेते हैं जब-

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य, तदात्मानं सृजाम्यहम्॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे-युगे॥

अवतार लेने के बाद भगवान केवल तीन काम करते हैं। सज्जनों की रक्षा, दुष्प्रवृत्तियों का उन्मूलन और धर्म की स्थापना करनी पड़ती है उनको। भगवान एक ही काम करता है चाहे वह बाहरी दुनिया की दुष्प्रवृत्तियाँ हों या मनुष्य के अंदर हों, उसे तोड़ता, उसे नाश करता हुआ चला जाता है। उसे हटाता चला जाता है। वह उसके साथ ही निर्माण यानी जिलाने का काम भी करता है। सज्जनों की रक्षा भी करता है। यह डबल रोल करता है। भगवान इनसान की बुरी परिस्थितियों को तोड़ता चला जाता है तथा दूसरा काम बनाता चला जाता है अर्थात् परिस्थितियाँ ठीक करता चला जाता है। यह भगवान का डबल रोल है- ध्वंस एवं सृजन का। इसी का नाम गलाई एवं ढलाई है। आप टाटानगर चले जाना, वहाँ देखना बड़ी-बड़ी चिमनियाँ बनी हुई हैं। उसमें लोहे के टुकड़े आदि डाल दिये जाते हैं। वहाँ पर उनकी गलाई होती है। उसमें सब गलकर एक हो जाते हैं। उसमें गलत चीजें भी गल जाती हैं। इसका क्या नाम है? गलाई। उसके बाद अच्छी चीजें बन जाती हैं, उसे ढलाई करके नया रूप दे दिया जाता है। इसी प्रकार भगवान का ध्वंस एवं सृजन का काम भी चलता रहता है। भगवान अगर किसी को मुसीबत भी देता है तो किसी खरे मकसद के लिए देता है।

मैं क्या कह रहा था आज गायत्री जयंती के दिन- कि अगले दिनों जो समय आने वाला है उसमें भगवान गलाई-ढलाई करेगा। आप हमारी आँखों से, हमारे दूरबीन से देखिये न। नहीं गुरुजी! अगले दिन तबाही आयेगी। बेटे तबाही आयेगी तो निर्माण के लिए आयेगी। तो क्या अगले दिन डरावने हैं? हाँ डरावने भी हो सकते हैं। इसके लिए हम क्या कह सकते है बच्चे पैदा होते हैं तो मुसीबत भी आती है, परन्तु उसके बाद खुशियाँ भी मनायी जाती हैं। मिठाई भी बाँटी जाती है। अगले दिन हमको खुशहाल दिखाई पड़ रहा है। अगले दिनों में हमें खूबसूरत इनसान दिखलाई पड़ रहे हैं। खुशहाल दुनिया दिखलाई पड़ रही है।

अगले दिन हमको गायत्री माता का वह दिन दिखाई पड़ रहा है, जो आज का दिन है, जो लोगों को प्रभावित करने वाला है। इनसान के भीतर का देवता जो सो गया है, वह जगने वाला है। अगले दिनों इनसान के भीतर से देवता जगेगा। इसे मनुष्य में देवत्व का उदय कहा जा सकता है। हमने इसके साथ यह भी कहा है कि धरती पर स्वर्ग का अवतरण होगा। अगले दिन दुनिया में बहुत शानदार एवं अच्छी परिस्थितियाँ आयेंगी। जमाना बहुत सुंदर आएगा। धर्म, संस्कृति, भगवान सब एक हो जाएँगे, ताकि कोई आपस में न लड़ सकें। अगले दिनों भाषाएँ भी एक हो जाएँगी। जो आपस में लड़ती-मरती हैं, वह एक हो जाएँगी। अगले दिनों आचार एवं संस्कृति एक हो जाएगी। पर्व जो आयेंगे, उसमें सबको छुट्टी मिलेगी। कोई एक व्यक्ति का पर्व नहीं होगा। संस्कृति, सभ्यता, इनसान, राष्ट्र एक होने वाले हैं। एक ही संस्कृति अगले दिनों चलने वाली है। सारी दुनिया एक कुटुम्ब की तरह रहेगी इसमें बूढ़ी माता तथा जो नहीं कमा रहे हैं, उनका भी हक होगा। सब मिलबाँट कर खाएँगे। आपस में प्रेम, आत्मीयता होगी। कमाने वाला ही कवल नहीं खा सकता है। उस पर अंकुश लगा हुआ है।

अगले वाले दिन हमको बहुत शानदार दिखलाई पड़ रहे हैं, आपको दिखलाई पड़ रहा है या नहीं। हम नहीं कह सकते। इस बार गायत्री माता सभी को देवता बनाना चाहती है। वे सभी को महान बनाना चाहती हैं। अगले बीस साल बड़े महत्त्वपूर्ण हैं। इस समय आप लोगों को कुछ विशेष काम करने हैं। आप सब लोग लोभ-मोह की बेड़ियों को काट डालिए। अरे ये हथकड़ियाँ आपके हाथों में लगी हैं उसे काटिये। ढेरों की ढेरों अकल, समय हर आदमी के पास है। आपने अभी तक इसे बेकार में खर्च किया है तथा बर्बाद किया है। अब आप समझदार आदमी बन जाएँ तथा इसका उपयोग अब सही ढंग से करना सीखें। आप कम में गुजारा करना सीखिये। औसत भारतीय का जीवन जीना सीखिये, ताकि कुछ राष्ट्र एवं समाज के लिए भी खर्च कर सकें। आप अपने बच्चों को संस्कारवान बनाने का प्रयास करें, आपका बच्चा लुहार, बढ़ई हो जाये तो कोई हर्ज की बात नहीं है। अगर आप बड़े आदमी जैसे वकील, दारोगा, डॉक्टर, इंजीनियर न बनाकर उसे संस्कारवान बनायें तो बेहतर है। ये बड़े आदमी आपके लिए, अपने लिए, समाज के लिए समस्या बन जाएँगे तथा तबाही लाएँगे। आप उन्हें संस्कारवान बनायें। आप अपने विचारों में अगर परिवर्तन कर सकें तो बहुत मजा आयेगा। आज गायत्री का जन्मदिन है। अगर वह आपके जीवन में आ गयी तो वास्तव में आपको धन्य कर देगी।

अभी तो आपकी धन, शक्ति-सामर्थ्य, अकल सब बेकार काम में खर्च हो रही है। लेकिन जिस दिन गायत्री माता आपके जीवन में आएगी तो सारे के सारे जीवनक्रम में उलट-फेर हो जाएगा। हमारा गुरु जिस दिन हमारे पास आया आज से ५५ वर्ष पूर्व, तो उसने हमारे लोभ, मोह की बेड़ियों को काट डाला। वह दिन परम सौभाग्य का दिन था। उस दिन मेरे गुरु के रूप में भगवान आये थे और उस दिन से हम अपनी सारी चीजें अपने गुरु को, भगवान को सौंपते चले गये। हम अपनी अकल को, पैसा को, सब कुछ को भगवान को सौंपते चले गये और मालदार होते हुए चले गये। एक दिन एक व्यक्ति कह रहा था कि बच्चा जिस दिन जन्म ले, उसके नाम एक हजार जमा कर दीजिए तो वह ३९ साल बाद एक लाख बत्तीस हजार हो जाता है। पहले हमें विश्वास नहीं हुआ, परन्तु उसने बतलाया कि हर पाँच साल के बाद जमा राशि डबल होती चली जाती है। पता नहीं यह कहाँ तक सत्य है, परन्तु हमने भगवान के बैंक से तो न जाने कितनी चीजें प्राप्त कर लीं तथा आज हम आप सबों से ज्यादा मालदार हैं। हमारे गुरु ने, भगवान ने अपने बैंक से इतना दिया कि कोई भी बैंक या ऑफिस इतना नहीं दे सकता।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अतः आज हम आप सबों से कहना चाहते हैं कि आप सब लोग मोह-लोभ की अपेक्षा, बेटे-पोतों को देने की अपेक्षा समाज को, राष्ट्र को खिलाना सीखें तो आपके भी मालदार होने की गुंजायश होगी। आपसे प्रार्थना है कि आप स्वयं खाने की अपेक्षा खिलाना सीखें। आप कहते हैं कि हम खाएँगे तो पहलवान हो जाएँगे। हम कहते हैं कि अन्न खाने से पहलवान नहीं हो सकते हैं। आप अगर अकेले खाएँगे तो आप सबों के पेट में दर्द होगा तथा 'डाइबिटीज' होगी। आप विटामिन 'ए' खाएँगे, अण्डा खाएँगे तो ही पहलवान नहीं हो जाएँगे । घास या पत्ते खाने से भी आदमी ताकतवर हो सकता है। हम जब हिमालय चले जाते हैं, उस समय हमें केवल वहाँ पर घास तथा पत्ते ही मिलते हैं। परन्तु क्या हम आपसे कम ताकतवर हैं? वहाँ कंद-मूल भी नहीं हैं। हम पत्ते को उबाल कर खा लेते हैं और आज हमारी सेहत १७ वर्ष के लड़के की तरह है। हम कितना काम करते हैं, आप जानते नहीं? हम आज ७० वर्ष के हो गये परन्तु १७ वर्ष के लगते हैं। आप वही खायें जो ब्राह्मण, सदाचारी, अपरिग्रही खाते रहे हैं तो आप देखेंगे कि आपकी सेहत कैसी रहती है?

आप आज गायत्री जयंती के दिन यहाँ आये हैं तथा यहाँ पर्व मना रहे हैं। आपसे प्रार्थना है कि आप समर्पित हों तो आपका यह पर्व मनाना सार्थक होगा। यह नसीहत हम आपको इस पावन पर्व के दिन दे रहे हैं। यह नसीहत हमारे गुरु ने हमें दी थी। उसके पहले हमारी माताजी ने दी जो ९२ वर्ष की होकर मरी थीं। वे एकादशी का व्रत करती थीं और उस दिन वे 'सीधा' निकाल कर देती थीं और कहती थीं कि हमने पेट काटकर बचाया है, इसे मंदिर में देकर आओ। "पेट काट कर बचाना और लोकहित में यानि कि भगवान को देना - इसी का नाम यज्ञ है।" आप हवन तो करते हैं, परन्तु कुर्बानी, परोपकार, सेवा के लिए कुछ करना नहीं चाहते हैं। मित्रो, इसी का नाम अग्निहोत्र है, इसी का नाम यज्ञ है। अगर आप भी इस यज्ञ की प्रवृत्ति, लोकहित का जीवन जीने की प्रवृत्ति लेकर चले जाएँ तो आपका जीवन धन्य हो जाएगा। हम मरते-मराते, जीवन के अंतिम क्षणों में आपको एक नसीहत देकर जाना चाहते हैं कि आप एक शानदार आदमी बनें। लोकहित का जीवन जीना सीखें।

आज गायत्री जयंती के दिन हम एक बात और कहना चाहते हैं कि अगर आप आज अपने गुरु की नसीहत के मुताबिक, गायत्री माता के नसीहत के मुताबिक जो करुणा और दया की प्रतीक हैं- लोकमंगल हेतु अपने अकल, धन, समय को लगा सकेंगे तो आपका जीवन धन्य हो जाएगा। अगले दिनों आप शानदार जीवन जिएँ, आप किफायतशारी जीवन जियें। आप अपने औलाद का, परिवार वालों का मोह न करें तो आपकी जिन्दगी तथा भविष्य शानदार बनता हुआ चला जाएगा। आपको हम जिम्मेदारी से विमुख होने को नहीं कहते हैं। हमें परिवार शब्द से बहुत प्रेम है तथा हमने अपनी संस्था का नाम गायत्री परिवार, प्रज्ञा परिवार रखा है। परन्तु हम एक बात कहना चाहते हैं कि आप उसमें लिप्त न हों, मोहग्रस्त न हों। हमने युग निर्माण परिवार, गायत्री परिवार इसी उद्देश्य से बनाया है। आपने परिवार तो बनाया है, परंतु आपने उसे बड़ा बना दिया है यानी कि मालदार बना दिया है। आप बड़ा मत बनाइये, आप केवल संस्कारवान बनाने का प्रयास करें। आप लोभ, मोह को कम करें तथा आप लोग कुछ समाज, देश तथा संस्कृति के लिए काम करें तो मजा आ जाएगा।

यह समय बीजारोपण का है। यह गायत्री का, प्रज्ञावतार का दिन है। यह सारे विश्व में फैलने वाली है, आप देख लेना। गायत्री महामंत्र जो विवेक, सद्विचार, सद्भावना, प्रेरणा, शालीनता, उज्ज्वल भविष्य, नये युग का मंत्र है। यह सारे विश्व में फैलने वाली है। यह मत्स्यावतार की तरह फैलने वाली है, यह हम आपको दिखा देंगे। ब्रह्माजी ने जिस मछली को कमण्डल, तालाब, नदी, समुद्र में डाला था वह बढ़ती चली गई। आने वाले दिनों में यह गायत्री माता भी इसी प्रकार बढ़ने वाली है, आप विश्वास रखें। इस प्रकार की कथा आपने सुनी है, परन्तु हमारे जैसा नाचीज आदमी यह कह रहा है, आप नोट कर लें। आगे गायत्री भी मत्स्यावतार की तरह सारे विश्व में फैलने वाली है। आज भी हमारे २४ लाख व्यक्ति हमारा कहना मानते हैं, हमें गुरुजी कहते हैं। वे हमसे दीक्षा प्राप्त किये हैं। वे हमसे जुड़े हैं। एक आवाज पर हर प्रकार की कुर्बानी के लिए तैयार रहते हैं। आप समझते नहीं हैं २४ लाख किसे कहते हैं ? आपने कभी सोचा है २४ लाख आँखें, २४ लाख हाथ तथा २४ लाख घण्टे कितने होते हैं? इन्सान आठ घण्टे काम करता है, परन्तु २४ लाख व्यक्तियों के एक घंटे श्रम का मतलब है ४ लाख आदमियों का श्रम। ६ घण्टे प्रतिदिन के हिसाब से उन्हें औसतन २० रुपये भी प्राप्त हो जाते हैं तो जरा मूल्यांकन कर लेना कि हम कितने बड़े तथा सामर्थ्यवान् आदमी हैं। आप जरा मूल्यांकन करें कि एक दिन में, एक माह में और एक साल में यह कितना हो जाता है। यहाँ गायत्री माता भी मत्स्यावतार की तरह से हमारे कमण्डल में से बढ़ते-बढ़ते कहाँ तक पहुँच गयी है। हमने २४ गायत्री शक्तिपीठ बनाने का संकल्प लिया था, कसम खायी थी, परन्तु आज कितना बन गया, आपको पता नहीं है।

अब हम गायत्री माता के बारे में कहना चाहते हैं। यह विकसित होने जा रही है। इसका विकास होने जा रहा है। अगर किसी डूबते हुए को तिनके का सहारा मिल जाता है तो वह बढ़ता, फलता, फूलता चला जाता है। इसी गायत्री जयंती से हमने नया संकल्प लिया है। हिन्दुस्तान में सात लाख गाँव हैं। हिन्दुस्तान में हमने जन्म लिया, यहाँ की मिट्टी में हमने खेला है, यहाँ हमने पढ़ाई की है, जन्म हुआ है, हवा खायी है। इसी संस्कृति में हमने जीवन जीना सीखा है। इस संस्कृति का कर्ज हमारे ऊपर है। अतः विवेक की देवी, दया, करुणा, उज्ज्वल भविष्य की देवी की एक लाख व्यक्तियों के द्वारा २४० करोड़ जप गाँवों में हमें कराना है। धर्मानुष्ठान की शृंखला में हम अभूतपूर्व कार्यक्रम प्रारम्भ करने जा रहे हैं, जो आज तक के इतिहास में एक अभूतपूर्व कार्य माना जा सकता है। पुराने जमाने में नैमिषारण्य में सारे ऋषि आते थे एवं उनका भावभरा संकल्प होता था। आज गायत्री जयंती के दिन विवेक की देवी के जन्मदिन पर आप सब जो बैठे हैं, वे सब हमारे पूर्व जन्म के ऋषि, मुनि हैं, जिनने कि प्रारम्भ में भी कार्य किये हैं तथा आगे भी काम करेंगे। आज का यह धर्मानुष्ठान इस युग का महत्त्वपूर्ण धर्मानुष्ठान है।

आज से एक लाख व्यक्तियों द्वारा २४० करोड़ जप नित्य का प्रारम्भ हो गया।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

आज का दिन बड़ा शानदार दिन है। धर्मानुष्ठान की शृंखला में, अनुष्ठान की शृंखला में आज का दिन बहुत महत्वपूर्ण है। नैमिषारण्य में एक लाख व्यक्ति कभी इकट्ठे नहीं हुए हैं। आप बिना माइक के प्रवचन नहीं दे सकते हैं। मित्रो, एक लाख व्यक्ति मायने रखता है। यह गायत्री माता का विस्तार है। आज से एक लाख व्यक्तियों द्वारा नित्य २४० करोड़ का जप का कार्य होगा। यह वातावरण का संशोधन, धरती पर स्वर्ग एवं मनुष्य में देवत्व लाने के लिये प्रारम्भ किया गया है। इससे सारे वातावरण में परिवर्तन हो जाएगा। एक लाख गाँव में हम गायत्री चरणपीठ बना देंगे। हमने इसकी अनुमानित लागत २५० रुपये रखी है। हम उसे उपस्थित करा देंगे। इस काम के लिए कोई भी व्यक्ति इतनी धनराशि दे देगा तथा हमारा यह काम पूरा हो जाएगा। मित्रो! यह हमारा सपना है जो पूरा होगा। हमने हमेशा सपना देखा है। यह भी हमारा एक सपना है। हमने बहुत शानदार सपना देखा है तथा उसे रंगीन बनाने की कोशिश की है। यह भी हमारा एक सपना है। क्या सपना है? १ लाख व्यक्तियों में जनचेतना जगाना तथा २४० करोड़ जप करने की पद्धति प्रारम्भ करना। हर गाँव में नित्य हवन, चालीसा का पाठ, मंत्रलेखन, जप तथा जन्मदिन मनाया जाएगा। हम हर गाँव में ४ घण्टे काम करने वाला एक आदमी रख करके जाएँगे, जो उपर्युक्त सारे कामों को पूरा करेगा तथा गाँव के अंतर्गत चेतना जाग्रत करेगा। वह ५० रुपये में भी काम कर सकता है। आज हर घर में दो-दो आदमी बेकार बैठे रहते हैं। उन्हें खेती तथा दूसरा काम कुछ भी नहीं है, उन्हें आप कहें तो वह ४ घण्टे समय दे देगा, आप इसे ५० रुपये दे दें। इसके अलावा उस गाँव में एक-एक मुखिया (मैनेजर) मिल जाएगा जो कामों की देखभाल करेगा। इस प्रकार हर गाँव के दो आदमी के हिसाब से २ लाख आदमी हमारे हो जाएँगे जो हमारे कामों को निष्ठा के साथ पूरा करेंगे।

हमने संकल्प लिया है कि देश के अंदर से निरक्षरता को हम मिटायेंगे तथा लोगों को साक्षर बनायेंगे। सरकार यह काम नहीं कर सकती है। वह तो प्राइमरी स्कूल की व्यवस्था ही नहीं देख पाती है। जैसे स्वामी केशवानन्द जी ने शेखावाटी के गाँवों में मुट्ठी फण्ड योजना के द्वारा प्राइमरी स्कूल खोला था। हम भी उस योजना को सफल करेंगे। इसके साथ ही हर आदमी की सेहत की जिम्मेदारी हम उठायेंगे जो असंयम, खानपान, रहन-सहन के कारण चौपट हो गई है। हम उसे लोगों को समझाकर परिवर्तन करेंगे। आज जो अनास्था संकट हावी हो गयी है उसे हम दूर करेंगे। हम बहुत से काम करेंगे। आज सामाजिक कुरीतियाँ जो बढ़ रही हैं उन्हें हम समाप्त करेंगे।

आज गायत्री जयंती के दिन से अपने चरणपीठ तथा १ लाख परिजनों के सहयोग से हम बड़े से बड़े कदम उठाने वाले हैं । कौन-से कदम उठाने वाले हैं? दहेजप्रथा और फिजूलखर्ची को समाप्त कर देंगे जिसने इनसान को गरीब बना दिया है। समाज को बर्बाद करके रख दिया है। एक लाख आपने फिजूल-खर्जी में बर्बाद कर दिया। आपने सोचा नहीं कि एक लाख रुपये का मासिक ब्याज एक हजार आता है। आपने यह विचार नहीं किया । आपने अपने नाक कटने की वजह से आतिशबाजी, बाजा-गाजा तथा फैशन-परस्ती को बढ़ावा दिया। यह बेहूदापन बंद करें। अगर आपकी नाक इस कारण कटती है तो सूर्पनखा की तरह से आपकी नाक अवश्य कटनी चाहिए। हमने साहस के साथ कदम उठाया है। लानत भरे यह विवाह मुझे बिल्कुल नापसंद हैं। इसे दैत्य विवाह कहते हैं। यह सभ्यता के नाम पर डकैती और बलात्कार है। हमारे संकल्प महान् हैं, जो शक्ति हमारे साथ है उसके माध्यम से हम यह काम अवश्य पूरा करेंगे।

आज गायत्री जयंती के दिन जो शादियाँ हो रही हैं। यह प्रतीक है, यह प्रारंभ है। हमने शादियों का धंधा नहीं लिया है। आज से हमने क्रान्ति का प्रारम्भ किया है। शादियों के अवसर पर हंस के मोटर पर बैठा हुआ आदमी हमें नरपिशाच-सा नजर आता है।

मित्रो, हम इसके विरोध में बगावत शुरू करेंगे। कहाँ से करेंगे? मित्रो, हम देहात से शुरू करेंगे। यह शहर तो बर्बाद हो गये हैं। न जाने कितनी पार्टियाँ, कितने नेता, कितने पेपर, यह सारा बर्बाद हो गया है। आज गायत्री जयंती के पुनीत पर्व पर हम देहातों में चलें। हिन्दुस्तान की आत्मा आबादी देहातों में बसती है। उसके विकास के लिए, प्रगति के लिए हम उधर की ओर चलें। यह क्षेत्र खाली पड़ा है जहाँ न कोई सम्प्रदायवाद है, न कोई आडम्बर है। असली हिन्दुस्तान तो वहीं है जो खाली पड़ा हुआ है। हम उसका विकास करना चाहते हैं। गायत्री माता तथा हमारा गुरु हम पर हावी है और न जाने कैसी-कैसी बेचैनी पैदा करता है, हमें सोने भी नहीं देता है। आज गायत्री जयंती के दिन भगवान करे यह बेचैनी आपके अंदर भी आवे। आप भी हमारी तरह से समाज के लिए, राष्ट्र के लिए, पीड़ा-पतन के निवारण के लिए कुछ अपनी अकल, समय और धन दे सकें तो यह दुनिया सुंदर बन सकती है तथा धरती पर स्वर्ग एवं मनुष्य में देवत्व का उदय हो सकता है। जो वास्तव में हमारा सपना है। गायत्री माता, करुणा की माता अब अपना विस्तार चाहती है। आप उठिए तथा हमारे साथ चलने के लिए आगे आइये। मानव जीवन जो मिला है, उसे हमारी तरह धन्य बनाने का प्रयास कीजिए।

भगवान करे आपको भी सामर्थ्यवान देवी प्राप्त हो। आपको भी ऋद्धि-सिद्धि मिले। जो हमें ऋद्धि-सिद्धि का चमत्कार मिला है, वह आपको भी मिले, हमें लाखों आदमियों के आँसुओं को पोंछना अच्छा लगता है। आप भी गायत्री माता से माँगिए। आप तो केवल अपने लिये माँगते हैं। आप समाज के लिए, राष्ट्र के लिए माँगिए तो इसके साथ आपको भी मिलेगा। हमें वर्तमान और भविष्यकाल दोनों ही शानदार दिखलाई पड़ रहे हैं। हम गायत्री माता से यही प्रार्थना करते हैं कि हे माता! हमें दया, करुणा, क्षमा, शालीनता और ममता दीजिए। मित्रो! आपको भी यही माँगना चाहिए। यही हमारी, गायत्री माता तथा महाकाल की प्रेरणा है। अगर आप इसे समझ जाएँ तथा उस पर चलने, उतारने का प्रयास करेंगे तो आज गायत्री जयंती तथा आपका जीवन धन्य हो सकता है।

ॐ शान्ति! 卐

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमवंदनीया माताजी की अमृतवाणी-मातृवाणी

भगवान भाव के भूखे होते हैं

(आश्विन नवरात्रि ६-१०-१९८४ में दिया गया प्रवचन)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

सज्जनो एवं देवियो!

जब बरसात आती है तब बादल छा जाते हैं और सर्वत्र वर्षा होती है। क्या बादल कभी पक्षपात करते हैं? नहीं करते हैं। वह तो सर्वत्र बरसते हैं। जहाँ कहीं भी पात्र मिलता है, वह वहीं पर जल भर देते हैं, जहाँ पात्रता की कमी होती है, वहाँ जल की कमी आती है। पात्रता जितनी अधिक हमारे जीवन में होगी, उतनी ही हमारे जीवन में समृद्धि आती है, यदि हमारे जीवन में श्रद्धा हो तो भगवान हमारे पास खिंचता चला आयेगा। भगवान निरन्तर हमारे पास ही रहते हैं। पिछले दिनों मैंने कहा था, यद्यपि ये शब्द थोड़े अलग हो जाएँगे। हमारे बच्चे प्रायः कहते हैं-अरे माताजी! गुरुजी के दर्शन नहीं हुए हैं। तो क्या आप हाड़-माँस की आँखों से दर्शन करने आये थे? तो माताजी किससे करें? मैं आपके सामने बैठी हूँ। आज मेरा यहाँ दूसरा दिन है। परन्तु मुझे अनुभव हो रहा है- मेरा देवता मेरे पास बैठा है। आपको क्यों नहीं दिखाई देता। आप अपनी मन की आँखों को खोलकर देखिये, तो आपको मालूम पड़ेगा कि गुरुजी आपके साथ हैं। आप उस 'दृष्टि और चिन्तन' को लेकर चलिये जिसके लिए उन्होंने तप किया। बच्चों का दुःख-दर्द हमारा अपना दुःख दर्द है। कोई कहता है कि माताजी हमें गुरुजी के दर्शन होने चाहिए। क्यों बेटे! जैसा हमारे लिए तू है, वैसे ही और हैं। हमारे लिए सारा विश्व एक बराबर है। फिर ऐसा कैसे हो सकता है?

भावनाओं का आदान-प्रदान- बेटे जो सामने होता है, उसका अधिकार अधिक होता है। आप कितने वर्षों से हमसे जुड़े हुए हैं। आपका अधिकार पहले होता है। माता-पिता की थाली में यदि भोजन परोसा जाता है और बच्चा सामने बैठा हो तो माँ-बाप खा नहीं सकते। उनका मुँह नहीं चलेगा। अरे, हमारा अतिथि-हमारा बच्चा हमारे सामने भूखा खड़ा है तो हम कैसे खा सकते हैं। ऐसे बिरले ही होंगे, जो बच्चों को छोड़कर खा लेंगे। आप हमारे परिजन हैं, हमारे बच्चे हैं, हमारे अतिथि हैं। आप हमारे यहाँ आये 'शान्तिकुंज' में, तो आप खाली हाथ कैसे जा सकते हैं। पात्रता के अनुरूप आपको अवश्य मिलेगा। अपने आप की सफाई आप इसी दृष्टि से करेंगे। जो आप यहाँ कामना लेकर आये हैं, दुःख-दर्द, कठिनाई लेकर आये हैं, उसका क्या हुआ? मुझे यह कहना पड़ रहा है कि आपकी तो आँखों की सफाई हो गयी। हमने हमेशा कमाया है, परन्तु रात को खाली हाथ सोये हैं- कारण दिन भर लुटाया है। मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि जो हम करने में समर्थ होंगे, वह आपके लिए जरूर किया जाएगा।

एक पेड़ पर कबूतर और कबूतरी बैठे हुए थे। एक भूखा बहेलिया उसी पेड़ के नीचे लेटा हुआ था। उसने कहा मैं तीन दिन का भूखा हूँ। यह सुनकर कबूतर और कबूतरी ने आपस में कहा कि यह बहेलिया हमारा अतिथि है। हमारे होते हुए यह भूखा नहीं रह सकता। बहेलिये ने सर्दी से बचने के लिए आग जला रखी थी। कबूतर ने बहेलिये से कहा-आप हमारे अतिथि हैं, हमारा फर्ज है कि हम आपकी भूख को शांत करें। हम दोनों अग्नि में कूदकर अपने आपको भून लेंगे। आप हमें खाकर अपनी भूख को शांत कर लेना। दोनों आग में कूद गये। बहेलिया की आँखों में आँसू आ गये। उसने कहा कि हम इन निर्दोष पक्षियों को मारते हैं। जब कबूतर और कबूतरी दोनों में मानवता बाकी है- तो हम मनुष्यों में क्यों नहीं हो सकती? उसने उसी समय अपने धनुष-बाण फेंक दिये। यदि तुम भगवान के भक्त हो तो भगवान ने जो क्रिया-कलाप तुमको सौंपे हैं, उन्हें पूरा करो। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि जो भी हमारी तप की पूँजी होगी, उसमें आप हिस्सेदार हैं।

मैंने आपको बादल का उदाहरण दिया। उसका अर्थ है-पात्रता । जब तक हमारी पात्रता विकसित नहीं होती तो भगवान की क्या चलती है, हमारे पास इनसान भी नहीं आयेगा। जब आपके जीवन में पात्रता आ जाएगी तो भगवान स्वयं आपके पास आ जाएँगे। जब वर्षा होती है तो कहते हैं केले में कपूर पैदा होता है और सीप में मोती पैदा होते हैं। काले साँप में मणि पैदा हो जाती है। बाँस में वंशलोचन पैदा हो जाता है। आप इस सिद्धान्त को समझ लीजिए। जब तक मुँह नहीं खुला होगा, तब तक कोई भी बूँद किसी वस्तु में प्रवेश नहीं कर सकती। इसलिए आप अपनी सिद्धियों को विकसित कीजिए। जब आप अपने अंदर पात्रता विकसित कर लेंगे, तो आप गायत्री माता की आराधना के योग्य हो जाएँगे। आप यहाँ अनुष्ठान करने के लिए अये हैं, तो किसके संरक्षण में आप अनुष्ठान कर रहे हैं। जिसके मार्गदर्शन में अनुष्ठान कर रहे हैं, उसकी उपयोगिता समझिये तो सफलता आपके कदम चूमेगी। जब तक आप सच्चाई के धरातल पर नहीं उतरेंगे, हवा में उड़ते रहेंगे, तब तक सफलता आपको नहीं मिलेगी।

क्या कहने उस दयालु माँ के, क्या कहने उस करुणा की सागर के, जिस पर वे दयालु हो गयीं- उसे उन्होंने निहाल कर दिया। इतना दिया कि सँभलता ही

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

नहीं है। माँ को जब स्मरण किया जाता है तो वे दयालु हो जाती है। जब हमारी हाड़-माँस की माँ हमें सुख दे सकती हैं तो सरस्वती माँ की क्या कहूँ, वह दौड़ी आयेंगी। सारी धरा पर गायत्री माता की करुणा बरस रही है। करुणा का कहीं अन्त होता है, किन्तु उसके साथ स्वच्छता की, पात्रता की आवश्यकता है। क्षुद्रता की, पाप की गठरी हमारे सिर पर रखी है। जब चारों ओर गंदगी रखी है, तो उस समर्थ सत्ता को आप कहाँ बिठायेंगे। वो हमारी शक्ति, वो हमारी माँ कहाँ बैठेगी? मैं तो उस बेटे के यहाँ बैठूँगी। जो कहे हाँ माँ, आपके लिए हमारा दरवाजा खुला है। जो समर्पित हो और कहे कि आपकी आज्ञा हमें शिरोधार्य है। उसी के ऊपर गायत्री माता बैठेंगी।

हंस जैसे निर्मल, स्वच्छ, साफ प्राणी पर ही बैठकर गायत्री माता आयेंगी। आप कल्पना करते होंगे कि हम चौबीस हजार का अनुष्ठान करेंगे तो मनोकामना पूरी हो जाएगी। बेटे अनुष्ठान करने आये हैं सौ नहीं तो पचास नम्बर जरूर मिलेंगे। मैं तो आपके दिल की बात बताने आयी हूँ। माताजी, मेरा बच्चा उद्दण्ड हो गया है। मेरी पत्नी की तबियत खराब हो गयी है। उसमें आपका इनकम टैक्स भी शामिल है। क्या इसीलिए आप गायत्री माता को पकड़ने के लिए आये हैं। ये जो माँ हैं, वे दुखियों को देखकर बड़ी जल्दी पिघल जाती हैं, पर वे चाबुक भी रखती हैं, कहती हैं- ऐसे नहीं मानगा यह! अगरबत्ती और फूल दिखाकर मुझे अपने घर में बसाना चाहता है। भगवान कभी भी चापलूसों के काम नहीं आता, उसे चापलूसी पसंद भी नहीं है। भावनाओं में भगवान आता है। यदि आपके दिल में भावनाएँ हैं तो आपका उच्चारण यदि अशुद्ध भी होगा तो आप बाल्मीकि की तरह से 'मरा-मरा' उल्टा जपकर भी ऋषि बन सकते हैं। ऐसा होगा तभी, जब आपके दिल में भगवान निवास करेंगे। बाल्मीकि ने अपनी पत्नी से कहा- सारी जिन्दगी मैंने आपके लिए लगा दी, क्या मेरे पापकर्म में आप साथी होंगी? पत्नी ने कहा-हमें नहीं मालूम आपने क्या किया है। आप पाप कमाते हैं या पुण्य कमाते हैं। आप हमारी उदरपूर्ति के लिए हैं। हम आपके साथी नहीं हैं। पाप-पुण्य से, नैतिकता से कमाइये अथवा अनैतिकता से हमारे लिए लाइये। माँ से पूछा-माँ, क्या तू मेरा साथ देगी। माँ ने कहा - बेटा नहीं, मैं तेरी माँ हूँ। तेरा फर्ज और कर्त्तव्य है- कहीं से भी ला, हमें नहीं मालूम। बेटे से पूछा-मैंने तुम लोगों के लिए अनैतिक कार्य किये, हजारों लोगों की जानें ली हैं। क्या तुम इस पाप में मेरा साथ दोगे? बेटे ने कहा नहीं पिताजी। यह सुनकर बाल्मीकि की आँखों से अज्ञानता का पर्दा उठ गया। उन्होंने नारदजी के आगे सिर झुकाया और कहा-आपने मुझे सही दिशा दी। प्रायश्चित्त किया तब वे ऋषि-संत बने। ये भक्त की पहचान है।

भगवान हमारे पास स्वर्ग देने के लिए नहीं आता, बल्कि आत्म-परिष्कार की प्रेरणा देने के लिए आता है । मैं जब गुजरात गयी तो क्या देखा-यज्ञशाला में गायत्री माता आयी हुई हैं, कैसे आयीं गायत्री माता? जो कोई स्त्री और पुरुष आता, उसकी पीठ को लाल कर दिया जाता। बेटे, ये जाहिलों का अध्यात्म है। ये इनसानियत का अध्यात्म नहीं है। जब इनसान में अध्यात्म जागेगा तो वह भगवान का स्वरूप हो जाएगा। वो वह कार्य करेगा जो भगवान ने किया है। भगवान ने इनसान को इतना अमूल्य जीवन दिया है। वह अपनी खुदगर्जी के लिए नहीं दिया है। आपके भले के लिए ही दिया है।'एक हाथ में माला, एक हाथ में भाला।' ये हमारे आत्म-परिष्कार के लिए हैं। गायत्री माता जब देती है तो छप्पर फाड़ कर देती है। किसको देंगी ? उसे देंगी जिसकी पीठ हंस के समान उज्ज्वल है। जब गायत्री माता सवार होंगी, तो आप चुप नहीं बैठ सकते। जब आपकी आत्मा का परिष्कार हो जाएगा, तो समझो कि आपके ऊपर गायत्री माता आ गयीं। भगवान हमेशा उदारता, करुणा और दया के रूप में आते हैं। आप बाल्मीकि की तरह हो जाइये। संत एकनाथ की तरह हो जाइये।

एक बार संत एकनाथ रामेश्वरम् जा रहे थे। उनके हाथ में गंगाजल था। मन में भावनाएँ थीं। हम भगवान पर गंगाजल चढ़ायेंगे। रास्ते में एक गधा पड़ा हुआ प्यास से तड़प रहा था। संत ने मन में विचार किया- इस गंगाजल से मैं गधे की प्यास बुझाऊँ या भगवान को नहलाऊँ। मन के अंदर की क्षुद्रता ने कहा- नहीं गधे का क्या है? यह तो एक नीच प्राणी है। भगवान को गंगाजल चढ़ाइये। अन्दर के देवता ने कहा- नहीं ऐसा नहीं हो सकता। हमारे सामने जो गधा प्यास से तड़प रहा है, वह भगवान का ही रूप है। सारे पात्र का गंगाजल लेकर गधे को पिला दिया। गधे ने पूछा-तुम अपने भगवान से मिलने रामेश्वरम् जा रहे थे, तो मुझे जल क्यों पिलाया? एकनाथ ने कहा- हाँ मैं भगवान से मिलने ही जा रहा था, पर तुम प्यासे थे सो गंगाजल तुम्हें पिला दिया। गधे ने कहा- एकनाथ मैं ही रामेश्वरम् हूँ। आ मैं तुझे कलेजे से लगा लूँ। रामेश्वरम् ने एकनाथ को अपने कलेजे से लगा लिया।

भगवान हमारे पास विश्व-संवेदना के रूप में आयेगा। हमें अन्दर से प्रेरित करेगा कि हमको कुछ करना चाहिए, हमें अपनी आत्मा की मलीन चादर को हटाना चाहिए। जब तक आवरण नहीं हटेगा, तब तक भगवान नहीं आयेगा। जब अंगारे के ऊपर एक राख की सफेद पर्त छा जाती है, तो वह अंगारा कोई खास गर्मी नहीं पहुँचाएगा। जब आप अंगारे पर से उस राख को हटा देंगे तभी अग्नि का वास्तविक स्वरूप दिखाई देगा। आप अग्नि के पास बैठेंगे तो आपकी सर्दी दूर होगी। पकड़ेंगे तो आपके छाले पड़ जाएँगे। हमारी आत्मा से आवरण हट जाएगा। यही अध्यात्म है, यही आत्मा का मिलन है। यदि हम आवरण नहीं हटायेंगे तो हम नीचप्रकृति के बने रहेंगे। हमारा भगवान से मिलन नहीं होगा। मैंने आपको भगवत्प्राप्ति का तरीका बताया है, प्रोसीजर बताया है।

हम अपने जीवन में अनेक बुराइयाँ करते रहते हैं। हमारे चारित्रिक पक्ष की अनेक बुराइयाँ हैं। इसमें से हमें एक ही बात समझ में आयी है- समाज में व्याप्त कुरीतियों से लेकर बहिन-बेटियों की लाज तक। आज हमारे समाज में अनेक बुराइयाँ व्याप्त हैं। दहेज के नाम पर कन्याओं को जिन्दा जला दिया जाता है। धर्म के नाम पर मूक पशुओं की बलि चढ़ा दी जाती है। फिर भी आप कन्या को देवी कहते हैं। हमें किसी के पैसे की आवश्यकता नहीं है, यह कहना तभी सम्भव है जब आपके अन्दर इनसानियत आयेगी, यदि इनसानियत नहीं है तो आप कहेंगे कि दहेज का पैसा हमें कहीं

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

से भी लाकर दे। जब तुम ध्रुव की तरह से अपने आपको इस योग्य बनाओगे उद्देश्य और लक्ष्य के लिए, भगवान की प्राप्ति के लिए तब आप अवश्य सफलता पा लेंगे। आप प्रह्लाद से शिक्षा लीजिए। संत तुलसीदास से प्रेरणा लीजिए।

संत तुलसीदास अपने समय में बहुत कामी थे, परन्तु राम की कृपा होने से वह संत हो गये। उन्होंने तुलसीकृत रामायण लिखी। ये कैसी शिक्षा है? यदि भगवान नहीं आया होता जीवन में तो तुलसीदास कैसे सक्षम होते, आप भक्तों का उद्धार करने में?

संत कबीर बिलकुल पढ़े-लिखे नहीं थे, परन्तु जब गुरु की कृपा उनके ऊपर आई तो वह निहाल हो गये। वे हिन्दू और मुसलमान को नहीं मानते थे, वे बस इनसानियत को मानते थे। कबीर ने अपने गुरु से कहा- आप मुझे दीक्षा दीजिए। गुरु ने कहा- जा तुझे यह भी नहीं मालूम है कि तू हिन्दू है या मुसलमान । गुरु चले गये । कबीर दूसरे दिन सुबह गंगातट पर जाकर सीढ़ियों पर लेट गये। गुरु आये और उनका पैर कबीर की छाती पर पड़ गया। गुरु ने कहा-राम-राम ये क्या हो गया। कबीर ने कहा- बस मुझे सच्ची शक्ति मिल गयी। आप और हम जैसे लोग होते तो कहते कैसा जाहिल है जो हमारी छाती पर पैर रख दिया।

इसी प्रकार मीरा भी कम पढ़ी थी,परन्तु उसकी वाणी में गजब का चमत्कार था। जब उसके अन्दर भक्ति जाग्रत हुई तो कृष्ण भगवान मीरा के साथ नाचने और रास रचाने लगे। उसने भक्ति के बदले कृष्ण को मोल ले लिया था। ये भक्त की परिभाषा है। भक्तों में मीरा अग्रणी है। भक्ति के प्रभाव से जहर भी अमृत बन गया।

इसी प्रकार भक्त रैदास थे। वे जाति के चमार थे। उन्होंने भी भगवान की भक्ति की थी। वे जूता सिलते थे। वे जूता सिलने को भी भगवान की पूजा मानकर करते थे, पर आप लोग तो दवाओं में भी मिलावट करते हैं। काम को म्यूनिसपैलिटी का काम मानकर करते हैं। क्या हम भगवान को भी धोखा देंगे? अच्छा कार्य करने वाला व्यक्ति भगवान का स्वरूप बन जाता है। फिर उसे अच्छा कार्य करना ही पड़ता है।

बेटे, गुरुजी के हृदय में भगवान विराजमान हैं। उन्होंने भगवान को कभी नहीं छोड़ा। उन्होंने भगवान को अपने अन्दर पाया। गायत्री माता उन्हें हर समय दुलारती रहती हैं। वे उनके रग-रग में बस रही हैं। क्या कारण है कि गुरुजी के ऊपर गायत्री माता मेहरवान है? बेटे, गुरुजी ने गायत्री माता के ऊपर अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया है। १५ वर्ष की आयु से लेकर के आज ७५ वर्ष की आयु तक आप कल्पना कर सकते हैं। आप देखेंगे तो रो पड़ेंगे। क्या आप यह समझते हैं कि गायत्री माता वैसे ही आ गयी हैं-गुरुजी के पास। नहीं बीज जब तक अपने को गलाने की चेष्टा नहीं करता, वह अंकुरित नहीं हो सकता। जब तक वह गलता नहीं है, वृक्ष नहीं बन सकता। उसका सर्वस्व चला जाएगा।

मैं आपको गुरुजी का उदाहरण दे रही हूँ। मैं एक नारी हूँ, पत्नी हूँ। मेरी रग-रग में वे समाये हुए हैं, सही सिद्धान्त यही है। अपने को भी बीज की तरह गलाना है। बेटे पहले झाड़-झंखाड़ साफ करो। यह पथरीली भूमि है। इसमें जो भी बीज आप बोयेंगे, वह नष्ट हो जाएगा। जब आप सफाई करके बीज डालेंगे, तब वह पूरी शक्ति से अंकुरित होगा। एक चमत्कार पैदा हो जाएगा, जब भूमि साफ होगी, तब अंतःकरण की भूमि में जो मलीनता है, उसे साफ कीजिये। हमारे मनुष्य जीवन में अनेक भूलें होती रहती हैं। हम बार-बार इसीलिए कहते हैं कि आपको सफाई करनी पड़ेगी। आपको भूलों के प्रति सजग रहना पड़ेगा। पिछली बार भूल करके आये थे, इसलिए अपने मन को धोइये। आगे के लिए संकल्प कीजिए, प्रतिज्ञा कीजिए कि जो भूलें हमसे अब तक हुई हैं, आगे से नहीं होंगी।

एक बार भगवान बुद्ध के पास एक व्यक्ति आया। कहने लगा कि हमें भगवान से मिलने के लिए कोई रास्ता बता दीजिए। बुद्ध ने कहा- चल तू मेरे साथ चल। उसके अन्दर जिज्ञासा थी जानने की। वह भगवान बुद्ध के साथ चल दिया। वहाँ जाकर बुद्ध ने एक परिवार से भिक्षा माँगी। उनके कमण्डलु में गोबर था। जिस किसी ने खीर दी वह भी उसी में डाल दी और भी किसी ने कुछ दिया वह सभी कमण्डलु में डाल दिया। उस व्यक्ति ने यह सब देखकर कहा कि आप यह क्या कर रहे हैं? आप भगवान के बारे में क्या जानते हैं और आप हमें क्या बता सकते हैं? आप तो पागलों की भाँति कर रहे हैं। आपने गोबर के कमण्डलु में खीर डलवा दी। ये तो कुछ भी नहीं रहा। भगवान बुद्ध ने कहा- बेटे, यही सिद्धान्त है। भक्त के दिमाग में जो गोबर भरा पड़ा है, तो भगवान हमारे अंतःकरण में आएगा कहाँ से। वह तो गोबर में ही समा जाएगा। भगवान तुम्हारे अन्तःकरण में इतनी दूर से आये और तुम्हारे ऊपर कोई असर नहीं।

एक लड़का मेरे पास आया और कहने लगा- माताजी! मैं दस साल से उपासना कर रहा हूँ, परन्तु गायत्री माता ऐसी निष्ठुर हो गयीं कि एक दिन भी स्वप्न में भी नहीं आयीं। बेटे, गुरुजी की तो उपासना में सारी उम्र लग गयी और तू दस साल की बात करता है। क्या गायत्री माता की उपासना तू स्वप्न में उन्हें देखने के लिए करता है। बेटा, तू ऐसा कर गायत्री माता का चित्र ले जा और देख लिया करना। परन्तु स्वप्न में गायत्री माता के दीखने से तेरा क्या भला हो जाएगा? जब तक तू अपने विचारों को नहीं सँभालेगा, तब तक भगवान के भक्त नहीं हो सकते।

गुरुजी जब नहाने के लिए जा रहे थे तो अंजलि भर कर जौ ले गये थे। उसमें आ गई एक मछली। मछली को उन्होंने दुलारा और कहा-बड़ी प्यारी मछली है। उन्होंने मछली को कमण्डलु में डाल दिया। कमण्डलु में मछली बड़ी हो गयी। गुरुजी ने कहा- अब क्या किया जाए? मछली ने कहा- गुरुजी मैं सीमाबद्ध होकर नहीं रह सकती। गायत्री तपोभूमि बनाइये। चारों वेद लिखिए। गायत्री तपोभूमि बनायी गयी, वेदों के भाष्य किये गये। मछली ने फिर कहा- मुझे हिमालय पर भेजिये। हिमालय पर भेजी गयी, फिर मछली लौटकर यहीं आ गयी। फिर कौन उठायेगा? कच्छप भगवान मुझे अपनी पीठ पर उठायेंगे। वह मछली सारे विश्व में फैल गई। वह असीम शक्ति सारे विश्व में समाई जा रही है। मछली समुद्र में चली गयी। समुद्र सीमित नहीं है। भगवान का जो भक्त होगा वह सीमित नहीं होगा। जो सीमित रहेगा, उसकी भक्ति सड़-गल जाएगी।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

हमने और आपने जो भगवान का स्वरूप समझा है वह एकांगी है। यदि तेरा उद्धार हो जाएगा तो सारे संसार में से एक और व्यक्ति घट जाएगा। अच्छा तुमने अपने समाज और विश्व के लिए क्या किया? संसार का क्या भला किया? भक्त का कल्याण उसके आत्मिक विकास के रूप में होगा। विकास के दो रूप हैं (१) श्रद्धा का विकास (२) निष्ठा का विकास।

गुरु द्रोणाचार्य ने पूछा- एकलव्य, तूने धनुर्विद्या किससे सीखी। एकलव्य ने कहा- गुरुजी आपसे ही सीखी। आप ही मेरे गुरु हैं। गुरु द्रोणाचार्य ने कहा मैं तो नहीं आया तुझे सिखाने। मैं तो अर्जुन को विद्या सिखाने के लिए वचनबद्ध था। एकलव्य ने कहा- गुरुजी। आप मेरे अंतःकरण में रहते हैं। आपने ही मुझे धनुष चलाना सिखाया है। उन्होंने कहा- एकलव्य तू धन्य है और धन्य है तेरी भक्ति। मैं गुरु हूँ, परन्तु मैं तेरे आगे छोटा पड़ता हूँ। जब हमारी श्रद्धा और भावना दीक्षित हो जाती है, तो भगवान भी हमारे पास आते हैं। जब तक हम अपनी भक्ति में श्रद्धा नहीं उतारेंगे, तब तक भक्ति केवल हमारे लिए ही होगी, भगवान के लिए नहीं। हम और गुरुजी एक हैं। हमारी भावनाएँ एक हैं। हमारे सिद्धान्त एक हैं। बस हमारे शरीर अलग-अलग हैं। हम आपके मार्ग में भक्ति को उतारना चाहते हैं। भक्ति का सही मार्ग और स्वरूप यही है। अनुष्ठान करने के लिए आपको तन, मन और स्थान की सफाई करनी पड़ेगी। जब आप जप करेंगे तब आपको अपने अन्तःकरण की सफाई करनी पड़ेगी। बच्चे के मन में कोई कपट और दुराव नहीं रहता। कोई छल नहीं रहता। भगवान का मन भी बच्चे के समान कोमल है। ईसामसीह से एक बार एक व्यक्ति ने पूछा- बताइये भगवान कहाँ हैं? उन्होंने एक बच्चे को गोद में उठा लिया और कहा यही भगवान हैं। बच्चे जैसी मनःस्थिति, ऐसी ही हमारी कल्पना एवं भावना हो, तभी भगवान मिलते हैं।

भक्ति में हम और हमारा भगवान-यही भावना रहनी चाहिए। पर लगता है यहाँ अनुष्ठानकाल में भी पत्नी और बच्चे आ गये। शांतिकुंज में आकर इस अवधि में तुम्हें अपने बच्चे और पत्नी को भूलना पड़ेगा। अपनी वृत्तियों का शोधन करना होगा। उन्हें अच्छी बनाइये। यहाँ पर कोई किसी की पत्नी नहीं है, कोई किसी के बच्चे नहीं हैं। मात्र भक्त और भगवान दो के बीच ही सम्बन्ध है, राधनाकाल में।

भक्ति अलग होती है। ऐसी भक्ति मत करिये कि हम मनसा देवी पर जाएँगे। देवी को स्वास्तिक लगाकर आयेंगे। भगवान का स्वरूप बहुत ऊँचा है। भगवान बहुत ऊँची जगह पर बैठता है। जब हमारे यहाँ कोई मेहमान आता है, तब पता नहीं हम उसके लिए क्या-क्या करते हैं। हम उसका बहुत स्वागत-सत्कार करते हैं। जब हम एक मंत्री के आने पर दुनिया भर की सफाई करते हैं, अच्छा खाने-पीने का इन्तजाम करते हैं, तो भगवान के लिए क्यों नहीं कर सकते। क्या भगवान की हैसियत एक मंत्री जैसी भी नहीं है।

जब आप जप करें तो यह मानकर चलिए कि हम अपनी माता की गोदी में बैठे हैं। माता हमें अपनी छाती से लगा रही है। माँ हमें दुलार रही है। आप उस आनन्द की अनुभूति लीजिए। कुछ बच्चे कहते हैं कि जब हम जप करते हैं, तब गुरुजी को अपने सामने बैठा मानकर चलते हैं। ठीक है बेटे, किन्तु गुरुजी की शक्ति और प्रेरणा मुख्य है। शक्ल मुख्य नहीं है। हमारा शरीर क्षणभंगुर है, परन्तु गुरुजी के बनाये गये जो सिद्धान्त हैं, वह टलेंगे नहीं, वे ऐसे ही अचल रहेंगे। उनके साहित्य में आग है, हम उसका विस्तार करेंगे, जैसा विवेकानन्द ने किया था। समर्थ गुरु रामदास और रामकृष्ण अपने मिशन का विस्तार करने में समर्थ नहीं हुए। विवेकानन्द की भक्ति ने विस्तार किया। आपमें वह भक्ति तब आयेगी, जब आप अपनी पात्रता विकसित करेंगे।

आप गुरुजी से कुछ माँगने आये हैं, वह आपको मिलेगा भी-प्रत्यक्ष भी और परोक्ष भी। एक गाना है-

पास रहता हूँ मैं सदा से तेरे!
तू नहीं देख पाये तो मैं क्या करूँ।

गुरुजी की प्रेरणा है। वही तो हमारे लिए सब कुछ है। उनके लक्ष्य के लिए ही तो हम कटिबद्ध हैं- समर्पित हैं। कोरी कल्पनाओं से कुछ नहीं होता। भक्ति, शक्ति, साहस हमें दीजिए जिससे हमारा कल्याण हो। काँच नहीं हीरा माँगिये। हीरा का मूल्य अच्छा है, काँच का कोई मोल नहीं है। हनुमान जी ने कहा था- **"रामकाज कीन्हे बिना मोहिं कहाँ विश्राम।"** भक्त को चैन कहाँ पड़ता है। फिर तो वह समुद्र लाँघेगा। लंका में आग लगायेगा। सीता माता की खोज करके आएगा। अंगद की तरह से लंका में पैर जमाएगा। जब तक उसके अन्दर भक्ति नहीं थी, तब तक वह वानर था। जब उसके अन्दर भक्ति आ गयी तो वही बन्दर हनुमान हो गये। राम के भक्त हो गये। जब तक इतिहास में रामायण का नाम रहेगा- राम का नाम रहेगा तब तक हनुमान का नाम भी राम के साथ में लिया जाएगा।

नर तो क्या देवता भी नारी के बिना अपूर्ण हैं। नारियाँ यदि इनके पूरकांग के रूप में नहीं होतीं तो आज जैसा कदाचित् ही उनका तेजस्वी, देवोपम स्वरूप हमारे सामने होता।

शबरी रास्ता साफ करती थी। ऋषि उसकी सूरत भी देखना पसन्द नहीं करते थे। कहते थे अछूत है। परन्तु वह कहती थी कि मेरा कर्म तो अच्छा है। जब मार्ग से भगवान जाएँगे तो मेरे भगवान के पैर में काँटे चुभ जाएँगे, वह बराबर रास्ता साफ करती रही। भगवान शबरी के यहाँ आये। उन्होंने शबरी के जूठे बेर भी खाये। भगवान भावनाओं के भूखे होते हैं। वह किसी की अगरवत्ती के भूखे नहीं हैं। लक्ष्मण ने राम से कहा- आप यह क्या कर रहे हैं? उस अछूत कन्या के हाथ से बेर खा रहे हैं। राम ने कहा- मैं तो भक्त की भावनाएँ खा रहा हूँ। उसकी भक्ति के आगे मैं छोटा हूँ। यही सही स्वरूप है अध्यात्म का, जो मैंने आपको बताया कि भक्ति सही रूप में किस तरीके से आती है। आपका गायत्री माता का अनुष्ठान निर्विघ्न रूप से सफल हो। आपका जीवन फले-फूले। जीवन में वह बहार आये जो सन्तों और ऋषियों के जीवन आयी।

!! ॐ शान्ति ॥

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

श्रद्धा : आस्तिकता का प्राण

(गुरुपूर्णिमा २७ जुलाई, १९८० को शांतिकुंज परिसर में दिया गया प्रवचन)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो, भाइयो! गुरु की महत्ता बहुत बड़ी है। गुरु को ब्रह्मा, विष्णु, महेश कहते हुए उन्हें साक्षात् परब्रह्म माना गया है। यह गुरु की महान सामर्थ्य का परिचय है। हमारे गुरु बहुत ही सामर्थ्यवान हैं। गायत्री माता के भीतर जो भी सामर्थ्य रही होगी, जो भी चमत्कार रहे होंगे, वह हमारे गुरुदेव के भीतर भी रहे होंगे। इस सम्बन्ध में लोगों ने एक बार कहा कि गुरुजी आपके गुरु कोई देवता हों, तो बात अलग है, अन्यथा इनसान को इतना सामर्थ्यवान होना सम्भव नहीं है। इनसान, इनसान की सीमित सहायता कर सकता है। गुरुजी आप जैसा कहते हैं, वह मुश्किल मालूम पड़ता है। अतः आप ही बतलाइये कि आपके गुरु किस प्रकार से ऐसी सहायता करते हैं?

मित्रो, इस संदर्भ में कइयों ने विश्लेषण करके कहा है कि गुरुजी यह आपकी श्रद्धा का चमत्कार मालूम पड़ता है। हाँ बेटे, श्रद्धा के चमत्कार की वजह से एक पत्थर का टुकड़ा मीरा के लिए गिरधर गोपाल हो गया था। इतना ही नहीं, रामकृष्ण परमहंस की पत्थर की देवी माँ काली बन गयी थी। रामकृष्ण की देवी इतनी विशाल हो गयी थी कि वह जमीन से लेकर आसमान तक दिखलाई पड़ती थी । उस देवी का चमत्कार आपने विवेकानन्द के साथ नहीं देखा, जिसने उन्हें भक्ति और शक्ति दे दी थी। क्या पत्थर की देवी भक्ति और शक्ति दे सकती है? यह तो विवेकानन्द की उस देवी के प्रति श्रद्धा थी, जिसके द्वारा उन्हें उनकी भक्ति और शक्ति मिल गयी और वे धन्य हो गये। पत्थर के टुकड़े केवल प्रतीक के काम आ सकते हैं, लेकिन वह रामकृष्ण परमहंस की श्रद्धा थी जिसने इसको देवी बना दिया, माँ काली बना दिया था। मीरा का वह श्रद्धा ही थी जिसने पत्थर के टुकड़े को कृष्ण बना दिया था। एकलव्य की वह श्रद्धा ही थी जिसने मिट्टी की एक मूर्ति को साक्षात् गुरु बना दिया था तथा उससे उसने वे सब लाभ प्राप्त कर लिये थे जो जीवित द्रोणाचार्य से अन्य शिष्यों ने, विशेषकर अर्जुन ने प्राप्त किया था। हमारा तो यह कहना है कि अर्जुन से भी ज्यादा लाभ एकलव्य ने प्राप्त किया था। एकलव्य की इस प्रक्रिया के सामने द्रोणाचार्य तक को नतमस्तक होना पड़ा था। उनकी बड़ी से बड़ी शिक्षा उसने उस मिट्टी की मूर्ति से प्राप्त की थी, जिसका कि कोई सानी नहीं। उसकी धनुर्विद्या महान थी। उसने बाणों से कुत्ते का मुँह तक सिल दिया था। यह उसकी महानता थी। उस भील बालक ने असली द्रोणाचार्य से कहा था कि ये हैं हमारे गुरु द्रोणाचार्य, जो मिट्टी के हैं । इनसे ही हमने विद्या सीखी है। आप कृपया अपना मस्तक इस द्रोणाचार्य के सामने झुकायें।

वास्तव में श्रद्धा ही मनुष्य को गोबर में से गणेश बना देती है तथा पत्थर में से काली और शंकर बना देती है। लोग अक्सर हमसे पूछते रहते हैं कि क्या आपने भी अपने मन में हिमालय के किसी व्यक्ति के प्रति ऐसी श्रद्धा बना ली है, जो सदैव आपकी सहायता करते हैं। हमने कभी भी लोगों को उनके बारे में नहीं बताया, परन्तु हमने अपनी श्रद्धा को बढ़ाने का प्रयास हमेशा किया है- अपनी श्रद्धा को समर्थ बनाने का प्रयास किया है, ताकि हमें अधिक से अधिक लाभ मिल सके। हमारी पूरी जिन्दगी की श्रद्धा का परिणाम आपके सामने है। हमने श्रद्धा के द्वारा जो पाया है, उसे आप देख सकते हैं। श्रद्धा हमारे लिए भगवान है। हमने अपनी श्रद्धा को असीम माना है। उसे निरन्तर बढ़ाते रहने में ही हमें प्रसन्नता होती है। अगर आप सही मानें तो हमने श्रद्धा को ही भगवान माना है।

एक बार हम कैलास पर्वत पर लोगों के साथ शंकर भगवान और पार्वती जी के दर्शन करने के लिए चल पड़े। हिमालय जाने के बाद लोगों ने कैलास तथा मानसरोवर का दर्शन किया। उसके बाद वापस होने लगे। हमने पूछा- क्या आप लोगों ने शंकर भगवान का दर्शन नहीं किया? लोगों ने कहा कि हमने तो दर्शन कर लिया और अब हम जा रहे हैं। हमने कहा कि हम तो आपके साथ शंकर भगवान का दर्शन करने आये हैं, बिना दर्शन किये हम कैसे वापस जाएँगे। उन्होंने कहा कि हम तो चले जाएँगे, पर आप बने रहें । हमने कहा कि आप चले जाइये, हम तो शंकर भगवान और पार्वती माँ के दर्शन करके ही लौटेंगे। हम लगातार वहाँ एक महीना बने रहे और जगह-जगह हिमाच्छादित पर्वत शृंखलाओं में घूमते रहे। एक महीने तक हम जहाँ चक्कर काटते रहे, जहाँ पर कोई मंदिर नहीं, मस्जिद नहीं, धर्मशाला नहीं। एक महीने तक किसी तरह कम्बलों के सहारे बर्फीले पहाड़ की गुफाओं में रहते रहे। एक दिन आँखों के सामने अँधेरा-सा छा गया और चक्कर-सा महसूस होने लगा। मन में कहा कि हम तो शंकरजी के दर्शन करने आये हैं, पर उनका दर्शन नहीं हो रहा है। हमने सोचा-शायद वे व्यस्त होंगे। हमने कहा कि थोड़ा हम झुक जाएँगे, थोड़ा आप भी झुकें। आप नहीं दर्शन देते तो कम से कम अपने बेटे गणेशजी को ही भेज दें। उनसे ही हम मिल लें। अगर वे भी व्यस्त हों या खेल रहे हों, तो उनकी सवारी-चूहे को ही भेज दीजिए, हम उनका ही दर्शन कर लेंगे। आप नहीं मिले तो आपके नुमाइन्दे ही मिल गये, यही मानकर संतोष कर लेंगे।

मित्रो, इस तरह एक महीना व्यतीत हो गया, पर किसी के दर्शन नहीं हुए। हमने सोचा कि अगर शंकर भगवान की सवारी के गोबर का ही दर्शन हो जाए तो

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

उसे ही मस्तक पर लगा लेंगे और वापस घर चले जाएँगे। परन्तु वह भी नहीं मिला। गोबर भी दिखलाई नहीं पड़ा। हमें बहुत दुःख हुआ कि ऐसे महादेव, जो किसी दूसरे से ताल्लुक नहीं रखते हैं, इनसे हमारा क्या मतलब है। हमारा स्वास्थ्य भी खराब होने लगा था। हमने सोचा कि अब वापस चलना चाहिए और मैं चल पड़ा। वापसी में मैं नास्तिक हो गया। शंकर भगवान पर हमें बहुत आक्रोश था कि वे लोगों की श्रद्धा को महत्त्व नहीं देते हैं। अगर खुद नहीं आ सकते तो गणेश को, अपनी सवारी को ही भेज देते या उनके गोबर को ही दिखा देते । कहीं ऐसे भी शंकर भगवान होते हैं क्या? हम नास्तिक हो गये और घर वापस आ गये। हमारे घर में हर वर्ष रामायण का पाठ होता था। उस वर्ष भी रामायण हुआ। हमें रामायण के पाठों ने नास्तिक होने से बचा लिया। आज मैं आपके सामने एक आस्तिक व्यक्ति हूँ तथा आस्तिकता का प्रचार करता हूँ।

रामायण ने हमें नास्तिकता से कैसे बचा लिया? रामायण में एक श्लोक है जो रामायण का सार है- भक्ति का सार है और वह है-

भवानीशंकरौ वन्दे श्रद्धा विश्वासरूपिणौ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाःस्वान्तस्थमीश्वरम्॥

इस प्रकार तुलसीदास जी ने साफ शब्दों में बतला दिया कि भवानी और शंकर कैसा होना चाहिए। वह होना चाहिए- श्रद्धा, विश्वास के रूप में । उसी रूप में हमें उन्हें पूजना चाहिए। उन्होंने पार्वती-श्रद्धा, शंकर-विश्वास के बारे में हमारे मस्तिष्क को साफ कर दिया। गोस्वामी जी ने साफ शब्दों में कह दिया कि भगवान व्यक्ति नहीं हो सकते हैं। भगवान एक सिद्धान्त का नाम है, आदर्श का नाम है। भवानी हो सकती है तो इनसान की श्रद्धा तथा शंकर हो सकते हैं तो इनसान का विश्वास -यह तथ्य हमें भलीभाँति समझ लेना चाहिए।

श्रद्धा ही आदमी का प्राण है, यही आस्तिकता का प्राण है। आध्यात्मिकता का, दैवी अनुदानों का, चमत्कार का, आत्मसाक्षात्कार का प्राण यह श्रद्धा ही है। श्रद्धा का ही चमत्कार हमारे जीवन में हुआ है। पन्द्रह वर्ष की उम्र में ही हमारे गुरु ने दर्शन दिया था, रास्ते दिखलाये थे। उस समय हम बहुत ही भावुक हो गये थे और कहा था कि आप हमें हुकुम दीजिए, हम उसका पालन करेंगे। हम आपका वचन मानेंगे और रघुकुल रीति सदा चलि आई। प्राण जाएँ, पर वचन न जाईं, की तरह आपके आदेशों का, वचनों का पालन करेंगे। हमने आपको अपना गुरु, मार्गदर्शक, बॉस माना है, हम आपके हर आदेश का पालन करेंगे। हम उन लोगों में से नहीं हैं, जो पैर पीछे हटाकर भाग गये। आप आदेश दें, हम पालन करेंगे। हम घटिया वाले, छोटे वाले आदमी नहीं हैं, जो रोज वायदा करते हैं, कसमें खाते हैं और समय आने पर मुकर जाते हैं। हम शानदार आदमी हैं। हमने आपसे शादी की है और वह ऐसी नहीं है जो आये दिन हुआ करती है।

एक महिला ने एक अन्य महिला से पूछा कि तुम शादी क्यों नहीं करती हो तुम्हारी तो उम्र हो गयी है। उसने कहा कि हमने तीन नौकर पाल रखे हैं तो हमें शादी की क्या जरूरत है? हमने एक तोता पाल रखा है, जिसने कसम खाने की बातें सीख रखी हैं, वह रोज रटता रहता है कि तेरी कसम, तुमसे बड़ा मेरा कोई नहीं। तुमसे ज्यादा कोई प्यारा नहीं। वह मर्द की तरह कसम खाता रहता है। दूसरी हमने एक बिल्ली पाल रखी है, जो खाने के समय आ जाती है, उसके बाद वह अवारागर्दी में सारा दिन घूमती रहती है। कभी सिनेमा में, तो कभी सर्कस में चली जाती है। आवारागर्दी करने में चली जाती है, ताश खेलती है, यार-दोस्तों में डोलती रहती है, परन्तु खाना खाने के समय आ जाती है और खाना खाने के बाद फिर चली जाती है।

इस प्रकार एक तिहाई यह बिल्ली है और एक तिहाई तोता है। एक तिहाई और रह जाता है और वह मेरा कुत्ता है। यह दिन भर जब देखो तब गुर्राता रहता है, भौंकता रहता है। यह हमारे ऊपर भी गुर्राता है और आने-जाने वालों पर भी। यही बात तो शादी के बाद भी होती है। शादी के बाद दूल्हे छोटी-छोटी बातों में कसम खाते रहते हैं और उसके बाद भूल जाते हैं। उन्हें खाने को मिल गया, इसके बाद घर से गायब। सारा समय सिनेमा में, मटरगस्ती में बिता दिया। उन्हें इस बात की कोई चिन्ता नहीं है कि हमारे बच्चे और पत्नी कैसे हैं। एक तीसरा काम और करते हैं कि जब कोई व्यक्ति हमारे मायके से आता है तो गुर्राते रहते हैं। यह भी तो पति का काम है। सहेली, आपने देखा न, यह तीनों काम हमारे पूरे हो जाते हैं तो फिर हम शादी किस बात के लिये करें? शादी होनी है तो ठीक से होनी है। जो फेरे लिए हैं, जो वायदे किये हैं, उसे जीवनपर्यन्त निभाना है। यह है हमारी शादी, जो हमने गुरु के साथ की है।

साथियो, चौबीस साल के चौबीस महापुरश्चरण पूरे करने के बाद हमारे गुरु ने, मार्गदर्शक भगवान ने हमें हिमालय बुलाया। हमने कहा कि आपने उस दिन जो हमें आदेश दिया था, उसका तो हमने पालन किया। उसके बाद हमने आपसे कोई पूछ-ताछ नहीं की। जिस प्रकार आप बतलाते चले गये, हम पालन करते चले गये। आज हम आपके पास आ गये हैं, आप आदेश करें। हमारे गुरु ने कहा कि आपने पूछा नहीं और हमने बतलाया नहीं। उन्होंने कहा कि हमने आपको पहले दिन ही कहा था कि हम आपको देवता बनाना चाहते हैं। हम आपको महान बनाना चाहते हैं। हम आपको इनसान के जीवन तक सीमित नहीं रहने देना चाहते। हम आपको भगवान के दर्जे तक पहुँचाना चाहते थे, सो वह हमने आपको इन दिनों बनाने का प्रयास किया और आप सफल हो गये।

हमने कहा- गुरुदेव आप हमारे पास ही क्यों आये और हमें क्यों परेशान किया? उन्होंने बतलाया कि हम बहुत दिनों से एक शिकारी कुत्ते की तरह से घूमते रहे और तुम्हें खोजते रहे। जब तुम मिल गये तो हमने पकड़ लिया। इसी तरह हम बिना बुलाये सूँघते-सूँघते आपके घर जा पहुँचे। शिकारी कुत्ते इसी प्रकार सूँघते-सूँघते घर पर पहुँच जाते हैं और हत्यारों को, चोरों को पकड़ लेते हैं तथा पुलिस के हवाले कर देते हैं। हमने पूछा कि आपने क्या चीज सूँघी है? उन्होंने कहा कि हमने आपके अन्दर एक चीज सूँघी है और वह है आपकी श्रद्धा। श्रद्धा से रहित आदमी के पास भगवान कहाँ से आ जाएगा? देवता कहाँ से आ जाएगा? मंत्र कहाँ से आएगा। श्रद्धा के बिना पूजा-पाठ एवं सारे कर्मकाण्ड प्राणहीन, खोखले जीवन की तरह हैं। इससे मनुष्य को कोई लाभ कदापि नहीं मिल सकता है। श्रद्धा नहीं है तो यह सब

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

ढकोसला है। यह सब मन बहलाव है। श्रद्धा के बिना सब बेकार है।

हमारे गुरुदेव ने कहा कि ढूँढ़ते-ढूँढ़ते हमने एक ऐसे इनसान की तलाश की जिसके अन्दर श्रद्धा जीवन्त थी। उन्होंने बतलाया कि जहाँ श्रद्धा जीवन्त है, उसके लिए सारी मंजिलें खुली हुई हैं। अगर किसी व्यक्ति की श्रद्धा खत्म हो गयी तो उस आदमी में कोई जान नहीं है। उसके आध्यात्मिक विकास का फिर कोई रास्ता नहीं है। हमने आपके अन्दर देख लिया कि आपके अन्दर श्रद्धा का बीज विद्यमान है और अगर उसे ठीक ढंग से उगाया जा सका तो बहुत बड़ा काम हो सकता है। हमने आपकी श्रद्धा को देख लिया था, इसलिए आपको साधना सिखा दी थी। हमने कहा कि साधना तो आपने एक ही सिखाई थी न कि आप ६ घंटे गायत्री महामंत्र का जप करें और छाछ एवं जौ की रोटी खायें। उन्होंने कहा कि बेटा, यह तो हमने एक प्रतीक के रूप में आपको बतलाया था। दूसरी चीजें जो सिखलायी थीं वह यह कहा था कि आप अपने आपको मोड़ दीजिए। लोगों का बहाव जिधर चल रहा है, उस ओर से अपने आप को मोड़ लीजिए। क्योंकि आप जानते नहीं कि दुनिया के लोगों के जायके जीभ के जायके के साथ शुरू होते हैं तथा कामेन्द्रिय के जायके के साथ खत्म होते हैं। हमने आपको जायके से मन मोड़ने को कहा था। हमने कहा था कि आप ताकत के जखीरे को रोकिये तथा उस शक्ति के बहाव को रोकिये और उसे अच्छे कार्य में लगाइये। हमने आपके जायके को बन्द करने के लिए यह कर्मकाण्ड कराया था। यह जायके लोभ, मोह, वासना, तृष्णा के भी हो सकते हैं। यह सूक्ष्म किस्म के जायके हैं। स्थूल किस्म के जायके वे हैं जो जबान से चखे जाते हैं और जिनका लोग मजे लेते हैं। इस जायके के चक्कर में आदमी छोटा हो जाता है। उसकी शक्ति खत्म हो जाती है। इसलिये हमने आपको यह कर्मकाण्ड कराया था।

हमने आपको पहले ही दिन कहा था कि हम आपको देवता बनायेंगे। इस हेतु हम साधना करायेंगे। वही साधना हमने आपसे करायी है। आप तो केवल यह कहते हैं कि जौ की रोटी और छाछ खिलाया था, जिसमें कोई तथ्य नहीं था। हमने तो आप को पहले ही दिन कहा था कि आपको देवता बनायेंगे। भगवान बनायेंगे और उसी क्रम में आपसे साधना करायी थी। अब आप यह किसी से मत कहना कि जौ की रोटी खिलायी थी। बाल्मीकि ने मिट्टी खायी थी। आपने भी जौ खाया या मिट्टी- यह किसी से मत कहना।

हमारे गुरुदेव ने कहा कि एक दूसरी बात हमने आपसे यह कही थी कि जिसके द्वारा मनुष्य को सिद्धियाँ मिलती हैं, आध्यात्मिक जीवन का विकास होता है, वह है भीतर का जायका। भीतर का बहाव, लोगों का रहन-सहन, लोगों का विचार इसमें आदमी बहता हुआ चला जाता है। उसे कुछ पता नहीं चलता है। इस तरह के बहाव-बाढ़ के बहाव की तरह होते हैं, जिसमें छप्पर, हाथी, मुर्दे बहते, पेड़ बहते हुए चले जाते हैं, हमने कहा था कि आपको पानी के बहाव को रोकना चाहिए। आप लोगों की बातों को मत सुनना। आप लोगों की बातों को सुनेंगे तो आगे बढ़ना मुश्किल हो जाएगा। आप लोगों की बातों को सुनना , परन्तु उनके रास्ते पर मत चलना। अगर लोगों के रास्ते पर चलना शुरू कर दिया तो ये लोग आपको बर्बाद कर देंगे। ये लोग आपको ऐसी जगह पर लेकर जा पहुँचेंगे, जहाँ से आपको आना मुश्किल हो जाएगा।

लोगों का रिवाज क्या है? लोगों के द्वारा विवाह आदि में कितना खर्च होता है? लोगों के प्रसन्नता व्यक्त करने एवं न करने के प्रति अध्यात्मवादी को कठोर हो जाना चाहिए। इस मामले में गाँधीजी के तीन बन्दरों की कहानी से प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिए। आपको दुनिया वालों की बातें सुनने की अपेक्षा अपने कान बन्द कर लेने चाहिए। यह मत सुनिये कि दुनिया वाले क्या कहते हैं। यह दुनिया वाले बहुत तेजी के साथ बर्बाद करने में लगे हुए हैं। उनकी ओर आपको ध्यान नहीं देना चाहिए। इस बर्बादी के कारण आपके कुटुम्बी, दोस्त, मित्र भी हो सकते हैं। उनकी सलाह पर अगर आप चलेंगे तो आप ऊँचे रास्ते पर नहीं चल सकते हैं।

हमने अपने गुरु के आदेश पर अपने अन्दर विद्यमान श्रद्धा के बीज को आगे बढ़ाने के लिए उनके दो आदेशों का पालन किया है। पहला यह कि योगी, तपस्वी को हर काम में हर बात में 'यस' नहीं कहना चाहिए, बल्कि पहले सोचना चाहिए, उसके बाद कार्य करना चाहिए। अगर आपने बीबी से कहा –'यस' तथा मित्र से कहा-'यस' तो ये लोग आपको तबाह कर देंगे। अतः आप दूसरा काम यह कीजिए कि 'नो' करना भी सीखिये। यह भी आदेश हमारे गुरु ने दिया। हमने उनके हर आदेश का पालन किया। हमने कभी भी अपने रिश्तेदारों, मित्रों, दोस्तों की बातों को 'यस' नहीं किया है। अरे भाई, साला है और यह कहता है कि चलिये सिनेमा दिखाकर लायेंगे, तो आप 'यस' न करें। हमारे गुरु ने कहा कि योगी-तपस्वी हर परिस्थितियों में 'यस' नहीं करते हैं। वे तप करने के लिए धूप में, गर्मी में, अग्नि में खड़े हो जाते हैं तथा अपने को तपाते हैं। यह तितिक्षा होती है। अध्यात्मवादी उसे कहते हैं जो अपने भीतर वाली गलती को, भीतर वाली कमियों को निकाल बाहर करते रहते हैं। उनसे हमेशा लड़ते रहते हैं, अन्यथा ये सारी चीजें आदमी को खा जाती हैं। अतः इसे अवश्य रोकने का प्रयास करना चाहिए।

मित्रो, हम देख रहे हैं कि इन दो हजार आदमियों में गाँधी बनने की क्षमता वाले कम से कम दो सौ आदमी बैठे हैं। इसमें से कई आदमी सरदार पटेल, नेहरू एवं शास्त्री बन सकते थे, परन्तु केवल दो सुराखों ने इनको खा लिया। इनमें बहुत से आदमी हमें ऐसे दिखाई पड़ रहे हैं जिन्हें हम यदि मोर्चे पर खड़े कर दें तो वे इन्हें न जाने कहाँ से कहाँ ले जा सकते हैं। आप में से हमें ऐसे व्यक्ति दिखलाई पड़ रहे हैं जिन्हें गुरु गोविन्द सिंह होना चाहिए था, परन्तु ये नहीं हो सके। इसके लिए दो ही सुराख जिम्मेदार हैं। एक है- भीतरवाली कमजोरियाँ- जिसे हम हमेशा बतलाते रहते हैं। वह हैं हमारी इन्द्रियाँ- जिससे हमने कभी 'नो' कहना ही नहीं सीखा। दूसरे वाले हैं- हमारे कुटुम्बी- जिनसे भी हमने 'नो' कहना ही नहीं सीखा, आप उन्हें 'नो' कहिए। आप कहिये कि हम आपकी सलाह को नहीं मान सकते। आप हमें मजबूर न करें कि हम उस रास्ते पर चलने के लिए तैयार हो जाएँ।

मित्रो, पन्द्रह वर्ष की आयु से ही बराबर चौबीस साल तक हमें अकेले ही खड़े रहना पड़ा। हमारे रिश्तेदारों ने इसका बहुत विरोध किया, पुरातनपंथियों ने तो

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

हमारा विरोध बाद में किया। नारियों के गायत्री अधिकार के बारे में उन्होंने विरोध बाद में किया। गायत्री का अधिकार केवल ब्राह्मणों को है, ऐसे शब्दों का प्रयोग प्रतिगामी लोगों ने बाद में किया, परन्तु असली विरोधी तो हमारे सम्बन्धी, रिश्तेदार पहले थे, जिन्होंने हमेशा बरगलाने की कोशिश की, हमारी हिम्मत तोड़ने की कोशिश की है। उन्होंने ऐसे-ऐसे कटाक्ष कसे- आक्षेप लगाये, सलूक किया था जिससे हमारी हिम्मत टूट जानी चाहिए थी, परन्तु हम हमेशा उनके आदेशों को 'नो' करते रहे।

हमारे गुरुदेव ने जो हमें बतलाया, हमने उसका पालन किया है। आप जानते हैं कि जब बच्चा पैदा होता है तो वह पहले जीभ के द्वारा ही दूध का जायका लेता है। इस जीभ को नियंत्रित करने के लिए हमने चौबीस साल तक जौ की रोटी और छाछ लिया है। नमक, शक्कर क्या होता है, इसका स्वाद जीभ ने चखा ही नहीं। वस्तुतः जीभ से ही संयम शुरू होता है। इसे जायकेदार बनाने के लिए लोग हमें सलाह देते रहे, पर हमने उनको मना कर दिया कि हमें आपकी सलाह की आवश्यकता नहीं है। हमने अपने जीवन में यह निश्चय कर लिया था कि हमें अपने गुरु- मार्गदर्शक सत्ता की सलाह माननी चाहिए, जिसके द्वारा हमारा कल्याण हो सकता है। बाकी को हमेशा 'नो' कहा है। हमने लोगों से कहा कि आप कृपा कीजिए तथा हमें अपने रास्ते पर चलने दीजिए।

मित्रो! इसी तरह हम निरन्तर २४ साल तक चलते रहे। हमें सहयोगियों की कमी कभी भी नहीं रही। हमें हमेशा सहयोग मिलता रहा। आपको मालुम होना चाहिए कि दैवीशक्तियाँ हमेशा इस प्रकार की आत्मा या व्यक्तित्व की तलाश करती रहती हैं तथा उन्हें सहयोग देने के लिए आतुर रहती हैं। हमारी आपसे प्रार्थना है कि आप अपने विचारों को बदल दें तब भगवान की अनुकम्पा बादलों की तरह से आपके ऊपर बरसने लगेगी। बादल जब बरसते हैं तो यह तलाश करते हैं कि नदियाँ कहाँ हैं जिन्हें हम भर दें। हमारे गुरु इसी तरह से हमारे, पास चले आये थे। गुरु किसी व्यक्ति को नहीं कहते हैं। गुरु एक शक्ति है, गुरु एक फिलॉसफी-दर्शन है। गुरु के बारे में शास्त्र कहते हैं-"**गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुगुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरुवे नमः।**" तो क्या आप ब्रह्मा हो सकते हैं? नहीं । क्यों? अच्छा तो आप एक बच्चे को बना दीजिए। चलिए बच्चा नहीं बन सकता तो एक जूँ बनाकर दिखा दीजिए। ब्रह्मा ने तो सारी सृष्टि बना दी है, पर आप कुछ नहीं बना सकते हैं। हमने गुरुतत्त्व को समझने की कोशिश की है, आपको भी समझने का प्रयास करना चाहिए। अध्यात्म की जितनी भी सामर्थ्य है, सिद्धियाँ हैं, वह एक व्यक्ति के मार्गदर्शन पर टिकी हुई हैं और उसका नाम गुरु है, जो व्यक्ति की चतुर्मुखी प्रतिभा को विकसित कर देता है। सारा चमत्कार श्रद्धा का ही है। हमने जो कुछ भी पाया है, वह केवल श्रद्धा का ही है।

साथियो! हमसे जो २४ साल तक अनुष्ठान करने को कहा गया था, उसमें डर था कि हम उसे कैसे कर पायेंगे, परन्तु यह हमारी श्रद्धा का ही फल है, जो हम उसे पूरा कर पाये। इतना ही नहीं, आगे भी हमारी श्रद्धा बढ़ती ही गयी। हमारे गुरु ने जब गायत्री का मंदिर बनाने के लिए कहा तो उसके लिए हमने जो जमीन ली, वह एक बगीची थी। उसे खरीदने से लेकर बनाने तक का सारा काम हमारी श्रद्धा के द्वारा ही पूरा हो सका। देश के कोने-कोने से हमें इस कार्य हेतु सहयोग मिलना शुरू हो गया। पहले हमारी हैसियत क्या थी, परन्तु गुरु के साथ जुड़ जाने पर हमारी हैसियत हमारे मार्गदर्शक के कारण बढ़ गयी। हमने अपने गुरु से कहा कि हमारा बजट इतना नहीं है। हमारे बॉस ने कहा कि आपका बजट नहीं है तो क्या हुआ, हमारा बजट तो है। आप काम शुरू करें। हमने वह बगीची ६०००/- रुपये में खरीद ली, जिसमें एक इमारत भी थी। मंदिर की तरह भी कुछ बना था। एक कुँआ भी था। उन्होंने कहा कि एक आयोजन भी करना होगा। जिसमें चार लाख व्यक्तियों के ठहरने एवं भोजन की व्यवस्था बनानी होगी। हमने कहा कि आप तो कहते ही चले जाते हैं, पर बजट का क्या होगा? उन्होंने कहा कि आपके बजट से कोई मतलब नहीं है। यह हमारा बजट है, जिसमें पाँच दिनों तक चार लाख आदमियों को भोजन कराना होगा। इतने लोगों में एक रुपये के हिसाब से बीस लाख रुपये खर्च होंगे। दूसरे समय के भोजन में २० लाख। इस तरह ४० लाख भोजन में और यज्ञ एवं अन्य व्यवस्था में करोड़ों रुपये खर्च करने होंगे। पर आप इसकी चिन्ता मत कीजिए। हमने अपने बॉस से कहा कि हम तो ब्राह्मण हैं। हमारे बाप-दादों ने दक्षिणा में इक्कीस रुपये माँगे हैं,परन्तु हमने कसम खायी है कि हम इनसान के आगे कभी भी नही माँगेंगे और न हाथ फैलायेंगे। इस सम्बन्ध में हम अपनी जबान नहीं खोलेंगे। अगर आपने हमसे कहा कि आप रसीदबुक लेकर के जाइये और दुकान-दुकान जाकर अठन्नी माँगकर लाइये, तो यह हमसे नहीं हो सकता है। उन्होंने कहा कि आप तो काम चलने दीजिए।

बेटे, सन् १९५८ के विराट यज्ञ का सारा काम हो गया। उस दिन से हमारा संगठन भी बन गया। हमारा मनोबल भी बढ़ गया। हमें विश्वास हो गया कि हमारे साथ एक समर्थ सत्ता है। यह है हमारी श्रद्धा-गुरु के प्रति! गुरु श्रद्धा है, विश्वास है। इसमें हम एक व्यक्ति के प्रति श्रद्धा जाग्रत करते हैं। कमजोरियाँ किसमें नहीं होती हैं। हमारा गुरु ? एक व्यक्ति है, एक पत्थर है, किन्तु एकलव्य के तरीके से हमने उसे भगवान बना दिया है। यह है हमारी श्रद्धा । हमारे लिए गोबर गणेश ही महान है।

आपने तो देवी की पूजा की, चाय पिलाया, दूध चढ़ाया, परन्तु आपकी देवी ने कभी भी- थैंक यू बेरी मच नहीं कहा। कम से कम थैंक यू ही कह देती, पर वह भी नहीं कहा- उसने। वह तो चुपचाप बैठी रहती हैं। हम नमस्कार करते रहते हैं, परन्तु वह जवाब तक नहीं देती हैं। अगर आप एक आदमी को नमस्कार करें तो वह जवाब दे देता है। कोई व्यक्ति लेखन भी कर रहा हो, तो वह यदि हाथ नहीं उठा सकता तो कम से कम अपना सिर तो हिला देता है, परन्तु देवी कभी भी कुछ नहीं कहती है। वह खाना खाती रहती हैं, तो यह भी नहीं कहती हैं कि आप भी आ जाइये और थोड़ा-सा भोजन कर लीजिए। वह देवी केला खिलाने पर भी कुछ नहीं कहती। यह तो आपकी श्रद्धा है जो आप खिलाते रहते हैं और वह आपकी भावना को उसी प्रकार स्वीकार करती रहती है। किन्तु हमने अपनी श्रद्धा को कायम रखा है, जिसके कारण देवी ने हमें दर्शनलाभ देना शुरू कर दिया है। हमने जो दीपक जलाया है,

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

वह क्या है? आग है, परन्तु हमारी श्रद्धा दूसरे प्रकार की है। हमने उसे कभी भी आग के रूप में नहां, प्रकाश के रूप में, एक ज्योति के रूप में दर्शन किया है। वह है हमारी श्रद्धा। यह श्रद्धा ही है जो न जाने क्या से क्या कराती और क्या से क्या बना देती है। हमारा वह दीपक चमत्कार दिखाता है। वह दीपक हमारी सिद्धि का प्रतीक है। वह दीपक हमारी प्रगति का प्रतीक है और न जाने क्या-क्या है।

मित्रो, आज गुरुपूर्णिमा का पर्व है। यह पर्व केवल श्रद्धा का है। हमारे मार्गदर्शक ने कहा था कि हम तुम्हें देवता बनायेंगे। यह हम अपने मुख से क्या कहें, ये बैठे हुए लोग स्वयं समझते हैं। हमने समाज को दिया है, यह हम अपने मुख से क्या कह सकते हैं? हमारे शरीर छोड़ने के बाद आप लोग याद करेंगे कि हमने क्या किया है और किसको क्या दिया है। हमारे जाने के बाद आप सब याद करेंगे कि एक ऐसा भी इनसान इस धरती पर आया था जिसने संसार के हर व्यक्ति को प्यार दिया था। मोहब्बत दी थी। लोगों को दिशाएँ दी थीं, प्रेरणाएँ दीं और लोगों के सामने एक उदाहरण प्रस्तुत किया था। आप कहेंगे कि उसका सबूत क्या है? सबूत यही है कि हमारा प्यार लौट कर हमारे पास आ जाता है। आप विश्वास करें या न करें, पर हमारा ही प्यार हजारों, लाखों आदमियों में 'रिप्लेक्ट' होता है और वह इस कदर वापस हमारे ऊपर आ जाता है जिसे देखकर लगता है कि हम इस बेकार की दुनिया में नहीं रहते हैं, वरन् हम प्यार की दुनिया में रहते हैं, हम मोहब्बत की दुनिया में रहते हैं। हमें लगता है कि हम श्रेय की दुनिया में, सद्भावना की दुनिया में रहते हैं। हमारी दुनिया ऐसी है कि उसका क्या कहना। हम भगवान से प्रार्थना करते हैं कि ऐसी दुनिया भगवान हर किसी भाग्यवान को दे।

आप लोग इतनी दूर से हमारे पास आते हैं। आप क्या लेकर आते हैं? मोहब्बत लेकर आते हं, प्यार लेकर आते हैं और पैसा खर्च करके आते हैं। आप अपनी पत्नी के जेबर तक बेचकर आते हैं और न जाने कितनी परेशानी उठाकर हमारे पास आते हैं। यह क्यों होता है? बेटे, हमारी मोहब्बत और प्यार तुम्हें खींचकर यहाँ ले आता है। गुरुजी! मेरा तो एकदम मन नहीं था, परन्तु एक व्यक्ति ने कहा कि गुरुपूर्णिमा में तो चलना ही चाहिए और हम खिंचते हुए आपके पास चले आये, हम यहाँ पर अपनी मोहब्बत आपके ऊपर बिखेरते हैं और वह आपके दिलों पर हावी हो जाती है। हमने मोहब्बत दी है, उत्साह दिया है और आप लोगों को उछाल दिया है। ऊपर से नीचे आना पानी का नैसर्गिक गुण है। आज लोग इसी प्रकार मनुष्य को नीचे गिरा देते हैं, परन्तु हमने हर व्यक्ति को नीचे से ऊपर उठाया है। उसे उछाल दिया है।

आप लोगों को मालूम है कि उछालने में बहुत शक्ति लगती है । इसमें गुरुत्वाकर्षण के विरुद्ध शक्ति लगानी पड़ती है। हमने आदमी को उछालने का प्रयास किया है। लाखों आदमियों को हमेशा उछाला है- गेंद के तरीके से, रॉकेट के तरीके से। हमने उछालने की यह ताकत अपने गुरु से पायी है। यह हमारी श्रद्धा का चमत्कार है। हमने बालों से भभूत नहीं निकाली है, बाजीगरी नहीं दिखाई है। लानत है उन बाजीगरों को जो अध्यात्म के नाम पर इस तरह के तमाशा दिखलाते हैं। बेटे, हम क्यों तमाशा दिखलायेंगे, हम कोई बाजीगर हैं क्या? हम किसलिए चमत्कार दिखलायेंगे? आप हमारी प्रशंसा करें और आप अचंभे में पड़ जाएँ, यह हमारा काम नहीं है। अचंभे में पड़ना बच्चों का काम है। न हम बाजीगर हैं और न आपको बच्चा समझते हैं। यह उछालने का हमारा चमत्कार है। हमारे पास ढेरों के ढेरों चमत्कार हैं। आदमियों के कष्टों को हमने दूर किया है। आदमी आजकल थक गया है। हार गया है। वह मूर्च्छित हो गया है। आज आदमी को प्यार की जरूरत है, मोहब्बत की जरूरत है, जो मनुष्य की पीठ थपथपा कर यह कह सके कि हम आपके कन्धे-से कन्धा मिलाकर चलेंगे। ऐसे लोग भी इस संसार में दिखलाई नहीं पड़ते हैं, जो लोगों के आँसू पोंछ सकें, उनसे दो शब्द प्यार के बोल सकें, दुख-दर्द बँटा सकें।

मित्रो! हमने लोगों को हिम्मत दी है, सहायता की है। पता नहीं भगवान ने हमारी जेब में क्या-क्या दिया है? परन्तु हमने इनसान के लिए अपनी जेब को हमेशा खाली किया है। हमने कुछ भी बचाकर नहीं रखा। तप, पैसा, ज्ञान जो भी रखा था, हमने हमेशा उसे बाँटने का प्रयास किया है। हम हमेशा अपने दिमाग को, अपनी जेब को खाली करके तब सोये हैं। हमें गहरी नींद आती है। चार घंटे हम इस तरह सोते हैं जैसे नशे की दवा खाने पर भी लोग नहीं सो पाते हैं। हम इसलिए सोते हैं, क्योंकि हम खाली होकर सोते हैं। हम इसलिए खाली होकर सोते हैं कि हमने अपने जीवन की धाराओं को किसी के सुपुर्द कर दिया है। हमने यह कहा है कि यह बाँस खाली है, आप इसे बजा सकते हैं। हमने उसे अपने बॉस के ओंठों से लगा दिया है। हमने यह कह दिया है कि आपकी जैसी मर्जी हो वैसा इसे बजाएँ। हम आपके हैं, आप जैसा चाहें उपयोग करें। हम सर्वतोभावेन आपके हैं।

जब पाँच हॉर्सपावर की मोटर से पानी ऊपर चढ़ जाता है, तो नीचे वाला स्रोत यह कहता है कि लीजिए पानी लीजिए। हम इसी तरह खाली हाथ होते रहते हैं और पुनः भरते रहते हैं। हम इसी तरह लोगों की मदद करते रहते हैं, दुखियारों की मदद करते रहते हैं, उनकी आँखों के आँसू पोंछते रहते हैं। आप किसी से मालूम कर लेना कि आप आचार्यजी के पास गये तो क्या आप खाली हाथ आये? आप किसी से भी पूछ लेना- हर आदमी यही कहेगा कि भला आचार्यजी के पास से हम खाली हाथ आ सकते हैं क्या? आपको हर आदमी यही कहेगा कि हम गुरुजी के पास जाते हैं और फायदा लेकर आते हैं। देवता वे होते हैं जो देने में समर्थ होते हैं। हम अपने गुरु के रास्ते पर चलते चले गये और हमें फायदा हुआ है। उन्होंने हमें कहा था कि तुम्हें देवता बनायेंगे। सो उन्होंने बनाया। भगवान को हमने नहीं देखा है, परन्तु हमने देखा है कि भगवान हमारे अन्दर घुसता हुआ चला जाता है।

भगवान के द्वारा बड़ा-बड़ा काम होता है। युग बदलने का काम होता है। प्रज्ञावतार का काम भी भगवान का ही काम है। यह इनसान का काम नहीं है। इनसान छोटे-छोटे मारकाट एवं झंझटों को ठीक नहीं कर सकता है। उनकी व्यक्तिगत समस्याएँ ही हल नहीं होती हैं। नगरपालिका के अध्यक्ष हैं, उनसे अपने क्षेत्र की सफाई का काम ही पूरा नहीं होता है। २८ आदमी मिलकर नगरपालिका की व्यवस्था नहीं सँभाल पाते हैं। जिले का डी. एम. और एस . पी. अपने जिम्मे का

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

काम पूरा नहीं कर पाते हैं। फिर इतने तमाम लोगों की तमाम समस्याओं का समाधान इनसान कैसे कर पाएगा। वास्तव में जो काम इनसान के बलबूते का नहीं होता है, वह काम भगवान अपने जिम्मे रखते हैं। भगवान प्रेरणा, प्रकाश और सुव्यवस्था का नाम है। प्रेरणा और प्रकाश के द्वारा उसकी व्यवस्था चलती है। हमारे गुरु हमेशा हमें प्रेरणा देते रहते हैं। उन्होंने हमें अनुदान दिया है, हमारे सामने अनेकों साधन दिये हैं।

आप पूछ सकते हैं कि क्यों गुरुजी हमें भी ऐसा गुरु मिल सकता है? हम कहते हैं कि आप में से हर एक आदमी को ऐसा गुरु मिल सकता है, परन्तु शर्त एक है- आपकी श्रद्धा। आप इसे न पैदा करना चाहते हैं और न आपको इस पर विश्वास है। आपको चालबाजी और जालसाजी पर विश्वास है, श्रद्धा पर विश्वास नहीं है। हमने श्रद्धा पर विश्वास किया है। हमारे लिए हमारा गुरु पत्थर का हो या हिमालयवासी हो-हमने उसे श्रद्धा के रूप में देखा है और पाया है। वह हमारे आगे-आगे चलता है, बातें करता रहता है, हमारी हर समस्या को हल करता है। हम आपको यह बताना चाहते हैं कि किस प्रकार हमारा बॉस हमको सामर्थ्यवान बनाता चला जा रहा है। हम चाहते हैं कि आपको भी हम सामर्थ्यवान बना दें, परन्तु आप में श्रद्धा ही नहीं है। स्वामी विवेकानन्द को अपनी सत्ता और शक्ति रामकृष्ण परमहंस ने स्वयं सौंप दी थी। हम भी यही चाहते हैं कि आप सभी हमारे बच्चे बड़े हो गये हैं और अपनी जिम्मेदारी सँभालने योग्य हो गये हैं। अतः हम अपनी सारी शक्ति आपको देकर निश्चिन्त हो जाएँ।

हमारे गुरु ने हमसे कहा था कि आप अगर श्रद्धा कायम रखेंगे तो हमारा अनुदान कभी खाली नहीं जाएगा। आज गुरुपूर्णिमा के इस पावन पर्व पर हम आपको एक बात बतलाना चाहते हैं कि आपकी आध्यात्मिक उन्नति, चमत्कार इसके बिना -अर्थात् श्रद्धा के बिना कदापि सम्भव नहीं है। ऐसे बहुत से श्रद्धावान शिष्य हुए हैं, जिनने अपने एक बूँद दवा के द्वारा हजारों लोगों की बीमारियों को ठीक कर दिया है। उन्हें लाभ पहुँचाया है। यह श्रद्धा का ही चमत्कार है। हमारी दवा में श्रद्धा है जो अमृत है। हमारे जीवन में सफलता की यही कहानी है। हमने श्रद्धा के साथ अपने मार्गदर्शक को अपनाया है। हमें अपने गुरु के प्रति, आचार्यों के प्रति, भगवान के प्रति, आस्तिकता के प्रति अटूट श्रद्धा है। हम कभी भी पीछे मुड़कर नहीं देखते। अकेले चलते हैं। हमारे साथ हमारी श्रद्धा और विश्वास चलता है और हम सफल होते हैं।

साथियो, हम हर काम में सफल होते चले जाते हैं। हमने नैष्ठिक साधक बनाने का संकल्प लिया है और वह पूरा हो रहा है। हमने अपने ६ हजार गायत्री परिवार की शाखाओं के अन्तर्गत गायत्री चरणपीठ बनाने का संकल्प लिया है। पहले हमने चौबीस गायत्री शक्तिपीठ बनाने का संकल्प लिया था, जो अब २४०० के निर्माण के रूप में बदल गया है। हम अपने मरने तक एक लाख चरणपीठ बना लेंगे। आप नहीं जानते हैं कि हमारे पीछे कौन-सी शक्ति है। आपको मालूम नहीं है कि हमारा कोई काम, कोई संकल्प अधूरा नहीं रहा है। हमारी श्रद्धा ने उन्हें जकड़ रखा है। यह हमारे साधु-ब्राह्मण जीवन का फल है। आज इसका संसार में अभाव है। आज संतों का अभाव है। कहीं भी कोई संत दिखलाई नहीं पड़ रहा है। आज वे रहते तो हमें चरणपीठ बनाने की क्यों आवश्यकता पड़ती। वे गाँवों में अशिक्षा की समस्या दूर कर देते। सामाजिक कुरीतियों को निकालने में सफल हो जाते। हम अगले दिनों संतों की- ब्राह्मणों की एक नई पीढ़ी का निर्माण करेंगे, उन्हें नव-निर्माण की ओर अग्रसर करेंगे।

आप हमें कभी भी व्यक्ति नहीं समझना, आप हमें एक शक्ति समझना। सारे काम समय पर हो जाएँगे। हम अकेले नहीं काम करते हैं। हमारी पाँच शक्तियाँ काम करती हैं। आदिवासियों की समस्या हम हल करेंगे। हमने झाबुआ में आदिवासी सम्मेलन बुलाया है। उसमें हम हर समस्या का समाधान करेंगे। आप देखना हम आगे चलकर सामाजिक कुरीतियों का समाधान किस तरह से करते हैं। आप आगामी दिनों हमारा चमत्कार देखना। हमारी सरकार निरक्षरता का समाधान नहीं कर सकी। हमें देश के, मुल्क के लोगों को साक्षर बनाना है। हमें अभी बहुत काम करना है। हम अभी नहीं मरेंगे। हमने तो कह दिया है कि हमें जब चलना होगा तो टेलीफोन करके आपको बुला लेंगे।

बेटे, इन समस्याओं का हल केवल मनुष्य के दिल और दिमागों के बदलने से होगा। हम अगले दिनों असंख्यों मनुष्यों के दिल और दिमागों को बदल डालेंगे। हमारे बॉस ने कहा था कि हम तुम्हें भगवान बनायेंगे। इसका मतलब यह नहीं था कि वे मुझे पूजा-उपासना कक्ष तक सीमित कर देंगे, बल्कि वह प्राणऊर्जा हमारे अन्दर भर देंगे जो कि हम भगवान जैसे कार्य, दिल-दिमाग बदलने जैसा कार्य सहज में कर सकें। हम भगवान के 'टूल्स' हैं,आप हमें भगवान कहें तो हमें आपत्ति हो सकती है। टूल्स कहने पर नहीं। आप बुद्ध को और गाँधी को चाहें तो भगवान कह सकते हैं।

हमारा बॉस- हमारा भगवान जब भी हमें आवश्यकता पड़ी है, दोस्त के तरीके से-गुरु के तरीके से आया है, उसने मदद की है। हमने श्रद्धा के बल पर उसे पकड़ लिया है। हो सकता है कि हमारा गुरु सूक्ष्म हो, परन्तु माइक्रोस्कोप के माध्यम से देखकर हमने उसे बड़ा बना दिया है। वह महान है, उसकी शक्ति महान है। आप चाहें तो उसी तरीके से अपने अन्दर ला सकते हैं तथा लाभ प्राप्त कर सकते हैं। हम आपको यह बतलाना चाहते हैं कि आप भगवान के रास्ते पर चलना, भगवान आपके रास्ते पर चलेंगे। अर्जुन भगवान के रास्ते पर चले तो भगवान भी अर्जुन के रास्ते पर चले। हम भगवान के रास्ते पर चले हैं। हमने उनको समर्पित कर दिया। हम दोनों एक दूसरे में समाये हुए हैं। आध्यात्मिकता के ऊँचे रास्ते पर चलने का यही रास्ता है। अगर आपको बड़ी चीजें पानी हो तो आपको इसी रास्ते पर चलना होगा। अपनी श्रद्धा को विकसित करना होगा। गुरुतत्त्व को हम श्रद्धातत्त्व कहते हैं। इसके द्वारा ही चमत्कार होता है। अगर ये आपके अन्दर आ जाता तो आपका जीवन भी हमारी तरह मस्ती का होता, चमत्कारों, ऋद्धि-सिद्धियों से भरा होता। इसके द्वारा आपको आत्मशांति, आत्मगौरव प्राप्त होता। अगर आप हमारा रास्ता अपना लेते तो आपके बराबर सौभाग्यवान और कोई नहीं होता। भगवान करे, यह दिन आपका सौभाग्य आप पर बरसाए । ॐ शांति॥ 卐

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी-

नया इनसान बनाएँगे, नया संसार बसाएँगे

(फरवरी १९८९ का वीडियो सन्देश)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो, भाइयो ! नया समय, नया काम, नई जिम्मेदारियाँ और नया कदम क्या है ? इस सम्बन्ध में आज आपको हम बताना चाहते हैं । पहली बात यह है कि नया समय क्या है? यह बारह वर्ष का है और बहुत ही महत्त्वपूर्ण है । तो क्या इसका मतलब यह है कि जमीन आसमान पर चली जाएगी तथा आसमान जमीन पर आ जाएगा ? नहीं, ऐसा नहीं होगा, परन्तु आज जो परिस्थितियाँ हैं, जिसमें आप और हम रह रहे हैं, वैसी नहीं रहने वाली हैं । नया काम क्या होना है ? दो काम होने हैं-(१) विनाश की लीला होगी, उस समय बहुत मुसीबतें आयेंगी । उन मुसीबतों से आप भी बच नहीं पायेंगे । बेशक आपके मकान हैं, खेत हैं, सम्पत्ति है, परन्तु आप भी बच नहीं पाएँगे । चारों दिशाओं में जब आँधी आती है, तो कोई नहीं बच पाता है । यह सारा विनाश एवं सृजन की लीला आप भी देखेंगे तथा हम भी देखेंगे । हो सकता है कि हम स्थूलशरीर से न रहें, परन्तु सूक्ष्म में रहेंगे तथा देखेंगे तथा आपके साथ-साथ रहेंगे । इसमें कोई भी आदमी सुरक्षित नहीं रह सकता है । आप भी बच नहीं सकते हैं ।

मित्रो, प्रकृति नाराज हो गयी है । इसका मतलब है कि इस समय ऐसी बाढ़ें, तूफान और भूकम्प आयेंगे जो आज तक इस पृथ्वी पर कभी नहीं आए । आज गर्मी के दिनों में ठंडक तथा ठंडक के दिनों में गर्मी न जाने कैसा वातावरण हो गया है । बीमारियाँ ऐसी-ऐसी पैदा हो गयी हैं कि अच्छे से अच्छे डॉक्टर भी परेशान हैं । वे कहते हैं कि अभी तक हमने ऐसा देखा भी नहीं, पढ़ा भी नहीं, तो हम आपको क्या दवा दें । कभी बाढ़ आ जाती है, तो कभी सूखा पड़ता है । इसके अलावा आप देख रहे हैं कि सामूहिक बलात्कार, मारकाट, चोरी, उठाईगीरी जैसे अपराध कितने बढ़ गये हैं । बहुओं को जलाया जा रहा है । इस प्रकार के काण्ड आप लोग रोज देखते तथा पढ़ते हैं । ऐसा वातावरण आपने पहले कभी नहीं देखा था । ऐसा समय कभी नहीं आया ।

आपको सामान्य बातें बतला रहा हूँ । भोपाल गैसकाण्ड आपने सुना ही है । इसके अलावा पर्यावरण की बातें-वातावण की बातें भी हैं । हवा में जहर घुलता जा रहा है । यह साँस के साथ आँखों में, गर्दन में, गले में, छाती में चला जाता है और आप बीमार हो जाते हैं । पानी में जहर मिल गया है । पहले हम गंगा का पानी ले जाते थे और उसका उपयोग करते थे, परन्तु आज यह प्रचार किया जा रहा है कि गंगा का पानी कोई मत पीजिए । इसमें जहर है । समूचे देश के बड़े-बड़े शहरों के गंदे नाले उसमें मिलाकर उसके पानी को जहरीला बना दिया है । कारखानों का पानी भी उसमें मिलता रहता है । नदी में से कुएँ में भी आता है । आज जो ऑटोमेटिक हथियार बन रहे हैं, उससे जो गैस निकलती है, वह जहरीली है । उससे अगली पीढ़ी जो पैदा होगी, वे लँगड़े, लूले, अंधे होंगे । प्राकृतिक सम्पदा, जैसे खनिज तेल, धातुएँ, कोयला आदि जो जमीन में थीं, उसे हमने खाली करना शुरू कर दिया है । मिट्टी का तेल, डीजल हम निकाल रहे हैं । लोहा, ताँबा, कोयला हम निकाल रहे हैं । पृथ्वी खोखली बनती जा रही है । भीतर से गर्मी कम हो जाएगी, तो पैदावार कम हो जाएगी । भूकम्प आयेंगे । अतः लोगों को समझना होगा कि अन्न कम होगा, जलावन कम मिलेगा, बीमारियाँ बढ़ेंगी, तो आदमी परेशान होता चला जाएगा ।

एक और डरावनी बात बतलाना चाहता हूँ । लड़ाइयाँ होंगी, उसमें चाहे बन्दूक चले या बम चले, पर आदमी समाप्त होते चले जाएँगे । राग, द्वेष बढ़ता चला जाएगा । इसके बाद इतनी बीमारियाँ फैलेंगी, जो न जाने समाज के कितने लोगों को समाप्त कर देंगी ! पहले जो युद्ध हुआ था, उसमें भी युद्ध से ज्यादा आदमी बीमारियों से मरे थे । केवल विधवाएँ बच गयीं थीं । लोगों को खाने के लाले पड़ गए थे । बच्चे मरते जा रहे थे । यह सेकेण्ड वर्ल्डवार-द्वितीय विश्वयुद्ध की घटना है ।

आप घर में रहकर भी बच नहीं सकते हैं । हर चीज की कमी हो जाएगी । आज क्या भाव शक्कर मिलती है, क्या भाव कपड़ा मिलता है ? इन सारी की सारी चीजों का अभाव हो जाएगा । आदमी भोजन के अभाव में मरते-खपते चले जाएँगे । दुनिया में बहुत तबाही आने वाली है । अब अगर युद्ध हुआ जैसा कि लोगों ने अरबों-खरबों रुपया लगाकर तैयारी कर ली है, अगर वह हुआ तो दुनिया में इतनी तबाही आयेगी कि उसको रोकना मनुष्य के लिए असम्भव होगा । यह अस्त्र-शस्त्र, एटम-हथियार ऐसे ही बच्चों के खिलौना थोड़े ही रखे हैं । युद्ध-उन्मादी ये पागल लोग इस जखीरे का प्रयोग अवश्य करेंगे । इसके बाद मनुष्यों के बीच तो तबाही आयेगी ही, परन्तु इसके साथ जमीन की उर्वराशक्ति भी समाप्त हो जाएगी । इस धरती पर रहने वाले लोग दुहरी मार को सहन नहीं कर पायेंगे । अगर परमाणु युद्ध होगा तो जमीन नहीं बचेगी। कहीं पानी भी नहीं मिल सकता है । इस सन्दर्भ में बहुत से भविष्यवक्ताओं ने बहुत-सी बातें लिखी हैं ।

मुसलमानों के धर्मग्रन्थ में लिखा है कि चौदहवीं सदी आयेगी तो इस दुनिया में बहुत तबाही आएगी । इनसान की संख्या बहुत कम हो जाएगी । इसी तरह ईसाई धर्मग्रन्थ-बाइबिल में लिखा है कि 'सेवन टाइम्स' आयेगा और दुनिया तहस-नहस हो जाएगी । हिन्दुओं के भविष्य पुराण में लिखा है-भविष्य में जो समय आने वाला है-वह खतरनाक है । दुनिया तहस-नहस हो जाएगी ।

मित्रो, इन तीनों के अनुसार यह कौन-सा समय है ? यह वही समय है, जिसका हम आपसे जिक्र कर रहे हैं । इस समय के लिए हमें सुरक्षा के लिए व्यवस्था बनानी होगी । आप कहेंगे कि महाराज जी तो क्या हम डण्डे लेकर खड़े हो जाएँ । मित्रो ! इससे कुछ नहीं होगा । इसके और तरीके हैं । आपने भगीरथ का नाम सुना होगा । एक बार इस धरती पर से पानी खत्म हो गया था । खेतों में पानी नहीं था, पीने के लिए पानी नहीं था । उस समय उन्होंने तप किया और गंगा प्रसन्न हो गयी और धरती पर आयीं । धरती ने पानी पी लिया तथा कुएँ में भी पानी आ गया । जो लोग पानी के अभाव में मर रहे थे, वे भी जीवित हो गये । पानी के लिए उन्होंने यह कष्ट उठाया था ।

एक और वृत्तासुर नामक राक्षस हुआ था । वह किसी के काबू-कण्ट्रोल में नहीं आ रहा था । सब लोग त्राहि-त्राहि कर रहे थे । आज भी इस तरह के वृत्तासुर दिखाई पड़ रहे हैं, जो मिसाइलें, बम, अस्त्र-शस्त्र बना रहे हैं, उनका नाम वृत्तासुर तो नहीं है, परन्तु हैं ये वृत्तासुर ही, जो इस प्रकार के क्रियाकलाप कर रहे हैं ।

वृत्तासुर को समाप्त करने के लिए महर्षि दधीचि ने तप किया था और अपने अस्थिपंजर को देवताओं को दान कर दिया था । उससे धनुष बनाया गया । उसके बाद वृत्तासुर को समाप्त किया जा सका । आज हम लोग कई तरह के वृत्तासुरों से घिरे हैं । हम तोप, अस्त्र-शस्त्र, एटम बमों एवं महँगाई से घिरे हुए हैं । लोग इन खतरनाक खिलौनों से डर रहे हैं । आज किराये के हत्यारे बहुत हो गए हैं । आप पाँच सौ या एक हजार रुपये निकालिए तो जिसको कहेंगे उसी की हत्या हो जाएगी । आज ऐसा ही खराब वक्त आ गया है । इस समय हमें अपने बच्चों, जिनकी संख्या २४ लाख हो गयी है, उनकी बहुत चिन्ता रहती है । उनको हम तथा हमारी पत्नी एक रूप में ही देखते हैं । हमें अपने बच्चों से बहुत आशाएँ हैं, परन्तु आप तो अभी नाबालिग हैं । आपको केवल अपना पेट, परिवार दिखलाई पड़ता है । आपको अपने देश, संस्कृति से कोई मतलब नहीं है, तो हम बच्चा ही कहेंगे आपको । आपके पास मानवीय गरिमा नहीं है, तो आप बच्चे नहीं हैं, तो कौन हैं? हमें बाहर का भी ख्याल है तथा अपने बच्चों का भी हमें ख्याल है ।

मित्रो, इसी कारण हमने अपनी शक्ति को दो हिस्सों में बाँट दिया है । एक तो हमने दुनिया के लोगों के लिए तथा दूसरी अपने लाखों बच्चों के लिए सुरक्षित रखा है । मान लिया जाए कि हम सौ रुपये कमाते हैं, तो पचास रुपये दुनिया के लिए, हारी-बीमारी के लिए, तथा पचास रुपये अपने बच्चों के लिए हमने रखे हैं। हमने अपने शरीर को स्थूल-शरीर और सूक्ष्मशरीर-दो भागों में बाँट दिया है । हमारे बच्चे जो हैं, उनकी रखवाली भी करनी है तथा सलाह भी देना है । सलाह के बिना काम नहीं चलेगा । केवल सलाह ही नहीं देना है, वरन् ऊँचा भी उठाना है, सहयोगी बनाना है । जो महात्मा गाँधी के सहयोगी बने थे, उनके आन्दोलन में भाग लिए थे, उन्हें आज पेन्सन मिल रही है, मिनिस्टर बन रहे हैं । फोटो छप रही है । पर अब कोई कहे कि हमें भी स्वतंत्रता सेनानी बना दीजिए, हम भी चले जाते हैं जेल, तो अब जेल जाने से कोई फायदा नहीं है । ठीक इसी तरह का यह समय है, जिसके बारे में हम आपको बतला रहे हैं । इसमें हमको भी बड़ा काम करना है तथा आपको भी काम करना है । इसके अलावा सारी दुनिया के लोगों को भी हमारा काम करना है । "वसुधैव कुटुम्बकम्" की स्थिति लानी है । इनकी भी समस्या का हल करना है । ये समस्याएँ हैं -गरीबी, बेकारी, युद्ध और अपराध, जो बढ़ रहे हैं, मनुष्य भेड़िया बन रहा है । हमको इन्हें भी रोकना है । सारे संसार के लिए कुछ करना है ।

क्यों साहब ! आप कितने वर्ष तक जिन्दा रहेंगे ? यह तो केवल १५ वर्षों का चक्कर है । सन् २००० से नया उछाल आना शुरू हो जाएगा, मुसीबतें घटने लगेंगी । गायत्री तपोभूमि एवं शान्तिकुंज से पौध लगाने का काम हमें इसी वक्त करना है । हमें लड़ना भी इसी वक्त है । हमें किससे लड़ना है ? सारी कुरीतियों एवं अपराधी वृत्तियों से लड़ना है । हमारे पास बहुत बड़े हथियार हैं, जैसा कि महर्षि दधीचि तथा भगीरथ के पास था । इससे हम लड़ने में भी समर्थ हैं तथा लोगों को राहत देने एवं परिस्थितियों को ठीक करने में भी समर्थ हैं । रखवाली करने में भी समर्थ हैं । हम बीमारी, उठाईगीरी से केवल आपकी रखवाली ही नहीं करेंगे, बल्कि आपको भी लोमस ऋषि के पुत्र श्रृंगी ऋषि की तरह होना होगा, जो कि अपने पिता के गले में मरा हुआ साँप जो राजा परीक्षित ने डाल रखा था, उसे देखकर क्रोधित हो गए थे और उस साँप को उतार कर उसे जिन्दा कर दिया था । उसे कहा था, तू जा और सात दिन के अन्दर राजा परीक्षित को काट कर समाप्त कर दे । वैसा ही हुआ । श्रृंगी ऋषि ने राजा दशरथ की रानियों के बच्चा पैदा कर दिया था । वे तपस्वी थे । तपस्वी विद्वान से भी ऊपर होते हैं । हम भी तपस्वी हैं । हम तुम्हारी रक्षा भी करेंगे तथा जिस प्रकार श्रृंगी ऋषि के द्वारा भेजे गए साँप से तबाही हो गयी थी, हम उससे भी रक्षा करेंगे । तपस्वी को पण्डित कहते हैं । मन्त्र बोलने वाले को हम पण्डित नहीं कह सकते हैं । आपकी गोद में हमें राम, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न को बैठाना है । हमें आप जैसे छोटे-छोटे आदमियों को समर्थ बनाना है ।

मित्रो, अभी आपका गुजारा नहीं होता है । हम चाहते हैं कि आपका गुजारा होना चाहिए । हम समर्थ गुरुरामदास के शिष्य छत्रपति शिवाजी की तरह आपको बनाना चाहते हैं, जो एक राजा भी था, गुरुभक्त भी था, सेवक भी था । हमारा ख्वाब कभी भी अधूरा नहीं रहा है । हमारा ख्वाब है कि हमारे चौबीस लाख बच्चे पूर्ण सुरक्षित रहें । उनके ऊपर कोई मुसीबतें न आवें । दूसरा हमारा ख्वाब है कि हमारे किसी शिष्य की मिट्टी पलीद न हो । कोई भी समाज के लोग उस पर बुरी नजर न डालें । कोई यह न कहे कि गुरुजी का शिष्य है, मर रहा है, खाने-कपड़े के लिए । हमारे पास जो भी आया है, समुन्नत हो गया है । हम राजा से भी बड़ा महाराजा बनाएँगे आपको । ऐसे जैसे कि सुदामा, जिनका चरण धोकर श्रीकृष्ण भगवान ने पिया था, रानियों ने उनका

कितना बड़ा स्वागत किया था । मित्रो, हम आपको उस स्तर से कम का नहीं बनाना चाहते हैं । हम आपको विश्वामित्र बनायेंगे, शिवाजी बनायेंगे । ऐसा बनाएँगे कि समाज यह न कहे कि इस व्यक्ति ने केवल खाया, पिया तथा बच्चा पैदा किया है, वरन् समाज की सेवा की है । जिन्हें लोग सैकड़ों, हजारों वर्ष तक याद करते रहें, ऐसा हम बनाना चाहते हैं । हम तुम्हें ऐसा नहीं बनाना चाहते हैं कि पुलिस तुम्हारे पास आवे और तुम्हारा सोना, पैसा ले जावे । छापा डाल दे । नहीं, बेटे ! ऐसा हम तुम्हें कदापि नहीं बनाएँगे । भूखे, नंगे, गरीब यानी खाने, कपड़े और मकान की किसी प्रकार की कमी तुम्हें नहीं होने देंगे । हम तुम्हारे लिए किले, कोठी तो नहीं बनायेंगे, पर हम तुम्हें इस तरह का अवश्य बनायेंगे कि तुम्हारा नाम इतिहास में अमर हो जाए । हम अपने बच्चों को, शिष्यों को बहुत अच्छा बनाएँगे ।

आज जो दुनिया तहस-नहस करने में लगी है, उसे हम एक धुरी पर इकट्ठी करेंगे । सारी पृथ्वी पर एक राज्य होगा । हम एक चक्रवर्ती राजा बनायेंगे । एक धर्म होगा, एक कानून होगा, सारी दुनिया की एक व्यवस्था होगी । कोई बड़ा-छोटा नहीं होगा, यानी कि समानता का अधिकार सबको मिलेगा । विषमता लोगों के बीच नहीं रहेगी । लोगों में एकता होगी । सब आपस में मिल-जुलकर रहेंगे, कुटुम्बी-परिजन बनकर रहेंगे । आपस में मिलकर काम करेंगे । आगे हम सारे विश्व को एक बनाने जा रहे हैं । यह हमारा एक बहुत बड़ा काम है । आप उसमें अवश्य शामिल रहना । आप हमारे परिश्रम में साथ-साथ रहेंगे, तो आप फायदे में होंगे । जो हमारा इस कम्पनी का शेयर खरीदेगा, उसे काफी मुनाफा मिलेगा । तुम हमारी कम्पनी में शेयर होल्डर बनकर रहना । हम कभी भी नहीं मरेंगे । हम सन् २००० तक बिल्कुल मोर्चे पर खड़े रहेंगे ।

साथियों, हम स्थूलशरीर में न सही, परन्तु सूक्ष्मशरीर में रहेंगे तथा एक मिनट में २० हजार मील चल सकेंगे, ऐसा हमारा विचार है । सूक्ष्मशरीर हमारा असीम है । यह मिट्टी वाला स्थूलशरीर जितना काम कर सकता है, उससे कहीं ज्यादा काम हमारा सूक्ष्मशरीर करता रहेगा । अरे तू चिन्ता मत कर कि गुरुदेव मर गये और अब हमें कौन देखेगा ? बेटा तू चिन्ता मत करना, हम तेरे पास स्वयं पहुँच जाएँगे, तेरी निगरानी करेंगे, रक्षा करेंगे, स्वस्थ रखेंगे तथा तुम्हें प्रगति के रास्ते पर बढ़ाते रहेंगे । इस विषम परिस्थिति में हम तुम्हारे छाता बनकर रहेंगे । न केवल छाता बनकर रहेंगे, वरन् तुम्हारे भविष्य को उज्ज्वल बनाने का भी कार्य करेंगे । तुम्हारे खानदान को भी ऊँचा उठाने तथा उनका भविष्य उज्ज्वल बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे ।

मित्रो, यह हमारी पचास प्रतिशत शक्ति का उपयोग होगा । अन्य पचास प्रतिशत शक्ति से हम दुनिया को शानदार बनाएँगे । जो जिस भाषा में समझेंगे, उसे हमें उसी भाषा में समझाना होगा । अँग्रेजी, मराठी में जो समझेंगे, उसे उसी भाषा में समझाएँगे । अगर कोई ऐसे नहीं समझेगा, तो हम उसे शक्ति से समझाएँगे, ताकत से समझायेंगे । जो भलमनसाहत से समझेंगे, उन्हें उसी तरह समझाएँगे । सारी दुनिया को हमें एक करना है, सारी जमीन को एक करना है । जो जमीन दबाकर रखे हैं, उनके सारे एकाधिकार समाप्त करेंगे । सब मिल-जुलकर खायेंगे, काम करेंगे, आगे बढ़ेंगे । एक समानता का मौका होगा । सभी मालिक होंगे । एक बच्चे का भी समान अधिकार होगा । एक शानदार दुनिया का ख्वाब हमारे अन्दर है । आज जहाँ-तहाँ अनीति, अत्याचार, अन्याय, कुरीतियाँ अपराधी-वृत्तियाँ आदि हमें दिख रही हैं । इनसे लड़ने के लिए हमारे भीतर एक शूरमा जाग्रत हो रहा है ।

आइंस्टीन जब मरे तो लोगों ने उनके दिमाग को खोलकर देखा था कि इनके दिमाग में क्या विलक्षणता थी ! अगर हम मरें तो तुम हमारे कलेजे को देखना, तो यह पाओगे कि उसमें लड़ने के लिए बहुत बड़ा साहस है, सामर्थ्य है, जो हनुमान के अन्दर था । हमें बनाना भी है तथा तोड़ना भी है । हमें दोनों में शक्ति लगानी है । यह हमें संसार के बारे में हम कह रहे हैं, पर आपके बारे में यह कहना है कि हम आपकी रखवाली भी करेंगे तथा आपको ऊँचा भी उठायेंगे । हम कन्धे पर भी आपको बिठाएँगे । कोई पिता यह नहीं चाहता है कि हमारा बच्चा हमसे कमजोर रह जाए । आपको हम दुःखी रहने नहीं देंगे, आपको कठिनाई में हम रहने नहीं देंगे, आपको हम ऊँचा उठाएँगे । सभी दृष्टि से ऊँचा उठाएँगे । पैसे की दृष्टि से कोई अमीर नहीं बन सकेगा । अभी भी लोग छापा मार रहे हैं, अगले दिनों भी पैसा अधिक नहीं रहने वाला है । हम मालदार नहीं बनायेंगे । आपको हम श्रद्धावान, भावनाशील, विचारशील बनाएँगे । आपको हम महामानव, ऋषि, देवमानव बनाएँगे । हमारा यह विचार केवल आपके लिए ही नहीं, वरन् सारे संसार के लिए है । हम सारे संसार को भी ऊँचा उठाएँगे और शानदार बनायेंगे, सुखी बनायेंगे । इस प्रकार का बनाएँगे, जिससे यह अनुभूति होने लगे कि मानो धरती पर स्वर्ग का अवतरण हो गया है । इनसान को इस प्रकार का बनाएँगे कि जैसे देवता होते हैं । यही हमारी योजना है, जो हमने आपको आज बतलायी है । आज की बात समाप्त ।

॥ ॐ शान्ति ॥

बुद्ध के एक शिष्य को अभिमान हो गया कि उसने सारे त्रिपिटक रट लिए हैं । दूसरे अन्य शिष्य जो आत्मसाधना और जनसेवा में लगे रहते थे, उन्हें वह अपनी तुलना में कम पढ़ा-लिखा और तुच्छ समझता और यदा-कदा उन सबको निरक्षर भट्टाचार्य कहकर चिढ़ाता रहता । एक दिन तथागत ने उसे बुलाकर शील, संयम, तप और साधना के बारे में कुछ व्यावहारिक सवाल पूछे, जिनका उत्तर उस शास्त्रज्ञ शिष्य से देते न बन पड़ा । किन्तु आत्मसाधना एवं लोकसेवा में समान भाव से लगे शिष्यों ने व्यावहारिक अनुभव के आधार पर सटीक उत्तर दिए, जिन्हें सुनकर अहंकारी शिष्य का सारा ज्ञानाभिमान गल गया । तभी महात्मा बुद्ध ने उसे समझाते हुए कहा-ज्ञान का वास्तविक स्रोत शास्त्र नहीं वरन् आत्मसाधना एवं लोकसेवा से पवित्र हुआ अन्तःकरण है । पवित्र अन्तःकरण में समस्त ज्ञान स्वतः स्फूर्त होता रहता है ।

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

जीवन को धन्य बनाने का महानतम अवसर

(सितम्बर, १९८० में शान्तिकुंज में दिया गया उद्‌बोधन)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ -

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो, भाइयो ! यह प्रज्ञावतार के अवतरण का समय है । ये बीस वर्ष बड़े ही महत्त्वपूर्ण हैं । इन बीस वर्षों में घोर परिवर्तन की तैयारियाँ महाकाल ने कर ली हैं । ये बीस वर्ष भगवान के द्वारा गलाई एवं ढलाई के हैं । दुनिया इसे याद करेगी कि ऐसा कौन-सा समय आया जिसमें इतने महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हो गए । इसमें आप देखेंगे कि पुराने जमाने की अवांछनीयताएँ समाप्त हो जाएँगी तथा नये जमाने की सुखद संभावनाएँ लोगों को दिखायी पड़ने लगेंगी । मनुष्य का सुख-शान्ति के साथ जीवन जीना संभव हो सकेगा । हमने इस बात को युगशक्ति गायत्री में, अखण्ड-ज्योति में छाप दिया है । इस समय हर धर्मवेत्ता तथा हर महान भविष्यवक्ता ने एक स्वर से इस बात को स्वीकार किया है कि अगले बीस वर्ष बड़े ही उथल-पुथल के होंगे ।

इस समय अपनी पृथ्वी के संतुलन को ठीक करने के लिए भगवान ने अवतार लेने का निश्चय किया है । ये चौबीसवां अवतार अन्तिम अवतार होगा । चौबीस अक्षर गायत्री मंत्र के होते हैं । यह प्रज्ञावतार ही गायत्री का अवतार होगा, जो इस शतक के अंत तक अपना काम पूरा कर लेगा और नया युग लाएगा । इसकी तैयारियाँ हो चुकी हैं । ये जो भविष्यवाणियाँ हैं, इन्हें आप माखौल न मानें । ये शब्द स्वयं महाकाल ने-भगवान ने कहे हैं, ऐसा मानना चाहिए ।

ऐसे समय में आप सभी जाग्रत आत्माओं को केवल हाथ पर हाथ रखकर बैठना नहीं है, बल्कि विशेष काम पूरा करना है । भगवान का अवतार तो होता है, परन्तु वह निराकार होता है । उनकी वास्तविक शक्ति जाग्रत आत्मा होती है, जो भगवान का संदेश प्राप्त करके अपना रोल अदा करती है । जो भी भगवान हुए हैं वे साकार लोगों के माध्यम से ही अपना काम करते हैं, क्योंकि निराकार अपना काम स्वयं नहीं कर सकता । वह तो प्रेरणा, प्रकाश, शक्ति, मार्गदर्शन कर सकता है । काम तो साकार व्यक्तित्व-जो महान आत्मा, जाग्रत आत्मा होते हैं, उन्हें ही पूरा करना होता है । वास्तव में उन्हें साकार यानि आकार बनाकर ही वह काम करना पड़ता है । प्राण निराकार है, परन्तु उसका आधार साकार ही होता है । इसीलिए उसे शरीर धारण करके अपना कार्य पूरा करना पड़ता है । ठीक इसी प्रकार प्रज्ञावतार अपनी जो गतिविधियाँ चलाने जा रहे हैं, उसमें अनीति, अत्याचार से लड़ना है । उसके लिए उन्होंने कुछ माध्यम-साधन बनाया है या यह कह सकते हैं कि उन्होंने कुछ माध्यम चुना है ।

वास्तव में भगवान के कार्य में जिन्हें हाथ बँटाने का मौका मिल सके, उन्हें हम बड़ा सौभाग्यशाली मानते हैं । वे स्वयं भी इस बात को अपना सौभाग्य मानेंगे । इतना ही नहीं सारी दुनिया उनको याद करती रहेगी कि हमारे बुजुर्ग, हमारे बाप-दादे इतने महान तथा सौभाग्यशाली थे जिन्होंने आगे बढ़कर भगवान का हाथ बँटाया था तथा उनके कन्धे से कन्धा लगाया था । ये बातें आने वाली पीढ़ियाँ गर्व से कहेंगी । आज तो सब चादर तानकर सोये हुए हैं । आज किस प्रकार की स्थिति हो गयी है ? चारों तरफ अंधकार ही अंधकार दिखायी पड़ रहा है । आज जो व्यक्ति प्रतिभाशाली हैं तथा आत्मबल से सम्पन्न हैं, उनमें से भी अधिकांश दो बातें ही सोचते हैं कि हमें पेट भरना चाहिए तथा कीड़े-मकोड़े की तरह औलाद पैदा करनी चाहिए । इसके अलावा उनको किसी बात की चिन्ता नहीं है । न तो वे परमार्थ की बात सोचते हैं, न आत्मा की बाबत सोचते हैं वे केवल अपने स्वार्थ में ही संलग्न हैं ।

इस विषम परिस्थिति में युग-निर्माण परिवार के व्यक्तियों को महाकाल ने बड़े जतन से ढूँढ़-खोजकर निकाला है । आप सभी बड़े ही महत्त्वपूर्ण एवं सौभाग्यशाली हैं । इस समय कुछ खास जिम्मेदारियों के लिए आपको महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी है । आपको भगवान के कार्य में भागीदारी निभानी है । आपको ऐसा सुन्दर मौका मिला है । वास्तव में आपको यह तथ्य समझना चाहिए कि आप भगवान के विशेष आदमी हैं तथा भगवान के विशेष काम के लिए आपको धरती पर अवतरित होना पड़ा है । आप धरती पर केवल बच्चे पैदा करने और पेट भरने के लिए नहीं आए हैं, बल्कि आज की इन विषम परिस्थितियों को बदलने में भगवान की मदद करने के लिए आए हैं । इस बात को फिर से समझ लीजिए ।

आपका यह ख्याल है कि भगवान अगर किसी पर प्रसन्न होते हैं तो उसे बहुत सारी धन-सम्पत्ति देते हैं तथा औलाद देते हैं । यह बिलकुल गलत और घटिया ख्याल है, भगवान के बारे में आपका । आपको इस ख्याल को बदलना चाहिए । वास्तविकता ये है कि जो भगवान के नजदीकी होते हैं उन्हें धन-सम्पत्ति एवं औलाद से अलग कर दिया जाता है । ऐसी परिस्थिति में ही उनके द्वारा यह सम्भव हुआ है कि वे भगवान का काम करने के लिए अपना साहस एकत्रित कर सकें और श्रेय भी प्राप्त कर सके । इससे कम कीमत पर किसी को भी श्रेय नहीं मिला है । आप चाहेंगे कि आपको धन-सम्पत्ति भी मिले, औलाद भी मिले तथा भगवान का प्यार भी मिले, तो यह कदापि संभव नहीं है । आपको

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

एक चीज को अवश्य छोड़ना पड़ेगा । तभी आप भगवान के प्यार, आशीर्वाद, अनुदान के भागीदार हो सकते हैं ।

मित्रो, ऐसे समय में जिसे हम युग-संधि कहते हैं, प्रभातकाल की वेला तथा स्वर्णिम सौभाग्य की वेला कहते हैं। इस महान समय में आप लोगों को केवल आवश्यक कार्य ही करने चाहिए । इस समय में आप लोगों को अपनी-अपनी हथकड़ियों को थोड़ा ढीला कर देना चाहिए । इसका मतलब इस समय में सम्पत्ति इकट्ठा करने की प्रवृत्ति तथा औलाद पैदा करने की प्रवृत्ति को बन्द कर देना चाहिए । इस समय आपको अपने मन को थोड़ा संयमित कर लेना चाहिए । हमारी उनसे प्रार्थना है जो जागरूक हैं । जो सोये हुए हैं उनसे हम क्या कह सकते हैं, परन्तु जो जागरूक हैं उन्हीं से हम कुछ कह सकते हैं । आप जागरूक हैं इसलिए हम आप से कुछ कह रहे हैं । वास्तव में इस समय हर क्षेत्र के लोग सोये पड़े हैं । इससे अध्यात्म का क्षेत्र भी अछूता नहीं है । आज अध्यात्म क्षेत्र में वे ही व्यक्ति हैं जो थोड़ा बहुत पूजा-पाठ करने के बाद अपनी सभी मनोकामनाएँ पूरी कराना चाहते हैं । ये सारे के सारे व्यक्ति सोये हुए हैं । ये चाहे सेठ हों या मंत्री या अध्यापक, सभी सोये हुए हैं । उनसे कुछ कहा भी जाए तो उनकी आत्मा के ऊपर कोई असर नहीं पड़ेगा । ये इस कान से सुनकर उस कान से निकाल देंगे । इनको तो हम पूजा के क्षेत्र में भी सोये हुए कहते हैं, अध्यात्म के क्षेत्र में सोये हुए कहते हैं ।

आज प्रज्ञावतार को ऐसे जागरूकों की आवश्यकता है जो दुनिया के कोने-कोने में जाकर सोये हुए लोगों को जगा सकें, उनके मन-प्राणों को झकझोर सकें । उनमें साहस और हिम्मत पैदा कर सकें । हम आपको देखकर यह बतला सकते हैं कि आप जागरूक व्यक्ति हैं । युगसंधि के समय पर जो महत्त्वपूर्ण कामों में हनुमान, अंगद और अर्जुन जैसा सहयोग कर सकते हैं तथा भगवान के उद्देश्य को पूरा कर सकते हैं । हम आप लोगों को सौभाग्यवान मानते हैं । हम आप लोगों को युगप्रहरी मानते हैं । हम आपको भगवान का सहयोगी-सहायक मानते हैं । हम आप लोगों से इस समय एक ही निवेदन करना चाहते हैं कि आप लोगों को इस समय उन बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए, न ही वैसा करना चाहिए, जिन बातों पर सामान्य लोग ध्यान देते हैं और जो करते हैं । हमें पूरा विश्वास है कि आपने पिछले हजारों वर्षों में इसी प्रकार कई बार भगवान का काम किया है । अब आप चाहें तो पुनः हजार वर्षों तक अपना जीवन धन्य कर सकते हैं तथा महामानव बनने का श्रेय एवं सौभाग्य प्राप्त कर सकते हैं।

हम एक बात पुनः आपसे कहना चाहते हैं कि फिर ऐसा कोई समय नहीं आयेगा, जिसमें आपको औलाद या धन से वंचित रहना पड़े, परन्तु अभी इस जन्म में इन दोनों की बावत न सोचें । आपको भगवान के इस काम के अन्तर्गत रोटी, कपड़ा और मकान की आवश्यकता सदा पूरी होती रहेगी, इसके लिए किसी प्रकार की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है । भगवान के काम में सहयोग करने, हाथ बँटाने से आपको दोहरा लाभ मिलता रहेगा-एक लोकमंगल का, दूसरा प्रभु समर्पित जीवन जीने का । मित्रो, हमारी इतनी-सी बात अगर आप मान लें कि आप अपने चिन्तन से औलाद एवं धन के प्रति थोड़ा विराम लगा दें तो मजा आ जाएगा और आपका जीवन सार्थक हो जाएगा । समय की माँग को समझें और जीवन को धन्य बनाने का यह सुयोग हाथ से न जाने दें ।

आप यह मान्यता बनाकर चलें कि इस समय भगवान का काम करने की आपको नितांत आवश्यकता है । इस काम के प्रति इस समय आपको भी प्यास होनी चाहिए । भगवान को भी आपसे काम कराने की प्यास है । आपसे भगवान कुछ चाहते हैं । आपको भी भगवान की आवश्यकता को पूरा करने के लिए साहस एवं हिम्मत के साथ आगे बढ़ना चाहिए । अगले दिनों में धन का संग्रह कोई नहीं कर सकेगा, क्योंकि आने वाले दिनों में धन के वितरण पर लोग जोर देंगे । शासन भी अगले दिनों आपको कुछ जमा नहीं करने देगा, अतः आप मालदार बनने का विचार छोड़ दें । आप अगर जमाखोरी का विचार छोड़ देंगे तो इसमें कुछ हर्ज नहीं है । अगर आप पेट भरने-गुजारे भर की बात सोचें तो कुछ हर्ज नहीं है । आप संतान के लिए धन जमा करने, उनके लिए व्यवस्था बनाने की चिन्ता छोड़ दें । उन्हें उनके ढंग से जीने दें । संसार में जो आया है वह अपना भाग्य लेकर आता है।

जार्ज वाशिंगटन अपने भाग्य से ही महान बने थे । उनके खानदान वालों ने उन्हें महान नहीं बनाया था । दूसरे और भी मनुष्य जो गरीब खानदान में पैदा हुए, उनके माँ-बाप ने उनके लिए दौलत नहीं छोड़ी थी, परन्तु वे अपने पुरुषार्थ से-हिम्मत से आगे बढ़े, धनवान बने । इस समय औलाद के लिए पैसे-धन-दौलत छोड़कर जाने की बात न सोचें । उन्हें श्रेष्ठ संस्कार दें । औलाद के पास धन नहीं तो कोई बात नहीं है । आपके पास भी धन नहीं है तो क्या हुआ ? इस महत्त्वपूर्ण समय में आप प्रज्ञावतार का काम तो कर सकते हैं ।

यह युगसंधि का पहला वर्ष है । इस समय हर प्रज्ञापरिवार को तीन उत्तरदायित्त्व सौंपे गए हैं । आपको भी तीन उत्तरदायित्त्वों को पूरा करना चाहिए । आपको इस समय पुरुषार्थ करना चाहिए तथा वरदान पाना चाहिए । कभी भी किसी को फोकट में कुछ नहीं मिला है । जब से यह इतिहास बना, तब से अब तक मुफ्त में किसी को कुछ नहीं मिला है । स्वामी विवेकानन्द ने, शिवाजी ने भी कीमत चुकाई तब कुछ पाया । आप फोकट के फेर में हैं । मित्रो, मिट्टी भी फोकट में नहीं मिलती । आप तो कीमत चुकाना भी नहीं चाहते । यह कीमत चुकाने का वक्त है । आप कीमत चुकाने के लिए आगे आइए न । आप बीज बोने का प्रयास तो कीजिए । अगर आप बीज नहीं बोएँगे तो फसल कैसे काटेंगे । आप कहते हैं कि गुरुजी हम तो भजन करते हैं । भजन का हम क्या करें ? केवल भजन से कोई बात नहीं बनने वाली है । भजन के साथ-साथ पुरुषार्थ भी करें । जितने संत, महामानव इस धरती पर हुए हैं, उन्होंने पुरुषार्थ किया है । तब फल पाया है । आप इस तरह पड़े रहेंगे तथा तीन माला का जप करते रहेंगे तो आप घाटे में रहेंगे । आप को कुछ लाभ नहीं मिलने वाला है । आप वरदान माँगते रहिए कोई भी देने वाला नहीं है ।

हमने पुरुषार्थ किया है । हाँ, हमने भजन भी किया है, लेकिन भजन से कुछ नहीं होता । आप में से कोई भी ऐसा

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

आदमी नहीं है जो पुरुषार्थ नहीं कर सकता है । आप कहते हैं कि हमारे पास क्या है, हम पुरुषार्थ कैसे करें ? हम पूछते हैं कि अगर आपके पास धन-दौलत नहीं है, तो अक्ल तो है । आपके पास समय तो है, श्रम तो है । लगाइए न इन्हें भगवान के काम में । समय की माँग को देखते हुए हम फिर से आप लोगों से यह प्रार्थना करते हैं कि यह महत्त्वपूर्ण समय है। आपको अपनी अक्ल, समय, श्रम, धन जो भी हो उसे भगवान के खाते में जमा करने का प्रयास करना चाहिए । इस समय महाकाल, जो हिमालय में रहते हैं, उनका तीन कार्य करने का आदेश है । उसे पूरा करने का प्रयास करें । इन कामों के द्वारा आप घाटे में नहीं रहेंगे । ये बातें आपको अवश्य माननी चाहिए ।

पहला-युगसंधि महापुरश्चरण की भागीदारी अवश्य निभाने का प्रयास करना चाहिए । नैष्ठिक उपासना-पाँच माला गायत्री मंत्र का जप करें । इससे आपका आत्मबल बढ़ेगा । इसमें अवश्य भाग लें । इसमें आत्म-कल्याण और विश्व-कल्याण का भाव जुड़ा है ।

दूसरा-हर गाँव में, हर शहर में प्रज्ञावतार का संदेश घर-घर तक पहुँचाने का आपको प्रयास करना चाहिए । इस बार हम सामूहिक कार्यक्रम करना चाहते हैं । इसके लिए हम चाहते हैं कि कुछ लोग परिव्राजक के रूप में युग-चेतना के संदेश को पूरे देश में पहुँचाने का प्रयास करें । वे समयदान दें और साधु-ब्राह्मण का जीवन जिएँ ।

तीसरा-अब व्यक्ति एकाकी काम न करे, बल्कि सब मिलजुल कर काम करेंगे । हम चाहते हैं कि हर गाँव में एक चरणपीठ, ग्रामतीर्थ स्थापित हो जाए और सभी लोग वहाँ इकट्ठे हों तथा मिलजुल कर आगे के काम की-प्रगति की योजना बनायी जाए । जिस तरह एम. एल. ए. अपने क्षेत्र के विकास की योजना बनाते हैं, उसी प्रकार चरणपीठ वाले अपने-अपने गाँव के विकास की योजना बनाएँ और उसे चरितार्थ करें ।

हमने शक्तिपीठों के लिए अनुरोध किया था । वह वजन हमने उठा लिया है । प्रज्ञापीठों का भी काम, उत्तरदायित्व पूरा होने वाला है, परन्तु हम उससे ज्यादा महत्त्व चरणपीठ को देना चाहते हैं, जो हर गाँव में हो । यह हमारे प्रज्ञावतार का प्रतीक हो-देवी का प्रतीक हो । इस वर्ष हमें हर गाँव में जाने की इच्छा है । अतः आप अपने-अपने मित्रों, रिश्तेदारों को बोल कर हर गाँव में एक चरणपीठ बनाने का प्रयास करें । इस चरणपीठ का काम कोई महँगा नहीं है । आप इसे सहज में पूरा कर सकते हैं । एक विवाह-शादी में कम से कम खर्च ६००० रुपये से कम नहीं होता है । चरणपीठ में तो उतना भी नहीं लगने वाला है । आप यह मानकर चलें कि आपको भगवान ने एक संतान चरणपीठ के रूप में दी है । आप अपना दिल चौड़ा तो कर लीजिए, हिम्मत तो कर लीजिए । इसके बाद आपका काम सरलता से हो जाएगा । आपको मालूम नहीं है कि मध्यप्रदेश के खरगोन जिले के एक भील ने प्रज्ञापीठ के लिए अपनी जमीन दे दी ; उसकी व्यवस्था एवं परिव्राजक खर्च के लिए एक और भी खेत दान कर दिया । आप क्या उस भील से भी गए-गुजरे हैं ।

आप भगवान के भक्त हैं, प्रज्ञापुत्र हैं, फिर आपकी हिम्मत इतनी कम कैसे है ? आप चाहें तो किसी के पास हाथ पसारने की आवश्यकता नहीं है । आप तो एक बीघा जमीन बेचकर इस काम को कर सकते हैं । भगवान के भक्त इतने कंजूस एवं कायर ? यह देखकर तो हमें आश्चर्य होता है । आपको इतना कृपण नहीं होना चाहिए । आप दूसरों पर दोष लगाते हैं कि अमुक ने समय नहीं दिया, अमुक ने पैसा नहीं दिया । आप अपने को तो पहले तैयार करें । हम आपको कह रहे हैं । इतना ही नहीं सबसे पहले आपको आगे बढ़कर काम करना चाहिए । आप स्वयं २०० रुपये देकर पहल कीजिए, फिर देखिए चरणपीठ बनता है या नहीं । आप तो लोगों से पहले चार आना, रुपया माँगते हैं । आप अगर स्वयं पहल करेंगे तो देखेंगे कि आप घाटे में नहीं रहेंगे । आप अपने से काम शुरू करें ।

हमने ६००० रुपये में चरणपीठ बनाने की एक योजना दी है । उसमें चार चीजें हैं । इसमें कार्यकर्त्ता निवास नितान्त आवश्यक है । मंदिर बनाकर ताला लगा देंगे, तो कैसे काम चलेगा ? इसलिए एक कार्यकर्त्ता निवास अवश्य बनाना होगा । दूसरा एक हॉल बना दिया जाए, जिसमें हवन, सत्संग के कार्य के साथ-साथ रात्रि की कथा-गोष्ठी, योग शिविर प्रशिक्षण भी चल सकें । उसी में देवमन्दिर भी होना चाहिए,क्योंकि देवता नहीं होंगे तो श्रद्धा कहाँ से जुड़ेगी । ये सभी चीजें ६००० रुपये में शामिल हैं । आपको अगर गायत्री माता की मूर्ति लेनी है तो १००० रुपये का खर्च अतिरिक्त हो जाएगा । उस परिस्थिति में ७००० रुपये खर्च होगा । आप बड़ी मूर्ति नहीं लगा सकते तो छोटी लगा दें । इसमें एक पुस्तकालय भी शामिल है । इस प्रकार ६००० रुपये का त्याग आप सभी को मिलजुल कर करना चाहिए । इसके अलावा जहाँ बड़ी शक्ति पीठें बन रही हैं वहाँ भी आपको सहयोग देना चाहिए । उनके बन जाने के बाद वहाँ से कार्यकर्त्ता आपको मिलेंगे, वहाँ से सहयोग और मार्गदर्शन मिलेगा । आप अभी उन्हें सहयोग करें, ताकि वे जल्दी बन जाएँ और मिशन का उद्देश्य पूरा हो सके । हमारी गुजरात में पाँच सौ-छह सौ शाखाएँ हैं । हम चाहते हैं कि कम से कम २४० चरणपीठें वहाँ अवश्य बनें । ६००० रुपये कोई बड़ी बात नहीं है । इतना खर्च करके आप इसे बना डालिए । हम आपका ब्याज सहित रुपया वापस कर देंगे ।

हमने जो कुछ भी समाज को दिया है, उससे अधिक पा लिया है । प्राचीनकाल में भी जिन लोगों ने जो कुछ दिया, उससे ज्यादा पाया था । आप यकीन रखें, आप भी जितना लगाएँगे, उससे अधिक पाएँगे । आप ज्यादा देने के लिए पात्रता साबित कीजिए । आप दे नहीं पाएँगे तो हम आपकी सहायता कैसे कर सकते हैं । आप कृपण बने रहें तो हम क्या करेंगे ? आपको महत्त्वपूर्ण श्रेय किस प्रकार दे पाएँगे । आप आगे बढ़िए और इस चरणपीठ के कार्य को पूरा कीजिए । आपके क्षेत्र में जहाँ कहीं भी शक्तिपीठें बन रही हैं, उन्हें पूरा कराने का प्रयास कीजिए ।

तीसरी बात यह है कि मात्र इतने से काम नहीं चलेगा, बल्कि आपको जन-शक्ति को भी जगाना होगा । इसके बिना युग-परिवर्तन की भूमिका सम्भव नहीं होगी । आदमी की भी इसमें नितान्त आवश्यकता है । आपने मशीन तो बना दी, परन्तु कारीगर न हो तो मशीन चलेंगी कैसे ? हमारे मिशन के साथ जनशक्ति की भी आवश्यकता है । इतने बड़े समाज की माँग केवल शान्तिकुंज से कहाँ पूरी हो

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

सकती है । आप लोगों में से हर आदमी से प्रार्थना है कि आपके अन्दर जो चाण्डाल एवं बनिया छिपा हुआ है, उसे निकालिए । चाण्डाल आपको अच्छे काम नहीं करने देता है । वह हमेशा आपको बुरे काम करने की ही प्रेरणा देता है । आपके भीतर बनिया भी छिपा है, जो आपको कंजूस बनाकर रखता है । एक दमड़ी भी समाज के लिए, लोकमंगल के लिए सही ढंग से खर्च करने की प्रेरणा भी नहीं देता है । इसी के साथ यह बात भी सत्य है कि आपके भीतर ब्राह्मण एवं संत भी छिपा है । उसे भी देखने का, जाग्रत एवं जिन्दा करने का प्रयास करें । ब्राह्मण एवं संत को आगे आना चाहिए । इसका क्या मतलब ? इसका मतलब यह है कि आपमें से जो पचास साल के हो गए हैं या जिनकी घरेलू जिम्मेदारी पूरी हो गई हैं अथवा कम हैं, उन्हें संत-ब्राह्मण के काम के लिए आगे आना चाहिए । आपके लिए गुजारे का है तो आप हाय-हाय क्यों करते हैं ? आपके बच्चे जब कमाने लग गए हैं तो क्यों आप घर में बैठकर मर रहे हैं ? आपको घर से बाहर निकलना चाहिए । आपको परिव्राजक के रूप में बादलों की तरह घर से निकलना चाहिए तथा समाज के लोगों को नया प्रकाश, नयी प्रेरणा, नयी रोशनी देनी चाहिए ।

गायत्री परिवार के हर व्यक्ति से हमारा अनुरोध है कि जितने व्यक्ति अपने घर की व्यवस्था करके जितना समय समाजसेवा के लिए निकाल सकते हों, वे युगसृजन की भूमिका निभाने के लिए आगे आएँ । संत की प्रवृत्ति को आप जगाइये तथा अपने समय का एक अंश लगाकर समाज के लोगों को ऊँचा उठाने का प्रयास करें । उन्हें जीवन जीने की कला सिखाएँ । अगर संत की प्रवृत्ति आपमें जाग जाए तो जो आप अपने परिवार, बाल-बच्चों के लिए खर्च कर रहे हैं, उसका एक अंश समाज के लिए अवश्य खर्च करेंगे, ऐसा हमारा विश्वास है । संत अगर मुर्दा पड़ा रहे, संत अगर सोता रहे तो हम क्या कर पायेंगे ? आप में संत की प्रवृत्ति जागनी ही चाहिए । आपके भीतर एक और भी चीज है जिसे हम ब्राह्मण कहते हैं । ब्राह्मण कौन है ? जो किफायतसारी जीवन जीता हो । अगर आप ब्राह्मण हैं तो हम आपके खर्चे की व्यवस्था कर सकते हैं । आप आगे आएँ और भगवान का कार्य करें । पिछले जमाने में लोग ब्राह्मणों को दक्षिणा देते थे । इसका मतलब यह था कि वे उनके खर्चों का भार उठाते थे ।

हमने भी अपने परिजनों से दक्षिणा माँगी है । घर-घर में ज्ञानघट स्थापित किए हैं और लोगों से कहा है कि आप इसमें दस पैसे नित्य डालिए । हमें दक्षिणा दीजिए, समाज एवं राष्ट्र के उत्थान के लिए इसकी आवश्यकता है । लोगों ने हमारी बात मानी और ज्ञानघटों की संख्या बढ़ रही है । आप इसमें कंजूसी मत कीजिए । नियमित रूप से इसमें दस पैसे डालिए । इससे हम युग-परिवर्तन की सारी जिम्मेदारी पूरी करेंगे । साथ ही साथ हम ब्राह्मणों को भी जीवित करेंगे और उनकी न्यूनतम आवश्यकताओं को पूरा करेंगे । हम अपने देश, समाज के लोगों को ऊँचा उठाएँगे ।

मित्रो, ब्राह्मण किसे कहते हैं ? यह कोई जाति नहीं, वरन् मानव समुदाय का वह वर्ग है जो केवल अपने लिए ही नहीं, देश, समाज और संस्कृति के लिए जीता है । जो पेट भरने और तन ढकने के लिए दो कपड़े की व्यवस्था जुटा लेने के पश्चात् बाकी बचे समय में समाज का काम करता है । यही ब्राह्मण की वास्तविक पहचान है । जो इस आदर्श एवं सिद्धान्त पर चल रहे हैं, वे सारे के सारे लोग ब्राह्मण हैं । आपको मालूम होना चाहिए कि आगामी दिनों प्रज्ञावतार का जो कार्य विस्तार होने वाला है, उस काम की जिम्मेदारी केवल ब्राह्मण तथा संत ही पूरा कर सकते हैं । अतः आपको इन दो वर्गों में आकर खड़ा हो जाना चाहिए तथा प्रज्ञावतार के सहयोगी बनकर उनके कार्य को पूरा करना चाहिए । अगर आप अपने खर्च में कटौती करके तथा समय में से कुछ बचत करके इस ब्राह्मण एवं संत परम्परा को जीवित कर सके, तो आने वाली पीढ़ियाँ आप पर गर्व करेंगी । अगर आपको इस युग की समस्याओं के समाधान करने के लिए खर्चे में कुछ कमी आती है, तो हम आपको सहयोग करेंगे, परन्तु एक बात मालूम रहे कि हम आपके लिए प्रोविडेण्ट फण्ड की व्यवस्था नहीं कर सकते हैं । अगर आप समय निकाल सकते हों तो समय निकालने का प्रयास करें । हमें समयदानियों की नितान्त आवश्यकता है । आप आगे आएँ तथा प्रज्ञावतार के कामों को पूरा करें । आप में से जहाँ कहीं भी संत, ब्राह्मण जिन्दा हों, वे आगे आवें और महाकाल के साथी-सहचर बन कर लोकमंगल का काम करें ।

संत पूरा समय देते हैं और ब्राह्मण कुछ समय देते हैं । आपको इन दोनों में से जो अच्छा लगता हो, उस उत्तरदायित्त्व को पूरा करें । आपको इस समय तीन काम अवश्य पूरे करने चाहिए-

(१) युगसंधि महापुरश्चरण आपको करना ही चाहिए ।

(२) किसी न किसी प्रकार हर गाँव में एक चरणपीठ, ग्रामतीर्थ जिसकी लागत लगभग ६ हजार रुपये है, अवश्य बनाना चाहिए ।

'मेरी ग़लती है'- या 'आई एम सॉरी' ये तीन बड़े नगण्य और सीधे-सादे शब्द हैं , किन्तु मन की भाषा में इनका उच्चारण बड़ा कठिन है । यों कण्ठ और जिह्वा अक्सर इनका उच्चारण करते रहते हैं, किन्तु हृदय की अनुभूति के साथ यदि इनका उच्चारण किया जाए तो वहाँ के वातावरण में शहद से भी अधिक मीठी जिन्दगी बहने लगती है ।

(३) आपको संत या ब्राह्मण दोनों में से किसी न किसी परम्परा को अपनाना चाहिए ।

आप इसे स्वयं करें, जो आपके लिए सम्भव दिखलाई पड़ता है । इसके साथ ही आप औरों से भी कराइए । अगर आप इन तीनों कामों को कर सकते हैं, तो हमें विश्वास है कि आप प्रज्ञावतार के कामों को पूरा करने में सक्षम हो सकते हैं । आपसे हमारा निवेदन है कि आप हमारे सच्चे साथी-सहचर बनकर, महाकाल के सच्चे साथी-सहचर बनकर अगर इतना कर पाए, तो जो इस समय की माँग है, वह पूरी हो सकेगी । हमें विश्वास है कि आप इसे पूरा कर सकेंगे ।

सर्वेभवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु माकश्चिद् दुःखमाप्नुयात् ॥

ॐ शान्तिः ❋

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी–

गायत्री परिवार की स्थापना का मूलभूत आधार

(सितम्बर, १९७३ में शान्तिकुंज परिसर में दिए गए उद्‌बोधन का अविरल अंश)

(पूर्वार्द्ध)

गायत्री महामंत्र हमारे साथ-साथ–

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो, भाइयो! ईश-पूजन की आवश्यकता के बारे में मैं आपको हमेशा से कहता और बताता चला आ रहा हूँ । पूजा की आवश्यकता हमेशा पड़ेगी और पग-पग पर पड़ती रहेगी । पूजा के खिलाफ मुसलमान सबसे ज्यादा हैं । मुसलमान सर्वप्रथम जब हिन्दुस्तान में आये और हिन्दुस्तान में आकर उन्होंने मन्दिरों को तहस-नहस कर डाला । सोमनाथ के मन्दिर को तोड़-फोड़कर उन्होंने फेंक दिया । श्री रामचन्द्रजी का मन्दिर अयोध्या में बना हुआ था, उसे भी उन्होंने तोड़-फोड़कर फेंक दिया । कृष्ण भगवान का मन्दिर मथुरा में बना हुआ था, उसे तोड़-फोड़कर फेंक दिया । उनका ख्याल था कि व्यक्ति को मूर्ति-पूजा नहीं करनी चाहिए । उनका ये ख्याल था कि पृथ्वी को हम मन्दिर-विहीन कर देंगे । अंत तक मूर्ति-पूजा न करने की बात पर वे कायम रहे । मक्काशरीफ में आप जाइए, वहाँ एक 'संगे अवसद' नाम का पत्थर रखा हुआ है । वह काले रंग का है। जो कोई भी मुसलमान काबा में जाता है, मक्का-मदीना में जाता है, हज करने के लिए, तो उसको पत्थर के सामने इजरा करना होता है और बोसा लेना पड़ता है, चुम्बन लेना पड़ता है । अगर चुम्बन नहीं लिया, बोसा नहीं लिया उस काले रंग के पत्थर का तो, उनकी हज-यात्रा निरर्थक हो जाएगी । वह जो उनकी इबादत है और हज है, वह खत्म हो जाएगी । यह क्या बात हो गयी ? हमने भी अपने गोलमटोल शंकरजी बनाए थे और शालिगराम जी बनाए थे, उन्होंने इसे चौड़ा वाला पत्थर बना दिया । मूर्ति-पूजा से पिण्ड कहाँ छूटा ? किसी का भी नहीं छूट सकता । मूर्ति-पूजा की खिलाफत आर्य समाज वाले भी करते हैं । आर्य समाज वाले मूर्ति-पूजा को नहीं मानते, लेकिन उनके यहाँ भी स्वामी दयानन्द की मूर्ति लगी हुई है । स्वामी दयानन्द की मूर्ति को उतार कर हम यदि उसका अपमान करने लगें तो क्या किसी आर्य समाजी को यह अच्छा लगेगा ? जबान से भले ही न कहे, लेकिन बाद में बहुत गालियाँ देगा और लड़ने आयेगा और कहेगा कि आपने हमारे स्वामीजी का क्यों अपमान किया ? उनकी फोटोग्राफ या तस्वीर अगर हम ले आयें और उनका अपमान करने लगें तो क्या कोई आर्य समाजी बर्दाश्त करेगा ? नहीं करेगा, उसको बहुत बुरा लगेगा । उसके चेहरे से आप देख सकते हैं ।

यह क्या हो गया ? यह प्रतीक पूजा हो गयी–कम्यूनिस्ट पार्टी वाले इस बात को नहीं मानते कि कोई भगवान है और कोई पूजा है और कोई मन्दिर होना चाहिए । वे भगवान की बात पर यकीन नहीं करते और मूर्ति-पूजा को नहीं मानते, लेकिन उनका लाल झण्डा क्या है ? लाल झण्डे को अगर हम फाड़कर फेंक दें और लाल झण्डे को हम उनके सामने जलाएँ तो वह कम्यूनिस्ट हमसे लड़ने आएँगे और यह कहेंगे कि आपने हमारा लाल झण्डा क्यों जला दिया ? भाई, वह तुम्हारा कौन था ? वह तो हमारा था, हमने उसे अपने पैसे देकर खरीदा था । हमने इसे वहाँ लगाया था । हमने दियासलाई लगा दी । हमने इसका अपमान कर दिया, फिर तुम्हें इससे क्या शिकायत ? तुम्हें इससे क्या लेना-देना ? वाह ! लेना-देना क्यों नहीं ? यह अन्तर्राष्ट्रीय कम्यूनिस्ट पार्टी का झण्डा है, आपने इसे जला दिया और खाक कर दिया । कम्यूनिस्ट हमसे लड़े बिना नहीं रहेगा और राष्ट्रीय विचारधारा के लोग काँग्रेस के लोग जिन्होंने झण्डे के लिए कितनी ज्यादा कुर्बानियाँ दीं, बलिदान दिया । उन दिनों पटना के हाईकोर्ट के ऊपर विद्यार्थी झण्डा लगाने के लिए जा रहे थे और गवर्नमेण्ट ने मना किया और कर्फ्यू लगाया और कहा आपको नहीं जाना चाहिए । विद्यार्थी नहीं माने । उन्होंने कहा-हमारे देश का झण्डा हाईकोर्ट पर अवश्य फहराया जाएगा । विद्यार्थी चले जा रहे थे । सिपाहियों ने कहा-अच्छा आप आगे जाएँगे, तो हम गोलियों से भून देंगे । उन्होंने कहा-आप गोलियों से भून दीजिए । वे सात विद्यार्थी थे, पटना में मारे गए और जिनका अभी भी स्मारक बना हुआ है झण्डे के लिए । झण्डे से क्या फायदा ? झण्डा तो एक रुपये का था, बारह आने का था और जान कितनी कीमती थी ? झण्डे के लिए उसे क्यों खर्च कर डाला ? झण्डे के लिए क्यों आपने नुकसान उठाया, कष्ट उठाया ? झण्डे की बात नहीं है । उसके पीछे जो भावनाएँ जुड़ी हुई हैं, जो हमारे प्रतीक जुड़े हुए हैं, वे बड़े कीमती हैं ।

हमारी मूर्तियाँ जो हमारे मन्दिरों में स्थापित हैं, गीता की पुस्तक और भागवत की पुस्तक जिनको हम सिर पर रखकर जुलूस निकालते हैं और गुरु ग्रन्थ साहब, जिसके सामने हम मत्था टेकते हैं, वेद की पुस्तक जिनका हम जुलूस निकालते हैं-ये सब हमारे प्रतीक-पूजन हैं और प्रतीक-पूजन बड़ा आवश्यक है । मैं तो प्रतीक-पूजन की हिमायत करता

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

रहा हूँ । प्रतीकों की स्थापना मैंने जिन्दगी भर की है । गायत्री तपोभूमि पर भी की । गायत्री माता वहाँ विद्यमान हैं और यहाँ पर गायत्री प्रतीक स्थापित हैं । अखण्ड-ज्योति कार्यालय में जहाँ हम रहते थे, वहाँ भी दीपक के रूप में गायत्री माता के फोटोग्राफ और तस्वीर के रूप में हमारा प्रतीक स्थापित है, पर मैं कई बार इन चीजों के बारे में आपको बुरा-भला कहता हूँ । यह क्यों कहता हूँ? प्रतीकों का कई बार मजाक उड़ाता हूँ क्यों ? प्रतीकों का मजाक मैं इसलिए उड़ाता हूँ कि प्रतीकों के बारे में मैं बार-बार गरम बात इसलिए कहने लगता हूँ कि आपने प्रतीक को सब कुछ मान लिया है । प्रतीक ही सब कुछ नहीं है । वे रेलवे लाइन पर खड़े हुए सिगनल की तरीके से हैं जो हमको यह बताते हैं कि हमको कहाँ चलना चाहिए और कहाँ जाना चाहिए । मूर्ति को आप मानकर चलेंगे कि ये सब सामर्थ्यवान हैं और ये सर्वसमर्थ हैं तो हम नाराज होंगे । तब हम आपसे कहेंगे कि यह गीता की पुस्तक के तरीके से हैं । श्रीकृष्ण भगवान का ज्ञान जो उन्होंने अर्जुन को दिया था, उस सारे के सारे ज्ञान को हमने कैद कर रखा है-पकड़ करके रखा है, ढाई आने वाली किताब में, जिसे गीता की किताब कहते हैं । गीता की पुस्तक में तो ज्ञान भरा हुआ है परन्तु अगर आप ये कहेंगे कि नहीं साहब, हमको ज्ञान से क्या लेना-देना है । हम तो इसी पुस्तक की आरती उतारेंगे, इसी की हम जय बोलेंगे, इसी की हम कल्पना करेंगे, इसी को हम दीपक दिखाएँगे । वह जो श्रीकृष्ण भगवान ने अर्जुन को ज्ञान बताया था, उससे हम कोई ताल्लुक नहीं रखेंगे, तो मैं आपसे नाराज होऊँगा और यह कहूँगा कि आपने अपनी गीता का मूल्य नहीं समझा, महत्त्व नहीं समझा । आप तो खिलौने के पत्थर और न जाने किन-किन बातों को लेने लगे । मैं हमेशा यह चाहता रहा हूँ कि मेरे समझाने का मतलब आपकी समझ में आना चाहिए । जब आप यह कहेंगे कि हम इसको सब कुछ मानते हैं कि बद्रीनारायण वाले श्रीकृष्ण भगवान बड़े जबरदस्त हैं । उन्हीं को लेकर हम बैकुण्ठ को चले जाएँगे और वहाँ जो वृन्दावन में रहते हैं, वह निकम्मे हैं, बेकार हैं, उनमें कोई ताकत नहीं है । बद्रीनारायण वाले भगवान में बड़ी ताकत है तो मैं नाराज होऊँगा और कहूँगा आप मूर्ति-पूजा का महत्त्व नहीं जानते-रहस्य नहीं जानते । जहाँ कहीं भी बद्रीनारायण, जहाँ कहीं भी श्रीकृष्ण भगवान हैं, चाहे वह आपके मकान पर रखे हुए हों, चाहे बद्रीनाथ, चाहे वृन्दावन में रखे हुए हों, कहीं भी रखे हुए हों, आप ये मत कहिए कि वृन्दावन वाला जबरदस्त है श्रीकृष्ण भगवान और मथुरा वाला कमजोर है । ये बात आप कहेंगे तो मैं नाराज होऊँगा । मूर्तियाँ सारी की सारी जहाँ कहीं भी रखी हैं वे भगवान के रूप की-श्रीकृष्ण की याद दिलाती हैं, बस काम खत्म हो जाता है ।

मूर्तियों में आप ताकत बताने लगेंगे तो क्या हो जाएगा । तब ये बुत-परस्ती हो जाएगी । मोहम्मद साहब ने बुतपरस्ती के खिलाफ आंदोलन शुरू किया था । पूजा को तो कोई भी मना नहीं कर सकता । मोहम्मद साहब तो क्या, कोई भी मना नहीं कर सकता । लेकिन बुतपरस्ती को सभी मना करते हैं ।

बुतपरस्ती क्या थी ? पहले एक गाँव का एक बुत होता था और बद्दू लोग, डाकू लोग जहाँ कहीं भी चले जाते थे और छापा मारते थे, पुराने जमाने में सोना-चाँदी तो था नहीं, नोट थे नहीं । अनाज था, जानवर थे, भेड़-बकरियाँ थीं और मोटे हट्टे-कट्टे जवान आदमी थे और स्त्रियाँ थीं । इन्हीं को ये लोग लेकर भाग जाते थे । उस जमाने में यही दौलत थी । किसी की जवान छोकरी देखी, औरत देखी बस उसको लेकर डाकू चल दिए । जो कोई मोटा आदमी देखा, मजबूत आदमी देखा उसको लेकर चल दिए और बोले-हमारा यह काम करो, वह काम करो । गुलाम बना लेते थे उन लोगों को । पुराने जमाने का रिवाज यही था । पुराने जमाने के बद्दू लोग, जहाँ पर मोहम्मद साहब पैदा हुए थे, बहुत-सी औरतों को ले आते थे । किसी के पास सौ औरतें थीं, किसी के पास २५० औरतें थीं, किसी के पास ५० औरतें थीं । उनके बच्चे पैदा होते थे । बच्चों का क्या होगा ? औरतों का तो यह भी है कि कुछ खेती-बाड़ी में काम आ सकती हैं, कुछ मेहनत-मशक्कत कर सकती हैं । बच्चे तो खामख्वाह तंग करेंगे । उनका क्या होगा ? बच्चों के लिए मकान कहाँ से आयेगा ? बच्चों के लिए दूध कहाँ से आएगा ? तब ऐसा हुआ करता था कि साल भर में एक दिन ऐसा आता था कि जिसके पास जितने बच्चे होते, जरूरी वाले दो-चार बच्चे रख लिए जाते थे और बाकी बच्चे मूर्ति के सामने उसे समर्पित कर दिए जाते थे । जितने ज्यादा बच्चे दिए जाएँगे, उतना ज्यादा बुत प्रसन्न रहेगा और आशीर्वाद देगा और सब काम कर देगा । जितने कम बच्चे बुत को दिए जाएँगे, उतना ही उस गाँव का बुत नाखुश हो जाएगा, उतनी ही बीमारी फैला देगा और नुकसान कर देगा । इसलिए गाँव में एक कम्पटीशन होता था और हर गाँव का बुत अलग-अलग होता था । इस गाँव का अलग, उस गाँव का अलग । हर गाँव का अलग 'बुत' होता था । उन बुतों में लड़ाई होती थी । एक गाँव वाले अपने बुत से कहते थे कि तू उस गाँव वालों से लड़ाई लड़, तो दूसरे गाँव वाले इसी तरह अपने बुत से कहते थे । इस तरह गाँव-गाँव में बुत भरे हुए थे ।

मोहम्मद साहब जब पैदा हुए तब उन्होंने कहा कि यह बड़ी वाहियात बात है । तुम लोग अलग-अलग बुत मानते हो, पर खुदा तो एक है । इतने सारे खुदा कैसे हो सकते हैं ? गाँव-गाँव का खुदा भी कहीं हो सकता है । यह आपने क्या वहम पाल रखा है । बच्चों को 'जिबह' (जो बाधित किया गया हो) नहीं करना चाहिए । वाह ! बच्चों को जिबह नहीं करेंगे तो हमारा बुत खायेगा क्या ? अच्छा तो एक काम करो-बकरी को मार डालो । ऊँट को 'जिबह' कर लो । गाय को जिबह कर लो । कई बच्चों को मारो मत । ठीक बात है । मोहम्मद साहब ने अपने ढंग से स्वयं काम कर दिया था । उस जमाने में मोहम्मद साहब बुत-परस्ती के खिलाफ थे । वह और किसी तरह की बुतपरस्ती थी । हमारे आपके जैसी नहीं । वह मूर्ति-पूजा की कैसे खिलाफत कर सकते थे । मूर्ति-पूजा का कोई खण्डन नहीं कर सकता । मूर्ति-पूजा दुनिया में रही है और रहेगी । लेकिन मूर्ति-पूजा के हम खिलाफ होंगे, मूर्ति-पूजा से हम इनकार करेंगे और मूर्ति-पूजा के लिए आपके वहम को

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

हटाएँगे, दुनिया से वहम को हटाएँगे और आपकी श्रद्धा को हिलाएँगे । कब ? जब आप यह ख्याल करने लगेंगे कि जो पत्थर अमुक जगह पर रखा हुआ है वह बड़ा ताकतवर है । उसके ऊपर आप कपड़ा पहना देंगे और उस पर छत्र चढ़ा देंगे तो वह आपका अमुक काम बना देगा, तमुक काम बना देगा । ये वाहियात बातें आप करेंगे तो मैं नाखुश होऊंगा । यह कहिए कि ये बातें आपके समझ में नहीं आती । इसके पीछे जो किस्सा है, वजह है, वह यह है कि ये सारी की सारी चीजें यह याद दिलाने के लिए हैं कि सर्वशक्तिमान् ईश्वर सबके भीतर समाया हुआ है । श्रीकृष्ण भगवान के मन्दिर में जरूर जाएँगे और वहाँ सिर झुकाएँगे और सिजदा करेंगे, प्रणाम करेंगे । लेकिन वह हमारा प्रणाम उस पत्थर के लिए नहीं है । हमारा वह प्रणाम उनके लिए है जो आज से ५००० वर्ष पूर्व भगवान जी आए थे, जो दुनिया में नयी धारा और नये विचार मनुष्य को देकर चले गए थे । हम उस मूर्ति का ध्यान करते हैं, सिजदा करते हैं । हमारा ईमान और हमारी निष्ठा वहाँ रहती है । उन्हीं कृष्ण के ऊपर जो सारे विश्व में समाए हैं और सब जगह समाए हुए हैं । मूर्ति-पूजा के बारे में, प्रतीक-पूजा के बारे में बार-बार आपके मन को कच्चा कर देता हूँ । बार-बार आपकी निष्ठा को डिगा देता हूँ । मेरी बात को समझिए, मेरी बात को समझने की कोशिश कीजिए कि क्या कहता हूँ । मैं यह कहता रहूँगा कि प्रतिमा को आप पूरा मान देंगे तो बात बनेगी नहीं ।

राष्ट्रीय झण्डा हमारे घर में लगा हुआ है, तिरंगा झण्डा हमारे घर में लगा हुआ है, जो इस बात का द्योतक है कि हम सबसे बड़े देशभक्त हैं । आप देशभक्त हैं-तो हिन्दुस्तान में छायी मुसीबतों और असुविधाओं से आपको पीड़ा होती है क्या ? नहीं साहब, हमको क्या पीड़ा होगी । आप अपने घर में अपनी खुशहाली में हिस्सा बँटाते हैं ? नहीं साहब हम क्यों खुशहाली में हिस्सा बँटाएँगे । हम तो देशभक्त हैं । देशभक्त क्यों हैं ? देखिए हमारे घर में तिरंगा झण्डा लगा हुआ है । तिरंगा झण्डा इस बात का प्रतीक था कि हमारे मन में देशभक्ति का जागरण होना चाहिए ।

मित्रो, मूर्तियाँ इस बात की प्रतीक हैं कि हम उन भावनाओं को, जिनको हम बार-बार भूल जाते हैं और जो बातें हमारे दिमाग में से निकल जाती हैं, हमारे ख्यालों में से निकल जाती हैं, उन्हें हम अपने ख्यालों में जगाएँ । जो बातें श्रीकृष्ण भगवान जी के साथ जुड़ी हुई हैं, जो बातें भगवान शंकरजी के साथ जुड़ी हुई हैं, जो बातें भगवान श्री रामचन्द्रजी के साथ में जुड़ी हुई हैं जो बातें गणेशजी के साथ जुड़ी हुई हैं, जो देवी के साथ में जुड़ी हुई हैं, वह ख्यालात, वह विचारधारा, वह प्रेरणा और वह प्रकाश, वह सारी की सारी चीजें इन मूर्तियों को देखकर हमारे मन में उठेंगी । अगर वह मूर्तियाँ और वह प्रतीक हमारे मन में भावना को उठाएँगे तो हम उनका स्वागत करेंगे । उनके आगे प्रणाम करेंगे । उनकी उपयोगिता को स्वीकार करेंगे और गाँव-गाँव उनके मन्दिर बनाएँगे । उनकी जय बोलेंगे । लेकिन अगर लोग इस वहम में घुसते चले जाएँगे कि जो कुछ भी है ये मूर्ति का, पत्थर का टुकड़ा ही सब कुछ है । लेकिन इस श्रम से जब आपको कुछ भी नहीं मिलेगा तो आप ये कहने लगेंगे ये सब बेकार हैं, तब हम आपको अज्ञानी बताएँगे और फिर हम आपसे नाराज होंगे और आपके अज्ञान को उखाड़ने की कोशिश करेंगे और आपसे कहेंगे कि आप ये क्या करते हैं गड़बड़ । जो चीज जिस काम के लिए बनाई गयी है, उस उद्देश्य पर आप ध्यान दीजिए, उस काम की महत्ता को समझिए ।

मित्रो, प्रतीक हमारे माध्यम हैं और माध्यम केवल इसलिए हैं कि उनके साथ में जो मूल प्रेरणा और मूल प्रकृति जुड़ी हुई है उसके सम्बन्ध में हम जानकार रहें और उसको अपने हृदय में स्थान देने की कोशिश करें । न केवल हृदय में स्थान देने की कोशिश करें, बल्कि अपने जीवन का एक हिस्सा बना लें । ये है प्रतीक-पूजा का आदर्श और प्रतीक-पूजा का उद्देश्य । हमने आपसे यही कहा था । अब हम गायत्री माँ का प्रतीक घर-घर में स्थापित करना चाहते हैं और हर आदमी के दिमाग में इस बात की प्रेरणा स्थापित करना चाहते हैं कि हमको मनुष्यता का अनुयायी होना चाहिए और हमको नारी जाति के प्रति निष्ठावान और श्रद्धावान होना चाहिए । मानवता के प्रति निष्ठावान और श्रद्धावान होना चाहिए । ये सारे के सारे 'सिम्बोल' हमारे इस गायत्री माता के साथ जुड़े हुए हैं । हमको विवेकशील होना चाहिए और विवेकशीलता की इज्जत करनी चाहिए । ये सारे के सारे सिद्धान्त गायत्री माता के साथ जुड़े हुए हैं । इन सारे सिद्धान्तों को लेकर के जो गायत्री माता का पूजन करेंगे तो उनका प्रतीक-पूजन सही होगा, सार्थक होगा और उससे दुनिया का फायदा होगा । मनुष्य जाति का उद्धार हो जाएगा । यही प्रतीक-पूजन का उद्देश्य है ।

प्रतीकों के सम्बन्ध में विडम्बना की शुरूआत वहाँ से आरम्भ होती है जहाँ हमने यह मानना शुरू कर दिया कि ये मूर्ति जो बैठी हुई है, बड़ी ताकतवर है । उसको हम मिठाई खिला देंगे, उसकी हम आरती उतारेंगे तो वह हमारा उद्धार कर देगी और हमें मालामाल कर देगी । ये ख्यालात आप करने लगेंगे तो हम नाराज होंगे । वास्तविकता को आप समझते क्यों नहीं ? वास्तविकता को आप समझिए । वास्तविकता को समझने की कोशिश कीजिए कि मूर्ति-पूजा क्यों बनाई गई थी और किसके लिए बनाई गई थी ? एक दिन हमने आपसे एक बात कही थी कि गायत्री माँ, जो हमारी भारतीय संस्कृति की जीवात्मा है, जो हमारा प्राण है, जो चारों वेदों की जननी है । उसका एक 'सिम्बोल' को लेकर के हम सारे हिन्दू समाज को एक स्थान पर इकट्ठा कर सकते हैं । जो हमारे अनेक देवताओं के माध्यम से, सम्प्रदायों के माध्यम से, मंत्रों के माध्यम से, पैगम्बरों के माध्यम से हजारों और लाखों टुकड़ों में हिन्दू धर्म फैल गया और बिखर गया है, अब हम इसको फिर से इकट्ठा करना चाहते हैं । हम उसका बिखराव बर्दाश्त नहीं करेंगे ।

अब हम यह करेंगे कि हिन्दू समाज का कोई न कोई तो प्रतीक होना चाहिए । कोई न कोई तो एक 'सिम्बोल' होना चाहिए । कहीं तो एक जगह इकट्ठे होना चाहिए । राष्ट्रीय झण्डे के प्रति हम सारे हिन्दुस्तानी नतमस्तक होते हैं । इसमें हिन्दू भी शामिल हैं, मुसलमान भी शामिल हैं, ईसाई भी शामिल हैं । इस माध्यम से जब सारे के सारे लोग इकट्ठे

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

किए जा सकते हैं तो क्या हम हिन्दू-संस्कृति को इकट्ठा करने के लिए माध्यम तलाश नहीं कर सकते । हाँ, माध्यम हमारा था और वही रहना चाहिए और वही रहेगा । कौन है वह माध्यम ? वह है गायत्री मंत्र । गायत्री मंत्र हमारा माध्यम है और वही रह सकता है, दूसरा कोई बन ही नहीं सकता। हमारे पुराण, हमारे कुरान वे हैं जिनको हम वेद कहते हैं । वेद कैसे हैं और वेदों का मूल हमारा कलमा, हिन्दू का कलमा क्या है ? हिन्दू का कलमा एक है और वह है गायत्री मंत्र । हम दूसरों को भी इज्जत देते हैं । आप जिस देवता की पूजा करते हैं, आपको मुबारक, हमें क्या झगड़ना आपसे । आप श्रीकृष्ण भगवान की पूजा करते हैं तो खुशी-खुशी करें और आप '**श्री कृष्णाय नमो नमः**' का जप करें हमें कोई एतराज नहीं आपसे । लेकिन जब आप यह कहेंगे कि हिन्दू धर्म का मूल है-'**श्री कृष्णाय नमो नमः**' तो हम यह पूछेंगे कि जब ५००० वर्ष पहले भगवान श्रीकृष्ण का जन्म नहीं हुआ था, तब आप किसकी पूजा करते थे । श्रीकृष्ण भगवान किसकी पूजा करते थे । श्रीकृष्ण भगवान क्या यह जाप करते थे- '**श्री कृष्णाय नमो नमः**।' नहीं, ये जप नहीं करते थे ।५००० वर्ष पूर्व क्या उपासना थी ? बताइए न आप ।

मित्रो, तब एक ही उपासना रही है हमारी । ब्रह्माजी को आकाशवाणी के रूप में वह मिली थी । वह था-'गायत्री मंत्र' और जिसे ब्रह्मा, विष्णु, महेश ही नहीं राम और कृष्ण जो हमारे हिन्दू धर्म के सूर्य और चन्द्रमा माने जाते हैं, उन्होंने भी इस उपासना को अपनाया था । आप भागवत में पढ़ लीजिए, आप बाल्मीकि रामायण में पढ़ लीजिए । दोनों को जो दीक्षाएँ दी गई थीं, वह गायत्री मंत्र की दीक्षा दी थी और जब तक दोनों जिन्दा रहे तब तक वे गायत्री मंत्र की उपासना करते रहे । शिव की उपासना का मंत्र यही है। सूर्यवंशी राजा और चन्द्रवंशी राजा जितने भी हुए, सबकी उपासना का मंत्र यही एक है और हमारी नमाज वही एक है । हमारी संध्या गायत्री के बिना सम्भव नहीं है । हम गायत्री के बिना संध्या कैसे कर सकते हैं ? ये हमारा प्रतीक है और हम इस प्रतीक को-सिम्बोल को हर जगह जमाएँगे और इसलिए जमाएँगे कि सारे हिन्दू समाज को यह मालूम हो जाए कि हमारी मूल जड़ कहाँ है और उद्गम कहाँ है ? ताकि हम सारे समाज को एक सूत्र में पिरो सकें और सारे समाज को हम विवेकशीलता का अनुयायी बना सकें । हम विवेकशील लोग हैं । हम विचारशील लोग हैं । हम अंध-परम्पराओं के अनुयायी नहीं हैं । हम हर चीज को विवेक की कसौटी पर कसते हैं, क्योंकि हमारा मंत्र-हमारी उपासना गायत्री मंत्र है-"**ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्**।" हम बुद्धि के उपासक हैं, हम विवेक के उपासक हैं, हम विचारों के उपासक हैं, हम तर्क के उपासक हैं । हम दलील के उपासक हैं, हम सच्चाई के उपासक हैं । हम किसी के 'फालोवर' नहीं हैं-हम केवल सच्चाई के फालोवर हैं । ये सारी की सारी प्रेरणा कहाँ से मिल सकती है ? ये सारी प्रेरणाएँ गायत्री मंत्र से मिल सकती हैं । इसलिए हम कमर कसकर खड़े हो गए हैं कि गायत्री मंत्र की पूजा करने के लिए हम हर आदमी को मजबूर करेंगे और गायत्री मंत्र की महत्ता को अंगीकार करने और हृदयंगम करने की सलाह देंगे और परामर्श देंगे ।

एक दिन हमने आपको ये भी कहा था कि उपासना को सस्ती बनाएँगे और हर बच्चे-बच्चे को उपासना करने के लिए कहेंगे । हम यह कहेंगे कि गायत्री माता का एक फोटो अपने घर में पूजा-स्थली पर रखिए । यदि आप निराकार को मानने वाले हैं तो गायत्री मंत्र टाँग लीजिए । हमें कोई एतराज नहीं है । साकार उपासना को मानने वाले हैं तो आप गायत्री माता की तस्वीर रख लीजिए और सुबह-शाम संध्यावंदन का क्रम आरम्भ कीजिए । कोई भी व्यक्ति या स्कूल जाने वाला बच्चा सबसे पहले अपनी चप्पल उतार दे, अपनी टोपी उतार दे और अपने सिर को नीचा झुकाए । हाथ जोड़ करके प्रणाम करे, भारतीय परम्पराओं की अनुभूति करे और पाँच बार गायत्री मंत्र मन ही मन बोल ले और नमस्कार करके स्कूल चला जाए पढ़ने के लिए । स्त्रियाँ खाना पकाने से पहले स्नान कर लिया है तो ठीक, नहीं भी कर लिया है तो भी ठीक, वे सिर को उघाड़ करके और पैरों से चप्पल उतार करके खड़ी हो जाएँ और पाँच बार मन ही मन गायत्री मंत्र का जप करें और उसके बाद में खाना पकाने के लिए चली जाएँ । दुकानदार अपनी दुकान को चला जाए । गायत्री माता का चित्र दुकान में लगा हुआ है, उसके आगे मस्तक झुकाए, सिर झुकाए और पाँच बार मन ही मन गायत्री मंत्र जप ले । खड़े-खड़े हो करके यह उपासना कर ले और अपनी दुकानदारी को चलाए । अध्यापक या बच्चे स्कूल को चले जाएँ । इससे सस्ती उपासना तो और कोई नहीं हो सकती ; मित्रो ! इसमें तो शिकायत की बात भी नहीं है कि हमको समय नहीं मिलता और देखिए स्नान नहीं हुआ और ये नहीं हुआ और जनेऊ तो था नहीं । फिर कैसे करेंगे गायत्री जप । जनेऊ पहनना हो तो जरूर पहनना, हमें कोई शिकायत नहीं है और आपको स्नान करना हो तो जरूर करना । हम किससे मना करते हैं । लेकिन यदि आप बीमार हो गए हैं और आप नहीं नहा सकते हैं तो आपको ये कहने की आवश्यकता नहीं होगी कि चूँकि हम नहाए नहीं थे, इसलिए हम गायत्री मंत्र की उपासना नहीं कर सकते हैं । ऐसी स्थिति में भी आपको जरूर करनी चाहिए उपासना ।

गायत्री मंत्र के बारे में हम हर हिन्दू से कहेंगे, हर घर में जाएँगे, हर आदमी को समझाएँगे और ये कहेंगे कि आपने अपने संस्कृति के माता और पिता को भुला दिया था, अब अपने माता-पिता के नाम याद रखिए । आपकी माता का नाम क्या है और पिता का नाम क्या है ? हमको नहीं मालूम साहब । आपका पिता कौन है ? हमको नहीं मालूम । अरे भाई ये क्या वाहियात बात बकते हो । आपकी माँ कौन थी ? हमें नहीं मालूम कि हमारी माँ कौन थी ? ये कोई जवाब है । जब कोई ये कहेगा कि हमको हमारी माँ का नाम नहीं मालूम है, तो हम उसको वर्णसंकर कहेंगे । आपको अपने पिता का और माता का नाम मालूम होना चाहिए और हर घर में उनकी स्थापना होनी चाहिए । भारतीय धर्म के माता-पिता कौन हैं ? आपको उनका नाम मालूम होना चाहिए और आपको उनकी इज्जत करनी चाहिए, जैसे कि ऋषियों ने, देवताओं ने

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अनादिकाल से की और होती रहेगी । हमारे माता-पिता बदले नहीं जा सकते । आपको बुतपरस्त वालों ने और मजहब वालों ने बहका दिया है । इससे हमारी वैदिक संस्कृति को झुठलाया नहीं जा सकता । उनकी बात को टाला नहीं जा सकता । आज तो हरेक चालाक बाबाजी ने अपने-अपने नाम का मजहब खड़ा कर दिया है और अपने-अपने पैगम्बर बनकर बैठे हैं और अपना-अपना मंत्र बना दिया है और अपनी-अपनी पुराण बना दी है । हम ये नहीं चलने देंगे । हम ये कहेंगे कि हिन्दू धर्म एक ही था और एक ही रहेगा । ठीक है मजहब-परस्तों को अपने चेलों और चेलियों की हजामत बनाने के लिए तरह-तरह के सम्प्रदाय बनाने पड़े, पर इसकी क्या कीमत हो सकती है और इसकी क्या वकत हो सकती है, इसे हर विवेकशील को जानना और समझना चाहिए । जब सूरज निकलना शुरू होगा तो ये चमगादड़ और ये उल्लू अपनी जगह से भाग खड़े होंगे और इनकी कलई खुल जाएगी । इन्होंने ही हिन्दू धर्म के टुकड़े काट-काटकर के फेंक दिए और अपने-अपने नाम के मजहब खड़े कर दिए । अब अपने-अपने नाम के मजहब नहीं चलेंगे । मजहब हमारा एक था और एक ही रहेगा और हमारे माता-पिता एक ही थे और एक ही रहेंगे । बदले नहीं जा सकते । हमारी माँ गायत्री माँ है और हमारे पिता यज्ञ हैं । इन दोनों को हम जिन्दा रखेंगे और इन्हीं की पूजा करेंगे । हर एक आदमी जो इनको भूल गया है और अपनी वास्तविकता को भी, हम अब ये सिखाने की कोशिश करेंगे कि हमारी माँ कौन थी और हमारे पिता कौन थे ? माँ और बाप की इज्जत करनी चाहिए-"मातृ देवो भव, पितृ देवो भव" माता-पिता हमारे देव हैं, हमें इनकी पूजा करनी चाहिए ।

मित्रो, अब हमको घरों में गायत्री माँ की स्थापना करनी चाहिए । गायत्री माता के 'सिम्बोल'-प्रतीक और उनकी चौकियाँ अपने घरों में स्थापित करनी चाहिए । जहाँ पर थोड़ी देर बैठ करके घण्टे-आधा घण्टे बैठकर के भजन कर लिया करें और गायत्री मंत्र का अनुष्ठान कर लिया करें । हमको जहाँ कहीं भी मौका मिले, इस तरह की स्थापना करनी चाहिए, जिस तरह हम यहां गायत्री माता की स्थापना कर रहे हैं और हमने गायत्री तपोभूमि में स्थापना की है । इस बात की जरूरत समझी जाए और जहाँ भी मौका मिले, जहाँ आवश्यकता हो वहाँ गायत्री माँ की स्थापना करनी चाहिए । हमने लोगों से यह भी कहा है कि आप चाहें तो मूर्तियाँ स्थापित करने की अपेक्षा एक चित्र स्थापित कर लें । इसमें एक फायदा आपको यह हो जाएगा कि आपके ऊपर वे जिम्मेदारियाँ नहीं आयेंगी, जो हमारे ऊपर जिम्मेदारियाँ आती हैं । मूर्ति स्थापित करने से हमको भोग लगाना पड़ेगा, प्रसाद बाँटना पड़ेगा, सबेरे उनकी पूजा करनी पड़ेगी । हमें आरती करनी पड़ेगी । हमें ये करना पड़ेगा, वो करना पड़ेगा । अतः जहाँ जैसी जिम्मेदारियाँ उठाना सम्भव हो सके वहाँ वैसी ही उठाई जाएँ । जहाँ पर सम्भव नहीं, वहाँ पर तस्वीर स्थापित कर ली जाए और वहाँ पर सब के सब लोग इकट्ठे हों, गायत्री परिवार वाले इकट्ठे हों, गाँव वाले इकट्ठे हों, महिलाएँ इकट्ठी हों, बच्चे इकट्ठे हों और सब इकट्ठे होकर सायंकाल को केवल आरती उतार लिया करें । आरती के समय शंख बजा दिया जाए, घड़ियाल बजा दिया जाए । अगर आपके पास प्रसाद बाँटने के लिए न हो, तो पंचामृत वाला प्रसाद प्रस्तुत कर सकते हैं । पानी में थोड़ी-सी शक्कर, थोड़ा-सा गंगाजल, तुलसी के पत्ते । बस उसी का हम पंचामृत बनाएँगे और उसी को सबको देंगे । अगर प्रसाद हमारे पास नहीं है, पैसे हमारे पास नहीं हैं तो हमारी पंचामृत वाली जो पद्धति है, जिसमें चंदन घुला रहता है, उसका ही हम प्रसाद बाँट सकते हैं । उसमें कोई हर्ज की बात नहीं है ।

गाँव-गाँव में, घर-घर में, मौहल्ले-मौहल्ले में इस तरह के मन्दिर स्थापित करने पड़ेंगे ताकि वहाँ पर स्त्रियाँ, बच्चे, बुजुर्ग और बूढ़े और बालक सब इकट्ठे हो सकें और प्रार्थना में शामिल हो सकें । आप लोग आरती कीजिए और लोगों को अपने माता-पिता की अर्थात् गायत्री और यज्ञ की जानकारी कराइये । हम प्रतीकों को जिन्दा रखेंगे । हम प्रतीकों को नष्ट करने वाले नहीं हैं । हम प्रतीकों का मजाक उड़ाने वाले नहीं हैं । प्रतीकों के प्रति हम अनास्था उत्पन्न करने वाले नहीं हैं । हम तो अनास्था वहाँ उत्पन्न करते हैं और बार-बार आपसे झगड़ने के लिए इसलिए खड़े हो जाते हैं कि आप प्रतीक को ही सब कुछ मान बैठते हैं और प्रतीक जिस काम के लिए बनाया गया था, उस पर आप ध्यान देना नहीं चाहते । जब आप कलम या पेन जेब में लगाते हैं तब हमें क्या एतराज हो सकता है । लेकिन जब आप यह कहते हैं कि हम फाउण्टेन पेन लगा करके एम० ए० हो गए हैं, तब हम आपसे लड़ाई करते हैं और कहते हैं फाउण्टेन पेन रखिए, लेकिन पढ़ना भी सीखिए, लिखना सीखिए, गणित सीखिए, ज्योमिट्री सीखिए, किताब पढ़ना सीखिए और फाउण्टेन पेन का इस्तेमाल कीजिए । अगर आप यह कहें कि नहीं साहब, फाउण्टेन पेन का क्या इस्तेमाल करना, हमारा पेन तो परब्रह्म परमात्मा है । हमारी जेब में वह लगा हुआ है, अतः हम तो एम० ए० हैं, देखिए हम पेन खरीद कर लाए हैं । तो हम आपसे लड़ाई करेंगे और कहेंगे कि आप पेन को क्यों एम० ए० बताते हैं । पेन के सहारे तो एम० ए० पास किया जाता है, बस इससे आगे बढ़िए मत ।

मूर्तियों के माध्यम से, प्रतीकों के माध्यम से, तस्वीरों के माध्यम से हमको अपने हृदय के कपाट खोलने पड़ते हैं और अपने मस्तिष्क का परिष्कार करना पड़ता है । हमको अपने जीवन का उद्धार करना पड़ता है । साथ ही हमको यह बात मालूम करनी पड़ती है कि हमको जाना कहाँ है ? चलना कहाँ है ? यदि आपकी मंशा में यही उद्देश्य निहित है तो हम आपकी पूजा की बराबर प्रशंसा करेंगे और बराबर सराहना करेंगे । हमको लड़ना तब पड़ता है, हमको गुस्सा तब आता है और हम आपको झकझोरते तब हैं, जब आप मूर्ति को ही सब कुछ मान बैठते हैं और कहते हैं कि यही हमारी मनोकामना पूर्ण करेगी । यही हमको बेटा देगी । यह मूर्ति हमारा ये करेगी, हमारा वह करेगी । जब आप ऐसा कहना शुरू कर देते हैं तब हम आपसे नाराज होते हैं और यह कहते हैं कि असलियत को क्यों नहीं समझते ? असलियत को समझिए । असलियत को जब आप समझेंगे नहीं तो आप मूर्ति-पूजक नहीं रहेंगे, फिर आप बुत-परस्त हो जाएँगे ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

मूर्ति-पूजन और बुत-परस्ती में जमीन-आसमान का फर्क है । मूर्ति-पूजक वे हैं जो मूर्ति का इस्तेमाल गीता की पुस्तक के तरीके से किया करते हैं और ज्ञान को जहाँ से वह ज्ञान आता है, भगवान जहाँ रहते हैं वहाँ तक अपने मन को भगाकर ले जाते हैं और ज्ञान को पकड़ कर लाते हैं । वह आदमी मूर्ति-पूजक हैं, बुत-परस्त नहीं । बुत-परस्त कौन थे ? वो लोग थे बुत-परस्त जिन्हें बद्दू कहा जाता था । आप लोग बद्दू लोगों की नकल करना शुरू कर देंगे तो फिर हम आप पर झल्लाएँगे और कहेंगे कि आप तो बुत परस्त बद्दू हो जाते हैं । बद्दू आप होइये मत और किसी भी मूर्ति को ये मानकर जाइये मत कि वह सामर्थ्यवान है । उसमें चमत्कार है और वह देवी तो ऐसा कर देती है, वैसा कर देती है । वह चमत्कारी देवी है । वो चमत्कारी देवी नहीं है । चमत्कारी केवल एक भगवान है जो सारे विश्व में समाया हुआ है । उसी की शक्ति हमारे विचारों से सम्बन्ध रखती है, हमारे आचरण से सम्बन्ध रखती है । आचरण और विचारों से सम्बन्ध रखने वाली देवी को अगर आप उस मूर्ति के माध्यम से पकड़ते हैं तो हम आपको ठीक कहेंगे और हम आपको मुबारकबाद देंगे और कहेंगे कि आप जानकार लोगों में से हैं, आप सही आदमी हैं ।

मित्रो, क्या हम प्रतीकों की उपेक्षा कर सकते हैं ? नहीं, हम प्रतीकों की उपेक्षा नहीं कर सकते । प्रतीकों के माध्यम से हम उस ज्ञान को जो हमारी भारतीय संस्कृति का मूल है, हर आदमी के गले में उतारने की हम कोशिश करेंगे । इंजेक्सन की सिरिंज के बिना हम किसी तरीके से दवा आपके खून में प्रवेश नहीं करा सकते हैं । दवा हमारे पास बहुत बढ़िया वाली रखी है । उसको इंजेक्सन से लगाने के लिए सुई तो हमको चाहिए ही । सुई क्या है ? सुई मित्रो, जिसको हम प्रतीक-पूजा कहते हैं । इसके अन्दर जो दवा भरी जाती है, जो सिरिंज लगाई जाती है वो क्या है ? वो है जिसको हम विचारणाएँ कहते हैं, भावनाएँ कहते हैं, दिशाएँ कहते हैं । जिसके लिए हमें प्रतीक-पूजा के बारे में फड़फड़ा कर आगे बढ़ना होगा । प्रतीक पूजा के लिए हमको कदम बढ़ाना पड़ेगा और हिम्मत बढ़ानी पड़ेगी । गाँव-गाँव में मन्दिर और मोहल्लों में मन्दिर, घर-घर में मन्दिर हमको स्थापित करने पड़ेंगे फोटोग्राफ के माध्यम से और तस्वीरों के माध्यम से । क्योंकि मूर्ति के साथ में ऋद्धि-सिद्धि का वहम शामिल हो गया है । इसलिए हम मूर्तियों को इतना प्रोत्साहन नहीं देंगे, क्योंकि लोग हर मूर्ति को चमत्कारी कहने लगते हैं । ये क्या आफत आ गयी ? चमत्कारी कहिए मत किसी को । उसको आप प्रतीक कहिए । इसलिए हम थोड़े दिनों तक ये कोशिश करेंगे कि मूर्तियाँ कम से कम स्थापित हों और तस्वीरें ज्यादा से ज्यादा स्थापित हों । हर जगह उनकी स्थापना हो ताकि हम उनके माध्यम से, उनके सहारे से उनकी व्याख्या करते हुए-उसको समझाते हुए-उसको बताते हुए भारतीय संस्कृति का मूल जो हमारा था-गायत्री मंत्र और यज्ञ, अर्थात् विवेकशीलता और क्रियाशीलता, अर्थात् अच्छे कर्म और अच्छे स्वभाव इन दोनों का संवर्द्धन करने और उन्हें अक्षुण्ण रखने के लिए हम नये सिरे से मनुष्य को नया मनुष्य बना सकें ।

मनुष्य में देवत्व का अवतरण करने के लिए, मनुष्य में भगवान का अवतरण करने के लिए और जमीन पर स्वर्ग को लाने के लिए हम यह कहेंगे कि इन प्रतीकों को-इन सिम्बलों को आप फिर से सँभालिए, क्योंकि ये हमारी बन्दूकें हैं-ये हमारे हथियार हैं और इन हथियारों के माध्यम से मनुष्यों के अज्ञान से लड़ाई लड़नी है, ये हमारी छैनी-हथौड़े हैं । इन छैनी-हथौड़ों को हम दूर नहीं फेंक सकते हैं । यह छैनी-हथौड़ा हरदम काम करेगा । लेकिन छैनी-हथौड़े को अगर फेंक देंगे और खाली ये कहेंगे कि हमारी ताकत में बल है और हम तो लोहे को भी ठीक कर सकते हैं । अभी मुक्का मारेंगे और लोहे को ठीक करेंगे, तो मुक्के से ही काम नहीं बनेगा । छैनी-हथौड़े भी आपको रखने होंगे । छैनी-हथौड़े से ही कलाई में ताकत आयेगी । हमारे पास विचारणाएँ होनी चाहिए, भावनाएँ होनी चाहिए सही, लेकिन हमारे पास प्रतीक भी होने चाहिए और हमारे पास 'सिम्बल' भी होने चाहिए । प्रतीक और सिम्बलों के साथ-साथ हमको विचारणा और विवेकशीलता का विस्तार करना है । यही हमारी क्रियापद्धति है ।

गायत्री परिवार की यही क्रियापद्धति है । हमारी और आपकी यही क्रियापद्धति होनी चाहिए । हम आस्तिकता की स्थापना करने के लिए चले हैं । हम आध्यात्मिकता की स्थापना करने के लिए चले हैं और हम धार्मिकता की स्थापना करने के लिए चले हैं । यही तो हमारे उद्देश्य हैं तीन, जिनको आप गायत्री माता के तीन चरण कहते हैं । यही हैं तीन चरण जिनकी हमने अपने ढंग से व्याख्या करना शुरू कर दिया है । भगवान पर निष्ठा और भगवान पर आस्था और भगवान पर विश्वास, हम हर आदमी के मन में स्थापित करेंगे-गायत्री मंत्र का चरण नम्बर एक । गायत्री मंत्र का चरण नम्बर दो-हम हर आदमी को धार्मिक बनाना शुरू करेंगे और हर आदमी को सामाजिक बनाना शुरू करेंगे । हर आदमी को समाजपरक और सूक्ष्म सेन्स को, भावसंवेदना को अपनाने वाला बनाना शुरू करेंगे । हम हर आदमी को अध्यात्मवादी बनाना शुरू करेंगे-अर्थात् अपने ईमान को साबित करने वाला, अपने चरित्र को सही और उज्ज्वल रखने वाला बनाने की कोशिश करेंगे । हमारा मतलब आध्यात्मिकता से यही है । हमारा मतलब आस्तिकता से यही है । हमारा मतलब धर्मनिष्ठा से यही है । इन तीनों की स्थापना करने के लिए हम गायत्री मंत्र का तिरंगा झण्डा लेकर चले हैं । इस तिरंगे झण्डे को हम बहुत प्यार करते हैं और इस झण्डे की हर जगह उसी तरह स्थापना करना चाहते हैं, जिस तरह से हमारे पूर्वजों ने और हमारे ऋषियों ने उसे प्यार किया और सुदृढ़ बनाया था । ❁

-क्रमशः अगले अंक में

ग्रीक तत्त्वज्ञानी डायोवीनीज से किसी ने प्रश्न पूछा-अपने शत्रु से बदला लेने, नीचा दिखाने और उलट देने के लिए क्या करूँ ? उन्होंने उससे कहा कि उसकी बुराई की तुलना में अपनी भलाई बढ़ा दे, इससे तेरे तीनों उद्देश्य पूरे हो जाएँगे ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी–

गायत्री परिवार की स्थापना का मूलभूत आधार

सितम्बर, १९७३ (गतांक से आगे)

मित्रो, गायत्री मंत्र की, गायत्री माता की– भगवान की मूर्तियाँ हमारे घरों में होनी चाहिए । लेकिन इससे भी ज्यादा शानदार, इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह है कि हर इनसान के, हर व्यक्ति के और हर हिन्दू के हृदय मे इनकी स्थापना की जाए । गायत्री मंत्र केवल हिन्दुओं के लिए ही नहीं है, वरन् वह प्रत्येक धर्मावलम्बी व मजहब के मानने वालों के लिए है । हमें उन्नति करनी है, तो इन प्रतीकों को फिर अपनाना पड़ेगा, जिसको हम गायत्री कहते हैं । जिसकी स्थापना शरीरों में की गयी थी । स्थापना मंदिरों में नहीं, पूजा–घरों में ही नहीं, बल्कि प्रत्येक हिन्दू के शरीर के ऊपर इसकी स्थापना हुई । कैसे स्थापना हुई ? शिखा और सूत्र के रूप में हुई। शिखा क्या है ? शिखा– एक विवेकशीलता की देवी, ज्ञान की देवी हमारे मस्तिष्क के ऊपर हावी है । मस्तिष्क के ऊपर हावी है और हमारे झण्डे के रूप में फहराती है । शिखा क्या है ? शिखा गायत्री है । जिस प्रकार से शंकर भगवान का सिम्बल, शंकर भगवान का चित्र हम गोल–मटोल बना देते हैं और मंगलमय हो लेते हैं, उसी तरह से गायत्री माता का सिम्बल और चित्र, यह गायत्री माता की मूर्ति के रूप में हमारी शिखा के ऊपर रखा गया है । हम शिखा की स्थापना कराएँगे और हर आदमी से कहेंगे कि आपको शिखा जरूर रखनी चाहिए, क्योंकि ये गायत्री माता की प्रतीक है , गायत्री माता की मूर्ति है । हम हर आदमी से कहेंगे कि आपको अपने कंधों के ऊपर सामाजिक कर्त्तव्य, नैतिक कर्त्तव्य की जिम्मेदारी लेनी चाहिए । वे कर्त्तव्य क्या हैं ? कर्म क्या हैं ? उसको हम यज्ञोपवीत कहते हैं, जो हमारे कंधे पर रखा हुआ है । कर्म हमारे कंधे पर रखा हुआ है । कर्म करने की जिम्मेदारी हमारे कंधे पर रखी हुई है । कर्म करने की जिम्मेदारी हमारे हृदय पर टँगी रहनी चाहिए । कर्म करने की जिम्मेदारी हमारे कलेजे से चिपकी रहनी चाहिए । कर्म हमारे आगे भी रहना चाहिए, कर्म हमारी पीठ के ऊपर भी रहना चाहिए । ये क्या है ? ये है यज्ञोपवीत । यज्ञोपवीत हमारे कंधे पर रखा हुआ है, हमारे कलेजे पर रखा हुआ है, हमारे हृदय पर रखा हुआ है, हमारी पीठ पर रखा हुआ है । हमने चारों ओर से अपने आपको खाचकर बाँध दिया है, जिससे कि यह सतत ख्याल बना रहे कि सामाजिक कर्त्तव्य, नैतिक कर्त्तव्य और पारिवारिक कर्त्तव्य से हम जुड़े हुए हैं और बँधे हुए हैं ।

जानवर के गले में रस्सा बाँध देते हैं और फिर उसे खूँटे से बाँध देते हैं, ताकि दायरे में रहा करे, मर्यादा में रहा करे, कायदे में रहा करे, कानून में रहा करे । हमारे ऋषियों ने भी हमको एक रस्से से बाँध दिया है , जो हमारे कंधे से बँधा हुआ है, हमारे हृदय से बँधा हुआ है हमारे कलेजे से बँधा हुआ है, हमारी पीठ से बँधा हुआ है । चारों ओर से हमें जकड़कर बाँध दिया है और हमारे विवेक को, हमारी अक्ल को बाँध दिया है । यह क्या है ? यह है–यज्ञोपवीत और शिखा । शिखा और यज्ञोपवीत क्या है ? बताइए । ये हैं हमारे गायत्री मंत्र और यज्ञ। ये दोनों के दोनों प्रतीक हैं । यज्ञ से उपवीत किया हुआ , यज्ञ से प्राणप्रतिष्ठा किया हुआ धागा । इसका नाम क्या है ? यज्ञोपवीत, जो हमारे कंधे पर स्थापित है और शिखा ? ये गायत्री मंत्र की व्याख्या है , जो हमने अपने मस्तिष्क के पास स्थापित की है । यह हमारे मस्तिष्क रूपी किले के ऊपर छाई रहती है और हमारे झण्डे के रूप में फहराती रहती है ।

यह शरीर ही हमारा किला है । यह हमारा लाल किला है। स्वतंत्रता दिवस के समय हमने लाल किले के ऊपर झण्डा फहरा लिया था। कब फहरा लिया था ? आज से छब्बीस–सत्ताईस वर्ष पहले । जिस दिन अँग्रेज यहाँ से विदा हुए थे, उस दिन हमने अपने दिल्ली वाले लाल किले के ऊपर तिरंगा झण्डा फहराया था । इसी तरह भारतीय संस्कृति का, मानवी मूल्यों का, सद्गुणों का झण्डा हमारे मस्तिष्क के ऊपर फहराता है। यह शरीर हमारा किला है । यह हमारे व्यक्तिगत जीवन का किला है । इसके ऊपर हम झण्डे का स्थापना करते हैं और व्यक्तिगत शिखा की स्थापना करते हैं । अब हम शिखा को प्यार करना सिखाएँगे लोगों को । शिखा को प्यार करना और मोहब्बत करना सिखाएँगे । किले को प्यार करना और किले को मोहब्बत करना अब हम सिखाएँगे लोगों को । हम घर–घर जाएँगे इसे सिखाने, क्योंकि हिन्दू धर्म महान है, हिन्दू धर्म विश्व का धर्म है, ये मनुष्यों का धर्म है । हिन्दू धर्म कोई मजहब नहीं है । अभी–अभी हमने एक किताब लिखकर तैयार की है , शायद एक–दो महीने में छपकर तैयार हो जाए । हिन्दू धर्म के जो सारे सिद्धान्त हैं, वे मात्र हिन्दू लोगों के लिए ही नहीं हैं, बल्कि ये यूनीवर्सल हैं । ये विश्वव्यापी हैं, मानवमात्र के लिए हैं । हर देश के निवासी के लिए हैं । हर प्रदेश के निवासी के लिए हैं । चाहे वह हिन्दू धर्म को मानता हो, चाहे न मानता हो । ये सारे के सारे सिद्धान्त मानवमात्र के सिद्धान्त हैं, विश्वव्यापी सिद्धान्त हैं, सार्वभौम सिद्धान्त हैं । सारे के सारे धर्मों का निचोड़ हमारे हिन्दू धर्म में है ।

हिन्दू धर्म का मूल क्या है ? हिन्दू धर्म का मूल वह है–जिसको हम शिखा कहते हैं, जिसको हम यज्ञोपवीत कहते हैं । अब हम इस झण्डे को नष्ट नहीं होने देंगे और हर हिन्दू को कहेंगे कि आप इसको प्यार करना सीखिए । आप भी अपनी संस्कृति को प्यार करना सीखिए, आप अपनी माँ को प्यार करना सीखिए और आप अपने बाप को प्यार करना सीखिए । ये हमारा महत्वपूर्ण क्रिया–कलाप है और इस क्रिया– कलाप का हम विस्तार करेंगे और आपके मनों में और जनता के मनों में स्थापित करेंगे । जब मुसलमान भारत आये थे, तब उन्होंने कहा था कि सुनो हम तुम्हारी चोटी काटना चाहते हैं । अब तुम्हारी चोटी को उतार देंगे । लोग बोले ठीक है, ताकत आपके हाथ में है और फौज आपके साथ में है और बंदूक आपके हाथ में है । हम क्या कर सकते हैं ? हथियार हमारे पास नहीं है । आप जरूर हमारी चोटी

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

काट सकते हैं , लेकिन एक महरबानी कीजिए । क्या मेहरबानी करें? आप इस चोटी को यहाँ से न काट कर गर्दन से काट दीजिए । कारण, चोटी की जड़ यहाँ तक आई है । यदि आप इसे यहाँ से काट डालेंगे तो हमको संतोष बना रहेगा और कोई हमको दुःख का एहसास नहीं होगा और शान्तिपूर्वक दुनिया से चोटी भी चली जाएगी और हम भी चले जाएँगे । अतः आप हमारा सिर काट डालिए । लाखों व्यक्तियों के सिर को मुसलमानों ने कलम करा दिया था ।

अपनी शिखा और जनेऊ को हम कितना प्यार करते थे। आपको तो नहीं मालूम, पर हमें मालूम है । आपको तो साढ़े चौहत्तर का आशय भी नहीं मालूम कि किसे कहते हैं साढ़े चौहत्तर? पहले जमाने में, पुराने जमाने में लोग लिफाफे पर साढ़े चौहत्तर नम्बर डालते थे । आपको मालूम है क्यों डालते थे? जो कोई उस लिफाफे को खोल लेगा, उसको साढ़े चौहत्तर मन जनेऊ, जो अगणित हिन्दुओं ने पहन रखे थे और काट डाले गये थे मुसलमानों के द्वारा, उसकी जो हत्या उन्हें पड़ी होंगी, पाप पड़ा होगा, उस आदमी को भी पाप पड़ेगा, जो हमारी चिट्ठी को बिना बताए हुए खोल लेगा और चुपचाप पढ़ लेगा और फिर चिपका देगा । बंद कर देगा । उतना ही उसे पाप पड़ेगा । पता नहीं पाप पड़ता था कि नहीं और वह साढ़े चौहत्तर मन जनेऊ थे कि नहीं । मैं इस बहस में नहीं जाऊँगा । लेकिन भावना ये थी कि हम लोगों ने साढ़े चौहत्तर मन जनेऊ और शिखाएँ कटवा दी थीं और उसके लिए आप अंदाज लगा लीजिए, साढ़े चौहत्तर मन जनेऊ जिस तराजू पर तौले गए होंगे उसके लिए कितना खून बहाया गया होगा ? कितनी गर्दनें कटाई होंगी ? हमने बहुत गर्दनें कटाई हैं । हमने अपना बहुत खून बहाया है, क्योंकि हम अपनी शिखा को प्यार करते हैं । जनेऊ को हम प्यार करते हैं । अपनी चोटी को प्यार करते हैं हम । शिवाजी न होते तो चोटी भी न होती सबकी । चोटी की रक्षा करने के लिए राणाप्रताप, शिवाजी और गुरुगोविन्द सिंह ने अपने प्राणों की बाजी लगा दी थी । और किसका-किसका नाम बताएँगे आपको कि चोटी के लिए कितनों ने अपनी जान न्योछावर कर डाली, कुर्बानी कर डाली । अब यह चोटी हमारे हाथ से चली गई, नीचे आ गई । अब यह खिसक रही है ! कौन काट रहा है इसको ? मुसलमान काट रहे हैं इसको ? नहीं , ईसाई भी नहीं काट रहे हैं इसको ? तो फिर कौन काटता है ? इसको वो काटता है, जिसको हम इस युग की अनास्था कहते हैं । यही अनास्था चोटी को काटती चली जाती है । आप पता लगा लें कि किन-किन बच्चों के सिर पर चोटी है ? आपको एक भी बच्चे के सिर पर चोटी दिखाई नहीं पड़ेगी, यही हाल जनेऊ का है ।

अगर हम जनेऊ का पता लगाने के लिए चलें और किसी कालेज, किसी विश्वविद्यालय में जाएँ और बच्चों को नंगा कर के देखें और पूछें कि बच्चे तुम्हारे पास जनेऊ है क्या, जरा हमको दिखाना । उत्तर मिलेगा- जी नहीं । अब जनेऊ खत्म हो गया । हमारे-आपके जैसे दकियानूस कहलाने वाले लोगों के ऊपर शायद जनेऊ रखा भी हो, लेकिन वहाँ भी दकियानूसी शब्द लगा हुआ है । जनेऊ हमें जँचता नहीं है । उल्टे कहा जाता है कि जो कोई जनेऊ पहनेगा, उसके घर में मौत हो जाएगी । हमारे यहाँ तो सात पीढ़ी से जनेऊ नहीं पहना गया । बेटे को हम जनेऊ पहनाएँगे तो हमारी अम्मा नाराज हो जाएगी और यह कहेगी कि हमारे तो बाप -दादाओं ने भी नहीं पहना । इसे कहाँ से ले आया हमारे घर में, कोई और अनिष्ट हो जाएगा और अशुभ हो जाएगा । जनेऊ को तू उतार दे ! हमारे घर में जँचता नहीं है । जनेऊ हम कैसे पहनेंगे ? हमारे तो पिताजी जिन्दा हैं । क्या हम मार डालें पिता को ? नहीं आप मार न डालें पिता को । तो , तो क्या करेंगे । जब तक हमारे पिता जिन्दा हैं तब तक हम जनेऊ कैसे पहन सकते हैं ? बाप जनेऊ पहनेगा । बाप जब मर जाएगा तो बेटा जनेऊ पहनेगा । अजीब किस्सा है कि अगर बाप के सामने बेटा पहनेगा तो बाप मर जाएगा । अरे बाबा , ये क्या कहता है तुम कि जनेऊ हमारे वंश में और हमारे खानदान में किसी ने नहीं पहना ।

दुनिया में कौन-कौन से रिवाज चले हुए हैं कि जनेऊ कौन पहनेगा ? मर्द पहनेगा, औरत नहीं पहनेगी । लड़कियों को हम धन्यवाद देते हैं । क्योंकि शिखा की लाज, शिखा की इज्जत इन लोगों ने रख ली है । कोई-कोई लड़कियाँ तो बहुत लम्बी-लम्बी चोटी रखाती हैं । मर्द से कहते हैं कि अरे बाबा छह इंच की न सही तीन इंच की चोटी रख ले, पर इनको ३ इंच का रखने में भी परेशानी मालूम पड़ती है । इन छोकरियों में से किसी की एक फुट लम्बी है , तो किसी की डेढ़ फुट लम्बी है । किसी की २ फुट लम्बी है, तो किसी की ढाई फुट लम्बी है । ये भी नहीं है कि कोई पतली चोटी हो, वरन् लड़कियों की मोटी-मोटी चोटियाँ हैं । जब वे अपने खाविंद को देखती हैं कि वह ऐसा सफाचट है कि उसने चोटी कटा ली है, तो वह दो भी रख लेती हैं । एक अपनी चोटी रख लेती हैं और दूसरी अपने खाविंद के लिए । जनेऊ भी तो हम दो पहनते हैं-एक अपना पहनते हैं और एक अपनी बीबी के बदले का पहनते हैं । इसी तरह लड़की कहती है कि एक चोटी अपने खाविंद के बदले की रखाएँगी और एक अपने बदले की । यही तो बात है कि जो धर्म बचा हुआ है, वह इन लड़कियों की वजह से बचा हुआ है । ये लड़कियाँ न होतीं तो इस चोटी का पता लगाना मुश्किल पड़ जाता । किसे कहते हैं चोटी और कैसे धारण की जाती है? चोटी कहाँ से आती है ? चोटी की कौन रखवाली करता है ? चोटी की हम रक्षा करेंगे और जनेऊ की हम रक्षा करेंगे ।

मित्रो ! हमारा यह उद्देश्य होना चाहिए, हमारा यह शिक्षण होना चाहिए, प्रयास होना चाहिए कि जहाँ कहीं भी हम यज्ञ कराने जाएँ वहाँ युवकों से हम यह पूछें कि आप हिन्दू धर्म को, मजहब को मानने वाले हैं । हाँ! तो फिर ये बताइये, कि पुलिस का सिपाही अपना 'सिम्बोल' पहने रहता है, उसके कमर में एक पेटी बँधी रहती है और उसके ऊपर लगा रहता है एक पीतल का बिल्ला । पीतल के बिल्ले पर क्या लिखा रहता है? 'यू०पी०पी०' लिखा रहता है । पहले अँग्रेजी में लिखा रहता था और अब हिन्दी में लिखा रहता है- उत्तर प्रदेश पुलिस-'उ०प्र०पु०' । मध्यप्रदेश पुलिस में- 'म०प्र०पु०' लिखा रहता है । पीतल का बिल्ला न हो किसी के पास तो समझ लीजिए कि वह सिपाही नहीं है और कमर में पेटी बँधी हुई न हो तो समझ लीजिए कि वह पुलिस का सिपाही नहीं है । सिपाही को कमर में पेटी बाँधनी चाहिए ।

जब कभी किसी का फौज में कोर्ट-मार्शल होता है, तो सबसे पहले यह काम किया जाता है कि उसकी पेटी उतार ली जाती है, उसका बिल्ला उतार लिया जाता है और उसको 'क्रिमिनल'

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

मान लिया जाता है तथा उसको लाइन में खड़ा किया जाता है फिर उसका कोर्ट-मार्शल किया जाता है और यह कहा जाता है कि तुम हमारी इज्जत मत खराब करो। पेटी की इज्जत-राष्ट्र की इज्जत है । तुमने ऐसे खराब काम किए हैं, इसलिए सबसे पहले तुमको यह सजा दी जाएगी कि तुम्हारी पेटी और तुम्हारा बिल्ला हम जब्त कर लेते हैं । पुलिस में भी यही होना है और फौज में भी यही होता है । हमारा बिल्ला जब्त किया या नहीं किया, हम पुलिस के सिपाही हैं कि नहीं, हम फौज के सिपाही हैं कि नहीं, हम हिन्दू धर्म के सिपाही हैं कि नहीं, हम हिन्दू धर्म में दीक्षित हैं कि नहीं, इसकी पहचान आपके शिखा और सूत्र से होती है । अगर आप हिन्दू धर्म में दीक्षित हैं तो लाइए वह निशान, आपके कंधे पर 'यू०पी०पी०' लिखा हुआ है कि नहीं और कमर में पेटी बँधी हुई है कि नहीं और अगर आपकी पेटी छीन ली किसी ने तो आपको यह कहना पड़ेगा कि पुलिस में से हमें बर्खास्त कर दिया गया-फौज में से बर्खास्त कर दिया गया और हमारा कोर्ट-मार्शल किया गया । अगर आपका बिल्ला छीन लिया गया, पेटी छीन ली गई, जनेऊ छीन लिया गया और आपकी शिखा उतार ली गई तो फिर इसका मतलब यह होगा कि आपको हिन्दू धर्म में से बर्खास्त कर दिया गया । हिन्दू धर्म से कोई और धर्म होगा आपका ।

हमारी यही तो निशानियाँ थीं । अब हम पहले निशानियों को जिन्दा करेंगे । निशानियों को जिन्दा करने के बाद उसकी जो शिक्षाएँ हैं, जो कोई भी दिशाएँ हैं, उसकी जो भी प्रेरणाएँ हैं, जो भी निष्ठाएँ हैं, उन्हें हम लोगों के हृदय में प्रवेश कराएँगे, इसके लिए पहले हम सिम्बोल स्थापित करेंगे । इसके बाद हम यह करेंगे कि जहाँ कहीं भी मित्रो, हमारे यज्ञ होंगे, वहाँ पर ध्यान देना पड़ेगा, जिस तरह से छोटे बच्चों को मुण्डन-संस्कार किया जाता था, अब हमको बड़ी उम्र वालों का मुण्डन-संस्कार कराना पड़ेगा । छोटे बच्चों का मुण्डन-संस्कार क्या है ? मुण्डन-संस्कार हरेक के यहाँ पर होता है और हर हिन्दू यह चाहता है कि हमारे बच्चों का मुण्डन हो और वह भी गंगाजी पर हो, जमुनाजी पर हो । देवी के सामने हो । ये मुण्डन क्या है ? मुण्डन कोई संस्कार नहीं है । यह शिखा स्थापना का संस्कार है । चोटी हम रखा लेते हैं , बाकी बालों को काट देते हैं । बाकी बालों को नहीं काटेंगे तो आप शिखा रखाएँगे कैसे? इसलिए शिखा को रखाने के लिए हमको बाकी बाल कम कर देने पड़ते थे । इसका नाम क्या था मुण्डन-संस्कार । मुण्डन-संस्कार मित्रो कन्या का भी करना पड़ता है और बच्चों का भी कराना पड़ता है। जब तक मुण्डन-संस्कार नहीं होगा, शिखा नहीं रखाएँगे, तब तक हिन्दू कैसे कहलाएँगे ? हिन्दू होने की निशानी ही मुण्डन-संस्कार है । लेकिन आज हमारी शिखाएँ गायब हो गई हैं, अत: इस संस्कार को हम फिर से शुरू करेंगे । हम यज्ञ के लिए जो स्थान तलाश करेंगे वहाँ सबसे पहले यह पूछना शुरू करेंगे कि आपके सिर पर शिखा है कि नहीं और जो कहेगा कि शिखा नहीं है, तो उससे यह प्रार्थना करेंगे आपका मुण्डन-संस्कार होना आवश्यक है । मुण्डन-संस्कार के लिए शायद वह तैयार न हो तो यह कहना पड़ेगा कि आप इतनी कृपा कीजिए कि आपके तीन-तीन इंच के जो बाल हैं, उन्हें एक-एक इंच कम करा दीजिए । एक इंच बाल कम करा देंगे तो जहाँ कहीं भी शिखा आपके स्थान पर बनी रहती है, वहाँ एक इंच बाल बड़े हो जाएँगे । आपको छह महीने या साल भर बाद फिर से यदि अपने बाल कम कराने पड़े तो फिर एक इंच बढ़ा देना । इस तरह आपकी शिखा दो-तीन इंच बड़ी हो जाएगी और इस तरह आपकी शिखा की स्थापना हो जाएगी । आप शुरुआत अभी से कीजिए । जाइए नाई से हजामत बनवाकर आइए और मुण्डन- संस्कार कराकर आइए ।

मित्रो, मुण्डन-संस्कार हमारे हिन्दू धर्म का मूल है । लोग गंगाजी जाते हैं, जमुनाजी जाते हैं, हरिद्वार आते हैं, सब जगह मुण्डन होते हैं । आप मध्यप्रदेश जाइए और बिहार जाइये, सब जगह गंगा या नर्मदा किनारे मुण्डन होता हुआ चला जा रहा है । जो लोग दक्षिण भारत में जाते हैं, वे वहाँ देखते हैं कि जो विधवाएँ होती हैं वे सब अपने सिर के पूरे बाल कटाकर के आती हैं । वहाँ पर बाल काटने का और कटे हुए बालों का ठेका होता है लाखों रुपए का । सारे के सारे कटे हुए बालों को इकट्ठा कर लेते हैं और फिर उनको विलायत भेजते हैं। लाखों रुपये का सौदा होता है इनका । जो सुहागिन हैं उनको नहीं कटाना पड़ता , पर जो सुहागिन नहीं हैं या जो विधवा हो जाती हैं, उनको बाल कटाने पड़ते हैं, मुण्डन कराना पड़ता है । साथियो, मुण्डन के बारे में हमें लोगों को शिक्षा देनी पड़ेगी और यज्ञोपवीत के बारे में यह ये फिजा पैदा करनी पड़ेगी । जनेऊ के बारे में यह बहम हमें निकालना पड़ेगा कि ये पंडित के हिस्से का है और ये बनिये के हिस्से का है या क्षत्रिय के हिस्से का है । जनेऊ पहनने का अधिकार किसी एक वर्गविशेष के हिस्से का नहीं होता । ये अटूट है, मजबूत है, शानदार है और हर आस्तिक के लिए है ।

यज्ञोपवीत धारण करने के कुछ नियम हैं, कुछ मर्यादाएँ हैं, जिन्हें जानना आवश्यक है । यज्ञोपवीत को छह महीने में बदलना चाहिए, क्योंकि पसीने से छह महीने में वह मैली पड़ जाती है और धागे कमजोर हो जाते हैं । अत: हर छह महीने बाद यज्ञोपवीत के धागे को बदल देने चाहिए । सूर्यग्रहण पर भी बदल देते हैं, चन्द्रग्रहण पर बदल देते हैं, कई बार बदलते हैं । यदि ऐसा नहीं हो पाता तो कम से कम छह महीने में तो बदल ही देने चाहिए । छह महीने के लिए हमने इसलिए कहा है कि छह महीने में जनेऊ पुरानी पड़ जाती है । महिलाएँ प्राय: हर महीने अपना जनेऊ बदल लेती हैं और नया धारण कर लेती हैं । इसी तरह कई लोग महीने में एक बार बदलते हैं । पैसे, दो पैसे, पाँच पैसे का जनेऊ आता है। वैसे तो लोग अन्य मदों में ढेरों पैसा खर्च कर देते हैं, तो महीने भर में एक जनेऊ पर खर्च क्यों नहीं कर सकते हैं ? उससे क्या आफत आ जाएगी ? अत: हमको यज्ञोपवीत की स्थापना करनी पड़ेगी और हम उसे व्यापक आन्दोलन के रूप में चलाएँगे । जहाँ कहीं भी हमारे यज्ञ होंगे, जो कोई भी व्यक्ति हमारे यज्ञ में शामिल होने का इच्छुक होगा, उनसे हम ये कहेंगे कि यज्ञोपवीत करा लीजिए और जनेऊ पहन लीजिए । यदि वह कहेगा कि जनेऊ पहनेंगे तो हमारी अम्मा नाराज हो जाएगी । अम्मा नाराज हो जाएगी तो आप ऐसा कीजिए कि यदि यज्ञ में शामिल होना चाहते हैं, तो आपको जनेऊ हम पहना देते हैं, आप पहन लीजिए । इसे आप चौबीस घण्टे पहन लीजिए । चौबीस घण्टे के बाद आप इसे विसर्जित कर देना । यदि आप हवन में शामिल होना चाहते हैं, तो जनेऊ जरूरी है । जनेऊ हमारे हिन्दू धर्म का

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अक्षुण्ण अग है । इसालए इस अपनाना शुरू कीजिए, अभ्यास करना शुरू कीजिए । अब हम हवन को व्यापक बनाने की सोच रहे हैं तो यज्ञोपवीत को भी व्यापक बनाना पड़ेगा । हवन-यज्ञ और यज्ञोपवीत वास्तव में एक ही चीज है ।

यज्ञ से ही मनुष्य को मुक्ति हासिल नहीं होती । इसके लिए अपने अंतराल में छिपी दिव्य-ज्योति को जाग्रत करना पड़ता है । यज्ञ की अग्नि तो हवन-कुण्ड में समाप्त हो जाती है, पर अखण्ड-ज्योति तो कई-कई दिन रखी जाती है । अखण्ड-ज्योति समष्टि के अनंत प्रकाश की प्रतीक है । कितने ही मंदिर ऐसे होते थे जहाँ अखण्ड-ज्योति की रक्षा की जाती थी । अब वे कहाँ रहे जहाँ अखण्ड दीपों की रक्षा की जाती हो । अखण्ड नियम और अखण्ड दीपक की रक्षा एक ही बात है । ये तो किन्हीं-किन्हीं ऋषियों के यहाँ और किन्हीं-किन्हीं महत्वपूर्ण व्यक्तियों के यहाँ पाई जाती है । हमने भी अखण्ड-ज्योति जलाई है, ताकि आप अखण्ड -ज्योति को और गायत्री माता को अपने कंधों पर, अपने हृदय पर रखें, साथ ही साथ और लोगों के कंधों पर भी उन्हें स्थापित करें । यह काम आपको करना ही पड़ेगा । इसका यह नियम है कि स्वयं प्रकाशित हों और अन्यों को भी प्रकाशित करें, प्रेरित करें । यह एक नियम है, एक कायदा है । ये निष्ठाएँ हमको फिर से अपने हिन्दू धर्म में पैदा करनी चाहिए और विश्व में सारे के सारे लोगों में पैदा करनी चाहिए । इससे रीति और रस्म बदलकर रहेगी । लेकिन अगर हमने यह मानकर रखा कि केवल यज्ञोपवीत करा लेने, जनेऊ पहन लेने और शिखा रखा लेने भर से हमारी तरक्की हो जाएगी, तो ऐसा नहीं समझना चाहिए ।

अभी मैं आपको मूर्ति-पूजा और बुत-परस्ती के बारे में कह रहा था । ठीक इसी तरह अगर आपने शिखा रखी और यज्ञोपवीत पहना, लेकिन शिखा रखने के बाद और यज्ञोपवीत पहनने के बाद में आपने उसका मूल्य समझा नहीं, उत्तरदायित्व समझा नहीं, शिक्षा को समझा नहीं, प्रेरणा को समझा नहीं, हकीकत को समझा नहीं तो आपको उससे उपेक्षा पैदा होती चली जाएगी और हमारे बच्चे जनेऊ पहनने से इनकार करेंगे हमारे बच्चे चोटी रखने से इनकार करेंगे ।

आज हमारे हिन्दुओं के बच्चों ने इनसे क्यों इनकार किया ? बताइए न आप? हिन्दुओं के बच्चों ने इसलिए इनकार किया, क्योंकि उन्हें किसी ने भी ये बताया नहीं कि आखिर ये क्या है? हम लोगों ने इसे यज्ञोपवीत नाम क्यों दिया ? इसके पीछे शिक्षा के बारे में कोई जानकारी नहीं दी कि शिखा क्या है और उसके पीछे क्या जिम्मेदारियाँ हैं ? यज्ञोपवीत क्यों पहनाई जाती है और ये क्या याद दिलाती है ? जनेऊ पहना तो दिया आपने, जनेऊ पहनाने की दक्षिणा भी दे दी पंडित जी को और हवन भी करा दिया और ब्रह्मभोज भी करा दिया-दो हजार रुपए भी खर्च कर दिए, लेकिन यज्ञोपवीत पहनने के बाद जब बच्चे ने पूछा-पिताजी ये क्या है? इसे क्यों पहनते हैं ? हमें क्यों जनेऊ पहनाया गया है ? तब आपका जवाब होता है-चुप बे, ज्यादा बोलता है । हमारे बाप-दादा पहनते थे, इसलिए हम भी पहनते हैं । हम ब्राह्मण हैं । तुझे शर्म नहीं आती-पूछता है क्यों पहनते हैं ? सभी ब्राह्मण जनेऊ पहनते हैं । लेकिन पंडितजी ब्राह्मण तो सब पहनते हैं, पर क्यों पहनते हैं ? आखिर ये क्या चीज हैं ? चुप रह! क्यों पहनते हैं? पंडित जी-पंडित जी, हर वक्त धर्म के बारे में पूछताछ करता रहता है । धर्म के बारे में पूछताछ का जवाब देने में यदि आप समर्थ न हो पाए तो मित्रो, आपकी निष्ठा कमजोर होती चली जाएगी और हमारी सांस्कृतिक परम्पराएँ-संस्कार परम्पराएँ विलुप्त होती चली जाएँगी । अत: संस्कार परम्परा के बारे में आपको बताना पड़ेगा, शिखा के बारे में बताना और समझाना पड़ेगा, जनेऊ के बारे में बताना और समझाना पड़ेगा । अगर आपने इस संबंध में बताना और समझाना शुरू कर दिया तो एक भी हिन्दू का बच्चा यह नहीं कह पाएगा कि हमने यज्ञोपवीत तो करा लिया, पर हम जनेऊ नहीं पहनेंगे।

आप पूरे यूरोप में जाइये, वहाँ तो हमसे अधिक पढ़े-लिखे लोग हैं । हमारे बच्चों को तो अँग्रेजी आती भी नहीं है, मैट्रिक पास हैं । लेकिन कोई जनेऊ नहीं पहनता और साहब बना फिरता है । जबकि सारे के सारे यूरोप में आपको सब के सब शिक्षित आदमी मिलेंगे ; कोई आदमी ग्रेजुएट से कम नहीं मिलेगा । जो आदमी दिन में नहीं पढ़ सकते , वे रात में पढ़ते हैं और ग्रेजुएट हो जाते हैं। लेकिन आपको मालूम होना चाहिए कि कोई भी आदमी, कोई भी ईसाई कहीं भी निकलता है तो अपनी प्रॉपर ड्रेस में निकलता है । जिसमें 'टाई' भी शामिल है । टाई क्या है ? टाई ईसाइयों का यज्ञोपवीत है । 'क्रूस' जिसमें ईसा-मसीह को फाँसी लगाई गई थी । टाई उस फाँसी का प्रतीक है । प्रत्येक ईसाई, जिसमें कि बड़े से बड़ा आदमी शामिल है और छोटे से छोटा भी शामिल है या जो भी ईसा-मसीह में विश्वास करता है, यकीन करता है वह गले में फाँसी का फंदा, टाई के रूप में लगाकर सड़कों पर निकलता है और कहता है कि ये हमारी शान है और हमारी इज्जत है और हम पहनकर निकलते हैं । अरब देशों में मुसलमान तिरछी टोपी पहनकर निकलते हैं । हमारे हिन्दुस्तान में भी वे तिरछी टोपी पहनकर निकलते हैं और कुछ लोग बालों वाली टोपी पहनकर निकलते हैं और चूड़ीदार पाजामा तथा अचकन पहनकर निकलते हैं । आप जाइए वहाँ । कहाँ? जामिया-मिलिया इस्लामिया कालेज में और दूसरे कालेजों में भी मुसलमानों के लड़कों को देखिए ना । अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी में जाइए ना, वहीं आपको आगे वाली मूँछें कटाए हुए और पाजामा एवं चप्पल पहने हुए आपको मुसलमानी लिबास में उसी लहजे में, उसी तर्ज में काम करते हुए मिलेंगे, दिखाई पड़ेंगे । आप जामिया मिलिया कालेज में जाइए, अन्य स्कूल, कालेजों में जाइए आपको प्रत्येक जगह वे सारे के सारे मुसलमानी लिबास में मिलेंगे । क्या वो पढ़े-लिखे नहीं हैं ? क्या हिन्दुओं के लड़के पढ़े-लिखे हैं ? क्या हिन्दुओं के लड़कों के दिमाग सातवें आसमान पर नहीं हैं ? क्या हिन्दुओं के लड़कों को बहस करना आ गया ? मुसलमान के लड़कों को बहस करना नहीं आया ? उनको भी आता है ।

आप सिक्खों के कालेजों में जाइये। वहाँ के सारे के सारे स्टूडेण्ट आपको साफा पहने हुए मिलेंगे । अपने सिर पर कलंगी लगाये हुए दिखेंगे और अपने हाथ में कृपाण लिये हुए या बगल में डाले हुए दिखाई देंगे । क्या वो पढ़े-लिखे हुए नहीं हैं ? क्या सारी अक्ल आपके ही हिस्से में आ गई है । क्या वे पढ़े-लिखे नहीं हैं ? विद्या उनको नहीं आती । नहीं साहब,

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

वह तो शिक्षा ने ऐसा बना दिया हमें । तो शिक्षा ने हमें ही बना दिया, उन्हें नहीं बनाया? शिक्षा उन्होंने भी तो पढ़ी है । एम०ए० पास हैं और मुसलमान भी तो एम०ए० पास हैं । फिर हमारे यहाँ ये क्या हो रहा है ? मित्रो इसकी जिम्मेदारी हमारी और आपकी है । धर्म के बारे में, यज्ञोपवीत के बारे में बताने और समझाने की कोशिश हमने नहीं की । ये शिखा क्या है ? ये यज्ञोपवीत क्या है ? इसका हमने कभी समाधान कर दिया होता, उनको समझा दिया होता तो निश्चित हमारे बच्चे में ये गुण आ गये होते । तब हमारे घर के प्रत्येक बच्चे के कंधे पर जनेऊ तो रखा होता और सिर पर शिखा स्थापित होती । वे उनमें छिपी प्रेरणाओं का अनुसरण कर रहे होते । अभी भी समय है सँभल जाने के लिए कि जब भी हमारे बच्चे हम से बहस करने आयेंगे और प्रश्न करेंगे कि बताइए शिखा क्या है ? तो हमको उन्हें एक घण्टा समय देना पड़ेगा और बराबर बताना पड़ेगा कि शिखा का मतलब क्या है? मकसद क्या है ? उद्देश्य क्या है ?

एक दिन हमने आपको गायत्री मंत्र के बारे में, ज्ञान की देवी के बारे में बताया था । गायत्री मंत्र की वह सारी की सारी व्याख्या अपने बच्चे को समझानी पड़ेगी, जो कि शिखा के बारे में जानकारी प्राप्त करने आया है और चोटी के बारे में जानने आया है कि यह क्या है ? चोटी गायत्री माता की प्रतीक है, यह बात आपको बतानी पड़ेगी । फिर वह पूछेगा कि गायत्री मंत्र क्या होता है ? ये भी मैंने आपको एक दिन बताया था । इसके लिए मैंने आपको तीन घण्टे का समय दिया था, आपको याद होना चाहिए । इस तरह जो आदमी शिखा के बारे में जानना चाहता हो उसे उसकी सारी की सारी फिलॉसफी के बारे में समझाना चाहिए कि शिखा क्या होती है । गायत्री क्या है और गायत्री की मूर्ति क्या है? इस तरह आपका बच्चा गंभीर हो जाएगा और तब जनेऊ को समझने, शिखा को समझने से इनकार नहीं कर सकेगा । यज्ञोपवीत के बारे में भी यही करना पड़ेगा आपको । जो बच्चा यह पूछने के लिए आपके पास आया है कि गुरुजी, ये क्या चीज है, जिसे आप पहनाते हैं । यह तो मैला-कुचैला हो जाता है । आप बेकार में ही बार-बार हमारे गले में बाँध देते हैं । आप इसे क्यों बाँध देते हैं, बताइये न । तो आपको यज्ञोपवीत पहनाने के साथ ही उसे यज्ञोपवीत धर्म की शिक्षा देनी पड़ेगी । यज्ञोपवीत की वह शिक्षा जो मैंने एक दिन सबेरे भी आपको समझाई थी और शाम को भी समझाई थी ।

यज्ञ की फिलॉसफी के बारे में भी लोगों को बताना पड़ेगा कि यज्ञ हिन्दू धर्म का अक्षुण्ण अंग क्यों है ? हमारी संस्कृति का अक्षुण्ण अंग क्यों है? इसकी प्रेरणाएँ क्या हैं, इसका प्रकाश क्या है ? इसकी शिक्षाएँ क्या हैं? इस संबंध में हम प्रत्येक के बारे में किताब में छपवा रहे हैं । इसमें शिखा और सूत्र के बारे में बता भी रहे हैं । शिखा और सूत्र के बारे में एक हमारी पुस्तक भी है । पहले एक मोटी किताब भी थी, एक बड़ी किताब भी थी । पर अब बड़ी किताब तो रही नहीं, अत: एक अन्य छोटी किताब प्रकाशित कर रहे हैं । इस तरह से शिखा और यज्ञोपवीत के बारे में बहुत जानकारी हमको देनी है और हम जरूर देंगे, क्योंकि हमारे हिन्दू धर्म का मूल स्थापना-स्तंभ यज्ञोपवीत है । पर आपने यज्ञोपवीत केवल उसी तरीके से पहनाना शुरू कर दिया, जिस तरह से आप मूर्तियों के बारे में कहते चले आ रहे हैं । मूर्तियों की स्थापना के बारे में मान्यता बनाकर और उनके बारे में चर्चा करते चले आ रहे हैं । कलेवर को मान्यता देने और उसमें भरी प्राणऊर्जा को, प्रेरणा को भूलते चले जा रहे हैं । संध्या तो करते हैं, पर यह नहीं मालूम कि संध्या का उद्देश्य क्या है,संध्या क्यों की जाती है ? लोग साधु-संन्यासी तो बन जाते हैं, पर इसके उद्देश्यों का ज्ञान उन्हें नहीं होता है । साधु और संन्यासी वे होते हैं जिसने कि संकल्प लिया था कि हम समाज के लिए काम करेंगे, देश के लिए काम करेंगे, संस्कृति के लिए काम करेंगे । पर आज सर्वत्र उलटा ही दिखाई देता है । लोगों को मालूम भी नहीं कि साधु-संत कैसे होते थे ? आज तो जहाँ देखो वहीं लाल-पीले कपड़े पहनने वाले, चिमटा बजाने वाले और बाबाजी कहलाने वाले-संन्यासी कहलाने वालों की भीड़ नजर आती है । इससे तो संन्यास की महत्ता कम हो जाएगी और लोग बाबाजी की पूजा करने से इनकार कर देंगे, सम्मान करने से इनकार कर देंगे, आपने देखा नहीं। आप लोग देखिये, कुंभ के मेले में देखकर आइए । इससे यह मालूम हो जाता है कि विवेकशीलता का समाधान हमारे पास नहीं है ।

लोग बार-बार हमारे पास आते हैं और पूछते हैं कि गुरुजी कितनी महँगाई है । इसका प्रभाव कुंभ जैसे मेलों पर भी पड़ा है । अभी भी आप देखेंगे कि हरिद्वार का, ऋषिकेश का, हर की पौड़ी का क्या हाल होता है । लाखों आदमी आते हैं । पिछले साल भी आए थे, तब भी महँगाई थी । इस साल भी आने वाले हैं । आगे और भी ज्यादा आने वाले हैं । इसकी क्या वजह है कि इतने कम लोग आते हैं ? कुंभ में आने वालों का सफाया कैसे हो गया ? जब पहले पचासों हजार आदमी आते थे अब पच्चीस हजार भी नहीं हैं । कितने स्नान कम हो चुके । वसंत पंचमी का स्नान खत्म हो गया । शिवरात्रि का स्नान खत्म हो गया और कौन-कौन से दो खत्म हो गए । चार तो स्नान खत्म हो गए । पच्चीस हजार आदमी भी नहीं आये । इस व्यवस्था में ढेरों रुपया गवर्नमेण्ट का खर्च हो गया । अब देखिए क्या होता है । अब एक ही स्नान रह गया है, जो पहली तारीख को पड़ने वाला है । उसमें भी आप देख लेना बहुत थोड़ी-सी भीड़ दस हजार की होगी । बहुत थोड़े-से आदमी आएँगे और वह भी उस दिन आएँगे, जिस दिन तेरह तारीख को कुंभ का मेला है । उसमें आपको कुछ भीड़-भाड़ दिखाई पड़ेगी । बस उसके बाद सफाया हो जाएगा । ऐसा क्यों हुआ ? किसी जमाने में कुंभ मेले का यह हाल होता था कि इन मेलों में हिन्दुस्तान के सारे के सारे संत और सारे के सारे ऋषि और सारे के सारे ब्राह्मण, एक बड़ा-सा व्यापक सम्मेलन किया करते थे, जिसमें सभा, गोष्ठी और अधिवेशन होते थे । इन अधिवेशनों का ध्येय आध्यात्मिक होता था। वे कोई छोटे-मोटे नहीं होते थ, बल्कि बड़े और अच्छे अधिवेशन होते थे , जिसमें प्रत्येक संत और प्रत्येक ऋषि और प्रत्येक ब्राह्मण, प्रत्येक धर्मगुरु और प्रत्येक महन्त इकट्ठा होते थे और विचार- विनिमय करते थे कि इस मानव समाज में आध्यात्मिकता की जो कमी आ गई है और धार्मिकता में जो न्यूनता आ गई है, धार्मिकता की निष्ठाएँ जो कमजोर पड़ गई हैं-उसका समाधान क्या है और हम लोग उसके लिए क्या काम करेंगे ? बड़े-बड़े महत्वपूर्ण फैसले हुआ करते थे । लोग इन अवसरों पर मिलते थे और बड़ा भारी काम

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

किया करते थे । ये विचारों के यज्ञ थे । यह हमारी पार्लियामेण्ट थी, जो बारह वर्ष पीछे इकट्ठी होती थी । एक बार हरिद्वार में इकट्ठी हो गई और एक बार नासिक में हो गई । एक बार प्रयाग में इकट्ठी हो गई तो एक बार उज्जैन में । इस तरह हिन्दुस्तान के चारों कोनों में यह पार्लियामेण्ट बारी-बारी से इकट्ठी होती रहती है जैसे कि आल इण्डिया कांग्रेस के अधिवेशन होते हैं । इस साल बम्बई में होने वाला है । तो अगले साल सौराष्ट्र में होने वाला है और फिर बिहार में होने वाला है, कभी उज्जैन में होने वाला है,कभी हरिद्वार में होने वाला है, कभी इलाहाबाद में होने वाला है, वे सब जगह होते थे चारों दिशाओं में । इन कुंभ मेलों में हिन्दुस्तान भर के लोग आते थे, स्नान करते थे और विचार करते थे । लेकिन अब उस तरह की बात समाप्त हो गई । अब उस तरह की प्रथा समाप्त हो गई, उस तरह की परम्पराएँ समाप्त हो गईं । अब किस तरह की परम्पराओं की शुरुआत हो गई ? अब इस तरह की परम्पराएँ शुरू हो गईं कि नहाएगा पहले कौन ? बाबाजी नहाएगा पहले या पहले नागा नहाएगा ? वैरागी पीछे नहाएगा । नागा बाबा पहले क्यों नहाएगा ? वैरागी को कहना चाहिए कि नागाजी आप नंगे हैं, आप हट जाइए और देखिये आपको ठण्ड लग जाएगी । नागा साधु यह नहीं कहेगा कि पहले आप नहा लीजिए, हम पीछे नहा लेंगे । हमारी क्या है हम तो नंगे फिरते हैं, हमारे लिए ठण्ड की क्या बात है । पर ऐसा नहीं होता । वह कहता है कि आप वैरागी हैं और आप तो कपड़े पहनते हैं । आपको कपड़े सुखाने पड़ेंगे । हमारे पास तो कपड़े भी नहीं हैं, हमें सुखाने भी नहीं पड़ेंगे, अत: हम पहले नहाकर चले जाएँगे, आप पीछे नहा लीजिएगा । इस तरह स्नान को लेकर कभी-कभी साधु-बाबाओं में सिर फटौवल की नौबत आ जाती है । कुंभ में नहाएगा तो नागा पहले नहाएगा और वैरागी नहाएगा तो उसका भूसा बना देगा । नागा बाबा कहेंगे कि पहले हम नहाएँगे । अगर पहले तू नहाएगा तो तेरी आफत आएगी । वैरागी कहता है कि हम पहले आये, तो हम पहले नहाएँगे । ऐसे बाबाजी को प्रणाम है जो यह कहते हैं कि हमको पहले नहाना है तो हम नहाएँगे। ऐसे बाबाओं में से किसी को जरा भी शर्म और हया नहीं है कि जो पहले तो लिहाफ ओढ़कर के पड़े रहते हैं, कम्बल ओढ़कर रहते हैं । जाड़े के दिनों में लिहाफ ओढ़ते हैं, कम्बल ओढ़ते हैं और गर्मी के दिनों में दुपट्टा ओढ़कर लू से बचते हैं, लेकिन जब गंगाजी स्नान करने आते हैं, तो जहाँ पर हजारों-लाखों की संख्या में स्त्रियाँ और बच्चे और बच्चियाँ होती हैं, उन लोगों के बीच लंगोटी पहनकर चलते हैं या नंगे होकर निकलते हैं, तो उन्हें लज्जा, हया, शर्म नहीं आती । बाबाजी बनते हैं और संत बनते हैं और क्या-क्या बनते हैं । उन्हें हया, शर्म आनी चाहिए । मित्रो, इस तरह से जनता का समाधान क्या होगा, कैसे होगा? जनता का समाधान नहीं होगा तो वह इन्हें मार डालेगी । जनता जीने नहीं देगी आपको और आपको सुनना, सलाम करना बंद कर देगी और कहेगी कि देखो अमुक बाबाजी आए हैं, इनसे सावधान रहना ।

इस तरह से मित्रो क्या हो जाएगा ? अनास्था का, उपेक्षा का वातावरण बन जाएगा । यदि हमने आध्यात्मिकता के मर्म को नहीं समझा। अत: हमको यज्ञोपवीत और शिखा का समाधान करना पड़ेगा कि इनकी प्रेरणाएँ क्या हैं ? शिक्षाएँ क्या हैं ? प्रकाश क्या है ? बुद्धिजीवी जनता उमड़ती और घुमड़ती चली आ रही है । हर बात में क्यों और कैसे ? क्यों और कैसे का सवाल उठता चला आ रहा है। जनेऊ के बारे में, यज्ञोपवीत के बारे में आपको ये क्यों और कैसे का जवाब देना पड़ेगा । गायत्री मंत्र और यज्ञ की व्याख्या करनी पड़ेगी । हिन्दू धर्म और हिन्दू संस्कृति की व्याख्या करनी पड़ेगी । जनेऊ और शिखा पर हमारा कोई मन्तव्य नहीं है । हमें इन सवालों की-स्तंभों की स्थापना के माध्यम से हर आदमी के हृदय में, हर आदमी के कलेजे में, हर आदमी के दिल में हिन्दू सभ्यता, हिन्दू-संस्कृति के प्रति निष्ठा पैदा करनी पड़ेगी । कर्मकाण्ड हमारी पुस्तकों में लिख दिए गए हैं । आप इन कर्मकाण्डों की व्याख्या नहीं करेंगे, तो ये खत्म हो जाएँगे, यह तथ्य आपको मालुम होना चाहिए ।

यज्ञ की हम व्याख्या करते हैं तो आप हमसे कहते हैं कि गुरुजी आप यज्ञ की व्याख्या क्यों करते हैं ? आप तो दनादन हवन कराइए और धड़ाधड़, तड़ातड़ आँसू गिराइये । व्याख्या क्यों करते हैं? बेटा, हम व्याख्या नहीं करेंगे तो लोग हवन में से उठा करके फेंक देंगे । पिछले दिनों हमारे यहाँ क्या हुआ ? मथुरा में एक वकील थे उन्होंने अपनी लड़की, जो एम०ए० पास थी, का एक लड़के से ब्याह किया, जो विलायत पास होकर के आया था । बारात आई, खूब जोर-शोर से, उन्होंने बहुत धूम-धाम से शादी की। लड़के और लड़की दोनों बैठे हुए थे जहाँ संस्कार हो रहा था । भाँवर पड़नी थी । पंडित लोग बहुत जोर-जोर से श्लोक बोल रहे थे-चावल रखिए, हाथ रखिए, ऐसे कीजिए, वैसे कीजिए, सब चावल फेंक दीजिए और दीपक को प्रणाम कीजिए, ढाई रुपया इसमें दक्षिणा का और नौ पैसे यहाँ रखो और तीन पैसे यहाँ रखो । लड़के ने पूछा-पंडितजी गुस्ताखी माफ करें तो एक बातू पूछूँ। हाँ! हाँ! पूछो बेटा जो पूछना हो । यह आप क्या कह रहे हैं? आप जो कुछ बहुत देर से कह रहे हैं, वह हमारी समझ में कुछ नहीं आ रहा है और ये पंडित जी जो बोलते हैं वह भी समझ में नहीं आ रहा कि आप लोग क्या बोलते हैं । मैंने देखा कि पंडित जो था वह समझदार था, उसने कहा-जो बात कहनी चाहिए वह हम संस्कृत में कह रहे हैं । आपको जो प्रतिज्ञा करनी चाहिए, जो देवताओं को आश्वासन देना चाहिए, जो अपनी स्त्री से वायदा करना चाहिए, हम सब वह संस्कृत में कह रहे हैं और तुमको जो नियम पालन करना चाहिए, वह भी संस्कृत में हम कह रहे हैं । लड़के ने कहा-अच्छा बाबा, हम समझ गये । आप हमारे लिए बयान दे रहे हैं । जैसे कोई वकील कचहरी में बयान देता है, कोर्ट में बयान देता है, उसी तरह से आप हमारी तरफ से बयान दे रहे हैं । हाँ बेटा अब समझ गया तू । हम तुम्हारी तरफ से वकील हैं, मुख्तियार हैं और तेरी तरफ से बहस कर रहे हैं और तेरी तरफ से बयान दे रहे हैं और तू चुपचाप बैठा हुआ है । और ये पंडित जी क्या कर रहे हैं ? जो प्रतिज्ञा करनी चाहिए और जो नियम पालन करने चाहिए-जो कुछ इसे बात कहनी चाहिए, वह ये पंडितजी कह रहे हैं । तो ये लड़की ? ये लड़की यहीं है, यहीं बैठी रहेगी, इसके गुरु हम हैं । इसके मुख्तियार हम हैं और ये करेंगे और वो करेंगे । अच्छा पंडितजी, अब हम समझ गए और हम आपके आभारी हैं कि समझा दिया आपने हमको ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

उसने लड़की से कहा– तो एक काम करते हैं– चलो तुम्हें बाहर घुमा लाएँ और मिला लाएँ उन लोगों से, जो लोग हमको देखने आए हैं । हम उनका स्वागत करेंगे और उनके हाथ जोड़ेंगे और उन पंडितजी से कहा–अब क्या काम बाकी रह गया है। पंडित जी बोले– अब बेटा थोड़ा–सा काम रह गया है । परिक्रमा करनी है और भाँवर पड़नी है और सब कुछ कर लिया । तो ऐसा कीजिए पंडितजी आप लोग आपस में भाँवर कर लीजिए और ब्याह रचा लीजिए । जब आप हमारे बदले की बात कह सकते हैं, तो आप परिक्रमा या भाँवर क्यों नहीं ले सकते ? आप आपस में एक दूसरे की बाँह पकड़ लीजिए और बाकी सभी काम पूरा कर लीजिए और हमें जाने दीजिए । बात तो थी मजाक की, परंतु मैंने उसे बहुत गंभीरता से लिया । मैंने बहुत विचार–मंथन किया कि हमें अपने बच्चों को इस बात की जानकारी देनी चाहिए कि कर्मकाण्डों के पीछे क्या रहस्य छिपा है? कर्मकाण्डों का, क्रिया का, हवन का क्या उद्देश्य है? क्यों इसमें घी डाली जाती है ? क्यों लकड़ी डाली जाती है? क्यों आग में समिधा और हवन–सामग्री डाली जाती है? आरती क्यों उतारी जाती है ? और घी में हाथ क्यों मला जाता है ? भस्म क्यों लगाई जाती है? ये सारे के सारे क्रिया–कृत्यों का, कर्मकाण्डों का शिक्षण हम देने में समर्थ नहीं हो सके, तो मित्रो, अगली पीढ़ी में कर्मकाण्डों का यही हाल होगा, जैसे कि मैंने अभी एम०ए० पास उक्त लड़की के बारे में बताया । अगर आप इन बातों को समझाएँगे नहीं, बताएँगे नहीं तो आपका भी वही हाल होगा जो उन पंडितजी का हुआ था। अतः आपको इन बातों को समझाना पड़ेगा, बताना पड़ेगा । हमको संन्यास की महत्ता बतानी पड़ेगी, समझानी पड़ेगी कि व्यक्ति संन्यासी क्यों होता है और क्यों होना चाहिए ? संन्यासी को क्या करना चाहिए और वह क्या–क्या करता है ? संन्यासी का स्वरूप साफ नहीं करेंगे तो आप देखना–अभी कुंभ में २५ हजार आदमी तो भी हैं, पर अगले वाले कुंभ में पाँच हजार आदमी भी नहीं आएगा और इसी तरह से गवर्नमेण्ट की पुलिस और गवर्नमेण्ट के सफाई–मजदूर और गवर्नमेण्ट के टीका लगाने वाले बैठे रहेंगे । कोई नहीं आएगा, कहेगा इन पागलों के पास जाने की जरूरत क्या है? ये नागा, ये पंडे और जो शहरों में रहते हैं और सड़कों पर नंगे फिरते है उन्हें देखने कौन जाएगा ? और किसलिए जाएगा ? इनसे अच्छे तो वे हैं जो कोढ़ी हैं, अपाहिज हैं, लंगड़े हैं, अपंग हैं । लोग उन्हें खिलाते हैं । वस्तुतः वे ही समाज -सेवक हैं, ये ही लोकसेवी हैं, जो जनता की भलाई करते हैं । नहीं साहब, जो भजन करते हैं, ध्यान करते हैं, वे लोकसेवी हैं । नहीं, ऐसा नहीं हैं। भजन करते हैं–तो अपने घर करें, मेहनत करें, मशक्कत करें । जो आदमी मेहनत करता है और अपने हाथ–पाँव की कमाई खाता है वही स्वर्ग–मुक्ति का अधिकारी है । वैकुण्ठ आपको तभी मिलने वाला है, स्वर्ग आपको तभी मिलने वाला है, मुक्ति आपको तभी मिलने वाली है, सिद्धि तभी आपको मिलने वाली है, चमत्कार आपको तभी मिलने वाला है और यश आपको तभी मिलने वाला है जब आप मेहनत करेंगे, मशक्कत करेंगे । तो आप पैसा खर्च कीजिए, नहीं साहब, हम तो भजन करेंगे और ऐसे ही मुफ्त में भोजन खाएँगे और पैसे कमाएँगे । नहीं भाईसाहब, अब ऐसा नहीं चलने वाला है ।

इसलिए मित्रो, क्या होने वाला है? अगले दिनों क्या स्थापना होने वाली है? अगले दिनों विवेकशीलता की स्थापना होने वाली है । हम उस विवेकशीलता की स्थापना करने से डरने वाले नहीं हैं। हम विवेकशीलता से डरते नहीं हैं । हम बहस करने वालों से डरते नहीं हैं । हमें जो सबसे बड़ा भय है, वह उस आदमी का है जो बिल्कुल जड़ हो गया है, जिसकी अक्ल रूढ़िवादिता में बदल गई है । जिसके मन में क्यों और कैसे का सवाल पैदा नहीं होता । हमको उससे है डर । हमको उससे डर नहीं है जो महात्माओं की निन्दा करता है, जो महात्माओं से जवाब–तलब करता है। हमको उस आदमी का भय नहीं है । क्योंकि हमारे पास ऐसे जबरदस्त जवाब हैं कि हम उसको, उसके दिमाग को घुमा सकते हैं, हम उसके हृदय को हिला सकते हैं। उसके मन को हिला सकते हैं, हमारे पास बहुत जबरदस्त दलीलें हैं । मित्रो, हमारे पास हर आदमी की दलीलों का जवाब देने के लिए,हर आदमी को वास्तविकता को समझाने के लिए तर्क है । इसीलिए हम बात वहाँ से शुरू करेंगे जहाँ से कि उसका हर बात में रोना शुरू होता है । जहाँ वह प्रश्न करता है कि शिखा से क्या फायदा ? उसने बहुत सवाल कर लिया । अब हम उसकी बात का जवाब देंगे । अब हमारी बारी आई है, हम जवाब देंगे । अब हम यह सिद्ध करें कि जनेऊ क्यों पहनना चाहिए ? जनेऊ से क्या हो सकता है? इसको हिन्दू धर्म की, हिन्दू संस्कृति की स्थापना करने के लिए और उसकी विचारणा और प्रेरणाओं को हर घर में, जन–जन में स्थापित करने के लिए हम चलेंगे । हम और आप कदम से कदम मिलाकर सारे भारत–वर्ष में, सारे विश्व में इसलिए चलेंगे कि हमारे हिन्दू धर्म का जो मान था, उसकी जो गौरवमयी परम्परा थी, उसकी पुनः स्थापना की जा सके।

वाहनचालक

वाङ्मय प्रसार-प्रचार हेतु वाहनचालक चाहिए, जिन पर हैवी ड्राइविंग लाइसेन्स हो तथा पाँच वर्ष का अनुभव हो । समर्पित भाव वाले श्रमशील परिजन पूर्ण विवरण (नाम, पता, आयु, व्यवसाय, अनुभव, पारिवारिक उत्तरदायित्व) एवं निर्वाह राशि का उल्लेख करें ।

व्यवस्थापक
अखण्ड-ज्योति संस्थान
मथुरा

इसके लिए करना क्या होगा ? हम इसके स्तंभों की स्थापना करेंगे, प्रतीकों की, सिम्बलों की स्थापना करेंगे । प्रतीकों की स्थापना करने के बाद, सिम्बलों की स्थापना करने के बाद हम उसकी व्याख्या करना शुरू करेंगे, विवेचना करना शुरू करेंगे । निष्ठा और आस्था को जमाना शुरू करेंगे । यह है हमारे गायत्री और गायत्री यज्ञ अभियान का एक अंश, जिसको हमने शिखा–सूत्र आंदोलन के रूप में लिया है । इसको हमने गायत्री मंत्र और गायत्री यज्ञ के साथ जोड़कर रखा है । आपको इसके लिए तैयार होना चाहिए और सारे भारतवर्ष में और सारे विश्व में शिखा–सूत्र की स्थापना करनी चाहिए । इसके लिए हमें कमर कसकर खड़ा होना चाहिए ।

आज की बात समाप्त ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी–

विशिष्ट समय को समझें, अपनी रीति-नीति बदलें

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो, भाइयो ! यह समय बहुत ही संकटमय है । हर जगह असुरता छाई हुई है । इस समय ताड़का, कुंभकरण, सुबाहु-सभी अपना ताण्डव नृत्य दिखा रहे हैं । इस समय महान व्यक्तियों को महान कार्य करना है । हर युग में ऐसे व्यक्तियों ने विशेष काम किया है । बड़े आदमी ही बड़े काम कर सकते हैं । छोटे आदमी छोटे काम कर सकते हैं । बड़े काम करने के लिए आत्मा को जगाना पड़ता है, उसे गरम करना पड़ता है । छोटे आदमी बड़े काम नहीं कर सकते । हाथी जो काम कर सकता है, छोटे जीव-जन्तु उसे नहीं कर सकते । सामान्य जीव का केवल उद्देश्य होता है-पेट एवं प्रजनन, परन्तु असामान्य व्यक्ति का उद्देश्य यह नहीं होता है । यह मनुष्य, जो देवता बन सकता था, उसकी महत्वाकांक्षाओं ने उसे बरबाद कर दिया । वह मकड़ी के जाल में फँस गया, मिट्टी में मिल गया । वह सारे जीवन भर केवल दो ही काम करता रहता है-एक पेट तथा दूसरा प्रजनन, परन्तु असामान्य व्यक्ति ऐसा नहीं कर सकता है । उसके अन्दर एक हलचल होती है, एक हूक उठती है । समय की पुकार को वह अनसुनी नहीं कर सकता, संकटों से जूझने के लिए उठ खड़ा होता है ।

महर्षि विश्वामित्र राजा दशरथ के पास पहुँचे । उन्होंने कहा कि यह असामान्य समय है । इन बच्चों का यदि आप भविष्य बनाना चाहते हैं, इन्हें देवता बनाना चाहते हैं, तो इन्हें हमें सौंप दीजिए । दशरथ ने कहा-"जैसा आपका आदेश ।" विश्वामित्र उन बच्चों को ले गये तथा शुरू से अन्त तक उन बच्चों ने असामान्य काम किया । असामान्य समय में, असामान्य व्यक्ति असामान्य काम करता है । राम तथा लक्ष्मण ने असामान्य जीवन जिया । वे सिद्धान्तवादी तथा आदर्शवादी थे । ऐसे ही व्यक्ति समाज को नयी दिशा देते हैं तथा लोग उनके बनाए रास्ते पर चलते हैं । जब आवश्यकता पड़ी, तो हनुमान जी आ गये, सुग्रीव आ गये तथा अन्य हजारों रीछ-बन्दर आ गये । अगर रामचन्द्र जी अयोध्या में रहकर अन्य राजा-महाराजाओं जैसे मौज-मस्ती में डूबे रहते, तो कोई भी उनकी बात नहीं मानता । परन्तु उनके असामान्य व्यक्तित्व को देखकर हनुमान जी भी प्रभावित हो गए तथा असामान्य समय में असामान्य काम-जैसे समुद्र को लाँघना, सीता की खोज करना, पर्वत उठा लाना, राम-लक्ष्मण को कंधे पर बिठाकर ले जाना आदि न जाने कितने महान कार्य कर दिखाये ।

अगली पंक्ति में बैठने तथा काम करने के लिए मौका केवल असामान्य व्यक्तियों को मिलता है । वे ही असामान्य समय को पहचान पाते हैं । सामान्य आदमी को तो विशेष समय दिखाई ही नहीं पड़ता । गुरुगोविन्द सिंह जी को विशेष समय दिखाई पड़ा । वे असामान्य आदमी थे । उन्होंने देखा कि यह देश गुलामी की जंजीरों से कैसे छुटकारा पा सकता है । उन्होंने सोचा कि हर व्यक्ति अपने-अपने बच्चों को बहादुर सैनिकों की तरह बनाता और उनसे साहस का काम कराता, तो समाज में एक आदर्श उपस्थित होता । उन्होंने इस आवश्यकता को समझा और सोचा कि उसकी शुरुआत अपने आप से करनी चाहिए । पराये बच्चों को माँगने से पहले अपने बच्चों को इस काम में लगा देना उचित होगा । ऐसा सोचकर उन्होंने एक, दो, तीन, चार-इस तरह सभी बच्चों को बारी-बारी से उस आन्दोलन के लिए अर्पित कर दिया । इसका नतीजा यह हुआ कि चार लाख आदमियों ने गुलामी की जंजीरों से मुक्ति के लिए उस आन्दोलन में अपने आपको झोंक दिया । उन्होंने दम तब लिया जब आन्दोलन में गर्मी आ गयी ।

असामान्य बनें, अवसर को पहचानें

मित्रो, आजादी का आन्दोलन कहाँ से शुरू हुआ ? पंजाब से शुरू हुआ था । पंजाब के राजा रणजीत सिंह सबसे पहले राजा थे, जिन्होंने इस आजादी के आन्दोलन में अपना सहयोग सबसे पहले दिया था तथा आजादी की लड़ाई को गति प्रदान की थी । इसके बाद अन्य लोग आते गए । गुरुगोविन्द सिंह, रणजीत सिंह जैसे योद्धा धर्मतंत्र व राजतंत्र दोनों ओर से पहली पंक्ति में आगे आए । इसके बाद काम बढ़ता गया तथा उसमें लोग सहभागी बनते चले गए । इतिहास को देखते हैं तो मालूम पड़ता है कि असामान्य समय में लोगों को कुर्बानी देनी पड़ती है । यह काम जबरदस्ती से नहीं होता है, वरन् लोगों के भीतर एक हूक पैदा होती है और लोग स्वेच्छा से अपनी कुर्बानी देते हैं। गाँधी जी ने अपने आपको अर्पित किया उसके बाद लाखों आदमी उनके साथ आ गए । ७९ आदमियों को लेकर गाँधी जी जब साबरमती आश्रम से चल पड़े और 'नमक आन्दोलन' शुरू कर दिया, तो पीछे लाखों लोग आ गये । अगर गाँधी जी स्वयं बैठे रहते तथा दूसरों को कहते, तो शायद यह काम नहीं होता । गाँधी जी सभी आन्दोलनों में आगे रहे । गाँधी जी के जेल जाने के बाद सारे देश में आग लग गयी । स्वराज्य आन्दोलन कहाँ से शुरू हुआ ? अपने आप से शुरू हुआ । आपत्तिकाल की समस्या का हल केवल अपने आप से ही सम्भव है । ऐसा साहस भरा कार्य वे असामान्य आदमी ही कर पाते हैं, जो असामान्य समय को पहचानते हैं ।

मित्रो, असामान्य आदमी स्वयं आगे चलकर समाज को यह बतलाता है कि यह महत्वपूर्ण सिद्धान्त है । इसके लिए कुर्बानी देनी चाहिए, तो लोग आगे आकर कार्य करते हैं । ऐसा साहस असामान्य आदमी ही कर सकता है । व्यक्ति पहले इस आदमी को परखते हैं कि यह मजबूत आदमी है, सिद्धान्त का आदमी है और कसौटी पर खरा सिद्ध होने के पश्चात् उसके कहने पर आगे आते हैं । भगवान बुद्ध के जो सबसे प्यारे शिष्य थे, सबसे पहले उनको अपना घर-बार छोड़ने के लिए निवेदन किया गया था । अगर भगवान बुद्ध ने केवल लोगों को आशीर्वाद से धन व बच्चे दे दिए होते, तो सारे विश्व में जो धर्म-चक्र प्रवर्तन की क्रान्ति हुई, शायद वह न हुई होती ।

ऋषि क्या करते थे ? क्या वे माला घुमाते थे ? नहीं बेटे, वे माला नहीं घुमाते थे, वरन् वे सारे दिन समाज की सेवा किया करते थे । आज तो जो सबसे घटिया काम है, उसके लिए लोग आगे आते हैं । महान कार्य करने की किसी की भावना ही नहीं है । तपस्वी, संत, ऋषि जो सबसे छोटा काम करते थे सेवा का, अगर आप भी करने लगें, तो आपके जीवन में भी चमत्कार आ जाएगा । उन्होंने व्यक्ति की,

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

समाज की, देश और धर्म की, संस्कृति की सेवा की थी । लोगों के दु:ख, तकलीफों को दूर किया था । भगवान बुद्ध ने एशिया को ही नहीं बल्कि, सारी दुनिया को बदल दिया था । वे त्याग-तपस्या की मूर्ति थे । आप नाटक का मुखौटा पहन कर हनुमान जी नहीं बन सकते हैं । उसके लिए त्याग करना पड़ता है । ऋषियों के अन्दर सबसे महत्वपूर्ण एक बात होती है कि वे समय को पहचानते हैं । वे समय का परिचय प्राप्त कर अग्रिम पंक्ति में आ खड़े होते हैं तथा दूसरों को नसीहत देने से पहले अपने आपको इस योग्य बनाने का प्रयास करते हैं कि इसका प्रभाव समाज पर पड़ सके । इसके बाद ढेरों आदमी उस रास्ते पर चलना शुरू कर देते हैं ।

मित्रो, इंजन जब पटरी पर चलना शुरू कर देता है, तो डिब्बे अपने आप चलना शुरू कर देते हैं । बड़े आदमी, जिनका कि व्यक्तित्व होता है, जब वे आगे चलते हैं, तो उनके सहयोगी, अनुयायी स्वयं पीछे चलने लगते हैं । रामचन्द्र जी के सबसे प्यारे हनुमान तथा लक्ष्मण थे । उनसे उन्होंने कहा कि आपको आगे चलना चाहिए । वे चले । बुद्ध के भी जो सबसे प्रिय शिष्य थे, जब उनसे उन्होंने कहा कि आपको सबसे आगे चलना चाहिए, तो वे चले । युग-निर्माण योजना की भी वही कहानी है । हमारे गुरु ने हमसे कहा कि चलना होगा और हम चले । इसके बाद लाखों लोग चलने लगे । लक्ष्मण का अनुकरण भरत ने किया । भरत का अनुसरण शत्रुघ्न ने किया । इस प्रकार रामचन्द्र जी के अनुकरण का सिलसिला चल पड़ा । सारे के सारे लोग उनके अनुयायी हो गये । इसका परिणाम यह हुआ कि सारी प्रजा चल पड़ी । इसके फलस्वरूप रामराज्य की स्थापना हो गयी ।

मित्रो, दुनिया में एक ही तरीका है, जब असामान्य लोग असामान्य काम के लिए चलते हैं, तभी काम बनता है । इस दुनिया के अन्तर्गत जो छोटे-छोटे व्यक्ति थे, जिनके अन्दर प्राण था, जो जीवन्त थे, उन्होंने ही आगे कदम बढ़ाया तथा उनके पीछे लोग चले । हमें महाराणा प्रताप का जीवन दिखाई पड़ता है । महाराजा राणाप्रताप को क्या कमी थी ? उनके पास सभी चीजें थीं । वे अच्छे खाते-पीते व्यक्ति थे, पर जब उनके भीतर स्वराज्य की भावना जाग्रत हुई, उन्होंने राजपाट छोड़कर जंगल का रास्ता पकड़ लिया । वे अपने बीबी-बच्चों को कहीं भी रख देते थे । थे तो वे राजा ही, चाहते तो उनके खाने-पीने की व्यवस्था कहीं भी हो जाती, परन्तु वे बहुत तबाह हुए, जंगलों में भटकते रहे, घास की रोटी खाते रहे, लेकिन अपने लक्ष्य को नहीं छोड़ा । बंदा वैरागी जैसे लोग किस तरह तबाह हुए, आप नहीं जानते हैं । उन दिनों कुछ लोगों ने अपनी लड़कियों की शादी मुगल राजाओं के साथ कर दी थी । वे अपने को राजपूत कहते थे और अपने को बड़ा राजा कहते थे । उसी जमाने में बहुत से ऐसे भी लोग थे, जो उन आक्रान्ताओं से लोहा ले लिया करते थे तथा अपने को कुर्बान तक कर देने में कोई कमी नहीं रखते थे । उन्होंने अपने सारे परिवार के लोगों को इस आग में झोंक दिया, परन्तु अपनी शान को नहीं जाने दिया । वे असामान्य लोग थे, जिन्होंने परिस्थिति को समझा तथा मुकाबला किया ।

कहीं आप 'समझदार' तो नहीं ?

आप बहुत समझदार आदमी हैं ? आप अगर समझदार नहीं होते, तो इस जमाने में जब सारी दुनिया मरने की तैयारी में बैठी है, उस समय आप लोभ, मोह, वासना, तृष्णा का जीवन जी रहे हैं । इसके साथ ही यह सोच रहे हैं कि हमें यह फायदा कैसे हो जाए, वह फायदा हो जाए ? हमारे बच्चे कैसे ऑफीसर बन जाएँ ताकि अधिक पैसा कमा सकें । इस मामले में आप बहुत समझदार आदमी हैं, परन्तु आप सिद्धान्तों से, आदर्शों से, अक्ल से समझदार नहीं हैं । आप कैसे समझदार हैं ? कौए की तरह से समझदार हैं । वह हर मामले में चौकस होता है, चालाक होता है, उस्ताद होता है । उस्ताद होते हुए भी उसके हिस्से में खाने-पीने की जो चीजें होती हैं, उसको वह अपने लिए रखता है, परन्तु अन्य जीव उसे छीनकर खा लेते हैं, इसलिए वह नासमझ माना जाता है । सारे पक्षियों में बेकार माना जाता है । मित्रो, मैं यह कहना चाहता हूँ कि यह विशेष समय है, इसे पहचानने की कोशिश करें । अगर आपकी आँखें हैं तो देखें, अगर नहीं हैं तो मैं क्या कह सकता हूँ ? मैं कुछ नहीं कहना चाहता हूँ । आप अध्यात्मवादी हैं, तो आपको कुछ करना चाहिए । आपको सिद्धि मिली है, मुक्ति मिली है, तो आपको समाज की सेवा करनी चाहिए ।

आदमी को अध्यात्मवादी तब माना जा सकता है जब वह दूसरों के दु:ख-दर्द को बाँटकर उसे सुखी, प्रसन्न बनाने का प्रयत्न करे । ऐसे व्यक्ति को दूसरों के दुख-दर्द को दूर करने के लिए बलिदान होना पड़ता है । भजन करने से कोई कुछ मिलता है ? भजन करने वाले की नीयत क्या है, यह भगवान जानना चाहता है । आप पैसा कमाने के लिए, औलाद प्राप्त करने के लिए भजन करते हैं, तो आपके इस उद्देश्य को भी वह जानता है । आप भजनानन्दी हो सकते हैं, लेकिन व्यक्तिगत लाभ के लिए भजन करने वाले अध्यात्मवादी नहीं होते हैं । ऐसे व्यक्ति से अध्यात्मवादी की उपाधि हम छीन लेते हैं, जो व्यक्तिगत लाभ के लिए भजन करते हैं । उनको, जो अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए, सिद्धि के लिए भजन करते हैं, उनको मैं अध्यात्मवादी नहीं कह सकता हूँ । उनको मैं भौतिकवादी ही कहूँगा । ऐसे लोगों को ब्रह्मवर्चस का वह ब्रह्मतेज प्राप्त नहीं हो सकता है, जो लोकसेवी, संत, ऋषियों को मिलता रहा है । अत: आपको भी अपने आपको तपाना चाहिए । जप करना चाहिए, परन्तु उस शक्ति को, उस ऊर्जा को समाज के कष्ट के, दुख-दर्द के निवारण के लिए बाँट देना चाहिए, तभी आप संत, ऋषि कहला सकते हैं ।

मित्रो, ऐसा कौन है जो कन्या के सयानी हो जाने पर उसके लिए योग्य लड़का अर्थात् वर की तलाश न करे तथा उसकी शादी अपनी सामर्थ्य के अनुसार न करे । कोई भी व्यक्ति ऐसा निष्ठुर नहीं होता, जो अपने बच्चों के लिए कुछ न करे । हम आप लोगों को प्यार करते हैं तथा आपको हमेशा देने के लिए तैयार रहते हैं । हर सामर्थ्यवान का यह कर्तव्य होना चाहिए कि वह अपने से कम सामर्थ्यवान वाले व्यक्ति को प्यार दे । अगर हम एक-दूसरे को प्यार नहीं करते हैं, तो हमारा गायत्री परिवार, युगनिर्माण परिवार बनाना बेकार है । हमने हमेशा प्यार ही बाँटा है और चाहते हैं कि आप भी प्यार बाँटें । हम एक संत हैं तथा संत परम्परा के अनुसार हमारा नैतिक दायित्व है कि हम दूसरों की सहायता करें, उन्हें ऊँचा उठाएँ उनकी प्रगति के रास्ते खोल दें । हमें अपने समीपवर्ती लोगों, पड़ोसियों का ध्यान रखना चाहिए । अगर किसी को बुखार हो, तो हमें उसकी मदद करनी चाहिए और चिकित्सक के पास ले जाना चाहिए । मित्रो, इसी तरह हमें उस समय का भी ख्याल रखना चाहिए, जिसमें हम जी रहे हैं । उस समय में हमें आगे बढ़कर युग-समस्याओं को हल करना चाहिए ।

हमें दिखाई देता है भविष्य

मित्रो, यह आपत्तिकालीन समय है । मानव जाति आज संकट के एक कगार पर खड़ी है । ऐसे कगार पर खड़ी है कि

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

उसके किनारे अगर ढह गये तो वह औंधे मुँह सीधे खाई में चली जाएगी तथा मनुष्य का बहुत बड़ा अहित होगा । इस प्रकार मनुष्य का भविष्य अन्धकारमय है । ऐसी विषम परिस्थिति में असामान्य मनुष्यों को शांत नहीं बैठना है । यह आपत्तिकाल है । आपको तो दिखाई नहीं पड़ रहा है, परन्तु हमें दिखाई पड़ रहा है । ऐसे व्यक्ति जिनकी आँखों में माइक्रोस्कोप फिट होता है, सूक्ष्म चीजें भी देख लेते हैं । हमें भी दिखाई पड़ रहा है कि भविष्य में अगले दिनों क्या होने वाला है । बहुत भयानक स्थिति है । मनुष्य एक ऐसे कगार पर खड़ा है, जहाँ से गिरने पर वह खाई में जा सकता है तथा विनाश की स्थिति आ सकती है । दूसरी ओर अच्छा भी हो सकता है, परन्तु इसकी सम्भावना कम है ।

यह आपत्तिकालीन समय है । इस समय वैज्ञानिक, बुद्धिजीवी तथा अर्थशास्त्री-तीनों मिलकर यानी अर्थ, विज्ञान और बुद्धि तीनों ने मिलकर ऐसी रचना की है जिसे रावण, कुंभकरण एवं मेघनाद की संज्ञा दी जा सकती है । बुद्धिवाद में ऐसी जकड़न आ गयी है कि सिद्धान्तवाद, आदर्शवाद पूर्णतः समाप्त हो गया है । आज आदमी का हृदय समाप्त हो गया है । आदमी आज जानवर हो गया है । जानवर तो भी मर्यादा में रहता है, परन्तु आदमी आज नर-पिशाच होता चला जा रहा है । उसे मर्यादा का भी ध्यान नहीं है । उसकी नीयत, ईमान को खोलकर देखें, तो आपको मालूम पड़ेगा कि मनुष्य ने न जाने किसका कलेवर पहन रखा है । उसके भीतर न जाने साँप बैठा है, न जाने राक्षस बैठा है, यह पता ही नहीं चलता है । आदमी के भीतर अगर आप झाँकें, तो अन्दर बैठे राक्षस को देखकर आपको नफरत हो जाएगी । आज चारों तरफ नफरत की दुनिया दिखाई पड़ रही है । विज्ञान, बुद्धि और अर्थ-तीनों ने मिलकर शालीनता की सीता का अपहरण कर लिया है । राम-लक्ष्मण रूपी धर्म-अध्यात्म-दोनों बिलखते हुए मारे-मारे फिर रहे हैं । इन तीनों ने न जाने कैसा-कैसा षड्यंत्र रच दिया है । आदमी प्यार को, आदर्श को, शालीनता को भुला बैठा है और मनुष्य कलेवर में पिशाच बन बैठा है ।

साथियो, भूत-पलीत का नाम आपने सुना है न, वह भी उतनी हानि नहीं पहुँचा रहा है, क्योंकि उसके हाथ-पैर नहीं हैं । जिसके हाथ-पाँव न हों, भला वह क्या कर सकता है ? वह चल-फिर नहीं सकता है, दौड़ नहीं सकता है । अतः उससे डर नहीं है, लेकिन जिन्दा आदमी का भूत इनसान को परेशान कर रहा है, क्योंकि उसके पास हाथ भी हैं, पाँव भी हैं और अक्ल भी है । उसके पास दूसरी चीजें भी हैं । उसके पास ताकत है । आदमी का भूत अगर किसी पर हावी होगा, तो जिन्न, भूत, पिशाच, राक्षस सभी एक कोने पर रखे रह जाएँगे, आदमी का भूत अगर सवार हो जाएगा, तो वह मुर्दा भूतों से ज्यादा खतरनाक साबित होगा । हो भी यही रहा है । वास्तव में आज आदमी के भीतर की शालीनता समाप्त हो गयी है । वह राक्षस एवं पिशाच बन गया है ।

आज परिस्थितियाँ इस तरह बनती जा रही हैं कि आदमी मरेगा, तबाह हो जाएगा । आज जनसंख्या इस कदर बढ़ रही है कि उसका क्या कहना ? अगर यह इसी हिसाब से बढ़ती रही, तो एटम बम की कोई आवश्यकता नहीं होगी । आदमी भूख से, प्यास से तड़प-तड़प कर मर जाएगा । जिस तरह बंगाल में अकाल पड़ा था और उस समय भूख से तड़प-तड़प कर हजारों लोग मर गये थे । जापान के नागासाकी शहर पर डाले गये बम से लोग तबाह हो गये थे । इसी तरह जनसंख्या बढ़ाने के फेर में आदमी लगा रहा, तो उसका विनाश सुनिश्चित है । कितने ही लोग ज्योतिषियों को हाथ दिखाते हैं और यह कहते हैं कि देखना हमारे हाथ में बेटा है या नहीं ? अरे ! तेरे हाथ में तो सत्यानाश लिखा है । कई लोग आकर कहते हैं कि गुरुजी मेरे औलाद नहीं है । उनसे मैं यही कहता हूँ कि बेटा अभी तो भी तू शान्ति से रह रहा है, अन्यथा बेटा-बेटी तेरी चमड़ी नोच डालेंगे । अरे तू समझता नहीं, अगर इसी तरह से आबादी बढ़ती रही, तो पानी की एक-एक बूँद के लिए लोग तरस जाएँगे । सड़क पर चलने के लिए रास्ता नहीं मिलेगा । आदमी परेशान हो जाएगा । आप समझते नहीं, तबाही की दुनिया आ रही है । आपत्तिकाल का समय आ रहा है । अगर किसी वैज्ञानिक के मन में खुराफात आ जाए और वह एटमी हथियारों के भण्डार में माचिस की एक तीली सुलगा दे, तो सारा विश्व जलकर तहस-नहस हो जाएगा ।

मित्रो, परिवार में, खानदान में जितने अधिक सदस्य बढ़ेंगे, उतनी ही मनुष्यों को परेशानियाँ आएँगी, वह परेशान होगा । किसी आदमी के परिवार में अट्ठाइस सदस्य हैं अर्थात् २८ आदमी एक परिवार में हैं । उनमें आपस में प्रेम, सहकार है नहीं, चूहे-बिल्ली की तरह से रह रहे हैं । चूहे बिल्ली से डरते हैं, बिल्ली चूहे से डरती है । ऐसे परिवार में आदमी की स्थिति ठीक उसी प्रकार है ! आज के जमाने में जिसका जितना बड़ा परिवार है, वह उतना ही अधिक अशान्त है । विदेशों में बच्चों के बड़े होते ही माँ-बाप उन्हें अलग कर देते हैं और कहते हैं कि जाओ अपनी अलग व्यवस्था बनाओ । योरोप इस मामले में सही है, जो इस डाकू को पहले से ही अलग कर देता है । उसे गले लगाने से क्या फायदा ? वहाँ लोग औलाद को घर से निकाल देते हैं और कहते हैं कि चल, यहाँ तेरा कोई काम नहीं है । कारण वहाँ परिवार में प्रेम-मोहब्बत, सहकार नहीं है । बेटे के भीतर यह भावना नहीं है कि जब हमारा बाप बूढ़ा होगा, तो हमें उसकी सेवा करनी है, व्यवस्था बनानी है । बहिन-भाई में प्रेम नहीं है । बहिन की शादी से पहले भाई की जो बहू आती है, वह नर-पिशाचिनी यह कहती है कि हमें ६५० रुपये मिलते हैं । इसे घर से निकाल दीजिए, फिर हम दोनों होटल में खाना खाएँगे, क्लबों में डान्स करेंगे और सिनेमा देखेंगे ।

यह तो योरोप की स्थिति है । अपने यहाँ भी अगर आपके पास पन्द्रह हजार रुपये हैं तथा बच्चे हैं-पाँच, तो हर एक के हिस्से में तीन हजार रुपये आते हैं । उसके लिए भी मारकाट है । उसे आप अगर एक को पढ़ाने में, गजेटेड ऑफीसर बनाने में खर्च कर देंगे, तो बाकी बच्चों के गले में क्या फाँसी लगा देंगे या मार देंगे ? या फिर उसे मैट्रिक तक पढ़ाने के बाद घर से निकालिए तथा यह कहिए कि निकल घर से, अपने आप पढ़ तथा अपने पैरों पर खड़ा हो ! बेटे, आज की परिस्थितियों में आपको दुश्मन से भी होशियार रहना चाहिए तथा बड़े बेटे से भी होशियार रहना चाहिए । दुश्मनी के मामले में बड़ा बेटा, जिसके लिए आपने सब कुछ दाँव पर लगा दिया, उसमें तथा साँप-बिच्छू में कोई फर्क नहीं पड़ता है । आज इस बारे में हर आदमी को यह विचार करना चाहिए कि कुटुम्ब बढ़ाने में हमें कोई फायदा नहीं है, वरन् इसके द्वारा केवल बरबादी ही बरबादी है ! जापान इस मामले में काफी होशियार है । यदि वहाँ मियाँ-बीबी मिलकर नौ सौ रुपये भी कमाते हैं, तो कहते हैं कि हम दोनों सिनेमा देखेंगे, होटलों में खाएँगे, मस्ती में रहेंगे । बच्चों से क्या फायदा ? उन्हें पढ़ाने में, योग्य बनाने में, उनकी शादी-ब्याह करने में काफी खर्च होगा । इसके अलावा हमारी मौज-मस्ती में भी

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

वे विघ्न डालेंगे । जापानी इस मामले में विचार करते हैं । वे चाहते हैं कि बच्चे न हों ।

बेटे ! यह क्या होने जा रहा है ? यह संयुक्त प्रणाली का सत्यानाश होने जा रहा है । आज सामाजिक सहयोग-सहकार का वातावरण समाप्त होता जा रहा है । आदमी इतना स्वार्थी, लोभी होता जा रहा है, जिसे देखकर लगता है कि मानवजाति की सारी की सारी श्रेष्ठ परम्पराएँ नष्ट होने वाली हैं । आदमी को दुश्मनों से डर लगे या न लगे, परन्तु अपने कुटुम्बीजनों से काफी भयभीत रहता है कि न जाने वे कब किस चक्कर में डाल सकते हैं। बरबाद कर सकते हैं । आज ऐसी ही स्थिति बन रही है । बुढ़ापे में व्यक्ति फूट-फूटकर रोयेगा, कलपेगा कि हाय रे ! औलादों ने, सम्बन्धियों ने हमें लूट लिया, बरबाद कर दिया । मित्रो, यह जमाना आता हुआ चला जा रहा है । आदमी मरे या जिये, यह मैं नहीं कहता, परन्तु आदमी के भीतर जो आत्मीयता थी, मनुष्यता थी, वह नष्ट हो जाएगी, बढ़ती हुई जनसंख्या की वजह से, बढ़ते हुए विज्ञान की वजह से, बढ़ती हुई अक्ल की भरमार की वजह से, आदमी की स्वार्थपरता की वजह से । हम और आप ऐसे ही बुरे समय में रह रहे हैं ।

अगर इसी तरह की स्थिति बढ़ती चली गयी, तो हमारा और आपका भविष्य बहुत अन्धकारमय होता चला जाएगा । राजनीतिज्ञ जिस रास्ते पर आपको ले जा रहे हैं, वह हमें अन्धकारमय लग रहा है । हमारे विद्वान आपको जिस रास्ते पर ले जा रहे हैं, वह हमें अन्धकारमय लग रहा है । संत-महात्माओं की प्रवृत्ति और विचारों को देखकर तो हमें रोना आता है । उनके क्रिया-कलापों को देखकर मैं काँप जाता हूँ और सोचता हूँ, हे-भगवान ! ये क्या कर रहे हैं ? हम भगवान से प्रार्थना करते हैं कि हे भगवान ! अगर इस संसार से कोई वर्ग नष्ट होना हो, तो सबसे पहले बाबाजियों का वर्ग नष्ट होना चाहिए । आप कहेंगे कि गुरुजी आप ऐसा क्यों कह रहे हैं ? बेटे, यह इसलिए कह रहा हूँ कि कतिपय संत-महात्मा अपने कर्तव्यों, उत्तरदायित्वों से भटक गये हैं ! मनुष्य में जो मानवता का शिक्षण भरा पड़ा रहा था, वह मरती चली जा रही है । आदमी अपनी महानता के जिस बलबूते पर इस सृष्टि का मुकुटमणि बना था, वह गिरते-गिरते समाप्त होता चला जा रहा है ।

गुरुजी ! फिर क्या होगा ? मित्रो, इस दुनिया में मक्खी-मच्छर रहते हैं, तो क्या इनसे दुनिया की कोई शान है । कीड़े-मकोड़े, टिड्डी, खटमल भी दुनिया में रहते हैं, पर उनसे कुछ लाभ है क्या ? मैं नहीं जानता कि क्या लाभ है, लेकिन अगर आदमी भी इसी प्रकार से ज्यादा पैदा होंगे, तो निश्चय ही दुनिया में तबाही आयेगी । लोग परेशान होंगे । आज जो दुनिया में मनुष्यता समाप्त हो रही है, आदमी के अन्दर जो श्रेष्ठ माद्दा था, जो महानता थी, आदमी के भीतर जो देवत्व था, आज वह समाप्त होता चला जा रहा है । आदमी के भीतर जो भगवान बैठा था, वह धूमिल होता चला जा रहा है । भगवान माने आदर्श, आदर्श माने श्रेष्ठ विचार । मित्रो, हमें जिस भगवान की आवश्यकता है, जो हमें ऊँचा उठाता है, उसका नाम है-सिद्धान्त, आदर्श । उसका नाम है-मानवीय गरिमा, जो समाप्त होती चली जा रही है । ऐसे अन्धकार को देखकर हमें दुख होता है कि इसी प्रकार की यदि स्थिति रही, तो आगे आदमी, आदमी की जान का ग्राहक बन जाएगा । उसके जीवन में तबाही आएगी ।

अब अगले दिनों यह होगा

मित्रो उस समय आदमी-आदमी, का खून पियेगा । आदमी, आदमी का मांस खाएगा । आदमी-आदमी को गिराएगा । आदमी, आदमी को दुख देगा, परेशान करेगा । आदमी, आदमी का प्राण पियेगा । मर्द औरत का प्राण पियेगा और औरत, मर्द का । भाई, भाई का प्राण पियेगा । भाई, बहिन का प्राण पियेगा । बेटा, बाप का और बाप, बेटे का प्राण पियेगा । साथ रहकर भी लोग एक-दूसरे का प्राण पियेंगे । यह आपत्तिकाल का सपना जो हमने आपको दिखाया है, वह गलत नहीं है । इस समय पैसा, अक्ल, रोटी बढ़ेगी, परन्तु यही अक्ल, पैसा और रोटी अपने को खायेगी । इनसान परेशान हो जाएगा । अगले दिनों विश्वविद्यालय बहुत बनने वाले हैं, कारखाने बहुत बनने वाले हैं, परन्तु हम आपको सावधान कर रहे हैं कि आने वाले समय में हर चीज की कीमत बढ़ने वाली है । हर चीज हमें मुश्किल से प्राप्त होगी । लोहे जैसी चीज का भी मूल्य बढ़ने वाला है । लोहे का मूल्य सोने के बराबर होगा । मुसीबत ही मुसीबत आने वाली है, यदि अभी से हम सचेत नहीं हुए तो ।

इस आपत्तिकालीन समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है-आदमी का आध्यात्मिकता से जुड़ना । आध्यात्मिक पारस से जो जुड़े हैं, वे पारस बन गये । विवेकानन्द, दयानन्द पारस बन गये । लोहे को पारस से छुलाने पर वह सोना बनता है, कहा नहीं जा सकता, परन्तु यह एक सच्चाई है कि आध्यात्मिक पारस से जुड़ने पर ही लोहे जैसा व्यक्ति सोना यानी प्राणवान, तेजवान, गुणवान, समृद्धिवान बन जाता है । उनकी अक्ल, आदर्श, सिद्धान्त महान होते हैं । वे श्रेष्ठ व महान बन जाते हैं ।

मित्रो, अमृत के बारे में हमें यह पता नहीं कि कोई मरने के समय पी ले तो वह बच सकता है । ऐसा तो हमने सुना नहीं है । यदि ऐसा अमृत हुआ होता, तो रामचन्द्र जी को मरने की आवश्यकता नहीं पड़ती । नरसिंह भगवान को मरने की आवश्यकता नहीं पड़ती । बहुत सारे भगवान हुए थे, उनको भी मरने की आवश्यकता नहीं होती । इसलिए मैं सोचता हूँ कि ऐसा अमृत कोई नहीं है । नहीं महाराज जी, शास्त्रों में, पुराणों में अमृत के बारे में बहुत लिखा है । बेटे, उसी के बारे में मैं कह रहा हूँ, जिसे पीकर लोग अजर-अमर हो जाते हैं-जैसे राजा हरिश्चन्द्र । गाँधी जी ने एक ड्रामा देखा और वे हरिश्चन्द्र हो गये । गाँधी जी मर गये ? नहीं बेटे, गाँधी जी कैसे मर सकते हैं । ईसामसीह मर गये ? नहीं बेटे, वे कैसे मर सकते हैं । भगवान बुद्ध मर गये ? नहीं, वे नहीं मरे । वे अमर हो गये । कैसे व्यक्ति अमर होते हैं ? ऐसे व्यक्ति जिनके अन्दर शालीनता पैदा हो जाती है । आदर्श और सिद्धान्त जिनके रोम-रोम में समा जाता है, वही व्यक्ति अमर हो जाते हैं ।

आदमी के अन्दर अगर शालीनता न हो, तो वह नर-पिशाच बन जाता है । जिस आदमी के मुँह से पिशाच अट्टहास करता हुआ चला जाता है, अगर उसे उसी तरह बढ़ने दिया जाए, तो वह बहुत खतरनाक हो सकता है । आज मनुष्य ने न जाने क्या-क्या बना लिया है । पहले हवाई जहाज ६०० कि. मी. प्रति घण्टे की रफ्तार से उड़ता था । आदमी ने इस दूरी को समाप्त कर दिया है । चन्द्रमा पर जो रॉकेट भेजा गया था, उसकी गति छह हजार से ७ हजार मील थी । वह सारी पृथ्वी पर ढाई घण्टे में घूम जाता है । आज तो हर चीज की चाल तेज हो रही है । विनाश की भी चाल तेज हो रही है ।

पहचानिए तो कि आप कौन हैं ?

यह समय आपत्तिकाल का है, जो एक ओर सुन्दर सपने सँजोये हुए है, तो दूसरी तरफ विनाश की लीला भी

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

मुँहबाए खड़ी दिखाई पड़ रही है । आप दोनों के बीच में खड़े हैं । आपको यह दिखाई नहीं पड़ता है । आप कौन हैं ? आप जाग्रत आत्मा हैं । हमने जो हार युगदेवता के लिए बनाया है, वह भगवान के इस बगीचे से अच्छे से अच्छे फूलों को लेकर बनाया है, ताकि अच्छी से अच्छी माला युगदेवता के चरणों में चढ़ाई जा सके । आपको हमने बड़ी मुश्किल से ढूँढ़ा है । आपने ढूँढ़ा है हमें ? नहीं बेटे, हमने आपको ढूँढ़ा है । हमने अच्छे-अच्छे रत्नों को ढूँढ़ा है । हमने अखण्ड-ज्योति आपके पास भेजी थी । आपने मँगायी थी? नहीं, हमने भेजी थी । बेटे, जिस तरह राम-लक्ष्मण को लेने विश्वामित्र दशरथ के पास गये थे, वैसे ही हमने आपके बाप के पास जाकर आपको ढूँढ़ा है । आप समझते नहीं हैं कि हमने कैसे आपको ढूँढ़ा है । रामकृष्ण परमहंस विवेकानन्द के पास गये थे ? वे कहते थे कि तू क्या करेगा-नौकरी करेगा ? अरे हमारा काम हर्ज हो रहा है और तू नौकरी के फेर में पड़ा है । हम लोगों को मुक्त करने आये हैं । हमारा काम अलग है । हमारा 'जॉब' अलग है । हम देश, समाज, राष्ट्र को दिशा देने आये हैं । तू नौकरी करने के लिए नहीं पैदा हुआ है । उनको रामकृष्ण परमहंस ने मजबूर किया और वे चल पड़े ।

बेटे, तू भी नहीं समझ रहा है । हम भी तुझे मजबूर कर रहे हैं । हमारे पास तू आता रहता है, परन्तु मनोकामनाएँ लेकर आता है । अगर ऊँची तमन्ना लेकर आया होता, तो तू धन्य हो जाता । हम जब अपने गुरु के पास जाते हैं, तो हमारी तमन्नाएँ ऊँची रहती हैं तथा हम महान बन जाते हैं । वहाँ से हम महान बनकर आते हैं । हम उनसे कहते रहते हैं कि गुरुदेव हमारा जीवन कुछ और होना चाहिए । हमारे ब्राह्मण तथा संत जीवन में कुछ कमी रह गयी है । उसमें कुछ और प्रखरता, तेजस्विता आनी चाहिए । तलवार पर धार ली जाती है तो वह ज्यादा मूल्यवान बन जाती है । हम चाहते हैं कि हमारे ब्राह्मण तथा संत के जीवन में भी कुछ धार आवे ताकि हम और काम कर सकें । जब कभी हिमालय जाता हूँ, तो हमारे और हमारे गुरु के बीच बातचीत होती है, लड़ाई-झगड़ा होता है । हम केवल एक ही बात कहते हैं कि हमारे भीतर कसक है, जान है, दम है । गुरुवर हमसे आप और अधिक काम कराइये, काम लीजिए । हमारी धार को तेज कर दीजिए, ताकि हम अधिक काम कर सकें । समाज की सेवा कर सकें । यही हम दोनों में लड़ाई-झगड़ा होता रहता है । वे कहते हैं कि तू तो बच्चा है और हम कहते हैं कि हम बच्चे नहीं बड़े हैं, आप हमें लड़ाई में भेजिए फिर देखिए कि हम अपनी पैनी तलवार से क्या करके आते हैं ।

परन्तु हमें दुख है कि आपकी और हमारी लड़ाई कुछ घटिया किस्म की होती है । मैं आपको यह बतलाना नहीं चाहता, किन्तु हम जब आपके ख्यालों को, ख्वाबों को पढ़ते हैं तथा देखते हैं, तो हमारा अन्तःकरण रो पड़ता है । तब हम यह चाहते हैं कि आपकी सहायता करनी चाहिए । मित्रो, मुझे आदमी की सहायता करनी चाहिए, परन्तु आप जब सहायता माँगते हैं, तो हमें दुख होता है । अब आप बड़े हो गये हैं, तो आपको यह कहना चाहिए कि पिताजी ! हम आपकी सहायता करेंगे, परन्तु आप कहते हैं कि पिताजी हम बच्चे हैं, आप हमारी सहायता कीजिए । अभी आप दो सौ मन लेकर चल रहे थे, अब हमारा भी ढाई सौ मन वजन ले लीजिए । ठीक है बेटे, हम तो लेकर चल देंगे । हम तो देश, समाज, राष्ट्र, धर्म, संस्कृति का वजन लेकर चल रहे हैं, तेरा भी लेकर चलेंगे । हमारे अन्दर क्षमता है कि इतना वजन लेकर चल सकें, परन्तु बेटे, इससे बनता क्या है ? क्या आपको संतोष हो जाएगा ?

मित्रो, इस शिविर में आप को बुलाने के पीछे हमारा विशेष उद्देश्य सन्निहित था । आप कहते हैं कि हमें कुण्डलिनी जागरण सिखा दीजिए, ब्रह्मवर्चस साधना सिखा दीजिए । बेटे यह मत कह, बल्कि यह कह कि हमें बाजीगरी सिखा दीजिए । मित्रो, बाजीगरी में व्यक्तित्व-निर्माण की कोई आवश्यकता नहीं पड़ती । केवल बाहरी क्रियाकलापों से, आडम्बरों से वह पूरी हो जाती है । किसान को मेहनत करनी पड़ती है, पसीना बहाना पड़ता है, तब फसल मिलती है, लेकिन बाजीगर बिना किसी मेहनत के केवल जमीन पर से मिट्टी उठाता है तथा हाथों की हेराफेरी करके पैसा कमा लेता है । इससे क्या मतलब है ? हम अच्छी तरह से जानते हैं कि पूजा से, भजन से, सिद्धियों से तेरा क्या मकसद है । साधना से क्या मकसद है । यह मैं सब अच्छी तरह जानता हूँ । तू जो देखना चाहता है, वह तो मैं इसी तरह दिखा सकता हूँ । आपको पाने की लालसा कम है, सो दिखाने से काम चल सकता है । आप लोग सिद्धियों के नाम पर जो पाना चाहते हैं, उन चीजों को मैं दिखा दूँ, तो आपको संतोष हो जाएगा । वह चीजें जो आपको मिलेंगी, तो आप बर्दाश्त नहीं कर सकेंगे । आप छोड़कर भाग जाएँगे ।

साथियो, अगर असली भगवान आपको दिखा दूँ एवं असली भगवान से साक्षात्कार करा दूँ, तो नारदजी की तरह से आपको अविवाहित रहकर काम करना पड़ेगा । बुद्ध की तरह से बीबी-बच्चों को छोड़कर जाना पड़ेगा । ऐसा भगवान आपको दिखा दूँ जो बुद्ध की तरीके से हाथ घसीटते हुए ले जाए । शंकराचार्य की तरह माँ को छोड़कर ले जाए । ऐसा भगवान दिखा दूँ जो चाणक्य की तरह से वनवास में रहने के लिए मजबूर कर दे । ऐसा भगवान आपको दिखा दूँ जो समर्थ गुरु रामदास की तरह से हाथ पकड़ कर खींचता हुआ चला जाए । आप कहेंगे कि ऐसा भगवान हमें नहीं चाहिए । गोली मारिए ऐसे भगवान को, हमें तो तमाशा वाला भगवान चाहिए जो हनुमान बनकर दिख जाए, प्रकाश बनकर दिख जाए । अच्छा तो बच्चों के भगवान चाहिए आपको । आपको मैस्मेरिज्म चाहिए ।

गुरुजी ! आपको समाधि लगाना आता है । हाँ बेटे आता है और तेरी भी समाधि लगा देंगे तथा पाँच मिनट में ध्यान लगा देंगे, ऐसा मैजिक हमें आता है । हम तुझे दिखा सकते हैं । हिप्नोटिज्म करके हम तुमको न जाने क्या-क्या दिखा देंगे । तू कहेगा कि हमें खजाने दिखा दीजिए, तो दिखा देंगे । तू कहेगा कि हमे सोने से भरा हुआ एक टोकरा दिखा दीजिए, तो हम तुझे दिखा देंगे । सोने की तिजोरी हमें दिला दीजिए, तो दिला देंगे । क्यों महाराज जी ! वह हमारे पास रहेगा कि नहीं ? नहीं, बेटे जब तक तू हमारे कब्जे में है, तब तक तो रहेगा, उसके बाद वह नहीं रहेगा । जब तक हमारा असर रहेगा, वह भी रहेगा । इसका क्या मतलब है महाराज ? यही मतलब है कि बच्चों जैसा बचकाना मनोरंजन हो जाएगा, बाकी कुछ नहीं । वह तबियत बहलाने का केवल माध्यम होगा । अध्यात्म से इसका कुछ भी लेना-देना नहीं है ।

साथियो, मेरा उद्देश्य यह है कि जो असली ब्रह्मवर्चस का स्रोत है, उसे आप जानें । हमने इसलिए आपको बुलाया है कि यह विशेष समय है तथा आप महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं, इसलिए आपको बताने के लिए बुलाया है । हमारे गुरु ने भी हमें दिखा दिया था कि हम विशेष व्यक्ति हैं, जाग्रत आत्मा हैं । उन्होंने कहा कि तुम साधारण आदमी नहीं हो, तुझे असाधारण कार्य करना है । हमने यह महसूस कर लिया है कि हम एक

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

साधारण आदमी की तरह नहीं रह सकते हैं । हमने घरवालों को कह दिया था कि हमने आपके यहाँ जन्म अवश्य ले लिया, लेकिन मैं आपकी बिरादरी का नहीं हूँ तथा आपकी तरह नहीं रह सकता । हमारा काम दूसरा है । आपकी समझ एवं सलाह के मुताबिक मैं नहीं चल सकता । हमें अपनी समझ के मुताबिक चलना होगा, हमारे रास्ते अलग होंगे ! अपनी अक्ल के मुताबिक चलना ही सम्भव हो सकेगा । मैं चाहता था कि ऐसा सौभाग्य आपको भी मिल जाता । काश ! मैं भी आपको दिखा पाता कि आप कौन हैं ? आप एक सामान्य आदमी नहीं हैं, वरन् असामान्य आदमी हैं । मैं चाहता था कि इस युगपरिवर्तन की संधिवेला में आप भी महत्वपूर्ण काम कर सके होते, तो मजा आ जाता ।

मेरे गुरु जितने सामर्थ्यवान हैं, उतना तो मैं नहीं हूँ । उन्होंने हमारे पिछले जन्मों को दिखा दिया था, लेकिन हम तो नहीं दिखा सकते कि आप पिछले जन्मों में क्या थे । आप जिस हैसियत का जीवन जी रहे हैं, वह आपके मुताबिक नहीं है, यह हम जरूर बता सकते हैं । आपकी महत्वाकांक्षाएँ व्यक्तिगत जीवन के लिए नहीं होनी चाहिए । अगर कहीं रेलगाड़ी का एक्सीडेण्ट हो जाए तथा हजारों लोग कराह रहे हों, तो डॉक्टरों का यह कहना मुनासिब नहीं होगा कि हम सो रहे हैं तथा हमें समय नहीं है । आपको उन घायलों के लिए एक रात जागना चाहिए । एक रात जागने से आप मर नहीं सकते हैं । आपको इस जिम्मेदारी को समझना चाहिए तथा इसके लिए काम करना चाहिए ।

बचा हुआ जीवन कहीं यों ही व्यर्थ न निकल जाए

मित्रो, हम आपसे यही कह रहे हैं कि आपके महत्वपूर्ण जीवन के एक-एक दिन यों ही समाप्त होते जा रहे हैं, उसमें कुसंस्कार भरते जा रहे हैं । आपको यह समझना चाहिए तथा बचे हुए जीवन को समाज के लिए अर्पित करना चाहिए । लोग सोचते हैं कि बुढ़ापे में काम करेंगे, पर यह सम्भव नहीं है । उस समय कुसंस्कार कुछ करने नहीं देता है । हम बार-बार यही कह रहे हैं कि यह विशेष समय है । इसमें आपको कुछ करना है । हमने शिविर में आपको इसी उद्देश्य से बुलाया है । अगर आप समझ सके, तो आपका जीवन धन्य हो जाएगा । अगर आनाकानी करते रहे, तो फिर मैं क्या कर सकता हूँ । विवेकानन्द इसी प्रकार आनाकानी कर रहे थे, तब रामकृष्ण परमहंस ने उनके कंधे पर अपना पैर रखा । विवेकानन्द चकमका गये । रामकृष्ण ने कहा कि अब हम मरने जा रहे हैं । हमने तुम्हें अपना सारा तप दे दिया है । अब तुम्हें तप करने की आवश्यकता नहीं है । ऐसी शक्ति आज भी विद्यमान है, जो आपको प्राप्त हो सकती है, पर आपको तो बाजीगरी पसन्द है, आप मिट्टी से सोना बनाना चाहते हैं । ब्रह्मवर्चस की साधना से गलना नहीं चाहते, तो हम क्या करें ।

हमारे गुरुजी ने हमें बुलाया एवं शक्ति प्रदान की । हमने भी आपको एक महत्वपूर्ण उद्देश्य हेतु यहाँ शिविर में बुलाया, ताकि आप आपत्तिकाल के समय को समझ सकें और आगे आकर कुछ करने को तैयार हो जाते, तो यह शिविर धन्य हो जाता और आप भी धन्य बन जाते । हनुमान जी ने रामचन्द्र जी के लिए अपने आपको झोंका, तो वे सारी की सारी चीजें जो एक संत, तपस्वी को मिलनी चाहिए, वह हनुमान जी को प्राप्त हो गयीं । हमारे बारे में भी यही बात है । हमने कितना तप किया, यह आप नहीं जानते हैं । हम चार घण्टे केवल दूसरे काम में खर्च करते हैं, बाकी समय भगवान के कार्य में खर्च करते हैं । हमने अपने आपको एक समर्थ सत्ता के साथ जोड़ दिया है । हम उनका काम करते हैं और वे हमारा काम करते हैं । हम दोनों आपस में गुँथे हुए हैं । मैं चाहता था कि हमारा और आपका सम्बन्ध भी हमारे गुरु की तरह होना चाहिए । आजकल हम जब साधना करते हैं, तो गुरु का चित्र हमारे सामने होता है । हम चाहते हैं कि हम दोनों घुल-मिल जाएँ । हम भजन तो नहीं करते हैं, परन्तु हमारा मन केवल एक ही भजन में रमता है और वह है हम और हमारा गुरु । हम चाहते थे कि आप और हम भी उसी तरह घुल-मिल जाते, तो कितना अच्छा होता । बिजली के निगेटिव और पॉजिटिव तार जब एक हो जाते हैं, तो विद्युत आ जाती है-शक्ति आ जाती है । दोस्ती के बिना आदान-प्रदान की परम्परा कैसे शुरू हो जाएगी ? गुरु-शिष्य के प्रेम के बिना आदान-प्रदान कैसे शुरू हो जाएगा ? मैं यह चाहता था कि इस शिविर के अंत तक आप एवं हम जरा नजदीक आ जाते तथा आपस में घुलमिल जाते, तो मजा आ जाता ।

मित्रो, हमारा एवं हमारे गुरु का मिलना बड़ा ही महत्वपूर्ण रहा । हमारे गुरु की आकांक्षा-कामना जो भी हमारे प्रति रही होगी, हमने उसे पूरा करने का पूरा-पूरा प्रयास किया है । जब हम उन दोनों दिनों की अर्थात् गुरु से जुड़ने से पूर्व एवं बाद के दिनों की समीक्षा करते हैं और देखते हैं, तो पाते हैं कि गुरु के आदेश पर जो जीवन हमने जीने का प्रयास किया है, वह ज्यादा फायदेमंद रहा है, लाभ का रहा है । अंधे-लँगड़े की जोड़ी का अपना महत्व है । अंधे ने चलकर तथा लँगड़े ने देखकर सारा का सारा काम पूरा किया है । अंधे ने रास्ता तय किया तथा लँगड़े ने रास्ता दिखाया । मित्रो, आप एवं हम मिलकर अगर इस प्रकार कर पाते, तो कितना अच्छा होता । हम आपका सहयोग करते और आप हमारा सहयोग करते, तो मजा आ जाता । आप तो यह कहते हैं कि गुरुजी आप ही हमारा सहयोग कीजिए । बेटे, यही बात आपके काम की नहीं है । आप हमेशा स्वार्थ की बातें कहते हैं । हम आपको आशीर्वाद दें, परन्तु आप कुछ न दें, तो फिर आपका काम नहीं चलेगा । किसी का रक्त किसी दूसरे के शरीर में लगा दिया जाए, तो वह उस शरीर में केवल तीन दिन तक ही काम देता है । तीन दिन में ग्रहीता के शरीर का सिस्टम काम करने लगता है और वह व्यक्ति अपना काम कर लेता है । आपका सिस्टम जब तक काम नहीं करेगा, हमारा आशीर्वाद काम नहीं करेगा । आप समझते नहीं हैं ? दूसरे का आशीर्वाद एवं वरदान आपकी सामयिक आवश्यकताएँ तो पूरे कर सकते हैं, परन्तु आगे केवल आपका पुरुषार्थ, श्रम ही काम करेगा ।

इस शिविर में पुनर्गठन के अन्तर्गत हमने आपको एक योजना दी है । आप कहेंगे कि गुरुदेव क्या इसके बिना काम नहीं चलेगा ? साथियो, आप समझते नहीं हैं कि इन दिनों हिन्दुस्तान के सामने बहुत-सी समस्याएँ हैं । असम की समस्या है, जो अरबों-खरबों रुपये से भी हल नहीं हो सकती है । बंगला देश की समस्या इतना विकराल रूप ले चुकी थी कि रुपयों से इसका हल नहीं हो सकता था । हमने उस समस्या का हल अध्यात्म-शक्तियों के द्वारा निकालने का सोचा है । आध्यात्मिक शक्तियाँ ही आड़े समय में कारगर सिद्ध होती हैं । यही शक्तियाँ मनुष्य को बदलने जा रही हैं, युग को बदलने जा रही हैं । हम स्पष्ट रूप से देख रहे हैं कि युगद्रष्टा अपनी कलाकृति को, अपनी इस सुन्दर दुनिया को नष्ट नहीं होने देगा । ऐसा समय इस सृष्टि पर बीसों बार आ चुका है । जब भगवान यानी स्रष्टा तथा जीवन्त आत्माओं ने सहयोग करके इस कार्य को पूरा किया है । आज भी वैसी ही स्थिति

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

है जिसमें आप जैसे मूर्धन्य आत्माओं को इस प्रकार का काम करना है ।

यह घाटे का सौदा नहीं है

स्रष्टा अपने द्वारा हमेशा सृजन करता है । कहा गया है-

यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

ऐसी परिस्थितियों में उस समय स्रष्टा तो अपना काम करता ही है, परन्तु वैसी संकटकालीन स्थिति में उनके सहयोगियों को भी काम करना पड़ता है । बड़े-बड़े जो काम होते हैं, युगपरिवर्तन जो होता है, महाक्रान्तियाँ जो होती हैं, वह भगवान की इच्छा तथा शक्ति से होती हैं । हमें तथा आपको तो केवल निमित्त मात्र बनना है । अगर आप श्रेय लेने की स्थिति में हों, इस जमाने का महत्वपूर्ण कार्य करने की स्थिति में हों, तो हमारा एक ही निवेदन है कि आप हमारे साथ-साथ चलें, हमारे साथ आएँ । आपको घाटा नहीं पड़ेगा । चिन्ता मत कीजिए, यह घाटे का कोई सौदा नहीं है । मित्रो, कृपणता के अलावा कोई घाटे की बात नहीं होगी । यदि इस क्षुद्रता को आप लोग छोड़ दें, तो फायदा ही फायदा है । मैं आपके भविष्य की गारण्टी ले सकता हूँ, लेकिन आपकी क्षुद्रता एवं कृपणता की गारण्टी नहीं ले सकता । इसे छोड़ने की एवज में जो महानता तथा दूसरी चीजें मिलेंगी, वह बड़े ही फायदे की होंगी ।

इस शिविर में हमने आपको इसीलिए बुलाया था और बार-बार पूछा था कि क्या ऐसा करना सम्भव है ? मैं जानता हूँ कि आपके पास अक्ल बहुत ज्यादा है, परन्तु क्या आप हिम्मत कर सकते हैं ? हम तो चाहते हैं कि आपकी अक्ल कम हो जाए, आपकी महत्वाकांक्षाएँ कम हो जाएँ तथा आपकी भावना एवं अन्तरात्मा विकसित हो, तो काम बन जाएगा । इसलिए आपको बुलाया था और आज विदा कर रहे हैं । आप हमारे आदर्श और सिद्धान्त यहाँ से ले जाएँ तथा अपने चिन्तन, चरित्र को नये युग के निर्माण में लगा दें । मैं चाहता हूँ कि आपके सोचने के तरीके बदल जाएँ । आप नये युग के अनुरूप ढलते चले जाएँ । अभी तो आपने अपना सारा का सारा समय भौतिक आवश्यकताओं के लिए लगाया है । आपने तो जीवन केवल अपने लिए जिया है । आपने पूजा की है, लेकिन अगर आपने वास्तव में पूजा के स्थान पर भजन किया होता, सेवा-साधना की होती, तो आपकी आँखों के अन्दर से एक तेज दिखाई पड़ता । आपकी निगाहों के सामने जो भी आते, बदलते हुए चले जाते, परन्तु आपने कभी भी इस तरह का प्रयास नहीं किया । नये युग के लिए अगर आप अपने चिन्तन, भावना, चरित्र को लगा देते, तो आप तथा हम दोनों महान हो जाते । जैसे कि हमारे गुरु और हम हो गए । पूजा तो पुजारी करता है और वह भी नौकरी के लिए, धन के लिए, औलाद के लिए करता है । यही कारण है कि किसी पुजारी के पास भगवान नहीं जाता । यदि आप भी इसी तरह पुजारी हैं तो आपसे भी भगवान एक लाख कोस दूर है ।

मित्रो, हम आपसे यह निवेदन कर रहे थे कि आपकी पूजा यहाँ से जाने के बाद ऐसी चमके कि आपकी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति करने की-माँगने की बात समाप्त हो जाए और आप निरन्तर भगवान के लिए गलने की बात सोचने लगें । इसी उद्देश्य से आपको यहाँ बुलाया था । हम चाहते हैं कि समाज में एक-दूसरे से प्रेम करने की पद्धति आप प्रारम्भ करें । आप पति-पत्नी आपस में प्रेम करें । अभी तो आपका प्रेम बिल्ली-चूहे की तरह है, राक्षसों की तरह है । आपको अपने साथी को-सहधर्मिणी को ऊँचा उठाने, आगे बढ़ाने, तरक्की की ओर ले जाने की भावना आए । हम चाहते थे कि आप यहाँ से भगवान को गोद लेकर जाएँ । आपके तीन बेटे हैं, तो आज से चार बच्चे मान लें । अगर बच्चे को फीस देते हैं, भोजन कराते हैं, तो भगवान को केवल अक्षत, फूल न चढ़ाएँ, उनके लिए भी त्याग करें । देश, समाज, धर्म, संस्कृति के लिए आप अपने प्यार, अक्ल, भावना, श्रम, पैसे का एक हिस्सा यानी अंशदान देना चाहिए । हमने आपको अपने कुटुम्ब में सम्मिलित होते समय अंशदान, समयदान की बातें बतलायी थीं । हम चाहते हैं कि आपको फूल, अगरबत्ती चढ़ाने की अपेक्षा आदर्शों के लिए-सिद्धान्तों के लिए अंशदान देना चाहिए ।

साथियो, आप यहाँ से जाएँ, तो एक नमूना बनकर जाएँ, ताकि समाज में आपका प्रभाव पड़े । आप जब लोगों को सिखाने जाएँगे, तो लोग यह पूछेंगे कि आप तो हमें प्यार, त्याग, श्रम, सेवा की बात बतला रहे हैं, पर क्या आपने इसमें से कुछ ग्रहण किया है ? अपने आप में धारण किया है ? इसका जवाब दे देंगे, तो आपकी बात लाखों-करोड़ों आदमी मानेंगे । हमने जो लोगों को सिखाया है, बताया है, पहले उसे हमने अपने जीवन में धारण किया है । इसी का प्रभाव है कि लोग हमारी बातें मानते हैं । आप शिकायत करते हैं कि गुरुजी शाखा वाला ठण्डा पड़ गया है । बेटे, तू अपने आपको गरम कर ले, सब तेरी बातों को मानेंगे तथा तेरे रास्ते पर चलेंगे । हम आपको युग-सृजेता, प्रज्ञापुत्र के रूप में, जाग्रत आत्मा, महामानव के रूप में देखना चाहते हैं । आप यहाँ से जाने के बाद अपनी वाणी के अन्दर ब्रह्मतेज पैदा करें । आप सभ्य आदमी की तरह से जीवनयापन करें । आप वकील हैं, तो आपको काले कपड़े पहनकर कार्य तो करना चाहिए, पर हृदय के अंतरंग की मिठास को भी विकसित करना चाहिए । आप को अपनी वाणी का, व्यवहार का, सभ्यता का विकास करना चाहिए ।

आप यहाँ से जाएँ, तो कुछ लेकर जाएँ । आप यहाँ आते हैं, तो कुछ लेकर जाएँ, बनकर जाएँ । हमारे पास जो लोग आते हैं और आपके बारे में पूछते हैं, तो उनको हम क्या जवाब देंगे । आपके अन्दर संयमशीलता, विनम्रता, सहिष्णुता आनी ही चाहिए, जीवन में हेरफेर होना ही चाहिए । आपको जो कुछ भी मिला है, उसे केवल शरीर के लिए न खर्च करके भगवान के लिए भी खर्च करना चाहिए । आप माँ-बाप से चार आना कब तक माँगते रहेंगे । भगवान से माँगने की अपेक्षा भगवान को देने के लिए आगे आना चाहिए । गुरुजी से माँगने की अपेक्षा गुरुजी को देने के लिए आगे आना चाहिए । आपके कुर्ते के ऊपर तथा अंतः-करण में ज्ञान यज्ञ की लाल मशाल जलनी चाहिए, ताकि भीतर का अंधकार दूर हो सके । हमारे स्वार्थ में से कुछ परमार्थ के लिए उपयोग होना चाहिए । आप थोड़ा-सा हिस्सा लोकहित के लिए, जनकल्याण के लिए, आदर्शों के लिए निकालिए ।

मित्रो, हमने इसीलिए यह शिविर बुलाया था । यह विशेष समय है, विशेष काल है, यह बतलाने के लिए आपको बुलाया था । पेट भरने और औलाद पैदा करने की समस्या तो जब से दुनिया बनी है, तब से रही है और रहेगी । यदि आप भी इसी में लगे रहेंगे, तो यह जीवन बेकार हो जाएगा । उठिए, जागिए और श्रेष्ठ कामों के लिए तनकर खड़े हो जाइए । इसी अध्यात्म को बतलाने के लिए हमने आपको बुलाया था, अगर आप समझ सकें, तो हमारा यह श्रम सार्थक हो जाएगा और आप भी धन्य हो जाएँगे । आज की बात समाप्त ।

।। ॐ शान्ति ।।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी-

गायत्री महाविद्या एवं उसकी साधना

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो, भाइयो ! यहाँ इस शिविर में आपको गायत्री साधना करने के लिये बुलाया गया है। इस समय आपको घूमने-फिरने के लिए नहीं, शुद्ध रूप से साधना करने के लिए हमने आपको निमंत्रण दिया था। साधना करने के उद्देश्य से जो आये हैं, उनको ठहरना चाहिए। घूमने-फिरने के लिए हरिद्वार आना बहुत व्यर्थ ही रहता है। शुद्ध रूप से इच्छा होनी चाहिए। साधना किसकी, गायत्री की। गायत्री की साधना के सम्बन्ध में आपको क्यों बुलाना पड़ा? इससे पहले भी हम आपको कई बार साधना करा चुके हैं, आपको बता चुके हैं, फिर क्या जरूरत पड़ गई इस साधना को सिखाने की- इस साधना को बताने की। मित्रो! बहुत समय से हम आपको गायत्री उपासना का कर्मकाण्ड एवं क्रिया-कलाप समझाते रहे हैं कि पावन गायत्री मंत्र क्या होता है और गायत्री उपासना कैसे की जा सकती है? कर्मकाण्ड तो कलेवर मात्र है। यह उपासना का शरीर मात्र है, जिसे अभी हमने आपको बताया।

शरीर किसे कहते हैं? शरीर उसे कहते हैं जो दिखायी पड़ता है, जो देखा जा सकता है, जो अनुभव में लाया जा सकता है। हमारा शरीर आपके सामने बैठा हुआ है, कैसा है? इसमें उँगलियाँ हैं, हाथ हैं, नाक है, कान हैं, दाँत हैं, बाल हैं। इसे हम देखते हैं। छू भी सकते हैं इस शरीर को, लेकिन इसके भीतर एक ऐसी विशेषता छिपी हुई है, जिसे आप देख भी नहीं सकते और सुन भी नहीं सकते। केवल अपने गहन अनुभव के द्वारा ही इसको जाना जा सकता है। आपका प्राण कैसा है- बताइये। साहब, प्राण दिखायी तो नहीं पड़ता, कितना शक्तिशाली है मालूम नहीं पड़ता। कितना ज्ञानवान है- मालूम नहीं पड़ता, कितना चरित्रवान है- मालूम नहीं पड़ता। आँखों से मालूम नहीं पड़ सकता, दिखायी नहीं पड़ सकता। केवल विचारणा के द्वारा आप यह जान सकते हैं कि आपके शरीर में कोई प्राण होगा। फिर आप उससे भी गहराई में जानना चाहें तो यह जान सकते हैं कि आचार्य जी का प्राण कितना शक्तिशाली होगा, कितना सामर्थ्यवान, कितना महत्त्वपूर्ण होगा, कितना विकसित होगा। आप ज्यादा खोजबीन करेंगे तो ही आपको यह मालूम पड़ेगा। ज्यादा खोजबीन नहीं करेंगे तो आपको केवल हमारा शरीर दिखाई पड़ेगा। आप यहाँ हमारा दर्शन करने के लिए आये हैं, अच्छा साहब क्या देख करके आये? हमारा शरीर देखकर आये। तो क्या फायदा हुआ- इससे कुछ भी फायदा नहीं हुआ। बूढ़ा आदमी था, बैठा हुआ था, चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ी हुई थीं, सफेद बाल वाला था। हमने देखा तो माला पहना दी। क्या फायदा कर लाया? कोई फायदा नहीं हुआ।

दर्शन का मर्म समझें-

वस्तुतः दर्शन करने, सुनने की चीज नहीं। असल में जो फायदा उठाना चाहते हैं वह किससे मिल सकता है? जीवात्मा के आशीर्वाद से। शरीर का कोई आशीर्वाद नहीं है। हमारा आशीर्वाद हमारी भावनाओं में जुड़ा हुआ है- हमारे स्नेह में जुड़ा हुआ है, हमारे सिद्धान्तों में जुड़ा हुआ है, हमारे मन में जुड़ा हुआ है। अगर स्नेह के साथ में तुम्हें कोई आशीर्वाद दे या परामर्श दे दे तो उसका कोई असर शरीर पर पड़ेगा क्या? शरीर पर कोई असर नहीं पड़ सकता। गायत्री उपासना- गायत्री साधना के क्रियापरक कर्मकाण्ड की तुलना शरीर के कलेवर स की जा सकती है। शरीर और चेतना दो भिन्न चीजें हैं। इससे शरीर का लाभ है क्या? शरीर का भी लाभ है। हम क्या सेवा कर सकते हैं हाथ से? हम आपके लिए पानी पिला सकते हैं, तेल मालिश कर सकते हैं, हजामत बना सकते हैं और क्या कर सकते हैं? पैर दाब सकते हैं, हाथ-पाँव से यही सेवा कर सकते हैं, लेकिन हम अपने ज्ञान के द्वारा आपका कायाकल्प कर सकते हैं और अपनी ज्ञान की भावनाओं के द्वारा कोई आशीर्वाद देना चाहें तो आपके जीवन का विकास कर सकते हैं। शरीर की अपेक्षा प्राण बहुत बलदान है। शरीर हमारा वैसे भी कमजोर है, छोटा है। लेकिन प्राण की शक्ति असीमित है। इसी तरह गायत्री उपासना का कर्मकाण्ड परक क्रियाकृत्य भी है। गायत्री साधना का यह कर्मकाण्ड आप लोगों ने बहुत समय से सीखा है और जाना है। एक खास बात मैं समझता हूँ कि इतना लाभ तो जरूर हुआ होगा कि मन की एकाग्रता हुई होगी। गायत्री उपासना आप बहुत दिनों से करते रहे हैं फिर क्या लाभ हुआ? अपनी दिशाएँ अस्वस्थ हों तो प्रगति रुक गयी होगी उससे। और क्या लाभ हुआ होगा- और कोई खास लाभ तो नहीं हुआ होगा, क्योंकि आपकी उपासना क्रिया-कलाप तक सीमित थी, कलेवर तक सीमित थी। यह भजन था उसका, कलेवर था, शरीर था जो कि बहुत दिनों से आपको हम सिखाते हुए चले आ रहे थे। उसमें क्रियाएँ करनी होती थीं। किससे? शरीर से। अब तक आपने कलेवर सीखा होगा। उसमें क्रियाएँ करनी पड़ती थीं।

क्रियाएँ क्या करनी पड़ती थीं? कैसी क्रियाएँ करनी पड़ती थीं? शरीर से करनी पड़ती थीं, जैसे माला घुमानी पड़ती थी, किससे घुमानी पड़ती थी? हाथ से-अँगुलियों से घुमानी पड़ती थी। किसकी माला? लकड़ी की। लकड़ी की माला चमड़े की अँगुलियों से घुमानी पड़ती थी। हेराफेरी उपासना की, जिसको हम भजन कहते हैं,कलेवर कहते हैं। अब तक जो आप उपासना करते रहे हैं, जिसको मुख से उच्चारण करना पड़ता था, जीभ से उच्चारण करना पड़ता था, वह किस चीज की बनी है? चमड़े की। चमड़े की जीभ क्या बोलती थी? गायत्री मंत्र बोलती थी, ॐ नमः

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

शिवाय बोलती थी, राम-राम बोलती थी। अभी तक जो उपासना धूपबत्ती के माध्यम से, चन्दन के माध्यम से, अगरबत्ती के माध्यम से, चावल के माध्यम से आप पूजा-उपासना जो करते रहे हैं, सब भजन था। इस भजन-उपासना का लाभ उतना ही बन सकता है, जितना कि हमारे शरीर और हमारे कान के बीच अन्तर है, वही अन्तर भजन और उपासना में है।

चलें उच्चस्तरीय शिक्षण की ओर-

अब इस समय हम यह मान लेते हैं कि आपको पौराणिक कबूतर वाली कहानी की कोई जरूरत नहीं रही। अब आपको सुन्दरता का प्रोनाउन्सियेशन बताना चाहिए, उच्चारण बताना चाहिए। अब आपको बालकों की गोलियों की विशेष आवश्यकता नहीं रही। अब किन्डर गार्टन के माध्यम से आपको अक्षरों का लिखना बताया जाएगा। हम समझते हैं कि आप रोज तो क्या, जिन्दगी भर किन्डर गार्टन के द्वारा अक्षर सीखते रहे। अब हमें आपको अक्षर सिखाना चाहिए, आपको लिखना सिखाना चाहिए, अब हमें आपको बोलना सिखाना चाहिए। अब हमें आपको उच्चस्तरीय शिक्षा देनी चाहिए। दूसरी बातें बतानी चाहिए, ताकि उसका वास्तविक लाभ उठा सकें, अब आपको वास्तविक लाभ उठाने के लिए हमने इस शिविर में बुलाया है। वह उपासना जो आदमी को समर्थ बना सकती है, वह उपासना जो आदमी को शक्तिवान बना सकती है, वह उपासना जो आदमी को सिद्धपुरुष बना सकती है, वह उपासना जो इस भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही जीवनों में आदमी को उठाकर कहीं से कहीं ले जा सकती है। उसका मूल, उसका प्राण हम आपको सिखाएँ, यही उद्देश्य है इस शिविर का। यह गायत्री का प्राण, साधना का प्राण है। चलिए हमारे साथ-साथ गहराई में डुबकी लगाइए, ताकि आपको गायत्री की बावत अब तक जो जानकारी है, उसकी अपेक्षा अधिक जानकारी मिले।

साधना का अर्थ कर्मकाण्ड मात्र पूरा कर लेना नहीं है और न ही गायत्री कोई देवी है। नहीं साहब, वह देवी होती है जो हंस पर सवारी करती है जो फर्र से इस पेड़ पर से उस पेड़ पर चली जाती है। आप जानते हैं गायत्री कहाँ रहती है? हाँ! महाराज जी आपने समझाकर तो भेजा है। एक हाथ में पानी का कमण्डलु लेती है। बेटे, हाथ में पानी का थरमस लेकर चलती है। पानी का गिलास छोड़ जाएगी तो कैसे काम चलेगा। एक हाथ में किताब लेती है। कौन-सी किताब लेकर चलती है? अखण्ड-ज्योति की किताब लेती है, दूसरी किताब नहीं लेती है। नावेल पढ़ने के लिए नहीं है। रास्ते में किताब नहीं पढ़ेगी तो बेचारी को कैसे याद होगा- और सवारी? कौन-सी सवारी करती है। रिक्शा, साइकिल की जरूरत नहीं है, मोटर की जरूरत नहीं है। गायत्री जाती है तो हंस पर सवार होकर जाती है। मोटर-पैट्रोल खर्च करा लेती है, बहुत सारा खर्चा करा लेती है। गायत्री माता ने मोटर दूसरी तरह की खोज ली है। वह हवाई जहाज का भी काम कर सकती है और जमीन पर भी चल सकती है। किसकी सवारी है? वह हंस की है, वह सिर्फ हंस पर सवारी करती है। पैट्रोल भी नहीं खाता है। ड्राइवर भी नहीं है। लगाम भी नहीं है। गायत्री माता कह देती है भाई चल हरिद्वार की तरफ, तो चल देता है। गायत्री बड़ी विचित्र है, छोटी-सी गायत्री है, ऐसी गायत्री है जैसी तुम बच्चों की होनी चाहिए। रानी गायत्री की पूजा और भजन कैसा है? वैसा ही जैसा कि बाराती गाते हैं, फूल चढ़ा देते हैं, चावल चढ़ा देते हैं, अक्षत चढ़ा देते हैं। गायत्री मंत्र बोल लेते हैं। यह क्यों है? बेटे! बालकों की गायत्री है, बालकों की साधना है। अब हम आपको जवानों की, फिलोसोफरों की, दार्शनिकों की, विचारशीलों की गायत्री समझाना चाहेंगे, अब आपको साहसियों की, विचारशीलों की, तपस्वियों की साधना सिखाना चाहूँगा। मैं समझता हूँ कि अब आप बच्चे नहीं रहे वरन् जवान हो गए हैं, इसलिए जवानों से जवानों की सी बात कहनी चाहिए। बच्चों को बच्चों की सी बात कहनी चाहिए। जवानों को गायत्री की शिक्षा क्या है? भाइयो! मैं क्या कह सकता हूँ आपसे, गायत्री की कितनी शिक्षाएँ हैं। आज मैं पहले यही बताना चाहूँगा आपको कि गायत्री की शिक्षाएँ और प्रेरणाएँ क्या हैं। फिर गायत्री उपासना और साधना के रहस्य समझाऊँगा। यह सारे के सारे रहस्य इस शिविर में बताते हुए चला जाऊँगा, जिसके लिए मैंने आपको बुलाया है।

गायत्री का पौराणिक पक्ष क्या है-

अब मैं आपको चलिए यह समझाने की कोशिश करता हूँ कि गायत्री क्या है? तीन पौराणिक कथाएँ हमारे सामने हैं। इनके माध्यम से हम आपको यह आसानी से समझा सकते हैं कि गायत्री माता क्या हो सकती है। पौराणिक कबूतर, पौराणिक खरगोश के माध्यम से हम आपको बताएँगे कि गायत्री माता क्या है? एक पौराणिक कथा आती है राजा विश्वामित्र की। वे गुरु वशिष्ठ के आश्रम में गए। गुरु वशिष्ठ का आश्रम जंगल में था। छोटी-सी जरा-सी झोंपड़ी थी। अकेले में रहते थे, बिना किसी सामान के। कमण्डलु में खाना खा लेते थे और अपने वस्त्रों को बिछाकर गुजारा कर लेते थे। बड़े संतोषी ब्राह्मण थे। गुरु वशिष्ठ के आश्रम में सम्पन्न राजा विश्वामित्र गए। वे जंगल में किसी काम से सेना समेत गये थे। उन्होंने आवश्यक समझा कि गुरु वशिष्ठ के पास चलें और प्रणाम कर आयें। राजा विश्वामित्र प्रणाम करने गए। गुरु वशिष्ठ ने पूछा- दुपहरी में आप लोग यहाँ कैसे आये? महाराज जी ! हम लोग रास्ता भूल गये हैं और सेना के साथ यहाँ पर आ पहुँचे। आप लोगों ने खाना भी नहीं खाया होगा। कहाँ पर खाना खाते, महाराज जी! यहाँ पर पात्र भी नहीं है, भोजन का सामान भी नहीं है। भोजन का सामान पीछे रह गया है। यहाँ पर भटक गए हैं, पानी मिल जाए वही बहुत है। वशिष्ठ ने कहा- हमारे यहाँ दरवाजे पर आप आए हैं, अतः आप हमारे अतिथि हुए, इसलिए अतिथि का सत्कार करना, स्वागत करना हमारा कर्त्तव्य है। आप भूखे भी हैं और प्यासे भी हैं। हम चाहते हैं कि आपके भोजन का प्रबन्ध करें। अरे, महाराज जी अकेले से क्या फायदा, इतनी बड़ी सेना भी साथ है, इसके भोजन का आप प्रबन्ध जब तक नहीं करेंगे तब तक बात कैसे बनेगी? अच्छा तो चलिए अभी हम करते हैं। उनके पास एक नन्दिनी नाम की गाय थी। कामधेनु की बेटी नन्दिनी। उन्होंने कहा- नन्दिनी हजारों की संख्या में आए हुए हैं मेहमान। उनके भोजन का प्रबन्ध होना चाहिए। नन्दिनी ने सिर हिला दिया, ठीक है अभी होता है। राजा से कहा

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

गया कि आइए आप सबको भोजन करा ले जाइए। सब लोग बैठ गए।

पौराणिक खण्ड की यह कहानी अभी खत्म नहीं हुई। मित्रो, कहानी में एक और बात शामिल होती है। जब सब लोगों ने भोजन कर लिया तब विश्वामित्र ने पूछा- महाराज जी ये सब आपने कहाँ से पाया? सामान तो था नहीं, आपके पास, इतना दही, भोग, इतना चमत्कार, इतनी सिद्धि, इतना धन, इतनी विशेषताएँ कहाँ से पा लीं। उन्होंने इशारा किया नन्दिनी की ओर। ये नन्दिनी है। नन्दिनी के पास सब कुछ है। यह कामधेनु है। इसकी छाया में बैठकर हर चीज प्राप्त हो जाती है। सभी कामनाओं को पूरा करती है, इसलिए इसे कामधेनु कहा गया है। विश्वामित्र ने कामधेनु को छीनना, हड़पना चाहा और बोले-यदि कामधेनु हमें मिल जाए, तो कितना अच्छा हो। गुरु वशिष्ठ बहुत नाराज होते हैं, पौराणिक कथा के मुताबिक। उन्होंने कहा- हमारी गाय को आप नहीं ले जा सकते। राजा विश्वामित्र ने कहा- हम आपकी गाय को अवश्य ले जाएँगे। अच्छा तो आप लेकर दिखाइये। विश्वामित्र गाय को जबरदस्ती लेने के लिए चले। तो गुरु वशिष्ठ ने नन्दिनी को आज्ञा दी- इन सबकी अक्ल ठिकाने कर दो। नन्दिनी ने अपनी सींगों से मार-मारकर सारी सेना को परास्त कर दिया। सेना भाग खड़ी हुई और राजा भी भाग खड़ा हुआ। विश्वामित्र ने इस धारणा पर विचार किया कि क्या गाय इतना धन और वैभव इकट्ठा कर सकती है? एक गाय इतना युद्ध कर सकती है? यह गाय बड़ी जबरदस्त है। इस गाय को प्राप्त करने के लिए हमको प्रयत्न करना चाहिए। गुरु वशिष्ठ ने जिस तरह प्रयत्न किया तो, बस उसी तरह विश्वामित्र अपना राज पाट घर वालों को दे करके जंगल में आ गए और उसी नन्दिनी की कृपा पाने के लिए प्रयत्न करने लगे। विश्वामित्र ने कहा- **'धिक बलम् छत्रिय बलम्, ब्रह्म तेजो बलम् बलम्'**। भौतिक बल, सांसारिक बल जिसमें धन भी आता है, श्रम, समय भी आता है, रूप भी आता है, बुद्धि बल भी आता है, ये सारे के सारे हैं, जिनको हम भौतिक बल कहते हैं। धिक अर्थात् छोटे हैं- नगण्य-नाचीज हैं। ब्रह्म तेजो बलम् बलम् अगर कोई श्रेष्ठ बल है, तो वह है ब्रह्म बल, आत्मा का बल । इसे ही प्राप्त करना चाहिए।

सब गाथा खत्म हो गयी। पौराणिक कहानी खत्म हो गई। क्या अर्थ निकला? प्राय: पौराणिक कहानियों को लोग इतिहास मान लेते हैं। गलती तो गलती है, मैं क्या कह सकता हूँ। वास्तव में यह अलंकार है। अलंकार की दृष्टि से ऋषियों ने बड़े महत्त्वपूर्ण विषयों को समझाने की कोशिश की है। सारे आर्ष ग्रंथों, अठारह पुराणों के मैंने भाष्य किए हैं। पुराणों को लोग इतिहास मान बैठते हैं और फिर यह कहते हैं कि पुराणों में गप्पें लिखी हैं। लेकिन बेटे पंचतन्त्र की किताबों में भी गप्पें लिख रही हैं, जैसे कौवे से लोमड़ी ने कहा- अरे भाईसाहब! गाना गा दीजिए। अच्छा तो मैं गाना गाता हूँ, रोटी का टुकड़ा मुँह में से गिरा और लोमड़ी लेकर के भाग गई। क्यों साहब, लोमड़ी की बातचीत कौवा सुन सकता है? नहीं! तो क्या कौवे की बात-चीत लोमड़ी समझ सकती है? नहीं बेटे! ये झूठ नहीं है। बालकों को आकर्षक ढंग से पहेली के ढंग से, प्रिय बुजुर्गों के ढंग से उनको महत्वपूर्ण बात समझा देती है तो क्या हर्ज है। उसमें मनोरंजन भी रहता है, आकर्षण भी रहता है। इसी तरह का शिक्षण है पुराणों में। कोई क्या समझे- पुराणों में विचित्र कहानियाँ हैं। कहानियों के माध्यम से लोगों को शिक्षण देने की कोशिश की है। बताने की कोशिश की है, बड़े महत्त्वपूर्ण विषयों को, जो साधारणत: समझ में नहीं आती हैं, कठिन विषयों, जटिल विषयों, फिलॉसफी को समझाने के लिए कथानकों का माध्यम लिया गया है। यह कथा जो मैं अभी-अभी आपको सुना चुका हूँ इसका क्या अर्थ होता है। आत्मबल, आत्मशक्ति संसार की सबसे बड़ी शक्ति है। इसे प्राप्त करने के लिए गायत्री का, ऋतंभरा-प्रज्ञा का अवलम्बन लेना होता है।

गायत्री है ऋतम्भरा प्रज्ञा-

गायत्री का ही दूसरा नाम ऋतम्भरा-प्रज्ञा है। ऋतम्भरा-प्रज्ञा, इसका नाम गायत्री है। कितनी शिक्षाएँ इसमें हैं? नन्दिनी की तरह यह भी काम कर सकती है। एक काम यह कर सकती है- जो पाप, ताप, शोक और सन्ताप, कष्ट और अभाव जो हमारे जीवन में हैं, उन्हें यह उसी तरह सींगों से मारकर भगा सकती है जैसे कि विश्वामित्र और उनकी सेना को जो गुरु वशिष्ठ को हैरान करने और नन्दिनी को हैरान करने के लिए आए थे, तो नन्दिनी ने उनको मार गिराया और सफाया कर दिया था। इसी तरीके से अपने जीवन की मौलिक कठिनाइयाँ और बाधाएँ जो हमको रास्ते पर चलने में रुकावट डालती हैं, उन सारी-की-सारी कठिनाइयों

एक बार संत नामदेव से किसी व्यक्ति ने पूछा- महात्मा जी आपका जीवन कितना सादा है, आप कितने उच्च विचार रखते हैं। उक्त सज्जन नामदेव से बात कर ही रहे थे कि उन्होंने कहा- भाई, अन्य बातें छोड़ो, मुझे अभी-अभी तुम्हारे बारे में एक बात मालूम हुई है, वह यह कि आज से ठीक सातवें दिन तुम्हारी मृत्यु हो जायेगी। नामदेव की यह बात सुनकर उक्त व्यक्ति घबरा गया, मृत्यु और वह भी केवल १६८ घण्टे में, भला नामदेव की वाणी झूठी कैसे हो सकती थी। यह व्यक्ति तुरन्त घर आया और अपने घर वालों से नामदेव की उक्त बात कही, सुनकर सभी बड़े व्याकुल हुए। उस व्यक्ति ने बिस्तर पकड़ लिया और जैसे-जैसे एक-एक दिन बीतता उसे मृत्यु निकट आती हुई दृष्टिगोचर होने लगी, अन्त में सातवें दिन नामदेव उस आदमी से मिलने आये। उन्होंने पूछा- कैसी तबियत है? वह बोला- अब तो कुछ ही घण्टों का मेहमान हूँ। नामदेव बोले- इन सात दिनों में कितना पाप कमाया? वह बोला- पाप करने की कौन कहे, पाप करने के विचार तक मेरे हृदय में न आये। नामदेव शान्ति से बोले- बस हमारा जीवन भी इसी प्रकार है।

आशय यह है कि यदि हम मरण को सदैव स्मरण करें तो पापकर्मों की ओर हमारी चित्तवृत्ति नहीं बढ़ेगी। इस प्रकार इस मृत्यु रूपी अंकुश के लगे रहने से हम दिनों-दिन अच्छे कार्यों की ओर बढ़ते रहते हैं। मृत्यु को याद रखने से कुमार्ग पर जाने से रोक लगती है।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

को हमारी भ्रामक मनःस्थितियों को, भ्रामक यश-लिप्सा को ऋतंभरा-प्रज्ञा मार कर भगा सकती है। इस कहानी का यही अर्थ है कि यह मनुष्य की भौतिक और आत्मिक सफलताओं का द्वार खोल सकती है। हालाँकि आध्यात्मिक शक्ति, आन्तरिक शक्ति हमारे पास है- अक्ल की शक्ति का चमत्कार तो आपने देखा ही है। अक्ल आपके पास हो तो अच्छी नौकरी मिलेगी। कहाँ तक पढ़े हैं? मैट्रिक पास हैं। अच्छा साहब, दो सौ रुपया तनख्वाह मिलेगी। आप क्या पास हैं? बी.ए. पास हैं तो आपको साढ़े तीन सौ रुपये तनख्वाह मिलेगी। एम. ए. पास हैं तो पाँच सौ रुपये से आपकी स्टार्ट करेंगे। पी-एच.डी. हैं तो जिस तरह से आपकी जानकारी होगी उसी तरह से आपको पैसा मिलता जाएगा। यदि आप कमजोर हैं तो आपको एक रुपया रोज मिलेगा। पहलवान हैं और वजन ढोने वाले हैं तो चले जाइए ढकेल पर और पल्लेदारी कीजिए, बाइस रुपया रोज देंगे। अक्ल की ताकत देखी है आपने? हाँ देखी है। धन की ताकत देखी है? बैंक में रुपया जमा कर दीजिए, ब्याज पर ब्याज मिलता चला जाएगा। यह तो हुई धन की ताकत। अब आप आध्यात्मिकता की ताकत को देखेंगे, जो दुनिया की सबसे बड़ी ताकत है, इसके मुकाबले दुनिया के परदे पर कोई नहीं है, क्योंकि ये चेतना की ताकत है। जड़ की ताकत सीमित है। जड़ क्या है? जड़ हमारा शरीर है। जड़ क्या है? जड़ हमारा पैसा है। जड़ क्या है? जड़ हमारा व्यापार है। दिमाग भी हमारा जड़ पदार्थ का बना है, जिसे ज्ञानेन्द्रिय कहा जाता है, ये भी जड़ है। पदार्थ की सीमा है। पैसे की शक्ति, बुद्धि की शक्ति सब शक्तियाँ जड़ हैं। जड़ के द्वारा जो फायदा मिल सकता है, चेतना के द्वारा उससे हजारों गुना फायदा हो सकता है। लाखों गुना ज्यादा फायदा हो सकता है। चेतना की शक्ति अगर हमारे पास हो जिसे हम ब्रह्मबल कहते हैं और आत्मबल कहते हैं तो फिर उसका कहना ही क्या?

मित्रो! मैं कहानी का अर्थ समझाना चाहूँगा आपको, ताकि गायत्री की परिभाषा समझ में आ जाए कि गायत्री क्या हो सकती है एवं क्यों उसका दूसरा नाम ऋतम्भरा-प्रज्ञा है। एक कहानी सावित्री और सत्यवान की है। एक लडकी बड़ी रूपवती, बड़ी कुलवती, बड़ी सुन्दर, ऐसी सुन्दर जिसकी ख्याति संसार भर में फैल गयी। सभी राजकुमार उसे देखकर यही कहते कि यह तो बड़ी सुन्दर राजकुमारी है। यदि यह हमको मिल जाती तो अच्छा होता। लड़की के पिता के सामने सभी राजकुमार हाथ पसारने लगे और कहने लगे कि इसे हमको दीजिए। लड़की ने अपने पिता से कहा कि हमको अपनी मर्जी का दूल्हा चुनने दीजिए। अच्छा तो आप चुन लें। ठीक है, रथ पर सवार होकर सेना को साथ लेकर सावित्री रवाना हुई। रवाना होते-होते वह सारे देशों के राजकुमारों से मिली और यह पता लगाया कि हमारे लिए कोई दूल्हा है क्या? कोई भी दूल्हा उसको पसन्द नहीं आया। जंगल में एक दिन निकल कर जा रही थी सावित्री रथ समेत। उसने एक लड़के को देखा। वह एक लकड़हारा था। लकड़हारा बड़ा तेजस्वी मालूम पड़ता था और चेहरे पर उसके यशस्विता भी टपक रही थी। दृढ़ निश्चय भी टपक रहा था। सावित्री ने उसको रोका और पूछा- लकड़हारे, तुम कौन हो और कैसे हो? उसने कहा- लकड़हारा तो इस समय पर हूँ, पर पहले लकड़हारा नहीं था। हमारे माता-पिता अन्धे हो गए हैं। यहाँ जंगल में जाकर तप करते हैं, उन्हीं की रक्षा करने के लिए हमने यह आवश्यक समझा कि उनको भोजन कराने से लेकर के सेवा करने तक के लिए हमको कुछ काम करना चाहिए और जिम्मेदारी को निभाना चाहिए। इस जंगल में और तो कोई पेशा है नहीं, लकड़ी काटकर ले जाते हैं और गाँव में बेच देते हैं, पैसे लाते हैं और उनका सामान खरीद कर लाते हैं। माता-पिता को रोटी खिलाते हैं, सेवा करते हैं। आपने अपने भविष्य के बारे में क्या सोचा है? भविष्य के बारे में क्या शादी नहीं करना चाहते। अभी हमारे माता-पिता का कर्ज हमारे ऊपर रखा हुआ है, अभी हम शादी कैसे कर सकते हैं। सावित्री ने कहा- तुम कुछ और नहीं कर सकते क्या? पैसा नहीं कमा सकते? पैसे कमा करके हम क्या करेंगे? कर्तव्यों का वजन हमारे ऊपर रखा है। पहले कर्त्तव्यों का वजन तो कम कर लें, तब सम्पत्तिवान बनने की बात सोची जाएगी या शादी करने की बात देखी जाएगी। अपनी सुविधा की बात बहुत पीछे की है। पहले तो वह करेंगे जो हमारे ऊपर कर्ज के रूप में विद्यमान है, इसीलिए माता-पिता, जिन्होंने हमारे शरीर का पालन किया, पहला काम उनकी सेवा का करेंगे, इसके बाद और बातों को देखेंगे। पढ़ना होगा तो पीछे पढ़ेंगे। नौकरी करनी होगी तो पीछे करेंगे या शादी करनी होगी तो पीछे करेंगे अभी तो हमको कर्ज चुकाना है, माता-पिता की सेवा करनी है।

लकड़हारे की बात सुनकर राजकुमारी रुक गई। अब वह विचार करने लगी कि बाहर से ये लकड़हारा है, लेकिन भीतर से कितना शानदार है। कितना शानदार इसका कलेजा, कितना शानदार इसका दिल, कितना शानदार इसकी जीवात्मा। इसने अपने सुख और भौतिक सुविधाओं को लात मार दी और अपने कर्त्तव्यों को प्राथमिकता दी। यह बड़ा जबरदस्त है। लकड़हारा है तो क्या हुआ। लकड़हारे से सावित्री ने कहा कि हम तो दूल्हा तलाश करने चले थे, अब हम आपसे ही ब्याह करेंगे। अब हम आपको ही माला पहनाना चाहते हैं। वह हँसा, उसने कहा- हमको अपने पेट का तो गुजारा करना ही मुश्किल पड़ता है, फिर तुम्हारा गुजारा कैसे कर सकते हैं? उसने कहा- हम पेट पालने के लिए, आपकी सहायता माँगने के लिए नहीं आए? आपकी सहायता करने के लिए आए हैं। हम बहुत बड़े मालदार हैं। हमारा बाप बहुत बड़ा मालदार है, हमारे पास बहुत सारा पैसा है। हम आपकी सेवा कर सकते हैं? यह सुनकर राजकुमार बोला- नारद जी बता गए थे कि एक साल बाद हमारी मृत्यु होने वाली है। सावित्री ने कहा कि हमारे पास इतनी विशेषता है कि हम आपकी जान बचा सकते हैं। हम आपको सम्पन्न बना सकते हैं। आपको यशस्वी बना सकते हैं? हम आपको सब कुछ उपलब्ध करा सकते हैं। हम बड़े मालदार हैं- और सावित्री ने गले में माला पहना दी। क्या आपने सावित्री-सत्यवान की कहानी पढ़ी है? पढ़ी होगी तो जानते होंगे कि फिर क्या हुआ था? राजकुमारी से विवाह करने के बाद सत्यवान के जीवन में एक वक्त ऐसा भी आया था जब यमराज आए थे और सत्यवान का प्राण निकाल कर ले गए

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

थे। तब सावित्री ने कहा था- नहीं, यमराज बड़े नहीं हो सकते। हम बड़े हैं। आखिर सावित्री ने यमराज से अपने पति का प्राण छीन लिया था। आपने सुना है या नहीं सुना है । हमें नहीं मालूम, पर यह एक कहानी है जो गायत्री का प्राण, गायत्री की जीवात्मा, गायत्री की वास्तविकता और गायत्री की फिलोसफी है। आप इस फिलोसफी की गहराई में जाइए। समुद्र के किनारे द्वीपों में घोंघे पड़े होते हैं, गहरी डुबकी मारिए और मोती ढूँढ़कर लाइए। नहीं साहब, मोती किनारे पर बिखरे होते हैं। हम तो किनारे पर डुबकी मारेंगे और मोती मिल जाएगा। ठीक इसी तरह किनारे पर बैठकर गायत्री का भजन करेंगे तो उससे क्या मिलेगा? यह तो किनारे बैठकर किनारे का भजन है। अरे डुबकी मार करके गायत्री के भजन की वास्तविक स्थिति ढूँढ़कर के ला। जहाँ से लोग शक्तिवान बन जाते हैं, सिद्धपुरुष बन जाते हैं, चमत्कारी बन जाते हैं- वहाँ तक डुबकी मार । वहाँ तक डुबकी नहीं मारेगा, किनारे तक बैठा रहेगा और नजर घुमाता रहेगा तो बेटे, सीप मिल सकती है, घोंघे मिल सकते हैं, समुद्र के किनारे। समुद्र दिखाई दे सकता है। झाग मिल सकता है, पर कीमती चीज नहीं मिल सकती। यह कहानी यही कहती है।

सावित्री किसे कहते हैं? सावित्री बेटे गायत्री का ही दूसरा नाम है और सत्यवान? सत्यवान उसे कहते हैं, जिस साधक ने अपना जीवन समय के लिए, सिद्धान्तों के लिए अर्थात् आदर्शों के लिए समर्पित किया है, उस आदमी का नाम है सत्यवान। सावित्री-गायत्री के लिए यह आवश्यक है कि उसका भक्त सत्यवान हो अर्थात् सिद्धान्तवादी हो, आदर्शवादी हो। उत्कृष्ट चिन्तन में लगा हो। कर्त्तव्यों में लगा हुआ हो। इस तरह का अगर कोई व्यक्ति है, तो उसे गायत्री का साधक कह सकते हैं। साहब, हम भी साधक हैं, दिन भर चोरी-चकारी करते हैं,सारी जिन्दगी इसी में व्यतीत करते हैं और सबेरे एक घण्टा वक्त मिल जाता है तो माला लेकर बैठ जाते हैं। बेटे, यह साधना नहीं, उसका मखौल है। इसी तरह कितने लोग पूछते रहते हैं कि चंदन की माला अच्छी होती है कि रुद्राक्ष की। अरे बेटे चंदन से क्या मतलब है या रुद्राक्ष से क्या मतलब है। अपने हृदय की बात कहते हैं, अन्तरात्मा की बात कहते हैं। चन्दन में क्या रखा है और रुद्राक्ष में क्या रखा है। बेटे, तू समझता ही नहीं, अभी साधना के लिए पकड़ना पड़ेगा चेतना का स्तर, जहाँ शक्तियाँ निवास करती हैं, जहाँ भगवान निवास करते हैं, जहाँ आस्थाएँ निवास करती हैं। उस स्थान का नाम, उस स्तर कर नाम वह भूमि है जिसे दिव्यलोक कहते हैं, जहाँ गायत्री माँ निवास करती है, चेतना निवास करती है, जिसको हमने ऋतंभरा-प्रज्ञा कहा है। चलिए हमें ऋतंभरा-प्रज्ञा ही कहने दीजिए। ऋतम्भरा-प्रज्ञा क्या है? वह प्रज्ञा, वह धारणा, वह निष्ठा- जो आदमी को ऊँचा उठा देती है, ऊँचा उछाल देती है। जिसकी प्रेरणा से आदमी ऊँची बातों पर विचार करता है और नीची बातों से ऊँचा उठता चला जाता है, उसे ऋतंभरा-प्रज्ञा कहते हैं। प्रज्ञावान के सामने आदर्श रहते हैं, ऊँचाई रहती है। छोटी-छोटी चीजों को जिनमें कीड़े-मकोड़े लगे रहते हैं, कीड़े-मकोड़े समझता रहता है। चलिए मनुष्य कह देता हूँ, मनुष्यों की शक्ल होते हुए भी आप कीड़े-मकोड़े हो सकते हैं। हम कीड़े-मकोड़े उन्हें कहते हैं, जिनके उद्देश्य दो होते हैं। एक तो पेट पालना और दूसरा कामवासना को पूरा करना। जानवर सिर्फ दो काम के अलावा तीसरा कोई विचार नहीं करते। पेट की भूख उनकी जब जबरदस्ती धक्का मारती है, तो खाना तलाश करने के लिए चल देते हैं। घास खाने के लिए चल देते हैं। पेट भरने के लिए चल देते हैं। शिकार करने के लिए चल देते हैं। पेट की पुकार, पेट की आवश्यकता को पूरा करने के लिए जो आदमी काम करता रहता है, उसका नाम है कीड़ा, उसका नाम है मकोड़ा, उसका नाम है पशु-पक्षी। उसका उद्देश्य केवल पेट भरना है, पैसे इकट्ठा करना है। पैसा और पेट भरना एक ही बात है। छोटे कीड़े पेट भरकर चुप हो जाते हैं। शहद की मक्खी समझदार है, इसलिए अपने छत्ते में जमा कर लेती है। चींटी जरा-सी समझदार है इसलिए अपने बिल में जमा कर लेती है। आदमी जरा कुछ ज्यादा समझदार है, इसलिए बैंक में जमा कर लेता है, जमीन में गाड़ लेता है। फर्क कुछ नहीं है। वह आदमी कीड़ा-मकोड़ा है, पशु और पक्षी है। उसका भी लक्ष्य केवल पेट पालना और औलाद पैदा करना है। बस एक सीमा में ही वह रहना पसंद करता है।

मित्रो! कीड़ा-मकोड़ा वह जिसे कुछ बात ध्यान में नहीं आती, बस पेट भरने जैसा एक फितूर आदमी के दिमाग में हावी होता है। दूसरों पर भी हावी होता है, कीड़े-मकोड़ों पर भी। कीड़े-मकोड़ों में मादा पर हावी होता है, पीछे नर उसका हिमायत करता रहता है, उसकी आवश्यकता पूरी करता है। कीड़े-मकोड़ों में नर ने कभी आज तक किसी मादा को नहीं छेड़ा। छेड़ा होगा तो मादा ने। उसी ने हुकुम दिया होगा। मादा ने इच्छा प्रकट की होगी तो नर ने उसकी सेवा कर दी होगी, बस लेकिन सृष्टि का ये नियम है, कभी कोई नर- कभी कोई जानवर चाहे जितने भी जाति-प्रजाति के क्यों न हों सभी में यही नियम लागू होता है। बकरियों के झुण्ड में आप चले जाइये। एक बकरे को देखिए। बकरा चुपचाप कान लटकाये चल रहा होगा। बकरियाँ सौ होंगी, पर क्या मजाल कि बकरा किसी को आँख उठाकर देख ले, किसी की तरफ किसी

कर्नाटक के छोटे-से गाँव उडुपी में नैष्ठिक ब्राह्मण के यहाँ एकमात्र सन्तान कन्या हुई। सभी उन ब्राह्मण श्री निर्मल पर दबाव डालने लगे कि दूसरा विवाह कर लें, शायद उससे पुत्र प्राप्त हो जाय, वंश चले। श्री निर्मल ने दृढ़ता से इसे अस्वीकार कर दिया। कन्या का नाम था- अक्का महादेवी। उन दिनों कन्याओं को शास्त्रज्ञान के अयोग्य माना जाने लगा था। श्री निर्मल ने अक्का को सभी शास्त्रों का अध्ययन कराया, ज्ञान दिया एवं आध्यात्मिक दिशा दी। रूढ़िवादी लोग निर्मल का उपहास करते, कहते-"क्या लड़की से वंश चलेगा?" शिक्षा और वातावरण के प्रभाव से अक्का महादेवी का व्यक्तित्व विकसित होता गया। वे एक महान तपस्विनी, आदर्शवादी विदुषी के रूप में प्रसिद्ध हुईं और पिता का नाम रोशन कर दिया। आज भी लोग श्री निर्मल का नाम अमर अक्का महादेवी के पिता के रूप में जानते हैं।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

को तंग कर दे। वह बकरी को कभी छेड़ेगा नहीं। बकरी का समय जब आ जाएगा और वह इशारा करेगी तो बकरा सेवा भी करेगा, लेकिन मनुष्य? मनुष्य की वह मर्यादाएँ भी चली गईं। जानवर दो काम करते हैं- तीसरा कोई काम नहीं। जब उन पर खुराफात सवार होती है, काम-वासना के सम्बन्ध में दिमागी खुराफात पैदा होती है, तो वे कामसेवन कर लेते हैं। बच्चे पैदा कर लेते हैं। बस यही दो काम हैं, उनको तीसरा कोई काम नहीं है। आज का इनसान भी पशु है, कीड़ा-मकोड़ा है, उसके सामने भी जीवन का कोई लक्ष्य नहीं, केवल दो ही लक्ष्य हैं। सारा समय, सारा श्रम, सारी अक्ल, सारी सत्ता उसी काम में खर्च हो जाती है। किसमें, पेट भरने में और बच्चे पैदा करने में और शादी-ब्याह करने में। काम-वासना के ख्वाब देखने और सपने देखने में। बेटे इनका नाम पशु और कीड़े ही हो सकता है, आदमी नहीं हो सकता।

नासमझी पर विजय प्राप्त कराने वाली मनःस्थिति है गायत्री-

बेटे! ऋतंभरा-प्रज्ञा किसको कहते हैं? ऋतंभरा-प्रज्ञा उसे कहते हैं, जो आदमी को उछाल देती है, ऊपर की तरफ। ऊँचे पर जाने वाली चीजों को कभी आपने देखा होगा। हवाई-जहाज में हमने बहुत सारे सफर किए हैं। हवाई-जहाज के सफर में हमने देखा तो नीचे जमीन की चीजें बहुत छोटी-छोटी जान पड़ीं। हमने हवाई-जहाज में से चलती हुई रेलगाड़ियाँ देखीं। रेंगते हुए मनुष्यों को देखा, छोटे-छोटे मेढकों के तरीके से जानवरों को देखा, जरा-जरा से फुदकने वाले जानवरों के तरीके से वे ऊपर से नन्हें-नन्हें दिखाई पड़ते थे। खेत देखे, गन्ने के खेत ऐसे मालूम पड़ते थे जैसे जरा-जरा से घास-फूस हों और मित्रो, हमने तालाब देखे, झीलें देखीं, नदियाँ देखीं, एक लकीर की तरीके से पानी की बहती हुई जरा-जरा-सी झीलें। आदमी जब उछल जाता है ऊपर की तरफ, तो उसमें दो बातें हो जाती हैं। एक तो यह कि जितना दायरा दिखाई पड़ता था, पहले मान लीजिए यहाँ से इतनी लम्बी-चौड़ी जगह दिखाई पड़ती है, अब हम अगर किसी टीले पर खड़े हो जाएँ तो हमें टीले पर से चार मील दायरा दिखाई पड़ेगा। हवाई जहाज पर जब आप चले जाएँगे तो आपको ढाई सौ मील की लम्बाई-चौड़ाई का दायरा दिखाई पड़ेगा। ऊँचे उठे हुए व्यक्ति का दायरा बड़ा हो जाता है और विचार करने का देखने का और सोचने का स्तर ऊँचा उठ जाता है, तब जबकि ऋतंभरा-प्रज्ञा जग जाती है। ऐसे व्यक्ति के लिए वे सभी वस्तुएँ, चीजें बिल्कुल नाचीज हैं, जिनकी जीवन में कुछ खास अहमियत नहीं है। आदमी की दैनिक जीवन की जरूरतें बिल्कुल थोड़ी-सी हैं, नगण्य हैं। पेट भरने को जरा-सा मुट्ठी भर अनाज चाहिए, तन ढँकने को मुट्ठी भर कपड़ा चाहिए और रहने को जरा -सी जगह चाहिए। आदमी की जरूरतें इतनी कम हैं कि छः फुट लम्बे आदमी का पेट आसानी से भरा जा सकता है और आदमी खुशी की जिन्दगी जी सकता है, पर आदमी जिस बेअक्ली की वजह से, जिस बेवकूफी की वजह से सारी जिन्दगी दुखों में व्यतीत कर देता है, कष्टों में व्यतीत कर देता है, चिन्ताओं में व्यतीत कर देता है, वह बेटे, नासमझी है। इस नासमझी पर विजय प्राप्त करने वाली जो हमारी मनःस्थिति है, उसका नाम है ऋतंभरा-प्रज्ञा। जीवन का लक्ष्य क्या हो सकता है? जीवन में शान्ति कहाँ से आ सकती है? जीवन की दबी हुई सामर्थ्यों को हम कैसे विकसित कर सकते हैं? ये हमारी मूर्च्छित सामर्थ्य है, शोचनीय सामर्थ्य है, गयी-गुजरी सामर्थ्य है, लेकिन इससे अत्यधिक महत्त्वपूर्ण जो सामर्थ्य हैं, उनको विकसित करने के लिए क्या करना चाहिए और कैसे करना चाहिए, ये समझ और ये अक्ल जहाँ से आती है उसका नाम ऋतंभरा-प्रज्ञा है।

गायत्री किसका नाम है? ऋतंभरा-प्रज्ञा की। गायत्री किसे कहते हैं? ऋतंभरा-प्रज्ञा को। गायत्री कोई देवी नहीं होती, कोई देवता नहीं होता। ऋतंभरा-प्रज्ञा का ही नाम गायत्री है। वास्तव में अगर यही ऋतम्भरा-प्रज्ञा हमारे ऊपर प्रसन्न हो जाय तो हमको मालदार कर सकती है, सावित्री और सत्यवान के तरीके से। अगर वही गायत्री जिसको हमने ऋतम्भरा-प्रज्ञा के नाम से कहा है, हम पर प्रसन्न हो जाए तो हमको गुरु वशिष्ठ बना सकती है, विश्वामित्र बना सकती है और हम विश्वामित्र के तरीके से राजपाट को भी ठोकर मार दें और ऋतम्भरा-प्रज्ञा को प्राप्त करने के लिए कोशिश करें। ऋतंभरा-प्रज्ञा अर्थात् गायत्री को प्राप्त करने के लिए हमें क्या करना होगा या क्या करना चाहिए? पुराणों की कहानियाँ, जिसको आपने सब कुछ मान लिया है। जिसको आपने जाने क्या मान लिया है, जाने क्यों मान लिया है। ऋतम्भरा-प्रज्ञा गायत्री मन्त्र की शक्ल और सूरत हमको बताइए कि गायत्री माता किसे कहते हैं? गायत्री माता उसे कहते हैं बेटे, जो एक जवान महिला है। जवान महिला के दो पैर हैं। एक भौतिक पहलू और दूसरा आध्यात्मिक पहलू। भौतिक पहलू यह होता है कि इसकी नाक कैसी है? कान कैसे हैं? मुँह कैसा है? दाँत कैसे हैं? ये किस काम आ सकता है? यह रूप और सौन्दर्य के देखने में काम आ सकता है? कामवासना के सेवन करने में आता है। हँसी-मजाक करने के काम आता है। ये

जो शुभ कर्म कर डालने में देर करता है, वह चूक जाता है और जो अशुभ कर्म करने में जल्दबाजी करता है, वह भी चूक जाता है। इसीलिए कहा गया है कि अशुभ करते समय जरा सोचो, थोड़ी देर रुको, थमो, ठहरो। किन्तु शुभ विचार आते ही उसे क्रियान्वित करने में देर न करो।

कलेवर, कलेवर हैं। कलेवर स्थूल है, लेकिन नारी की जो छवि गायत्री माता की छवि के रूप में हमने आपको बताई थी, उसके अन्दर एक और विशेषता है। नारी के भीतर नारी का प्राण है। नारी का प्राण क्या है? नारी किसे कहते हैं? देवता कभी देखे हैं आपने? नहीं साहब, देवता हमने नहीं देखे। सपने में देखे हैं,अच्छा आइए हम आपको देवता दिखा सकते हैं। दिखाइए? अच्छा तो हम आपको पहले देवी दिखा दें तो फिर एतराज तो नहीं है आपको, नहीं साहब! देवी नहीं दिखा सकते हैं, तो आप भले ही देवता दिखा दीजिए। पहले आप दिखा दीजिए कुछ भी।

चलिए हम आपको पहले दिखाते हैं एक महिला की तस्वीर, हम आपके सामने पेश करते हैं एक महिला को, देवी के रूप में। देवी के रूप में जब हम देखते हैं, किसी स्त्री के भीतर प्रवेश करते हैं, उसकी अन्तरात्मा में झाँकते हैं तो उसके अन्दर साक्षात देवी का दर्शन

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

होता है। समर्पण की देवी, प्रेम की देवी, स्नेह की देवी, बलिदान की देवी, जिसने अपनी सारी जिन्दगी, सारी महत्त्वाकांक्षाओं को समाप्त किया, कोई विवाह करके आयी, समर्पित जीवन लेकर के आयी। पति के आगे उसने अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया। उसने कहा- आप जैसा हुक्म करेंगे, वैसा हम करेंगे। जो आप खिलाएँगे वह हम खाएँगे, आप जो काम करने के लिए कहेंगे, वह हम करेंगे। बेपैसे के गुलाम होकर के हम रहेंगे। जैसे भी आप रखेंगे हम रह लेंगे, गाली देंगे आप तो भी हम बर्दाश्त करेंगे। हम आपके इशारे पर आपकी छाया के तरीके से रहेंगे। समर्पण कौन कर सकता है ? समर्पण बेटा बहुत मुश्किल है। गीता में भगवान कह गये हैं- **मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धिं निवेशय। निवसिष्यसि मय्येव अत ऊर्ध्वं न संशयः ॥**

उन्होंने कहा- अरे ! मूर्खो अपनी अक्ल तो हमको दे दो । अपनी इच्छाएँ हमको दे दो। अपना सामान हमको दे दो। लेकिन उनकी बात को मंजूर नहीं किया। हर एक ने कहा- हम आपको अक्षत चढ़ा सकते हैं, चन्दन चढ़ा सकते हैं और आपकी आरती उतार सकते हैं, लेकिन देने के लिए अँगूठा है। हम भी यही कहते और करते रहे, लेकिन हमारी देवी ने समर्पण करके दिखा दिया। बेटे देवी है इसके भीतर। कौन-सी देवी है ? समर्पण जिसका उद्देश्य है । समर्पण जिसका स्वभाव, समर्पण जिसकी प्रकृति है।

मित्रो ! देवी है वह । कौन ? जिसने एक नन्हें-से भ्रूणकलल को अपने कलेजे में छिपाकर रखा और नौ महीने तक अपना रक्त और अपना मांस और अपनी हड्डियाँ निचोड़ करके खिलाती रही और पिलाती रही और अपने शरीर में से छह पौण्ड का - साढ़े सात पौण्ड का एक बच्चा पैदा कर दिया। साढ़े छह पौण्ड खून आप दीजिए हमको। नहीं महाराज जी, हम तो नहीं दे सकते। बेटे ? हमारे शरीर में खून की कमी है और डॉक्टर ने कहा है कि इसमें आधा पौण्ड खून चढ़ा दे गुरुजी के तो हम मोटे हो जाएँगे। अपना खून दे जा। नहीं महाराज जी, हम तो नहीं दे सकते। आधा पौण्ड भी नहीं दे सकता। लेकिन बेटे, साढ़े छह पौण्ड रक्त और मांस और हड्डियों में से हड्डियाँ निकाल करके उसने दी जब बच्चा पैदा हुआ। बच्चा पैदा होने के समय में कितनी मुसीबतें उठाईं और पैदा होने के पश्चात अपनी छाती का दूध लाल रंग के खून को सफेद रंग के दूध में बदल कर के पिलाती रही बच्चे को। रात को वह टट्टी करता रहा, पेशाब करता रहा, चिल्लाता रहा, नींद हराम करता रहा। सारी रात माँ गीले में सोती रही और उसे सूखे में सुलाती रही। किसी ने कहा- ये बड़ा अभागा बच्चा है, क्यों पैदा हो गया- वह कहती रही यह तो हमारा भाग्य है, जो हमारी गोदी में बच्चा आ गया। बेटे इसे क्या कह सकता हूँ । यह देवी है। नारी का अर्थ है- देवी। अगर आप गहराई में प्रवेश करें तब और अगर बाहर से देखें तो नारी का अर्थ है भोग्या ? उसके कान को देखिए, अलग-अलग स्थान को देखिए, कामुकता के हिसाब से देखिए, वासना के हिसाब से देखिए तो वह भोग्या है। लेकिन अगर आप गहराई में जाएँ तो वह देवी है।

फोटो को नहीं देखें, तत्त्वदर्शन को समझिए-

बेटे ! मैं यह कह रहा था आपसे कि चमड़े की आँख से नारी को देखने की अपेक्षा ऋतम्भरा-प्रज्ञा की आँखों से, दिव्य चक्षु से देखना शुरू कीजिये। हमने आपको अभ्यास कराया था गायत्री माता का फोटो दे करके कि आप इनको माता के रूप में देखिए। बेटे ! यह माता नहीं है तो क्या है ? शिवाजी ने एक मुसलमान महिला को देखा, जो उसके लिए लाई गयी थी। उसे देखते ही उन्होंने कहा- यह तो मेरी माँ हो सकती है। यदि ऐसी खूबसूरत हमारी माँ होती तो हम भी इतने खूबसूरत क्यों न होते ? उस खूबसूरत औरत में उन्होंने अपनी माँ को देखा और माता को देखकर के विदा कर दिया। विदा करने के बाद में देवी ने प्रसन्न होकर के उनके हाथ में अक्षय तलवार दी और कहा कि यह तलवार अक्षय है। शिवाजी जहाँ चाहे लड़ेगा, इसकी कभी हार नहीं हो सकती। यह कौन-सी देवी थी ? यह वो देवी थी जिसके नारी के रूप में एक खूबसूरत महिला के रूप में शिवाजी ने अपनी माता का साक्षात्कार किया और गांडीव क्या था। कहाँ से आया था गांडीव ? वहीं से आया था जहाँ गहराई की दृष्टि से ऋतम्भरा-प्रज्ञा मिली थी। नारी को उसने प्रज्ञा से देखा । जब देवताओं की सहायता करने के लिए अर्जुन स्वर्गलोक में गए और स्वर्गलोक में प्रसन्न होकर के देवताओं ने उस लोक की सबसे ज्यादा सुन्दर महिला को उनके पास भेजा। उस महिला को देखकर उन्होंने पूछा- क्यों आयी है ? बेचारी क्या कहती। कहने लायक बात हो तो बताए। देवताओं का उद्देश्य बता करके बेचारी अपने ढंग से कहने लगी । पुराने समय की भाषा अलग थी। उसने कहा- आपके जैसा बच्चा हमारे पेट में हो जाता तो कितना अच्छा होता।

रमण महर्षि के आश्रम में कुछ लड़के भी रहने लगे थे। उनमें से एक लड़का गोशाला में सोया करता था। उसके पास कोई बिस्तर नहीं था। महर्षि की निगाह लड़के पर पड़ी। रमण महर्षि ने दयार्द्रभाव से लड़के से पूछा- तुम रात को भी यहीं सोते हो? लड़के ने कहा- हाँ भगवन् । और रात को ओढ़ते क्या हो? उत्तर में लड़के ने अपनी फटी चादर दिखाई। महर्षि ने फिर कहा- इससे तुम्हें जाड़ा नहीं लगता क्या ? लगता है प्रभु। लड़के के उत्तर में फड़कती सर्दी की पीड़ा उभर आयी। लड़के का उत्तर सुनकर महर्षि तत्काल अपनी माँ के कुटीर में लौट आए। उन्होंने माँ की दो पुरानी साड़ियाँ लीं। थोड़ी-सी रुई मँगवाई और वे गुदड़ी तैयार करने लगे। उनकी माँ भी बैठकर महर्षि का सहयोग करने लगीं। अपनी माँ की सहायता से थोड़ी ही देर में उन्होंने खोल सिल लिया। उसमें रुई डालकर कुछ ही घण्टों में गुदड़ी तैयार हो गयी। वे खुद ही जाकर उसे उस लड़के को दे आए।

दूसरे दिन प्रातः रमण महर्षि ने स्वयं गोशाला जाकर उस लड़के से पूछा- रात कैसी नींद आयी। लड़के ने कहा- बहुत मीठी नींद सोया, भगवन ! उस लड़के का उत्तर सुनकर महर्षि के मुखमण्डल पर सच्चे आत्मज्ञान की प्रभा फैल गयी। आत्मवत सर्वभूतेषु उनके लिए शब्द नहीं सच्ची अनुभूति थे।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

उद्देश्य अर्जुन समझ गया। उसने कहा- मेरे दरवाजे से खाली हाथ तो कोई गया नहीं, मैं आपकी भी सहायता करूँगा और आपको मेरे जैसा ही बच्चा पैदा हो जाएगा। लेकिन जो तरीका आप चाहती हैं, वह सही नहीं है। आप क्या हैं? आप मेरी माँ कुन्ती के समान हैं और मैं आपका बेटा, ठीक है, यह कहकर वह चली गयी और उसने जाकर अपने देवताओं को बताया । जब मैं गयी तो उसने मेरे चरणों की धूल अपने मस्तक पर लगाई और कहा- आप हमारी माँ और मैं आपका बेटा! हमने उसके मस्तक पर हाथ रखा कि तू हमारा बेटा है। मेरे से वह काम नहीं हो सका, जिसके लिए भेजा गया था। देवताओं ने कहा- ठीक है यदि वह ऐसा शालीन है ऐसी मजबूत ऋतम्भरा-प्रज्ञा वाला है तो हम उसे जरूर अनुदान-वरदान देंगे।

यह है अध्यात्म-शक्ति, आत्म-शक्ति, आत्म-चेतना, जिसकी हम उपासना कराते हैं। अर्जुन की उपासना को देखकर देवताओं ने कहा- इसे कोई बड़ा उपहार देना चाहिए, कोई बड़ा चमत्कार देना चाहिए, कोई बड़ी सिद्धि देनी चाहिए, कोई बड़ा वैभव देना चाहिए, कोई बड़ा यश देना चाहिए। अर्जुन को देवताओं ने गांडीव दिया। देवताओं के गांडीव लेकर के आये थे अर्जुन। गांडीव किसे कहते हैं- बेटे! बांक के बने हुए तीर-कमान को कहते हैं। यह गांडीव कितना जबरदस्त था कि इसने अकेले ही महाभारत पर विजय प्राप्त कर ली। इतना ही जबरदस्त हो सकता है गांडीव । गांडीव किसे कहते हैं ? तलवार में ताकत होती है। नहीं बेटे ! आत्मबल में ताकत होती है। तो क्या कलाई में ताकत होती है? बेटे! कलाई में भी ताकत होती है। कलाई में दर्द हो रहा है या कलाई नहीं होगी तो तलवार क्या काम करेगी? कलाई में दर्द हो रहा है तो भी तलवार चला, हमने तुझे २५० रुपये की तलवार दी है। अरे साहब! तलवार कौन उठाएगा, हमारे तो हाथ में दर्द होता है। हाँ बेटे! तलवार नहीं चलती, हाथ नहीं चलते, हिम्मत चलती है। पुरानी बंदूकों को देखकर लोग शोर मचाते हैं। बंदूक लिए जो व्यक्ति फिरता है, अगर हाथ में ताकत नहीं है तो चोर आता है और चाँटा मारता है और बंदूक भी छीन ले जाता है और कारतूस भी छीन ले जाता है। बंदूक चलती है? नहीं बेटे! कलाई चलती है? नहीं हिम्मत चलती है। इसलिए जो कुछ भी दिया होगा, मैं समझता हूँ देवताओं ने अर्जुन को तो क्या दिया होगा? आत्मबल दिया होगा। जो दुनिया की सबसे बड़ी कूवत और सबसे बड़ी ताकत और सबसे बड़ा वैभव है। उससे बड़ा कोई वैभव नहीं हो सकता। किस कीमत पर दिया था? गायत्री को माता माना था। स्त्री को माता माना था। ये क्या बात कह रहा हूँ मैं। ऋतम्भरा-प्रज्ञा का यह एक नमूना है। नारी के भीतर गहराई में जाइए और उसके भीतर देवी को देखिए। ❁

क्रमशः अगले अंक में

भगवान बुद्ध जन-जागरण के लिए शिष्य समुदाय के साथ देश-भ्रमण कर रहे थे। एक शहर से दूसरे शहर जाते समय श्मशान भूमि आयी। वहाँ एक चिता जल रही थी, जो बुद्ध के एक शिष्य के संसारपक्षीय पिता की थी।

चिता के पास से गुजरते समय शिष्य को पता चल गया कि यह चिता उसके मृत पिता की है और वहाँ पर एकत्र भीड़ उसी के बन्धु-बान्धवों एवं सगे-सम्बन्धियों की है। फिर भी वह नहीं रुका। पूर्ववत महात्मा बुद्ध के साथ चलता रहा।

तथागत ने उसे टोका और निर्देश दिया कि जब तक तुम्हारे पिता की चिता बुझ न जाए, तब तक तुम श्मशान भूमि में बैठे रहो। अपने शास्त्र के आदेशानुसार वह शिष्य वहीं रुक गया। बाकी जन आगे बढ़ गए।

संयोग से आगे भी इसी दृश्य की पुनरावृत्ति हुई। इस बार भी श्मशान में महात्मा बुद्ध के ही अन्य किसी शिष्य के पिता का मृत शरीर जल रहा था। जैसे ही शिष्य को पता चला कि उसके पिता का दाह-संस्कार हो रहा है वह अपने यात्रासंघ से हटकर श्मशान में अपने बन्धु-बान्धवों के साथ जा बैठा।

भगवान बुद्ध को जब पता चला कि उनका शिष्य अपने पिता के अन्तिम संस्कार में शामिल होने श्मशान में जा बैठा है, तो वे उधर मुड़े और उस शिष्य को हाथ पकड़कर उठा लाए। साथ में चल रहे सैकड़ों शिष्यों के मन में जिज्ञासा जगी कि क्या कारण है कि तथागत एक शिष्य को पिता के दाह संस्कार में स्वयं भेज रहे हैं और दूसरे को स्वयं ही हाथ पकड़कर उठा लाए हैं।

भगवान बुद्ध ने अपने होंठों पर हल्का-सा स्मित लाते हुए शिष्यों को सम्बोधित करते हुए बताया- शिष्य मैं जानता हूँ, तुम सब जिज्ञासाकुल हो, क्योंकि मैंने एक जैसी दो घटनाओं के लिए भिन्न-भिन्न आदेश दिए हैं। लेकिन परिस्थिति की समानता के बावजूद मनःस्थिति भिन्न थी। पहला शिष्य बिल्कुल अव्यावहारिक था। उसका कर्त्तव्य था कि असमय में उसके पिता की मौत हुई तो वह अपने पारिवारिकजनों को सान्त्वना दे। इसलिए मैंने उसको श्मशान भूमि में रोक दिया। दूसरा शिष्य मोहाकुल था। अपने पिता की मौत पर वह संसारी लोगों की तरह विलाप कर रहा था। भिक्षु के लिए शोकाकुल होना अच्छी बात नहीं है। इसीलिए मैं उसे श्मशान भूमि से उठा लाया। हमेशा ध्यान रखो-- सद्गुरु -शिष्य की आन्तरिक स्थिति को भली-भाँति जानते हैं, उसी के अनुरूप उसे निर्देश देते हैं, उसकी व्यवस्था करते हैं, गुरु आदेश के प्रति सदा-सर्वदा श्रद्धा उचित है न कि शंका।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी-

गायत्री महाविद्या एवं उसकी साधना

(उत्तरार्द्ध)

पूर्व अंक में गायत्री महाविद्या के तत्त्वदर्शन एवं साधना के मर्म के विषय में पूज्यवर की अमृतवाणी पाठकगण पढ़ चुके हैं । उसी का उत्तरार्द्ध यहाँ प्रस्तुत है । जहाँ तक पिछला क्रम छोड़ा था, वहाँ चर्चा मनःसंयम, मनोनिग्रह, आत्मबल-संवर्द्धन की चल रही थी ।

मित्रो ! मनोनिग्रह हेतु अब और भी आगे बढ़ें । इसके लिए क्या करें ? **'मातृवत् परदारेषु, लोष्ठवत् परद्रव्येषु, आत्मवत् सर्वभूतेषु'** ये तीन आधार हैं, ये तीन कसौटियाँ हैं, जिनके ऊपर कसा जा सकता है कि आप फल प्राप्त करने के अधिकारी भी हैं कि नहीं और आत्मबल आपको मिल भी सकता है कि नहीं, आत्मबल आप सँभाल भी सकते हैं कि नहीं और आत्मबल की जिम्मेदारी वहन करने के लायक आपके भीतर कलेजा और हिम्मत है भी कि नहीं । ये बेटे तीन परीक्षाएँ हैं । ये तीन पेपर हैं पी. एम. टी. के। मेडिकल कॉलेज में भर्ती होने के लिए तीन पेपर दीजिए । नहीं साहब, हम पेपर नहीं देना चाहते । हम तो धक्का मारकर मेडिकल कॉलेज में घुसना चाहते हैं । नहीं, ऐसा नहीं हो सकता । इम्तिहान दीजिए, पास होइए । पी. एम. टी. में डिवीजन लाइए और हम आपको दाखिल कर लेंगे । नहीं साहब, धक्का-मुक्की चलेगी । हम तो धक्के मारेंगे और धक्के मारकर सबसे आगे निकल जाएँगे । बेटे, पहले रेलवे-स्टेशनों पर ऐसा होता था हमारे जमाने में । जो धक्के मारता था वो सबसे आगे चला जाता था । टिकट वही ले आता था । बाकी रह जाते थे । अब तो 'क्यू सिस्टम' हो गया है ना । आप कमजोर हैं ना । सबसे पीछे खड़े हो जाइए । नहीं साहब, वह पीछे वाला पहलवान खड़ा हुआ है । हटाइए उनको, नम्बर से खड़ा होना पड़ेगा । जो धक्के मारेगा वह आगे चला जाएगा, यह सब पुराने जमाने में चलता था और धक्के मारने वाला टिकट ले आता था, पर अब धक्केशाही चलती नहीं । साहब हम तो धक्के मारेंगे, किस में मारेंगे, भगवान जी को धक्के मारेंगे और सबसे पहले वरदान ले आएँगे । धक्केशाही नहीं चलेगी अब, लाइन में खड़ा हो, 'क्यू' में खड़ा हो और अपनी जगह साबित कर और हैसियत साबित कर और वह वरदान ले आ, ताकत ले आ ।

गायत्री का अनुग्रह हर सुपात्र के लिए

गायत्री मन्त्र क्या हो सकता है, यह मैं आपको समझा रहा था । यह समझा रहा था कि गायत्री की कृपा और गायत्री का अनुग्रह हर आदमी को नहीं मिल सकता, माला घुमाने से नहीं मिल सकता । माला घुमाने से मिला होता तो आप में से हर एक को मिल गया होता । आप गायत्री मन्त्र की माला कब से घुमा रहे हैं? अरे साहब, बहुत दिन हो गए । आपको-छह वर्ष, आपको-ग्यारह वर्ष, आपको-तीस वर्ष हो गए, पर आपको क्या मिला ? महाराज जी, बस यही मिला है कि नाक कट गयी तो कह दिया कि नाक की ओट में भगवान छिपा हुआ है, अब कट गयी तो भगवान दीखने लगा है । बस इसी तरह ग्यारह माला जप करते हुए हमें २२ वर्ष हो गए और हम यूँ कहें कि हमें कुछ फायदा नहीं होता, तो सब लोग यही कहेंगे कि अरे तू तो बड़ा पागल है, तूने काहे को नाक कटा ली, इसीलिए हम तो यही कहते रहते हैं हर एक से कि गायत्री माता अभी है, हमको प्रत्यक्ष तो नहीं दिखाई पड़ती, पर रात को सपने में दिखाई पड़ती है । सपने में दिखाई पड़ती है, तो क्या लेकर आती है तेरे लिए ? नहीं महाराजजी, लेकर तो कुछ नहीं आती मेरे लिए, वैसे ही खाली हाथ आ जाती है । धत् तेरे की । अबकी गायत्री माता मिलेगी, तो खूब गालियाँ सुनाऊँगा । हमारे यहाँ तो कुछ लेकर आए हो । हाँ महाराजजी, देखिए हम तो केला लेकर आए । हाँ बेटा, खाली हाथ साधु के यहाँ नहीं आते । केला लेकर जरूर आना चाहिए और तू लेकर भी आया था । जब हम किसी के घर जाते हैं, तो बच्चों और छोटों को देख लेते हैं । बच्चे घर में हैं क्या । टॉफी लेकर के जाते हैं । लेमनचूस लेकर के जाते हैं । कुछ लेकर जाते हैं । गुरुजी आए हैं, प्रसाद लेकर के आए हैं । मथुरा-वृन्दावन का प्रसाद लेकर के आए हैं । बेटे, कुछ लेकर के जाते हैं ? खाली हाथ नहीं जाते । रात में सपने में हनुमानजी तेरे लिए कुछ लेकर के आते हैं । नहीं महाराजजी, खाली हाथ आते हैं । धत् तेरे की । अब मुझे मिलेगा, तो मैं गाली सुनाऊँगा हनुमानजी को । कहूँगा तू मेरे बेटे के यहाँ गया था और सपने में दिखाई पड़ा, पर तुझसे यह भी नहीं बन पड़ा कि पाँच सौ रुपयों के नोटों की गड्डी तो दे जाता । नहीं महाराजजी, वह तो कभी नहीं दे गए । धन्य हैं तेरे सपने के हनुमानजी । बेटे ! सपने का हनुमान कोई चीज नहीं दे सकता ।

ऋतम्भरा-प्रज्ञा प्राप्त करनी हो तो हंस बनें

मैं यह चाहता था कि अब गायत्री की शिक्षा, गायत्री की वास्तविकता आपको बताऊँ । कलेवर सिखाने के बाद में वह बात सिखाऊँ, जहाँ से गायत्री के चमत्कार, गायत्री की सिद्धियाँ, गायत्री का गौरव छिपा हुआ है । बेटा यह सब वहाँ छिपा हुआ है, जिसको हम ऋतम्भरा-प्रज्ञा कहते हैं । वास्तव में गायत्री का अर्थ आज ऋतम्भरा-प्रज्ञा करना पड़ेगा । ऋतम्भरा-प्रज्ञा कैसी होती है ? बेटे ! ऐसी होती है ऋतम्भरा-प्रज्ञा, जिसको जो कोई भी आदमी अपने काम

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

में लाएगा उसको कई तरीके अख्तियार करने पड़ेंगे । गायत्री का वाहन हंस है । गायत्री किस पर सवार होगी ? हंस पर सवार होगी और किस पर सवार होगी ? कौवे पर । नहीं महाराजजी, कौवे पर नहीं हो सकती गायत्री, हंस पर सवार होती है । हंस किसे कहते हैं । हंस एक प्रतीक है । तू समझता क्यों नहीं है । अरे ये प्रतीक हैं । हंस पर गायत्री नहीं बैठ सकती । हंस पर कैसे बैठ सकती है, हंस तो जरा-सा होता है और गायत्री कितनी बड़ी होती है बता और इतनी बड़ी गायत्री हंस पर बैठेगी, तो क्या हो जाएगा बेचारे का ? बेचारे का कचूमर निकल जाएगा । हंस पर क्या करेगी बैठकर ? गायत्री को बैठना होगा तो मोटर मँगा देंगे । हैलीकॉप्टर मँगा देंगे । गायत्री माँ को बैठना होगा तो हवाईजहाज दिला देंगे । गायत्री माँ को जाना होगा तो बेचारे गरीब हंस पर क्या बैठना होगा ? हंस पर नहीं, उस पर तो पैर समेटने की भी जगह नहीं है, पालथी मारकर भी नहीं बैठ सकती । जैसे चेयर होती है पैर पसारने की, वैसी भी जगह नहीं है उस पर, टाँग को समेट कर बैठे तो भी उस पर नहीं बैठ सकती । अत: वह हंस पर क्या बैठेगी ? हंस की आफत आएगी । फिर क्या है हंस ? हंस बेटे ! वह व्यक्ति है जिसकी दृष्टि ऋतम्भरा-प्रज्ञा के अनुकूल है । ऋतम्भरा-प्रज्ञा कैसी होती है, जैसे हंस की होती है । हंस की कैसी होती है ? हंस कीड़े नहीं खाता । वह मोती खाता है अर्थात् जो मुनासिब है, जो ठीक है, जो उचित है, उसको करेगा, पर जो गैरमुनासिब है, अनुचित है, उसके बगैर काम नहीं चलेगा तो मर जाएगा, भूखा रह लेगा, चाहे मरना ही क्यों न पड़े, पर न तो कुछ अनुचित करेगा और न अभक्ष्य खाएगा । वह सोच लेगा कि न खाने से क्या आफत आ जाएगी । अच्छा साहब मरेंगे, पर गलत काम नहीं करेंगे । ऐसी क्रिया का नाम है, सफेद-स्वच्छ-निर्मल हंस । हंस उस व्यक्ति का नाम है, जो नीर और क्षीर का भेद करना जानता है । पानी और दूध को मिलाकर दीजिए । नहीं साहब, पानी हमें नहीं लेना है । हमको दूध लेना है । दूध को फाड़कर अलग कर देगा । पानी को फेंक देगा और दूध को ले लेगा । यहाँ भी वही स्थिति है । हंस केवल उचित को ही ग्रहण करता है, अनुचित को नहीं ग्रहण करता । ऋतम्भरा-प्रज्ञा उसी चीज का नाम है । इसे ही जाग्रत करने के लिए हम आपको गायत्री की साधना कराते हैं ।

साधना का प्राण समझें

मित्रो ! साधना-उपासना का प्राण है-समर्पण । बस समर्पण कर लीजिए, फिर देखिए ऐसे ही मारा-मारी की आवश्यकता नहीं पड़ेगी । मैं पहले ही कहे देता हूँ कि माला मत फिरा, समर्पण करना सीख । बेटा ऐसा कर, इसमें बाँस की बाँसुरी की तरह अपने को खाली कर दे । फिर देख मजा आ जाएगा । नहीं गुरुजी, आप तो कर्मकाण्ड बता दीजिए, क्रिया-कृत्य बता दीजिए । बेटे अभी हम इसी कलेवर की बात कह रहे थे, लेकिन बेटे कलेवर ही सब कुछ नहीं है । प्राण को भी समझ । प्राण किसे कहते हैं ? प्राण उसे कहते हैं जिसमें हमें अपनी चेतना का परिमार्जन करना पड़ता है और चेतना को साफ करना पड़ता है । चेतना की जो गलतियाँ हैं, चेतना की जो भूलें हैं, चेतना में जो दोष हैं, चेतना के ऊपर जो भ्रम-आवरण और मल-विक्षेप चढ़े हुए हैं, उनको हमें धोना पड़ता है, साफ करना पड़ता है और ऐसी रगड़ाई करनी पड़ती है जैसे कि जंग खाए हुए लोहे के बर्तन को साफ करने के लिए, चमकाने के लिए ऐसे रगड़ना पड़ता है, कभी जूट से रगड़ते हैं, तो कभी ईंट से रगड़ते हैं कभी बालू से रगड़ते हैं । बार-बार रगड़ते हैं, नहीं साफ होता है, तो फिर रगड़ते हैं और जब तक जंग साफ नहीं हो जाती है, जब तक चमकने नहीं लगता, तब तक रगड़ते ही रहते हैं । अपनी अन्तर्चेतना पर भी जो मल, आवरण और दोष के तीनों आवरण चढ़े हुए हैं, इनको साफ करने के लिए जो हमको मेहनत करनी पड़ती है, मशक्कत करनी पड़ती है, लड़ाई लड़नी पड़ती है, सख्ती बरतनी पड़ती है, उसको साधना कहते हैं 'मन साधे सब सधे' यही साधना का स्वरूप है ।

मैं अब आपको समझाने की कोशिश करूँगा कि साधना का स्वरूप क्या हो सकता है ? असली साधना क्या है ? नकली की तो मैं क्या कहूँगा आपसे । असली साधना कैसे की जाती है ? यह बताता हूँ आपको । असली साधना करता है किसान । किसके साथ-जमीन के साथ । जमीन के साथ में क्या काम करता है ? बेटे ! धूप में खड़ा रहता है । रगड़ता रहता है, खोदता रहता है, गोड़ता रहता है । साल भर तक अपना शरीर और अपना पसीना इस मिट्टी में मिला देता है । ठीक साल भर बाद इस मिट्टी में पसीना मिलाने के बाद में क्या करता है ? फसल पैदा होती है । अनाज पैदा होता है और मालदार हो जाता है । अपने आपके साथ में करेगा रगड़, तो गेहूँ का खेत जिस तरीके से फसल देने लगता है उसी तरीके से हमारी परिष्कृत चेतना फसल दे सकती है और मैं बताऊँ ? अभी मैं बताता हूँ कि उपासना कैसे की जाती है ? उपासना ऐसे की जाती है, जैसे कि अपने शरीर को पहलवान अभ्यास द्वारा मजबूत बना लेता है । कमजोर वाला आदमी जब शरीर के साथ मशक्कत करना शुरू कर देता है और उस पर चढ़े मुलम्मों को दूर करना शुरू कर देता है, निग्रह करना शुरू कर देता है और अपने आहार-विहार को नियमित बनाना शुरू कर देता है, तो बेटे वह चंदगीराम पहलवान हो जाता है । टी. बी. की शिकायत उसकी दूर हो जाती है और वह मजबूत हो जाता है, साधना करने से । शरीर की साधना यदि आप करें, तो बीमार होते हुए भी चंदगीराम पहलवान के तरीके से २२ वर्ष की उम्र में टी. बी. के मरीज होते हुए भी आप अपनी इसी जिन्दगी में पहलवान बन सकते हैं, अगर आप शरीर की साधना करना चाहें तब । साधना किसे कहते हैं ? अभी तो मैं बता चुका हूँ कि साधना मलाई को कहते हैं और रगड़ाई को कहते हैं । जैसे किसान अपने शरीर की और मिट्टी की मलाई करता है और रगड़ाई करता है । शरीर के साथ में मलाई कीजिए और आप पहलवान बन जाइए । यह तो हुई साधना शरीर की । आप अपनी अक्ल और दिमाग के साथ में रगड़ शुरू कीजिए, मलाई कीजिए, घिसाई कीजिए और देखिए कि आपका दिमाग गया-गुजरा होते हुए भी घटिया होते हुए भी, बेअक्ल होते हुए भी, आप कालीदास के तरीके से विद्वान बनते हैं कि नहीं बनते । आप विद्वान बन सकते हैं, कालीदास के तरीके से ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

रस्सी को पत्थर पर हम बार-बार घिसते हैं, तो निशान बन जाता है । बेटे हमारी रगड़ इतनी जबरदस्त है कि अगर हम अपनी भोंड़ी अक्ल के साथ भी रगड़ करना शुरू कर दें, तो हम विद्वान बन सकते हैं । राजा के तरीके से और कालीदास के तरीके से । बेटे अगर हम रगड़ करना शुरू कर दें, तो प्रगति के किसी भी क्षेत्र में हमारे पास सिद्धियाँ आ सकती हैं और चमत्कार आ सकते हैं ।

पैसा भी आएगा तो मनोयोग से ही

अक्ल की बाबत हमने कहा और शरीर की बाबत हमने कहा । लीजिए अब पैसे की बाबत बताते हैं । बाटा नाम का एक मोची था, बारह वर्ष की उम्र में उसकी माताजी का देहान्त हो गया था, पिताजी का देहान्त हो गया था । जूते सीना सड़क पर उसने शुरू किया । लेकिन इस विश्वास के साथ शुरू किया कि जूते की मरम्मत के साथ सिद्धान्त जुड़े हुए हैं और हमारा प्रत्यक्ष प्राण जुड़ा हुआ है । प्रेस्टिज प्वाइंट जुड़ा हुआ है कि जूता ऐसा न बन जाए कहीं कि कोई आदमी हमसे ये कहे कि ये जूता घटिया बनाकर के दे दिया । वाहियात बना करके दे दिया । जो भी काम हाथ में लिया तो उसे प्रेस्टिज प्वाइंट मानकर लिया कि अपने हाथ से की हुई मरम्मत कहीं ऐसी न हो जाए कि आदमी कहे कि किस बेवकूफ ने मरम्मत की है । सारी अक्ल खर्च कर दी, फिर भी उसने सही मरम्मत नहीं की । कई आदमियों ने उसकी प्रशंसा की और कहा कि अरे मरम्मत करने वाला तो सबसे अच्छा लड़का वह है, जो नीम के दरख्त के नीचे बैठा रहता है । वह बारह साल का लड़का है, उससे बीसियों आदमियों ने मरम्मत कराई और उसने ऐसी बढ़िया मरम्मत की कि लोग बाग-बाग हो गए । उसने पुराने जूतों को नया बना दिया । लोगों ने बहुत मरम्मतें कराईं । लड़का बड़ा हो गया, लोगों ने कहा-बाटा क्या तू यह कर सकता है कि हमारे लिए अच्छे नये जूते बना दे । नए जूते मैं कहाँ से बना सकता हूँ । मेरे पास चमड़ा भी नहीं है, सामान भी नहीं है, दरांती भी नहीं है, चीजें भी नहीं हैं । अगर यह मुझे मिल जाता तो मैं बना देता । लोगों ने कहा-अच्छा दरांती हम देंगे, तू बना दिया कर । लोगों ने सामान लाकर के दिया । बाटा ने जूता बना दिया । जो जूते छह महीने चला करते थे वे एक साल चले, लोगों ने अपने परिचितों से कहना शुरू किया कि अच्छे जूते पहनने हैं, मुलायम जूते पहनने हैं, तो आप बाटा की दुकान पर चले जाइए और इस तरह बाटा की दुकान चलते-चलते एक शानदार जगह पर जा पहुँची, जहाँ आज सारे हिन्दुस्तान में ही नहीं, वरन् विश्वभर में बाटा का जूता प्रसिद्ध हो गया । कहीं भी आप चले जाइए, देहात में चले जाइए, मैं भी तो एक बार अमेरिका गया, वहाँ भी हर जगह वही बाटा का जूता देखने को मिला । हिन्दुस्तान में भी वही, यहाँ भी वही बाटा । सब जगह वही । अफ्रीका के गाँव में भी मुझे बाटा की दुकान मिली । न केवल हिन्दुस्तान बल्कि अफ्रीका में भी छाया हुआ था बाटा । मैं देखकर के आया हूँ । बाटा एक करोड़पति उद्योगपति का नाम है ।

मित्रो ! कहाँ से आता है पैसा ? कहीं से नहीं आता । पैसा रगड़ से, मेहनत से आता है । रगड़ता चले जा । रगड़ता तो है ही नहीं । शरीर को बचाए-बचाए फिरता है । काम से बचता फिरता है, दूर-दूर रहता है । हरामखोर और कामचोर । कहता है हमको पैसा नहीं मिलता । हमारी उन्नति नहीं होती, आर्थिक उन्नति नहीं होती । न तो योग्यता बढ़ाता है, न श्रम में विश्वास करता है, न श्रम के साथ मनोयोग लगाता है । श्रम के साथ मन तो लगाता नहीं है । मनोयोग लगा । शरीर से बेकार धौंकनी के तरीके से, कोल्हू के बैल के तरीके से उल्टा-सुल्टा काम कर के फेंक दिया । योग्यता बढ़ाता ही नहीं है । बाटा के जमाने में योग्यता थी । नौवें दर्जे तक पढ़ा हुआ है । अभी भी विदेशों में चमार और धोबी, मोची और भटियारे रात को दो घण्टे नाइट स्कूलों में पढ़ने के लिए जाते रहते हैं और जिन्दगी गुजरने तक एम. ए. कर लेते हैं और पी-एच. डी. बन जाते हैं और आपको फुरसत ही नहीं मिलती है । हरामखोरी और कामचोरी में समय बर्बाद करते रहते हैं । न योग्यता बढ़ाते हैं, न अपनी सामर्थ्य बढ़ाते हैं, न क्षमता बढ़ाते हैं, न मेहनत में दिलचस्पी लेते हैं, न मेहनत में मन लगाते हैं । ताकत घटिया कामों, बेकार कामों से नहीं मिलती । क्या हाल हो रहा है, भीतर वाली कमजोरी निकलती नहीं, योग्यता बढ़ती नहीं, तो उन्नति कैसे होगी । भीतर वाले को योग्यता के रूप में विकसित करना होगा । मन से काम करना सीखना होगा, मशक्कत से काम करना सीखना होगा और बेटे मैं किसके सम्बन्ध में बताऊँ । धन के सम्बन्ध से लेकर तू प्रतिभा, प्रतिष्ठा तक कहीं भी चला जा, परिश्रम करने वाले को ही सफलता मिलती है ।

सारी शक्तियाँ बीज रूप में हमारे अन्दर ही

साधना के साथ में भी परिश्रम जुड़ा हुआ है । सच्ची साधना करता है वैज्ञानिक । छोटे वाले दर्जे के साथ में बड़ा वैज्ञानिक बड़ी मेहनत करता है और ताकतवर एटमबम बना देता है, यदि वह फट जाए, तो सैकड़ों मील का सफाया कर दे । यह ताकत कहाँ से आती है ? एटम में से आती है ? एटम में से नहीं आती है, बेटे ! साधना से आती है । साधना से ताकत को उभारा, ताकत को निखारा, ताकत को काम में लाया-ताकत को इस्तेमाल किया जाता है। ताकत को तो निखारता है नहीं, उभारता है नहीं । फिर सिद्धियाँ कहाँ से आएँ ? साधना किस चीज का नाम है ? साधना बेटे, इस चीज का नाम है, जिसमें हम अपनी भीतर वाली क्षमता का, भीतर वाली चेतना का विकास करते हैं और उसको उभारते हुए चले जाते हैं, विकसित करते हुए चले जाते हैं । चेतना का तो आप मूल्य भी नहीं समझते, मैं क्या करूँ ? चेतना का तो आप मूल्य भी नहीं पहचानते, आप तो बाहर ही बाहर तलाश करते हैं । इस देवी के सामने नाक रगड़ते हैं, उस देवता के सामने नाक रगड़ते हैं, इस मन्त्र के सामने नाक रगड़ते हैं, उस गुरु के सामने नाक रगड़ते हैं, इस पड़ोसी के सामने नाक रगड़ते हैं, उस अफसर के सामने नाक रगड़ते हैं, उस बॉस के सामने नाक रगड़ते हैं । आपको तो नाक रगड़ने की विद्या आ गई है । किसी की खुशामदें कीजिए, किसी की चापलूसी कीजिए, किसी के हाथ जोड़िए और वहाँ से काम बनाकर लाइए । बेटे, किसी के सामने चापलूसी करने की

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

जरूरत नहीं है, क्योंकि हमारे भीतर सामर्थ्य का स्रोत भरा पड़ा है, सामर्थ्य की शक्ति भरी पड़ी है । उसको उभारने में हम समर्थ हो सकें, उसे काम में लाने में समर्थ हो सकें, तो मजा आ जाए हमारी जिन्दगी में । हमारी जिन्दगी में क्या-क्या होता है ? हमारी भीतर वाली शक्ति कितनी है ? बेटे यह समझो कि सारे सौरमण्डल में जितनी ताकत और जो ढर्रा है, वह सब ढंग और ढर्रा छोटे-से एटम के भीतर भरा पड़ा है । वृक्ष जो है, उसका पूरा रूप छोटे-से बीज के भीतर दबा पड़ा है । छोटे-से बीज के भीतर में पत्तियाँ और टहनी, फल और फूल सबका नक्शा, सबका खाका, सबका आधार इस बीज के अन्दर भरा पड़ा है। इसी तरह ब्रह्माण्ड में जो कुछ भी है, हमारे पिण्ड में दबा पड़ा है और भगवान में जो कुछ भी है हमारी जीवात्मा में दबा पड़ा है । भगवान के सारे के सारे ब्रह्माण्ड में जो शक्तियाँ और ताकतें हैं वे सब बीज रूप में हमारे भीतर विद्यमान हैं । बीज को हम बोएँ, उगाएँ, बढ़ाएँ, खिलाएँ-पिलाएँ तो उससे पूरा का पूरा बरगद पेड़ हो सकता है । साधना इसी का नाम है । बीज को विकसित करके बरगद कैसे बनाया जा सकता है ? साधना उसी प्रक्रिया का नाम है । साधना और कुछ नहीं है ? अपनी जीवात्मा को, अपनी अन्तर्चेतना को विकसित करते-करते हम महात्मा एक, देवात्मा दो और परमात्मा तीन, यहाँ तक जा पहुँचते हैं । इसे प्रायमरी स्कूल, हाईस्कूल, इन्टरमीडिएट और कॉलेज की पढ़ाई समझ सकते हैं । यही है आत्मा से परमात्मा तक विकसित होने की प्रक्रिया ।

चेतना का महत्व समझें

महात्मा, देवात्मा और परमात्मा और कुछ नहीं अपने आपे का विकास-विस्तार है । अपने आपका विकास ही साधना है और कुछ नहीं है । साधना और कोई करके देता है क्या ? नहीं कोई नहीं देता, हम अपने आपका विकास स्वयं करते हैं, अपने आपका निखार स्वयं करते हैं । आत्मशक्ति को आपने देखा नहीं । इंजन कितना बड़ा होता है । इंजन साहब छह लाख रुपए का आता है, लेकिन ड्राइवर २५० रुपये का आता है । ड्राइवर घसीटता है इन्जन को । उसने कहा खड़ा हो जा, इंजन खड़ा हो जाता है । और हवाईजहाज ? हवाईजहाज को चलाता कौन है ? हवाईजहाज कितने का आता है ? पाँच करोड़ रुपये का । कौन चलाता है ? बेटे पायलट चलाता है। पायलट नहीं होगा तो हवाईजहाज रखा रहेगा । मशीनें कितनी बड़ी क्यों न हों, ऑटोमैटिक क्यों न हों, कम्प्यूटराइज्ड क्यों न हों, लेकिन आदमी के बिना नहीं चल सकतीं । चेतना का मूल्य, चेतना की शक्ति कितनी बड़ी हो सकती है ? चेतना की शक्ति इतनी बड़ी है, जिसको उभारने की प्रक्रिया हम आपको सिखाते हैं, गायत्री मन्त्र के माध्यम से । चेतना, जो आपकी सो गई है, जो खो गई है, चेतना जो आपकी मर गयी है, जिसको आपने गँवा दिया है । जिस चेतना का आपने महत्त्व नहीं समझा, उस चेतना को हम, आपको उभारना सिखाते हैं । गायत्री साधना उसी का नाम है । चेतना हमारी कितनी ताकतवर है । यह हमारी भौतिक और चेतन दोनों क्षेत्रों का मुकाबला करने में सक्षम है । इसका मैं उदाहरण देना चाहूँगा । ये पृथ्वी कितनी बड़ी है ? साहब बहुत बड़ी है । पृथ्वी का वजन कितना है ? अरे साहब क्या कहने पृथ्वी के, बहुत वजन है । और पृथ्वी की चाल ? पृथ्वी की चाल साहब एक घण्टे में छह हजार मील है । बहुत बड़ी है ना । हाँ बहुत बड़ी है पृथ्वी । जहाँ इसका उत्तरी ध्रुव है वहाँ अगर एक इनसान का बच्चा चला जाए, जहाँ पृथ्वी का 'बैलेंसिंग प्वाइंट' है और उस जगह पर एक बच्चा घूँसा मार दे खींचकर, तो पृथ्वी अपनी नींव पर से डगमगा जाएगी । वह जिस कक्षा में घूमती है, उस कक्षा में न घूम करके अगर घूमना बन्द कर दे अथवा कोई और कक्षा बना ले या हो सकता है कि वह बड़ी बना ले, हो सकता है ये कक्षा बहुत छोटी हो जाए । बच्चे का घूँसा लगे, तो सम्भव है यह पृथ्वी भागती हुई चली जाए और किसी ग्रह से टकरा जाए । मान लीजिए मंगल ग्रह में टक्कर मार दे और मंगल ग्रह का चूरा हो जाए और हमारी पृथ्वी का भी चूरा हो जाए, या यह हो सकता है कि बड़े दिन होने लगें। ३६५ दिन की अपेक्षा सम्भव है २०-२० दिनों का एक वर्ष हो जाए । सम्भव है २४ घण्टों की अपेक्षा ६ घण्टे का दिन हो जाए अथवा छह हजार घण्टे का दिन हो जाए । कुछ पता नहीं, कुछ भी हो सकता है । एक बच्चे की चपत खाकर, घूँसा खाकर । चेतना के सामने जड़ तो कुछ भी नहीं है । चेतना, जिसको आप भूल गए ? चेतना जिसको आपने समझा ही नहीं ? चेतना जिसका आप मूल्य ही नहीं समझते ? चेतना जिसका विकास ही नहीं करना चाहते ? यही है गायत्री साधना का उद्देश्य कि आप अपनी चेतना को परिष्कृत करें, समर्थ बनाएँ ।

चेतना कितनी सामर्थ्यवान है ? बेटे, चेतना की सामर्थ्य दिखाने के लिए, मैं आपको बीस लाख वर्ष पहले ले जाना चाहूँगा, जबकि पृथ्वी छोटे-छोटे जंगली जीवों और जानवरों से भरी पड़ी थी और इस पृथ्वी पर ऊबड़-खाबड़ गड्ढे जैसे चन्द्रमा पर सब जगह गड्ढे-टीले दीखते हैं, उसी तरह पृथ्वी पर हर जगह गड्ढे-टीले थे । ऊबड़-खाबड़ बड़ी कुरूप पृथ्वी थी और उसमें बहुत भयंकर जानवर घूमा करते थे । इसमें बाद में क्या कुछ परिवर्तन हुए । यह आदमी की अक्ल और आदमी की चेतना है, जिसने सारी की सारी पृथ्वी को कैसा बना दिया है । फूल जैसे कहीं ताजमहल बने हुए हैं, कहीं पार्क बने हुए हैं, हजारों एकड़ जमीन समतल बनी हुई है । किसी जमाने में जहाँ झाड़-झंखाड़ थे, अब पता नहीं, क्या से क्या हो गया । चम्बल जहाँ डाकुओं के रहने की जगह थी, देखना थोड़े दिनों बाद क्या हो जाता है । बेटे, वहाँ बगीचे लहलहाते हुए दिखाई पड़ेंगे, कितनी फसलें उगती हुई दिखाई पड़ेंगी । धान पैदा होता हुआ दिखाई पड़ेगा और वहाँ गाँव और शहर बसे हुए दिखाई पड़ेंगे । आदमी की अक्ल, आदमी की चेतना की सामर्थ्य का क्या कहना ?

प्राणी जब पैदा हुआ था, तब आदिमानव के रूप में था, बन्दर के रूप में था । चेतना ने आवश्यकता समझी कि तुम्हें काम करना चाहिए और हमारे हाथों की अँगुलियाँ बन्दर की अपेक्षा ये दसों अँगुलियाँ ऐसी बेहतरीन अँगुलियाँ बन गयीं कि दुनिया में किसी के पास नहीं हैं, जैसी हमारे पास हैं । ऐसा बेहतरीन हाथ दुनिया में और किसी के

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

पास नहीं है, जो यहाँ से भी मुड़ता हो, वहाँ से भी मुड़ता हों । जो हर जगह से मुड़ जाता हो । ऐसा किसी जानवर का हाथ नहीं है । कहीं नहीं है । यह सब कैसे हो गया ? हमारी इच्छाशक्ति ने पैदा किया । सारी चीजें पैदा कर दीं । सारे के सारे चमत्कार ये चेतना के हैं, जमीन की सफाई से लेकर सभ्यता, संस्कृति और वाहन और विज्ञान सब किसका है । ये आदमी की चेतना का चमत्कार है न, तू समझता क्यों नहीं है । चेतना को अगर सँवारा जा सके, चेतना को अगर सँजोया जा सके, तो आदमी क्या हो सकता है ? हम नहीं कह सकते कि आदमी क्या हो सकता है । कहते हैं कि आदमी और भगवान एक हो सकते हैं । आदमी इतना विकसित हो सकता है जितना भगवान । चेतना का परिष्कार-चेतना का सुधार-इसी का नाम साधना है । जो चीजें ऊबड़-खाबड़ हैं, बेतुकी हैं, उन्हें ठीक तरीके से ठीक बना देने का नाम साधना है ।

हमारी अन्तर्चेतना ही वास्तविक देवी है

साथियो ! मैं आपको एक बात बताना चाहूँगा कि मनुष्य-जीवन कैसा ऊबड़-खाबड़, बेघड़, कुसंस्कारी है । हमारा जीवन कैसा संस्कारविहीन, दिशाविहीन, लक्ष्यविहीन, क्रियाविहीन, अनुशासनविहीन और अस्त-व्यस्त है । इन चीजों को अगर ठीक तरीके से बना लिया जाए, विचारणाओं को अगर ठीक तरीके से बना लिया जाए, भावनाओं को ठीक तरीके से बना लिया जाए, क्रियाशक्ति को ठीक तरीके से बना लिया जाए, तो मित्रो ! हम कैसे सुन्दर हो सकते हैं ? हम कैसे सुघड़ हो सकते हैं ? मैं आपको क्या बताऊँगा, मैं तो एक ही शब्द में कह सकता हूँ कि अगर आपने चमत्कार वाली बात सुनी हो, लाभ वाली बात सुनी हो, वरदान वाली बात सुनी हो, आशीर्वाद वाली बात सुनी हो, वैभव वाली बात सुनी हो, अध्यात्म की महत्ता वाली बात सुनी हो, अक्ल की बात सुनी हो, अध्यात्म की कभी कोई गरिमा आपने भी सुनी हो, वरदान और आशीर्वाद वाली बात आपने सुनी हो तो समझना कि ये सारी की सारी विशेषताएँ जो बताई जा रही हैं, ये आदमी की अन्तर्चेतना के विकसित स्वरूप की बताई जा रही हैं और किसी की नहीं बताई जा रही हैं । देवी की बताई जा रही हैं । तो चलिए देवी क्या हो सकती है ? यह बताता हूँ आपको। हमारी अन्तर्चेतना के अलावा कोई देवी नहीं है । हमारी अन्तर्चेतना जब विकसित होती है तो कैसी हो जाती है ? ऐसी हो जाती है जिसको सिद्धि कहते हैं, जिसको हमको सँभालना और सँजोना आता है, इसे जीवन में हम संस्कृति कहते हैं । सभ्यता कहते हैं । जीवन में साधना इसी को कहते हैं । नाई क्या करता है ? नाई हमारी हजामत बना देता है और हमें ऐसा बना देता है जैसे मूँछें अभी निकलीं ही नहीं । यह मिरैकिल-जादू है, हजामत बनाने वाले का । हमको खूबसूरत बनाने वाले का । दर्जी, जो हमारे फटे-पुराने से कपड़े थे, उनका कुर्त्ता बना देता है । जॉकेट बना देता है । अरे बेटे, यह कपड़ा तो वही है ढाई गज, जो सबेरे पड़ा हुआ था । अब कैसा सुन्दर बना हुआ है । कमाल है । यहाँ भी बटन यहाँ भी कच्चा । यहाँ भी गोट । यहाँ भी बाजू । देख ले, ये किसका कमाल है ? दर्जी का कमाल है । अभी कैसा था कपड़ा ? मैला-कुचैला । उल्टी-सीधी सीमाबंटी हुई थी । नील लग करके आ गई । टिनोपाल लग करके आ गया । ये क्या चीज है । ये चमत्कार है । ये साधना है । कपड़े की साधना किसकी है ? ये धोबी की साधना है । मूर्तिकार की साधना है ? पत्थर का एक टुकड़ा, नाचीज-सा छैनी और हथौड़े को लेकर के मूर्तिकार जा बैठा और घिसने लगा, ठोकने लगा, घिसने और रगड़ने लगा । दो-चार दिन के पीछे ऐसी बढ़िया लक्ष्मी की मूर्ति बन गई कि मालूम नहीं पड़ा कि यह वही पत्थर का टुकड़ा है कि लक्ष्मी जी हैं । बेटे ये क्या है ? ये साधना है और क्या है ?

साधना अर्थात अनगढ़ से सुगढ़

अभी आपको मैं साधना का महत्त्व बता रहा था । ये घटिया वाली जिन्दगी, बेकार जिन्दगी, पत्थर जैसी जिन्दगी को आप बढ़िया और शानदार बना सकते हैं । सोने का एक टुकड़ा ले जाइए साहब ! अरे हम क्या करेंगे ? कहीं गिर पड़ेगा । अच्छा तो अभी हम आते हैं । उसका क्या बना दिया । ये कान का बुन्दा बना दिया । ये अँगूठी बना दी, मीना लगी हुई । अरे साहब बहुत सुन्दर बन गया है यह । क्या यह वही टुकड़ा है ? हाँ यह सुनार का कमाल है । सुनार की साधना है । उसने खाबड़-खूबड़ धातु के टुकड़े को कैसी सुन्दर अँगूठी बना दिया, कैसा जेवर बना दिया । कैसा नाक का जेवर बना दिया । कैसा-कैसा जेवर बना दिया । ये हमारी जिन्दगी, बेतुकी जिन्दगी-बेसिलसिले की जिन्दगी ? बेतुकी जिन्दगी । बेहूदी जिन्दगी को हम जिस तरह से सँभाल पाते हैं । साधना इसका नाम है । असल में साधना इसी का नाम है । वह जो हमने अभ्यास कराया था शुरू में, कि आपको तमीज सिखाएँ और तहजीब सिखाएँ । कौन-सी ? कल मैं इसको बताऊँगा कि पालथी मारकर बैठ । अरे तमीज से सीख । कभी ठीक काम करता है, कभी अक्ल से काम करता है, कभी नहीं करता है । कमर ऐसी करके बैठना । हाँ साहब, ऐसे ही करके बैठूँगा । मटक नहीं, सीधे बैठ । मचक-मचक करता है । मित्रो ! ये सारे के सारे अनुशासन, सारी की सारी डिसीप्लीन, यह आज का विषय नहीं है । कभी समय मिला तो आपको बताऊँगा कि आपको जो भी साधना के बहिरंग क्रिया-कलाप सिखाते हैं । आखिर क्या उद्देश्य है इनका ? क्रिया का कोई उद्देश्य होना चाहिए । क्यों साहब, पालथी मारकर क्यों बैठते हैं ? पद्मासन में क्यों बैठते हैं, हम तो ऐसे ही बैठेंगे, टाँग पसार कर । नहीं बेटे, टाँग पसार कर मत बैठिये । नहीं साहब हम तो टाँग लम्बी करेंगे, इसको छोटी करेंगे, नहीं बेटे, ये भी गलत है । नहीं हम तो यूँ माला जप करेंगे । सिर के नीचे तकिए लगाकर । नहीं बेटे, ऐसे मत करना । ये ठीक नहीं है । यह क्या है, डिसीप्लीन है । साधना के माध्यम से हम अपने व्यावहारिक जीवन को किस तरीके से अनुशासित रूप दे सकते हैं, किस तरीके से उस ढाल सकते हैं, किस तरीके से अपने कर्मों को, अपने विचारों को, अपनी इच्छाओं को, आस्थाओं को परिष्कृत एवं अनुशासनबद्ध कर सकते हैं, क्रमबद्ध कर सकते हैं । असल में साधना इसी का नाम है ।

स्वर्णकार के तरीके से, कलाकार के तरीके से, गायक के तरीके से और वादक के तरीके से जो अपने को साध

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

लेता है, उसे ही सच्चा साधक कहा जाता है । उसकी ही सही रागिनी निकलती है । सुर निकलता है । कैसे निकलता है ? बा SSS । अरे बेटे ये क्या बोलता है ? यूँ मत बोल । तो फिर कैसे बोलूँ ? तू ऐसे बोल, जैसे कि भैरवी रागिनी गायी जाती है । गुरुजी सिखाइए । बेटा तू आ जाना हमारे पास हम तुझे सिखाएँगे सरगम-सा रे गा म पा सिखा देंगे । तब तू ऐसे बोलना जैसे कोयल बोलने लगती है, अभी तू जैसे चिल्ला रहा था इसे सुर नहीं कहते । बेटे, ऐसे फिर मत बोलना । सुर को, गले को इस तरीके से साध कि ऐसी मीठी-मीठी आवाज आए कि बस मजा आ जाए और ये धागे और तार जो सितार में बँधे हुए हैं, उन्हें हिला । इसे भन्-भन्-भन् मक्खी के तरीके से नहीं, हम जैसे बताएँ उस तरीके से बजा । इस तार के बाद उसे बजा, इसके बाद इसे बजा, फिर देख किस तरीके से इसमें से कैसी-कैसी सुरलहरी निकलती हैं, तरंगें निकल सकती हैं । कैसी-कैसी ध्वनि निकल सकती है । जिन पर तू थिरकने लगेगा और नाचने लगेगा, तो महाराजजी वह कैसे बजेगा ? बेटे यह एक साधना है, किसकी ? धागों की, तारों की । यह किसकी है साधना ? गले की । यह है साधना पत्थर की । ये किसकी है साधना ? हर चीज की है । सोने की साधना, मुख की साधना और जीवन की साधना, कि जीवन कैसे जिया जा सकता है ? जीवन कैसे उद्यमशील बनाया जा सकता है ? जीवन कैसे देवोपम बनाया जा सकता है ? जीवन की अस्त-व्यस्तता का सुव्यवस्थितकरण कैसे किया जा सकता है ? जीवन ठीक तरीके से कैसे जिया जा सकता है ? अगर ठीक तरीके से आप यह जान पाएँ, तो बेटे आप धन्य हो सकते हैं, सब कुछ बन सकते हैं । आप बाहर का ख्याल निकाल दीजिए ।

सब कुछ अन्दर ही मौजूद है

अब तक आप सोचते थे कि वह सब आप बाहर से पाएँगे । आपका ख्याल था कि बाहर बहुत सारी चीजें होती हैं । मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप ये चीज अपने मन से निकाल दीजिए । जो चीज बाहर दिखाई पड़ती है वास्तव में वह भीतर से ही आती है । बाहर तो सब कुछ बिखरती हुई चली जाती है । जैसे-कस्तूरी हिरण की नाभि में होती है, परन्तु उसे यह मालूम पड़ता है कि हवा में से पूरब से वह आती है । पश्चिम से आ रही है । बेटे, सुगन्ध कहीं बाहर से नहीं आती ? भीतर से निकलती है । भीतर से क्या आती है महक, अच्छा साहब यह बताइए कि शहद की मक्खियाँ जो शहद इकट्ठा करती हैं, वह शहद कहाँ से आता है ? फूल के भीतर से आता है । चलिए हम आपको फूल देते हैं और इसमें से शहद निकाल दीजिए, आप नहीं निकाल सकते, तो इसे अपने कैमिस्ट के पास ले जाइए, किसी लैबोरेट्री में ले जाइए और उनसे कहिए कि गुरुजी ने भेजे हैं ये फूल और इसमें से आप शहद निकाल दीजिए । कोई नहीं निकाल सकता । मधुमक्खी के मुँह में जो केमिकल्स होते हैं वे फूल के रस को अपने ढंग से इस तरीके से डाइल्यूट करते हैं, इस तरह से कन्वर्ट करते हैं कि वे सारे के सारे रस शहद बन जाते हैं । इस तरह शहद कहाँ से आता है ? मक्खी के भीतर से आता है । नहीं साहब, बाहर से आता है फूलों में से । नहीं, फूलों में से नहीं आता है, मात्र सहायता मिलती है फूलों से । दूध कहाँ से आता है, साहब? गाय का दूध कहाँ से आता है ? घास में से आता है। अच्छा आप ले जाइए घास, मैं आपको बीस किलो घास देता हूँ, इसमें से निकाल लाइए दूध । अरे ! महाराजजी इसमें तो नहीं है । इसमें नहीं है, तो कहाँ से आ गया दूध । कहीं से नहीं आ गया । गाय के भीतर जो केमिकल्स हैं, गाय के भीतर जो पदार्थ हैं वे घास को इस तरीके से कन्वर्ट करते हैं कि वह दूध के रूप में परिणत हो जाते हैं । गाय के पेट की जो मशीन है वास्तव में वह गाय के दूध की मशीन है । नहीं साहब, घास में दूध होता है, बिनौले में दूध होता है, खली में दूध होता है । नहीं बेटे, न बिनौले में दूध होता है, न खली में और नहीं खली की वजह से गाय ज्यादा दूध पैदा कर लेती है, लेकिन असल में जो दूध पैदा करता है वो इसका सिस्टम पैदा करता है । बाहर से कुछ नहीं आता । नहीं साहब, दूध बाहर से आता है । नहीं बाहर से नहीं आता । चर्बी कहाँ से आती है सूअर में ? साहब, उसको मक्खन खाने को दिया जाता है । सूअर को कौन मक्खन खाने को देगा ? सूअर को मक्खन खाते देखा है, कोई खिलाता है, कोई नहीं खिलाता, कहाँ से आ जाता है ? गंदा मैला होता है । उसमें इतनी सारी चर्बी इकट्ठी होती है । चर्बी कहाँ से आती है । अरे बेटा भीतर से पैदा होती है ? नहीं साहब कोई बाहर चला जाता है-चुपचाप । जब सोए रहते हैं कोई आता है और छटाँक भर घी खिला जाता है । साँप में जहर कहाँ से आता है, बता दो जरा ? कहाँ से आता है, साहब ! साँप मिट्टी खाता है, कीड़े खाता है । मिट्टी में कहाँ है जहर ? नहीं और कीड़े में कहाँ है जहर ? इसमें भी नहीं है जहर । चूहे में भी नहीं है । साँप लाइए कहाँ से आ गया जहर ? उसके भीतर से पैदा होता है ।

पेड़ जो होते हैं वे धरती और वायुमण्डल में से जल खींच लाते हैं । जहाँ कहीं भी पेड़ घने होते हैं, वहाँ वर्षा होती रहती है । लीबियावालों ने गलती की, वहाँ पेड़ बहुत सारे थे । पेड़ों के ठेकेदार आए और उन्होंने पेड़ों को काटना शुरू कर दिया, पेड़ खत्म हो गए । बस बारिश खत्म हो गयी । वर्षा खत्म होने से क्या परिणाम हुए ? सारे का सारा लीबिया रेगिस्तान हो गया । राष्ट्रसंघ ने अपना पैसा देकर यह कहा कि इतने समृद्ध मुल्क में फिर से पानी बरसना चाहिए और पानी बरसाने के लिए आवश्यक है कि इसमें पेड़ लगाए जाएँ । ऐसे पेड़ लगाए जाएँ, पानी का ऐसा इन्तजाम किया जाए कि फिर से उस जमीन पर पेड़ उग आएँ, वह क्षेत्र हरा-भरा बन जाए । रेगिस्तान इसीलिए रेगिस्तान है कि वहाँ पर पेड़ नहीं हैं । अगर वहाँ पेड़ होने लगें, पेड़ लगातार जाने लगें, तो थोड़े समय बाद सारा रेगिस्तान फिर से हरा-भरा हो सकता है । पेड़ों में वर्षा को खींचने की ताकत है, मैगनेट है । मैगनेट में-खींचने की ताकत है । वह लोहे को खींच लेता है । धातुएँ जब बनती हैं, धातुओं की जब खदानें बनती हैं, तो उसका तरीका यह है कि धातुओं के कण जहाँ कहीं भी होते हैं, वे अपने चुम्बक के जोर से, मैगनेट के जोर से जहाँ-कहीं सजातीय कण होते हैं, उन्हें-जरें से खींच लेते हैं । लोहे का जरी जहाँ पड़ा है, उसको खींचेंगे जरी जाएँगे । इस

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

तरह सोने का जर्रा-जर्रा धीरे-धीरे खिंचता चला जाएगा और उस खदान में शामिल हो जाएगा । धातु की खदान बढ़ती चली जाएगी, बड़ी होती चली जाएगी, क्योंकि उसका चुम्बकीय मैगनेट अपने सजातियों को खींचता चला जाता है । बेटे लाभ, उन्नति, प्रगति, वैभव, सिद्धियाँ और चमत्कार ये कुछ भी नहीं हैं । ये आदमी की विकसित चेतना के आकर्षण हैं, मैगनेट हैं । अपनी चेतना का विकास कीजिए और पाइए हर चीज को ।

अध्यात्म का मर्म है आत्मपरिष्कार

प्राय: यह कहा जाता है कि जब गुरु मिलेगा तो ही सब मिलेगा । नहीं बेटे, ऐसे गुरु नहीं मिलेगा । तेरे भीतर की चेतना जाग्रत होगी, तो गुरु आवेगा और तेरे पैर चूमेगा, तेरे भीतर की चेतना विकसित नहीं है । तूने अपने आपको घिनौना बनाकर रखा है । कमीना बनाकर रखा है, तो गुरु आएगा भी तो उसकी नाक कट जाएगी और सड़ जाएगी और सड़ी हुई नाक को लेकर के भाग जाएगा, कहेगा कि अरे ! बाबा ये कहाँ से आ गया मैं । किसके पास आ गया । नहीं गुरु के हाथ जोड़ूँगा, पैर छूऊँगा । नहीं बेटे ! नहीं हो सकता । देवता की शक्ति प्राप्त करने के लिए आपके अन्दर देवत्व विकसित होना चाहिए । भगवान की शक्ति का विकास करने के लिए आपके अन्दर भक्ति का विकास होना चाहिए । मन्त्र की शक्ति का विकास करने के लिए आपके भीतर संयमशीलता का विकास होना चाहिए । अपने आपको सुधारना, अपने आपको सँवारना, अपने आपको ठीक करना, बेटा इसी का नाम है, अध्यात्म । इसी का नाम है गायत्री । इसी का नाम है उपासना । इसी का नाम है, भजन, ताकि हम अपने भीतर की महानता को विकसित कर सकें, जगा सकें । किस तरह से हम अपनी अन्तर्चेतना को विकसित कर सकते हैं ? कैसे हम सम्पत्तिवान बन सकते हैं ? कैसे हम सेठ आदमी बन सकते हैं ? इस उपासना को मैं कल आपको बताऊँगा ।

अभी आपको गायत्री उपासना के आधार पर जो संकेत दिए गए थे, सिम्बल बताए गए थे, क्रियाएँ बताई गई थीं, उनके पीछे क्या उद्देश्य है ? क्या प्रेरणा है ? उसके कलेवर के पीछे प्राण कहाँ हैं । बाहर वाला परिवर्तन वह है, जो हम आपको बता चुके हैं । अब हम उसका प्राण बताएँगे, शिक्षाएँ बताएँगे, दिशाएँ बताएँगे, धाराएँ बताएँगे, प्रेरणाएँ बताएँगे ताकि आप यह जान पाएँ कि हम अपने जीवन का परिष्कार करके किस तरीके से भगवान को पा सकते हैं ? मित्रो ! आध्यात्मिकता का यह एक ही उद्देश्य है । गायत्री उपासना का भी एक ही उद्देश्य है । गायत्री उपासना में, जो शक्ति आती है, वहीं से आती है और कहीं से नहीं आती । गायत्री उपासना करें या नमाज पढ़ें, कहीं से भी आपको शक्ति आएगी तो अपने भीतर से ही आएगी । भगवान ने कहा है-**"आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मन:"** अपना आत्मा ही अपना दुश्मन है और अपना आत्मा ही अपना मित्र है । इसलिए मित्रो! **'उद्धरेदात्मनात्मानं'** तुम अपनी आत्मा का उद्धार स्वयं करो । स्वयं के द्वारा स्वयं का उद्धार करो । बाहर के लोगों से नहीं और न ही देवताओं के द्वारा उद्धार होगा । भगवान के द्वारा नहीं, गुरुओं के द्वारा नहीं, किसी के द्वारा नहीं, उद्धार होने वाला है ; **'उद्धरेदात्मनात्मानं'** अर्थात् उद्धार होगा तो अपने आप द्वारा ही अपना उद्धार होगा । **'नात्मानमवसादयेत्'** अपने आपको गिराओ मत । नहीं साहब कोई और गिरा जाता है मुझे । कौन गिरा जाता है तुझे ? भावी गिरा जाता है, भूत गिरा जाता है, भगवान गिरा जाता है, राहु गिरा जाता है । चल जाहिल कहीं का, बेकार की बात करता है । राहु पर इल्जाम लगाता है और केतु पर इल्जाम लगाता है, औरों पर इल्जाम लगाता है । बेकार के इल्जाम लगाता है और अपने ऊपर इल्जाम नहीं लगाता ।

मित्रो ! क्या करना पड़ेगा आपको । आपको यह करना पड़ेगा कि **'नात्मानमवसादयेत्'** अपने आपको गिराओ मत, अपने आपको उठाओ । अपने आपको उठाओ । आप ही अपने सबसे बड़े मित्र हैं, हम आप ही अपने आपके सबसे बड़े शत्रु हैं । इस तथ्य को आपने भगा दिया । इसको आपने विस्मृति के गर्त में फेंक दिया । अपने-अपने बारे में, जिसके बारे में अध्यात्म यह सिखाता है-**"आत्मा वा अरे द्रष्टव्य: श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यो ।"** मूर्खो अपने आपको जानो, अपने आपको देखो, अपने आपको समझो, अपने आपको सुधारो और अपने आपको सही करो । फिर देखो जो कुछ भी तुम चाहते हो, सब चीजें तुम्हारे पास खिंचती हुई चली आती हैं कि नहीं । मिलती हुई आती हैं कि नहीं । जब तक आप अपना उद्धार स्वयं करने को तैयार न होंगे, तब तक आपकी सफलताएँ दूर ही दूर बनी रहेंगी । मित्रो ! हमारी इसी विकसित अन्तर्चेतना, हमारी विकसित दृष्टि का नाम है स्थितप्रज्ञता । इसी का नाम है 'ऋतम्भरा-प्रज्ञा', इसी का नाम है गायत्री । गायत्री की अगर उपासना हम कर सकें, साधना कर सकें, परिश्रम के द्वारा, आत्मशोधन के द्वारा, आत्मपरिष्कार के द्वारा, आत्मसंघर्ष के द्वारा, तो मित्रो ! गायत्री के सारे के सारे चमत्कार और सिद्धियाँ आपके चरणों में स्वयं खिंचती हुई चली आएँगी इसके बारे में अथर्ववेद में कहा गया है-**"स्तुता मया वरदा वेदमाता प्र चोदयन्तां पावमानी द्विजानाम् । आयु: प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम् मह्यं दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम् ।।"**

आयु से लेकर के प्राण तक सब सारी की सारी चीजें जिसमें धन भी शामिल है, सन्तान भी शामिल है, पुत्र भी शामिल है, असंख्य चीजें शामिल हैं, सारी चीजें मिल सकती हैं, उनको जो ऋतम्भरा-प्रज्ञा के रूप में प्राणवान गायत्री की साधना करते हैं । साधना द्वारा ही हमको अपने अन्तरंग के मल और आवरणों का निराकण करना होता है और अपनी दबी हुई विशेषताओं को, क्षमता को उभारना पड़ता है । यही है गायत्री उपासना का प्रारम्भिक रूप, यही है गायत्री की भूमिका । गायत्री उपासना के जो क्रिया-कृत्य, कर्मकाण्ड बताए गए हैं, उसके लिए आपको क्या करना पड़ेगा, कैसे करना पड़ेगा, कौन--कौन से ऋषियों ने ऋतम्भरा-प्रज्ञा की उपासना की और क्या पाया आदि सब उसके बाद का विस्तार है । मूल मर्म वह है जो आज बताया है, आज की बात समाप्त ।

ॐ शान्ति: !

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी-

उपासना, साधना व आराधना

(मार्च, १९८० में शांतिकुंज परिसर में दिया उद्‌बोधन)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो, भाइयो! गायत्री मंत्र तीन टुकड़ों में बँटा हुआ है। आध्यात्मिक साधना का सारा-का-सारा माहौल तीन टुकड़ों में बँटा हुआ है। ये हैं- उपासना, साधना और आराधना। उपासना के नाम पर आपने अगरबत्ती जलाकर और नमस्कार करके उसे समाप्त कर दिया होगा, परन्तु हमने ऐसा नहीं किया। हमने अगरबत्ती जलाकर प्रारंभ तो अवश्य किया है, परन्तु समाप्त नहीं किया। हमने अपने जीवन में अध्यात्म के जो भी सिद्धान्त हैं, उन्हें अवश्य धारण करने का प्रयास किया है। त्रिवेणी में स्नान करने की बात आपने सुनी होगी कि उसके बाद कौआ कोयल बन जाता है। हमने भी उस त्रिवेणी संगम में स्नान किया है, जिसे उपासना, साधना और आराधना कहते हैं। वास्तव में यही अध्यात्म की असली शिक्षा है।

उपासना माने भगवान के नजदीक बैठना। नजदीक बैठने का भी एक असर होता है। चन्दन के समीप जो पेड़-पौधे होते हैं, वह भी सुगन्धित हो जाते हैं। हमारी भी स्थिति वैसी ही हुई। चन्दन का एक बड़ा-सा पेड़, जो हिमालय में उगा हुआ है, उससे हमने सम्बन्ध जोड़ लिया और खुशबूदार हो गये। आपने लकड़ी को देखा होगा, जब वह आग के सम्पर्क में आ जाती है, तो वह भी आग जैसी लाल हो जाती है। उसे आप नहीं छू सकते, कारण वह भी आग जैसी ही बन जाती है। यह क्या बात हुई ? उपासना हुई, नजदीक बैठना हुआ। नजदीक बैठना, यानी चिपक जाना अर्थात समर्पण कर देना। चिपकने की यह विद्या हमारे गुरु ने हमें सिखा दी और हम चिपकते हुए चले गये। गाँव के गँवार महिला की शादी किसी सेठ के साथ होने पर वह सेठानी, पंडित के साथ होने पर पंडितानी बन जाती है। यह सब समर्पण का चमत्कार है।

मित्रो, उपासना का मतलब समर्पण है। आपको भी अगर शक्तिशाली या महत्वपूर्ण व्यक्ति बनना है, बड़ा काम करना है, तो आपको भी बड़े आदमी के साथ, महान गुरु के साथ चिपकना होगा। आप अगर शेर के बच्चे हैं, तो आपको भी शेर होना चाहिए। आप अगर घोड़े के बच्चे हैं तो आपको घोड़ा होना चाहिए। आप अगर संत के बच्चे हैं तो आपको संत होना चाहिए। हमने इस बात का बराबर ख्याल रखा है कि हम भगवान के बच्चे हैं, तो हमें भगवान की तरह बनना चाहिए। बूँद जब अपनी हस्ती समुद्र में गिराती है तो वह समुद्र बन जाती है। यह समर्पण है। अपनी हस्ती को समाप्त करना ही समर्पण है। अगर बूँद अपनी हस्ती न समाप्त करे तो वह बूँद ही बनी रहेगी। वह समुद्र नहीं हो सकती है। अध्यात्म में यही भगवान को समर्पण करना उपासना कहलाती है। भगवान माने उच्च आदर्शों, उच्च सिद्धान्तों का समुच्चय । उच्च आदर्शों, उच्च सिद्धान्तों को अपने साथ मिला लेना ही उपासना कहलाती है। हमने अपने जीवन में इसी प्रकार की उपासना की है, आपको भी इसी प्रकार की उपासना करनी चाहिए।

आप लोगों को मालूम है कि ग्वाल-बाल इतने शक्तिशाली थे कि उन्होंने अपनी लाठी के सहारे गोवर्धन को उठा लिया था। इसी तरह रीछ-बन्दर इतने शक्तिशाली थे कि वे बड़े-बड़े पत्थर उठाकर लाये और समुद्र में सेतु बनाकर उसे लाँघ गये थे। क्या यह उनकी शक्ति थी? नहीं बेटे, यह भगवान श्रीकृष्ण एवं राम के प्रति उनके समर्पण की शक्ति थी, जिसके बल पर वे इतने शक्तिशाली हो गये थे। भगवान के साथ, गुरु के साथ मिल जाने से, जुड़ जाने से आदमी न जाने क्या से क्या हो जाता है। हम अपने गुरु से- भगवान से जुड़ गये तो आप देख रहे हैं कि हमारे अन्दर क्या-क्या चीजें हैं। आप कृपा करके मछली पकड़ने वालों, चिड़िया पकड़ने वालों के तरीके से मत बनना और न इस तरह की उपासना करना, जो आटे की गोली और चावल के दाने फेंककर उन्हें फँसा लेते और पकड़ लेते हैं तथा कबाब बना लेते हैं। आप ऐसे उपासक मत बनना, जो भगवान को फँसाने के लिए तरह-तरह के प्रलोभन फेंकता है। बिजली का तार लगा हो, परन्तु उसका सम्बन्ध जनरेटर से न हो तो करेण्ट कहाँ से आयेगा? उसी तरह हमारे अंदर अहंकार, लोभ, मोह भरा हो, तो वे चीजें हम नहीं पा सकते हैं, जो भगवान के पास हैं। अपने पिता की सम्पत्ति के अधिकारी आप तभी हो सकते हैं, जब आप उनका ध्यान रखते हों, उनके आदर्शों पर चलते हों, सिद्धान्तों पर चलते हों। आप केवल यह कहें कि हम तो उन्हें पिताजी-पिताजी कहते थे तथा अपना सारा वेतन अपनी पॉकेट में रखते थे और उनकी हारी-बीमारी से हमारा कोई लेना-देना नहीं था, तो फिर आपको उनकी सम्पत्ति का कोई अधिकार नहीं मिलने वाला है।

साथियो, हमने भगवान को देखा तो नहीं है, परन्तु अपने गुरु को हमने भगवान के रूप में पा लिया है। उनको हमने समर्पण कर दिया है। उनके हर आदेश का पालन किया है। इसलिए आज उनकी सारी सम्पत्ति के हम हकदार हैं। आपको मालूम नहीं है कि विवेकानन्द ने रामकृष्ण परमहंस को देखा था, स्वामी दयानन्द ने विरजानन्द को देखा था। चाणक्य तथा चन्द्रगुप्त का नाम सुना है न आपने। उनके गुरु ने जो उनको आदेश दिये, उनका उन्होंने पालन किया। गुरुओं ने शिष्यों को, भगवान ने भक्तों को जो आदेश दिये, वे उसका पालन करते रहे। आपने सुना नहीं है, एक जमाने में समर्थ गुरु रामदास के आदेश पर शिवाजी लड़ने

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

के लिए तैयार हो गये थे। उनके एक आदेश पर वे आजादी की लड़ाई के लिए तैयार हो गये। यही समर्पण का मतलब है। आपको मालूम नहीं है कि इसी समर्पण की वजह से समर्थ गुरु रामदास की शक्ति शिवाजी में चली गयी और वे उसे लेकर चले गये।

आपने नदी को देखा होगा कि वह कितनी गहरी होती है। चौड़ी एवं गहरी नदी को कोई आसानी से पार नहीं कर सकता है, किन्तु जब वह एक नाव पर बैठ जाता है, तो नाव वाले की यह जिम्मेदारी होती है कि वह नाव को भी न डूबने दे और वह व्यक्ति जो उसमें बैठा है, उसे भी न डुबाये। इस तरह नाविक उस व्यक्ति को पार उतार देता है। ठीक उसी प्रकार जब हम एक गुरु को, भगवान को, नाविक के रूप में समर्पण कर देते हैं तो वह हमें इस भवसागर से पार कर देता है। हमारे जीवन में इसी प्रकार घटित हुआ है। हमने अपने गुरु को भगवान बना लिया है। हमने उन्हें एकलव्य की तरह से अपना सर्वस्व मान लिया है। हमने उन्हें एक बाबाजी, स्वामीजी, गुरु नहीं माना है, बल्कि भगवान माना है। हमारे पास इस प्रकार भगवान की शक्ति बराबर आती रहती है। हमने पहले छोटा बल्ब लगा रखा था, तो थोड़ी शक्ति आती थी। अब हमने बड़ा बल्ब लगा रखा है तो हमारे पास ज्यादा शक्ति आती रहती है। हमें जब जितना चाहिए, मिल जाता है। हमें आगे बड़ी- बड़ी फैक्टरियाँ लगानी हैं, बड़ा काम करना है, अतः हमने उन्हें बता दिया है कि अब हमें ज्यादा 'पावर,' ज्यादा शक्ति की आवश्यकता है। आप हमारे ट्रांसफार्मर को बड़ा बना दीजिए। अब वे हमारे ट्रांसफार्मर को बड़ा बनाने जा रहे हैं। आपको भी अगर लाभ प्राप्त करना है तो हमने जैसे अपने गुरु को माना और समर्पण किया है, आप भी उसी तरह मानिये तथा समर्पण कीजिए। उसी तरह कदम बढ़ाइये। हमने उपासना करना सीखा है और अब हम हंस बन गये हैं। आपको भी यही चीज अपनानी होगी। इससे कम में उपासना नहीं हो सकती है। आप पूरे मन से, पूरी शक्ति से उपासना में मन लगाइये और वह लाभ प्राप्त कीजिए जो हमने प्राप्त किये हैं। यही है उपासना।

साधना किसकी की जाए? भगवान की? अरे भगवान को न तो किसी साधना की बात सुनने का समय है और न ही उसे साधा जा सकता है। वस्तुतः जो साधना हम करते हैं वह केवल अपने लिए होती है और स्वयं की होती है। साधना का अर्थ होता है- साध लेना। अपने आपको सँभाल लेना, तपा लेना, गरम कर लेना, परिष्कृत कर लेना, शक्तिवान बना लेना, यह सभी अर्थ साधना के हैं। साधना के संदर्भ में हम आपको सर्कस के जानवरों का उदाहरण देते रहते हैं कि हाथी, घोड़े, शेर, चीते जब अपने को साध लेते हैं तो कैसे-कैसे चमत्कार दिखाते हैं। साधे गये ये जानवर अपने मालिक का पेट पालने तथा सैकड़ों लोगों का मनोरंजन करने, खेल दिखाने में समर्थ होते हैं। इन जानवरों को साध लिया गया होता है जो सैकड़ों लोगों को प्राविडेण्ट फन्ड देते हैं, पेमेण्ट देते हैं, उनका पालन करते हैं। ये कैसे साधे जाते हैं? बेटे, यह रिंगमास्टर के हण्टरों से साधे जाते हैं। वह उन्हें हण्टर मार-मारकर साधता है। अगर उन्हें ऐसे ही कहा जाए कि भाईसाहब आप इस तरह का करतब दिखाइये, तो इसके लिए वे तैयार नहीं होंगे, वरन उल्टे आपके ऊपर, मास्टर के ऊपर हमला कर देंगे।

साधना में भी यही होता है। मनुष्य के, साधक के मन के ऊपर चाबुक मारने से, हण्टर मारने से, गरम करने से, तपाने से वह काबू में आ जाता है। इसीलिए तपस्वी तपस्या करते हैं। हिन्दी में इसे 'साधना' कहते हैं और संस्कृत में 'तपस्या' कहते हैं। यह दोनों एक ही हैं। अतः साधना का मतलब है अपने आपको तपाना। खेत की जोताई अगर ठीक ढंग से नहीं होगी, तो उसमें बोवाई भी ठीक ढंग से नहीं की जा सकेगी। अतः अच्छी फसल प्राप्त करने के लिए पहले खेत की जोताई करना आवश्यक है, ताकि उसमें से कंकड़-पत्थर आदि निकाल दिए जाएँ। उसके बाद बोवाई की जाती है। कपड़ों की धुलाई पहले करनी पड़ती है, तब उसकी रँगाई होती है। बिना धुलाये कपड़ों की रँगाई नहीं हो सकती है। काले, मैले-कुचैले कपड़े नहीं रँगे जा सकते हैं।

मित्रो, उसी प्रकार से राम का नाम लेना एक तरह से रँगाई है। राम की भक्ति के लिए साफ-सुथरे कपड़ों की आवश्यकता है। माँ अपने बच्चों को गोद में लेती है, परन्तु जब बच्चा टट्टी कर देता है तो वह उसे गोद में नहीं उठाती है। पहले उसकी सफाई करती है, उसके बाद उसके कपड़े बदलती है, तब गोद में लेती है। भगवान भी ठीक उसी तरह के हैं। वे मैले-कुचैले प्रवृत्ति के लोगों को पसन्द नहीं करते हैं। यहाँ साफ-सुथरा से मतलब कपड़े से नहीं है, बल्कि भीतर से है- अंतरंग से है। इसी को स्वच्छ रखना, परिष्कृत करना पड़ता है। तपस्या एवं साधना इसी का नाम है। अपने अन्दर जो बुराइयाँ हैं, भूले हैं, कमियाँ हैं, दोष-दुर्गुण हैं, कषाय-कल्मष हैं, उसे दूर करना व उसके लिए कठिनाइयाँ उठाना ही साधना या तपस्या कहलाती है। इसी का दूसरा नाम पात्रता का विकास है। कहने का तात्पर्य यह है कि वर्षा के समय आप बाहर जो भी पात्र रखेंगे- कटोरी, गिलास-जो कुछ भी रखेंगे, उसी के अनुरूप उसमें जल भर जाएगा। इसी तरह आपकी पात्रता जितनी होगी, उतना ही भगवान का प्यार, अनुकम्पा आप पर बरसती चली जाएगी।

घोड़ा जितना तेजी से दौड़ सकता है, उसी के अनुसार उसका मूल्य मिलता है। गाय जितना दूध देती है, उसी के अनुसार उसका मूल्यांकन होता है। अगर आपके कमण्डलु में सुराख है तो उसमें डाला गया पदार्थ बह जाएगा। नाव में अगर सुराख है तो नाव पार नहीं हो सकती है। वह डूब जाएगी। अतः आप अपने बर्तन को बिना सुराख के बनाने का प्रयत्न करें। हमने सारी जिन्दगी भर इसी सुराख को बन्द करने में अपना श्रम लगाया है। वासना, तृष्णा और अहंता- यही तीन सुराख हैं, जो मनुष्य को आगे नहीं बढ़ने देते हैं। इन्हें ही भवबन्धन कहा गया है । अगर आपका मन संसार की ओर अधिक लगा हुआ है, तो आप आध्यात्मिकता की ओर कैसे बढ़ पाएँगे? फिर आपका मन पूजा-उपासना में कैसे लगेगा? आप इस दिशा में आगे कैसे बढ़ेंगे? गोली चलाने वाला अगर निशाना न साधे तो उसका काम कैसे चलेगा? वह कभी इधर को

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

भटके, कभी उधर को भटके तो उससे निशाना कैसे साधा जाएगा? बीस जगह ध्यान रहा तो आप विजेता नहीं बन सकते हैं। भगवान आपको अपनाने के लिए हाथ बढ़ा रहा है, परन्तु ये तीन हथकड़ियाँ वासना, तृष्णा एवं अहंता आपको भगवान तक पहुँचने में रुकावट पैदा कर रही हैं। आपको इनसे लोहा लेना होगा। आप अगर अपने हाथों को नहीं खोलेंगे तो भगवान की गोद में आप कैसे जाएँगे?

मित्रो, साधना में आपको अपने मन को समझाना होगा। अगर मन नहीं मानता है तो आपको उसकी पिटाई करनी होगी। बैल जब खेतों में हल नहीं खींचता है तथा घोड़ा जब रास्ते पर चलने अथवा दौड़ने को तैयार नहीं होता है तो उसकी पिटाई करनी पड़ती है। हमने अपने आपको इतना पीटा है कि उसका कहना नहीं। हमने अपने आपको इतना धुलने का प्रयास किया है कि उसे हम कह नहीं सकते। इस प्रकार धुलने के कारण हम फकाफक कपड़े के तरीके से आज धुले हुए उज्ज्वल हो गये । हमने अपने आपको रूई की तरह से धुनने का प्रयास किया है, जो धुनने के पश्चात फूलकर इतनी स्वच्छ और मोटी हो जाती है कि उससे नयी चीज का निर्माण होता है।

भगवान का भजन करने एवं नाम लेने के लिए अपना सुधार करना परम आवश्यक है। बाल्मीकि ने जब यह काम किया तो भगवान के परमप्रिय भक्त हो गये। उनकी वाणी में एक ताकत आ गयी। उसने डकैती छोड़ दी, उसके बाद भगवान का नाम लिया तो काम बन गया। कहने का मतलब यह है कि आप अपने आपको धोकर इतना निर्मल बना लें कि भगवान आपको मजबूर होकर प्यार करने लग जाए। राम नाम के महत्त्व से ज्यादा आपकी जीभ का महत्त्व है। आप जीभ पर कंट्रोल रखिए तब ही काम बनेगा। जीभ पर काबू रखें, आप ईमानदारी की कमाई खाएँ, बेईमानी की कमाई न खाएँ।

हमने अपनी जीभ को साफ किया है। उसे इस लायक बनाया है कि गुरु का नाम लेकर जो भी वरदान देते हैं, वह सफल हो जाता है। आप भी जीभ को ठीक कीजिए न! आप अपने आपको सही करें। अपने जीवन में सादा जीवन तथा उच्च विचार लाएँ। इस सिद्धान्त को जीवन का अंग बनाने से ही काम बनेगा। आपको खाने के लिए दो मुट्ठी अनाज और तन ढँकने के लिए थोड़ा-सा कपड़ा चाहिए, जो इस शरीर के द्वारा आप सहज ही पूरा कर सकते हैं। फिर आप अपने जीवन को शुद्ध एवं पवित्र क्यों नहीं बनाते। अगर यह काम करेंगे तो आप भगवान की गोदी के हकदार हो जाएँगे। ऐसा बनकर आदमी बहुत कुछ काम कर सकता है।

सादा जीवन के माने है- कसा हुआ जीवन। आपको अपना जीवन सादा बनाना होगा। माल-मजा उड़ाते हुए, लालची और लोभी रहते हुए आप चाहें कि राम नाम सार्थक हो जाएगा? नहीं कभी सार्थक नहीं होगा। हमारे गुरु ने, हमारे महापुरुषों ने हमें यही सिखाया है कि जो आदमी महान बने, ऊँचे उठे हैं, उन सभी ने अपने आपको तपाया है। आप किसी भी महापुरुष का इतिहास उठाकर पढ़कर देखें तो पायेंगे कि अपने को तपाने के बाद ही उन्होंने वर्चस्व प्राप्त किया और फिर जहाँ भी वे गये चमत्कार करते चले गये। तलवार से सिर काटने के लिए उसे तेज करना पड़ता है, पत्थर पर घिसना पड़ता है। आपको भी प्रगति करने के लिए अपने आपको तपाना होगा, घिसना होगा। हमने एक ही चीज सीखी है कि अपने आपको अधिक से अधिक तपाएँ, अधिक से अधिक घिसें, ताकि हम ज्यादा-से-ज्यादा समाज के काम आ सकें। समाज की सेवा करना ही हमारा लक्ष्य है। अगर आप भी ऐसा कर सकें, तो बहुत फायदा होगा, जैसा कि हमें हुआ है।

साधना के पश्चात आराधना की बात बताता हूँ आपको कि आराधना क्या है और किसकी की जानी चाहिए? आराधना कहते हैं- समाजसेवा को, जन कल्याण को। सेवाधर्म वह नकद धर्म है जो हाथोंहाथ फल देता है। इसमें पहले बोना पड़ता है। आज से साठ वर्ष पूर्व हमारे पूज्य गुरुदेव ने हमारे घर पर आकर दीक्षा दी और यह कहा कि तुम बोने और काटने की बात मत भूलना। कहीं से भी कोई चीज फोकट में नहीं मिलती है, चाहे वे गुरु हों या भगवान हों। हाँ, यह हो सकता है कि बोया जाए और काटा जाए। हम मक्के का एक बीज बोते हैं तो न जाने कितने हजार हो जाते हैं। यही बाजरे के साथ भी होता है। उन्होंने हमसे कहा कि बेटे, फोकट में खाने की विद्या एवं माँगने की विद्या छोड़कर बोने और काटने की विद्या सीख, इससे ही तुम्हें फायदा होगा। उन्होंने इसके लिए विधान भी बतलाया कि तुम्हें चौबीस साल तक गायत्री के महापुरश्चरण करने होंगे। इस समय जौ की रोटी एवं छाछ पर रहना होगा। उन्होंने जो भी विधि हमें बतायी, उसे हमने नोट कर लिया था। इसमें उन्होंने हमें एक नयी विधि बतलायी। वह विधि बोने और काटने की थी। उन्होंने कहा कि जो कुछ भी तेरे पास है, उसे भगवान के खेत में बो दो। उन्होंने यह भी कहा कि तीन चीजें भगवान की दी हुई हैं और एक चीज तुम्हारी कमाई हुई है।

शरीर, बुद्धि और भावना-ये तीन चीजें जो भगवान ने दी हैं। यह तीन शरीर-स्थूल, सूक्ष्म और कारण के प्रतीक हैं। इसमें तीन चीजें भरी रहती हैं-स्थूल में श्रम, समय। सूक्ष्म में मन, बुद्धि। कारण में भावना। इसके अलावा जो चौथी चीज है- वह है धन-सम्पदा, जो मनुष्य कमाता है। इसे भगवान नहीं देता है। भगवान न किसी को गरीब बनाता है, न अमीर । भगवान न किसी को धनवान बनाता है, न कंगाल बनाता है । यह तेरा बनाया हुआ है, इसे तू बोना शुरू कर । हमने कहा कि कहाँ बोया जाए? उन्होंने कहा कि भगवान के खेत में। हमने पूछा कि भगवान कहाँ है और उनका खेत कहाँ है? उन्होंने हमें इशारा करके बतलाया कि यह सारा विश्व ही भगवान का खेत है। यह भगवान विराट है। इसे ही विराट ब्रह्म कहते हैं। अर्जुन को भगवान श्रीकृष्ण ने इसी विराट ब्रह्म का दर्शन कराया था। उन्होंने दिव्यचक्षु से उनका दर्शन कराया था। यही उन्होंने कौशल्या जी को दिखाया था। हमारे गुरु ने कहा कि जो कुछ भी करना हो, इसी समग्र सृष्टि के लिए करना चाहिए। यही भगवान की वास्तविक पूजा कहलाती है। इसे ही आराधना कहते हैं।

उन्होंने हमें आदेश दिया कि तू इसी विराट ब्रह्म के खेत में बो। अर्थात् जन-समाज की सेवा कर । जनसमाज का कल्याण करने, उसे ऊँचा उठाने, समुन्नत और सुसंस्कृत बनाने में अपनी समस्त शक्तियाँ एवं सम्पदा लगा, फिर आगे देखना कि यह सौ गुनी हो जाएँगी। जो भी तीन-चार चीजें तेरे पास हैं, उसे लगा

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

दे, तुझे ऋद्धि-सिद्धियाँ मिल जाएँगी। यह सब तेरे पीछे घूमेंगी। तू मालदार हो जाएगा। अब हम तैयार हो गये। हमने विचार दृढ़ बना लिया। उन्होंने पूछा कि क्या चीजें हैं तेरे पास ? हमने कहा कि हमारा शरीर है। हमने सूर्योदय के पहले भगवान का नाम लिया है अर्थात भजन किया है, बाकी समय हमने भगवान का काम किया है। सूर्य निकलने से लेकर सूर्य डूबने तक सारा समय भगवान के लिए लगाया, समाज के लिए लगाया है।

दूसरी, बुद्धि है हमारे पास। आज लोगों की बुद्धि न जाने किस-किस गलत काम में लग रही है। आज लोग अपनी बुद्धि को मिलावट करने, तस्करी करने, गलत काम करने में खर्च कर रहे हैं। हमने निश्चय किया कि हम अपनी बुद्धि को सन्मार्ग की ओर ले जाएँगे तथा इससे समाज, देश को ऊँचा उठाने का प्रयास करेंगे। हमने अपनी अक्ल एवं बुद्धि को यानी अपने सारे-के-सारे मन को भगवान के कार्य में लगाया।

और क्या था हमारे पास। हमारे पास थी भावना-संवेदना। यह भी हमने अपने कुटुम्बियों के लिए, बेटे-बेटी के लिए नहीं लगाई। हमने अपनी भावना एवं संवेदना के माध्यम से इस संसार में रहने वाले व्यक्तियों के दु:खों के निवारण के लिए हमेशा उपयोग किया। हमने हमेशा यह सोचा कि हमारे पास सुख है तो उसे किस तरह से बाँट सकते हैं? अगर किसी के पास दुख है, तो उसे किस तरह से दूर कर सकते हैं। यही हमने अपने पूरे जीवनकाल में किया है। इसके अलावा जो भी धन था, उसे भी भगवान के कार्य में खर्च कर दिया। इससे हमें बहुत मिला, इतना अधिक मिला कि हम आपको बतला नहीं सकते। हमें लोग कितना प्यार करते हैं, यह आपको नहीं मालूम। लोग यहाँ आते हैं तो यह कहते हैं कि हमें गुरुजी का दर्शन मिल जाता तो कितना अच्छा होता। यह क्या है? यह है हमारा प्यार, मोहब्बत, जो हमने उन्हें दी है तथा उनसे हमने पायी है। गाँधी जी ने भी दिया था एवं उन्होंने भी पाया है। हमने तो कहीं अधिक पाया है। मरने के बाद तो कितने ही व्यक्तियों की लोग पूजा करते हैं। भगवान बुद्ध की पूजा करते हैं। मरने के बाद भगवान श्रीकृष्ण की जय बोलते हैं, जबकि उस समय लोगों ने उन्हें गालियाँ दी थीं। हमारे मरने के बाद कोई आरती उतारेगा कि नहीं, मैं यह नहीं कह सकता, परन्तु आज कितने लोगों ने आरती उतारी है, प्यार किया है, इसे हम बतला नहीं सकते। यह क्या हो गया? यह है हमारा 'बोया एवं काटा' का सिद्धान्त । यह है हमारी आराधना-समाज के लिए, भगवान के लिए।

मित्रो, हमने पत्थर की मूर्ति के लिए नहीं, वरन् समाज के लिए काम किया है। पत्थर की मूर्ति को भगवान नहीं कहते हैं। समाज को ही भगवान कहते हैं। हमने ऐसा ही किया है। हमें दो मालियों की कहानी हमेशा याद रहती है। एक राजा ने एक बगीचा एक माली को दिया तथा दूसरा बगीचा दूसरे माली को। एक ने तो बगीचे में राजा का चित्र लगा दिया और नित्य चन्दन लगाता, आरती उतारता तथा एक सौ आठ परिक्रमा करता रहा। इसके कारण बगीचे का कार्य उपेक्षित पड़ा रहा। बगीचा सूखने लगा।

दूसरा माली तो राजा का नाम भी भूल गया, परन्तु वह निरन्तर बगीचे में खाद-पानी डालने, निराई करने का काम करता रहा। इससे उसका बगीचा हरियाली से भरा-पूरा होता चला गया। राजा एक वर्ष बाद बगीचा देखने आया, तो पहले वाले माली को उसने हटा दिया, जो एक सौ आठ परिक्रमा करता और आरती उतारता था। दूसरे उस माली का अभिनन्दन किया, उसे ऊँचा उठा दिया, जिसने वास्तव में बगीचे को सुन्दर बनाने का प्रयास किया था।

हमारा भगवान भी उसी तरह का है। उन्होंने कहा था कि जो कुछ भी करना भगवान के लिए करना, समाज के लिए करना। हमने सारी जिन्दगी इसी तरह का काम किया है और जितना किया है, उतना पा लिया है। आगे जो हम करेंगे, उसके एवज में भी हम पाते रहेंगे। आपका तो हमेशा दिल धड़कता रहता है। आपको तो भगवान का नाम लेना सहज मालूम पड़ता है, पर भगवान का काम करना मुश्किल पड़ता है तथा उसके लिए पैसा लगाना तो और भी मुश्किल मालूम पड़ता है। यह आपके लिए मुश्किल हो सकता है, परन्तु हमारे लिए तो यह एकदम सरल है। हमारे दिमाग, शरीर, साहित्य, हमारी प्लानिंग को देख लीजिए, यह हमारी सिद्धियाँ हैं। ज्ञान की थाह आप ले लीजिए, हमारे धन की जानकारी ले लीजिए, हमारी भावना को देख लीजिए, कितने लोग हमारे दर्शन को लालायित रहते हैं। यह सारी हमारी प्रत्यक्ष सिद्धियाँ हैं। ऋद्धियाँ तो हमारी दिखलाई नहीं पड़तीं। हमें खूब आराम से नींद आ जाती है, पास में नगाड़ा भी बजता रहे तो भी कोई परवाह नहीं। चिन्ता हमारे पास नहीं है। हम निर्भीक हैं। आत्मसंतोष हमारी ऋद्धि है। हमारा लोकसम्मान बहुत है। लोकसम्मान उसे कहते हैं- जिसमें जनता का सहयोग मिलता है। भगवान का अनुग्रह भी हमें मिला है। अनुग्रह कैसा होता है, कहते हैं कि देवता ऊपर से फूल बरसाते हैं। हमारे ऊपर हमेशा फूल बरसते रहते हैं, जिसे हम प्रोत्साहन, साहस, हिम्मत, प्रेरणा, उत्साह, उम्मीद कह सकते हैं। देवता इसे हमारे ऊपर बरसाते रहते हैं।

मित्रो, हम अपने पिता के वफादार बेटे हैं। हमने उनके धन को पाया है, क्योंकि हमने उनके नाम को बदनाम नहीं किया है। हमने अपने पिता की लाज रखी है। हमने अपने पिता के व्यवसाय को जिन्दा रखा है। हमने उनके बगीचे को हमेशा हरा-भरा तथा अच्छा बनाने का प्रयास किया है। मनुष्यों को सुसंस्कारी तथा समुन्नत बनाने के लिए जो भी संभव था, उसे हमने पूरा किया है। हमारे पिता हमसे हमेशा प्रसन्न रहते हैं। युवराज वह होता है जो अपने पिता के समान हो जाता है। हम अपने पिता के युवराज हैं। हम अपने पिता के समकक्ष हो गये हैं। हमने पिता को गुम्बज की आवाज-प्रतिध्वनि के रूप में देखा है। जो शब्द हमने कहा-वैसा ही सुनने को मिला। हमने कहा कि जो कुछ भी हमारे पास है, वह आपका है। उसने भी ऐसा ही कहा कि जो कुछ हमारे पास है, वह तुम्हारा है। हमने कहा कि हमें नहीं चाहिए आपका, उसने भी वैसा ही कहा।

भगवान हमेशा हमारे बॉडीगार्ड के रूप में फिरता रहता है। वह कहता है कि कभी भी हिम्मत मत हारना, साहस मत खोना, किसी से डरना मत। जो तुम्हें तंग करेगा उसे हम ठीक कर देंगे। उसकी नाक में दम कर देंगे। वह परेशान एवं हैरान हो जाएगा। उसे हम धूल में

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

मिला देंगे। हमारा बॉडीगार्ड आगे-आगे चलता है। हम उसके पीछे चलते हैं। हमारा पायलट आगे चलता है, बॉडीगार्ड पीछे चलता है। हम सुरक्षित होकर मिनिस्टर के तरीके से शानदार ढंग से चलते हैं। यह हमारा प्रत्यक्ष चमत्कार है, जो आप देख रहे हैं।

आध्यात्मिक क्षेत्र में सिद्धि पाने के लिए अनेक लोग प्रयास करते हैं, पर उन्हें सिद्धि क्यों नहीं मिलती है? साधना से सिद्धि पाने का क्या रहस्य है? इस रहस्य को न जानने के कारण ही प्राय: लोग खाली हाथ रह जाते हैं। मित्रो, साधना की सिद्धि होना निश्चित है। साधना सामान्य चीज नहीं है। यह असामान्य चीज है। परन्तु साधना को साधना की तरह किया जाना परम आवश्यक है। साधना कैसी होनी चाहिए, इस सम्बन्ध में हम आपको पुस्तकों का हवाला देने की अपेक्षा एक बात बताना चाहते हैं, जिसकी आप जाँच-पड़ताल कभी भी कर सकते हैं।

हम पचहत्तर साल के हो गये हैं। कहने का मतलब यह है कि हमारे पूरे ७५ साल साधना में व्यतीत हुए हैं। यह हमारा जीवन एक खुली पुस्तक के रूप में है। हमने साधना की है। उसका परिणाम मिला है और जो कोई भी साधना करेगा, उसे भी परिणाम अवश्य मिलेगा। हमें कैसे मिला, इसके संदर्भ में हम दो घटनाएँ सुनाना चाहते हैं।

पहली बार हमारे पिताजी हमें महामना मदनमोहन मालवीय जी के पास यज्ञोपवीत एवं दीक्षा दिलाने के लिए बनारस ले गये थे। मालवीय जी ने काशी में हमें यज्ञोपवीत भी पहनाया और दीक्षा भी दी। उस समय उन्होंने हमें बहुत-सी बातें बतलायीं। उस समय हमारी उम्र बहुत कम यानी ९ वर्ष की थी, परन्तु दो बातें हमें अभी भी ज्ञात हैं। पहली बात उन्होंने कहा कि हमने जो गायत्रीमंत्र की दीक्षा दी है, वह ब्राह्मणों की कामधेनु है। हमने पूछा कि क्या यह अन्य लोगों की नहीं है? उन्होंने कहा कि नहीं, ब्राह्मण जन्म से नहीं, कर्म से होता है। जो ईमानदार, नेक, शरीफ है तथा जो समाज के लिए, देश के लिए, लोकहित के लिए जीता है, उसे ब्राह्मण कहते हैं। एक औसत भारतीय की तरह जो जिए तथा अधिक से अधिक समाज के लिए लगा दे, उसे ब्राह्मण कहते हैं। गाँधीजी ने भी राजा हरिश्चन्द्र का नाटक देखकर यह वचन दिया था कि हम हरिश्चन्द्र होकर जियेंगे। वे इस तरह का जीवन जिए भी। हमने भी मालवीय जी के सामने यह संकल्प लिया था कि हम ब्राह्मण का जीवन जियेंगे। हमने वैसा ही जीवन प्रारम्भ से जिया है।

हमारे दूसरे आध्यात्मिक गुरु, जो हिमालयवासी हैं और जो सूक्ष्म-शरीरधारी हैं, उन्होंने हमारे घर में प्रकाश के रूप में आकर दीक्षा दी। उन्होंने हमें पूर्व जन्म की बातें दिखलाईं। उसके बाद उन्होंने हमें गायत्री मंत्र की दीक्षा दी। हमने कहा कि गायत्री मंत्र की दीक्षा तो हम पहले से लिए हुए हैं, फिर दोबारा देने का क्या अर्थ है? उन्होंने कहा कि आपके पहले गुरु ने यह कहा था कि यह ब्राह्मणों की गायत्री है। अब हम यह बतलाते हैं कि बोओ और काटो। इस मंत्र के अनुसार हमने अपने पिता की सम्पत्ति को भी लोकमंगल में लगा दिया। हमने बोया और पाया है। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि इसके अलावा अन्य चार चीजों को भगवान के खेत में लगाना चाहिए। समय, श्रम, बुद्धि- जो भगवान से मिली है। धन वह है जो संसार में कमाया जाता है। ये चारों चीजें हमने समाज में लगा दीं। इसके द्वारा हमारी पूजा, उपासना एवं साधना हो गयी। हमारे ब्राह्मण-जीवन का यही चमत्कार है। यही मेरी पूजा है।

समय के बारे में आप देखना चाहें तो इन पचहत्तर वर्षों में हमने क्या किया है, कितना किया है, वह आप देख सकते हैं। हमने भगवान यानी जो अच्छाइयों का समुच्चय है, उसे समर्पण करके यह सब किया है। हमारी उपासना और साधना ऐसी है कि हमने सारी जिन्दगी भर धोबी के तरीके से अपने जीवन को धोया है और अपनी कमियों को चुन-चुनकर निकालने का प्रयत्न किया है। आराधना हमने समाज को ऊँचा उठाने के लिए की है। आप यहाँ आइये और देखिये, अपने मुख से अपने बारे में कहना ठीक बात नहीं है। आप यहाँ आइये और दूसरों के मुख से सुनिये। हम सामान्य व्यक्ति नहीं हैं, असामान्य व्यक्ति हैं। यह हमें उपासना, साधना और आराधना के द्वारा मिला है। आप अगर इन तीनों चीजों का समन्वय अपने जीवन में करेंगे, तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आपको साधना से सिद्धि अवश्य मिलेगी।

हमारे जो भी सहयोगी, सखा, सहचर एवं मित्र हैं, उनसे हम यही कहना चाहते हैं कि आप केवल अपने तथा अपने परिवार के लिए ही खर्च मत कीजिए, वरन् कुछ हिस्सा भगवान के लिए भी खर्च कीजिए। साथ ही हम यह भी कहते हैं कि बोइये और काटिये। फिर देखिये कि जीवन में क्या-क्या चमत्कार होते हैं। आप जनहित में, लोकमंगल में, पिछड़ों को ऊँचा उठाने में अपना श्रम, समय, साधन लगाएँ। अगर आप इतना करेंगे तो विश्वास रखिये आपको साधना से सिद्धि मिल सकती है। हमने इसी आधार पर पाया है और आप भी पा सकेंगे, परन्तु आपको सही रूप से इन तीनों को पूरा करना होगा। आपकी साधना तब तक सफल नहीं होगी, जब तक आप हमारे साथ कदम से कदम मिलाकर नहीं चलेंगे। यदि आप हमारे कंधे से कंधा मिलाकर और कदम से कदम मिलाकर चल सके तो हम आपको यकीन दिलाते हैं कि आपका जीवन धन्य हो जाएगा, पीढ़ियाँ आपको श्रद्धापूर्वक याद रखेंगी। आज की बात समाप्त।

॥ॐ शान्ति:॥

एक बौद्धभिक्षु चीन गया। चीन का सम्राट अपनी प्रजा के साथ स्वागत के लिए पहुँचा। सम्राट देखकर हैरान कि जिसकी इतनी प्रशंसा सुनी थी वह तो कुछ पागल-सा दिखाई देता है। एक पादुका पैर में पहने है, एक सिर पर रखे चला आ रहा है। सम्राट से न रहा गया। स्वागत-समारोह के बाद आखिर भिक्षु को हैरानी भरी जिज्ञासावश पूछ ही बैठा। भिक्षु ने कहा- "मुझमें आपमें थोड़ा-बहुत ही अन्तर है। मैंने तो अपनी एक पादुका सिर पर रखकर ही आधी गुलामी स्वीकार की है, किन्तु आप सब भी तो सम्पत्ति के गुलाम हैं; जबकि आपको तो सम्पत्ति का मालिक होना चाहिए था।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी-

प्रज्ञावतार की सत्ता का आश्वासन

(प्रज्ञा परिजनों के नाम संदेश)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो, भाइयो ! आप सभी जानते हैं कि जब रात्रि समाप्त होती है, तो सूरज पूर्व दिशा से ही निकलता है । सूरज के निकलने की और कोई दिशा है ही नहीं । जब चारों ओर अंधकार छाया रहता है, तब हर एक आदमी ठोकर खाता हुआ फिरता है । उसे न तो दिशा का ज्ञान रहता है और न ही वस्तु का ज्ञान रहता है । सब जगह घोर अंधकार छाया हुआ रहता है । उस समय उलूक, साँप, बिच्छू, चोर, भूत-पलीत और निशाचरों का साम्राज्य छाया रहता है । भले आदमी खर्राटे भरकर सोये हुए रहते हैं । ऐसे अंधकार के समय में जब चारों ओर निस्तब्धता छायी रहती है, हलचलों का नामोनिशान तक नहीं दिखाई देता, नींद की खुमारी सब पर छायी रहती है । घोर अंधकार के समय में सब जगह सुनसान हो जाता है । उस अंधकार को दूर करने के लिए जब कभी सूरज निकलता है, जब कभी ब्रह्ममुहूर्त आता है-ऊषाकाल आता है, तब हमें उसके लिए सूरज को ही देखना पड़ता है । प्राची अपने साथ ऊषाकाल लाती है । प्रातःकाल में ही सूरज की लालिमा चमकती है और वह घोर अंधकार, जो किसी तरह समाप्त नहीं हो सकता, इसको मिटाने के लिए भी कोई समर्थ नहीं हो सकता, वह केवल प्राची से उदय होने वाले सूरज के द्वारा ही हो सकता है । समय जैसे-जैसे करीब आता है, वह कुछ-कुछ सेकण्डों में थोड़ा-बहुत चारा खाता है । कुछ-कुछ सेकण्डों में उसमें बदलाव होता रहता है ।

यही स्थिति प्रायः आज मनुष्य की हो चली है । एक अज्ञात भय से वह सदा सशंकित बना रहता है । आज मनुष्य का चिन्तन, चरित्र और व्यवहार कितना घटिया हो गया है कि इससे प्रकृति- नेचर भी नाखुश हो गयी है । रोज ही कोई न कोई प्रकृति-प्रकोप की घटना देखने व पढ़ने को मिलती है । प्रकृति का प्रकोप होता है, तो आये दिन महामारियाँ देखने को मिलती हैं । अदृश्य जगत में भयावह वातावरण उत्पन्न हो गया है । प्रकृति के प्रकोप की वजह से आये दिन भूकम्प आते हैं । आये दिन दूसरी मुसीबतें आती हैं । मुसीबतों का अंबार हमारे चारों ओर छाया रहता है । कल के बारे में कोई नहीं जानता कि महायुद्ध के पश्चात हमारा क्या होगा ? कोई नहीं जानता कि बढ़ी हुई जनसंख्या का कल क्या परिणाम होगा ? आज की आपाधापी जिस तरीके से मनुष्य को हैरान और परेशान करने पर तुली हुई है, उसके परिणाम क्या होंगे ? आज ही कौन-सी अच्छी परिस्थितियाँ हैं, लेकिन कल के दिन हमारे और भी खराब आने वाले हैं ।

अपराध बेतरीके से बढ़ते जा रहे हैं । आदमी का स्वभाव बहुत उच्छृंखल और अपराधी होता जा रहा है । आज कितनी दुर्घटनाएँ, वर्जनाएँ हो रही हैं । वर्जनाएँ, जिसके अन्तर्गत

भारतीय-संस्कृति विश्व-संस्कृति बनेगी

मित्रो, लेकिन एक बात ऐसी भी है, जो आपको कभी-कभी ही देखने को मिलती है । कभी-कभी समय ऐसे बदल जाता है और चहुँओर ऐसी परिस्थितियाँ बन जाती हैं, जो मनुष्य के मस्तिष्क पर बुरा प्रभाव डालती हैं । उसे न ही सामाजिक उत्तरदायित्वों का ध्यान रहता है, न अपने निजी कर्तव्यों का ध्यान रहता है । ऐसी भटकाव की स्थिति में, ऐसी मुसीबतें आकर खड़ी हो जाती हैं जैसे कि आज के दौर में आप चारों ओर मुसीबतों का माहौल, भयानक आशंकाओं-आतंकों से भरा वातावरण छाया हुआ देखते हैं । आज किस तरह भयंकर एटमबमों की विभीषिका छायी हुई है । इसके बारे में आप रोज अखबारों में पढ़ते हैं । हवा के जहरीले हो जाने की, संसार का तापमान बढ़ने की बात आप रोज पढ़ते हैं । यह सब बातें आप लोगों की जानकारी के बाहर थोड़े ही हैं । आपको इन सबकी जानकारी है । क्या आपको मालूम नहीं है कि एटमबमों की वजह से जो विकिरण हवा में भर गया है, उसके कारण कैसी विनाशकारी काली छाया चहुँओर व्याप्त हो गयी है ।

उससे कैसे हमारी पीढ़ियाँ कमजोर व अपंग होने वाली हैं ? कितनी महामारियों, बीमारियों का दौर आने वाला है ? इस विकिरण की वजह से-वायुप्रदूषण की वजह से, जो आज के भटकाव ने पैदा कर दिया है । जनसंख्या की बढ़ती हुई स्थिति के बारे में आप सभी को मालूम है । यदि स्थिति यही रही तो थोड़े ही दिनों में इस पृथ्वी पर चलने-फिरने की जगह तक नहीं रहेगी । आप सभी जानते हैं कि बकरे के कटने का आदमी को कहा जाता था कि उसे मर्यादा में रहना चाहिए । सृष्टि का नियम बिगड़ता जा रहा है । सृष्टि का यह नियम है कि करने वाले को भरना पड़ता है । करने के भरने वाले परिणाम को कोई नहीं रोक सकता । जहर खाने के बाद में बचाव करने की आशा कौन करेगा ? आज ठीक इसी तरह की परिस्थितियाँ हैं, जिसमें सभी लोग-सम्पन्न, अमीर, गरीब, भारतीय, विदेशी और प्रवासी एवं अन्य लोग भी शामिल हैं ।

तो गुरुजी ! क्या इस दुनिया का विनाश होगा ? नहीं, बेटे, जिस स्रष्टा ने इस बेहतरीन, खूबसूरत दुनिया को बनाया है, जिसके समान अब तक ऐसी खूबसूरत दुनिया कहीं और नहीं है । क्या भगवान अपनी उस खूबसूरत दुनिया को खत्म कर देगा ? नहीं, उसे जब यह मालूम हुआ कि लोग इस बेहतरीन दुनिया को तबाह करने का प्रयत्न कर रहे हैं और इस दुनिया को रसातल में ले जाने की तैयारी हो गयी है । तब भगवान ने राष्ट्रपति शासन की तरह से इसकी लगाम अपने हाथों में सँभाल ली है और सँभालने के बाद में इस संसार को फिर से सुव्यवस्थित बनाया है । अवतार भी इसी तरह से हुए हैं । अवतार कहाँ से होते हैं तथा किस तरह से होते हैं ? यह आप सभी जानते हैं । चाहे उसे दसवाँ अवतार कहिए या चौबीसवाँ अवतार कहिए, यह सब भारतभूमि से उत्पन्न हुए हैं । सूरज के निकलने की एक ही दिशा-पूरब दिशा होती है । विनाश चाहे किसी भी प्रकार से हुआ हो, लेकिन इन सबके उपाय की एक ही जगह है, जहाँ से इन सबको सँभाला जा सकता है । आज फिर

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

वही समय आ गया है कि विनाश की दुनिया जिन लोगों ने पैदा की है, इन सबको ठीक करने का काम एक बार फिर भारत भूमि करने वाली है, जो किसी जमाने में उसने की थी । सतयुग की बातें आपने पढ़ीं व सुनी जरूर होंगी कि इस जमीन पर स्वर्ग किस तरह से बिखरा हुआ था । आपने भारतभूमि के इतिहास पढ़े होंगे, जैसे रामायण, महाभारत, वेद, गीता, पुराण आदि । आपको इसके विषय में थोड़ी-बहुत जानकारी होनी चाहिए । प्राचीनकाल में बहुत लम्बे समय तक एक ऐसा लम्बा समय रहा, जिसको कि सतयुग कहा जा सकता है । उस सतयुग की वापसी फिर होने वाली है ।

मुसीबतों के दिन क्या ऐसे ही बने रहेंगे ? क्या विनाश की तबाही इसी तरीके से ही होती रहेगी ? क्या इस सुन्दर दुनिया की बरबादी इसी तरह से होती रहेगी ? क्या यह समय ऐसा ही बना रहेगा ? नहीं, जिस कलाकार ने इस दुनिया को अपनी सारी कला झोंक करके बनाया है, वह इस दुनिया की तबाही नहीं होने दे सकता । इसलिए अब उसका अन्तिम अवतार होने वाला है । फिर समझदारी, जिम्मेदारी और ईमानदारी का माहौल बनने वाला है । एक ऐसा ही भगवान आने वाला है, जिसके द्वारा "वसुधैव कुटुम्बकम्" का सिद्धान्त लागू होने वाला है । आज के बिखराव फिर से दूर हो सकें, अब वह समय ज्यादा दूर नहीं । अब सारी दुनिया को एक दुनिया बनकर रहना पड़ेगा । वसुधैव कुटुम्बकम् के सिद्धान्त के ऊपर चलना होगा । दुनिया को एक राष्ट्र के रूप में, एक भाषा-भाषी के रूप में, एक धर्म-संस्कृति के अनुयायी के रूप में रहना पड़ेगा । दुनिया को एक व्यवस्था के अन्तर्गत, एक कानून और नियम के अन्तर्गत चलना पड़ेगा । अगले दिनों ऐसी व्यवस्था लागू करनी होगी । ऐसी व्यवस्था कहाँ से आएगी ? आप जानते हैं क्या ? ऐसी व्यवस्था सिर्फ भारतीय संस्कृति में है । अगले दिनों एक ऐसी व्यवस्था कायम करनी होगी, जो कि बहुत शानदार होगी, जिसमें सभी ओर से सुख और शान्ति होगी । ऐसी व्यवस्था सिर्फ भारतीय संस्कृति में है, जिसको हम 'देव संस्कृति' कहते हैं । देवसंस्कृति की यह विशेषता है कि इनसान की मन:स्थिति को व उसके व्यवहार को ऐसा बनाया जाए कि सारी दुनिया में सुख और शान्ति आये, क्योंकि मन:स्थिति ही सुख और शान्ति प्रदान करती है ।

अच्छी परिस्थितियाँ लाने के लिए मन:स्थिति का ठीक होना जरूरी है । यह कार्य धर्म, अध्यात्म और संस्कृति का है । इसको कौन-सी संस्कृति कहेंगे ? इसे चाहे इनसानी कहिए, मानवीय कहिए, इसी को पुराने लोग भारतीय संस्कृति कहते हैं । वास्तव में यह मानवीय संस्कृति है, किसी एक देश की संस्कृति नहीं है । इसके विस्तृत होने का समय आ गया है । अगले दिनों भारतीय संस्कृति हर जगह फैलेगी । यह संस्कृति भारतीयों के माध्यम से लोगों को स्नेह देकर के सारी दुनिया के लोगों को एक रास्ते पर चलने के लिए मजबूर कर देगी । वह दिन अब दूर नहीं है, वरन् नजदीक आ गया है । हुआ क्या है ? भारतभूमि पर पहले से ही यह प्रकाश फैल रहा है । मानो किसी ने पहले से ही स्कीम बनाकर रख दी हो । जब ऊषाकाल आता है, तो कोई तैयारी करता है क्या ? पूरब में से लाल रंग के बादलों में से सूर्य निकलता है । ये सब सूर्य भगवान के निकलने के लिए तैयारियाँ हैं । भगवान की तैयारी के परिणामस्वरूप यह होता है कि थोड़े समय में अंधकार का पता नहीं चलता, उलूकों का पता नहीं चलता, चोरों का कहीं पता नहीं चलता, चमगादड़ों का पता नहीं चलता, सोने वालों की खुमारी का कहीं पता नहीं चलता, हर जगह जाग्रति की लहर फैल जाती है ।

ठीक इसी तरीके की जाग्रति की लहर भारतभूमि से चल पड़ी है । क्या यह भारतवर्ष तक सीमित रहेगी ? सूरज सीमित कहाँ रहता है ? सूरज पूरब से निकलता है अवश्य, परन्तु थोड़े ही समय में ऊपर चला जाता है । सारी दुनिया को थोड़े ही समय में अँधेरे से निकालकर उजाले का मजा चखा देता है । भारतीय संस्कृति के उदय होने का समय आ गया है । देवसंस्कृति के उत्थान होने का समय नजदीक आ गया है । देवसंस्कृति के द्वारा सतयुग को वापस लाने का समय निकट आ गया है । उन लोगों को चुनौती है जिन्होंने ऐसी परिस्थितियों को जन्म दिया, जिससे कि इनसान की बरबादी होकर रहे । जिनने विनाशकारी एटमबम बनाए, जिन्होंने असमानताएँ, फैलायीं, जिन्होंने 'क्राइम' को प्रोत्साहन दिया, जिन्होंने आपाधापी को प्रोत्साहन दिया, जिन्होंने गन्दी फिल्में बनायीं, जिन्होंने इस तरह की रिवाजें चलायीं जिससे इनसान तबाह होने जा रहा हो । अब इन लोगों को चुनौती है । किसकी ओर से ? भगवान की ओर से, प्रज्ञावतार की ओर से, नये युग की ओर से, जो कि अब बिलकुल नजदीक आ गया है ।

इसकी जिम्मेदारी किसकी है ? भारतवर्ष की । इसकी जिम्मेदारी फिर से भारतवर्ष ने सँभाली है । पौर्वात्य संस्कृति ने सँभाली है और उस पौर्वात्य संस्कृति की हम और आप संतान हैं । इन सबकी जिम्मेदारी हमारी नहीं होगी, तो किसकी होगी ? पूर्व की दिशा से जब सूर्य निकलता है, तो उसकी जिम्मेदारी कौन उठाएगा ? किरणें ही तो उठाएँगी । किरणों को ही तो फैलना है । वही तो गर्मी फैलाएँगी । सूर्य की किरणों को हर चीज में प्रकाश और उल्लास भरना है । आप और हम उसकी किरणें हैं । किसकी ? प्राची की । प्राची कौन है ? प्राची भारतीय संस्कृति है । भारतीय संस्कृति की किरणें हैं आप । आप हिन्दुस्तान में हो तो क्या, हिन्दुस्तान से बाहर हो तो क्या । इससे क्या लेना-देना ? आप सभी भारतीय संस्कृति के अनुयायी हैं । आप नागरिक कहीं के हों, देश की स्थिति से 'सिटीजन ' कहीं के हों, मैं क्या कहूँ आप से ? आप तो भारतीय संस्कृति के पुत्र हैं और आप वही रहेंगे । आपकी नसों में ऋषियों का खून है, जो कि ज्यों का त्यों बना रहेगा । आप किसी भी मुल्क में रहिए, किसी भी जगह रहिए, कहीं की नागरिकता स्वीकार करिए, कोई भी काम करिए-आपके ऊपर बड़ी जिम्मेदारी है । उस जिम्मेदारी की आगाही करने के लिए ही हम आपकी सेवा में हाजिर हुए हैं । हम आपके पास इसीलिए बार-बार आते हैं और अपने कार्यकर्ताओं को आपके पास भारतीय संस्कृति के संदेशवाहक के रूप में, सतयुग के संदेशवाहक के रूप में, इनसानी उज्ज्वल भविष्य के संदेशवाहक के रूप में भेजते हैं, यह बताने के लिए कि आप महान हैं, आपकी संस्कृति महान है । आपकी परम्परा महान है । आपको अपनी महान परम्परा को जिन्दा रखना है ।

इस महान परम्परा को इसलिए जिन्दा रखना है कि इसकी हवा न केवल हिन्दुस्तान में, बल्कि सारी दुनिया में पैदा की जानी है । यह आप लोगों के द्वारा ही की जाएगी । आप ही इस जिम्मेदारी को सँभालेंगे । जो लोग अमेरिका, हालैण्ड, इंग्लैण्ड, जर्मनी आदि देशों में रहते हैं, उन सबकी जिम्मेदारी आप लोगों को सँभालनी है । जो लोग अफ्रीका के किसी भी भाग जैसे-युगाण्डा, केन्या या यूरोप में रहते हैं अर्थात प्रवासी भारतीय हैं, वह सभी हमारे राजदूत के रूप में इस कार्य को करेंगे । जो भी भारतीय संस्कृति के पक्षधर हैं, उनको चाहें तो हम राजदूत कह सकते हैं । स्वामी विवेकानन्द भारतीय राजदूत थे । किसके ? भारतीय संस्कृति के । भारत सरकार के नहीं । आप कहीं भी रहते हैं, चाहे अफ्रीका, अमेरिका, जापान, इंग्लैण्ड या अन्य किसी भी जगह रहते हैं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

हमारे प्रवासी भारतीय चौहत्तर मुल्कों में रहते हैं। आपको भारतीय संस्कृति के बारे में, नवयुग की वापसी के बारे में लोगों को बताना है । इसकी सिर्फ जानकारी ही नहीं देना, बल्कि हर आदमी को इस कार्य के लिए प्रोत्साहित भी करना है । यह काम आपको ही करना है । अगर आप इस काम को नहीं करेंगे, तो आपकी अन्तरात्मा इसके लिए मजबूर करेगी ।

साथियो, आपकी नयी पीढ़ियाँ आपसे यही अपेक्षा करेंगी कि आप ठीक समय पर ठीक कार्य करें । आप ठीक समय पर ठीक कार्य करने के लिए कमर कसकर तैयार रहिए । आप कहीं भी, किसी भी देश में रहते हैं, बड़े शानदार ढंग से रहिए । आपकी हर आदमी प्रशंसा करता है । भारतवासियों को आपके ऊपर गर्व है । प्रवासी भारतीयों ने अपने-अपने मुल्कों में रहकर जो काम किया है, वह प्रशंसनीय और सराहनीय है । आप हमसे रहते बहुत दूर हैं, आपसे हमको, भारतमाता को बड़ी आशाएँ हैं । आपकी भी अपनी व्यक्तिगत जिम्मेदारियाँ हैं, बच्चों की, उनकी पढ़ाई की, माता-पिता की, इनको भी पूरा करिए । पर इन जिम्मेदारियों के साथ-साथ भारतीय परम्परा, भारतीय संस्कृति को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए भी उतनी ही मेहनत करनी चाहिए । आप यह काम करेंगे, हमें पूरा-पूरा विश्वास है कि आप हँसी-खुशी के साथ इसे करेंगे । हम अपने कार्यकर्ताओं के मार्फत आपके पास आते हैं । आपको जगाते हैं, समझाते हैं, झकझोरते हैं । आपको कभी खुश करते हैं, कभी नाराज करते हैं, कभी आपको मनाते हैं कि आप इस अमूल्य समय को समझिए । अपनी जिम्मेदारी को समझिए । आपको अभी बहुत सारे काम करने हैं । इसके लिए हमने आपके पास बहुत-सा साहित्य व किताबें भेजी हैं, जिसमें आपको,प्रवासी भारतीयों को क्या करना है, वह सब लिखा है । आपको, स्वयं को भारतीय इकाई के रूप में रहना है । न केवल संतति इकाई के रूप में, बल्कि भारतीय संस्कृति की नुमाइन्दगी करते हुए उस मुल्क में जो भी रहते हैं, उन सबको वह संदेश देना है, जिसको इनसानियत का संदेश कह सकते हैं, भारतमाता का संदेश कह सकते हैं, वसुधैव कुटुम्बकम् का संदेश कह सकते हैं, भारतीय संस्कृति का संदेश कह सकते हैं । यह सब काम आपको करना है ।

मित्रो, हमने आपको बहुत सारी बातें बतायी हैं, फिलहाल उनमें से कुछ काम ऐसे हैं, जो आपको जरूर करना है । वह कौन-से काम हैं ? पहला काम-भारतीय मूल के निवासी हैं, उन सबका सम्मेलन अपने-अपने क्षेत्र में जरूर से करना है । 'युगनिर्माण सम्मेलन' उसका नाम रखें-'प्रज्ञा अभियान सम्मेलन' नाम रखें । नाम से कुछ नहीं होता है । कुछ भी आप अपने मन से नाम रख सकते हैं । अगर आप वृहद सम्मेलन नहीं कर सकते, तो खण्डों में उस सम्मेलन को आप अवश्य करिए, जिससे कि सभी जन सम्मिलित हो सकें । उसके माध्यम से आप बता सकते हैं कि आप न केवल मिलजुलकर रहेंगे और न केवल एक दूसरे की सहायता करेंगे, भारतीय परम्पराओं को अपने में समाविष्ट करेंगे, बल्कि नवयुग के आगमन के बारे में लोगों को जानकारी देंगे । इस कार्य के लिए एक सम्मेलन होना जरूरी है, मीटिंग होनी जरूरी है । आपको मालूम होगा कि आज से बीस साल पहले गायत्री तपोभूमि में एक हजार कुण्डीय यज्ञ हुआ था, जिसमें सभी धर्मप्रेमी व समझदार लोगों ने सहयोग किया था । उनके सहयोग से यह यज्ञ अभियान चलाया गया, जिसकी ओर से हम आपको बार-बार संदेश देते हैं । आपको अपने-अपने क्षेत्र में, अपने-अपने मुल्क में एक सम्मेलन अवश्य कराना चाहिए । उससे आपसी प्यार बढ़ेगा, एक दूसरे से मिलने पर जानकारी बढ़ेगी । इससे आपस का प्यार बढ़ेगा, एक दूसरे का सहयोग मिलेगा । इसलिए भावनात्मक एकता की दृष्टि से एक सम्मेलन अवश्य करना चाहिए । इसलिए आप सभी को मिलजुलकर कार्य करना चाहिए, क्योंकि अकेले आप कोई भी कार्य नहीं कर सकते । भगवान राम ने भी रीछ-वानरों को एकत्रित किया था । श्रीकृष्ण भगवान ने भी ग्वाल-बालों का सहयोग लिया था । गाँधीजी ने भी सत्याग्रहियों का साथ लिया था । अगर आप भी मिल-जुलकर कार्य नहीं करेंगे, तो आप सब में प्रेम कैसे बढ़ेगा ? इसलिए आप सभी लोगों को मिलजुलकर सम्मेलन करना चाहिए ।

दूसरा काम यह है कि आप प्रज्ञा मिशन, जिसको प्रज्ञावतार-मिशन कह सकते हैं, निष्कलंक-अवतार-मिशन भी कह सकते हैं, नवयुग के संदेश भी कह सकते हैं, इसके सम्बन्ध में जानकारी देने के लिए आप छोटी-छोटी किताबें छाप सकते हैं । आप बहुत-सी जानकारी अच्छे साहित्य के माध्यम से लोगों तक पहुँचा सकते हैं । इस मिशन का क्या उद्देश्य है ? हम अब तक क्या कर चुके हैं ? इन सभी के लिए भगवान की क्या प्रेरणा जुड़ी हुई है ? इसके लिए स्मारिका छापनी चाहिए। स्मारिका से क्या होगा ? स्मारिका से विज्ञापन मिलते हैं, जिससे विज्ञापन देने वालों का लाभ होता है । स्मारिका के माध्यम से हर छोटे-बड़े लोगों को बिना पैसे की जानकारी मिलती है । एक फिजा बन जाती है, एक माहौल बन जाता है । हर एक को इस माध्यम से आसानी से मालूम पड़ेगा कि यह संस्था क्या है ? इस मिशन का उद्देश्य क्या है ? यह संस्था कितनी शानदार है और यह कितने महत्वपूर्ण कार्य कर चुकी है और आगे क्या-क्या कार्य करने वाली है ? यह बात अगर बताएँगे नहीं, तो आपके समर्थक कहाँ से आएँगे ? आपको सहयोग कहाँ से मिलेगा ? आप स्मारिका कहाँ से छापेंगे । इसलिए स्मारिका आप जरूर छापें ।

इसके अलावा और भी बहुत से काम हैं, जो आपको करने हैं, जिसके बिना हमारा काम नहीं चल सकता । आप भारतीय संस्कृति का, नवयुग का संदेश सभी को दें, इसका प्रकाश सब जगह फैलाएँ । विनाश से उत्पन्न विभीषिकाओं के बारे में लोगों को बताएँ और आगाह करें । आप लोगों को बताएँ कि नयी दुनिया बनाने के लिए, अच्छे दिन लाने के लिए अच्छे लोगों को क्या करना चाहिए । यह सब काम तभी हो सकता है, जब आप लोगों को इकट्ठा करके एक बड़ा सम्मेलन करें, संगठन खड़ा करें । संगठन में स्थायित्व लाने के लिए कुछ न कुछ गतिविधियाँ निरन्तर चलनी चाहिए, जिससे लोगों का उत्साह ठंडा न हो पाए । मुझे उम्मीद है कि भारतीय संस्कृति जो कि पूर्व से नये सिरे से उदय हो रही है, उसे आप अपने-अपने तरीके से त्यागपूर्वक, उत्साहपूर्वक और हिम्मत से फैलाने में हमारी मदद करेंगे । प्रज्ञा-अभियान, गायत्री परिवार-शाखा-संगठनों को मजबूत करेंगे और उसके विचारों को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाने में मदद करेंगे । यदि आप यह कर सके, तो आप स्वयं देखेंगे कि जो हम लोग आप से उम्मीद करते थे, वह आपने कितनी सरलता के साथ किया, अगर आप यह काम करेंगे, तो मजा आ जाएगा । आप लोगों से प्रारम्भिक कदम उठाने के रूप में यह प्रार्थना करते हुए आज की अपनी बात समाप्त करते हैं । आप लोगों को बहुत-बहुत प्यार, आशीर्वाद । आप लोग चाहे जितनी दूर रहते हों, पर हृदय के हिसाब से, भावना के हिसाब से, विचारणा के हिसाब से आप हमारे बहुत नजदीक हैं । आप बहुत प्यारे हैं, मित्र हैं, सहयोगी हैं, कुटुम्बी हैं । आप सभी सुखी रहें, समुन्नत रहें और अपने नजदीक वालों को भी ऊँचा उठाने का प्रयास करें, ऐसी भगवान से प्रार्थना है ।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखमाप्नुयात् ।।
ॐ शान्तिः

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी–

धर्मग्रंथ हमें क्या शिक्षण देते हैं, यह जानें

('रामायण की प्रगतिशील प्रेरणा' पर परमपूज्य गुरुदेव की प्रवचन -शृंखला जून, १९७५ का एक अमृतकण)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो, भाइयो ! पिछले दिनों जन्माष्टमी के अवसर पर हमने आपको यह बतलाया था कि भगवान अपनी लीला के माध्यम से किस तरह से व्यक्ति, परिवार एवं समाजनिर्माण के अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हैं । हमारा लक्ष्य भी ध्रुव की तरह साफ है । हम व्यक्तिनिर्माण की बात करना चाहते हैं, परिवार का स्तर, जो नष्ट हो गया है, उसका हम विकास करना चाहते हैं । हम व्यक्ति और समाज के बीच की कड़ी की स्थापना करना चाहते हैं, जिसका नाम परिवार है । इसी में से हीरे, मोती, जवाहरात निकलते हैं । वह आज चरमरा गया है । उसे हम ठीक करना चाहते हैं । परिवार को हमें शिक्षित करना है, संस्कारित करना है । लोग विलायत पढ़ने जाते हैं, परन्तु संस्कार कहीं से लेकर नहीं आते हैं ।

बच्चा जब माँ के गर्भ में होता है, तब से लेकर तीन साल तक, जब तक वह कुछ बड़ा होता है, उसकी अस्सी प्रतिशत शिक्षा समाप्त हो जाती है । भावना, संवेदना के संदर्भ में वह सब सीख जाता है । अगर आप पाँच साल के बच्चे बन जाएँ तो मेरी समझ से आपके संस्कार को जाग्रत करने का समय लगभग एक वर्ष नौ महीने पहले ही समाप्त हो गया था । बचपन ही संस्कार का महत्वपूर्ण समय है । आप पब्लिक स्कूलों में हजारों रुपये महीने का शिक्षण दिला सकते हैं, जहाँ बच्चा क्रीज किया हुआ कपड़ा पहनना, जूते पर पॉलिश करना, थैंक यू वेरी मच कहना सीख जाएगा, परन्तु जो संस्कार हम परिवार के अन्तर्गत दे पाते हैं, वह कदापि इन स्कूलों में संभव नहीं है । संस्कार कहाँ से आता है ? वह माँ-बाप से आता है ?

हम खुशबूदार परिवार बसाना चाहते हैं

मित्रो, आज परिवारसंस्था का नाश हो गया है । आज कहीं भी हमें परिवार दिखलाई नहीं पड़ते हैं । वे काम-वासना के क्रियाकलाप वाले मात्र केन्द्र रह गए हैं । उनके अन्दर यह ख्याल तथा प्रयास कहाँ है कि परिवार के अन्तर्गत वे सोचें कि हमें परिवार, समाज, देश एवं संस्कृति के लिए एक महान रत्न देना चाहिए, जो प्रगति कर सके । दो आदमी मिलकर एक तीसरी महान आत्मा बनाएँ-ऐसा साहस किसी में नहीं है । आज परिवार वासना प्रधान बन गया है । ऐसी स्थिति में हम एक नया परिवार बसाना चाहते हैं, जिसमें से बेहतरीन चीजें निकल सकें । हम खुशबूदार परिवार बसाना चाहते हैं । मित्रो, चन्दन के जंगल के पास जो भी पेड़ उगते हैं, वे भी खुशबूदार होते हैं । हम चाहते हैं कि एक ऐसा ही परिवार बने । जर्मनी में जब हिटलर ने एक नया जोश-खरोश पैदा किया, तब बाकी कमजोर लोग सलवार एवं स्मार्ट ड्रेस पहनने लगे तथा अन्दर-बाहर से मजबूत बनने लगे । हम परिवार एवं समाज का वातावरण अच्छा बनाना चाहते हैं । शालीनता का, व्यावहारिकता का वातावरण पैदा करना चाहते हैं, ताकि इनसान को देखकर लोग परिवार एवं समाज की स्थिति को समझ-बूझ सकें । आज हमारे अन्दर हैवान काम कर रहा है । वह केवल इनसान का चोला पहन आया है । अभी हमारे अन्दर का महामानव, ऋषि, भगवान, संत कहाँ जागा है ? वैसा जीवन कहाँ आया है ? हम चाहते हैं कि हम इनसान का जीवन जिएँ, ऋषि एवं संतों का जीवन जिएँ, मानवता का जीवन जिएँ तथा देश एवं समाज का उत्थान करें ।

महामानवों के जीवनचरित्र हमारे इष्ट बनें

मित्रो, हम अपने आपको तथा दूसरों को नसीहत देने के लिए चले हैं । हम मिशन की एक रूपरेखा बनाकर चल पड़े हैं । आपको इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हमें मंजिल तक चलना है । महापुरुषों का, महामानवों का जीवनचरित्र हमारी मंजिल है, जहाँ तक हमें चलना है । यह हमें ध्यान रखना चाहिए । जितने भी महापुरुष हुए हैं, उनकी शिक्षा, उनकी वाणी हमारे लिए उपयोगी है, परन्तु इससे भी महत्वपूर्ण है उनकी जीवन जीने की कला, जो कि हमें सीखनी चाहिए और उससे प्रेरणा लेनी चाहिए तथा अपना आत्म-विकास करना चाहिए । महापुरुषों ने जिन्दगी को कैसे जिया, असल में प्रेरणा हमें वहाँ से मिलती है । उन्होंने क्या कहा, यह हमें मालूम नहीं है । अगर हम जिन्दगी भर बकवास करते हुए उसे समाप्त कर दें तो भी उसका कोई प्रभाव समाज पर नहीं होगा । क्योंकि उस सिद्धान्त को, जो हम कहना चाहते हैं, उसका समावेश हमने अपने जीवन में नहीं किया है । इस कारण से उसका कोई प्रभाव नहीं होने वाला है । हमारे महापुरुषों, अवतारों की कथाएँ इसलिए महत्वपूर्ण हैं कि उनकी वाणी तथा कर्म में कोई फर्क नहीं था ।

मन, वाणी और कर्म जब एक जगह मिल जाते हैं, तो त्रिवेणी संगम बन जाता है । उस समय आदमी शक्तिपुंज बन जाता है । साहसी, ताकतवर बन जाता है । उस समय उसकी आँखों में से बिजली निकलती है । उस समय उसका व्यक्तित्व मनुष्यों के ऊपर छाता हुआ नजर आता है तथा वह व्यक्ति सूर्य की तरह चमकता हुआ नजर आता है । मन, वाणी, कर्म में एकरूपता का समावेश जिसमें हो जाता है, उसे हम भगवान, महामानव, अवतार, ऋषि, संत व देवता कहते हैं । उनके चरणों की हम वन्दना करते हैं । उनसे हम प्रेरणा ग्रहण करते हैं । समुद्र में लाइट हाउस होता है, जो आने वाले जहाजों को दिशा का ज्ञान कराता है । उसी प्रकार ये लोग करते हैं तथा समाज के उत्थान के लिए

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

प्रयत्नशील रहते हैं । आप भी भगवान हैं तथा अवतारी चेतना हैं । रामायण में कहा गया है-''**ईश्वर जीव अंश अविनाशी ।**'' अत: आप सभी भगवान के अंश हैं अर्थात एक हार्सपावर के भगवान हैं । कलाओं के हिसाब से भगवान का मूल्यांकन किया जाता है । परशुराम जी तीन कला के तथा भगवान राम बारह कला के और श्रीकृष्ण सोलह कला के थे । ये सब कलाएँ हार्सपावर हैं । एक बार परशुराम जी में एवं रामचन्द्र जी में लड़ाई-झगड़ा होने लगा । प्रश्न यह था कि एक समय में क्या दो भगवान हो सकते हैं ? हाँ हो सकते हैं । दोनों में लड़ाई-झगड़ा होने लगा कि असली भगवान कौन है तथा नकली भगवान कौन है ? आप और हम भी लड़ाई लड़ सकते हैं, क्योंकि आप लोग भी एक अंश भगवान का धारण किये हुए हैं । हम नहीं जानते हैं कि असली भगवान कौन है तथा नकली भगवान कौन है ?

लोकोपयोगी प्रेरणा देते हैं धार्मिक दृष्टान्त

मित्रो, पिछले दिनों हमने जन्माष्टमी के अवसर पर आपको बतलाया था कि हमें उक्त बात को समझना चाहिए तथा इन अवतारों के कथानकों को लेकर समाज के बीच में जाकर लोगों को प्रेरणा देनी चाहिए । क्योंकि हमारा देश गाँवों से भरा है । अधिकांश व्यक्ति कम पढ़े-लिखे हैं, उन्हें हम केवल सरल शब्दों में समझा सकते हैं । इस कार्य में कथानक बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं । इस प्रकार धार्मिक विचारधारा के द्वारा ही हम लोगों को समझा सकते हैं । महात्मा गाँधी ने भी धार्मिक विचारधारा को साथ लिया तथा प्रार्थना को स्थान दिया । ''**रघुपति राघव राजा राम । पतित पावन सीता राम।**'' इस प्रकार उन्होंने रामराज्य की दुहाई दी । उन्होंने धर्म की जय बोली । धार्मिक विचारधारा के अलावा इस देश की जनता को हम किसी कार्य के बारे में समझा नहीं सकते हैं । उन्होंने हिंसा का रास्ता न अपनाकर 'अहिंसा परमोधर्म:' की बात बतलायी । उन्होंने यह कहा कि भारत में पैसे व अस्त्र-शस्त्र की कमी है । हम अँग्रेजों से इस मामले में विजय नहीं पा सकते । अत: हमें अहिंसा का रास्ता ही अपनाना होगा । उन्होंने इसी रास्ते पर चलते हुए अँग्रेजों को झुका दिया । गाँधीजी को वे जादूगर कहते थे ।

धर्म ही एकमात्र धुरी नवनिर्माण की

हम यहाँ के लोगों को फिजिक्स, सिविक्स, सोसियोलॉजी नहीं समझा सकते । यह समझाना बहुत ही कठिन है । हम केवल धर्म के आधार पर ही समझा सकते हैं । धर्म हमारी जीवात्मा की भूख है । यह दोनों ही परिस्थितियाँ हिन्दुस्तान की फिलोसफी-दर्शन के अनुसार तथा यहाँ की गई-गुजरी परिस्थिति के हिसाब से आवश्यक हैं । परिवार के लोगों को संस्कारवान बनाने तथा समाज के लोगों को नसीहत देने, दोनों के लिए धर्म से बढ़कर कोई दूसरा साधन नहीं है । इसमें अपने क्रियाकलाप तथा व्याख्यान दोनों की संगति बिठाना परम आवश्यक है, तभी हम इसका प्रभाव दूसरों पर डाल सकते हैं । महापुरुषों, संतों ने इसी प्रकार अपने जीवन में धारण किया, जिसका प्रभाव समाज, देश व संस्कृति पर पड़ा । श्रीकृष्ण भगवान के गीता के व्याख्यान से ज्यादा महत्वपूर्ण यह जानना आवश्यक है कि उनका व्यवहार और कार्य कैसा था । आचार्य जी को देखने के साथ, सुनने के साथ, आचार्य जी के जीवन के ६५ पन्नों को भी देखना होगा, पढ़ना होगा, तभी आप आचार्य जी को समझ सकते हैं ।

जनमानस का परिष्कार होगा जीवन-चरित्र की प्रेरणाओं से

साथियो, हम आपसे यह निवेदन कर रहे थे कि हमें लोकमंगल के कार्य के लिए, जनमानस का परिष्कार करने के लिए महामानवों के चरित्र को लेना पड़ेगा । उसके माध्यम से ही जनचेतना जगाने का कार्य करना पड़ेगा, तभी वह प्रभावकारी व हितकारी सिद्ध हो सकती है । परन्तु एक बात आपको बतलाना चाहता हूँ कि कोई भी व्यक्ति पूर्ण नहीं है । जो भी इस मनुष्य शरीर में आया है, वह कहीं-न-कहीं अवश्य गलती कर रहा है । इसलिए हमें अच्छे चेहरों का फोटो खींचने व दिखाने के स्थान पर उनके चरित्र का जो अच्छा पक्ष है, श्रेष्ठ गुण है, उसको लेना चाहिए । उनकी बुराइयों पर हमें ध्यान नहीं देना चाहिए । अगर आप गुरुजी की टट्टी-पेशाब करते समय फोटो खींचेंगे, तो आपको यह देखकर उल्टी हो जाएगी तथा हम आपको बहुत घिनौने मालूम पड़ेंगे । अत: आपको हमारी फोटो उस समय नहीं खींचनी चाहिए, जब हम टट्टी-पेशाब कर रहे हों । आपको केवल हमारे चेहरे का फोटो ही नहीं लेना चाहिए, हमारा जीवन भी औरों को बताना चाहिए। भगवान श्रीकृष्ण के शादी-विवाह के मामले को हमने कभी भी नहीं लिया है । हमने अपने पिताजी तथा माताजी के उस दृश्य को कभी भी नहीं देखा है, जब वे आपस में हँस-बोल रहे थे । श्रीकृष्ण ने गोपियों के साथ क्या रास किया, क्या मनोरंजन किया, हमें नहीं देखना है, क्योंकि वे हमारे पिता हैं । पिता के वे रूप देखना हमें पसन्द नहीं है । जैसे दृश्य को देखकर हमारी आँखें बन्द हो जाती हैं, झुक जाती हैं-वैसे दृश्य को हम देखना नहीं चाहते हैं । हमें उनके शिक्षण वाला पहलू चाहिए, हमें उनका चक्रसुदर्शन वाला पहलू चाहिए । हमें उनका गीता का उपदेश सुनाता हुआ पहलू चाहिए, जिससे हम प्रेरणा एवं मार्गदर्शन प्राप्त कर सकें ।

मित्रो, दूसरा वाला पहलू जो हम आपको बतलाना-सिखाना चाहते हैं, वह रामायण वाला पहलू है । वह भगवान राम के द्वारा दिया गया शिक्षण है, जो हम आपको बतलाना चाहते हैं । रामायण में राम का जो शिक्षण है, प्रेरणा है, उस ओर हम लोगों को घसीटकर ले जाना चाहते हैं । हाथी एवं घोड़े को रस्सी से बाँधकर, घसीटकर ले जाते हैं । हम जनसामान्य को, मनुष्य समुदाय को भी इसी प्रकार से घसीटना चाहते हैं । इनकी रस्सी क्या होगी ? महामानवों के जीवन-चरित्र, श्रीराम, श्रीकृष्ण का जीवन-चरित्र, जिसको हम आपको पढ़ाते हैं । वाल्मीकि रामायण के उस पहलू को, जो हमारे उद्देश्य के काम आ सकते हैं, उसे भी हम आपको पढ़ाना चाहते हैं । अत: आप सभी से हमारी प्रार्थना है कि आप जब कभी भी जनता के बीच जाएँ या आप स्वयं पढ़ें, उस समय आप केवल ये बातें लोगों को बतलाने का प्रयास करें, जो प्रेरणादायक हों तथा हमारे उद्देश्यों को पूरा कर सकती हों ।

आप उन कथानकों का खण्डन-मण्डन न करें, उस समय आप चुपचाप हो जाएँ । जैसे रामायण में एक कथा आती है कि एक धोबी आता है और रामचन्द्र जी उसके कहने पर सीताजी को त्याग देते हैं । यह आपको नहीं मानना चाहिए । जब

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

वे शासनसत्ता सँभाल रहे थे, तब वे जज भी थे, मजिस्ट्रेट भी थे, उनको विचार करना चाहिए था, सीता की बात सुननी चाहिए थी कि वह क्या कह रही हैं । वह यह कह रही थीं कि हम निर्दोष हैं । उनकी बातों को न सुनना उनकी गलती थी तथा जो डिसीजन लिया, वह भी गलत था । आपको इस प्रकार के कथानकों को काट देना चाहिए, जिसमें कहा गया है कि गलती धोबी की थी तथा सजा सीताजी को मिली । हम रामचन्द्रजी के अनुयायी हैं, परन्तु हम अन्धे अनुयायी नहीं हैं । उनकी गलत बातों का हम समर्थन नहीं करेंगे । हमारा मिशन बहुत दिनों से सत्यनारायण व्रतकथा सुनाता रहा है । हम केवल सत्य बातों को मानेंगे, उसे सुनायेंगे । आप मजहब की हर बातें न मानें, जो सत्य हैं उसे मानें, क्योंकि भगवान उसे कहते हैं जो सत्य हैं । अत: आप सत्य को, विवेक को, इनसाफ को नारायण मानिये तथा उसी कार्य के लिए गतिशील रहिए तो आपको लाभ होगा ।

अब हम आपसे यह कहते हैं कि आप रामायण के माध्यम से परिवार, समाज तथा देश को नयी प्रेरणा तथा प्रकाश दीजिए । उसके नये पन्ने पलटकर सबको बतलाइये । भगवान राम के बहुत-से पन्ने बड़े ही महत्वपूर्ण हैं तथा बहुत-से पन्ने ऐसे हैं जिस पर बहस करना हमें मंजूर नहीं है । भगवान की वह बात हमें नामंजूर हैं, जो अनुपयोगी है । हमारा उस अंश से ज्यादा सम्बन्ध है, जो उपयोगी हो सकता है, दिशा दे सकता है । एक बात और आती है कि रामचन्द्र जी ने दशरथ जी को पिण्डदान देने के लिए मांस का पिण्ड बनाया । यह बात भी हम नहीं मानते हैं । रामचन्द्र जी ने रावण मारा था, श्रीकृष्ण जी ने गोवर्द्धन उठाया था, इस प्रकार की बातें तो हम मानने के लिए तैयार हैं, पर भगवान की अनर्गल बातों को हम नहीं मानेंगे । अत: आप यह समझ लीजिए कि आप इस तरह की बातें अपने व्याख्यानों में कभी नहीं करेंगे । हम वास्तव में किसी देवी, देवता या किताब के गुलाम नहीं हैं । हम तो सत्य के पुजारी हैं । हम अकल, सत्य और इनसाफ के गुलाम हैं । आप गलत बातों का समर्थन मत करें । श्रीकृष्ण भगवान ने सोलह सौ रानियाँ की थीं, तो हम तीन कर लें तो क्या गलत है ? बेकार की बातें मत करें, अपने विचारों को ठीक रखें ।

हमारी नयी रामायण में है प्रेरणा-मार्गदर्शन

हमने इसी उद्देश्य से एक नयी रामायण का सृजन किया है, जिसमें केवल काम की बातों की गुंजायश है । इसमें प्रेरणा है, मार्गदर्शन है । हम चाहते हैं कि आप इन बातों को मानें, शिक्षा ग्रहण करें तथा समाज को रामायण के माध्यम से इन बातों को बतलावें । अगर आप इन बातों को समाज में बतलाने का प्रयास करेंगे तो प्रबुद्ध वर्गों के बीच रामायण अंध-विश्वास, मूढ़-मान्यताएँ फैलाने वाला ग्रंथ बन जाएगा और दुनिया का सत्यानाश कर देगा । श्रीकृष्ण की यह बात कि रुक्मिणी का भाई उनकी शादी नहीं करना चाहता था, परन्तु श्रीकृष्ण उसे भगाकर ले गये तथा शादी कर ली, यह बात हमें नामंजूर है । किसी लड़की को इस तरह भगाना न्यायसंगत नहीं है । यह गलत बात हमें नामंजूर है । अत: आपको आगाह किया है कि रामायण की कथा बतलाते समय इस तरह की बातें न करें जो नैतिकता पर आघात पहुँचाएँ और लोगों के विचारों को गलत कर दें । अत: आपको सावधान रहना चाहिए ।

मित्रो, गलती हर आदमी से हो सकती है, रामचन्द्र जी से भी हो सकती है । श्रीकृष्ण भगवान से भी हो सकती है । साथियो हम नहीं जानते हैं कि कौन विश्वामित्र है और कौन विश्वामित्र नहीं है । कितना अंश उनका पूजने योग्य है, कितना नहीं, यह हम नहीं जानते हैं । हमें तो अच्छे अंश की आवश्यकता है, उसका ही पूजन करते हैं । विश्वामित्र ने मेनका से शादी की थी कि नहीं की थी, यह हम नहीं जानते हैं । हम यह जानते हैं कि हर आदमी में कच्चाई होती है । गाँधीजी में कच्चाई हो सकती है, तो हर आदमी में कच्चाई हो सकती है । हमें तो इसके अच्छे पहलुओं की आवश्यकता है । उनकी शराफत एवं दिशाओं से मतलब है । अगर ये दृष्टिकोण आपका होगा तो आप गीता, रामायण, भागवत सुना सकते हैं और प्रेरणा दे सकते हैं । अगर ये दृष्टिकोण नहीं रखेंगे तो आप अपना भी सत्यानाश करेंगे तथा रामचन्द्र जी एवं श्रीकृष्ण जी का भी सत्यानाश करेंगे । हम चाहते हैं कि आपकी अपनी दृष्टि हो । आप को किसी को भी अपनी अकल नहीं बेचनी चाहिए । आपको हमने श्रीकृष्ण जी के कथा के बारे में बतलाया था । आज मैं आपको रामचन्द्र जी की कथा के बारे में बतलाना चाहता हूँ कि आपको किस तरह से कथा सुनाना चाहिए ।

सुसंतति कैसे

रामचन्द्र जी की कथा श्रीकृष्ण की तरह ही है । कथा आती है कि मनु-शतरूपा ने तप किया था, तो दशरथ रूप में पैदा हुए । मित्रो, तप करने से ही अच्छे एवं सुसंस्कारी बच्चे पैदा हो सकते हैं । आप लोग तो कहते हैं कि गुरुजी हमें आशीर्वाद दीजिए कि हमारा बेटा ठीक हो जाए । बेटे, तेरे घर में अच्छे बच्चे नहीं हो सकते । तेरे घर तो रावण पैदा होंगे, मेघनाद पैदा होंगे । अगर अच्छे बच्चे पैदा करना है, तो आपको तप करना होगा । तप करने का अर्थ है-शारीरिक एवं मानसिक क्रियाओं को ठीक करना होगा । आप जब स्वयं संस्कारवान बनेंगे, तभी आप संस्कारवान बच्चे पैदा कर सकते हैं । अगर साँचा-ठप्पा ठीक नहीं है, तो खिलौना कैसे ठीक बनेगा । इसके लिए अपने आपको गलाइये ।

मित्रो, यज्ञीय वातावरण में संस्कारवान बच्चे पैदा होते हैं । एक कथा आती है कि दशरथ जी द्वारा यज्ञ किया गया था और उसके बाद चरु-खीर बाँटा गया था, तो उससे चार भगवान-राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न पैदा हुए थे । गुरुजी आप हवन करा सकते हैं तथा हमारी बीबी को दो बच्चा दे सकते हैं ? बेटे हम नहीं करा सकते हैं । आप पहले अपने परिवार में इस तरह का त्यागमय वातावरण बनाइये, जैसे कि दशरथ के यहाँ था और जैसा कि राम-सीता, लक्ष्मण-उर्मिला आदि का त्यागमय जीवन था । वैसा वातावरण आपके घर-परिवार का होगा, तभी यह हो सकता है । उर्मिला का त्याग सीता से भी ज्यादा है । उर्मिला ने कहा कि मेरा पति मेरा आदर्श-सिद्धान्त है, जो सदैव हमारे साथ है, अत: हमारा वन जाना उचित नहीं है । लक्ष्मण का जाना आवश्यक है । बड़े भाई की सेवा करना उनका परम कर्तव्य है । जिस घर में ऐसा वातावरण होगा, वहाँ संस्कारवान बच्चे पैदा होंगे । रामचन्द्र जी और भरत जी गेंद खेल रहे थे । भरत जी

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

खेलने में कमजोर थे, परन्तु रामचन्द्र जी उन्हें बार-बार जिता देते थे । अपने से छोटों की हिम्मत और इज्जत बढ़ा देने में ही महानता है-हारा आदमी जीत जाता है । रामचन्द्र जी ने भरत को गुलाम बना लिया । सारी जिन्दगी वे राम के गुलाम रहे । यह हैं भगवान का स्वभाव, जो कि हमारे लिए प्रेरणा लेने एवं देने लायक है । ऐसे ही भगवान को लोग मानते हैं । आज घटिया भगवान को कोई नहीं मानता है ।

भगवद् तत्व के मर्म को समझें

एक बार कौशल्या जी रामचन्द्र जी को पालने में झुला रही थी, उस समय भगवान ने वही गीता वाला ज्ञान दिया कि भगवान इनसान के रूप में ही हो सकता है । विराटब्रह्म को, निराकार को कौन देख-समझ सकता है । निराकार भगवान तो ऊँचे विचारों में है, आदर्शवादिता में है, उत्कृष्ट चिन्तन में है, भलाई में है । साकार मानना है तो सारा समाज ही, सारे समाज के लोग ही भगवान हैं ।

आज लोग अपने-अपने भगवान के लिए लड़ते रहते हैं । कोई कहता है कि हमारा भगवान चूहे पर सवारी करता है, तो कोई कहता है कि हमारा भगवान हाथी पर सवारी करता है । तो कोई कहता है कि हमारा भगवान हंस पर सवारी करता है । अरे भगवान तो एक है और मनुष्य है कि सवारी के लिए लड़ता है । हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई के भगवान एक हैं । भगवान हिन्दू, मुस्लिम सबके लिए होगा, तो सफेद रंग का ही होगा । इसमें फर्क हमने और आपने पैदा कर दिया है । सूर्य, चन्द्र जब एक ही हो सकते हैं, तो भगवान दो कैसे हो सकते हैं ? मन्दिर में रखे हुए भगवान जड़ हैं, हम इसके द्वारा अपनी भावना को जाग्रत करते हैं । इसमें कोई चमत्कार नहीं है । चमत्कार है तो मनुष्य की भावना में है । यह कूड़े में, गोबर, लकड़ी, पत्थर सबमें हो सकता है । आप भगवान की पूजा करते हैं, तो भगवान के बारे में जानने का भी प्रयास करें, तभी आपको सही बातें मालूम पड़ेंगी । रामचन्द्र जी ने विराट ब्रह्म के बारे में कागभुसुण्डि एवं कौशल्या को दिखाया और कहा कि इसकी सेवा करना ही भगवान की पूजा है । इसे हर व्यक्ति को समझना चाहिए ।

तपस्वी जीवन की प्रेरणा

भगवान के भक्त के लिए हीरा तराशना आवश्यक है अर्थात अपनी अन्तश्चेतना को परिष्कृत करना आवश्यक है । इसके लिए तप करना आवश्यक है । विश्वामित्र राम और लक्ष्मण को इसके लिए जंगल में ले गए और कहा कि तप करना परम आवश्यक है । वहाँ कन्द-मूल आपको मिलेगा और वही खाकर रहना पड़ेगा । आपको वहाँ मक्खन और डबल रोटी नहीं मिलेगी । चलिए वहाँ रहिए और वे तप करने चले गये । उन्होंने कहा कि अनीति से विरोध करना पड़ेगा, आदर्श पद्धति का अवलम्बन लेना पड़ेगा । समाज को ऊँचा उठाने के लिए तप करना यानी तपस्वी का जीवन जीना होगा । वे सहर्ष तैयार हो गए एवं चले गए । इसके बाद ही भगवान कहलाए । महापुरुषों के लिए इसी प्रकार के प्रशिक्षण की आवश्यकता पड़ती है ।

आदर्श विवाह किस प्रकार

राजा जनक के चार लड़कियाँ थीं । राजा दशरथ के यहाँ एक यज्ञ हुआ था जिसके फलस्वरूप चार लड़के पैदा हुए । इन चारों का जनक की पुत्रियों से विवाह हो गया । हम इसी प्रकार का वातावरण बनाना चाहते हैं । हम दहेज के विरोधी हैं, लेकिन अगर कोई स्वेच्छा से कन्या को कुछ देता है, तो हमें ऐतराज नहीं है, परन्तु पैसा दिखाकर नहीं देना चाहिए । आप पेटी में रखकर इच्छा से दे दीजिए अथवा बेटी के नाम जमा कर दीजिए । दहेज हर दृष्टि से अनैतिक है। इम्मोरेल है । इसे तत्काल बन्द करना चाहिए । यह प्रेरणा हमें रामायण से लेनी चाहिए ।

इसी प्रकार रामायण से हमें अन्यान्य प्रेरणादायक दृष्टान्त लेकर लोगों को समझाना चाहिए । एक बार दशरथ जी को अपना सफेद बाल दिखलाई दिया । उन्होंने सोचा कि हमें क्या करना चाहिए । यह सम्मन है मौत का । हमारे सिर पर ६५० बाल सफेद हैं, जो यह बताते हैं कि ६५० बार मौत की सूचना का सम्मन आ चुका है, आपको होश आया कि नहीं । आपको भगवान के पास जाना है । आपको वहाँ अपनी सारी रिपोर्ट देनी है कि आपने यहाँ क्या-क्या किया है । दशरथ जी ने सफेद बाल देखकर अपने बड़े लड़के रामचन्द्र जी को बुलाया और कहा कि आप इस राजकाज को देखें और अब हमें वानप्रस्थ लेना है । आप छोटों को देखें तथा परिवार के उत्तरदायित्व को सँभालें । यह प्राचीन परम्परा थी कि लोगों को जीवन के उत्तरार्द्ध में वानप्रस्थ लेना पड़ता था तथा समाज का उत्तरदायित्व उठाना पड़ता था । समाज में अलख जगाना पड़ता था ।

इससे रामचन्द्र जी के जीवन में धर्म-संकट आ गया । वस्तुतः इसके बिना हम यह नहीं जान सकते हैं कि रामचन्द्र जी, भरत जी, लक्ष्मण जी आदि कितने महान थे । जब रामचन्द्र जी के सामने यह प्रश्न आया कि आप राज्यपाट देखेंगे अथवा जंगल में वनवास के लिए जाएँगे तो उन्होंने देखा कि सिद्धान्तों के लिए कष्ट उठाना, मुसीबत सहना ज्यादा महत्वपूर्ण है, बजाय इसके कि हम राज्यपाट देखें । उन्होंने समाज के उत्कर्ष के लिए, सिद्धान्तों के लिए चौदह वर्ष के लिए वनवास को सहर्ष स्वीकार कर लिया । उन्होंने राज्यपाट जो ऐय्याशी का काम था, उसे ठुकरा दिया । उन्होंने ऋषियों के साथ घुलने-मिलने, राक्षसों से लोहा लेने तथा जंगलों में रहकर तपस्वी जीवन जीने को ज्यादा महत्व दिया और वनवास को सहर्ष स्वीकार कर लिया । उन्होंने सोचा कि हमें उसी काम को करना चाहिए जिसकी ऋषियों को आवश्यकता है, देश को, संस्कृति को आवश्यकता है । खेती का काम कोई भी कर सकता है । खेती का काम आपका नौकर कर सकता है । आप समाज में जाइये और समाज की सेवा कीजिए ।

राम का वनवास इसलिए

भगवान रामचन्द्रजी ने भी समाज की सेवा के लिए वनवास जाना स्वीकार किया । इस वनवास के समय उनके सामने ऐसी-ऐसी बेहतरीन घटनाएँ हुईं, जिसके द्वारा उन्हें प्यार, मोहब्बत मिला । उन्होंने न जाने कितने लोगों को दिशाएँ दीं-प्रेरणाएँ दीं । शबरी की घटना हमें याद आती है । वे उसके पास पहुँचे और उससे कहा कि हम बहुत भूखे हैं । शबरी ने बेर चखकर देखा तथा मीठे बेर को उन्हें खिलाती चली गयी । शबरी ने राम से पूछा कि क्या आप वही राम हैं जिसका मैं जप करती हूँ । हाँ, मैं वही राम हूँ । उसने पूछा कि आप अयोध्या से यहाँ क्यों आये ? रामचन्द्र जी बोले-शबरी, हमेशा भगवान भक्त के पास आते हैं । हम सूरदास के पास गये थे । हम राजा बलि के पास

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

भी भीख माँगने के लिए गये थे । सुदामा के भी हमने पैर धोये थे । महर्षि भृगु ने हमारे कलेजे में लात मारी थी । मीरा के पास मैं गया हूँ । मैं भक्त का गुलाम हूँ । भक्त भगवान से बड़ा है । शबरी तू जो रोज रास्ते को बुहारती है, वह महान भक्ति है । यह तुम्हारी असली भक्ति है ।

मित्रो, एक और भक्त की याद आ गयी । सीताजी को रावण चुराकर ले जा रहा था । जटायु इस काण्ड को देखकर द्रवित हो गया । उसने रावण से कहा कि दूसरे की पत्नी को इस तरह से चुराकर ले जाना पाप है । रावण बोला कि तू चुपचाप बैठ और बेकार की बातें मत कर । जटायु को आक्रोश आ गया और वह अनीति से लड़ने के लिए तैयार हो गया । यद्यपि वह मर गया, परन्तु अमर हो गया । आज इस प्रकार के लोग हो जाएँ तो फिर समाज में गुण्डे कहाँ रह सकते हैं ? समाज के लोगों को संगठित होकर अनीति के विरुद्ध संघर्ष करना चाहिए। हार जाने से कोई असफल नहीं होता । हमारे समाज में ईसामसीह असफल नहीं हुए । लोगों ने उनके हाथ-पैरों में कील ठोंक दी थी, परन्तु लोग सफल नहीं हुए । जो आदमी सिद्धान्तों के लिए जिये हैं, वे अमर हैं । सुकरात ने जहर पिया, फिर भी वे मरे नहीं, अमर हैं । रामचन्द्र जी मरे नहीं, वे अमर हैं । जटायु जीत गया था । रामचन्द्र जी आये और उसके जख्मों को अपने आँसुओं से धोया, अपने हाथों से साफ किया तथा प्यार दिया । उन्होंने कहा कि कहो तो हम तुम्हें स्वर्ग भेज दें, कहो तो मोक्ष प्रदान कर दें । उसने कहा कि यह सब हमें नहीं चाहिए । मित्रो, भगवान के प्यार, मोहब्बत से बढ़कर कुछ भी नहीं है । उसने कहा कि हमें यह प्राप्त हो गया, हम धन्य हो गये, आप चिन्ता न करें ।

भगवान का प्यार कैसा होता है ?

भगवान के प्यार के तीन तरीके हैं- पहला-भगवान जिसे प्यार करते हैं, उसे 'संत' बना देते हैं । संत यानी श्रेष्ठ आदमी । श्रेष्ठ विचार वाले, शरीफ, सज्जन आदमी को श्रेष्ठ कहते हैं । वह अन्तःकरण को संत बना देता है । दूसरा-भगवान जिसे प्यार करते हैं उसे 'सुधारक' बना देते हैं । वह अपने आपको घिसता हुआ चला जाता है तथा समाज को ऊँचा उठाता हुआ चला जाता है । तीसरा-भगवान जिसे प्यार करते हैं उसे 'शहीद' बना देते हैं । शहीद जिसने अपने बारे में विचार ही नहीं किया । समाज की खुशहाली के लिए जिसने अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया, वह 'शहीद' होता है । जो दीपक की तरह जला, बीज की तरह गला, वह शहीद कहलाता है । चाहे वह गोली से मरा हो या नहीं, वह मैं नहीं कहता, परन्तु जिसने अपनी अकल, धन, श्रम पूरे समाज के लिए अर्पित कर दिया, वह शहीद होता है । जटायु ने कहा कि आपने हमें धन्य कर दिया । आपने हमें शहीद का श्रेय दे दिया, हम धन्य हैं । जटायु, शबरी की एक नसीहत है । यह भगवान की भक्ति है । यही सही भक्ति है ।

मित्रो, हनुमान जी भी भगवान राम के भक्त थे । भक्त माँगने के मूड में नहीं रहता है । भक्त भगवान के सहायक होते हैं । वह अपने लिए मकान, रोटी, कपड़ा या अन्य किसी चीज की चाह नहीं करता है, उसका तो हर परिस्थिति में भगवान का सहयोग करना ही लक्ष्य होता है । वह अपनी सारी जिन्दगी भगवान के लिए अर्पित कर देता है । हनुमान जी इसी प्रकार के भक्त थे । आज तो भक्त की पहचान है-"राम नाम जपना, पराया माल अपना ।" मित्रो, यह भक्ति नहीं है । आज बगुला भक्तों की भरमार है, जो माला को ही सब कुछ मानते हैं । भक्त वही है जिसका चरित्र एवं व्यक्तित्व महान हो ।

साथियो, हिरण्यकशिपु वह है जिसे केवल पैसा दिखलाई पड़ता है, सोना दिखलाई पड़ता है, ज्ञान दिखलाई नहीं देता है । हिरण्याक्ष-जिसकी आँखों को केवल सोना ही दिखलाई पड़ता है । यह दोनों भाई थे । हिरण्यकशिपु को नरसिंह भगवान ने मारा था और हिरण्याक्ष को वाराह अवतार ने मारा था । आज मनुष्य इसी स्तर का बन गया है । आप लोगों का आज यही स्तर है । आपकी भक्ति नगण्य है । रावण मोह में मारा गया और सीता लोभ में फँस गयी और मुसीबत मोल ले बैठी । जो भी व्यक्ति लोभ एवं मोह में फँस जाता है वह भी इसी तरह मारा जाता है । लक्ष्मण जी ने एक रेखा खींची थी । मित्रो जो भी व्यक्ति अपनी मर्यादा को कायम नहीं रखता है, वह इसी प्रकार दुखी रहता है । आप कायदे एवं नियम का पालन कीजिए, यह हमें रामायण बतलाती है ।

भक्ति भी, संघर्ष भी

रामायण में भक्ति भी भरी पड़ी है तथा संघर्ष भी भरा पड़ा है । उसके कण-कण में दिव्य प्रेरणाएँ भरी पड़ी हैं । उसमें तप, संघर्ष दोनों चीजें विद्यमान हैं । इसमें गुरु गोविन्द सिंह की तरह एक हाथ में माला तथा दूसरे हाथ में भाला की बात बतलायी गयी है । बेटे, तुम्हें माला की रक्षा के लिए एक हाथ में भाला भी पकड़ना होगा ।

रामचन्द्र जी गुरु विश्वामित्र जी के साथ यज्ञ-रक्षा के लिए जंगल से होकर जा रहे थे । रास्ते में उन्होंने देखा कि यहाँ तो हड्डियों का ढेर लगा है । उन्होंने पूछा कि यह किनका है ? ऋषियों ने बतलाया कि यह उन ऋषियों की हड्डियाँ हैं, जिन्हें राक्षसों ने भक्षण करके डाल दिया है । यह देख-सुनकर अन्दर आक्रोश भर आया और उन्होंने संकल्प लिया-

निशिचर हीन करौं महि,भुज उठाइ प्रण कीन्ह ।

जब इस तरह मन में क्रोध आता है तो वे संघर्ष के लिए तैयार हो जाते हैं । रामचन्द्र जी कहते हैं कि यद्यपि यह हमारे पूर्वज नहीं हैं, परन्तु वे महान व्यक्ति थे, जो समाज के लिए जीते थे । हम इनके लिए संकल्प लेते हैं कि इसके दुश्मन ऐसे दुष्ट राक्षसों को समाप्त करेंगे तथा धरती पर स्वर्ग का वातावरण बनाएँगे ।

संघ शक्ति का महत्व

रामचन्द्र जी आगे चलते गये । उन्होंने अपने साथ बन्दर-भालुओं को लिया । मित्रो, अच्छे काम के लिए जनसहयोग की आवश्यकता होती है । अकेला व्यक्ति कोई बड़ा काम नहीं कर सकता है । कृष्ण भगवान को भी ग्वाल-बालों का सहयोग लेना पड़ा । रामचन्द्र जी ने कहा कि हम भगवान हैं, शक्ति हैं और हम अकेले ही रावण को मार सकते हैं, लेकिन यह कायदा नहीं है । हमें जनसहयोग लेकर काम करना चाहिए । आप जनता की शक्ति को लेकर सत्य के लिए आगे बढ़ें । कहा भी गया है- **'सत्यमेव जयते ।'** सत्य में हजार हाथी का बल होता है । छोटे-छोटे बन्दर-भालुओं के सहयोग से समुद्र में पुल बनता चला गया । मित्रो, जहाँ मनःस्थिति अच्छी होती है, वहाँ परिस्थिति भी अच्छी होती है । एक गिलहरी आयी और अपने बालों में भरकर मिट्टी डालने

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

लगी । इसके श्रम को देखकर बन्दर-भालू सहित रामचन्द्र जी बहुत प्रसन्न हुए । गिलहरी ने कहा कि हम छोटे हैं तो क्या हुआ, हम भी भगवान के काम में सहयोग करेंगे तथा अपनी सामर्थ्य के अनुसार कार्य करेंगे । उसकी दिलेरी को देखकर भगवान राम बहुत प्रसन्न हुए । उन्होंने उसे हथेली पर रखा और अपनी अँगुलियों से उसे सहलाने लगे । सुना है कि रामचन्द्र जी काले रंग के थे । उनकी अँगुलियाँ काले रंग की थीं । अतः उसके ऊपर काले रंग की लकीरें पड़ गयीं । हमने सुना है कि वही लकीर आज तक गिलहरी के खानदान पर पड़ी हुई है ।

मित्रो, यह बात सही है कि भगवान के प्यार-मोहब्बत का निशान उसी आदमी के ऊपर होता है, जो अपने को त्यागी, बलिदानी के रूप में आगे कर एक आदर्श प्रस्तुत करता है । उसके बिना कोई आदमी भगवान का प्यारा नहीं हो सकता है । अगर आप दिन-रात भजन-कीर्तन करते हैं, परन्तु आपने नेक जीवन, आदर्श का जीवन, लोगों को ऊँचा उठाने का जीवन नहीं जिया है, अपने व्यक्तित्व को ऊँचा नहीं उठाया है, दूसरों की सेवा नहीं की है, तो आप भगवान का प्यार नहीं पा सकते हैं ।

रामायण के हर पन्ने महत्वपूर्ण प्रेरणाओं से भरे पड़े हैं । रावण मरा हुआ था । लक्ष्मण ने यह पूछा कि रामचन्द्र जी आपने कहा था कि हमने एक तीर मारा है तो इसके शरीर में हजारों छेद कैसे हो गये ? रामचन्द्र जी ने कहा-हे लक्ष्मण ! हमने तो उसे केवल एक ही तीर मारा है, परन्तु वे छिद्र उसके अपने कर्मों के फल हैं । पाप अपने आप में फूटता है । अगर आप पारा खा लें तो वह अपने आप फोड़कर निकल जाता है । उसी प्रकार पाप अपने आप निकलता है । पाप अपने आप खून बहाता है, अपने आप तबाही लाता है ।

पाप की परिणति अंततः ऐसी

एक और प्रसंग रामायण में आता है कि रामचन्द्र जी की पत्नी सीताजी को जब रावण चुराने गया था, तो भिखारी का वेष बनाकर गया था । चोर के तरीके से वह वहाँ गया था । इस प्रकार की नीयत या मनःस्थिति जब व्यक्ति की हो जाती है, तो सारी दैवी सम्पदाएँ ऋद्धि-सिद्धियाँ समाप्त हो जाती हैं । रावण सब चीजों से परिपूर्ण था, परन्तु उसकी एक कमी के कारण गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं- **''जिमि कुपंथ पग धरइ खगेशा, रहइ न तेज बुद्धि लव लेशा ।''** उसके तेज, बल, धन सब समाप्त हो गये । रावण का सत्यानाश हो गया । सोने की लंका न जाने कहाँ चली गयी । सारे कुटुम्ब का सत्यानाश हो गया । इतने बड़े ज्ञानी, तपस्वी, सामर्थ्यवान व्यक्ति की एक कमी उसका सत्यानाश कर सकती है और वह है चाल-चलन की कमी, चिन्तन की कमी ।

यही आप लोग समाज को शिक्षण देना कि आप लोग शराफत सीखिये, इनसानियत को सीखिये, भलमनसाहत को सीखिये-अपनाइये । सच्चाई, श्रेष्ठता, आदर्शवादिता को सीखिए । इसके द्वारा ही व्यक्ति, परिवार, समाजनिर्माण का उद्देश्य पूरा होगा । हमें विश्वास है कि आप यहाँ से इस प्रकार की बातें सीखकर जाएँगे तो हमारा उद्देश्य पूरा हो सकेगा । हमने अपने मिशन के द्वारा रामायण का प्रशिक्षण राम की दुहाई देने के लिए नहीं, वरन् समाज को राम का चरित्र, कार्यपद्धति से अवगत कराने के लिए प्रारम्भ किया है, ताकि इसके माध्यम से लोगों को प्रेरणा दी जा सके और समाज को ऊँचा उठाया जा सके । इसके द्वारा हमारे मिशन का व्यक्ति-निर्माण, परिवार-निर्माण, समाज-निर्माण का उद्देश्य पूरा हो सके । यही हमारा रामायण प्रशिक्षण का उद्देश्य है । आशा है आप इसे समझ गये होंगे तथा उसी प्रकार लोगों को समझाने का प्रयास करेंगे ।

आज की बात समाप्त ।

।। ॐ शान्तिः ।।

द्वितीय महायुद्ध में ब्रिटेन के एक यहूदी ने ब्रिटेन को अपने अथक परिश्रम और लगनपूर्ण वैज्ञानिक उपलब्धियों से युद्ध-विजय में महत्वपूर्ण सहयोग दिया । वैज्ञानिक की विशेष सैनिक सेवाओं के लिए अधिकारियों ने पुरस्कार देने की इच्छा प्रकट की ।

एक उच्च ब्रिटिश शासनाध्यक्ष ने प्रश्न किया- ''आपने ब्रिटेन की महान सेवा की है, इस उपलक्ष्य में ब्रिटेन आपका सम्मान करना चाहता है । बताइए, आपकी महान सेवाओं के बदले हम आपको क्या दे सकते हैं ?''

करोड़-दो करोड़ की सम्पत्ति, कोई जागीर या पद-प्रतिष्ठा प्राप्त की जा सकती थी । एक बार मन में भावी जीवन का रस-विलासपूर्ण आकर्षण सामने आ प्रस्तुत हुआ, किन्तु दूसरे ही क्षण अन्तःकरण ने कहा-''क्षुद्र, अतिक्षुद्र स्वार्थ या लौकिक वासना के पीछे अपने धर्म, संस्कृति और जातीय हित को न भूल, कुछ माँगना है, तो धर्म के लिए माँग । चिरंतन धर्म की रक्षा में यदि कुछ योगदान बन सके, तो यह न केवल तेरे, अपितु सारी यहूदी जाति के गौरव का एक भव्य इतिहास बनेगा ।''

और तब उस वैज्ञानिक ने कहा-''मान्यवर ! यदि आप हमें कुछ दे सकते हैं, तो हम यहूदियों की मातृ-भूमि वापस कर दें, ताकि हम अपने धार्मिक आदर्शों की रक्षा कर सकें ।'' अँग्रेज बड़े कृतज्ञ थे । उन्होंने फिलिस्तीन का कुछ भाग दे दिया, जहाँ यहूदी पुनः संगठित हुए । थोड़े-से यहूदियों ने अपने निजी स्वार्थों को त्यागकर अपनी जाति के लिए सर्वस्व त्याग के इस उदाहरण को आदर्श बनाया । सब यहूदी रेगिस्तानी इलाके को हरा-भरा बनाने में जुट गये और सबके सामूहिक श्रम का ही फल है कि आज इजरायल न केवल आन्तरिक दृष्टि से ही सम्पन्न है वरन छोटा होने पर भी विश्व-रंगमंच पर एक विशिष्ट महत्व रखता है ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

(८-४-७४ को कुंभ के अवसर पर दिया गया प्रवचन)

गायत्री मन्त्र हमारे साथ बोलिए-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो, भाइयो ! जो कार्य और उत्तरदायित्व आपके जिम्मे सौंपा गया है, वह यह है कि दीपक से दीपक को आप जलाएँ। बुझे हुए दीपक से दीपक नहीं जलाया जा सकता। एक दीपक से दूसरा दीपक जलाना हो तो पहले हमको जलना पड़ेगा, इसके बाद में दूसरा दीपक जलाया जा सकेगा। आप स्वयं ज्वलंत दीपक के तरीके से अगर बनने में समर्थ हो सके, तो हमारी वह सारी-की-सारी आकांक्षा और मनोकामना और महत्त्वाकांक्षाएँ पूरी हो जाएँगी, जिसको लेकर के हम चले हैं और यह मिशन चलाया है और हमने आपको यह कष्ट दिया है और यहाँ बुलाया है। आपका सारा ध्यान यहीं इकट्ठा होना चाहिए कि क्या हम अपने आपको एक मजबूत ठप्पे के रूप में बनाने में समर्थ हो गए? गीली मिट्टी को आप लाना। ठप्पे पर ठोंकना, तख्ते पर लगाना- वह वैसे ही बनता हुआ चला जाएगा, जैसे हमारे ये खिलौने बनते हुए चले जाते हैं। हमें खिलौने बनाने हैं। खिलौने बनाने के लिए हमने साँचे और ठप्पे मँगाए हुए हैं। साँचे में मिट्टी लगा देते हैं और एक नया खिलौना बन जाता है। एक नए शंकर जी बन जाते हैं। एक नए गणेश जी बन जाते हैं। ढेरों के ढेरों श्रीकृष्ण और शंकर जी बनते जा रहे हैं। कब? जब हमारे पास थापने के लिए ठप्पे हों और साँचा हो । साँचा अगर हमारे पास सही न होता, तो न कोई खिलौना बन सकता था, न कोई और चीज बन सकती थी।

मित्रो ! हमको जो सबसे महत्वपूर्ण काम मानकर चलना है वह यह कि हमारा व्यक्तित्व किस प्रकार का हो? न केवल हमारे विचारों का वरन, हमारे क्रिया-कलापों का भी। आपके मन में कोई चीज है, आप मन से बहुत अच्छे आदमी हैं, मन से आप शरीफ आदमी हैं, मन से आप सज्जन आदमी हैं, मन से आप ईमानदार आदमी हैं, लेकिन आपका क्रिया-कलाप और आपका लोक-व्यवहार उस तरह का नहीं है, जिस तरह का शरीफों का और सज्जनों का होता है। तो बाहर वाले लोगों को कैसे मालूम पड़ेगा कि आप जिस मिशन को लेकर चले हैं, उस मिशन को पूरा करने में आप समर्थ होंगे कि नहीं? मिशन को आप समर्थ बना सकते हैं कि नहीं? आपके विचारों की झाँकी आपके व्यवहार से भी होनी चाहिए। व्यवहार आपका उस तरह का न होगा तो मित्र लोगों को ये पता लगाने में, अंदाज लगाने में मुश्किल हो जाएगा कि आपके विचार क्या हैं और सिद्धान्त क्या हैं? जो विचार और सिद्धान्त आपको दिए गए थे वो आपने अपने जीवन में धारण कर लिए हैं कि नहीं किए हैं। आपको ये बातें मालूम होनी चाहिए, बाहर से नहीं भीतर से मालूम होनी चाहिए। जहाँ कहीं भी आप जाएँगे, आपको अपने नमूने का आदमी बनकर के जाना है।

नमूने का उपदेशक कैसा होना चाहिए? नमूने का गुरु कैसा होना चाहिए? नमूने का साधु कैसा होना चाहिए? नमूने का ब्राह्मण कैसा होना चाहिए और गुरुजी का शिष्य कैसा होना चाहिए? ये सारी की सारी जिम्मेदारियाँ हमने अनायास ही नहीं लाद दी हैं आप पर। आपको बोलना न आता हो तो कोई शिकायत नहीं हमें आपसे। आपको बोलना न आए, लैक्चर देना न आए, जो प्वाइंट्स और जो नोट्स आपने यहाँ लिए हैं, उन्हीं को जरा 'फेयर' कर लेना और अपनी कापी को लेकर के चले जाना। कहना गुरुजी ने आपके लिए हमको पोस्टमैन के तरीके से भेजा है। जो उन्होंने कहलवाया है, हम उस बात को कह रहे हैं। चिट्ठी को पढ़कर के हम आपको सुनाए देते हैं। आप अपनी डायरी के पन्ने खोलकर के सुना देना। मजे में काम चल जाएगा।

हम जब अज्ञातवास चले गए थे, तो उससे पूर्व यहाँ लोगों ने आधा-आधा घंटे के लिए हमारे संदेश टेप कर लिए थे और जहाँ कहीं भी सम्मेलन हुआ करते थे, जहाँ कहीं भी सभाएँ होती थीं, लोग उन टेपों को सुना देते थे। कह देते थे कि गुरुजी तो नहीं हैं, पर गुरुजी जो कुछ भी कह गए हैं, संदेश दे गए हैं, शिक्षा दे गए हैं आपके लिए, उसको आप लोग ध्यान से सुन लीजिए और ध्यान से पढ़ लीजिए। लोगों ने सारे व्याख्यान सुने और उसी तरह मिशन का कार्य आगे बढ़ता चला गया ।

देवियो और भाइयो, जो काम हम करने के लिए चले हैं, उसका सबसे बड़ा और पहला हथियार हमारे पास जो कुछ भी है, वह है-हमारा व्यक्तित्व और हमारा चरित्र। हमको जो कोई भी कार्य करना है, जो कोई भी सहायता प्राप्त करनी है, वह रामायण के माध्यम से नहीं, गीता के माध्यम से नहीं, व्याख्यानों के माध्यम से नहीं, प्रवचनों के माध्यम से नहीं, यज्ञों के माध्यम से नहीं पूरा होने वाला है। अगर किसी तरह से हमारे मिशन को सफलता मिलनी है और वह उद्देश्य पूरा होना है तो आपका चरित्र-आपका व्यक्तित्व ही एक मार्ग है, एक हथियार है हमारा। व्याख्यान के बारे में आपको ज्यादा ध्यान नहीं देना चाहिए और बहुत ज्यादा परेशान नहीं होना चाहिए। व्याख्यान अगर आपको न आए तो आपने यहाँ इस शिविर में जो कुछ भी सुना हो, समझा हो उसे ही लोगों को सुना देना। हमने प्रायः यह प्रयत्न किया है कि अपने कार्यकर्त्ताओं के शिविर जहाँ कहीं भी आपको चलाने पड़ें, वहाँ सबेरे प्रातःकाल जाकर के प्रवचन किया करना, जो हमने कार्यकर्त्ताओं के लिए और आपके क्रिया-कलापों के लिए कहे हैं। यहाँ आपको दूसरे लोग समझा देंगे कि कार्यकर्त्ताओं में कहे जाने के लिए प्रवचन कौन-से हैं और जनता में कहे जाने वाले प्रवचन कौन से हैं। हमको जनता के विचारों का संशोधन और विचारों का संवर्द्धन करने के लिए व्याख्यान करने पड़ेंगे और लोकशिक्षण करना पड़ेगा, क्योंकि आज मनुष्य के विचार करने की शैली में सबसे ज्यादा गलती है। सबसे ज्यादा गलती कहाँ है? एक जगह है और वह यह कि आदमी के सोचने का तरीका बड़ा गलत और बड़ा भ्रष्ट हो गया है।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

बाकी जो मुसीबतें हैं, जो परेशानियाँ हैं वे तो बर्दाश्त की जा सकती हैं, लेकिन आदमी के सोचने का तरीका अगर गलत बना रहा तो एक भी गुत्थी हल नहीं हो सकती और सारी गुत्थियाँ उलझती चली जाएँगी। इसलिए हमें करना क्या पड़ेगा? हमको जनसाधारण के लिए सबसे महत्वपूर्ण सेवा जो है, वह यह करनी पड़ेगी कि उनके विचार करने की शैली, सोचने की शैली को बदल देना पड़ेगा। अगर हम सोचने के तरीके को बदल देंगे तो उनकी कोई भी समस्या ऐसी नहीं है, जिसका समाधान न हो सके।

सारी समस्याओं का निदान, समाधान जरूर हो जाएगा, यदि आदमी इस बात पर विश्वास कर ले कि आहार और विहार, खान और पान, संयम और नियम, ब्रह्मचर्य, इनका पालन कर लेना आवश्यक है तो मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि अस्पताल को खोले बिना, डाक्टरों को बुलाए बिना, इन्जेक्शन लगवाए बिना और अच्छी कीमती खुराक का इन्तजाम किए बिना हम सारे समाज को नीरोग बना सकते हैं। आदमी की स्वास्थ्य से सम्बन्धित समस्याओं का समाधान हम जरूर कर सकते हैं। हमारी लड़कियाँ पढ़ी-लिखी न हों, गाना-बजाना न आता हो और हमारी स्त्रियाँ सुशिक्षित न हों, उन्होंने एम. ए. पास न किया हो, लेकिन हमने एक-दूसरे के प्रति प्रेम, निष्ठा और वफादारी की शिक्षा दे दी तो फिर जंगली हों तो क्या, गँवार हों तो क्या, आदिवासी हों तो क्या, भील हों तो क्या, कमजोर हों तो क्या, गरीब हों तो क्या? उनके झोंपड़ों में स्वर्ग स्थापित हो जाएगा। उनके बीच में मोहब्बत और प्रेम, निष्ठा और सदाचार हमने पैदा कर दी तब ? तब हमारे घर स्वर्ग बन जाएँगे।

अगर ये सिद्धान्त हम पैदा करने में समर्थ न हो सके, तब फिर चाहे हम सबके घर में एक रेडियो लगवा दें, टेलीविजन लगवा दें। हर एक के घर में हम एक सोफासैट डलवा दें और बढ़िया से बढ़िया बेहतरीन खाने-पीने की चीज का इन्तजाम करवा दें, फिर हमारे घरों की और परिवारों की समस्या का कोई समाधान न हो सकेगा। परिवारों की समस्याओं का समाधान जब कभी भी होगा तो प्यार से होगा, मोहब्बत से होगा, ईमानदारी से होगा, वफादारी से होगा। इसके बिना हमारे कुटुम्ब दो कौड़ी के हो जाएँगे और उनका सत्यानाश हो जाएगा। फिर आप हर एक को एम. ए. करा देना और हर एक के लिए बीस-बीस हजार रुपये छोड़कर मरना। इससे क्या हो जाएगा? कुछ भी नहीं होगा। सब चौपट हो जाएगा।

मित्रो ! सामाजिक समस्याओं की गुत्थियों के हल, सामाजिक समस्याओं के चैन विचारों के परिवर्तन से होंगे। कौन मजबूर कर रहा है आपको कि नहीं साहब दहेज लेना ही पड़ेगा और दहेज देना ही पड़ेगा। अगर इन विचारों को और इन रीतियों को बदल डालें, ख्यालातों को बदल डालें तो न जाने हम क्या से क्या कर सकते हैं और कहाँ से कहाँ ले जा सकते हैं। हमारे पास सबसे बड़ा काम मित्रो जनता की सेवा करने का है। इसके लिए हम धर्मशाला नहीं बनवाते, हम चिकित्सालय नहीं खुलवाते, अस्पताल नहीं खुलवाते और हम प्रसूतिगृह नहीं खुलवाते। हम ये कहते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को परिश्रमशील होना चाहिए ताकि उसे किसी प्रसूतिगृह में जाने की और किसी नर्सिंग होम में जाने की आवश्यकता न पड़े। लुहार होते हैं, आपने देखे हैं कि नहीं, गाड़ी वाले लुहार, एक गाँव से दूसरे गाँव में रहा करते हैं। उनकी औरतें घन चलाती रहती हैं। घन चलाने के बाद उन्हें ग्रह नहीं पता रहता कि बच्चा काँख में से पैदा होता है या पेट में से पैदा होता है। आज बच्चा पैदा हो जाता है, कल-परसों फिर काम करने लगती हैं। पन्द्रह घंटे घन चलाती हैं, उनकी सेहत और कलाई कितनी मजबूत बनी रहती है। उनको नर्सिंग होम खुलवाने की और डिलिवरी होम खुलवाने की जरूरत नहीं है। हमको प्रत्येक स्त्री और पुरुष को यही सिखाने की जरूरत है कि हमको मेहनती और परिश्रमशील होना चाहिए। परिश्रमशील होने का माद्दा अगर लोगों के दिमागों में हम स्थापित कर सके, तो मित्रो हमारे घरों की समस्याएँ, परिवारों की समस्याएँ, समाज की समस्याएँ और सारी समस्याएँ जैसे बेईमानी की समस्याएँ आदि कोई समस्या ऐसी नहीं है, जिसका हम समाधान न कर सकते हों।

इसलिए महत्त्वपूर्ण कदम हमको यह बढ़ाना पड़ेगा कि जनता का लोकशिक्षण करने के लिए आप जाएँ और जनता में लोकशिक्षण करें। लोकशिक्षण करने के लिए हमने जो विचारधारा आपको यहाँ दी है, उसे एक छोटी-सी पुस्तक के रूप में भी छपवा दिया है। ये व्याख्यान जो आपको यहाँ सुनने को मिले हैं, वे सारे के सारे प्वाइंट्स छपे हुए मिल जाएँगे। इनका आप अभ्यास कर लेना और इन्हीं प्वाइंट्स को आप कंठस्थ कर लेंगे और डेवलप कर लेंगे तो क्या हो जाएगा कि सायंकाल के प्रवचनों में जा आपको जनता के समक्ष कहने पड़ेंगे, बड़ी आसानी से कहने में पूरे हो जाएँगे। कार्यकर्त्ताओं के समक्ष भी आप यही कहना। जहाँ कहीं भी आपको समझाने की, प्रवचन करने की जरूरत पड़े, आप यह कहना कि गुरुजी ने हमें डाकिये की तरह से भेजा है और एक चिट्ठी देकर आपके लिए भेजा है और खासतौर से आपके लिए एक संदेश लिखकर के भेजा है। लीजिए चिट्ठी को पढ़कर के सुना देते हैं। सबेरे वाले प्रवचन जो हमने दिए हुए हैं, अगर आप सुना देंगे, समझा देंगे तो वे आपकी बात को मान जाएँगे। आपको व्याख्यान देना न आता हो और समझाने की बात न आती होगी तो भी बात बन जाएगी। व्याख्यान देना और प्रवचन देना, चाहे आपको न आता हो, कोई हर्ज आपका होने वाला नहीं है। ये जो प्वाइंट्स हमने आपको दिए हैं, किसी भी स्थानीय वक्ता को, किसी भी स्थानीय व्याख्यानदाता को आप समझा देना और कहना कि जो प्रवचन गुरु जी ने दिए हैं, इन्हें आप अपने ढंग से, अपनी समझ से, अपनी शैली से, अपने तरीके से, आप इन्हीं प्वाइंटों को समझा दीजिए। कोई भी अच्छा वक्ता जिसको बोलना आता होगा, बोलने की तमीज होगी या बोलने का ज्ञान होगा, इन बातों को समझा देगा जो सायंकाल की हैं। ये काम और कोई नहीं कर सकेगा जो आपको करना है।

वे कौन-से काम हैं, जो आपको करने पड़ेंगे? आपको यह करना पड़ेगा कि जहाँ कहीं भी आप जाएँ, जिस शाखा में भी आप जाएँ, एक छाप इस तरह की छोड़कर आएँ कि गुरुजी के संदेशवाहक और गुरुजी के शिष्य जो होते हैं, वे किस तरह से और क्या कर सकते हैं और क्या करना चाहिए। आप यहाँ से जाना और वहाँ इस तरीके से अपना गुजारा करना, इस तरीके से निर्वाह करना जैसा कि संतों का गुजारा होता है और संतों का निर्वाह होता है।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

आप जहाँ कहीं भी जाएँ, अपने खानपान संबंधी व्यवस्था को कंट्रोल रखना। खान-पान संबंधी व्यवस्था के लिए हुकूमत मत चलाना किसी के ऊपर । वहाँ जैसा भी कुछ हो, जैसा भी कुछ लोगों ने दिया हो उसी से काम चला लेना। आपको तरह-तरह की फरमाइशें पेश नहीं करनी चाहिए। जैसे कि बाराती लोग किया करते हैं। बारातियों का काम क्या है ? बाराती लोग सारे दिन फरमाइशें पेश करते रहते हैं। और नेताओं का क्या काम होता है ? बजाजियों का क्या होता है ? जहाँ कहीं भी वे जाते हैं, तो ऑर्डर करते रहते हैं और तरह-तरह की चीजों के लिए, अपने खाने-पीने की चीजें, अपनी सुविधा की चीजें, बीसों तरह की अपनी फरमाइशें करते रहते हैं। आपको किसी चीज की जरूरत पड़ती हो, चाहे आपको दिन भर भोजन न मिला हो, तो आप अपने झोले में सत्तू लेकर के जाना, थोड़ा नमक ले करके जाना। छुपकर के अपने कमरे में अपना सत्तू और अपना नमक घोल करके पी जाना, लेकिन जिन लोगों ने आपको बुलाया है, उन पर ये छाप छोड़ करके मत आना कि आप चटोरे आदमी हैं और आप इस तरह के आदमी हैं कि आप खाने के लिए और पीने के लिए और अमुक चीजों के लिए आप फरमाइश ले करके आते हैं। इसलिए हमने एक महीने तक आपको पूरा अभ्यास यहाँ कराया। हमने ये अभ्यास कराया कि जो कुछ भी हमारे पास है साग, सत्तू आप घोल करके खाइए। साग, सत्तू आप खा करके रहिए और जबान को कन्ट्रोल करके रहिए। उन चीजों की लिस्ट को फाड़कर फेंक दीजिए कि अमुक चीज खाएँगे तो आप ताकतवर हो जाएँगे और अमुक चीज खाएँगे तो आप पहलवान हो जाएँगे। अमुक चीज आप खाएँगे तो आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। मित्रो हम यकीन दिलाते हैं कि खाने की चीजों से स्वास्थ्य का कोई ताल्लुक नहीं है और अगर आपको घी नहीं मिलता, तो कोई हर्ज नहीं, कुछ आपका बिगाड़ नहीं होने वाला है।

हम आपको कई बार कथा सुनाते रहते हैं। एक बार अपनी अफ्रीका यात्रा की मसाईयों का हमने किस्सा सुनाया था, जिन बेचारों को मक्का मुहैया होती है। जिन लोगों के लिए सफेद बीज की दाल मुहैया होती है। जिन लोगों के लिए केवल जंगली केला मुहैया होता है। चार चीज उनको मिलती हैं। न कभी उनको घी मिलता है, न कभी और कोई पौष्टिक चीजें मिलती हैं, लेकिन उनकी कलाइयाँ, उनके हाथ कितने मजबूत होते हैं। ओलंपिक खेलों में सोने के मैडल जीतकर लाते और शेरों का शिकार करते रहते हैं। ताकत अनाज में नहीं है, ताकत शक्कर में नहीं है, ताकत घी में नहीं है और ताकत मिठाई में नहीं है। मित्रो, ताकत का केन्द्र दूसरा है। ताकत की जगह वह है जो गाँधी जी ने अपने भीतर पैदा की थी। घी खाकर के पैदा नहीं की थी उन्होंने। वह अलग चीज है जिनसे ताकत आती है। इसलिए जहाँ कहीं भी आप जाएँ, हमारे संदेशवाहक के रूप में, वहाँ पर आपका खान-पान का व्यवहार ऐसा हो जिससे कोई आदमी यह कहने न पाए कि ये लोग कोई बड़े आदमी आए हैं और कोई वी. आई. पी. आए हैं। यहाँ से जब आप जाएँ तो प्यार और मोहब्बत को ले करके जाना। अगर आपके अन्दर कडुवापन रहा हो तो उसको यहीं पर छोड़कर जाना। कडुवापन मत ले करके जाना, अपना अहंकार ले करके जाना मत।

कडुवापन क्या है ? कडुवापन आदमी का घमण्ड है, कडुवापन आदमी का अहंकार है। अपने अहंकार के अलावा कडुवापन कुछ है ही नहीं। आप जब ये कहते हैं कि हम तो सच बोलते हैं, इसलिए कडुवी बात कहते हैं। ये गलत कहते हैं। सच में बड़ा मिठास होता है। उसमें बड़ी मोहब्बत होती है। गाँधी जी सत्य बोलते थे, लेकिन उनके बोलने में बड़ी मिठास भरी होती थी। अँग्रेजों के खिलाफ उन्होंने लड़ाई खड़ी कर दी और ये कहा कि आपको हिन्दुस्तान से निकालकर पीछा छोड़ेंगे। आपके कदम हिन्दुस्तान में नहीं रहने देंगे। मारकर भगा देंगे और आपका सारा जो सामान है वो यहीं पर जब्त कर लेंगे और नहीं देंगे। गाँधा जी की बात कितनी कडुवी थी और कितनी तीखी थी और कितनी कलेजे को चीरने वाली थी। लेकिन उन्होंने शब्दों की मिठास, व्यवहार की मिठास को कायम रखा, हमको और आपको व्यवहार की मिठास को कायम रखना चाहिए। अगर आपके भीतर मोहब्बत है और प्यार है, मित्रो! तो आपकी जबान में से कडुवापन नहीं निकलेगा। इसमें मिठास भरी हुई होनी चाहिए। प्यार भरा हुआ रहना चाहिए। प्यार अगर आपकी जबान में से निकलता नहीं और मिठास आपकी जबान में से निकलती नहीं है, आप निष्ठुर की तरह जबान की नोंक में से बिच्छू के डंक के तरीके से मारते रहते हैं, दूसरों को चोट पहुँचाते रहते हैं और दूसरों का अपमान करते रहते हैं और विचलित करते रहते हैं, तब आपको यह कहने का अधिकार नहीं है कि आप सच बोलते हैं।

सच क्या है ? जैसा आपने देखा है, सुना है, उसको ही कह देने का नाम सच नहीं है। सच उस चीज का भी नाम है, जिसके साथ में प्यार भरा हुआ रहता है और मोहब्बत जुड़ी हुई रहती है। प्यार और मोहब्बत का व्यवहार आपको यहीं से बोलना-सीखना चाहिए और जहाँ कहीं भी शाखा में आपको जाना है, कार्यकर्त्ताओं के बीच में जाना है और जनता के बीच में जाना है, उन लोगों के साथ में आपके बातचीत करने का ढंग, बातचीत करने का तरीका ऐसा होना चाहिए कि उसमें प्यार भरा हुआ हो, मोहब्बत जुड़ी हुई हो। उसमें आत्मीयता मिली हुई हो, दूसरों का दिल जीतने के लिए और दूसरों पर अपनी छाप छोड़ने के लिए। यह अत्यधिक आवश्यक है कि आपके जबान में मिठास और दिल में मोहब्बत होनी चाहिए। आप जब यहाँ से जाएँ तो इस प्रकार का आचरण ले करके जाएँ, ताकि लोगों को यह कहने का मौका न मिले कि गुरुजी के पसंदीदे यही हैं । अब आपकी इज्जत-आपकी इज्जत नहीं है, हमारी इज्जत है। जैसे हमारी इज्जत हमारी इज्जत नहीं है, हमारे मिशन की इज्जत है। हमारी और मिशन की इज्जत की रक्षा करना अब आपका काम है। अपने वानप्रस्थ आश्रम की रखवाली करना आपका काम है।

हमने ये तीन-चार तरीके की जिम्मेदारी आपके कंधे पर डाली है। इन जिम्मेदारियों को लेकर के आप जाना। फूँक-फूँक कर के पाँव रखना। आप वहाँ चले जाना, जहाँ कि आबोहवा का ज्ञान नहीं है। कहीं गर्म जगह हम भेज सकते हैं, कहीं ठंडी जगह हम भेज सकते हैं। कहीं का पानी अच्छा हो सकता है और कहीं का पानी खराब हो सकता है। आप वहाँ जाकर के क्या कर सकते हैं ? आप

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

बीमार नहीं पड़ सकते। बीमारी के लिए मैं दवा बता दूँगा, आप जहाँ कहीं भी जाएँगे, आप बीमार नहीं पड़ेंगे और बीमारी आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकती। मैं ऐसी दवा दे दूँगा कि आप चाहे जहाँ कहीं भी जाना और जो चाहे कुछ खिला दे, वही खाते रहना। बेजिटेबिल की पूड़ियाँ खिलाता हो तो पूरे महीने पूड़ियाँ खाना और बीमार होकर आये तो आप मुझसे कहना। मैं ऐसी गोली देना चाहता हूँ कोई भी चीज खिलाता हो, आप खाते रहना और आपके पेट में कब्ज की शिकायत हो जाए तो आप मुझसे कहना, मेरी जिम्मेदारी है। आप मुझसे शिकायत करना कि गुरुजी आपकी गोली ने काम नहीं किया, हमको तो कब्ज की शिकायत हो गई।

इसके लिए आप एक काम करना, अपनी खुराक से कम खाना। यहाँ चार रोटी की खुराक है, तो यहाँ से निकलते ही एक रोटी कम खाना। एक रोटी कम तीन रोटी खाना शुरू कर दीजिए। आप जायके के माध्यम से जाएँगे तो हर आदमी के मेहमान होंगे और मेहमान का तरीका हिन्दुस्तान में यह होता है कि जो कोई भी आता है किसी के घर, तो उस आदमी के लिए अगर हम मक्का की रोटी खाते हैं तो उसे गेहूँ खिलाएँगे और हम गेहूँ की खाते हैं तो आपको चावल खिलाएँगे। चावल खाते हैं, तो मिठाई खिलाएँगे। हम अगर छाछ पीते हैं तो आपको दूध पिलाएँगे। हर हिन्दू यह जानता है कि सन्त-महात्मा का वेश पहन कर के आप जा रहे हैं तो स्वभावतः आपको अपने घर की अपेक्षा अच्छा भोजन कराए, अच्छी-अच्छी चीजें खिलाए। यदि आपने अपनी जबान पर कंट्रोल रखा नहीं, तो आप जरूर बीमार पड़ जाएँगे। आप ध्यान रखिए आबोहवा तो बदलती ही है। यहाँ का पानी आज, वहाँ का कल, वहाँ का पानी परसों। समय का ज्ञान नहीं, कुसमय का ज्ञान नहीं। यहाँ पर आप ग्यारह बजे खाना खा लेते हैं सम्भव है कि कोई आपको दो बजे खिलाए, आपका पेट खराब हो सकता है। आप बीमार हो सकते हैं, लेकिन ये खुराक जो मैंने आपको बताई है, अगर उसको कायम रखेंगे तो आप कभी भी बीमार नहीं होंगे।

मित्रो! हमने लम्बे-लम्बे सफर किये हैं और तरह-तरह की चीजें और तरह तरह की खुराकें खाने का मौका मिला है। एक बार मैं मध्यप्रदेश गया तो लाल मिर्च साबुत खाने की आदत उन लोगों की थी। रामपुरा में यज्ञ हुआ । यज्ञ हुआ तो वहाँ वो बड़ी-बड़ी पूड़ी परोस रहे थे और ऐसी सब्जी परोस रहे थे जो मुझे टमाटर की सी मालूम पड़ी। लाल रंग का सारे का सारा टमाटर का साग परोस रहे थे। टमाटर मुझे अच्छा भी लगता है, माताजी मेरे लिए अक्सर बना लिया करती हैं। मँगा लेती हैं। मैंने भी मँगा लिया और रख लिया थाली में। जैसे ही मैंने पूड़ी का टुकड़ा मुँह में दिया कि मेरी आँखें लाल-लाल हो गईं। अरे यह क्या? गुरुजी यह टमाटर का साग नहीं है, यह तो लाल मिर्च है। जब हरी मिर्च पक जाती है और लाल हो जाती है तो उनको ही पीस करके उसमें नमक और खटाई मिलाकर के ऐसा बना देते हैं - लुगदी जैसी, उसको आप चटनी कह लीजिए। ऐसी भी जगह मुझे जाना पड़ा है कि मैं क्या कहूँ आपसे।

एक बार मैं आगरा गया और वहाँ भोजन करना पड़ा। दाल-रोटी जो घर में खाते हैं, जहाँ कहीं भी जाता हूँ, वही खाता हूँ और कहता हूँ कि तुम्हारे घर में जो कुछ भी हो वही खिलाना। नहीं हो तो मेरे लिए बनाना मत, अलग चीज बनाओगे तो मैं खाऊँगा नहीं। अगर तुम पूड़ी रोज खाते हो तो पूड़ी बना दो मेरे लिए। मुझे एतराज नहीं, लेकिन तुम हमेशा कच्ची रोटी खाते हो तो मेरे लिए कच्ची रोटी ही बनाना, मक्का की रोटी खाते हो अपने घर में तो, वही खिलाना, क्योंकि मैं तुम्हारा मेहमान नहीं हूँ, तुम्हारा कुटुम्बी हूँ। आगरा में उन लोगों ने दाल बना दी और रोटियाँ धर दीं। दाल में जैसे ही मैंने कौर डुबोया, इतनी ज्यादा मिर्च के मेरे तो बस आँखों में से पानी आ गया। मैं क्या कह सकता था। अगर मैं यह कहता कि साहब दाल बड़ी खराब है उठा ले जाइए। यह आपने क्या दे दिया और मेरे लिए तो दही लाइए और वह लाइए। मेरी आँख में से पानी तो आ गया और मैंने एक घूँट पानी पिया, पीने के बाद रोटी के टुकड़े खाता तो गया। रोटी के टुकड़े दाल तक ले तो गया, पर दाल में डुबोया नहीं। हाथ मैंने चालाकी से चलाया, जिससे मालूम पड़े कि मैं दाल खा रहा हूँ। दाल खाई नहीं और वैसे ही रूखी रोटी खाता और पानी पीता रहा। पानी पीने के बाद उतर कर आ गया। उसे पता भी नहीं चला, मुझे भी पता नहीं चला। न उसको शिकायत हुई कि आपने ये कैसे खाया।

हमारे यहाँ एक स्वामी परमानन्द जी और नत्थासिंह भी थे पहले। दोनों साथ थे। हम नत्थासिंह और परमानन्द जी को अक्सर बाहर भेज देते थे। दोनों का जोड़ा था। जब भोजन होता था तब स्वामी परमानन्द उससे कहते थे- नत्थासिंह, हाँ! देख, मैं मर जाऊँ कभी और तुझे ये खबर मिले कि स्वामी परमानन्द मर गया, तो ये मत पूछना कि कौन-सी बीमारी से मर गया। पहले से लोगों से कह देना कि परमानन्द ज्यादा खा करके मर गया। सारा घी स्वामी जी खा जाएँ तो भी पता न चले। जहाँ कहीं भी जाते, खाने की उनकी ऐसी ललक कि एक बार खिला दीजिए, खाने से पिण्ड छोड़ने वाले नहीं। टट्टियाँ हो जाएँ तो क्या? उल्टियाँ हो जाएँ तो क्या? पर खाने से बाज न आने वाले थे वे।

मित्रो हमारी जबान के दो विषय हैं, जबान हमारी बड़ी फूहड़ है। एक विषय इसका यह है कि यह स्वाद माँगती है और जायके माँगती है। आप स्वादों को नियंत्रण करना- जायके को नियंत्रित करना। सन्त जायके पर नियंत्रण किया करते हैं और स्वाद पर नियंत्रण किया करते हैं। जिस आदमी का जायके पर नियंत्रण नहीं है और स्वाद पर नियंत्रण नहीं है, वह आदमी सन्त नहीं कहला सकता। आपने-हमने ऐसे संत देखे हैं जो भिक्षा माँग करके लाए और एक ही कटोरे में- एक ही जगह में दाल को मिला दिया और उसको मिला दिया और इसको मिला दिया और साग को मिला दिया और खीर को मिला दिया और सबको मिला दिया। एक ही जगह मिलाकर खाया। वे ऐसा किसलिए खाते हैं? इसलिए कि वे जबान के जायके पर काबू करके खाते हैं। जबान के जायके का अभ्यास आपको यहाँ नहीं हो सका तो आप जहाँ कहीं भी जाएँगे, फील्ड में जाएँ, जहाँ कहीं भी कार्यकर्त्ताओं के बीच में जाएँ, आपको एक छाप छोड़ने की बात मन में लेकर के जानी चाहिए कि हम जबान के जायके को कंट्रोल में करके आए हैं । अब देखना आपके ऊपर छाप पड़ती है कि नहीं पड़ती है।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

खान-पान का भी हमारे हिन्दुस्तान में ध्यान रखा जाता है। एक महात्मा ऐसे थे, जो हथेली के ऊपर रखकर के रोटी खाया करते थे। उनका नाम महागुरु श्रीराम था। अभी भी वे हथेली पर रोटी रखकर खाने वाले महात्मा के नाम से मशहूर हैं। मैं नाम तो नहीं लेना चाहूँगा, पर आप अन्दाज लगा सकते हैं कि मैं किसकी ओर इशारा कर रहा हूँ। इस समय तो वे नहीं करते, इस समय तो वे मोटरों में सफर करते हैं और अच्छे चाँदी और सोने के बर्तनों में भोजन करते हैं। पर कोई एक जमाना था, जब हथेली पर रख करके भोजन करते थे। एक ही विशेषता ऐसी हो गई कि सारे हिन्दुस्तान में विख्यात हो गए। इस बात के लिए प्रख्यात हो गए कि वे हथेली पर रखकर के रोटी खाया करते हैं। भला आप संत नहीं हैं तो क्या, महात्मा नहीं हैं तो क्या? आपकी खुराक सम्बन्धी आदत ऐसी बढ़िया होनी चाहिए कि जहाँ कहीं भी आप जाएँ वहाँ हर आदमी आपको बर्दाश्त कर सकता हो, 'अफोर्ड' कर सकता हो। गरीब आदमी भी ये हिम्मत कर सकता हो कि हमारे यहाँ पंडित जी का भोजन हो। गरीब आदमी को भी ये कहने की शिकायत न हो कि हमारे यहाँ घी नहीं होता, हमारे घर में दूध नहीं होता, हमारे घर में दही नहीं होता, हम तो गरीब आदमी हैं, फिर हम किस तरीके से उनको बुलाएँगे, किस तरीके से भोजन कराएँगे। आपकी हैसियत संत की होनी चाहिए और संत का व्यवहार जो होता है, हमेशा गरीबों में ज्यादा होता है। गरीबों जैसा होता है, अमीरों जैसा संत नहीं होता, संत अमीर नहीं हो सकता। संत कभी भी अमीर होकर नहीं चला है। जो आदमी हाथी पर सवार होकर जाता है, वह कैसे संत हो सकता है? संत को तो पैदल चलना पड़ता है। संत को तो मामूली कपड़े पहनकर चलना पड़ता है। संत चाँदी की गाड़ी पर कैसे सवारी कर सकता है? आपको यहाँ से जाने के बाद अपना पुराना बड़प्पन छोड़ देना चाहिए और पुराने बड़प्पन की बात भूल जानी चाहिए।

बस, आपको यहाँ से जाने के बाद अपने पुराने बड़प्पन को भूल जाना चाहिए और जगह-जगह ये नहीं कहना चाहिए कि हम तो रिटायर्ड पोस्टमास्टर थे या रिटायर्ड पुलिस इन्सपेक्टर थे या हमारे गाँव में जमींदारी होती थी। आप यह मानकर जाना कि हम नाचीज हो करके जा रहे हैं। संत नाचीज होता है। संत तिनका होता है और अपने अहंकार को त्याग देने वाला होता है। यदि आपने अपने अहंकार को त्यागा नहीं और अपने घमण्ड को त्यागा नहीं तो फिर आप संत कहलाने के अधिकारी नहीं हुए। हमारी पुरानी परम्परा थी कि जो कोई भी संत वेष में आता था, उसको भिक्षायापन करना पड़ता था। क्यों? भिक्षायापन कौन करता है? भीख माँगने वाला गरीब होता है ना? कमजोर होता है ना? संत वेष धारण करने के पश्चात हर आदमी को भिक्षा माँगने के लिए जाना पड़ता था, ताकि उसका अहंकार चूर-चूर हो जाए। हम अपने ब्रह्मचारियों को जनेऊ पहनाते थे। जनेऊ पहनाने के समय ऋषि अपने बच्चों को भिक्षा माँगने भेजते थे कि जाओ बच्चो भिक्षा माँगो, ताकि किसी बच्चे को यह कहने का मौका न मिले कि हम तो जमींदार साहब के बेटे हैं, ताल्लुकेदार के बेटे हैं और धनवान के बेटे हैं, गरीब के बेटे नहीं हैं, हर आदमी का आध्यात्मिकता का आत्मसम्मान अलग होता है और अपने धन का, अपनी विद्या का, अपनी बुद्धि का, अपने पुरानेपन का और अपनी जमींदारी का और अपने अमुक होने का गर्व होता है, वह अलग होता है। आप यहाँ से जाना तो अहंकार छोड़ करके जाना।

मित्रो, कई आदमियों को-चेलों को बार-बार यह कहने की आदत होती है कि जब तक वे अपनी महत्ता और अपना बड़प्पन, अपने अहंकार की बात का सौ बार जिकर नहीं कर लेंगे, तब तक उनको चैन नहीं मिलेगा। निरर्थक की बात-चीत करेंगे। निरर्थक की बातचीत करने का क्या उद्देश्य होगा? यह उद्देश्य होगा कि मैं ये था और मैंने ये किया था और मैं वहाँ गया था और मेरा ये हुआ था। मैं पहले ये था, मैं पहले ये कर रहा था- आधा घंटे तक भूमिका बनाएँगे। आधे घंटे भूमिका बनाने के बाद फिर किस्सा शुरू होगा- मैं, मैं....मैं.....मैं.....मैं.....मैं... को अनेक बार कहते हुए चले जाएँगे। लेकिन मित्रो, ये समझदारी की बात नहीं है, नासमझी की बात है। जो आदमी अपने मुँह से, अपनी जबान से, अपने बड़प्पन की जितनी बात बताता है, वह उतना ही कमजोर होता चला जाता है और उतनी ही उसकी महत्ता कम होती जाती है। हम आपको जिन लोगों के पास में भेजने वाले हैं, वे फूहड़ लोग नहीं हैं, बेअकल लोग नहीं हैं, बेवकूफ लोग नहीं हैं। हमने अखण्ड ज्योति पैंतीस वर्ष से निकाली है और पैंतीस वर्ष से जो आदमी अखण्ड ज्योति पत्रिका को पढ़ते हुए चले जा रहे हैं, वे काफी समझदार लोग हैं। हमारा हर आदमी समझदार आदमी है। इस बात की तमीज उसको है और हर बात की अकल उसको है कि क्या आपके स्तर का है और क्या आपके स्तर का नहीं है। अपने अहंकार के बारे में और अपने बड़प्पन के बारे में आप जितना कम बोलेंगे, उतनी आपकी इज्जत ज्यादा बढ़ती चली जाएगी और अपने अहंकार के बारे में, अपने बड़प्पन के बारे में जितनी शेखी आप बघारेंगे, उतनी ही आपकी इज्जत कम होती जाएगी और लोग यह समझेंगे कि ये कितना घमण्डी आदमी है और लोलुप आदमी है। यह बहुत बड़ाई करना चाहता है और हमको अपने बड़प्पन की बात बताना चाहता है। यह मैं आपको विदा करते समय में उसी तरह की शिक्षा दे रहा हूँ जैसे कि माँ अपनी बेटी को विदा करने के समय जब ससुराल भेजती है तो तरह-तरह की नसीहतें देती है और तरह-तरह की शिक्षाएँ देती है कि बेटी सास से व्यवहार ऐसे करना। बेटी ससुर से ऐसे व्यवहार करना। बेटी अपने पति से ऐसे व्यवहार करना। बेटी अपनी ननद से ऐसे व्यवहार करना। बेटी, इस तरीके से व्यवहार करना। मैं आपको बेटियों की तरीके से नसीहत दे रहा हूँ, क्योंकि मैं आपको ससुराल भेज रहा हूँ।

ससुराल कहाँ? ससुराल का मतलब जनता के समक्ष भेजने से है, जहाँ पर आपका इम्तिहान लिया जाने वाला है। आपके व्याख्यान का नहीं, मैं आपसे फिर कहता हूँ कि आपको व्याख्यान देना न आता हो तो कोई डरना मत और कन्फ्यूज मत होना। व्याख्यान के बिना भी काम चल जाएगा। आप चुप बैठे रहना- महर्षि रमण के तरीके से, तो भी काम चल जाएगा। पांडिचेरी के अरविन्द घोष ने अपनी जबान पर काबू कर लिया था। कन्ट्रोल कर लिया था। उन्होंने लोगों से मिलने से इन्कार कर दिया था और कह दिया था कि हम आप लोगों से बातचीत

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

नहीं करना चाहते हैं। बातचीत न करने के बाद भी महर्षि रमण और पांडिचेरी के अरविन्द घोष इतने ज्यादा काम करने में समर्थ हो गए, आपको मालूम नहीं है क्या? बहुत काम करने में समर्थ हो सके। जहाँ कहीं भी आप जाएँ, जरूरी नहीं है कि आपको स्वयं ही बोलना चाहिए। आप जो प्वाइंट ले करके गए हैं और जो प्वाइन्ट इस डायरी में भी लिखे हुए हैं और डायरी के अलावा हमने अलग किताब भी छपवा दी है, उससे आपका काम चल जाएगा। जहाँ कहीं भी आप जाएँगे वहाँ भी आपको ढेरों के ढेरों व्याख्यान देने वाले वक्ता जरूर मिल जाएँगे। उनको आप बोलना और कहना कि देखो भाई, ये हमारे डायरी के पन्ने हैं और देखो ये पुस्तक के पन्ने हैं। आपको इन प्वाइंटों के ऊपर ऐसी-ऐसी बातें कहनी हैं। यहाँ हमको बोलकर सुना दो एक बार। आप इम्तिहान लेना और जब आपको लग जाएगा कि वह ठीक बोल रहा है तो कहना बेटा कल तुम्हें यह संदेश गुरुजी का वहाँ पढ़ना है। हम तो सिखाने के लिए आए हैं, स्वयं बोलने के लिए थोड़े ही आए हैं। हमें थोड़े ही बोलना है। आपको बोलना पड़ेगा, आपको सम्मेलन करना पड़ेगा। हमको तो अपना काम करना है। हमको तो सिखाना है और तुमको बोलना है। तुमको बोलना चाहिए हमारे सामने, तुम नहीं बोलोगे तो हम कैसे पहचानेंगे कि तुमने गुरुजी के संदेश को समझ लिया और अपना लिया, इसलिए रोज सबेरे के वक्त में ये बोलना है। बोलकर सिखा दो और बता दो कि पहले क्या कहोगे? ऐसा मत कहना कि हम कुछ और कहने आए हैं और तुम अपना नमक-मिर्च लगाकर कहने लगो। हम जो बात कहना चाहते हैं, वही बात कहना।

कोई भी आदमी जिसको बोलने की जानकारी हो और लेक्चर देने की कला आती हो, वह बोल देगा। यों तो व्याख्यान देने की कला तमाम स्कूलों में पढ़ाई जाती है। लैक्चरार एक पेशा बन गया है, धन्धा बन गया है। लेक्चरार तो ढेरों आदमी पैदा हो गया। लेक्चर देना और व्याख्यान देना कोई मुश्किल बात नहीं। आप उससे घबड़ाना मत। आपको न आता हो तो दूसरे लोगों से कहलवा देना और सायंकाल के स्टेज के लिए भी आप तैयार होकर जाना। कोई न मिलता हो तो वकील को बुला लेना। वकील साहब, हाँ, तुम्हारी-हमारी बहस है। बहस है तो अच्छा, शाम को आ जाना, हमारा केस लड़ देना। क्या केस है? अरे गुरुजी का मुकदमा है। गुरुजी ने ये-ये प्वाइंट्स बताए हैं, जरा बैठकर जरा-सी बात कह दीजिए। इसके लिए आपको एक घंटा बोलना पड़ेगा। अरे साहब एक घंटे का तो हम दस रुपये ले लेते हैं, तो आप दस रुपये ले लीजिए या फिर आज फोकट में ही बोल दीजिए। हाँ फोकट में ही बोल देंगे, बताइये क्या बोलना है। बस वह आपके प्वाइंटों को लेकर के खड़ा हो जाएगा और ऐसे धड़ल्ले से बोलेगा कि आपको मजा आ जाएगा। किसी अध्यापक को बुला लेना, किसी को भी बुला लेना, कोई भी आदमी आ जाएगा। आपकी बात को कह देगा। इसलिए आप मत देना व्याख्यान।

तो आपको क्या करना है? आपको तो लोगों को सिखाने के लिए जाना है। आपको तो तभी बोलना है, जब बहुत मुसीबत आ जाए, बहुत जरूरी हो जाए, आप वहाँ के लोगों को सिखाना- बोलने का काम तो उन्हीं को करना है, शाखा तो उन्हीं को चलानी है। आपक सामने बोल लेंगे तो अच्छी बात है। आप भी कभी-कभी कह दिया करिए। गुरु तो पीछे बैठा रहता है और तीर-कमान तो लड़के चलाते रहते हैं। गुरु जो होता है, झट से बता देता है। आपने अखाड़े के उस्ताद को नहीं देखा। अखाड़े का उस्ताद कहीं लड़ता है क्या? पर यह बताता रहता है कि ये पकड़, यह क्या करता है, मालूम है क्या करता है? हाथ पकड़ता है- टाँग नहीं पकड़ता है गिराना है तो। पहलवानी करने चला है और टाँग पकड़ना नहीं आता, पहले टाँग पकड़ उसकी। अच्छा हाँ, उस्ताद अभी पकड़ता हूँ और कान पकड़ता हूँ। टाँग पकड़ गिरा इसको। अभी गिराता हूँ। ऐसे करके आपको तो उस्ताद बनाकर भेजेंगे, कोई अखाड़े के पहलवान बनाकर थोड़े ही भेजेंगे। पहलवान तो ढेरों के ढेरों मिल जाएँगे। पहलवानी को रहने दीजिए। गुरुजी हमें तो यहाँ एक महीने रहते हुए होने को आया। अब आप परसों भेज देंगे, हमको लेक्चर झाड़ने पड़ेंगे, तो लेक्चर कैसे देंगे? अरे बाबा, लेक्चर की हम नहीं कह रहे हैं। लेक्चरार बनाकर नहीं भेज रहे हैं। हम तो आपको वह चीज दे करके भेज रहे हैं कि जहाँ कहीं भी आप जाएँ, वहाँ आपके क्रिया-कलाप ऐसे होने चाहिए, जैसा कि हमारे कार्यकर्त्ता का होना चाहिए जिसे देखकर अन्य कार्यकर्त्ताओं का उत्साह बढ़ता हुआ चला जाए। आपको हमने वहाँ मुआयना करने के लिए और कोई इन्सपैक्टर बना करके नहीं भेजा है और न ही हम आपको नेता बनाकर भेज रहे हैं। नेता पर लानत। नेता, हम नहीं बनाएँगे आपको। नेता से हमें कोई मोहब्बत नहीं है। जो आदमी स्टेज पर बैठ करके, मटक-मटक करता है और फूलमाला पहन करके माइक पकड़ करके बैठ जाता है और किसी का नम्बर ही नहीं आने देता। प्रेसीडेंट कहता है अरे बाबा बन्द कर। उसने तो माइक पकड़ लिया है, दूसरों को देता ही नहीं। ऐसा ही होता है। जब तक सारे लोग उसके नीचे नहीं होंगे, तब तक नहीं छोड़ेगा, ऐसा नेता मुबारक, माइक मुबारक दोनों चीजें मुबारक। ❀

क्रमशः अगले अंक में

दो बीज धरती की गोद में जा पड़े। मिट्टी ने उन्हें ढँक दिया। दोनों रात में सुख की नींद सोये।

प्रातःकाल दोनों जगे तो एक के अंकुर फूट गये, वह ऊपर उठने लगा। यह देख छोटा बीज बोला-भैय्या, ऊपर मत जाना, वहाँ बहुत भय है, लोग तुझे रौंद डालेंगे, मार डालेंगे। बीज सब सुनता रहा और चुपचाप ऊपर उठता रहा। धीरे-धीरे धरती की परत पारकर ऊपर निकल आया और बाहर का सौन्दर्य देखकर मुसकराने लगा। सूर्य देवता ने धूपस्नान कराया और पवनदेव ने पंखा डुलाया। वर्षा आयी और शीतल जल पिला गई। किसान आया और बिस्तर लगाकर चला गया। बीज बढ़ता ही गया, झूमता, लहलहाता, फूलता और फलता हुआ बीज एक दिन परिपक्व अवस्था तक जा पहुँचा। जब वह इस संसार से विदा हुआ तो अपने जैसे असंख्य बीज छोड़कर हँसता और आत्म-संतोष अनुभव कर विदा हो गया।

मिट्टी के अन्दर दबा बीज यह देखकर पछता रहा था- भय और संकीर्णता के कारण मैं जहाँ था, वहीं पड़ा रहा और मेरा भाई असंख्य गुनी समृद्धि पा गया।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

(गुरुपूर्णिमा पर्व १९८० पर दिया गया पावन संदेश)

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो! भाइयो!!

आज गुरुपूर्णिमा पर्व के महत्वपूर्ण पर्व पर महाकाल ने कुछ विशेष संदेश भेजा है। इनमें से पहला विशेष संदेश यह है कि युगसंधि के ये बीस साल इतने महत्वपूर्ण हैं, जो पीढ़ियों तक याद रहेंगे। इस समय महाकाल कुछ गलाई करने जा रहे हैं एवं कुछ ढलाई करने जा रहे हैं। बेकार की चीजों-बेकाम की चीजों की गलाई होने जा रही है। बेकार के आदमी एवं बेकार की परिस्थितियाँ सब गलने जा रही हैं। गल करके उनकी ढलाई होगी, नये पुर्जे बनने वाले हैं। नयी चीजें बनने वाली हैं। इन बीस वर्षों में बहुत ही जोरों के साथ गलाई एवं ढलाई का काम चलेगा। इतिहास इस बात को याद करेगा कि बीस वर्षों में सड़ी-गली व्यवस्थाएँ एवं व्यक्ति कैसे समाप्त हो गये और किस प्रकार नया प्रभात हुआ। अब नये व्यक्ति, नयी परम्पराएँ, नये चिन्तन उभर कर आयेंगे। अगले दिनों लोग यह सोचकर अचम्भा करेंगे कि इतने कम समय में इतना परिवर्तन कैसे हो गया। अगर इस समय को आप जान पायें, पहचान पायें तो हमारा ख्याल है कि आप सच्चे अर्थों में भाग्यवान बन सकते हैं।

हमें महाकाल ने संदेश भेजा है कि आप लोग इन बीस वर्षों में कीड़े-मकोड़ों के जीवन से ऊँचा उठकर जीवन जियें और कुछ काम करें। आपको औलाद की चिन्ता करते-करते करोड़ों वर्ष हो गये। धन की चिन्ता करते-करते करोड़ों वर्ष हो गये। अगर आप चाहें, तो और भी करोड़ों वर्ष, करोड़ों जन्म इसी प्रकार के कार्यों में खर्च कर सकते हैं। इसमें आपको कुछ मिलने वाला नहीं है। आप अगर हमारी बात मानें तो अपने कुछ विचार एवं चिन्तन इस समय बदल दें। इससे आपको लाभ ही लाभ मिलेगा। आपकी परेशानी दूर हो जाएँगी, अगर आप जमाखोरी करना बन्द कर दें। महाकाल ने दो कार्य बन्द करने को कहा है, सो आप अपनी औलाद एवं धन की बात करना अभी बन्द कर दें। हम आपको बतलाना चाहते हैं कि जार्ज वाशिंगटन ने अपने पुरुषार्थ के बल पर इज्जत एवं धन प्राप्त किया था। भगवान ने उन्हें जन्म से ही नहीं दिया था। आप भी ये चीजें प्राप्त कर सकते हैं। आप क्यों बंधनों में जकड़ कर मर रहे हैं। आप अपनी हथकड़ियों को ढीला कर दीजिए। महाकाल चाहते हैं कि आपका इन दिनों भौतिक चीजों से मन खट्टा हो जाए। जब इस प्रकार का मन आपका इस युगसंधि के समय बन जाएगा, तो हम विश्वास दिलाना चाहते हैं कि आपके पास समय की कमी नहीं रहेगी। आपके पास धन-दौलत की कमी नहीं रहेगी। आप जो भी काम चाहेंगे, उसे पूरा कर सकते हैं। पुरुषार्थ की कमी नहीं होगी।

अतः इस समय हमारा एक ही निवेदन है कि आप महाकाल के, प्रज्ञावतार के सहयोगी का रोल अदा करें। यह संदेश महाकाल ने-प्रज्ञावतार ने, हमारे गुरुदेव ने भेजा है। आप इस काम को कर पायेंगे, तो सारा संसार आपकी सराहना करेगा तथा आप अपने आप भी अपनी सराहना करेंगे। अगर आप इस प्रकार की हिम्मत कर सकेंगे, तो आपको ही लाभ होगा।

महाकाल का दूसरा संदेश यह है कि इस समय आपको भगवान का काम करना चाहिए। आप ऋषियों का-महात्माओं का इतिहास पढ़ लीजिए कि कोई भी व्यक्ति भगवान का केवल नाम लेकर ऊँचा नहीं उठा है। उसे भगवान का काम भी करना पड़ा है। आपको भी कुछ काम करना होगा, अगर आप भगवान का नाम लेकर अपने आपको बहकाना चाहते हैं, तो हम कुछ नहीं कर सकते हैं। अगर आप अपने आपको बहकाते रहे, भगवान को बहकाते रहे तो आप इसी प्रकार खाली हाथ रहेंगे, जैसे आज आप रह रहे हैं। यह आपके लिए खुली छूट है। निर्णय आपको करना है, कदम आपको ही बढ़ाना है। भगवान काम नहीं कर सकता है, क्योंकि वह अपने आप में निराकार है। आप भगवान का साकार रूप बनकर उनका काम करने का प्रयास करें। आदमी का सिर काटने के लिए तलवार की आवश्यकता पड़ती है, परन्तु अकेली तलवार से काम नहीं चल सकता है। पुरुषार्थ निराकार है तथा तलवार साकार है। इन दोनों के मिलने से ही काम बनता है। आप भी इसी प्रकार भगवान का काम करने के लिए आयें तथा प्रयत्न करें। इस युगसंधि की वेला में भगवान जो कि निराकार हैं, उन्हें साकार सहयोगी लोगों की आवश्यकता है।

प्राचीनकाल में भी भगवान का काम जाग्रत आत्माओं ने किया था। आगे जल्दी अवतार नहीं होने वाला है। इस समय सारे विश्व की व्यवस्था नये सिरे से बनने वाली है। उस समय आप कितने महान बनेंगे, इसका जवाब समय देगा। हनुमान ने कितनी उपासना की थी, कितनी कुण्डलिनियाँ जगायी थीं? यह हम नहीं कह सकते हैं, परन्तु उन्होंने भगवान का काम किया था। नल-नील ने, जामवन्त ने, अर्जुन ने कितनी पूजा एवं तीर्थयात्रा की थी ? पर उन्होंने भगवान के कंधे-से-कंधा मिलाकर काम किया था। इस कारण से भगवान ने भी उनके कार्यों में कंधे- से-कंधा मिलाया था। विभीषण एवं केवट ने भगवान का काम किया था, ये लोग घाटे में नहीं रहे। भगवान का काम करने वाले ही भगवान के वास्तविक भक्त होते हैं। भगवान का नाम लेने वाले भी भगवान के भक्त हो सकते हैं, परन्तु

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

उन्हें भगवान का काम भी करना पड़ेगा। इससे कम में बात बनने वाली नहीं है।

इस समय जो भगवान के भक्त हैं, जिन्हें इस संसार के प्रति दर्द है, उनके नाम यह विशेष संदेश भेजा गया है कि वे अपने व्यक्तिगत लाभ के कामों में कटौती करें एवं भगवान का काम करने के लिए आगे आयें। भगवान के काम के लिए, सहायता के लिए आगे आयें। यही है हमारा गुरुपूर्णिमा का संदेश, यही है महाकाल का संदेश। अगर आप सुन सकेंगे, तो आपके लिए बहुत ही लाभदायक होगा। आप सुनेंगे तो आपको भी लाभ मिलेगा, लेकिन अगर आप इस समय चादर ओढ़कर सोये रहेंगे, तो आपको घाटा-ही-घाटा होगा। अगर इस समय भी आप अपना मतलब सिद्ध करते रहे और मालदार बनते रहे, तो पीछे आपको बहुत पछताना पड़ेगा तथा आप हाथ मलते रह जाएँगे। गाँधी जी के स्वतन्त्रता आन्दोलन में जो आदमी शामिल हो गये थे, वे आज स्वतन्त्रता सेनानी हैं और पेंशन पा रहे हैं, मिनिस्टर हैं, राज्यपाल हैं। पर जो लोग भाग नहीं ले सके आज वे लोग पछता रहे हैं कि काश ! हम भी कुछ काम कर लेते तो आज नफे में होते। आपकी इन दिनों की चालाकी आपको हजारों वर्षों तक दुःख देती रहेगी तथा आप परेशान रहेंगे। अतः आप अभी से अपने बीस वर्षों की कार्यपद्धति बना लें तथा भावी योजना का निर्धारण कर लें।

इस समय आपको तीन काम करने हैं। यह युगसंधि का बीजारोपण वर्ष है। इसमें बीज बोने हैं, ताकि फसल हम प्राप्त कर सकें। बीज बोने के लिए हमें तीन काम करने होंगे। पहला काम वातावरण के परिष्कार तथा आपका आत्मबल बढ़ाने के लिए है। इन दोनों उद्देश्यों के लिए आपको युगसंधि महापुरश्चरण करना चाहिए। यह सामूहिक तप है। आपके अकेले का तप इस काम के लिए सार्थक नहीं हो सकता है। अतः महाकाल ने इस समय विशेष शक्ति देने का निश्चय किया है। यह प्राणसंचार की प्रक्रिया है एवं दिव्य-दृष्टि जागरण की प्रक्रिया है। आप नैष्ठिक तपस्या कीजिये, देवता आपको अनुदान देंगे। यह ऐसा कार्य है, जो हर किसी को करना चाहिए। हम में से हर किसी को जो उपासना में विश्वास करते हैं, उन्हें यह तपस्या अवश्य करनी चाहिए। आपकी उपासना इसलिए असफल रही है कि उसमें निष्ठा का समावेश नहीं हुआ है, श्रद्धा का समावेश नहीं हुआ है। आपने कामनापूर्ति के लिए उपासना की, इसलिए वह सारा-का-सारा प्रयास निष्फल चला गया। आप तपस्यायुक्त उपासना कीजिए, फिर देखिये उसमें चमत्कार होता है या नहीं।

मित्रों, आप युगसंधि महापुरश्चरण अवश्य करें। इसमें तपस्या भी शामिल है, निष्ठा भी शामिल है और महाकाल के अनुदान भी शामिल हैं। यह लाभ उठाने का मौका न कभी मिला है और न बीस साल बाद कभी मिलने वाला है। ऐसा आश्वासन किसी ने नहीं दिया होगा कि आपका अनुष्ठान खण्डित हो जाएगा अर्थात् अधूरा रह जाएगा, तो हम उसे पूरा करेंगे। आपकी मृत्यु हो जाने पर भी हम उसे पूरा करेंगे। आप अगर बीच में भी हार जाएँ या थक जाएँ, तो हम आपके बदले का भार उठा लेंगे। यह कितना बड़ा आश्वासन है। आप इतने बड़े आश्वासनयुक्त उपासना को अवश्य प्रारम्भ कर दें। हमारा यह कहना है कि कोई भी प्रज्ञापरिजन ऐसा न हो जो इस नियमबद्ध उपासना को प्रारम्भ न करे। यह वातावरण के संशोधन तथा साधकों के आत्मबल के अभिवर्द्धन हेतु प्रारम्भ किया गया है। इससे आप सुनिश्चित रूप से जुड़ें एवं लाभ प्राप्त करें।

दूसरा वाला भगवान का कार्य है- गायत्री चरणपीठों की स्थापना। तब भगवान का कार्य करने के लिए कुछ व्यक्ति आ गये थे- मसलन हनुमान। हनुमान के अन्दर पुरुषार्थ भी था, साहस और साधन भी था तथा उनके अन्दर भावना भी थी। अब ऐसे आदमियों का मिलना भी मुश्किल है। आपको ऐसी परिस्थिति में क्या करना होगा ? आपको एक समानान्तर हनुमान अपने क्षेत्र में खड़ा करना होगा, जिसका कलेवर भी हो तथा जिसमें प्राण भी हो। यह हनुमान क्या है ? यह है गायत्री चरण-पीठों की स्थापना। ये चरणपीठें बन रही हैं और आपको बनानी चाहिए। आपकी जहाँ भी गायत्री परिवार की शाखाएँ हैं, वहाँ गायत्री चरणपीठें बना देनी चाहिए। गायत्री चरणपीठों के नये नक्शे बना दिये गये हैं।

आपको ऐसी चरणपीठें बनानी चाहिए, जो कम लागत की होते हुए भी चार बातों को पूरा करने में समर्थ हो सकें। वहाँ एक गायत्री परिवार के कार्यकर्ता का निवास अवश्य होना चाहिए। वे मन्दिर हो सकते हैं, परन्तु मात्र उसी से जन-जागरण का काम नहीं हो सकता है। अतः वहाँ पर भगवान के काम को करने वाला भी उपस्थित होना चाहिए, जो गतिविधियाँ चला सकें। अगर कार्यकर्ता निवास नहीं होगा, तो वह सुबह घंटी बजाकर घर चला जाएगा। ऐसे वातावरण में काम नहीं हो सकता है। हम ऐसे घण्टी बजाने वाले मन्दिर बनाकर क्या करेंगे। इसके बाद उसमें एक हॉल होना चाहिए। इस हॉल के माध्यम से कई गतिविधियाँ चलेंगी। उसमें सत्संग होगा। दिन में पाठशाला भी चल सकेगी। रात्रि में उसमें कथा का आयोजन भी चल सकता है। प्रौढ़ शिक्षा का काम भी वहाँ चल सकता है। अतः इस चरणपीठ में हमने १६ x२४' का एक हॉल भी जोड़ दिया है। अगर हॉल न हो तो काम पूरा नहीं होगा, भले यह खपरैल का ही क्यों न हो, क्योंकि नये युग का संदेश देने के लिए, साहित्य घर-घर देने के लिए, वापस लेने के लिए एक स्थान होना चाहिए। हम अगले दिनों अपने मिशन के द्वारा इस प्रकार एक महत्वपूर्ण कदम

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

उठाने वाले हैं, जिसके द्वारा काम हो सके। इसके बिना काम पूरा हो ही नहीं सकेगा। अत: उसमें देवालय भी होना चाहिए तथा पुस्तकालय भी होना चाहिए। यह प्रज्ञावतार का केन्द्र है। अत: इसमें चार चीजें अवश्य होनी चाहिए, इसके बिना कोई उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता है। वे हैं- (१) मन्दिर, (२) पुस्तकालय, (३)हॉल, (४) कार्यकर्ता निवास।

आप में से हर शाखा के परिजनों का यह प्रयास होना चाहिए कि वे अपने ग्राम में एक चरणपीठ की स्थापना कर लें। अगर कोई चंदा नहीं देता है, तो कोई बात नहीं। आप यह बात नहीं कहें, वरन यह सोचें कि आपके कितने बच्चे हैं ? हर एक की शादी में आपने दस हजार रुपये खर्च किये हैं, तो इस बच्चे अर्थात चरणपीठ के लिए भी छह हजार खर्च करें। इसके बिना कृपणता के इस युग में युगनिर्माण नहीं हो सकता है। आप अपनी घड़ी बेचकर इस काम में लगाइये। आप अपनी कृपणता को छोड़ें एवं भगवान के सहयोगी बनें। आप भगवान के निमित्त अपना समय देना शुरू कीजिए, फिर देखिये आपको सहयोग देने के लिए दूसरे आदमी आपके पास आते हैं या नहीं। आप पहले अपना लगाइये तो सही, फिर देखिये दूसरा आदमी किस प्रकार देता है। आप अपना लगाना नहीं चाहते हैं और दूसरों से माँगते हैं। इससे काम नहीं बनेगा। आगे आपको आना पड़ेगा। त्याग की कसौटी पर आपको स्वयं को खरा सिद्ध करना पड़ेगा। अगर आप इस प्रकार कर सकेंगे, तो ही काम बनेगा। छह हजार रुपये कुछ भी नहीं हैं। अगर यह मान लें कि हमें अपनी बेटी, बहिन की शादी करनी है, तो हर व्यक्ति अपनी जेब से निकाल कर दे देता है। आप अगर हिम्मत करेंगे और देंगे, तो आपको देखकर दूसरा आदमी भी अनायास ही देगा। आप अगर देने में आगे आयेंगे तो न जाने कितने लोग आपको सहयोग करने के लिए आमादा हो जाएँगे। हर गाँव में चरणपीठ बनना चाहिए, यह हमारा अनुरोध है आप से।

तीसरे काम के बारे में हम बात बतलाकर अपनी बात समाप्त करेंगे। हमें युगपरिवर्तन की बातों को बतलाने के लिए, युगसंदेश को घर-घर पहुँचाने के लिए, प्रज्ञावतार के अलख को घर-घर पहुँचाने के लिए दो प्रकार के व्यक्तियों की आवश्यकता है। हमें इस काम के लिए नम्बर एक-संत तथा नम्बर दो-ब्राह्मणों की आवश्यकता है। ऐसे अनेक आदमी अन्य कार्यों के लिए मिल सकते हैं, परन्तु हमें तो संत चाहिए, हमें तो ब्राह्मण चाहिए।

संत से क्या मतलब है ? संत का मतलब है, पुरुषार्थी, त्यागी और तपस्वी। आपके भीतर तो दो ही चीजें जगी हुई हैं। कौन-कौन-सी चीजें जगी हुई हैं ? आपके भीतर एक चाण्डाल जगा हुआ है। वह कामवासना की बातें करता है, बेकार की बातें करता है। यह चाण्डाल बिल्कुल बेकार है। यही माद्दा आपका जगा है, जो हमेशा आपको परेशान करता रहता है। एक इंच भी आपको आगे बढ़ने नहीं देता है। दूसरी चीज एक और जगी हुई है जिसका नाम बनिया है। इसका मतलब यह है कि वह व्यक्ति किसी भी बिरादरी में पैदा हुआ हो, उसे हर समय पैसा, हर समय दौलत ही दिखायी पड़ती है। हर समय लालच और हर समय लोभ ही घेरे रहता है। यह बनियापन आपका जगा हुआ है। शूद्र आपका जगा हुआ है, परन्तु आपके अन्दर दो चीजें बिल्कुल सोयी हुई हैं, पहला 'ब्राह्मण' और दूसरा- 'संत'। इनको पुरुषार्थ, त्याग, साहस जो भी आप नाम चाहें, दे सकते हैं। यह दोनों आपके अन्दर सो गये हैं, जिसके कारण आप भगवान का कार्य करने में असमर्थ हैं।

मित्रो , हमें आपके भीतर के संत और ब्राह्मण को जगाना है। हम बाहर के ब्राह्मण से क्या बात करेंगे? बाहर के संतों से हम क्या कहेंगे, बाहर संत कहाँ है ? उनका नाम लेने से हमारा दिमाग खराब हो जाता है। आप उन जाबाजी से हमें कहने को कहते हैं, जिनने कभी कुछ नहीं किया है और न आगे करेंगे। आपके भीतर जो संत सोया है, आप उसे जगायें। संत किसे कहते हैं ? जिसने अपने लोभ एवं मोह को समाप्त कर दिया है। आप देखेंगे कि इस गायत्री परिवार के लोगों में से कितने संत निकलते हुए चले आयेंगे। ऐसे व्यक्ति आपको दिखायी देंगे जिनकी जिम्मेदारी कम हो गयी है या जो अपने घर को देखते हुए भी मिशन का काम करते हैं, वे सब संत हैं। महाकाल की प्रार्थना है कि आप संत की भूमिका निभायें एवं परिव्राजक के तरीके से जन-जन तक महाकाल के संदेश को पहुँचाने का प्रयास करें। भगवान का काम करने में अपना समय लगा दें।

उन लोगों का नाम संत है, जो बादलों की तरह से घूमते हैं और भगवान का संदेश हर जगह पहुँचाते हैं तथा हर आदमी के भीतर जीवट पैदा करते हैं। आप लोगों में से हर आदमी के भीतर ब्राह्मण छिपा पड़ा है। ब्राह्मण तो वे हैं, जो काम तो करना चाहते हैं, परन्तु घर की जिम्मेदारियाँ एवं अन्य समस्याओं के कारण कुछ कर नहीं पाते हैं। हमने ऐसे ब्राह्मणों का आह्वान किया है कि वे निकलकर बाहर आयें। संत वे हैं, जो बिना लिए काम करते हैं। ब्राह्मणों को लेना पड़ता है। हम उन्हें देने को तैयार हैं, वे घर से निकल कर तो आयें। हम उनके गुजारे का प्रबन्ध कर सकते हैं। अगर उन्होंने बड़ी गृहस्थी इकट्ठी कर रखी है, तो बात अलग है। अगर बहुत बड़ी हविश बना रखी है तो बात अलग है अन्यथा अगर वे पेट भरना चाहते हैं और तन ढँकना चाहते हैं, तो गायत्री परिवार के सदस्यों को ब्राह्मणोचित खर्च देने को हम तैयार हैं।

आप जानते हैं कि प्राचीनकाल में ब्राह्मणों का खर्च भिक्षाटन से पूरा होता था। हमने भी इस प्रकार का पात्र बना रखा है। गायत्री परिवार के घरों में

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

ज्ञानघट-धर्मघट के रूप में स्थापित कर दिया है। उनसे कह दिया है कि आप नित्य इसमें दस पैसा डालें। हम किसी भी गायत्री परिवार के व्यक्ति को बिना ज्ञानघट के नहीं रहने देंगे। हम किसी को भी मुट्ठी भर अनाज दिये बिना नहीं रहने देंगे। यह ब्राह्मणों की जीविका के लिए हमें चाहिए। ब्राह्मणों के पेट भरने के लिए, उनके तन ढँकने के लिए आपके ब्रह्मभोज का पैसा चाहिए। आप दस पैसे से इनकार न करें। आप हमारे भिक्षा के पात्रों को लात मत मारिये। ये ब्राह्मणों की आवश्यकता है। ऐसे कंजूस मत बनिये।

इस पैसे का हम क्या करेंगे ? इन पैसों को हम इमारत बनाने में, हवन कराने में नहीं खर्च करेंगे। यह ज्ञानघट का पैसा विशुद्ध रूप से ब्राह्मणों के लिए खर्च होगा। ब्रह्मभोज का अर्थ है- हमें कार्यकर्ताओं की आवश्यकता पड़ेगी, हम इसके द्वारा उनकी आवश्यकताओं को पूरा करेंगे। हम चाहते हैं कि हमारी जितनी भी शाखाएँ हैं, उनमें एक चरणपीठ अवश्य बननी चाहिए। उसमें हमें दो कार्यकर्ता चाहिए। उनमें से एक आदमी साइकिल से सारे-के-सारे आस-पास के क्षेत्रों में भ्रमण करके विचार क्रान्ति का काम चलाए। दूसरा आदमी यहाँ मन्दिर में रहकर सारी गतिविधियों का संचालन करेगा। इस प्रकार हमें हजारों आदमी चाहिए। हमें उनके लिए पेट भरने एवं तन ढँकने के लिए पैसा चाहिए। अगर उनके छोटे बच्चे हैं, तो उन्हें फाँसी कैसे लगा देंगे। उसको तो भोजन देना ही पड़ेगा। हाँ, आगे वे बच्चा पैदा न करें, यह बात ठीक है, परन्तु अभी जो हैं, उनकी व्यवस्था तो बनानी ही पड़ेगी। उसकी पत्नी को भी देना होगा। अतः आप लोगों में से जिस किसी में भी संत की प्रवृत्ति, ब्राह्मण की प्रवृत्ति हो, वह जागें और आगे आयें।

हमें संत-ब्राह्मणों को जगाना है तथा इन लोगों के लिए ब्रह्मभोज की व्यवस्था बनानी है। यह सारा-का-सारा काम आपको करना है। आप इस प्रकार के व्यक्तियों की तलाश करें। अगर आपका कुछ प्रभाव है या दबाव है, तो उसका भी उपयोग करें। आप जब विवाह-शादी में उसका उपयोग कर सकते हैं, चुनाव में खड़े होते हैं, तो उपयोग करते हैं, तो आपको इस कार्य के लिए भी अपने प्रभाव या दबाव का उपयोग करना चाहिए। अगर आपके पास ज्यादा है, तो ज्यादा देने का प्रयास कीजिए। हम इतने आदमी की व्यवस्था कैसे करेंगे ? दस पैसा तो शुरुआत है। अगर सम्भव हो तो आप एक दिन का वेतन दीजिए। अगर कुछ संग्रह है तो उसे हमें दीजिए। अगर बेकार की चीजें हैं, तो उन्हें हमें दीजिए। आपकी चीजों की भगवान को आवश्यकता है। आप जो करेंगे, उसका लाभ-मुनाफा आपको अवश्य ही मिलेगा। अगर आप नहीं कर पायेंगे, अपना दिल चौड़ा नहीं कर पायेंगे, तो आप घाटे में रहेंगे। इस समय दिल चौड़ा करने का समय है, उदारता का समय है। यह बीजारोपण का वर्ष है। यह लाभ उठाने का वर्ष है।

यही इस गुरुपूर्णिमा पर महाकाल का संदेश है, जो हमारे जैसे टेपरिकार्डर के माध्यम से आपको सुनाया जा रहा है। हमें आशा एवं विश्वास है कि आप साहस भरा कदम उठाएँगे और भगवान का काम करने में पीछे नहीं रहेंगे।

ॐ शांतिः।

गुजरात में आया भीषण चक्रवात भावी विभीषिकाओं की पूर्व सूचना लेकर आया है

विगत दिनों ९, १०,११ जून को गुजरात में आया भीषण चक्रवाती तूफान एक विनाशलीला रचाता चला गया। अनेकों जानें गयीं- काण्डला व नौलखी बंदरगाहों सहित जामनगर, गाँधीधाम, भुज-कच्छ आदि क्षेत्रों में अरबों का नुकसान कर गया। उत्तरकाशी व लटूर में आए भूकम्पों के बाद दैवी प्रकोपों की शृंखला बढ़ती चली जा रही है। प्रतिवर्ष कोई नई विपत्ति हर महाद्वीप में बढ़ती ही जाती दीख पड़ती है। अमेरिका को जहाँ एलनीनो के कारण प्रतिकूल मौसम का सामना करना पड़ा- वहाँ भारतीय उपमहाद्वीप में इस सदी की भीषणतम गर्मी देखी गयी है। सौरकलंकों-धब्बों की संख्या क्रमशः बढ़ती जा रही है। उड़ीसा, बंगाल क्षेत्र में पिछले दिनों आए तूफान, आंध्र में समुद्री तूफान, उत्तरप्रदेश, बिहार में ओलों- बर्फ की सिल्लियों की बारिश तथा लगभग कहर बरपाती रही शीतऋतु यही बताती है कि अभी बहुत कुछ आगामी तीन वर्षों में हम सबको झेलना है।

गुजरात के तूफान-क्षेत्र का दौरा करके आयी हमारी केन्द्रीय तंत्र की टोली के विवरण को जानकर तो लगता है मानो उस चक्रवात के रूप में साक्षात यमराज पधारे थे। तात्कालिक राहत के जो भी कुछ उपचारक्रम चले हों- अपर्याप्त हैं। गायत्री परिवार दैवी-आपदा राहत-कोष की स्थापना कर ऐसे क्षेत्रों में जहाँ सब कुछ उजड़ गया है- जहाँ कोई भी जनतंत्र का पदाधिकारी नहीं पहुँच पाया है- पीड़ानिवारण की सेवा कर उन्हें अपने पैरों पर खड़ा करने का प्रयास करने को संकल्पित हुआ है। प्रारंभ गुजरात से हुआ है, किंतु सारे भारतवर्ष के लिए इसका स्वरूप अगले दिनों उभर कर सामने आ सकेगा। जो चाहते हों कि पीड़ितों- दुखीजनों की आह कुछ कम हो सके- वे इसमें सहयोग देने हेतु शांतिकुंज, हरिद्वार से पत्राचार कर सकते हैं।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

८-४-७४ कुंभ के अवसर पर दिए गए प्रवचन (जून, १९९८) की दूसरी किश्त

मित्रो, हम आपको नेता बनाकर नहीं भेज रहे हैं। हम तो आपको कार्यकर्त्ता और ज्ञानी बनाकर भेज रहे हैं वालन्टियर की तरह। जहाँ कहीं भी जाएँ और जो कोई भी कार्य करें, वालन्टियर के रूप में करें। आप उस तरीके से करना, जिस तरीके से हाथ से काम करना सिखाया जाता है। सर्जन अपने मैटरनटरी कॉलेज के स्टूडेन्टों को अपने आप करके स्वयं दिखाता है और यह कहता है कि तुमको पेट का ऑपरेशन करना हो तो देख लो एक बार फिर, भूलना मत। तुम्हारा मुँह इधर होगा तो ऑपरेशन करना नहीं आएगा। देखो हम पेट को चीरकर दिखाते हैं- ये देखो-ये निकाल दिया और ये सिल दिया और ये बाँध दिया। देखो फिर ध्यान रखना और ऐसे मत करना कि पेट का ऑपरेशन किसी का करना पड़े और कहीं का वाला कहीं कर दो और कहीं का वाला कहीं कर दो। आपको हर काम स्वयं करने के लिए स्वयंसेवी कार्यकर्त्ता के रूप में जाना है। आपको किसी का मार्गदर्शक होकर के या किसी का गुरु हो करके या किसी का नेता हो करके नहीं जाना है। दीवारों पर जब वाक्य लिखने की जरूरत पड़े तो आप स्वयं डिब्बा लेना और कहना चल भाई मोहन, अरे तूने इस बात के लिए मना किया, अब मैं लिखकर दिखाता हूँ कि किस तरह से अच्छे तरीके से वाक्य लिखा जाता है, चल तो सही मेरे साथ। अपने साथ आप ले करके चले जाएँगे। अरे वानप्रस्थी जी साहब! आप वहाँ से आए हैं, आप तो गुरुजी वहाँ बैठो, हम बच्चे लिख लेंगे वाक्य। बेटा, बच्चे लिख लेंगे, तो हम किसलिए आए हैं। चल जरा। हमारे साथ-साथ चल देख हम साफ-साफ लिखकर दिखाते हैं। जब आप आगे-आगे चलेंगे, तो ढेरों आदमी आपके साथ चलेंगे, आपकी लिखने वाली बात, अमुक बात और अमुक बात, आसानी से होती हुई चली जाएगी।

परन्तु जब आप पीछे जा बैठेंगे तब, तब लोग हमसे शिकायत करेंगे और कहेंगे कि गुरुजी ने ऐसे लोगों को हमारे पास भेज दिया। चलते तो हैं ही नहीं, सुनाते तो हैं ही नहीं, कुछ करते तो हैं ही नहीं। हुकुम चलाना भर आता है। बेटे हमने उनके ऊपर हुकुम चलाने के लिए आपको नहीं भेजा है। हमने तो आपको मार्गदर्शन करने के लिए भेजा है। वालन्टियर के रूप में भेजा और सक्रिय कार्यकर्त्ता के रूप में भेजा है। जो बात आपको नहीं आती है, वह काम आपको करने चाहिए। उनके कंधे से कंधा मिलाकर चलना, आगे-आगे बढ़ना चाहिए। जहाँ ये समस्या है लोगों के लिए कि जनता कहीं भी नहीं आती है, यह आप ध्यान रखना। जनता बहुत खीझी हुई है और बहुत झल्लाई हुई है। उसने ढेरों-के-ढेरों व्याख्यान सुने हैं और व्याख्यान सुनने के बाद में यह भी देखा है कि जो आदमी व्याख्यान दिया करते हैं, रामायण पढ़ा करते हैं, गीता पढ़ा करते हैं, कैसे-कैसे वाहियात आदमी हैं और कैसे बेअकल आदमी हैं।

व्याख्यान देने वालों की जिन्दगी, उनके स्वरूप और उनके क्रियाकलाप का फर्क, आवाज का फर्क लोगों ने जाना है। लोगों ने जाना है कि जब सन्त का बाना ओढ़ लेता है, तो क्या कहता है और जब रामायण पढ़ता है तो कैसे-कैसे उपदेश दिया करता है और जब मकान पर आ जाता है, घर पर आ जाता है, तो उसके क्रियाकलाप क्या होते हैं? लोगों ने जान लिया है और समझ लिया है कि लेक्चर झाड़ना एक धंधा बन गया है। उसमें कोई दम नहीं और कोई अकल नहीं।

मित्रो, क्या करना पड़ेगा? आपको वहाँ जाने के बाद में सक्रिय कार्यकर्त्ता के रूप में, एक मार्गदर्शक के रूप में आपको रहना पड़ेगा। जनता अभी आपके पास नहीं आने वाली। वह सहज रूप से नहीं आयेगी। जनता को निमंत्रण देने के लिए आपको स्वयं ही खड़ा होना पड़ेगा। जनता अब नहीं आयेगी, आप ध्यान रखना। जनता बहुत झल्लाई हुई है। जनता पर बहुत रोष छाया हुआ है। सन्तों के प्रति अविश्वास, नेताओं के प्रति अविश्वास, वक्ताओं के प्रति अविश्वास, सभा-संस्था वालों के प्रति अविश्वास, हरेक के प्रति अविश्वास हर आदमी को है। इस जमाने में जब हरेक के प्रति अविश्वास छाया हुआ है। बड़े-बड़े मिनिस्टर आते हैं, तो दो सौ आदमी भी नहीं आते। कान में जाकर के डी.ओ. के डालना पड़ता है और बोर्ड का अध्यक्ष मास्टरों को बुला करके कहता है कि अरे भाई कल की छुट्टी है, कल के लिए लीजिए 'रेनी-डे' लिखे देते हैं- वर्षा का दिन और कल सब स्कूलों की छुट्टी है। सब बच्चों को और सब मास्टर लोगों को लेकर के वहाँ पर विक्टोरिया पार्क में सब जने ४ बजे तक इकट्ठा हो जाना, ताकि उनको ये मालूम पड़े कि जनता बहुत आई है।

उसमें से कौन होता है? किसमें? व्याख्यान करने वालों में। व्याख्यान करने वालों में तलाश करना कि जब कोई नेता आता है तो सुनने वाले कौन होते हैं? आप एक-एक की पहचान करना कि जो व्याख्यान सुनने आये हैं, इसमें जनता वाले कितने थे और स्कूल वाले कितने थे। आपको ये मालूम पड़ेगा कि सफेद कुर्त्ता पहने हुए आगे वाले तो सिपाही बैठे हैं। जो वर्दी को तो उतार आए हैं और मामूली कपड़ा, मामूली पैण्टकमीज पहने हुए हैं। आगे तो ये लोग बैठे हुए हैं। ताली बजाने वालों में कौन बैठे हुए हैं। मास्टर लोग बैठे हुए हैं, पुलिस के सिपाही बैठे हुए हैं। ताली बजाने वालों में और कौन बैठे हुए हैं? ये बैठे हैं और वो बैठे हैं। जनता को आप तलाश करेंगे तो मुश्किल से पचास आदमी आपको नहीं मिलेंगे। क्यों नहीं

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

मिलते हैं ? गाँधी जी की सभा में लोग आते थे और नेहरू की सभा में जाते थे; लेकिन अब सभा में लोग क्यों नहीं आते, क्योंकि नफरत छा गई है ? नफरत इसलिए छा गई है कि सिखाने वाले और कहने वाले में अब जमीन-आसमान का फर्क है। इसलिए इनकी बात नहीं सुनेंगे, जरूरी हुआ तो अखबार में क्यों नहीं पढ़ लेंगे। इन्हें सुनने में हम अपना टाइम क्यों खराब करेंगे ? धक्के क्यों खाएँगे ? इसलिए यह भी एक प्रश्न आपको हल करना पड़ेगा कि जिन बेचारों ने अपना आयोजन करके रखा है- पन्द्रह दिन का और दस दिन का, वहाँ किस तरह से जनता को बुलाया जाए ताकि हमारे विचार और हमारी प्रेरणा, हमारे प्रकाश को फैलाने के लिए वे इतना महत्त्व दें, जिसके लिए मेहनत करने भेज रहे हैं आपको। जनता को बुलाने के लिए आपको ही आगे-आगे बढ़ना होगा।

मित्रो, शुरू के ही दिन में मैंने आपको यह सब बता दिया था। जनता को अब हम व्यक्तिगत रूप से निमंत्रण दे सकते हैं। पीले चावल ले करके जाना। घर-घर में जाना निमंत्रण देने के लिए और कहना कि मथुरा वाले गुरुजी को आप जानते हैं क्या ? गुरुजी को, हाँ जानते हैं, तो उन्होंने एक बात कह करके भेजी है, आपके लिए कुछ खास संदेश भेजा है। आपके लिए कुछ अलग शिक्षाएँ भेजी हैं। कुछ अलग से संदेश भेजा है। जिसे आपको सुनने के लिए जरूर आना पड़ेगा शाम को। इस तरह से एक घर में, दो घर में, तीन घर में आप स्वयं जाना और वहाँ के कार्यकर्त्ताओं को ले करके जाना। टोलियाँ बनाना और निमंत्रण देने के लिए जाना- निमंत्रण देने के लिए व्यक्तिगत सम्पर्क बनाने वाली बात करनी चाहिए।

एक बात और भी है कि इश्तहारों से आप किसी को नहीं बुला सकते और लाउडस्पीकर पर तो सिनेमा वाले और बीड़ी वाले चिल्लाते हैं। लाउडस्पीकर आप भी लेकर चले जाइए और कहिए- प्यारे भाइयो, शाम को साढ़े छह बजे आना, वानप्रस्थी लोग शान्तिकुंज से आये हैं, प्रवचन करेंगे। तब आप में और बीड़ी वालों में कोई फर्क नहीं होगा। सभी बीड़ी वाले चिल्लाते हैं कि सत्ताईस नम्बर की बीड़ी भाइयो, पिया करो, सत्ताईस नम्बर पिया करो। फिल्मस्तानी भाई और बीड़ी वाले भाई और गुरुजी के वानप्रस्थियों में फिर क्या फर्क रह गया है ? माइक, इसकी कोई कीमत नहीं, कहाँ कोई इसे सुनने को आते हैं, कान बन्द कर लेता है। बोल-बोलकर माँगकर चला जाएगा। इस माइक की बात कोई नहीं सुनता। इशारों की बात, इश्तहारों की भी बात नहीं सुनी लोगों ने, पर जब हमको जनता को बुलाना है तो उसको बुलाने के लिए स्वयं ही आपको निकलना पड़ेगा, कार्यकर्त्ताओं को लेकर के अपने साथ-साथ। कार्यकर्त्ता को साथ लेकर आपको चलना पड़ेगा।

हमारी जनता को निमंत्रित करने की शैली अलग है। कार्यकर्त्ता के रूप में जब आप गायत्री तपोभूमि, मथुरा जाएँगे तो आपमें से हर आदमी के हाथ में एक शंख थमा दिया जाएगा। मान लीजिए, आप साठ आदमी हैं और उनमें से चालीस व्यक्ति ऐसे हैं जिन्हें कहाँ जाना है ? शाखाओं में जाना है तो चालीसों के हाथ में शंख थमा दिया जाएगा और शंख बजाते हुए जब आप मथुरा शहर के बाजार में निकलेंगे तो देखना ताँगे वाले खड़े हो जाएँगे, रिक्शे वाले भी खड़े हो जाएँगे और कहेंगे कि अरे देखो तो सही, ये कौन आ गया ? चालीस शंख बजाते हुए और पीले कपड़े पहने हुए, झंडा लिए हुए और एक नए बाबाजी के रूप में, एक नये क्रान्तिकारी के रूप में, एक नये व्याख्यानदाता के रूप में जब आप जाएँगे तो क्रान्ति मच जाएगी। बैंडबाजे बजते हुए सबने देखे हैं, पर चालीस शंख एक साथ बजते हुए किसी ने नहीं देखे आज तक। चालीस शंख कैसे बजते हैं ? आपको मालूम नहीं। चालीस शंखों की आवाज जब एक साथ बजती है तो कान कैसे काँपते हैं, नवीनता कैसे मालूम पड़ती है ? यह शैली आपको गायत्री तपोभूमि सिखाएगा। जब आप जहाँ कहीं भी जाएँ तो स्थानीय कार्यकर्त्ता को ले करके चलना। छोटे-से गाँव में भी आपको सम्मेलन करना है, सभा करनी है, ये शैली तो आपको अख्तियार करनी ही पड़ेगी। यूँ मत कहना कि मैं बैठा हूँ और तू चला जा। सारी जनता को तो बुलाया नहीं, हमें क्यों बुला लिया। हमारे लिए क्यों सभा की। हम तो बेकार आ गए। अरे बेकार क्यों आ गए बाबा, तुम्हें तो काम सिखाने के लिए भेजा है, चलो हमारे साथ। आगे-आगे शंख ले करके चलना आप गाँव के मंदिरों से, सब पंडितों के यहाँ से, सत्यनारायण कथा कहने वालों के यहाँ से, सभी संतों को जमा कर लेना और जितने भी कार्यकर्त्ता हैं सबको लेकर के ही शंख बजाते हुए चलना। घंटियाँ बजाते हुए चलना।

मित्रो, आपको ही चलना पड़ेगा, जनता को आमंत्रित करना पड़ेगा, यह सब आपको ही करना पड़ेगा। आप ही नाचे, आप ही गावे, मनवा ताल बजावे, तीन-चार लोग गा रहे थे। जब मैंने सुना तो बहुत अच्छा लगा। आपको क्या करना पड़ेगा ? स्टेज पर व्याख्यान भी आपको देना पड़ेगा और दीवारों पर वाक्य भी आपको लिखने पड़ेंगे। जनता को निमंत्रित करने से लेकर आपको आगे-आगे भी चलना पड़ेगा। निमंत्रण देने जाएँगे तो भी आपको आगे-आगे चलना पड़ेगा। हमारे प्रातःकालीन शिविर बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। इसमें हमारे कार्यकर्त्ता, जिनकी कि लाखों की संख्या है, बना करके तैयार किये गये हैं। अब उनमें प्रेरणा भरना बाकी है, हवा भरना बाकी है। गुब्बारे बने हुए रखे हैं। हवा भरनी है, ये साइकिल के ट्यूब भी तो बने रखे हैं। एक-एक खराब हो गया है, जो इनके बाह्य ट्यूब हैं, वो लीक करने लगे हैं। ये डनलप के ट्यूब हैं। ये अमुक के ट्यूब हैं। ये बढ़िया वाले ट्यूब हैं। खराबी कहीं भी नहीं आयेगी। हवा भरने वाला नहीं आया जिसकी वजह से इनका उत्साह ठंडा पड़ गया और इनका जोश ठंडा पड़ गया। आपको इन लोगों में

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

हवा भरनी पड़ेगी और जोश भरना पड़ेगा। प्रातःकालीन वाले, शाम को तो यह भी होता है कि संगीत बजता है और गाना बजता है। शाम को तो वैसे भी तमाशबीन लोग रहते हैं, प्रातःकालीन शिविर वाले जो आपके हैं, उसमें संभव है कि प्राणवान लोग न आएँ। उसके लिए आपको स्वयं उनके पास तक जाना पड़ेगा। जहाँ कहीं भी, जिस भी शाखा में आप जाएँगे, वहाँ पर आपको सौ-पचास आदमी जरूर ऐसे मिलेंगे, जिनके पास अखण्ड-ज्योति पत्रिका जाती होगी और युग-निर्माण पत्रिका जाती होगी। ध्यान रखना है कि ये शिविर और शाखा वहाँ हों, जहाँ पर कम-से-कम सौ पाठक ऐसे हों जो हमारी अखण्ड-ज्योति के जरूर आयें। सौ पाठक वहाँ होंगे जहाँ हमारी पत्रिका १०० की तादाद में नहीं भेजी जाती होगी। वहाँ तो हमने शिविर की व्यवस्था ही नहीं की है। वहाँ तो हमने मंजूरी ही नहीं दी है और ये देखा है कि यहाँ पर पहले से भी स्टेज है क्या? पहले से भी जानकारी है क्या? ये लोग शिविर चला सकते हैं क्या? आप उन सौ आदमियों की लिस्ट माँगना कार्यकर्त्ताओं से या फिर आप गायत्री तपोभूमि चले जाना और पता करना कि कौन-कौन आदमी हैं, जो हमारी अखण्ड-ज्योति मँगाते हैं, युग-निर्माण मँगाते हैं। आप उन सबके पास बजाय इसके कि तू जाना-तू जाना आप स्वयं ही जाना वहाँ के आदमियों को लेकर के और लिस्ट पर निशान लगाते चले जाना। जिस दिन से आपका आयोजन होगा उससे तीन दिन पहले हम आपको भेजते हैं। पन्द्रह दिन के आयोजन रखते हैं। दस दिन के आयोजन हैं, पाँच दिन आपको फालतू के मिलते हैं। हमने आपको तैयारी के लिए भेजा है, जिससे आप दो दिन की व्यवस्था बनाकर तब आगे बढ़ें। पन्द्रह दिन का शिविर आपके लिए है। दस दिन का शिविर शाखा के लिए है। शाखा वालों को जो क्रिया-कलाप करना पड़ेगा, वह केवल १० दिन हैं। पन्द्रह दिन तो आपकी निभ जाए। जब भी पहुँचें, जिस दिन भी पहुँचें, वहाँ के स्थानीय कार्यकर्त्ताओं की लिस्ट ले करके आप निकल जाइए, पूछिए आपके पास आती है अखण्ड-ज्योति? हाँ हमारे यहाँ तो आती है। आपको लेख पसन्द आते हैं? हाँ आते हैं। आप गुरुजी से सहमत हैं? हाँ साहब सहमत हैं। हम तो खुद पढ़ते हैं और दूसरों को पढ़ाते हैं। अच्छा तो यह हम गुरुजी का संदेश लेकर के आये हैं और उनसे प्रेरणा ले करके और शिक्षा लेकर आये हैं, खासतौर से आपके लिए ले करके आये हैं। इस तरह से आप इनसे कहना कि आपको हमारे प्रातःकालीन शिविरों में जरूर सम्मिलित होना चाहिए। गुरुजी ने हमें अपने सभी कार्यकर्त्ताओं को यह संदेश आपसे कहने भेजा है। आपको जरूर आना है। हाँ साहब, हम जरूर आयेंगे। कल हमको भी जरूर आना है। सबेरे याद रख लीजिए और देख लीजिए इसमें से कौन-कौन आये और कौन-कौन नहीं आये। सायंकाल को आपको यदि फिर समय मिल जाए तो जो लोग नहीं आये थे, उनके पास शाम को जा पहुँचें और कहें साहब, हम तो आपका इंतजार ही करते रहे। गुरुजी ने देखिए कहा था और हमने लाल रंग का टिकमार्क पहले ही लगा दिया था कि इनको जरूर बुलाना और देखिए आपके नाम पर टिकमार्क लगा हुआ है और आप ही नहीं आये। ये क्या हुआ? अच्छा तो कुछ काम लग गया होगा? हाँ साहब, आज तो बहुत काम लग गया था, संध्या से जुकाम हो गया था। कल तक तो जुकाम आपका अच्छा हो जाएगा, तो देखो कल जरूर आना। ये टिकमार्क- लाल स्याही का निशान हमें गुरुजी को दिखाना पड़ेगा। आप नहीं आये तो खराब बात होगी। साहब, हम तो जरूर आयेंगे। गुरुजी से कहना कि उनके विचारों को सब सुनने को आयेंगे। कल सुबह फिर बुलाना। एक-एक आदमी आपको जरूर जमा करना पड़ेगा। यह जिम्मेदारी उठाने के लिए आप स्वयं तैयार होकर जाइये।

गुरुजी, यह कार्य तो वहाँ के कार्यकर्त्ता या अन्य लोग मिलकर सारी व्यवस्था कर लेंगे? यदि वे लोग कर लेते तो मित्रो हम नहीं भेजते आपको। ये काम वो नहीं कर सकते। यह टैकनिक उनको नहीं मालूम है। यह आपको मालूम है, इसीलिए वहाँ जाकर के सबसे आगे वाली लाइन में आप खड़े हुए दिखाई पड़ेंगे। खाना बनाने से ले करके सफाई करने तक और शिविर की यज्ञशाला में पत्तियाँ लगाने से लेकर यज्ञशाला का स्वरूप बनाने तक, आपको आगे-आगे बढ़ना चाहिए। आपने यह कह दिया। अरे यार, यह कैसा कुंड बना दिया ऐसे बनते हैं कहीं। तुम तो कैसे कह रहे थे- हम शाखा चलाते हैं। ये तुमने कुंड बना दिया और वेदी बना दी, ये भी कोई तरीका है। ऐसे भी कहीं कुंड बनते हैं क्या? कुंड ऐसे बनने चाहिए थे। तो आप कहाँ चले गये थे? हम तो साहब वहाँ बैठे थे, अखबार पढ़ रहे थे। अखबार पढ़ने के लिए आये थे या सामाजिक सहायता करने के लिए आए थे। आपको हम विशुद्ध रूप से कार्यकर्त्ता बना करके भेजते हैं, नेता बनाकर नहीं। नेता हम आपको नहीं बना सकते। किसी को भी नेता बनाकर हम नहीं भेजेंगे। हर आदमी को कार्यकर्त्ता 'सिन्सियर वालन्टियर' बना करके भेजेंगे। उस आदमी को भेजेंगे जो काम करने के लिए स्वयं आगे-आगे बढ़े और दूसरों को साथ लेकर चले। आपका व्यक्तित्व अलग नहीं होना चाहिए।

आपकी सबेरे से लेकर सायंकाल तक की दिनचर्या जो होनी चाहिए ऐसी होनी चहिए जिससे कि दूसरा आदमी अपनी दिनचर्या को सही करे। आपके सोने का समय, उठने का समय और जगने का समय क्रमबद्ध होना चाहिए। प्रातःकाल आपको देर से नहीं उठना चाहिए। संध्या आप करते हैं कि नहीं, मैं नहीं जानता, लेकिन नहीं करते तो भी आपको करना चाहिए। यहाँ आपने कितना भजन किया या नहीं किया, आप जानें, आपका काम जाने, पर वहाँ जहाँ कहीं भी हम भेजते हैं, हम इसलिए भेजते हैं कि हर आदमी को हम उपासक बनाएँगे और गायत्री की उपासना

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

सिखाएँगे और निष्ठा करना सिखाएँगे। अगर आपकी देखा-देखी यही ढीलम-पोल कार्यकर्त्ताओं में भी चालू हो गई हो तो फिर सब काम बिगड़ जाएगा। अतः आप उपासना निष्ठापूर्वक करना, चाहे आप आधा घंटा ही करना, पर नियमपूर्वक जरूर करना। भूलना मत कभी। अगर कभी आपने ऐसा करना शुरू कर दिया कि आप साढ़े आठ बजे उठे और बहाना बना दिया कि साहब आज तो रात को देर हो गयी थी और साहब आपके यहाँ तो जगह भी नहीं है। आपके यहाँ हवा अच्छी नहीं है, यहाँ तो कोई बैठने को स्थान मिला नहीं, हम तो एकान्त में भजन करते हैं, गुफा में करते हैं। आपके यहाँ तो गुफा भी नहीं, एकान्त भी नहीं, तो हम यहाँ कहाँ भजन करेंगे। यह गलती मत करना। गुफा मिलती है तो मुबारक, एकान्त मिलता है तो मुबारक और चौराहा मिलता है तो मुबारक और छत मिलती है तो मुबारक। जहाँ कहीं भी आपको ठहरा दिया गया-धर्मशाला में ठहरा दिया गया है, तो आपको निष्ठावान व्यक्ति की तरह रहना और उपासना करनी चाहिए।

मित्रो, आपको इस बात का ध्यान रखकर चलना चाहिए कि आपको थैलों के थैलों और बक्सों के बक्सों कपड़े लेकर नहीं जाना चाहिए। आप ढेरों के ढेरों धोती-कुर्ता लेकर नहीं जा रहे हैं। आप जहाँ कहीं भी जाने वाले हैं, वहाँ आपको वही एक दो धोती लेकर जाना होगा और एक-दो कपड़े लेकर जाना होगा। अगर आप कहीं अपना तरीका- वह तरीका जो घर में बरतते थे, मैला कपड़ा है तो मैला ही पहने हैं, फटा है तो फटा ही पहने हैं। इसको आप भूलना मत, शरीर को भी स्नान कराना और कपड़े को भी स्नान कराना। कपड़ा कौन है? चुगलखोर। ये हर आदमी की हैसियत को, हर आदमी के स्वभाव को और आदमी के रहन-सहन को बता देता है। ये आदमी कौन है? आप गरीब हैं सस्ता कपड़ा पहनते हैं कोई हर्ज नहीं। आपका कपड़ा फट गया हो तो भी कोई बात नहीं। साबुन आप साथ रखना और सुई-धागा अपने साथ रखना। बटन टूट गया हो तो आप लगाकर रखना ठीक तरह से। करीने से कपड़े पहनना, आपका कपड़ा मैला नहीं होना चाहिए। मैला कपड़ा पहनकर आप अपने व्यक्तित्व को गँवा बैठेंगे। फिर आप रेशम का कपड़ा ही क्यों न पहने हों और टेरेलीन का कपड़ा क्यों न पहने हों, आपकी बेइज्जती हो जाएगी और आप बेकार के आदमी हो जाएँगे। आपका शरीर सफाई से रहे, आपके सब कपड़े सफाई से रहें। आप वहाँ-जहाँ कहीं भी जाएँ, आप भले ही अमीर आदमी न हों, बड़े आदमी न हों, लेकिन आपको मैले-कुचैले नहीं रहना चाहिए। मैला-कुचैला वह आदमी नहीं रह सकता, जो शरीर को स्नान कराता है। कपड़ों को भी रोज स्नान कराइए और कपड़ों को रोज धोइए।

आपको ये मैं छोटी बातें बता रहा हूँ, लेकिन हैं ये बड़ी कीमती और बड़ी वजनदार। सायंकाल को जब आप सोया करें, तो अपने कुर्ते को तह करके अपने तकिए के नीचे लगा लिया करिए और तब सोया कीजिए। सबेरे आपका कुर्ता प्रेस किया हुआ और आयरन किया हुआ ऐसा भकाभक मिलेगा कि आप कहेंगे वाह भई वाह, कैसा बढ़िया वाला प्रेस हुआ। वानप्रस्थ की पोशाक हमने पहनाई है। इसको आप ऐसे मत करना। अपनी शर्म की बात मत बनाना। शर्म की बात नहीं, आप वानप्रस्थ के कपड़े को अपनी बेइज्जती मत समझना, हम पीला वाला कपड़ा पहनकर जाएँगे तो लोग हमें भिखारी समझेंगे और हम बाबाजी समझे जाएँगे, जबकि हम तो नम्बरदार हैं, हम तो जमींदार हैं और देखो हम बाबाजी कहाँ हैं? ठीक है हम इस पीले कपड़े की इज्जत बनाएँगे। जैसे कि लोगों ने बिगाड़ी, हम बनाएँगे इज्जत। किसकी बनाएँगे? पीले कपड़े की बनाएँगे। इसलिए पीले कपड़े को आप छोड़ना मत। रेलगाड़ी में जाएँ तो भी आप पीला कपड़ा पहनकर जाना। लोग-बाग आपसे कहना शुरू करेंगे कि ये बाबाजी लोगों ने सत्यानाश कर दिया। ये छप्पन लाख बाबाजी हराम की रोटी खा-खाकर कैसे मोटे हो गये हैं? ये फोकट का माँगते हैं रोज और नम्बर दो वाला पैसा, ब्लैक वाला पैसा खा-खाकर कैसे मुस्टन्डे हो गये हैं। याद रखिए। आप जहाँ कहीं भी जाएँगे जो देखेगा यही कहेगा कि ये देखो ये बाबाजी बैठे हैं। इन लोगों को शरम नहीं आती है। तब आप क्या करना? डरना मत उससे। उसकी गलती नहीं है? आप उसको समझाना कि हम बाबाजी कैसे हैं और हमारे बाबाजी का सम्प्रदाय कौन-सा है? और हमारा गुरु कैसा है? और हमको जो काम करना है- वह क्या है? और हम किस तरीके से हैं? ❁

क्रमशः

एक दिन पानी से भरे कलश पर रखी हुई कटोरी ने घड़े से कहा- कलश तुम बड़े उदार हो। तुम्हारे पास जो भी बर्तन आता है, उसे तुम पानी से भर देते हो किसी को खाली नहीं जाने देते।

कलश ने उत्तर दिया- हाँ! मैं अपने पास आने वाले प्रत्येक पात्र को भर देता हूँ, मेरे अन्तर का सारा सार दूसरों के लिए है।

कटोरी बोली- लेकिन मुझे कभी नहीं भरते, जबकि मैं हर समय तुम्हारे सिर पर ही मौजूद रहती हूँ।

घट ने उत्तर दिया- इसमें मेरा कोई दोष नहीं, दोष तुम्हारे अभिमान का है। तुम अभिमानपूर्वक मेरे सिर पर चढ़ी रहती हो, जबकि अन्य पात्र मेरे पास आकर झुकते हैं और अपनी पात्रता सिद्ध करते हैं। तुम भी अभिमान छोड़कर मेरे सिर से उतर कर विनम्र बनो, मैं तुम्हें भी भर दूँगा।

पूर्णता की प्राप्ति पात्रता एवं नम्रता से होती है अभिमान एवं अहंकार से नहीं।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

८-७-७४ कुंभ के अवसर पर दिया गया प्रवचन- (जून, १९९८ की तीसरी व अंतिम किश्त)

मित्रो! लोगों की निष्ठाएँ ब्राह्मण के प्रति कम हो गई हैं और जो रही बची हैं, वह और खत्म हो जाएँगी। लोगों की निष्ठाएँ साधु पर से भी खत्म हो गई हैं और जो रही-सही बची हैं तो और खत्म हो जाएँगी। अबकी बार मुझे कुंभ के मेले में इतनी खुशी हुई कि मेरे बराबर कोई भी नहीं। कुंभ के मेले को देख करके मैं भाव-विभोर हो गया। एक बार मैं इलाहाबाद गया था, तो मैंने क्या देखा था? उसी साल ऐसा हुआ था कि रेलों के नीचे-पाँव के नीचे छह-सात सौ आदमी कुचलकर मर गये थे। उस साल भी मैं कुंभ में था। उसके बाद मैं गया नहीं। अबकी बार मैं यहाँ हूँ। अबकी बार तो मुझे बड़ी भारी प्रसन्नता है कि लोगों ने आने से इनकार कर दिया और यह सही काम किया। इस तरीके से जहाँ लोग इकट्ठे होते थे। सन्त और महात्मा इकट्ठे होते थे। सन्त और महात्मा इकट्ठे होने के बाद सम्मेलन करते थे और सम्मेलन करने के पश्चात वाजपेय यज्ञ करते थे। इन मौकों के द्वारा यह किया करते थे कि किस तरह से हमको देश का निर्माण करना चाहिए। समाज की गुत्थियों को हल कैसे करना है और व्यक्ति की नैतिक कठिनाइयों का समाधान कैसे करना है? वे सारी-की-सारी शिक्षाओं को देने के लिए कुंभ में चले आते थे।

परंतु अब देखा ना आपने, क्या-क्या हो रहा है? कहीं रास हो रहा है, कहीं क्या हो रहा है? जनता को आकर्षित करने के लिए जैसे कठपुतली वाले तमाशा करने के लिए जो ढोंग किया करते हैं, वे इस तरीके से किया करते हैं। न कोई सम्मेलन की बात है, इनके पास न कोई ज्ञान है, न कोई दिशा है, न विचार है। लोगों को घृणा होगी और होनी चाहिए। मुझे बहुत प्रसन्नता है कि लोगों में नफरत होती चली जा रही है और घृणा उत्पन्न होती चली जा रही है और बाबाजी के दर्शन करने से इनकार करता हुआ आदमी चला जाता है। वे लोग अपने घर में कम्बल पहनकर सोते हैं और लिहाफ ओढ़कर सोते हैं और जब बाजार में होकर स्नान करने के लिए निकलते हैं,तो लंगोटी खोलकर निकलते हैं। मुझे बहुत शरम आती है। मुझे बहुत दुःख होता है। ठीक है, आप कपड़ों को उतारने वाले महात्मा हैं, तो आप जंगल में जाइये और वहाँ रहिए। वहाँ आप झोंपड़ी डालिए और गंगाजी में स्नान कीजिए। गाँव से आप बाहर रहिए। जहाँ हमारी लड़कियाँ घूमती हैं, जहाँ हमारी बेटियाँ घूमती हैं, जहाँ हमारी बहुएँ घूमती हैं, जहाँ हमारे बच्चे घूमते हैं, वहाँ आप मत जाइए। यदि आप नागा बाबाजी हैं तो आप दुनिया को क्या संदेश देने चले हैं?

हरिद्वार में गंगा विस्तृत क्षेत्र में फैली हुई है, परंतु नहीं साहब, हम तो हर की पौड़ी में ही स्नान करेंगे। अरे बाबा, हरिद्वार की हर की पौड़ी भी तो किसी काम की नहीं है। यह तो हमारे लिए किसी ने खोदकर नहर निकाल दी है। यह तो एक नहर है। आप मालूम कर लीजिए हर की पौड़ी एक नहर है। यह क्या? हर की पौड़ी तो गंगाजी हैं। गंगाजी तो हैं, पर खोदकर लाई गई हैं। गंगाजी में आपको नहाना है, तो आप वहाँ जाइये- नीलधारा पर नहाइये। यह गंगाजी नहीं है। यह मनुष्यों की बनाई हुई नहर है। नहीं साहब, हम तो ब्रह्मकुण्ड में नहाएँगे, हम तो यहीं नहाएँगे। हम तो ये करेंगे और हम तो नंगे होकर नहाएँगे। इस तरह के लोगों के दर्शन करने को अब आदमी नहीं जाता है। मुझे बहुत खुशी है कि लोगों ने इस साल कुंभ में आने से इनकार कर दिया और मैं भगवान से प्रार्थना करूँगा कि अगले वर्ष भी वे यहाँ न आयें। इसमें सफाई कर्मचारियों के अलावा, पुलिस वालों के अलावा और बाबाजियों के अलावा, तीसरा कोई जनता न आवे। तीन आदमी आ जाएँ। बस, काम बन जाएगा। लोग क्यों आने चाहिए और क्यों पैसा खराब करना चाहिए? इनको किस काम के लिए पैसा खराब करना चाहिए? छह तारीख को आप नहाएँगे तो बैकुंठ को जाएँगे। हर की पौड़ी के ब्रह्मकुंड में नहाकर के आप बैकुंठ को जाएँगे? यह बहम जिनके दिल के ऊपर सवार है, उनकी तादाद कम होनी चाहिए और उनकी तादाद खत्म होनी चाहिए। जिनको यह बहम हो गया है कि छह तारीख को न नहाने से बैकुंठ नहीं जाएँगे और हर की पौड़ी के कुंड पर नहा लेंगे तो सीधे बैकुंठ को जाएँगे और वहाँ सड़कों पर नहा लेंगे तो नरक को जाएँगे। इस तरह की मनोवृत्ति जितनी लोगों में कम होती चली जाएगी, धर्म की उतनी ही सेवा होती जाएगी।

इसलिए मित्रो क्या हो गया? लोगों में पंडितों के प्रति, संतों के प्रति, साधुओं के प्रति, हरेक के प्रति अवज्ञा के भाव उत्पन्न हो गये हैं और वे भाव हमने पैदा किये हैं। हम पुनः आस्था की स्थापना करेंगे और किसकी? साधु के गौरव को हम फिर जिन्दा करेंगे, ब्राह्मण के गौरव को हम फिर जिन्दा करेंगे कि साधु और ब्राह्मण अपनी जिन्दगी किस तरीके से खपा देते थे। समाज के लिए समाज को ऊँचा उठाने के लिए और धर्म को ऊँचा उठाने के लिए। ऋषियों की निष्ठा को ऊँचा उठाने के लिए और विश्वासों को ऊँचा उठाने के लिए किस तरह से वे अपने आपके लिए तबाही मोल लेते थे और किस तरीके से गरीबी मोल लेते थे? किस तरीके से कष्ट उठाते थे? इसे हमको जिन्दा करना है। इसलिए आप पीला कपड़ा जरूर पहनना, जिससे कि लोगों को बहस करने का मौका मिले और आपको गालियाँ खाने का मौका मिले। गालियाँ आपको खानी चाहिए, मैं तो कहता हूँ कि जिस आदमी को गालियाँ नहीं मिलीं, वह हमारा चेला नहीं हो सकता। गाँधीजी के शिष्य जितने भी

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

थे, उनको गोलियाँ खानी पड़ीं और आचार्य जी के चेलों को गालियाँ खानी चाहिए। गोलियाँ खाने को तैयार हो जाइये। नहीं साहब, गोली तो हम नहीं खाएँगे। ठीक है, आप गोली मत खाइये। तो क्या गाली खाएँ? गाली खाने से क्या एतराज है आपको? गाली तो खाइए ही।

आप पीले कपड़े पहन लेना और रेलगाड़ी के थर्डक्लास के डिब्बे में बैठ जाना। हर आदमी गाली देगा आपको और कहेगा कि देखो बाबाजी बैठा हुआ है। यह देखो फोकट का माल खाने वाला बाबाजी बैठा हुआ है। यह हरामखोर बाबाजी बैठा हुआ है, चालाक बाबाजी बैठा हुआ है, यह ढोंगी बाबाजी बैठा हुआ है। उन सबकी गाली आपको नहीं पड़नी चाहिए क्या? गाली आपको पड़नी चाहिए; क्योंकि लोगों ने इस तरीके से हमारे धर्म को, अध्यात्म को और भगवान को, ईश्वर को और सन्तवाद को बदनाम किया है। उसका प्रायश्चित हमें तो करना पड़ेगा ही। आखिर उनके वंश के तो हमीं लोग हैं ना? उनकी परम्परा के अनुयायी हमीं लोग तो हैं ना? उनकी औलाद तो हमीं लोग है ना? उनकी जिम्मेदारी हमीं लोग तो उठाने वाले हैं। ऋषियों के गौरव, ऋषियों के यश का लाभ हमीं लोग तो उठा सकते हैं, तो फिर हमारे जो मध्यकाल में ऋषि हुए हैं, उनके बदले की गाली कौन उठाएगा? गाली हमको खानी चाहिए। इसलिए पीला कपड़ा आप उतारना मत। जहाँ कहीं भी जाएँ वहाँ रंग का डिब्बा साथ लेकर जाएँ। यह मत कहना यहाँ तो रंग मिलता नहीं। यह हमारी शान है, यह हमारी इज्जत है। यह हमारी हर तरह की साधु और ब्राह्मण की परम्परा-का उस समय की निशानी है, कुल की निशानी है। पीले कपड़े पहन करके जहाँ कहीं भी जाएँगे लोगों को मालूम पड़ेगा कि ये कौन है? ये उस मिशन के आदमी हैं, युगनिर्माण योजना के आदमी हैं, गायत्री परिवार के आदमी हैं। युगनिर्माण के आदमी कौन? जो संतों की परम्परा को जिन्दा रखने के लिए कमर बाँधकर खड़े हो गये, जो ब्राह्मण की परम्परा को जिन्दा रखने के लिए कमर कसकर खड़े हो गये हैं। जिन्होंने जीवन का यह व्रत लिया है कि हम श्रेष्ठ व्यक्तियों के तरीके से भले मनुष्यों के तरीके से- शरीफ आदमियों के तरीके से और अध्यात्मवादियों के तरीके से जिन्दगी यापन करेंगे। आपके बोलने की शैली, चलने की शैली और काम करने की शैली जब लोग देखेंगे तो समझेंगे कि साधु घृणा करने का पात्र नहीं है। साधु नफरत करने की निशानी नहीं है। साधु हरामखोर का नाम नहीं है। साधु फोकट में मुक्ति माँगने वाले का नाम नहीं है, बल्कि परिश्रम करके और कीमत चुकाकर जीवनयापन करने वाले का नाम है। स्वयं मुक्ति पाने के लिए नहीं, बल्कि बंधनों से सारे समाज को मुक्ति दिलाने वाले का नाम ही साधु है। ये बातें जब लोगों को मालूम पड़ेंगी तो परिभाषाएँ बदल जाएँगी, सोचने का तरीका बदल जाएगा। लोगों की आँखों में जो खून खौल रहा है, लोगों की आँखों में जो गुस्सा छाया हुआ है, वह खून खौलने वाली बात, गुस्सा छाने वाली बात से राहत मिलेगी।

मित्रो, अब ये जड़ें खत्म होने जा रही हैं और अध्यात्म बढ़ता हुआ चला जा रहा है। उसकी नींव मजबूत होने का फायदा फिर आपको मिल सकता है। आपको अपने इन्स्टीट्यूशन को मजबूत करने के लिए और मिशन की जानकारी अधिक-से-अधिक लोगों को कराने के लिए अपने इन पीले वस्त्रों को प्यार करना होगा। जब तक आपको मिशन में जाना है, क्षेत्रों में जाना है, तब तक इन पीले कपड़ों को उतारना मत।

अच्छे काम के लिए, अच्छा काम करने के लिए शरम की जरूरत नहीं है। आपको खराब काम, बुरे काम करने की जरूरत हो तो बात अलग है। अच्छा काम गाँधीजी ने शुरू किया था। तब चरखा को बुरा समझा जाता था। चरखा विधवाओं की निशानी समझा जाता था, लेकिन गाँधीजी ने जब से चरखा चलाना शुरू कर दिया, देशभक्तों की निशानी बन गई और वह काँग्रेस वालों की निशानी बन गई। हमें इस पीले कपड़े को चरखे की तरह समझना चाहिए। हम इसका गौरव बढ़ाएँगे और हम संत और महात्माओं की निष्ठा-आस्था को फिर मजबूत करेंगे, जो घटती चली जा रही है और हवा में गायब होती चली जा रही है। हमारे क्रिया-कलाप और हमारे वस्त्र-दोनों का तालमेल मिला करके जब हम कार्यक्षेत्र में चलने के लिए तैयार होंगे, तो फिर क्यों हम उन परम्पराओं को जाग्रत करने में- जीवित करने में समर्थ न होंगे? जिसको ऋषियों ने हजारों और लाखों के खून से सींचकर के बनाया था, उसको जिन्दा रखा था।

आपको वहाँ जहाँ कहीं भी जाना है, एक आदर्श व्यक्ति की तरह से जाना है। आपको कन्याओं में भी काम करना पड़ेगा, आपको लड़कियों में भी काम करना पड़ेगा और महिलाओं में काम करना पड़ेगा। आप जहाँ कहीं भी जाएँ, दो बातों का ख्याल रखना। एक बात तो पैसे के बारे में है। उससे अपने हाथ बिल्कुल साफ रखना। जहाँ कहीं भी आपको पैसे चढ़ाने का मौका आए, आरती का मौका आए, पूजा का मौका आए, कोई भी पैसा आता हो, वहाँ आप लेना मत। आप चाहें कि इकट्ठा दस हजार जेब में भरते जाएँ और कहें कि अरे साहब! ये पूजा की आरती में पैसे आये थे। ऐसा मत करना आप। यद्यपि यह सब करने का मौका मिलेगा। आप वहीं के लोगों को बुलाना और देखना कोई पैसे आते हैं, चढ़ावे में आते हैं, सामने रख जाते हैं। कोई चवन्नी चढ़ा जाती है लड़की, कोई अठन्नी चढ़ा जाती है। इस तरह पैसे का हिसाब बढ़ता चला जाएगा। इनको आप उस में रखना, जमा करना। आप पैसे के बारे में हाथ साफ रखना। आपको शाखा जो कुछ भी दे, वह किराये-भाड़े के रूप में कहीं भी जमा रखना। किराया आपको जो कुछ भी लेना हो, अपना खर्च वहीं से लेना। बाहर के लोगों से आप ये शिकायत न करना कि हमें साबुन की जरूरत है,

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

कपड़े की जरूरत है और हमको वो वाली चीज चाहिए, हमको फलानी चीज चाहिए। कोई लाकर दे दे साबुन तो बात अलग है, लेकिन अगर आपको न दे तो आप अपने पैसे से ले लेना। नहीं तो वहीं के आदमी से माँग लेना, लेकिन वहाँ के लोगों का कोई दान-दक्षिणा का पैसा आप मंजूर मत करना।

आपको हमने संत बनाया है, लेकिन दान-दक्षिणा का पैसा वसूल करने का अधिकारी आपको नहीं बनाया है। व्यक्तिगत रूप से दान-दक्षिणा लेने का अधिकार बहुत थोड़े आदमियों को होता है। उन्हीं को होता है, जिनके पास अपनी कोई सम्पत्ति, अपना कोई धन नहीं होता। उस आदमी को भी दान-दक्षिणा लेने का अधिकार है, जिसने सारा जीवन समाज के लिए समर्पित कर दिया है और अपने घर की सम्पदा को पहले खत्म कर दिया है और अपने घर की सम्पदा के नाम पर उनके पास कोई पैसा जमा नहीं है। तब उस आदमी को हक हो जाता है कि लोगों से अपने शरीरनिर्वाह करने के लिए पैसा ले। शरीर के निर्वाह करने के लिए रोटी ले। आपको मालूम होगा- अखण्ड-ज्योति कार्यालय से गायत्री तपोभूमि प्रतिदिन दो बार आना-जाना होता था। भोजन अखण्ड-ज्योति जाकर ही करते थे। यदि कभी तपोभूमि में देर तक रुकना पड़ता था, तो भोजन अखण्ड-ज्योति संस्थान से मँगा लेते थे और वहाँ बैठकर खाते थे। आपको मालूम है कि नहीं, हमें ज्ञात नहीं। हमारे पास जमीन थी, उस वक्त तक। इसीलिए जमीन जब तक हमारी थी, हमें क्या हक था कि हम अस्सी बीघे जमीन से अपना गुजारा न करें और गायत्री तपोभूमि के पैसे से हम कपड़े पहनें और रोटी लें। लोगों ने हमको धोतियाँ दीं, कपड़े हमको दिए और कहा कि गुरुजी के लिए लाए हैं। गुरु-दक्षिणा में लाए हैं। आपके लाने के लिए बहुत धन्यवाद, बहुत एहसान। सारे के सारा बक्से में बन्द करते चले गये। सारे कपड़ों को तपोभूमि में भिजवा दिया। जहाँ कार्यकर्त्ता रहते थे, दूसरे लोग रहते थे, हरेक को हमने दे दिया। अच्छा भाई लो, किसकी धोती फट गई। हमारी फट गई धोती, इनको देना। इसके पास नहीं है। उसके पास नहीं है। अच्छा खोल दो बक्सा मेरा; क्योंकि वे अपना घर छोड़ करके आ गये थे। उनके पास जीविका नहीं थी। इसलिए उन्हें खाने का अधिकार था। हमको नहीं था अधिकार, हमने नहीं खाया। जब तक हम गायत्री तपोभूमि में रहे हमने रोटी नहीं खाई, लेकिन जब हम अपनी अस्सी बीघे जमीन दे करके और भी हमारे पास जो कुछ था, दे करके खाली हाथ हो करके आ गये, हम अपना केवल शरीर और वजन ले करके आ गये, तो हमने यह मंजूर कर लिया है और हम यहाँ शांतिकुंज के चौके में रोटी खाते हैं और कपड़े पहनते हैं।

मित्रो! दान-दक्षिणा की रोटी खाने का और कपड़े पहनने का अधिकार सिर्फ उस आदमी को है, जिसने अपनी व्यक्तिगत सम्पदा को समाप्त कर दिया है। जब तक आदमी अपनी व्यक्तिगत सम्पदा को समाप्त नहीं कर लेता। कहीं गया है ठीक है, मेहमान की तरह से रोटी खा ले बस। आपके पास पैसा आता है तो आप संस्था में जमा करना। पैसे के मामले में कहीं आप यह करके मत आना कि लोग आपके बारे में ये कहने लगें कि गुरुजी के चेले आपके पैसे के बारे में चोरी का भाव लेकर आते हैं, भिक्षा माँगने का भाव लेकर आते हैं। यह ख्याल ले करके मत आना। यह बदनामी है आपकी, हमारी और हमारे मिशन की।

एक और बात आप करना मत। क्या मत करना? आपको हमने महिलाओं में, लड़कियों में मिला दिया है। हमने हवन-कुण्डों पर हवन करने के लिए लड़कियों को, स्त्रियों को शामिल करने की जिम्मेदारी उठा ली है। हमने एक बड़ा काम कर डाला। बड़ा दुस्साहस का काम कर डाला। आप समझते नहीं कितनी बड़ी जिम्मेदारी हमने उठा ली है। उस जिम्मेदारी की शरम रखना आपके जिम्मे है। लड़कियाँ आई हैं। सम्मान के साथ काम करेंगी। अमुक काम करेगी। लड़कियाँ आई हैं- अपने-अपने कंधों पर सिर पर कलश के घड़े ले करके चलेंगी। आपके पास आएँगी और परिक्रमा लगाएँगी और जय बोलेंगी। कोई आपके लिए क्या कहेंगी और कोई हवन करने के लिए कहेंगी। आप हमेशा दो बातों का ध्यान रखना कि अकेले किसी लड़की से बात मत करना। जब कभी कोई अकेली लड़की, अकेली महिला आती हो तो चुप हो जाना और आवाज देकर दूसरों को बुला लेना। किसी मर्द को बुला लेना या किसी महिला को बुला लेना। अकेले बात मत करना कभी। कभी कोई अकेली स्त्री आये और आपसे कोई बात करना चाहती हो या अकेली बात करती हो तो आप कहना बहिन जी आप अपने बाप को, बहिन को लिवा लाइये और अपने भाई को लिवा लाइये। वह यहाँ आ करके बैठ जाएँ या फिर हम अपने बाबाजी को बुला लेते हैं। अकेली स्त्री से कभी भी बात मत करना। आप पर मैं यह प्रतिबन्ध लगाता हूँ। अकेले मत बात करना। किसी मर्द के बिना बात मत करना। यह प्रतिबन्ध नम्बर एक हुआ।

बन्धन नम्बर दो। कन्याओं से और लड़कियों से बात करते हुए आपको ईसाई मिशन वाली बात याद रखनी चाहिए। 'नन' जो होती हैं, ईसाई मिशन का काम करती हैं। उनको ऐसी शिक्षा दे दी जाती है कि वे महिला में, महिला समाज में काम करती हैं, मर्दों में काम करती हैं। उनको आपने देखा होगा। नर्सों के रूप में जो काम करती हैं, महिलाओं में काम करती हैं, उनको नर्स कहते हैं। जो पादरी होती हैं, उनको नन कहते हैं। ननें टोपा-सा पहने रहती हैं। शायद कभी आपने देखा हो। ननों को शिक्षा दी जाती है। एक खास शिक्षा दी जाती है उनको कि कभी भी मर्दों से आँख-से-आँख मिलाकर बात नहीं करनी चाहिए। मर्दों के सामने बात करें तो काम की बात करें। समझाइए ये बात कीजिए, वो बात कीजिए, पर आँख से आँख मत मिलाइये। आँखें नीची रख

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

करके महिलाओं से आप भी बातें करें। आपको भी यही शिक्षा दी जाती है। आपको भी ये शिक्षा दी जाती है कि महिला समाज में जहाँ कहीं भी आपको रहना पड़े आँख से आँख मिलाइए मत, आँखें नीची करके बात कीजिए। नीचे आँख करके बात करेंगे, तो आपका गौरव, आपका सम्मान, आपकी इज्जत बराबर बनी रहेगी। गंभीर हो करके आप कीजिए बात। जोरों से कीजिए बात। दोस्तों से विशिष्ट बात मत कीजिए। जो भी कह रहे हैं, उसे जोर से कहिए। ऐसे कहिए मानो दूसरों को कम सुनाई पड़ता है। कम सुनने वाला आदमी कैसे बोलता है ? सोचता है इन सबको कम सुनाई पड़ता है। धोती मँगा दीजिए। अरे हमारे तो कान अच्छे हैं। आप ये समझ रहे हैं, महिला समाज में जब आपको काम करना पड़े तो आप क्या कहेंगे। आप यह समझना कि हमारे कान बहरे हो गये हैं। जोर से कह लड़की, क्या कहती है। जो कहना हो वह भी जोर-जोर से कहना। आप इन बातों को ध्यान रखना। ये बातें काम की हैं। हैं तो राई की नोक की बराबर, लेकिन आप जहाँ कहीं भी जाएँगे, शालीन आदमी हो करके जाएँगे, श्रेष्ठ आदमी हो करके जाएँगे। आप अपनी संस्था के गौरव को अक्षुण्ण रखने में समर्थ हो सकेंगे।

अब मैं आपको यहाँ से भेजता हूँ। कहाँ भेजता हूँ ? आपने अपनी कन्या के हाथ पीले कर दिए। मैंने किसके पीले हाथ कर दिए ? आप लोगों के पीले हाथ किये हैं। कपड़े मैंने पहना दिये हैं, पीले हाथ कर दिये हैं, अब आपकी जिम्मेदारी है। अब आपका इम्तिहान लिया जाने वाला है और आपकी यह परख होने वाली है कि ये जो बहू आई है, कैसी है और बहू को क्या-क्या बनाना आता है। रोटी बनानी आती है बहू को, नहीं। बहू को पकौड़ी बनानी आती है कि नहीं। उसके सास, ससुर बैठे हैं। अरे ये बहू आई है, बहू के हाथ से पूड़ी तो बनवाकर कर खिलवाओ, बहू के हाथ से कचौड़ी तो बनवाकर खिलवाओ। सब बैठे हुए हैं, सारा घर बैठा हुआ है और देखिए बहू आती है और कैसे पकौड़ी बनाती है, कैसे पकौड़ी बनाकर खिलाती है ? आप पीले कपड़े पहन करके और अपने पीले हाथ करा करके अपनी ससुराल चले जाना। वहाँ इस तरह से काम करके आना, इस तरह का व्यवहार करके आना कि आपका समधी कहे, आपकी जिठानी कहे, देवरानी भी कहे, सारा गाँव ये कहे कि ये लड़की क्या है ? बड़े खानदान की इज्जत को रखना और बहू की असली इज्जत को रखना आप अपनी ससुराल में।

याद रखिए आप वह नाम कमा करके आना कि लोग हमसे बार-बार यही कहें कि पिछली बार जिन मोहनलाल जी को आपने भेजा था, इस बार भी आप उन्हीं को भेजना गुरुजी। अबकी बार फिर हमने सम्मेलन किया है और हमारे लिए तो मोहनलाल जी को ही भेज दीजिए। बेटा, मोहनलाल जी को नहीं अबकी बार तो मक्खनलाल जी को भेजेंगे, पिछली बार मोहनलाल जी को भेजा था। मोहनलाल जी से इक्कीस ही भेज रहे हैं उन्नीस नहीं हैं। अरे गुरुजी, उन्हीं को भेज देते तो अच्छा रहता। लोग याद करें आपको, ऐसी आप निशानियाँ छोड़ करके आना। अपने स्वभाव की, अपने कर्म की, अपने गौरव की और अपनी विशेषताओं की। गौरव की बात छोड़ करके आये तो मित्रो, धन्य हो जाएगा आपका वानप्रस्थ, धन्य हो जाएगा हमारा ये शिविर। धन्य हो जाएँगे आपके वे क्रियाकलाप, जिनके लिए सारे भारतवर्ष में भ्रमण करने के लिए, लोगों में जाग्रति जगाने के लिए, लोगों में भावना पैदा करने के लिए, लोगों में भगवान के प्रति निष्ठा जगाने के लिए, अध्यात्मवाद की स्थापना करने के लिए, आत्मा का विकास करने के लिए और धार्मिकता की स्थापना करने के लिए आपको भेजते हैं। आपको इन्हीं तीन उद्देश्यों के लिए भेजते हैं। आप साधना करके आना और हमारी लाज रख के आना। आज की बात समाप्त हुई।

॥ ॐ शान्ति ॥

मिथिला नगरी के महानन्द परिव्राजक ने जीवन के तीन पन कठिन तपश्चर्या में बिताये। जप, तप, आसन, प्राणायाम, स्वाध्याय, यज्ञ, कीर्तन, मार्जन, तर्पण करते-करते असंख्य सिद्धियाँ करतलगत कर लीं। असाधारण क्षमता वाले मुनि महानन्द की ख्याति चन्द्रमा के प्रकाश की तरह विकसित होने लगी। सैकड़ों व्यक्ति उनकी सिद्धियों का लाभ पाने लगे। किन्तु मुनि का अन्तःकरण स्थिर न था। सिद्धियों ने उनकी तृष्णा तो बढ़ा दी, पर वह शान्ति, वह स्थिरता न मिली जिसके लिए मुनि ने घर, परिवार और स्नेहियों, संबन्धियों का साथ छोड़ा था।

एक दिन महानन्द इसी दुःख से भरे अपनी कुटिया से निकले। एक गाँव की ओर चल पड़े। वे गाँव में पहुँचे ही थे कि किसी के कराहने का स्वर सुनाई दिया। कोई बीमार था, देखने वाला कोई न था, बड़ी पीड़ा बढ़ गई थी, उस व्यक्ति की दर्द भरी कराह मुनि के हृदय में उतर गई, उन्होंने बीमार की रात-भर सेवा की। दवा दी, पाँव दाबे, बिस्तर बदले, टट्टी और पेशाब धोया। चौथे पहर जब उसे नींद आई, मुनि आश्रम लौटे।

आज न उन्होंने संध्या की, न प्राणायाम और निदिध्यासन भी नहीं किया किन्तु, तो भी उनके अन्तःकरण में अपूर्व शान्ति, स्थिर उत्फुल्लता, अबाध सुख निर्झर की भाँति झर रहे थे। महानन्द को बोध हुआ कि तप-साधना द्वारा अर्जित क्षमता का सही उपयोग न हो पाने से मन अशान्त था और अपनी साधना का अगला चरण इसी को मानकर अविरल शान्ति पायी।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

(१९७१ के जून माह में विदाई की पूर्व वेला में गायत्री तपोभूमि, मथुरा में दिया गया प्रवचन)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ

ॐभूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नःप्रचोदयात्!

देवियो ! भाइयो !!

सुविधाओं से भरा जीवन कमजोर आदमी जीते रहते हैं। उन्हें समाज, देश की चिन्ता नहीं होती है। मनुष्यों की अकल एवं विचार करने की दिशा ठीक की जा सकी, तो कल्याण हो सकता है, ऐसा हमने आपको बतलाया था। हमने आपसे कहा था कि समाज की सेवा करने का, लोकमंगल का कार्य करने का एक ही माध्यम है कि अध्यात्मवादी जीवन जिया जाए। आज चोरी, अपराध को कैसे रोका जा सकता है ? आज हर आदमी का ईमान खराब हो गया है। हर आदमी के पीछे अगर एक-एक सिपाही भी लगा दिया जाए, तो भी उसे रोका नहीं जा सकता है। वास्तव में कानून बनाकर तथा पुलिस की संख्या बढ़ाकर अपराध को क्या घटाया जा सकता है ? मित्रो, यह कदापि कम नहीं किया जा सकता है, चाहे हम कितनी भी पुलिस या मिलिट्री लगा लें। वकील, पुलिस वाले बढ़ते चले जाएँगे तथा अपराधों की संख्या भी निरन्तर बढ़ती चली जाएगी।

मित्रो, इसमें जब भी बदलाव आयेगा, चाहे वह एक हजार वर्ष के बाद ही आये, वह तभी सम्भव होगा जब मनुष्यों को बतलाया जाएगा कि अपने कर्मों के अनुसार ही मनुष्य को फल मिलता है। सर्वव्यापी एक भगवान है, जो हर मनुष्य के कर्मों को देखता है तथा न्याय करता है। यह अध्यात्म था, जो हमने आपको इस शिविर में बतलाया था कि व्यक्तिनिर्माण के साथ समाज का भी निर्माण करना चाहिए तथा उसके विकास के लिए भी प्रयास करना चाहिए, तभी मनुष्य के जीवन में सुख-शान्ति आ सकती है।

अध्यात्म का नाम चमत्कार नहीं है। चमत्कार तो बाजीगरी है, चालाकी है। इस खेल-तमाशे का नाम अध्यात्म नहीं है। छोटे बच्चों को बहकाने का नाम अध्यात्म नहीं है। आप चमत्कार के बारे में सोचना बंद कर दीजिए तथा सही रूप से अध्यात्म को समझने का प्रयास कीजिए। अध्यात्म का मतलब है-हमारे गुण, कर्म, स्वभाव में बदलाव। ऐसा अगर आप कर सकते हैं, तो अपने आप में आप चमत्कारी व्यक्ति बन सकते हैं। हम तो यहाँ तक कह सकते हैं कि आप पूजापाठ बन्द कर दीजिए, परन्तु अपने व्यक्तित्व का परिष्कार कर लीजिए। आप देखेंगे कि जिस चमत्कार के पीछे आप भाग रहे हैं, वह आपके पीछे आता हुआ दिखायी पड़ेगा।

मित्रो ! गाँधीजी ने नित्य आधा घण्टा पूजा, जप किया था, परन्तु वे जीवन में चमत्कार दिखलाते चले गये। उनके आशीर्वाद से लोग बादशाहों के बादशाह बन गये। हमारे आशीर्वाद से भी वैसा ही हुआ है। गाँधीजी के आशीर्वाद से दो-दो कौड़ी के लोग नेता बन गये। पं. जवाहरलाल और सरदार पटेल धन्य बन गये। गाँधीजी ने अँग्रेजों से कहा कि 'क्विट इण्डिया'। वे अपना बिस्तर लेकर चले गये। उनकी बंदूकें रखी रह गयीं। गाँधीजी कौन थे ? आधा घण्टा भजन-पूजन करने वाले व्यक्ति। उन्हें समाधि आती थी ? बिलकुल समाधि नहीं जानते थे। ध्यान, प्राणायाम भी नहीं किया उन्होंने । एक भी चक्रबेधन नहीं किया था, न ही अपनी कुण्डलिनी जगायी थी, परन्तु उनके जीवन में चमत्कार होते चले गये थे। यह था उनके जीवन में व्यक्तित्व का परिष्कार, जो उन्होंने किया था। अपने गुण-कर्म-स्वभाव के परिष्कार और आधा घण्टे नित्य के भजन से वे मालामाल हो गये। इस पूरे शिविर में हमने विभिन्न माध्यमों से आपको यह बतलाने का प्रयास किया कि अध्यात्म क्या है तथा उसको आपके अन्दर उतारने का प्रयास किया। काश ! आप अगर सही अध्यात्म को समझकर अध्यात्मवादी हो जाएँ, तो मजा आ जाएगा।

मित्रो, अगला समय बहुत शानदार आने वाला है, दुनिया में से अनीति मिटने जा रही है, कुरीतियाँ मिटने जा रही हैं, डिप्लोमेटिक मेण्टेलिटी मिटने जा रही है। आप विश्वास करें या न करें, परन्तु हमें अपनी आँखों से दिखायी पड़ रहा है कि एक नयी हवा आ रही है। नयी दुनिया बनती आ रही है। नये विश्व का निर्माण होने जा रहा है। बहुत शानदार समय आ रहा है। उस नये युग में आध्यात्मिकता की नयी परिभाषा होगी तथा पुरानी परिभाषा मिट जाएगी। यह संतोषी माता की हवा उड़ती जा रही है तथा पता नहीं कहाँ जा रही है। मित्रो ! अब वह संतोषी माता आ रही है, जिसमें मनुष्य को संतोष करना सिखाया जाएगा। भौतिक चीजों में जिसको संतोष आ जाए, तो मजा आ जाएगा। ऐसा व्यक्ति अपनी प्रतिभा और धन को लोकमंगल में खर्च कर देगा तथा वह अध्यात्मवादी बन जाएगा। छाया की तरह से सुख उस अध्यात्मवादी के पीछे भागते फिरेंगे। वह अपने लिए नहीं खर्च करेगा। ऐसे ही व्यक्ति का जीवन धन्य होता चला जाता है। उसकी प्रगति होती चली जाती है।

अध्यात्मवादी भीख माँगने वालों का नाम नहीं है। वह देने वालों का नाम है। वह भगवान का अनुग्रह व एहसान माँगने वाला व्यक्ति नहीं है, बल्कि परमात्मा उसके पीछे-पीछे चलने लगता है तथा उसका जीवन धन्य कर देता है। परमात्मा उनकी सहायता करता है, जो अपनी सहायता आप करने को तैयार

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

हैं। अपने अन्दर महत्वपूर्ण तथ्य जो छिपे पड़े हैं, उन्हें जाग्रत करने का नाम अध्यात्म है। अध्यात्म आत्मशक्ति विकसित करने का नाम है। इनको मैं आपको इस शिविर में बतलाता रहा हूँ। आप से निवेदन करता रहा हूँ कि आप हमारी बातों को इस कान से सुनकर उस कान से मत निकाल दीजिए। हम वैखरी वाणी का भी उपयोग करते रहे हैं। भगवान यानि कि ब्रह्माजी भी चार मुख से बोलते रहे हैं। इनसान भी चार मुख से बोलते हैं। ये है 'वैखरी वाणी,' जिसे मैं एक घण्टे से बोल रहा हूँ। यह मनुष्यों के कानों में जाती है तथा मस्तिष्क से टकराती है। इस वाणी से हमने आपको अध्यात्म के सिद्धान्त को बतलाया तथा समझाया।

दूसरी 'मध्यमा वाणी' है। यह भाव को उभारने का काम करती है। यह अन्तःकरण को प्रभावित करती है। इसके प्रभाव से शेर एवं गाय एक घाट पर पानी पीते हैं। तीसरी है-'परावाणी'। विचारों की वाणी को परावाणी कहते हैं। चौथी है-'पश्यन्ती वाणी।' पश्यन्ती वाणी आत्मा की वाणी होती है। यह आत्मा में घुस जाती है। नारद ने बाल्मीकि के हृदय में एक बात कही थी और वह प्रभावित हो गये। बुद्ध ने अपने हजारों शिष्यों को इसी प्रकार प्रभावित किया था। आप भी जब सोते रहते हैं, तो हम आपके पास जाते हैं। किसी के पैर के पास बैठ जाता हूँ, तो किसी के सिर के पास बैठकर उसका सिर सहलाता रहता हूँ। आपको पता चलता है कि नहीं, यह मैं नहीं पूछ सकता हूँ। आपकी श्रद्धा जैसे-जैसे बढ़ती जाएगी, आप अनुभव करते चले जाएँगे। हमारे गुरुदेव जब हमारे कमरे में आए और पश्यन्ती वाणी से क्या कहा, यह तो हमें पता नहीं, परन्तु वे हमें धन्य कर गये। अनुदान क्या-क्या दिए, यह तो मैं नहीं कह सकता, परन्तु इस दुनिया से जाने के बाद जब हमारे जीवन का लिफाफा, जो बन्द है, वह जब खोला जाएगा, तो पता चलेगा कि हम कौन थे तथा हमने इस दुनिया के लिए, संसार के लिए, संस्कृति के लिए क्या-क्या किया? हमें विश्वास है कि आप यहाँ से जाएँगे तथा हमारा प्रसाद लेकर जाएँगे, तो वह आपके अपने जीवन में काम आएगा तथा आप धन्य होते हुए चले जाएँगे।

आप अध्यात्म के सिद्धान्त को अपनाएँ या न अपनाएँ, परन्तु इस दुनिया में जो लोग रहते हैं, उनके साथ मीठा व्यवहार करना, उनके साथ प्रेम का व्यवहार करना। जिनको अपना दुश्मन बना लिया है, उनको भी मित्र, दोस्त बना लेना। इमर्सन कहते रहते थे कि हमें नरक में भेज दो, हम वहाँ भी स्वर्ग बना लेंगे। व्यक्ति दुश्मन हमारे व्यवहार के कारण बन जाता है। आप अपने व्यवहार को ठीक करने का प्रयास करना तो धरती को स्वर्ग बनाया जा सकता है। अगर आपने अपनी भावना को परिष्कृत कर लिया तो मजा आ जाएगा। अगर आपकी वाणी में मिठास आ जाती है, तो आपके लिए हर आदमी मित्र बन जाएगा।

एक बात हमने आपको और कही है कि आपको मेहनत करनी है। मशक्कत करनी है। धरती में जिस तरह लोहा, ताँबा-सोना भरा पड़ा है ऐसे ही हमारे भीतर भी बहुत-सी चीजें भरी पड़ी हैं। जमीन में हल जोते बिना, बीज बोये बिना फसल कैसे प्राप्त हो सकती है? बिना मेहनत के कोई चीज कैसे पायी जा सकती है? मेहनत-मशक्कत करने के बाद ही सारी चीजों को प्राप्त किया जा सकता है। आपको अपने प्रति कठोर तथा दूसरों के लिए मुलायम बनना होगा। यह सिद्धान्त संयम का सिद्धान्त है।

चौथी बात हमने आपसे कही थी कि यह जलता हुआ जमाना है। हर व्यक्ति जल रहा है। आपको इस जलते हुए समाज के ऊपर पानी डालने की आवश्यकता है। यह है ऊँचे विचार की आवश्यकता। मित्रो ! हम यह पूछते हैं कि बकरा खाने के बाद कोई बकरे की औलाद कहलाएगा या नहीं? यह तो हमें बतलाना। हम पूछते हैं कि उसमें जो अवगुण हैं, वह खाने वाले में आएँगे कि नहीं? आज सामाजिक मान्यता के बारे में, खान-पान के बारे में, पड़ोसी के बारे में हर व्यक्ति की उलटी अकल हो गयी है। इससे आपका क्या बनने वाला है- आपको यह ठीक करना होगा। समाज के लोगों के विचारों को ठीक करना होगा, उनकी भावनाओं में परिवर्तन लाना होगा।

मित्रो, इतना ही नहीं पैसा खर्च करने में, जीवन को महान बनाने के बारे में भी लोगों की उलटी अकल है। यदि सारे-के-सारे लोग इस तरह के होंगे, तो काम कैसे चलेगा? इन उलटी अकल वाले लोगों का नवनिर्माण करना होगा। उन्हें दिशा देनी होगी। उनके विचार ठीक करने होंगे। इस उलटे जमाने को सीधा करने के लिए आपको जो हमारा अनुदान मिल रहा है, इस कार्य हेतु आप हमें सहयोग करिए। हमारे कंधे-से-कंधा मिलाकर चलने का प्रयास करेंगे, तो हमारा यह शिविर धन्य हो जाएगा। हम धन्य हो जाएँगे और आपका जीवन धन्य हो जाएगा। आने वाली पीढ़ियाँ आपको सदा याद रखेंगी।

मित्रो! हम लम्बे कदम बढ़ाते हुए लम्बी मंजिल की ओर बढ़ते जा रहे हैं। आप भी अपना कदम उस ओर अवश्य बढ़ाना तथा हमारा सहयोग करना। गाँव में यह नियम होता है कि जब कोई मर जाता है या कोई भी काम होता है, तो जो व्यक्ति वहाँ जाता है, वह उसके साथ पाँच कदम चलता है तथा पाँच कदम के बाद ही वह वापस होता है। मित्रो! कम से कम आप लोग भी हमारे साथ पाँच कदम तो चलने का प्रयास करना। जमाना बदल रहा है हमारे साथ, जमाना उठ रहा है हमारे साथ। इसी तरह आप भी हमारे साथ चलना। कहीं ऐसा न हो कि आप चल तो रहे हैं इधर, पर देख रहे हैं उधर! ऐसा कभी मत करना। हमारे कदम से कदम मिलाकर चलना। ताल से ताल मिलाकर चलना, चाहे पाँच ही कदम क्यों न चलना, भले ही एक घण्टा हमारे साथ चलना।

हमने एक बात और कही थी आपसे कि आप अपनी कमाई का दस पैसा ही खर्च करना-एक नये समाज के

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

नवनिर्माण के लिए, परन्तु उसमें सक्रियता लाना तथा उसे निभाना। आज पच्चीस पैसे की चाय आती है। हमने समाज, संस्कृति और देश के लिए आपसे केवल आधा प्याला चाय की माँग की है। वह तो आप अवश्य देना, अगर समाज के लिए इतना कर सके, तो हम समझेंगे कि आपने हमारे साथ एक कदम चलने का साहस किया, प्रयास किया।

मित्रो! जब आप सोये रहते हैं, तो हम आपके पास बैठकर आपके कानों में चार बातें कहते हैं, उसका शिक्षण दिया करते हैं, ताकि आप आध्यात्मिकता के रास्ते पर आगे बढ़ सकें। आज आपको घर के लिए विदा कर रहे हैं। आप अपने घर चले जाएँगे तथा हम भी यहाँ घर में बैठे रहेंगे। हमें और आपको एक-दूसरे की याद अपने-अपने घरों में आती रहेगी। दो बैलों की जोड़ी होती है, अगर एक बैल बीमार हो जाता है या कहीं चला जाता है, तो दूसरा बैल काम नहीं करता है। वह सारा दिन कोहराम मचाता रहता है, न चारा खाता है, न पानी पीता है, उसकी आँखों में विछोह के आँसू होते हैं। मित्रो, हम बैलों से ज्यादा हैं, कम नहीं, यह ध्यान रखना।

मित्रो, हम आपके सगे-सम्बन्धी हैं। सगे-सम्बन्धी वे नहीं हैं, जो एक खून से पैदा होते हैं, वरन वे होते हैं, जो एक रास्ते पर चलते हैं, जिनके विचार एक होते हैं, जिनके गुण मिलते हैं। आप हम सब एक गुण वाले लोग हैं, एक भावना वाले लोग हैं, एक दिशा वाले लोग हैं, मोहब्बत वाले लोग हैं। हमारे आपके बीच एक ऐसा प्यार, ऐसी मोहब्बत है, जो कभी भी खत्म होने वाली नहीं है। आप जब जा रहे हैं, तो हमारा दिल टूट रहा है। हम आपके जन्मदाता माता-पिता से भी ज्यादा मोहब्बत करते हैं, ऐसा तो हम दावा नहीं कर सकते, परन्तु आपके किसी भी मित्र से कम मोहब्बत नहीं करते। दोस्त के पास दोस्त आता है, तो उसको खुशी होती है, परन्तु जब वह विदा होता है, तो उसकी आँखों में आँसू आ जाते हैं । यह हमारी एवं आपकी कमजोरी है। आप जब विदा होते हैं, तो मेरा भी दिल दुखी हो जाता है। विदाई के क्षणों में बड़े-बड़े संतों की भी यही हालत हो जाती है। कबीरदास जब मरने लगे तो उन्होंने एक मर्मभरी बात कही थी-

राम बुलावा भेजिया, दिया कबीरा रोय।
जो सुख-प्रेमी संग में, सो बैकुण्ठ न होय।

वास्तव में प्रेम ही इस संसार की सर्वोपरि उपलब्धि है।

मित्रो! जो व्यक्ति अपना होता है या जिसे जो अपना मानता है, उसकी विदाई बहुत ही कष्टकारक होती है। इसे मनुष्य की कमजोरी कहें या प्रकृति का विधान कहें। इसमें आप भी हैं तथा हम भी हैं। हमारा दिल टूट रहा है और आपका दिल भी टूट रहा है- ऐसा हम महसूस कर रहे हैं। परन्तु क्या हम आपको छोड़ देंगे? यह कभी नहीं हो सकता। भूत जो होता है वह जिसे चाहता है, उसके पीछे लगा रहता है। हम भी आपके पीछे-पीछे लगे रहेंगे। आपको छोड़ नहीं सकते। आप भी अनुभव करते रहेंगे कि आचार्य जी के भाषण बन्द हो गये, परन्तु उनकी प्रतिध्वनि आपके कानों में हमेशा गूँजती रहेगी। हम नारियल की तरह ऊपर से कठोर हैं, परन्तु भीतर से मुलायम हैं, जिसमें दूध भरा हुआ है। भगवान ने न जाने क्यों हमें मनुष्य बना दिया और हमारे मूँछ लगा दीं, अगर मूँछें निकाल दी जाएँ, तो हमारा हृदय माता की तरह है। माता का हृदय कितना कोमल होता है, यह आप सभी जानते हैं। हमारा हृदय भी कोमल है। आप चले जाएँगे, परन्तु हम आपको बिछुड़ने नहीं देंगे। हम आपको छोड़ नहीं सकते। हम आपको सुखी, सम्पन्न बनाना चाहते हैं, महान बनाना चाहते हैं। महान बनाते-बनाते वहाँ तक पहुँचाना चाहते हैं जहाँ हमारे गुरु ने हमें पहुँचाया है।

मथुरा के विदाई समारोह के साथ ही हमारे प्रेम की प्रौढ़ता का शुभारम्भ हो रहा है। आज से हमारी मित्रता की शुरुआत है। यह जिन्दगी भर इसी प्रकार बनी रहेगी। हमारे ऊपर आप जैसे हजारों लोगों का स्नेह है। आपका प्यार जो हमें मिलता है, उसी में हम डूबे रहते हैं। हम चाहते हैं कि इस स्नेह के आदान-प्रदान का यह क्रम हमेशा बना रहे। हम बहुत सुखी हैं-आप लोगों का स्नेह पाकर। कभी-कभी हम यह सोचते हैं कि आप के इस प्रेम का हम किस तरह से बदला चुकाएँगे। आप अपने घर से आये थे चिलचिलाती धूप में। ठहरने की अच्छी व्यवस्था यहाँ कहाँ थी? पानी की व्यवस्था यहाँ कहाँ थी? भोजन की व्यवस्था भी हम ढंग से नहीं कर सके, परन्तु एक चीज हमारे पास है और वही हमने आपको देने का प्रयास किया है। वह चीज है 'निस्वार्थ प्रेम' यही निधि हमारे पास है, जो हम आपको देते रहे हैं और हमेशा देते रहेंगे। हमारे प्रेम में आप यह कभी भी नहीं पाएँगे कि यह व्यक्ति किसी स्वार्थ के लिए आपसे प्रेम करता है। यह आदमी पैसा लेना चाहता है या और न जाने क्या चाहता है? मित्रो ! हमें अपने प्यार पर विश्वास है, यही नहीं हम एवं आप न जाने कितने जन्मों से साथ-साथ चलते आ रहे हैं। हम और आप जब तक नये जमाने को नहीं ला देते तब तक बिछुड़ने वाले नहीं हैं। अभी हमें सीता रूपी भारतीय संस्कृति को वापस लाना है, रावण को समाप्त करना है, समुद्र में पुल बाँधना है। आप लोग उस समय तक हमारे साथ रहेंगे। अभी आपको हम नहीं छोड़ेंगे तथा आप भी हमें नहीं छोड़ सकेंगे। आप जाएँ, सुखी रहें, समुन्नत बनें तथा प्रगति करें।

अकारण शरीर को सताने का नाम तप नहीं है। सताना तो किसी का भी बुरा है। फिर शरीर को व्यथित और संतप्त करने से क्या हितसाधन हो सकता है? तपस्या वह है-जिसमें सत्यमय जीवन निर्धारित करने के कारण सीमित उपार्जन से निर्वाह करने की स्थिति में मितव्ययता अपनानी पड़ती है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित दुख माप्नुयात।

❁

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी-

संकल्पशक्ति की महिमा एवं गरिमा

(अक्टूबर, १९८२ कल्पसाधना सत्र में दिया गया प्रवचन)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्!

देवियो, भाइयो! प्रकृति का कुछ ऐसा विलक्षण नियम है कि पतन स्वाभाविक है। उत्थान को कष्टसाध्य बनाया गया है। पानी को आप छोड़ दीजिए, नीचे की ओर बहता हुआ चला जाएगा, उसमें आपको कुछ नहीं करना पड़ेगा। ऊपर से आप एक ढेला जमीन पर फेंक दीजिए, वह बड़ी तेजी के साथ गिरता हुआ चला आएगा, आपको कुछ नहीं करना पड़ेगा। नीचे गिरने में कोई मेहनत नहीं करनी पड़ती, कोई प्रयास नहीं करना पड़ता। ऐसे ही संसार का कुछ ऐसा विलक्षण नियम है कि पतन के लिए, बुरे कर्मों के लिए आपको ढेरों साधन मिल जाएँगे, सहकारी-सहयोगी मिल जाएँगे, किताबें मिल जाएँगी और कोई नहीं मिलेगा तो आपके पिछले जन्म-जन्मान्तर के कुसंस्कार ही आपको इन मामलों में बहुत मदद करेंगे। वे आपको गिराने के लिए बराबर प्रोत्साहित करते रहेंगे। पापपंक में घसीटने के लिए बराबर आपका मन चलता रहेगा। इसके लिए न किसी अध्यात्म की जरूरत है, न किसी की सहायता की जरूरत है। यह तो अपनी प्रकृति 'नेचर' ऐसी हो गयी है।

'ग्रेविटी'-गुरुत्वाकर्षण पृथ्वी में है। ग्रेविटी क्या करती है? ग्रेविटी ऊपर की चीजों को नीचे की ओर खींचती है। न्यूटन ने देखा कि सेब का फल जमीन पर गिरा। जमीन पर क्यों गिरा? जमीन की एक विशेषता है, कशिश है कि ऊपर की चीज को वह नीचे की ओर खींच लेती है। नीचे की तरफ गिराने वाली कशिश इस संसार में इतनी भरी पड़ी है कि उससे अगर आप बचाव न करें, उसका विरोध अगर आप न करें, उसका मुकाबला अगर आप न करें, तो विश्वास रखिए आप निरंतर गिरेंगे, पतन की ओर गिरेंगे। आज हमारा सारा समाज इसी तरफ चल रहा है। आप नजर उठाकर देखिए, कहाँ ऐसे आदमी मिलेंगे, जो सिद्धान्तों को ग्रहण करते हों और आदर्शों को अपनाते हों। आप जिन्हें भी देखें, अधिकांश लोग बुराई की ओर चलते हुए दिखाई पड़ेंगे। पाप और पतन के रास्ते पर उनका चिंतन और मनन काम कर रहा होगा। उनका चरित्र भी गिरावट की ओर और उनका चिंतन भी गिरावट की ओर जाता हुआ दिखायी देगा। सारे जमाने में यही भरा हुआ पड़ा है।

ऐसी स्थिति में आपको क्या करना चाहिए? आपको अगर ऊँचा उठना है, तो आपको अपने भीतर से हिम्मत इकट्ठी करनी चाहिए। क्या हिम्मत करें? यह हिम्मत करें कि ऊँचे उठने वाले जिस तरीके से संकल्पबल का सहारा लेते रहे हैं और हिम्मत से काम लेते रहे हैं, व्रतशील बनते रहे हैं, आपको भी उसी तरीके से संकल्पवान और व्रतशील बनना चाहिए। आपने देखा होगा, जब जमीन पर से ऊपर चढ़ते हैं तो जीने का इंतजाम करते हैं, सीढ़ी का इंतजाम करते हैं, तब मुश्किल से धीरे-धीरे चढ़ते हैं। गिरने में क्या देर लगती है? आपको कोई ढेला ऊपर फेंकना हो, तब देखिए न, कितनी ताकत लगानी पड़ती है? और गिराने में? गिराने में क्या देर लगेगी? अंतरिक्ष से उल्काएँ अपने आप गिरती रहती हैं जमीन की ओर। रॉकेट अगर ऊपर फेंकना हो तब? आपने देखा होगा कि करोड़ों रुपया खर्च करते हैं तब कहीं जाकर रॉकेट अंतरिक्ष में फेंकना संभव होता है। किन्तु गिरावट में? गिरावट में तो पत्थर के टुकड़े और उल्काएँ अपने आप जमीन पर आ जाती हैं, बिना किसी के बुलाये और बिना कुछ खर्च किए। पानी को कूएँ में से निकालने के लिए कितनी मेहनत करनी पड़ती है और कूएँ में डालना हो, तो कोई मेहनत नहीं, डाल दीजिए। आपको यही करना पड़ेगा।

चौरासी लाख योनियों में भटकते हुए आपने ढेरों-के-ढेरों जो कुसंस्कार इकट्ठे कर लिए हैं, अब इन कुसंस्कारों के खिलाफ बगावत शुरू कर दीजिए। कैसे करें? अपने को मजबूत बनाइए। अगर मजबूत नहीं बनाएँगे तो पुराने कुसंस्कार फिर आ जाएँगे। मन को समझाएँ तो जरा-सी देर के लिए तो समझ जाएगा, परन्तु फिर उसी रास्ते पर आ जाएगा। अतः अपने मनोबल को मजबूत करने के लिए आपको कोई संकल्प ले लेना चाहिए। आपको संकल्प-शक्ति का विकास कर लेना चाहिए। संकल्प-शक्ति किसे कहते हैं? संकल्पशक्ति उसे कहते हैं, जिसमें यह फैसला कर लिया जाता है कि हमें यह तो करना ही है और हर हालत में करना है। हम करेंगे या मरेंगे। इस तरह का संकल्प अगर आप किसी तरीके से कर लें, तब आप विश्वास रखिए, आपका जो मानसिक निश्चय है वह आपको आगे बढ़ा देगा। अगर आपका मनोबल और निश्चय दृढ़ नहीं है तो फिर आप जैसे ख्वाब देखते रहते हैं कि यह करेंगे, वह करेंगे, विद्या पढ़ेंगे, व्यायाम करना शुरू करेंगे, तो आप कल्पना ही करते रहेंगे, परंतु कभी कुछ कर नहीं पाएँगे। कल्पनाएँ आज तक किसी की सफल नहीं हुई हैं और संकल्प किसी के अधूरे नहीं रहे।

इसलिए मित्रो, संकल्पशक्ति का सहारा लेने के लिए आपको व्रतशील बनना चाहिए, आप व्रतशील बनें। बस निश्चय कर लीजिए कि अच्छा काम करेंगे, जो भी हो चाहे छोटा हो चाहे बड़ा हो, यह कार्य अवश्य करेंगे। बुराइयों को छोड़ने के लिए संकल्प करने पड़ते हैं। जैसे आज से हम बीड़ी नहीं पिएँगे

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अब यह बहाना नहीं करेंगे कि नहीं साहब अगर बीड़ी नहीं पिएँगे तो हमारा पेट साफ नहीं होगा। अरे पेट साफ नहीं होगा तो उसके लिए कोई दवा ले लो, पर संकल्प कर लो कि हम बीड़ी नहीं पिएँगे। अगर आपका मन कच्चा बना रहा कि हम बीड़ी पीना छोड़ें या न छोड़ें, आज और पी लें फिर कल छोड़ देंगे, परसों से छोड़ देंगे, इस तरह आप कभी नहीं छोड़ सकते। श्रेष्ठ काम करने के लिए, उन्नति की दिशा में आगे बढ़ने के लिए आपको संकल्प जल्दी-से-जल्दी ले लेना चाहिए कि हम ये काम करेंगे। संकल्प में बहुत बड़ी शक्ति है। जब कोई व्यक्ति यह संकल्प कर लेता है कि हम यह काम करेंगे, तब वह उस काम को कर लेता है। संकल्पवान व्यक्ति अच्छा काम जब तक पूरा नहीं कर लेते, तब तक कोई और काम नहीं करेंगे, ऐसा दृढ़ निश्चय कर लेते हैं। इसके लिए वे कोई-न-कोई व्रत निर्धारित कर लेते हैं-जैसे नमक नहीं खाएँगे, घी नहीं खाएँगे आदि। देखने में तो यह कोई खास बात नहीं है। आपके अन्य काम करने से नमक का क्या ताल्लुक है? अगर आप शक्कर नहीं खाएँगे तो क्या बात बन जाएगी। घी खाना बंद कर दिया तो कौन-सी बड़ी बात हो गयी और इससे कौन-सी सहायता आपको काम में मिलेगी? बाहरी तौर पर इन चीजों में तो दम नहीं है, लेकिन दम उस बात में है कि आपने इतना कठोर निश्चय कर लिया है और आपने सुनिश्चित योजना बना ली है कि इस कार्य को तो हम को करना ही करना है, तब आप बिलकुल विश्वास रखिए,आपका काम पूरा हो करके रहेगा।

मित्रो, चाणक्य की बात आपको नहीं मालूम? चाणक्य ने यह निश्चय कर लिया था कि जब तक नन्दवंश का नाश न कर लूँगा, चोटी नहीं बाँधूँगा और बाल बिखेर लिए थे। यह अपने व्रत या प्रतिज्ञा को याद रखने का एक प्रतीक है। लोग प्रतिज्ञाएँ भूल जाते हैं, लेकिन अपने अंदर अगर कोई ऐसा अनुशासन धारण कर लें तो आदमी भूलता नहीं, इसलिए कोई-न-कोई अनुशासन मान लें तो अच्छा है। जैसे एक बार ऐसा हुआ-भगवान महावीर के पास एक बहेलिया गया। उसने कहा-हमें अध्यात्म की दीक्षा लेनी है आप से, तो भगवान ने कहा-आपको दक्षिणा में अहिंसा का पालन करना पड़ेगा और मांस खाना छोड़ना पड़ेगा। तो उसने कहा कि हम तो बहेलिए हैं, यह सब तो हम नहीं कर पाएँगे। बच्चों को कहाँ से खिलाएँगे पशु-पक्षी नहीं मारेंगे तो? महावीर ने उसको सलाह दी कि कम-से-कम एक जीव का मांस खाना छोड़ दे, चाहे वह किसी का भी हो। कम-से-कम एक प्राणी को न मारने का संकल्प ले ले, तब भी तेरा अहिंसा का प्रण मान लिया जाएगा। बहुत विचार करता रहा बहेलिया, फिर उसने एक जीव को पाया, जिसके ऊपर वह दया करने को तैयार हो गया और उसको न मारने की कसम खाने को तैयार हो गया। उसका नाम था-कौआ। कौए को नहीं मारूँगा, कभी नहीं मारूँगा, कौए पर दया करूँगा, बस उसने यह संकल्प ले लिया और गुरुदीक्षा ले ली। रोज विचार करने लगा कि कौए पर दया करनी चाहिए। कौआ बेचारा कितना निरीह होता है। उस बेचारे को क्यों कष्ट दें, उसके भी तो बाल-बच्चे होंगे, उसको भी तो भगवान ने रचा है। हम अपने छोटे-से लोभ के लिए कौए को क्यों मार डालें? बस यह विचार जब जड़ जमाता हुआ चला गया, तो धीरे-धीरे बहेलिया ऐसा हो गया कि वह सब प्राणियों पर दया करने लगा और अंततः जैन धर्म का एक बहुत बड़ा तीर्थंकर बन गया। कैसे? दिशा जो मिल गयी।

बुरे कर्म छोड़ेंगे और अच्छे कर्म करेंगे, इसके लिए मन का संकल्प कमजोर न पड़ने पाये और हम भूल-भुलैयों में न पड़ने पायें, इसलिए कोई-न-कोई व्रत लेना बहुत जरूरी है। अनुष्ठान में यही होता है। अनुष्ठान में जप की संख्या तो उतनी ही होती है, परन्तु उसके साथ-साथ व्रत और संकल्प लेने पड़ते हैं। जैसे उपवास का एक, ब्रह्मचर्य का दो, मौन का तीन, जमीन पर सोने का चार, अपनी सेवाएँ अपने आप करने का पाँच आदि। ऐसा क्यों करते हैं? ये बातें मनोबल को बढ़ाने की प्रक्रियाएँ हैं। इससे आदमी का संकल्प मजबूत होता है। अध्यात्म का प्राण संकल्प है। संकल्प को जीवन में से अगर आप निकाल दें तो फिर क्या काम बनेगा? राणाप्रताप ने निश्चय कर लिया था कि वह थाली में भोजन नहीं करेंगे। उन्होंने संकल्प किया था कि जब तक आजादी प्राप्त न कर लेंगे तब तक पत्तल में रखकर भोजन करेंगे। आपने कभी गाड़ी वाले लुहार देखे हैं? गाड़ी वाले लुहार अब भी पत्तल पर भोजन करते हैं, थाली में नहीं करते। वे अपने आपको राणाप्रताप का वंशज बताते हैं और यह कहते हैं कि महाराणा ने प्रतिज्ञा ली थी कि हम घर में नहीं घुसेंगे, बाहर जंगल में घूमेंगे और पत्तल में भोजन करेंगे, इसलिए हम भी घर में नहीं घुसेंगे, बाहर ही घूमते रहेंगे। जब उन्हें आजादी नहीं मिली, फिर हम क्यों सुखों का भोग करेंगे। इस तरीके से संकल्प कर लेना, व्रतधारण कर लेना कई बार बहुत उपयोगी और बहुत अच्छा होता है। अनुष्ठानकाल में नमक का त्याग कर देने वाली बात, शक्कर का त्याग कर देने वाली बात, हजामत न बनाने वाली बात, चमड़े के जूते-चप्पल न पहनने वाली बात, ये कई बातें ऐसी हैं, जो आदमी के संकल्प को और मजबूत कर देती हैं। आपको अपने संकल्प मजबूत बनाने चाहिए।

संकल्प को पूरा करने में कई बातें, कठिनाइयाँ सामने आती हैं, तो कोई बड़ी बात नहीं। ये बातें संकल्प को और मजबूत बना देती हैं। संकल्पबल न हो तब? हिम्मत न हो तब? तब आदमी बिना पेंदी के लोटे की तरह इधर-उधर भटकता फिरता है। मनोबल बढ़ाने के लिए कोई-न-कोई संकल्प, अनुशासन जीवन में रखना बहुत जरूरी है। गाँधीजी ने तैंतीस वर्ष की उम्र में ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा ली थी और यह कहा था कि हम तो यह निभाएँगे। उस महामानव में भी कुछ-न-कुछ तो कच्चाइयाँ रही होंगी।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

दूसरों की तरह से शायद उनका मन भी भीतर-ही-भीतर डगमग-डगमग करता रहा होगा, लेकिन उनके संकल्पबल ने कहा-नहीं हमने यह निश्चय कर लिया है कि "रघुकुल रीति सदा चलि आई। प्राण जाएँ पर बचन न जाई।" इस तरह का संकल्प जब उन्होंने ले लिया, तब उसे निभाया भी। कमजोरियों से लड़ा भी गया। जब संकल्प न लिया होता तब? व्रत न लिया होता तब? निश्चय न किया होता तब? तब फिर कुछ भी संभव नहीं था। संकल्प धारण करने के बाद तो आदमी की आधी मंजिल पार हो जाती है। आपको भी अपने मनोबल की वृद्धि के लिए आत्मानुशासन ग्रहण करना चाहिए। आत्मानुशासन वह लाठी है, जिसे बरसात में फिसलने वाले और पहाड़ पर चढ़ने वाले लेकर चलते हैं और उससे जहाँ पर फिसलन होती है, अपने आपको बचा लेते हैं, सहारा मिल जाता है। संकल्प उस लाठी की तरह है, जो आपको गिरने से बचा लेती है और आपको ऊँचाई पर चढ़ने, आगे बढ़ाने के लिए हिम्मत प्रदान करती है।

मित्रो, शीरी-फरिहाद की बात सुनी है न आपने? राजा ने फरिहाद से यह कहा कि अगर आप बत्तीस मील लम्बी नहर खोदकर यहाँ तक ला सकें, तो फिर आपकी शादी शीरी से हो सकती है। पहाड़ पर ऊँचाई पर एक तालाब तो था, पर वह शहर से इतनी दूर था कि जिससे पानी के लिए बड़ी किल्लत रहती थी। फरिहाद ने भी कह दिया कि हम "करेंगे या मरेंगे।" उसने जब निश्चय कर लिया कि हमको नहर खोदनी है तब? तब वह कुल्हाड़ी और हथौड़ी लेकर चल दिया। उसने पहाड़ काटना शुरू कर दिया। बाहर के आदमी आते, कुछ दिन मजाक होती रही, कुछ मखौल उड़ाते रहे। कोई पागल कहता, कोई बेवकूफ कहता रहा, लेकिन जब देखा कि इस आदमी ने निश्चय कर लिया है कि हम यह काम करके रहेंगे तो लोगों में सहानुभूति भी पैदा हो गयी। संकल्प वालों के प्रति लोगों में सहानुभूति भी होती है और वह सहानुभूति के अधिकारी भी होते हैं। जिनके पीछे संकल्पशक्ति नहीं है वह मजाक के, उपहास के पात्र भी बनते हैं। फरिहाद की लोगों ने मदद की। लोग आये और स्वयं भी कुल्हाड़ी-हथौड़े चलाने लगे और नहर खोदने में मदद करने लगे। समय तो थोड़ा लग गया, लेकिन फरिहाद ने नहर खोदकर वहाँ तक ला दी, जहाँ तक राजा ने बतायी थी।

साथियो, यह सब संकल्पबल की बातें मैं कह रहा हूँ। संकल्पबल आपको प्रत्येक काम में प्रयोग करने की जरूरत है। ब्रह्मचर्य के संबंध में, खान-पान के संबंध में। समयदान और अंशदान के संबंध में, आपको कोई-न-कोई काम ऐसे करने चाहिए, जिसमें कि यह प्रतीत होता हो कि कुछ तो ऐसा संकल्प आपने लिया है, जिसके निर्वाह करने में आप लगे हुए हैं। यही मनोबल बढ़ाने का तरीका है। मनोबल से बढ़िया और कोई आपके पास शक्ति नहीं है। पैसे की ताकत अपने आप में सही है, बुद्धि की ताकत अपने आप में ठीक है, लेकिन ऊँचा उठने का जहाँ तक ताल्लुक है, वहाँ मनोबल और संकल्पबल को ही सब कुछ माना गया है। संकल्पबल और मनोबल से ज्यादा बढ़ करके आदमी के व्यक्तित्व को उभारने वाली, प्रतिभा को उभारने वाली, उसके चरित्र को उभारने वाली और कोई वस्तु है ही नहीं। संकल्पबल की वृद्धि के लिए यह आवश्यक है कि आप छोटे-छोटे कुछ ऐसे नियम या व्रत थोड़े समय के लिए निर्धारित कर लें कि यह काम जब तक न कर लेंगे तब तक हम यह नहीं करेंगे, मसलन शाम को हम किताब के इतने पन्ने जब तक नहीं पढ़ लेंगे, तब तक सोएँगे नहीं। इसी तरह हम सबेरे का भजन-उपासना जब तक पूरी न कर लेंगे, खाएँगे नहीं। यह क्या है? यह व्रतशीलता के साथ में जुड़ा हुआ थोड़ा-सा अनुशासन है।

अनुशासन उन संकल्पों का नाम है जिसमें किसी सिद्धांत का तो समावेश होता ही है, लेकिन उस सिद्धांत के साथ-साथ में, उस कार्य को पूरा करने के साथ-साथ में ऐसा भी कुछ फैसला किया जाता है, जिससे कि अपने आप में कुछ स्मरण बना रहे। जैसे जब तक हम मैट्रिक पास न कर लेंगे तब तक चप्पल नहीं पहनेंगे। इससे क्या होता है? इससे बराबर यह दबाव बना रहता है कि यह काम करना था, हम नहीं कर पा रहे हैं। चप्पल भी तो इसीलिए नहीं पहनते। यह बात बार-बार आपको याद दिलाती रहेगी कि हमको मैट्रिक करना है, अच्छे नम्बर से पास करना है, दिन भर पढ़ना है। चप्पल पर जब भी ध्यान जाएगा, अरे हम चप्पल कैसे पहन सकते हैं, हमने तो संकल्प किया हुआ है, व्रत लिया हुआ है। व्रत और संकल्प आदमी की जिंदगी के लिए बहुत बड़ी चीजें हैं। आप ऐसा ही किया कीजिए। आप को यहाँ से जाने के बाद कई काम करने हैं, बहुत अच्छे काम करने हैं, लेकिन वह चलेंगे नहीं। आपका मन बराबर ढीला होता चला जाएगा। उसको ठीक करने के लिए आप एक विचारों की सेना और विचारों की शृंखला बनाकर तैयार रखिए। विचार ही विचारों को काटते हैं। जहर को जहर से मारते हैं। काँटे को काँटे से निकालते हैं। कुविचार जो आपके मन को हर वक्त तंग करते रहते हैं, उसके मुकाबले पर एक ऐसी सेना खड़ी कर लीजिए, जो आप के बुरे विचारों से लड़ सकने में समर्थ हो।

मित्रो, अच्छे विचारों की भी एक सेना है। जब भी बुरे विचार आते हैं, कामवासना के विचार आते हैं, व्यभिचार के विचार आते हैं, तो फिर आप ऐसा किया कीजिए कि उसके मुकाबले एक और सशक्त सेना खड़ी कर लिया कीजिए, अच्छे विचारों वाली सेना। जिसमें आपको यह विचार करना पड़े कि हनुमान कितने सामर्थ्यवान हो गए ब्रह्मचर्य की वजह से। भीष्म पितामह कितने समर्थ हो गए ब्रह्मचर्य के कारण। आप शंकराचार्य से लेकर के अनेक संतों, महात्माओं की बातें याद कर सकते हैं, जिन्होंने अपने को अच्छे विचारों में लगा लिया। अगर उन्होंने अपने को कुविचारों से लगा लिया होता तो फिर बेचारे

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

संकल्पों की क्या विसात थी जो पूरे होते। कुसंस्कार हावी हो जाते और जो संकल्प किया था, वह एक कोने में रखा रह जाता। सदाचार के लिए आप विचार करें तो कैसे करें? आप उनके लिए एक बड़ी सामर्थ्य वाली सेना बना लीजिए। एक सेना बना लीजिए, जो भी बुरे विचार आए उसे काटने के लिए। लोभ के विचार आएँ, लालच के और बेईमानी के विचार आएँ तो उन्हें काटने के लिए आप ईमानदारी के समर्थन के लिए उनके इतिहास, उदाहरण और शास्त्रों के, महापुरुषों के वचन संग्रह करके रखिए कि ईमानदारी की ही कमाई खाएँगे, बेईमानी की कमाई हम नहीं खाएँगे। इस तरह आपने अगर विचारों की सेना तैयार कर ली है, तो वह आपके लिए स्वर्ग होगा। चाहे बेईमानी के विचार आएँ, काम-वासना के विचार आएँ, ईर्ष्या के विचार आएँ, पतन के विचार आएँ, तो उनकी रोकथाम करने के लिए आप अपनी सेना को तैयार कर लें और सामने से अड़ा दें।

मित्रो, लड़ाई लड़े बिना काम कैसे चलेगा? दुर्योधन से कहीं लड़े बिना काम चला था? रावण से कहीं लड़े बिना चला था क्या? कंस से लड़े बिना काम चला था? लड़ाई मोहब्बत की है, हिंसा की है अथवा अहिंसा की है, कैसी भी है, वह बात मैं नहीं कह रहा। मैं तो यह कह रहा हूँ कि आपको अपनी बुराइयों और कमजोरियों के मुकाबले के लिए भी और समाज में फैले अनाचार से लोहा लेने के लिए भी हर हालत में आपको ऐसे ऊँचे विचारों की सेना बनानी चाहिए, जो आपको भी हिम्मत देने में समर्थ हो सके और आपके समीपवर्ती वातावरण में भी नया माहौल पैदा करने में समर्थ हो सके। वस्तुतः वह संकल्प भरे विचार ही होते हैं, जो व्यक्ति को कहीं-से-कहीं पहुँचा देते हैं। हजारी किसान ने बिहार में यह फैसला किया था कि मुझे हजार आम के बगीचे लगाने हैं। अपने इस संकल्प को पूरा करने के लिए वह घर से निकल पड़ा। उसने यह व्रत लिया कि जब तक उद्देश्य पूरा नहीं हो जाता, मैं जमीन पर ही सोऊँगा, नंगे पैर रहूँगा। उसने निश्चय कर लिया कि हर गाँव में कम-से-कम एक बगीचा अवश्य लगाना है। गाँवों में पहुँचता, लोगों से मिलता और कहता कि लीजिए मैं कहीं से पौध ले आता हूँ, गड्ढे भी मैं ही खोद देता हूँ, बस आप पौध को उसमें लगा दीजिए। उसकी रखवाली का इंतजाम आप कर लीजिए। पौधों में पानी लगाने की जिम्मेदारी आप उठा लीजिए। इस तरीके से वह हर एक आदमी को समझाता रहा और लोगों ने उसकी बात मान ली। क्यों मान ली? क्योंकि वह संकल्पवान था। यदि संकल्पवान नहीं होता और ऐसे ही व्याख्यान देते फिरता कि भाईसाहब! पेड़ लगाइए हरियाली उगाइए तब? तब फिर कोई लगाता क्या? सरकार कितना प्रचार करती है, पर कोई सुनता है क्या? सुनने के लिए यह बहुत जरूरी है कि जो आदमी उस बात को कहने के लिए आया है, वह संकल्पवान हो। संकल्पवान ही जीवन में सफल होते हैं।

संकल्पवान कौन होता है? संकल्पवान का अर्थ एक बार फिर सुन लीजिए। संकल्पवान यानी ऊँचे सिद्धांतों को अपनाने का निश्चय और उस निश्चय के रास्ते में कोई व्यवधान न आने पावे, इसलिए थोड़े-थोड़े समय के लिए ऐसे अनुशासन-व्रत अपनाना, जिससे कि स्मरण बना रहे, मनोबल बढ़ता रहे, गिरने न पावे। संकल्प को याद करके अपनी गौरव-गरिमा बनाए रखें, इसके लिए आपको व्रतशील होना जरूरी है। पीले कपड़े पहनने के लिए आप से कहा गया है, तो यह व्रतशील होने की निशानी है। दूसरे लोग पीले कपड़े नहीं पहनते हैं, पर आपको पहनना चाहिए। इसका मतलब यह है कि आप पर दुनिया का कोई दबाव नहीं है और दुनिया की नकल करने में-अनुकरण करने में आपको कोई दिलचस्पी नहीं है। यह क्या है? यह व्रतशीलता की निशानी है। माघ के महीने में प्रयाग में त्रिवेणी के किनारे एक महीने के लिए लोग व्रतशील होने के लिए जाते हैं और कल्पवास करते हैं, कल्प-साधना करते हैं। वहाँ वे यह निश्चय कर लेते हैं कि हम जब तक यहाँ रहेंगे, अमुक कार्य नहीं करेंगे। आप भी इस कल्पसाधना शिविर में आये हैं, तो व्रतशील हो करके रहिए, निश्चय का पालन करते रहिए। यह दृढ़ निश्चय कर लीजिए कि जो नियम बनाया है, उसका बराबर पालन करते रहेंगे। भोजन जैसा भी है, उसी से काम चला लेंगे। यह नहीं कि साहब! इसका जायका अच्छा नहीं है, हम तो कचौड़ी खाएँगे। भाई साहब, ऐसा मत कीजिए। संकल्पवान बनिए।

मित्रो, संकल्प में अकूत शक्ति है। संकल्पवान ही सफल हुए हैं और संकल्पवानों ने ही संसार की नाव को पार लगाया है। आपको भी संकल्पवान और व्रतशील होना चाहिए। नेकी आपकी नीति होनी चाहिए और उदारता आपका फर्ज होना चाहिए। आपने अगर ऐसा कर लिया हो, तब फिर दूसरा कदम यह उठाना कि हम यह काम नहीं किया करेंगे। समय-समय पर छोटे-छोटे व्रत लिया कीजिए। हमारे गायत्री परिवार में यह रिवाज है कि गुरुवार के दिन नमक नहीं खाएँगे, ब्रह्मचर्य से रहेंगे, दो घंटे मौन रहेंगे। यहाँ इन सबको यह नियम पालन करने पड़ते हैं। आप भी कुछ ऐसे ही व्रतशील होकर इन नियमों का पालन करते रहेंगे और साथ में किसी श्रेष्ठ उत्तरदायित्व का ताना-बाना जोड़कर रखेंगे तो आपका व्यक्तित्व पैना होगा, आपके विचार सफल होंगे। आपकी प्रतिभा निखरेगी और आप एक अच्छे व्यक्ति में शुमार होंगे, अगर आप आत्मानुशासन और व्रतशीलता का महत्त्व समझेंगे और उसे अपनाने की हिम्मत करेंगे तब। अगर इस तरह का एक कदम भी आप आगे बढ़ा सकेंगे, तो आपको विश्वास दिलाते हैं कि हम आत्मोन्नति की दिशा में निरंतर आपको आगे बढ़ाते चलेंगे। इन्हीं शब्दों के साथ आज की बात समाप्त ।

।। ॐ शान्तिः ।।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

संकटकाल की यह संधिवेला एवं उपचार हेतु महापुरश्चरण

(५ अगस्त, १९८० को शांतिकुंज परिसर में दिया प्रवचन)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो, भाइयो! बड़ी ही प्रसन्नता की बात है कि इस समय गायत्री महापुरश्चरण की साधना जगह-जगह पर चल रही है । अगर आप विचार करेंगे तो यह पायेंगे कि यह समय बहुत ही संकटकालीन है। इस समय इस धरती पर महामारी, युद्ध के बादल, वायु-प्रदूषण जैसे अनेक संकट घटाटोप की तरह छाये हुए हैं, जिससे महाप्रलय जैसी स्थिति बनती जा रही है। इस परिस्थिति को देखते हुए हमने आप लोगों को गायत्री महापुरश्चरण करने की सलाह दी थी और इस बात पर जोर डाला था कि आपको यह साधना करनी चाहिए। समय की माँग, समय की पुकार यह है कि इन दिनों वातावरण में जो अवांछनीय तत्वों का घुलन एवं मिलन हो गया है, उसे समय रहते निरस्त किया जाय, ताकि जनसाधारण की स्थिति ठीक हो सके एवं सभी को खुले वातावरण में साँस लेने का मौका मिल सके। आवश्यकता इस बात की है कि वातावरण को स्वच्छ बनाया जाय। आज का वातावरण बहुत दूषित हो चुका है। यह ऐसा है जो बच्चों के मस्तिष्क के ऊपर सीधा प्रभाव डालता है। इसके प्रभाव से वे एक कमजोर आदमी की तरह बहकर कहीं-से-कहीं जा पहुँचते हैं। वातावरण का परिशोधन इस समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

मित्रो! इन दिनों जो परिस्थितियाँ हैं, वे अगले दिनों बहुत ही विपन्न एवं विषम होने वाली हैं। इसके कारण अनेक प्रलयंकारी घटनाएँ घटित होंगी, विनाश की लीला होगी। उस समय मनुष्य के ऊपर बहुत सारी मुसीबतें आयेंगी। चारों दिशाओं में आँधी-तूफान, पानी-बाढ़ आदि का प्रकोप दिखाई देगा। इसका कारण यह है कि इस समय नेचर- प्रकृति नाराज हो चुकी है । वह बदला लेना चाहती है। इस परिस्थिति में कोई भी आदमी सुरक्षित नहीं है। मौसम का भी कोई ठिकाना नहीं रहेगा। गर्मी में सर्दी और सर्दी में गर्मी महसूस होगी। नित्य नयी-नयी बीमारियाँ बढ़ेंगी। डॉक्टरों के पास भी इसका कोई इलाज नहीं होगा। भाई-भाई में, पति-पत्नी में भी विश्वास नहीं होगा। सामूहिक बलात्कार, चोरी, उठाईगीरी, अनाचार, मारकाट जैसे अपराध, जो कि रावण के एवं कंस के जमाने में भी नहीं थे, उससे भी ज्यादा बढ़ेंगे। दहेजलोलुपों द्वारा बहुओं को जलाया जाएगा। लोगों में राग, द्वेष, अहंकार बढ़ता चला जाएगा। महत्वाकांक्षा लोगों के सिर पर चढ़कर बोलेगी।

साथियो! हवा में जो जहर घुलता जा रहा है, वह साँस के साथ आँख, गर्दन, गले और छाती में जाएगा और लोग बीमार होते चले जाएँगे। यही स्थिति पानी की होगी। गंगा का पानी पहले साफ था। उसका हम सेवन करते थे। अब उसको नहीं पीने के लिए प्रचार किया जा रहा है, क्योंकि गंगाजल अब प्रदूषणों से भरता जा रहा है। अब धीरे-धीरे जमीन की गर्मी भी कम हो गयी है। हमने उसके गर्भ में समायी सारी चीजें, जैसे- लोहा, ताँबा, कोयला, डीजल, पेट्रोल सब निकाल लिया है। जमीन खोखली होती जा रही है। इससे जगह-जगह भूकंप आएँगे। फसल भी कम उत्पन्न होगी। आज विश्वभर में जो लाखों की संख्या में एटामिक हथियार बन रहे हैं, वे क्या बच्चों के खिलौने होंगे? नहीं, वे आग उगलेंगे। इससे मात्र तबाही आयेगी। सारी जगहों पर परमाणुयुद्ध की होड़ लग जाएगी। इससे चारों ओर तबाही ही होगी।

मित्रो! क्या इस प्रकार की विपन्नता की स्थिति में, ऐसी संकट-कालीन वेला में- जब आदमी मरने-मारने को तैयार है, तो आप उनको बचाने के लिए डॉक्टरों की तरह सेवा देने के लिए आगे नहीं आ सकते हैं? यह कैसी विडम्बना है जो आप नौकरी के बाद का चार घंटे का समय भी लोकमंगल के लिए, समाज के लिए, इनसान का भविष्य उज्ज्वल बनाने के लिए नहीं दे सकते हैं। इस प्रकार की जब भी परिस्थितियाँ आती हैं, तो लोग अपने ढंग से इसका समाधान करने के लिए आगे आते रहे और प्रयास करते रहे हैं।

आपने भगीरथ का नाम सुना होगा । एक बार धरती पर से पानी समाप्त हो गया था। खेतों के लिए पानी नहीं था। उस समय उन्होंने तप किया और गंगा को प्रसन्न किया। धरती पर पानी का आगमन हुआ। नदियों में, कुओं में, नहरों में पानी आ गया। फसलें लहलहा उठीं। जो लोग पानी के अभाव में मर रहे थे, वे जीवित हो गये।

इस धरती पर एक बार वृत्तासुर नाम का राक्षस पैदा हुआ था। वह किसी के कन्ट्रोल में नहीं आ रहा था। उसके अत्याचार से सब त्राहि-त्राहि कर रहे थे। तब महर्षि दधीचि आगे आये और उन्होंने अपना अस्थिपंजर दान दे दिया, ताकि उससे वज्र-धनुष का निर्माण हो सके और वृत्तासुर को समाप्त किया जा सके। आज जो मिसाइलें, अस्त्र-शस्त्र, परमाणुबम आपको दिखलाई पड़ रहे हैं, यह क्या वृत्तासुर से कम हैं? आज हमें अनेकों किस्म के हत्यारे दिखाई पड़ रहे हैं? जो मात्र हजार-पाँच सौ रुपये लेकर किसी को भी मार डालने में कोई कसर नहीं छोड़ते।

इस प्रकार की परिस्थितियों में हर व्यक्ति ने अपने स्तर पर, सामूहिक

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

स्तर पर प्रयास किया है तथा समाज, देश, संस्कृति को बचाया है। आज से पच्चीस सौ वर्ष पहले इसी प्रकार की परिस्थिति आयी थी, जब समाज के लोग त्राहि-त्राहि कर रहे थे। उस समय भगवान बुद्ध ने परिव्राजकों, भिक्षु-भिक्षुणियों को एकत्रित करके एक सामूहिक साधना कराने का प्रयास किया था, ताकि वातावरण में सुधार आ सके। इसी प्रकार हर विषम समय में व्यक्तियों के द्वारा सामूहिक प्रयास किये गये हैं।

युगसंधि की इस विषम वेला में भी इस मिशन के द्वारा इसी प्रकार का प्रयास 'युगसंधि महापुरश्चरण' के नाम से आरंभ किया गया है। यह प्रयास अद्‌भुत है। इसका चमत्कार आप लोगों को भविष्य में देखने को मिलेगा। हमने अपनी जिन्दगी में गायत्री के चौबीस महापुरश्चरण किए हैं। इसकी साधना एवं तप से प्राप्त बल के द्वारा ही हमने युगनिर्माण जैसे कठिन कार्य को साहसपूर्वक पूर्ण करने की हिम्मत की है। हमने ध्वंस का समाधान और सृजन का परिपोषण करने के लिए गायत्री जयंती २३ जून, १९८० से बीस वर्ष का युगसंधि महापुरश्चरण आरंभ किया है। इसमें एक लाख नैष्ठिक उपासकों की भागीदारी रहेगी। इसके अलावा दस लाख अनुसाधक होंगे। यह वेला सन् १९८० से सन् २००० तक की होगी अर्थात यह पुरश्चरण बीस साल का होगा। यह समय महापरिवर्तनों के साथ जुड़ा होने के कारण भारी उथल-पुथल का होगा। अंतिम बारह वर्ष तो भयंकर मारकाट वाले होंगे।

हमारा संकल्प एक लाख नैष्ठिक साधक बनाने का है। नैष्ठिक और सामान्यों को मिलाकर दैनिक जप चौबीस करोड़ हो जाएगा! नियमित रूप से इतनी साधना चल पड़ने से अन्तरिक्ष के परिशोधन एवं वातावरण के अनुकूलन में भारी सहायता मिलेगी। इससे भावी संभावित विपत्तियों के टल जाने की आशा की जा सकती है। उज्ज्वल भविष्य के नवसृजन में इस साधना की प्रतिक्रिया बहुत ही सहायक सिद्ध होगी। इसमें जो साधक भाग लेंगे, उन्हें आशा से अधिक लाभ प्राप्त होगा। उनको आत्मकल्याण एवं लोककल्याण का दुहरा लाभ मिलता रहेगा। इसके बारे में जब हम चिन्तन करते हैं, तो हमारा मन गर्व से भर उठता है। हमें इस कार्य से काफी संतोष है।

एकाकी और सामूहिक प्रयत्नों की सफलता के स्तर में काफी अन्तर रहता है। अलग-अलग दस आदमी रहकर जितना काम करेंगे, उन दसों का सम्मिलित प्रयत्न कहीं अधिक सफलता प्रदान करेगा। इसलिए भारतवर्ष में हमेशा से तप एवं सामूहिक साधना का विशेष महत्व रहा है। प्राचीनकाल से लेकर अब तक हुए बहुत से कार्यक्रमों में इस प्रकार की साधना के द्वारा ही लाभ प्राप्त हुआ है। गायत्री महापुरश्चरण भी इसी शृंखला की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। इसमें चौबीस लाख परिजन भाग ले रहे हैं। अनेकों कार्यक्रम भी इस शृंखला में आयोजित हो रहे हैं, जिसका वातावरण पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा। महात्मा गाँधी के आन्दोलन में भी इस प्रकार की सामूहिक साधना का कम महत्व नहीं रहा है। इसके द्वारा ही दिव्य वातावरण बना और हजारों लोग बलिवेदी पर अपनी कुर्बानी देने के लिए आगे आते चले गये। इस प्रकार की साधना में महर्षि रमण, रामकृष्ण परमहंस एवं अरविन्द की साधना का महत्वपूर्ण स्थान है, जिन्होंने एक दिव्य वातावरण बना दिया था।

इस समय की विकट परिस्थितियों और भयानक संभावनाओं को समय रहते रोका जाना चाहिए। इस कार्य के लिए यह समय उपयुक्त है तथा यह साधना, जो सामूहिक रूप से होने जा रही है, वह भी एक सही कदम है। छेद बन्द करने के साथ ही बर्तन में कुछ भरा भी जाना चाहिए। रोग-निवृत्ति ही पर्याप्त नहीं है, पोषण भी मिलना चाहिए। अपराधों को रोकना भी एक काम है, परन्तु इसके साथ ही समाज के अन्तर्गत रचनात्मक प्रयत्नों का तारतम्य जोड़ना भी आवश्यक है। वास्तव में इन दिनों यही दोहरी आवश्यकता युग की पुकार बनकर सामने खड़ी है, जिसे पूरा करने के लिए जाग्रत आत्माओं को आगे आना चाहिए। ध्वंस को रोकने एवं सृजन को गति देने का काम सदा से इसी वर्ग का रहा है। भगवान राम, कृष्ण, बुद्ध, गाँधी जैसे सभी के कार्य इनके बलबूते ही पूरे होते रहे हैं।

प्राचीनकाल यानी सतयुग में प्रकृति का पूर्ण सहयोग मनुष्य को मिलता था। भूमि, बादल, पवन सभी चीजें मनुष्य को समृद्ध बनाने में कोई कमी नहीं होने देते थे। इन दिनों प्रकृति ने विक्षुब्ध होकर आक्रोश प्रकट करना आरंभ कर दिया है, जिसके कारण अनावृष्टि, अतिवृष्टि, महामारी, भूकम्प, तूफान आदि का विनाशकारी त्रास हर जगह चल पड़ा है। दिव्यदर्शियों का अनुमान है कि इन दिनों प्रारंभ किये जा रहे युगसंधि महापुरश्चरण के द्वारा ये अशुभ लक्षण समाप्त हो जाएँगे। इसके साथ-ही-साथ नवसृजन की गतिविधियों में तूफानी उभार प्रस्तुत होगा, जो उज्ज्वल भविष्य की संरचना में अतिमहत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत करेगा।

हमारे नैष्ठिक साधक, जो इसमें हमारा सहयोग करना चाहते हैं, उन्हें इन पाँच संकल्पों को पूरा करना होगा! पहला है- हर दिन न्यूनतम पाँच माला गायत्री महामंत्र का जप। दूसरा- पन्द्रह मिनट की प्राणसंचार को ध्यान-धारणा। तीसरा- गुरुवार को बिना नमक का एक समय का भोजन, ब्रह्मचर्य का पालन तथा दो घंटे मौनव्रत का पालन। चौथा- महीने में कम-से-कम एक बार न्यूनतम चौबीस आहुतियों का यज्ञ-हवन। पाँचवाँ अश्विन एवं चैत्र नवरात्रियों में चौबीस-चौबीस हजार का गायत्री अनुष्ठान।

हमें विश्वास है कि हमारे परिजन इन नियमों-संकल्पों का पालन करते रहेंगे और नित्य नये साधकों को बनाने, उन्हें प्रोत्साहित करने का क्रम चलाते रहेंगे तो इस आन्दोलन को बल मिलेगा तथा नवसृजन के, नवनिर्माण के इस कार्य को शीघ्र एवं सुगमता से पूर्ण करने में हमें सहयोग मिलेगा।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

प्रज्ञावतार अर्थात ऋतम्भरा-प्रज्ञा का आलोक-विस्तार अपने युग का अरुणोदय है, जिसके सहारे आत्मिक और भौतिक उभयपक्षीय समस्याओं का हल निकलने की पूरी संभावना है। गायत्री के तत्वदर्शन का आलोक जन-जन तक पहुँचाना हमारा लक्ष्य है। हमने इस महामंत्र की साधना चौबीस साल तक करके इसके लाभ के बारे में जाना है। वास्तव में इस महामंत्र के चौबीस अक्षरों में चिन्तन, चरित्र और व्यवहार को सुसंस्कृत बनाने वाले सभी तत्व कूट-कूट कर भरे हैं। आपके द्वारा इस तरह की जानकारी अगर जन-जन तक पहुँचायी जा सकी तो हमारा पूर्ण विश्वास है कि लोकचिन्तन और व्यवहार-प्रचलन में उस उत्कृष्टता का समावेश हो सकता है, जो युगविभीषिका से जूझने और उज्ज्वल भविष्य की संरचना में पूर्ण तथा सफल हो सके।

इस महान अभियान में जो सबसे आगे-आगे चलेंगे, उन्हें ज्यादा लाभ प्राप्त होगा। यह संकटकालीन परीक्षा की घड़ी है, जिसमें भगवान राम के रीछ-वानरों से लेकर गीध-गिलहरी तक की भूमिका है। इसमें कृष्ण के ग्वाल-वालों की तरह हर एक को अपनी-अपनी लाठी का सहारा देकर गोवर्धन को उठाना है। इसके लिए हममें से प्रत्येक को साहसी होना चाहिए। संभावित कठिनाइयों से किसी को भी भयभीत या आतंकित होने की आवश्यकता नहीं है। ऐसे अवसरों पर दूरदर्शिता और साहसिकता का अनुपात बढ़ाने से ही काम चलता है। समय रहते रोकथाम करने और कठिनाइयों से जूझने का साधन जुटाने में तत्पर होना ही ऐसे अवसरों पर बुद्धिमत्तापूर्ण होता है। इन दिनों ऐसी ही बुद्धिमत्ता की आवश्यकता है, जो प्राणवानों के शौर्य-साहस को बढ़ाये और जन-जन की प्रखरता को जगाने के लिए काम आये।

मित्रो! आपको इस कार्य के लिए आगे आना चाहिए। यह महापुरश्चरण आपके लिए तथा समाज के लिए बहुत ही लाभदायक सिद्ध होगा। इसको सफल बनाने के लिए आपको प्रयास करना है। भगवान से हम प्रार्थना करते हैं जो भी इसमें भाग लें, उनको इसके असंख्य गुना लाभ मिलें। अतः आप सभी से यह निवेदन है कि आप सब इस कार्यक्रम में भाग लें तथा इसे सफल बनाने का प्रयास करें। प्रस्तुत युग-संधि महापुरश्चरण की व्यवस्था हमने गायत्री जयंती यानी २३ जून, १९८० से बनाई है। यह बीस वर्ष तक लगातार चलेगा। सन् २००० की गायत्री जयंती पर इसकी पूर्णाहुति होगी। इसके भागीदार मात्र जप संख्या ही नहीं पूरी करेंगे, वरन उस प्रयोग में अधिकाधिक निष्ठा का भी समावेश करेंगे।

युगसंधि महापुरश्चरण के प्रत्येक भागीदार को शौकिया, मनमौजी, अस्तव्यस्त, भजन-पूजन करके मन बहलाने की स्थिति में नहीं रहना होगा, वरन जो कुछ भी थोड़ा या बहुत करना है, उसमें परिपूर्ण नैष्ठिकता का समावेश करना है। इसी मार्ग पर चलते हुए आत्मशक्ति का विकास एवं आत्मकल्याण का लक्ष्य पूरा होता है।

यह युगसंधि महापुरश्चरण देखने में छोटा लग रहा है, परन्तु इसके द्वारा भविष्य में बहुत फायदा होने वाला है। अगर इतना लाभदायक न होता तो हम आपसे इसमें भागीदार बनने के लिए भावभरा निवेदन नहीं करते। यह समय की माँग है कि वातावरण में अवांछनीयता का जो समावेश हो गया है, उसे समय रहते निरस्त किया जाय।

जब बच्चा घर में पैदा होने को होता है तो एक तरफ घर में नवजात शिशु के लिए स्वागत की तैयारी चलती हैं तो दूसरी ओर प्रसूता को प्रसव का भारी कष्ट सहना पड़ता है। युगपरिवर्तन की इन घड़ियों में भी इसी प्रकार की ही उथल-पुथल हो रही है। एक ओर ध्वंस चरम सीमा पर पहुँच चुका है, तो दूसरी तरफ नवसृजन की प्रक्रिया जन्म लेने वाली है। हमें इसी सृजन का काम करना है। इस समय मनुष्य की मनःस्थिति एवं परिस्थिति बिल्कुल बदल चुकी है। उनके विचार करने का ढंग गलत हो गया है। इसके कारण अनेकों प्रकार की विभीषिकाएँ नित्य उत्पन्न हो रही हैं तथा अपना ताण्डवनृत्य दिखाने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ रही हैं।

इस समय की महती आवश्यकता यह है कि सूक्ष्म जगत के वातावरण में परिशोधन किया जाय। प्राचीनकाल में भी ऐसी ही परिस्थितियाँ थीं। लोग रावण के आतंक से त्राहि-त्राहि कर रहे थे। उस समय भगवान राम ने अपनी शक्ति नियोजित की तथा जनसहयोग के माध्यम से रावण को निरस्त करके समाज में शांति स्थापित की थी, रामराज्य की स्थापना की थी। इसके बाद गुरु वशिष्ठ ने यह कहा कि इतना कार्य करने से ही काम नहीं चलेगा। उन दुष्टों ने तो वातावरण को भी दूषित कर दिया है, अतः उसके लिए स्वच्छ वातावरण बनाने की भी आवश्यकता है। गुरु वशिष्ठ के कहने पर भगवान राम ने दस अश्वमेध यज्ञ किये। इस अश्वमेध यज्ञ की प्रक्रिया बड़ी ही महान है, इसमें लाखों लोग बैठकर साधना करते हैं, तप करते हैं, यज्ञ-हवन करते हैं तथा वातावरण को बदल डालते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भगवान राम के रामराज्य की स्थापना रावण के समाप्त होने से नहीं हुई, वरन दस अश्वमेध यज्ञों के कारण हुई। भगवान श्रीकृष्ण के जमाने में भी वैसा ही हुआ। महाभारत के बाद उनको भी यज्ञ करना पड़ा। उसके बाद ही वातावरण का सुधार हो सका। यज्ञ एवं उपासना के द्वारा वातावरण में सुधार की बात बहुत प्राचीनकाल से ही चली आ रही है।

युगसंधि का यह विशेष पर्व है। ऐसे समय हजारों-लाखों वर्ष के बाद आते हैं। भगवान को युगपरिवर्तन करना पड़ता है, परन्तु वे केवल आप जैसी आत्माओं को ही अपना माध्यम बनाते और प्रभावित करते हैं। निराकार ब्रह्म के लिए यह कठिन है कि वह स्वयं अपने व्यापक विराट स्वरूप को मेटकर व्यक्तियों का स्वरूप बनाये और सामान्यजनों की तरह उतार-चढ़ाव से जूझने का उपक्रम अपनाये। शासनाध्यक्ष

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

योजना बनाते हैं और निर्देश देते हैं। आज की परिस्थिति ऐसी है जिससे भगवान बहुत ही दुखी हैं। वह परिवर्तन चाहते हैं। एक समय महर्षि विश्वामित्र ने भी इसी तरह का परिश्रम किया था। शास्त्रों में वर्णन आता है कि उन्होंने एक नयी दुनिया बनाने के लिए घनघोर परिश्रम किया था। उस समय उन्हें अपने शिष्यों के लिए बहुत बड़ा अनुदान देना पड़ा था।

मित्रो! आध्यात्मिक अनुदानों की सामान्य परम्परा भी रही है और आपत्तिकालीन की अतिरिक्त व्यवस्था भी रही है। गुरु शिष्यों को, देवता भक्तों को समय-समय पर अनेकानेक अनुदान देते रहे हैं, परन्तु साथ-ही-साथ इसका भी ध्यान रखा जाता है कि उपलब्धकर्त्ता उसे संकीर्ण स्वार्थपरता में खर्च न करे। दैवीय वरदान दिव्य प्रयोजनों के लिए दिया जाता है। ऐसा ही अनुदान-वरदान विश्वामित्र ऋषि ने अपने शिष्यों को दिया था। इसी तरह रामकृष्ण परमहंस को जनकल्याण के लिए कुछ करना था। सो उनने विवेकानन्द को ढूँढ़ निकाला और अभीष्ट प्रयोजन की पूर्ति के लिए जितनी शक्ति की आवश्यकता थी, उसे दे दी। इसी प्रकार समर्थ गुरु रामदास का अनुदान शिवाजी को, चाणक्य का चन्द्रगुप्त को मिला था।

आपको मालूम होना चाहिए कि यह युगसंधि का विशेष समय है । इस समय स्रष्टा को परिवर्तन करना है। इस युगसंधि की वेला में नवसृजन का उत्तरदायित्व सँभालने वाली दिव्य शक्तियों को इन दिनों ईश्वरीय प्रयोजनों के लिए जाग्रत आत्माओं की तलाश है। उन्हें जितना लाभ कठोर तपश्चर्या, साधना की कटिन परिस्थिति को पार करके मिल सकता था, उतना लाभ इस विशिष्ट अवसर पर मिलने वाला है। इसे दैवी अनुदान कहा जा सकता है! इन दिनों युगसंधि की इस उपासना के माध्यम से उच्चस्तरीय अनुदान वितरण ऋतम्भरा-प्रज्ञा द्वारा किया जा रहा है। जिस प्रकार दुर्भिक्ष आदि संकटकालीन परिस्थितियों में सरकार कूआँ खोदने, उद्योग खड़ा करने, नहर बनाने जैसे कामों के लिए विशेष रूप से धन-राशि देती है, उसी प्रकार इन दिनों ऐसे असंख्य संस्कारवान आत्माओं को दिव्य अनुदान मिलने वाला है, जो किसी जमाने में राम, कृष्ण, बुद्ध, गाँधी के सहयोगियों को प्राप्त हुआ था।

इस धरती पर जब कभी भी अनीति-अत्याचार की बढ़ोत्तरी होती है, तो इसी प्रकार का क्रम चलता है और शालीनता, सज्जनता लाने का प्रयास किया जाता है। भगवान श्रीकृष्ण के जमाने में भी ऐसा ही हुआ था। जब कभी ऐसे संकटकालीन समय आते हैं तो बहुत-से लोग ऋषि-चरणों में अपना सब कुछ अर्पण कर देते हैं। जैसे विश्वामित्र के चरणों में राजा हरिश्चन्द्र, भगवान बुद्ध के चरणों में राजा अशोक का समर्पण हुआ था और पूरी शक्ति से उन्होंने सहयोग दिया था। भगवान बुद्ध के समय में जब अराजकता बढ़ी थी तो उन्होंने अपने शिष्यों को परिव्रज्या का पाठ पढ़ाकर इसके निराकरण के लिए उन्हें देश-विदेशों में भेजा था। इस प्रकार वातावरण को संशोधित करने एवं स्वच्छ वातावरण बनाने में भगवान बुद्ध का तप, उनके शिष्यों का तप बहुत ही महत्वपूर्ण था। उसमें हर्षवर्धन एवं अशोक जैसे लोगों ने पूरा सहयोग दिया ।

पिछले दिनों युद्धों के कारण कितने लोग मारे गये, कितना वातावरण गंदा हो गया। इस परिस्थिति में वातावरण के संशोधन में युगसंधि महापुरश्चरण द्वारा एक महत्वपूर्ण भूमिका सम्पन्न होगी। युगसंधि में इन दिनों हिमालय के आध्यात्मिक ध्रुव केन्द्र से ऐसी दिव्य क्षमताओं का -प्राणचेतना का प्रसार-विस्तार हो रहा है, जिन्हें ग्रहण-धारण करके असंख्य मनुष्यों का कल्याण हो सकेगा। ऋषि-मुनियों से लेकर लोकसेवी महामानव तक यही कार्य करते रहे हैं। दैवीशक्तियों का अनुदान वे जन-जन तक पहुँचाने में लगे रहे हैं। इससे ही भगवान की इच्छा पूरी हुई है और जन-जन का हित हुआ है। यही कार्य युगसंधि महापुरश्चरण के अन्तर्गत हमारे नैष्ठिक साधकों का होगा।

संकटकालीन परिस्थिति आने पर समाजसेवी, डॉक्टर अपना-अपना काम करते हैं, किन्तु हम एक बात बताना चाहते हैं कि ऐसी परिस्थिति में अध्यात्मवादी आदमी को भी हाथ-पर-हाथ रखकर नहीं बैठना चाहिए।

इस प्रकार की साधना में यद्यपि पुरुषार्थ ही प्रमुख है। इसके द्वारा ही वातावरण का परिष्कार संभव होगा। अंगद, हनुमान, नल-नील, अर्जुन, शिवाजी आदि को यदि पराक्रम करने का मौका न मिला होता तो सभी लोग इसी प्रकार का सामान्य जीवन जीने वाले कहलाते। युग-परिवर्तन एवं नवनिर्माण के कार्य का श्रेय उनको नहीं मिलता । ग्वालवालों को श्रेय इसलिए मिला कि भगवान श्रीकृष्ण ने गोवर्धन उठाने की योजना बनायी और ग्वाल-वालों ने उसमें श्रीकृष्ण को अपनी-अपनी लाठी लगाकर थोड़ा-सा सहयोग दिया और कार्य पूरा हो गया। वे भी श्रेय के भागीदार बन गये। इस तरह का अवसर आने पर हर किसी को लोकमंगल के लिए, जनजागरण के लिए आगे आकर कार्य करने का प्रयास करना चाहिए। इसके द्वारा ही आप ऐतिहासिक लोकचर्चा का विषय बनने में समर्थ हो सकते हैं।

मानवी अन्तराल और अदृश्य वातावरण के क्षेत्रों में व्याप्त विषाक्तता एवं दूषणता का परिशोधन करना तथा उसमें नयी चेतना भरना एक बहुत बड़ा काम है, जिसे भौतिक क्षेत्र के किसी भी कार्य से कम महत्व नहीं दिया जा सकता है। इन दोनों ही क्षेत्रों में आज आध्यात्मिक उपचार की आवश्यकता है। इस समय वातावरण का संशोधन होने से मनुष्य को कितना लाभ हो सकता है, इसे आपको लोगों को समझाने का प्रयास करना चाहिए।

मित्रो! आज आपको जनजागरण के लिए, युगधर्म निवाहने के लिए पुकारा गया है। अतः आपको इस कार्य के लिए आगे आकर और बढ़-चढ़कर कार्य

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

...चाहिए। वातावरण खराब हो जाता ...तो उसका असर पड़ता हैं। वातावरण ...प्रभाव, परिस्थितियों का प्रभाव क्या ...ता है, इसे सभी लोग जानते हैं। आज ...परिस्थितियाँ आ गयी हैं कि इसने ...श्य मनुष्यों को दुष्प्रवृत्तियों की ओर, ...दलन की ओर धकेल दिया है। ...के कारण कहीं भूकम्प, बाढ़, ...महामारी तो कहीं अनाचार, अत्याचार, ...की विभीषिका अपना पसारा फैला रही है। अब समय आ गया है कि आपको रचनात्मक कार्यों की ओर चलना है। यह युगसंधि महापुरश्चरण इसी प्रकार का कार्य है, जिसमें आप सभी लोग शामिल हैं।

सामूहिकता का लाभ सभी जानते हैं। प्राचीनकाल से लेकर अब तक सभी बड़े-बड़े काम सामूहिकता के द्वारा हल होते रहे हैं। प्राचीनकाल में सभी ऋषियों की सामूहिकता अर्थात बूँद-बूँद रक्त के द्वारा माता सीता की उत्पत्ति हुई थी। यही सीता भगवान राम से कहीं ज्यादा असुरता को समाप्त करने में तथा रामराज्य की स्थापना करने में सफल हुई। सीता क्या थी? ऋषियों की सामूहिकता का प्रतीक थी। दुर्गा का अवतार क्या था? देवताओं की सामूहिक शक्ति को इकट्ठा करके प्रजापति ब्रह्मा ने दुर्गा का अवतरण कराया था। श्रेष्ठ कामों के लिए अच्छे लोगों का सहयोग लेने की प्राचीनकाल से ही पद्धति रही है। भगवान श्रीकृष्ण का गोवर्धन उठाना तथा भगवान राम का समुद्र में पुल बाँधना, यह सब सामूहिकता का ही प्रतीक है।

आज से पच्चीस सौ वर्ष पूर्व भगवान बुद्ध ने अपने भिक्षु-भिक्षुणियों को इसी प्रकार की सामूहिक सेवा-साधना करने के लिए प्रेरित करने का प्रयास किया था। हमारे सामने महात्मा गाँधी आये। उन्होंने भी इस देश को आजाद कराने के लिए सामूहिक शक्ति का ही उपयोग किया। इसके द्वारा ही स्वराज्य मिलना संभव हो सका था।

आज का यह युगसंधि महा-पुरश्चरण भी इसी तरह का एक महत्वपूर्ण सामूहिक प्रयास है। आपको यह भलीभाँति समझ लेना चाहिए कि यह इस युग का महानतम प्रयास है। गायत्री उपासना के द्वारा ही हमने सारा चमत्कार पाया है। हम देखना चाहते हैं कि आप लोग इसमें कितनी श्रद्धा-निष्ठा के साथ काम करते हैं। हमें विश्वास है कि यह कार्य बहुत व्यापक स्तर पर बढ़ने वाला है। हमें यह स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि यह कार्य बढ़ेगा। अनेक कार्यक्रम होंगे। इससे वातावरण में अप्रत्याशित रूप से बदलाव आयेगा। नयी पीढ़ियाँ बदलती चली जाएँगी।

गाँधीजी ने स्वतंत्रता आन्दोलन को तीव्र करने के लिए नमक सत्याग्रह चलाया था। इसमें जो लोग आगे रहे, उन्हें श्रेय मिला। नवनिर्माण के इस कार्य के अन्तर्गत भी जो आगे रहेंगे तथा अपनी भागीदारी देंगे, उन्हें भी श्रेय, सम्मान व सहयोग अधिकाधिक मिलेगा। आपका जो श्रम, भावना, धन इसमें लगा है, वह हजार गुना होकर वापस होगा और आप धन्य हो जाएँगे।

यह जो महापुरश्चरण चल रहा है, वह न केवल भारत के लिए, वरन सारे विश्व के लिए, मनुष्य जाति के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण रहेगा। अगले दिनों युगसृजन में गायत्री महाविद्या को युग-शक्ति का रूप धारण करना है। अगले ही दिनों उसे विश्वदर्शन का, अध्यात्म का केन्द्रबिन्दु बनने का अवसर मिलेगा। अतः आप सब लोग जो इस कार्य में सहयोग देंगे, हमें काफी प्रसन्नता होगी। हम भगवान से प्रार्थना करते हैं कि आप में, आपके घर-परिवार में सुख-शांति आवे, प्रगति की ओर बढ़ें तथा आपका भविष्य उज्ज्वल हो। आज की बात समाप्त॥

॥ ॐ शान्ति ॥

कुरुक्षेत्र में भव्य मेले का आयोजन था। भगवान कृष्ण भी द्वारिकावासियों के साथ मेले में आए थे। देवर्षि नारद भगवतदर्शन को धराधाम पर पधारे एवं श्रीकृष्ण की पटरानियों से कहा- तीर्थ में दिया गया दान अक्षय होकर शाश्वत रूप में प्राप्त हो जाता है। सत्यभामा को बात जम गयी। उनने सोचा भगवान श्रीकृष्ण से प्रिय कोई नहीं है। वे ही हमें अक्षय होकर प्राप्त हो जाएँ, इससे बड़ी क्या बात हो सकती है, किंतु जो प्रिय है उसे दान में कैसे दिया जाय? जिज्ञासा व्यक्त की गयी तो देवर्षि बोले- उसका मूल्य देकर उसे वापस लिया जा सकता है। अभिमानी सत्यभामा ने कहा- हम श्रीकृष्ण को दान देकर बराबर मूल्य देकर उन्हें वापस ले लेंगे व जन्म-जन्मान्तरों के उनके साथी बनेंगे।

दान दे दिया गया। अखिल ब्रह्माण्डनायक श्रीकृष्ण एक तुलापट पर । दूसरे पर हीरे-चाँदी-जवाहरात रख दिए गए। पलड़ा ज्यों-का-त्यों रहा। देवर्षि ने कहा- आप संकल्प करती जाएँ, रखती जाएँ। सभी वहाँ मौजूद थे। युधिष्ठिर ने इंद्रप्रस्थ का राज्य, उग्रसेन ने अपना राज्य संकल्पित कर रखा। पलड़ा यथावत रहा। श्री बलराम की माता वसुदेव की दूसरी पत्नी रोहिणी वहाँ पर थीं। वे बोलीं- यहाँ नन्दबाबा का भी शिविर लगा है। कन्हैया बिकेंगे तो भक्ति के मोल ही। यह धन सिर्फ ब्रज के लोगों के पास है। सभी वहाँ गए। राधिका जी से अनुरोध किया। उनने सहायता का आश्वासन दिया। सारे मुकुट-संकल्पादि उतार लिए गए। राधाजी ने 'श्रीकृष्णः शरणं मम' कहकर एक तुलसीदल तुलापट पर रख दिया। रखते ही श्रीकृष्ण ऊपर व तुलसी दल वाला पलड़ा भारी होकर नीचे हो गया।

भक्ति की महिमा देखकर सभी उपस्थित जन धन्य हो गए। राधाजी की भक्ति के आगे सारे ऐश्वर्य दो कौड़ी के हैं- यह कहकर सत्यभामा के अभिमान को चूरकर देवर्षि वह तुलसीदल रूपी प्रसाद लेकर संकीर्तन करते प्रस्थान कर गए। धन्य है ब्रज व उसकी भक्ति।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी-

ब्रह्मवर्चस अर्जन की साधना व उसका मर्म

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो, भाइयो! साधना की सफलता आन्तरिक पवित्रता-प्रखरता पर निर्भर करती है। वेदमंत्रों के उच्चारण का फल केवल अंतरंग को पवित्र करने से ही मिलता है। राजा दशरथ के यहाँ जब पुत्रेष्टि यज्ञ की बात चली थी, तो गुरु वशिष्ठ ने कहा था कि हमारे सौ बच्चे हो गये हैं। अतः हमारे द्वारा मंत्र पढ़ने से कोई लाभ नहीं होगा। संयम का पालन नहीं होगा, आहार-विहार ठीक नहीं होगा, तो वेदमंत्र का कोई लाभ नहीं हो सकेगा। ऋषियों में एक शृंगी ऋषि थे। उनकी संयम साधना, आहार-विहार साधना अनूठी थी। महिलाओं के सम्बन्ध में उन्हें कुछ भी पता नहीं था। वे जंगल में पले थे। आहार-विहार ठीक होने के कारण उनका अन्नमय कोष परिशोधित था। मनोमय कोश पवित्र था। अतः उस विशेष आयोजन के लिए शृंगी ऋषि को बुलाया गया था। उनके मुख से उच्चरित वेदमंत्रों के द्वारा यज्ञ होने पर दशरथ जी के यहाँ भगवान के रूप में चार बालक पैदा हुए। भगवान राम, भगवान भरत, भगवान लक्ष्मण, भगवान शत्रुघ्न पैदा हुए। ये कहाँ से पैदा हुए? ये मंत्रों से पैदा हुए। उसे किसने बोला था? शृंगी ऋषि ने बोला था।

मित्रो! आहार-विहार के सम्बन्ध में परिष्कृत होने के लिए आपको भी तैयार होना चाहिए। हम ब्रह्मवर्चस की साधना में आपको यही कराएँगे तथा आपको मजबूर करेंगे कि आप अपने आहार-विहार को ठीक करें। हम आपकी सात्विकता पर जोर देंगे। अगर आपको अमुक चीज ठीक नहीं लगेगी तो इसके लिए आपको ठोस प्रयास करना होगा तथा उसके लिए तैयार होना होगा। जब हम आपको ब्रह्मवर्चस की साधना कराएँगे तो आपको एक भगोना दे दिया जाएगा और कहा जाएगा कि आप यहाँ से संस्कारवान अनाज लें और अपना सात्विक आहार स्वयं तैयार करें। इसमें खिचड़ी, दलिया बनाकर खा लीजिए। पहले जमाने में संत-महात्मा इसी प्रकार भिक्षा लेकर आते थे और अपना भोजन स्वयं बनाकर खा लेते थे। आपको भी उसी प्रकार करना चाहिए। हम आपको यहाँ पर जायकेदार चीजें नहीं देंगे, वरन हम आपका जायका खराब करेंगे, उस आदत को सुधारेंगे जिसने आपको असंयमी बना दिया है।

साधना-उपासना की पहली सीढ़ी सात्विकता है। अतः आपको यह ध्यान रखना होगा कि आप चाहे यहाँ रहें अथवा कहीं भी रहें, आपको इसी प्रकार सात्विक अन्न-आहार का प्रयोग करना चाहिए। इस प्रकार अगर आप करेंगे तो आपको पता चलेगा कि सात्विक आहार का भजन-पूजन पर, साधना-उपासना पर क्या प्रभाव पड़ता है। हमने चौबीस साल तक जौ की रोटी एवं छाछ का सेवन किया है। इस बीच न नमक खाया है, न शक्कर। आप पूछते हैं कि गुरुजी आपने कौन-सा बीजमंत्र लगाया है? हमने अपनी साधना में केवल सात्विक आहार का सेवन किया है। पूजा-उपासना के पहले, भजन के पहले हमें अपने मस्तिष्क एवं शरीर को सात्विक बनाना होगा, ताकि भगवान हमारे शरीर में उपस्थित हो सकें और हमारे मस्तिष्क में प्रेरणा दे सकें। इसके लिए हमें सात्विक आहार का सेवन करना होगा।

मित्रो ! हमें न केवल अपने पेट को, वरन जीभ को भी नियंत्रित करना होगा। इसके द्वारा ही आदमी के भीतर बैठा हुआ देवत्व जाग्रत होता है तथा मनुष्य प्रगति के पथ पर आगे बढ़ने लगता है। अपनी जीभ के ऊपर हमें बड़ी सावधानी से ध्यान देना होगा। फिर ध्यान देना होगा कि हम जो बोलते हैं, उसका प्रभाव पड़ता है कि नहीं। हम गिरे हुए तो नहीं हैं? हमारे द्वारा किसी को दुख तो नहीं हो रहा है? इस प्रकार के विचार अपने भीतर पनपाने के लिए हमें अपने अन्नमय शरीर को ठीक करना होगा। इसमें अन्न तथा जल दोनों चीजें सम्मिलित हैं। वातावरण का प्रभाव भी पड़ता है। अन्न के साथ इन चीजों को भी ठीक करना होगा।

दूसरा शरीर हमारा प्राणमय कोश है। हमारे शरीर में एक मैग्नेट काम करता है, जो अंतरिक्ष की चीजों को खींचता रहता है तथा उसे प्राणवान बनाता रहता है। आप जानते हैं कि जहाँ वृक्ष होते हैं, वहाँ बादल खिंचते हुए चले आते हैं। उसी प्रकार जहाँ कहीं भी श्रेष्ठता होगी, हमारा प्राणमय कोश उसे खींचता रहता है। पिछले दिनों लीबिया में जब सारे पेड़ काट दिये गये तो वहाँ का सारा क्षेत्र रेगिस्तान में बदल गया। बादलों ने वहाँ बरसना बन्द कर दिया। इस घटना के बाद वहाँ की जनता को, सरकार को पेड़ लगाने पड़े। धीरे-धीरे अब थोड़ी-बहुत बारिस हो जाती है। इसी प्रकार प्राणमय कोश, जिसे हम मैग्नेट कहते हैं, वह श्रेष्ठ चीजों को, जो हमारी जीवात्मा की खुराक हैं, को खींचता रहता है। इस मैग्नेट को हम साहस कहते हैं। इस साहस के माध्यम से बड़ी-बड़ी चीजें आती-

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

जाती हैं और हम श्रेष्ठता की ओर बढ़ते चले जाते हैं।

इस प्राणमय कोश को जब मनुष्य जाग्रत कर लेता है, तो उसके अन्दर चमत्कार उत्पन्न हो जाता है। नैपोलियन बोनापार्ट का जब प्राणमय कोश जाग्रत हो गया था, उसके भीतर का साहस जब जाग गया था तो वह आल्पस पर्वत को पार कर गया था। गाँधीजी ने जब इस शरीर को जगा लिया तो अँग्रेज हमारे देश से भाग खड़े हुए। वह गाँधी के प्राणमय कोश का चमत्कार था। यह असली ताकत हमारे प्राणवान प्राणमय कोश का चमत्कार है। आपको अपने इस प्राणमय कोश को जाग्रत करना होगा। आपको हिम्मत-साहस की शक्ति को जाग्रत करना होगा।

बेटे, हिम्मत की शक्ति बहुत महान है। इसके द्वारा आप सभी चीजें प्राप्त कर सकते हैं। लवकुश ने इसी के द्वारा हनुमान, लक्ष्मण तथा अन्य वीरों को हरा दिया था। यह उनकी हिम्मत थी। शरीर में कोई ताकत नहीं होती। असली ताकत तो अन्दर होती है। मनुष्य की वास्तविक ताकत उसकी प्राणों की ताकत है, हिम्मत की ताकत है। शरीर की ताकत से कुछ नहीं होता है। जो भी गाँधी जी के पास जाता था, वह उनका हो जाता था। सरदार पटेल, नेहरू, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, जो भी उनके पास गये, उनकी आँखों के वशीभूत हो गये। वह गाँधी जी की शक्ति नहीं थी, वरन उनके प्राणमय कोश की शक्ति थी। यह उनकी हिम्मत थी एवं साहस था।

मित्रो, आपको भी तपस्वी बनने के लिए, साधक बनने के लिए अपने प्राणमय कोश को ताकतवर बनाना होगा। पिछले दिन हम आपको बतला रहे थे कि आपको तपस्वी जीवन जीने के लिए, साहसी बनाने के लिए हम आपको प्राणवान बनाएँगे। जिस प्रकार जीभ को कण्ट्रोल करने के लिए अन्नमय कोश को ठीक करना पड़ता है, उसी प्रकार अपने आप से लोहा लेने के लिए आपको तपस्वी होना होगा। शरीर पग-पग पर न जाने क्या-क्या माँगता रहता है, उसे कण्ट्रोल करना होगा। अब आपको शरीर से यह कहना होगा कि अब तक हमने तेरी बात मानी, अब तुझे मेरी बात माननी होगी। इस प्रकार प्राण पर नियंत्रण हो जाने पर हम प्राण शरीर के द्वारा एक मैग्नेट पैदा करेंगे, जो इस शरीर में चमत्कार उत्पन्न कर देगा।

मित्रो, हमें अपने मन को भी नियंत्रित करना होगा। उस पर कण्ट्रोल करना होगा। जिस प्रकार रिंगमास्टर चाबुक लेकर अपने जानवरों को कंट्रोल करता है, आपको भी अपने मन को उसी प्रकार कण्ट्रोल करना होगा। आपको अपनी सारी इन्द्रियों को नियंत्रित करना होगा। उनको अपने वश में करना होगा। बेटे, इसी का नाम तप है, जिसे हम आपको बतलाना चाहते हैं। हम आपको तपस्वी बनाने का प्रयत्न करेंगे। अगर आप तपस्वी बन जाएँगे तो इसी जिन्दगी में आप उन सारी चीजों को प्राप्त कर लेंगे जिनकी आपको आवश्यकता है। स्वामी दयानन्द जब अपने गुरु के आदेश पर जनजागरण के लिए निकले तो उनकी वाणी सुनने को कोई तैयार नहीं हुआ। तब वे तप करने चले गये और उसके बाद उनकी वाणी में निखार आया और वे आर्यसमाज के बहुत बड़े प्रवर्तक हुए।

मित्रो, हमारी वाणी में शक्ति है, किन्तु वह ऐसे ही नहीं आयी है। हमने भी अपने गुरु के आदेश पर चौबीस साल तक तप किया था। महात्मा आनन्द स्वामी की बातों को लोग मानें, इसलिए उन्होंने भी बराबर में तप किया था। जब गाँव के लोगों को पता लगा कि एक महात्मा तप कर रहे हैं, भजन कर रहे हैं, तो उनके लिए भोजन की व्यवस्था बना दी। वे जब तप करके निकले तो एक विशेष ऊर्जा उन्हें प्राप्त थी। स्वामी दयानन्द ने जहाँ तप किया था, वहाँ तीन नदियाँ आकर मिलती हैं। उस अवधि में उन्होंने केवल एक समय भोजन किया। वे तीन साल तक लगातार तप करते रहे और उसके बाद इतनी शक्ति लेकर आये कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता है। उन्होंने काफी काम भी किया। आर्यसमाज की जगह-जगह स्थापना की तथा निरन्तर दौरा करते रहे। यह प्राणों की शक्ति थी। हम आपके भीतर भी उसी प्रकार की शक्ति पैदा करना चाहते हैं, जिससे कि आप उभरकर आगे आयें। आप जितना बर्दाश्त कर सकते हैं, हमारा कहना है कि आप उतना ही तपस्वी जीवनयापन करने के लिए तैयार रहें। चान्द्रायण व्रत से लेकर जो भी आप कर सकते हैं, उसे अवश्य करें।

मनुष्य जीवन का यदि कोई दर्शन न हो, उसके साथ आस्थाएँ, मान्यताएँ और किन्हीं सिद्धान्तों का समावेश न हो, तो वह एक जानवर मात्र रह जाता है।
- पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

साधना में तप-तितिक्षा की अपनी महत्ता है। ब्रह्मवर्चस की साधना के अन्तर्गत यह निश्चय आपको करना होगा कि आप अस्वाद व्रत से लेकर क्या-क्या कर सकते हैं तथा अपनी कमजोरियों से किस प्रकार लड़ सकते हैं। तपस्वी जीवन जीने के लिए आप कितनी तप-तितिक्षा कर सकते हैं? यह निश्चय आपको करना है। आपको यह निश्चय करना है कि इसका स्वरूप कितना बड़ा, छोटा या मध्यम हो सकता है। बच्चों के लिए तप-साधना क्या हो सकती है?

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

ब्रह्मवर्चस के माध्यम से हम आपको यह सब बतलाने वाले हैं कि पंचकोशी साधना क्या होती है ? इसका पंचमुखी गायत्री से क्या संबंध होता है ?

हमारे मन के भीतर चमत्कारी शक्तियाँ भरी पड़ी हैं। मन के अन्दर से अनेकों तरंगें निकलती हैं, जो बाहर आकर फैल जाती हैं। उसे अगर हम नियंत्रित कर लें तो मजा आ जाएगा। तब हम एक प्राणवान व्यक्ति बन सकते हैं। मन शक्ति का पुंज है । अगर उसे नियंत्रित कर लें तो हम सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं। अभी तक हम विज्ञान द्वारा इसके केवल सात प्रतिशत भाग की ही जानकारी प्राप्त कर सके हैं, शेष तिरानबे प्रतिशत की जानकारी प्राप्त करना अभी बाकी है। इसे 'जादू का पिटारा' कह सकते हैं। यह हमारा मस्तिष्क भानुमती का पिटारा है। अगर इसके बिखराव को हम नियंत्रित कर सके तो एक बहुत बड़ी शक्ति हम प्राप्त कर सकते हैं। अनेक दिशाओं में भागने वाले मन को अगर हम नियंत्रित कर सके तो हम अंगद, हनुमान तथा भीम की तरह सामर्थ्यवान हो सकते हैं। भगीरथ किस प्रकार अपने मन को नियंत्रित एवं नियोजित करके हिमालय में फैली गंगा को धरती पर लाये थे, यह सभी जानते हैं। वे एक सफल इंजीनियर थे, जो अपने मस्तिष्क को नियंत्रित करके इस प्रकार की योजना को चरितार्थ करने में सफल हुए थे। अनेक दिशाओं में बिखरी अपने मस्तिष्क की शक्ति को अगर हम नियंत्रित कर सके तो हम भगीरथ के तरीके से महान शक्तिशाली बन सकते हैं।

अत: आप अपने मस्तिष्क से बेकार की बातों को निकाल दीजिए, फिर आप वैज्ञानिक, संत, महामानव बन सकते हैं। दूसरी दिशा में यानी निगेटिव दिशा में अगर इसे लगा दें, तो फिर एक नम्बर का डाकू, जेब-कतरा भी बन सकते हैं। सर्कस में लड़कियाँ मन को एकाग्र कर लेती हैं, तो चमत्कार दिखा देती हैं। अगर हम अपने मन के बिखराव को रोक सकें तो वह सारा-का-सारा लाभ प्राप्त कर सकते हैं, जिसकी हमें आवश्यकता है। मस्तिष्क जितना शक्तिशाली यंत्र शरीर में और कोई नहीं है।

वास्तव में उसी मनुष्य का भविष्य अच्छा है, जो एक दिशा में चल सकता है। जिसका लक्ष्य एक हो तथा वह हमेशा उसी की पूर्ति में लगा हुआ हो। द्रोपदी की शादी के समय स्वयंवर रचा गया। स्वयंवर की शर्त के अनुसार मछली की आँख में तीर मारना था। अनेकों को पानी में मछली की पूँछ तथा सिर दिखाई पड़ रहा था। अर्जुन से जब लोगों ने पूछा कि आपको क्या दिखलाई पड़ रहा है? उसने कहा कि मछली की आँख एवं तीर की नोंक। अंत में विजयी अर्जुन ही हुए।

मित्रो, जिनके जीवन का एक लक्ष्य होता है, सफलता उनको ही प्राप्त होती है। एकाग्रता सबसे बड़ी चीज है। वैज्ञानिक की एक दिशा होती है, एक लक्ष्य होता है। जब हम लेख लिखते हैं तो हमारी एकाग्रता होती है। उस समय हमारे मस्तिष्क में एक विशेष हलचल होती रहती है। उस वक्त अगर आप हमारे बगल से भी निकल जाएँ तो हमें पता नहीं चलेगा कि आप कब आये और कब चले गये। यही एकाग्रता है, जिसके द्वारा मनुष्य को सफलता मिलती है। एकाग्रता एक दिशा का, एक धारा का नाम है । स्वामी विवेकानन्द जब प्रथम बार अमेरिका गये तब लोगों ने उन्हें 'जीरो' अर्थात शून्य के सम्बन्ध में बोलने के लिए पन्द्रह मिनट का समय दिया। वे पूर्णरूपेण एकाग्रता के साथ इस विषय पर बोलते गये। पन्द्रह मिनट बोलने के बाद पन्द्रह मिनट पुन: उनको बोलने के लिए कहा गया। मित्रो ! 'मेडिटेशन' इसी का नाम है। आदमी किसी काम में पूर्ण तन्मयता के साथ यदि जुट जाए तो उसी में सफलता प्राप्त कर सकता है। उसे ऋद्धियाँ सिद्धियाँ प्राप्त हो सकती हैं।

मित्रो ! किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए हमें एकाग्रता के बारे में भी सोचना होगा। अभी हमारा जीवन अस्त-व्यस्त है। अगर हमने अपने जीवन में एकाग्रता का अभ्यास किया होता, तो हमारे जीवन की सारी समस्याओं का हल हो गया होता तथा हम प्रगति के रास्ते पर बढ़ रहे होते । जमीन का भौतिक जीवन में भी कम महत्व नहीं है। नागपुर का संतरा, बंगाल का चन्दन वहाँ के जमीन के हिसाब से महत्व रखता है।

स्थूल का उतना महत्व नहीं, जितना सूक्ष्म का है। गाँधी जी का शरीर बाहर से बहुत कमजोर लगता था, परन्तु उनके अन्दर वाला सूक्ष्मशरीर इतना अधिक मजबूत था कि उसके द्वारा उन्होंने आश्चर्यजनक कार्य कर डाले। अष्टावक्र ऋषि बाहर से देखने में काले-कलूटे एवं टेढ़े-मेढ़े थे, परन्तु उनका भीतर का शरीर इतना

स्वामी विरजानन्द अपनी कुटिया में ध्यानस्थ थे। इसी बीच बाहर आहट हुई। मूलशंकर (बाद में स्वामी दयानन्द) बाहर खड़े थे। अन्दर से आवाज आई- कौन है? बाहर से उत्तर था- मैं कौन हूँ, यही तो जानने आया हूँ । विरजानन्द ने कहा- आओ! कब से तेरा इन्तजार था। प्रज्ञाचक्षु संपन्न गुरु ने ऐसे जिज्ञासु साधक को अन्दर बुला लिया और यही वह पल था जब स्वामी दयानन्द का जन्म हुआ। गुरु ने उनकी हर तरह से परीक्षा ली, आत्मबोध कराया और फिर निर्देश दिया कि समाज में व्याप्त अनाचार, कुरीतियों, धर्म के नाम पर छाये आडम्बरों को मिटाने अकेले निकल जाओ। गुरु की शक्ति लेकर शिष्य चल पड़ा और धीरे-धीरे दयानन्द सारे समाज पर छा गए।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

महत्वपूर्ण था कि उनके ज्ञान एवं कार्य को देखकर विदेह कहे जाने वाले राजा जनक जैसे विद्वान भी आश्चर्यचकित हो जाते थे।

मित्रो! हम चाहते थे कि आप भी अपने भीतर वाली जमीन अर्थात शरीर को जगा सकते तो मजा आ जाता। अगर आप इसका विकास नहीं कर सके और मात्र भौतिक शरीर का, भौतिक पदार्थों का ही ध्यान रखेंगे, तो हमें यह कहने में जरा भी संकोच नहीं होगा कि आप कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकेंगे। अगर आप केवल भौतिक शरीर का ही ध्यान रखते हैं, तो हम आपको अध्यात्मवादी नहीं कह सकते हैं। भले ही आप चाहे चालीसा का पाठ करते हैं या रामायण का पाठ करते हैं, उससे हमारा कोई मतलब नहीं है। आप अगर अध्यात्मवादी हैं और आपको अगर कुछ प्राप्त करना है तो आपको अपने भीतर वाले हिस्से को जगाना होगा, क्योंकि मनुष्य की शक्ति- सामर्थ्य, ऋषि-तत्व, ऋद्धि-सिद्धि जो भी है, वह उसके अन्दर ही है, जिसके लिए मनुष्य को साधनाएँ करनी पड़ती हैं। अन्दर एटम बम की शक्ति भरी पड़ी है, जिसे आपको जगाना और नियोजित करना भर है।

साथियो, मैं यह कह रहा था कि जीवात्मा की शक्ति बहिरंग में नहीं, अन्तरंग में है। वास्तव में हम केवल बाहर की चीजें ही देख पाते हैं। अन्दर की चीजें हम नहीं देख पाते। इस कारण से उसका महत्व हमें नहीं मालूम पड़ता है। अगर हम भीतर की चीजों का पता लगा सकें तथा उसे जाग्रत करने का प्रयास कर सकें, तो हमारे जीवन का कायाकल्प हो सकता है। आध्यात्मिकता का शिक्षण हमने प्रारंभ से देने का प्रयास किया है तथा लोगों को बतलाने का प्रयास किया है कि आप अपने आपको पहचानिए तथा उसके विकास के लिए प्रयास कीजिए। **''आत्मा वाऽरे ज्ञातव्य श्रोतव्य ध्यातव्य''** यही वास्तविकता है। अपने आपको जानो, पहचानो तथा इसे जाग्रत करने का प्रयास करो, ताकि तुम महान हो सको- निहाल हो सको। हमारे भीतर ऋद्धि-सिद्धियों का, शक्तियों का जखीरा भरा है, उसके बारे में अगर जान सके तो मजा आ जाएगा।

मित्रो! हमने सुना है कि कोशिकाओं के भीतर 'जीन्स' होते हैं, जो शरीर निर्माण से लेकर मनुष्य की सारी गतिविधियों का नियंत्रण-संचालन करते हैं और उसे निहाल कर देते हैं। आत्मा भी अन्तरंग वाला 'जीन' है, जो जाग्रत हो जाने पर आदमी को निहाल कर देता है। हमारा ऊपर वाला शरीर जो हमें दिखाई पड़ता है, वह हमारा स्थूलशरीर है। जिस प्रकार हम कपड़ा पहने हुए हैं, ठीक उसी प्रकार इस काया का जो ऊपरी स्वरूप है, वह स्थूलशरीर है। हम बाकी शरीरों के बारे में जानते हैं या नहीं, यह नहीं कह सकते, परन्तु सूक्ष्मशरीर के बारे में यह जानते हैं कि यह सपने के समय बाहर आ जाता है। इस तरह हम अन्दाजा लगा लेते हैं कि हमारे अन्दर बहुत बड़ी शक्ति है, जो हमारे शरीर से बाहर निकल जाती है और इस प्रकार का सपना दिखा जाती है।

सूक्ष्मशरीर को देखा नहीं जा सकता है। जिस तरह से हम बिजली को नहीं देख सकते हैं, उसी तरह से हमारे दिमाग में विद्यमान अदृश्य इलेक्ट्रिसिटी का महत्व कम नहीं है। इसी प्रकार पाँच प्राणों से बना हुआ हमारा सूक्ष्मशरीर भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। अपना स्थूलशरीर जो हमें बाहर से दिखाई देता है और जो खाता-पीता है, टट्टी-पेशाब करता है, राग-द्वेष करता है, उतना महत्वपूर्ण नहीं है, जितना कि सूक्ष्मशरीर। अगर हम अन्दर वाले इस शरीर को विकसित कर लें तो हम शक्तिशाली हो सकते हैं। यह मनुष्य का भीतर वाला माद्दा है, जो अध्यात्म का बहुत ही महत्वपूर्ण माद्दा है, हिस्सा है। यही संसार को प्रभावित करता है और चमत्कार दिखलाता है। इसे हम 'सूक्ष्मशरीर' कहते हैं। यह बहुत ही महत्वपूर्ण है। एक हमारी फिजिकल बॉडी है, जो हमें बाहर से दिखलाई पड़ती है, जिसे हम स्थूलशरीर कहते हैं। उसके बाद हमारा सूक्ष्मशरीर है, जो बहुत ही शक्तिशाली एवं महत्वपूर्ण है।

अगर हम अपने खानदान के बारे में जान लें तो हमें अपने बारे में पूरी जानकारी मिल जाती है। उसी प्रकार हमारे अन्दर एक से बढ़कर एक शक्तिशाली शरीर भरा पड़ा है, कोष भरे पड़े हैं, जखीरा भरा पड़ा है। अगर उसे हम जान सके तो दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति बन सकते हैं। वास्तव में मनुष्य को इसी वास्तविक सम्पदा के बारे में जानकारी होनी

सगर वंश में जन्मे भगीरथ ने जब पितरों को नरक की अग्नि में जलते देखा तो बहुत दुखी हुए। परित्राण हेतु उन्होंने तप किया- स्वार्थसिद्धि के लिए नहीं, परमार्थ-प्रयोजन के लिए। अगणित विघ्न-बाधाओं का सामना करते हुए चिरकाल तक उन्होंने अपनी साधना जारी रखी। कालान्तर में यह पुरुषार्थ सफल हुआ और स्वर्ग में रहने वाली गंगा पृथ्वी पर आने को सहमत हो गयीं। अपने तप से उन्होंने वह कठिन कार्य सम्भव बना दिया।

अज्ञानग्रस्त संसार में स्वर्गीय ज्ञानगंगा का अवतरण, अनाचार-अविवेक के दावानल में जलते अगणित मानवपुत्रों का उद्धार ऐसे ही पुरुषार्थी साधकों द्वारा सम्भव हो पाता है।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

चाहिए। हम जो पाँच देवताओं की उपासना करते हैं, वह वस्तुतः अपने भीतर की, व्यक्तित्व के विकास की उपासना है। हमें न तो भगवान के सामने नाक रगड़ने की आवश्यकता है और न पूजा करने की आवश्यकता है। बिजली के बारे में जिनको जानकारी होती है, वे घर में बैठे रहकर उसके बटन दबाते रहते हैं, जिससे घर के पंखे चलते रहते हैं, बल्ब जलते रहते हैं। अतः उस बिजली के बारे में भी आपको सही जानकारी होनी चाहिए।

मित्रो ! आपको हम यह बतलाना चाहते हैं कि हम भगवान की उपासना छोड़कर अगर अपने व्यक्तित्व का विकास करने का प्रयास करें, अपने आप का सुधार करने का प्रयास करें तो यह जीवन स्वर्गमय हो सकता है तथा हम सारी चीजें प्राप्त कर सकते हैं। उस परिस्थिति में मनुष्य देवता बन जाता है, पैगम्बर बन जाता है। यह कार्य अपने आपको परिष्कृत करने से ही संभव होता है। अध्यात्म खुशामद करने का, नाक रगड़ने का नाम नहीं है। वास्तव में इसके लिए मनुष्य को तपाने की आवश्यकता है। तपाने से सोना तथा लोहा साफ हो जाता है। तपाने से पानी स्टीम-भाप बन जाता है। आप को भी तप करने की आवश्यकता है, इसके लिए आपको छोटे-छोटे सिद्धान्तों का परिपालन करने, अभ्यास में उतारने की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए, अस्वाद व्रत रखने का प्रयास करें। आप नमक एवं शक्कर का त्याग करें। अगर जीभ पर कण्ट्रोल कर लिया तो आप सब चीजें प्राप्त कर सकते हैं। यह बहुत ही खराब है, सबको परेशान करती है। जीभ पर कण्ट्रोल करना स्वास्थ्य के लिए भी हितकर है।

इसी तरह वाणी पर संयम रखें। बोलने से पहले यह सोचें कि हम जो कुछ बोलने जा रहे हैं, सामने वाले पर उसका क्या प्रभाव पड़ेगा। आपको इसके लिए मौन धारण करने की आवश्यकता है। कम-से-कम प्रतिदिन दो घंटे के लिए मौन रहने का प्रयास करें । आप इसे सुबह या शाम ही रखें, पर रखें अवश्य। इससे वाणी में तेजस्विता आती है। वाक्युद्ध न हो, इसके लिए भी मौनव्रत का पालन करने की आवश्यकता है। आहार का भी संयम होना चाहिए और वाणी का भी।

वाणी-संयम के साथ अन्य इंद्रिय-संयम भी जुड़े हुए हैं। इसके लिए ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। वस्तुतः इसका खण्डन मनुष्य के विचारों के कारण होता है। मन में अगर कुविचार आ रहे हैं, तो उसके विपरीत उलटे विचार करना शुरू कर दें। अगर कामवासना के विचार आते हैं तो भीष्म पितामह, हनुमान आदि को याद करें। उनकी कहानी पढ़ें। इस प्रकार सकारात्मक चिन्तन से अपने विचारों को बदला जा सकता है। बुरे विचारों को हटाकर उसके स्थान पर दूसरे सुन्दर विचारों को अपने मन में स्थान दीजिए। इस प्रकार पवित्र-निर्मल बनकर उस महान शक्ति को अपव्यय होने से रोकें, जो कि जीवन की एक महत्वपूर्ण शक्ति है। ब्रह्मचर्य एक महान तप है।

पैसों का अपव्यय न करें। आप जो पैसा खर्च करते हैं, उसको बड़े ही संयमी भाव से खर्च करें। खर्च करने से पहले हजार बार सोचें कि क्या इस चीज की वास्तव में आवश्यकता है या नहीं ? क्या इसके बिना काम नहीं चल सकता ? इस तरह पैसे पर नियंत्रण रखा जा सकता है और अपव्यय से भी बचा जा सकता है।

समय का संयम सबसे महत्वपूर्ण तप है। इस संसार में जो भी महापुरुष हुए हैं, उन्होंने अपने समय को, काल को पाटी से बाँधकर रखा था। आप टाइमटेबिल बनाकर काम करें। अपने विचारों को कण्ट्रोल करना सीखें। इस संसार में जो भी व्यक्ति सफल हुए हैं, उन्होंने अपने विचारों को नियंत्रित रखा है। जिस काम को करना अनिवार्य है, उसे अवश्य पूरा करें। इससे भी आपको लाभ ही होगा।

इस प्रकार की छोटी-छोटी तप-साधना, ब्रह्मवर्चस की साधना, प्रज्ञायोग की साधना के द्वारा आप अपने विचारों को, अपने अंतरंग को अधिक शुद्ध एवं पवित्र बना सकते हैं तथा जीवन के- प्रगति के सोपान को पार कर सकते हैं। आज की बात समाप्त। ॥ ॐ शान्तिः ॥

गोपियों ने एक बार बाँसुरी से पूछा- सुभगे! तुम्हें कृष्ण स्वयं हर समय होंठों से लगाये रहते हैं और हम सब उनकी कृपा पाने के लिए बहुत प्रयत्न करते हैं, परन्तु सफल नहीं होते, जबकि तुम बिना प्रयत्न किये ही उनके अधरों पर रहती हो।

बिना प्रयत्न किये नहीं गोपियो ! मुरली बोली- मैंने भी प्रयत्न किया है। जानती हो मुझे मुरली बनने के लिए अपना मूल अस्तित्व ही खो देना पड़ा है।

गोपियों को तब समझ में आई। बाँसुरी अपने आप में खाली थी। उसमें स्वयं का कोई स्वर नहीं गूँजता था, बजाने वाले के ही स्वर बोलते थे। बाँसुरी को देखकर कोई यह नहीं कह सकता था कि यह कभी बाँस रह चुकी है, क्योंकि न तो उसके कोई गाँठ थी और न कोई अवरोध। गोपियों को भगवान का प्यार पाने का अनूठा सूत्र मिल गया था।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी-

परिष्कृत मनःस्थिति ही स्वर्ग है (उतरार्द्ध)

एक बार भगवान बुद्ध से पूछा गया कि आपको तो मरने के बाद स्वर्ग मिलेगा? उन्होंने कहा- नहीं, मैं तो स्वर्ग जाने का अधिकारी तब होऊँगा, जब हर व्यक्ति स्वर्ग जाने का अधिकारी होगा, सब को सुख व शांति मिलेगी, सब सुखी होंगे, तब तक मैं अपनी बारी काटकर दूसरे व्यक्तियों को क्यू में लगाता रहूँगा। सबके बाद में 'मैं' अंतिम व्यक्ति होऊँगा और स्वर्ग जाने की ख्वाहिश करूँगा। जब तक ऐसा नहीं होता, तब तक मैं लोगों को आगे बढ़ाता हुआ चला जाऊँगा। मित्रो! बुद्ध की वह मनोभूमि, ऋषि-मुनियों की वह मनोभूमि, जिसमें उन्होंने कहा है-

न त्वहम् कामये राज्यं न सौख्यं न पुनर्भवं।
कामये दुखतप्तानां प्राणिनाम् आर्तनाशनम्॥

तात्पर्य यह कि प्राणियों का आर्त और प्राणियों का दुख निवारण करने के लिए यदि हमें मौका मिल जाता है तो यह हमारे लिए वरदान है और यही हमारा सौभाग्य है।

एक बार कुंती से भगवान कृष्ण ने कहा कि हे कुंती! वरदान माँग। मैं अब जा रहा हूँ। मैं तो भगवान हूँ, तू जानती है क्या? कुंती ने कहा-मैं जानती हूँ कि आप भगवान हैं। मैं आपसे एक ही वरदान माँगती हूँ कि मुझे कष्टसाध्य जीवन दें, गरीब लोगों वाला जीवन जिऊँ ताकि मैं जान सकूँ कि गरीबी क्या होती है? उनकी कठिनाइयाँ क्या होती हैं? उनके कष्ट क्या होते हैं? यह सब मैं समझ सकूँ, ताकि उनकी सहायता कर सकूँ।

मित्रो! स्वर्ग, मनुष्य के देखने और सोचने के ढंग में-तरीके में है। यह किसी जगह विशेष का नाम नहीं है। कम-से-कम स्वर्गलोक के उस जगह का पता लगा लिया गया है। चंद्रमा के बारे में जानकारी प्राप्त कर ली गयी है कि कभी-कभी वह इतना गरम हो जाता है कि अगर कोई धातु रख दी जाय तो वह भी पिघल जाएगी। रात में चंद्रमा इतना अधिक ठंडा हो जाता है कि यदि कोई चीज रख दी जाय तो वह बर्फ बनकर जम जाएगी। ऐसा गरीब चंद्रमा-जहाँ न पानी है, न हवा, वहाँ अगर आपको भेज दिया जाय तो आप कहेंगे कि गुरुजी आपने हमें कहाँ भेज दिया। हमें वापस बुला लीजिए। लोग चंद्रमा पर गये हैं, लेकिन किसी की हिम्मत नहीं पड़ी कि वहाँ ठहर सकें। वे केवल चंद मिनट चक्कर काटकर वापस आ गये हैं। इसी तरह शुक्रग्रह का पता लगा लिया गया है कि वहाँ कोयले का भंडार है। कार्बन गैस भरी पड़ी है। वहाँ आप बिल्कुल जिंदा नहीं रह सकते, वहाँ आपका दम घुट जायेगा।

कुछ लोगों का विश्वास है कि भगवान के पास जाने से स्वर्ग मिलता है। क्या वास्तव में स्वर्ग है? किसी ने देखा है स्वर्ग को? किसी ने देखा हो या नहीं, लेकिन मित्रो! मैंने स्वर्ग को देखा है और मैं चाहता हूँ कि आपको भी स्वर्ग दिखाऊँ। भगवान के पास जाने से दो चीजें मिलती हैं- पहला-'स्वर्ग', दूसरा-'मुक्ति'। परंतु स्वर्ग केवल देखने वाले तरीके का नाम है। आप चाहें तो अपने में स्वर्ग का प्रयोग कर सकते हैं। आप कृपा करके उन लोगों का एहसान देखना व मानना शुरू कीजिए, जिनके बोझ से आपका शरीर लदा हुआ है। आप कृपा करके उस बूढ़ी माँ को देखिये। वह कृपा की देवी है, दया की देवी है, जिसने नौ महीने आपको अपने पेट में रखा, रक्त निचोड़ा, अपनी हड्डी गला दीं। अपना सारा-का-सारा मांस निचोड़ करके हमारा एक पिंड बनाया। जब यह पिंड असहाय था तब और जमीन पर आने के बाद भी वह अपने लाल रक्त को सफेद दूध के रूप में पिलाती रही।

जब कोई व्यक्ति किसी को पचास सी. सी. खून दान दे देता है, तो जन्म भर एहसान करता है और कहता है- जब मरने के लिए बैठे थे तब हमने आपको खून दिया था, बचाने के लिए। लेकिन मित्रो! जिसने हजारों सी. सी. रक्त आपको दूध के रूप में पिला दिया हो, उसके एहसान का क्या ठिकाना? काश! कभी आपने उस माँ को एहसान की दृष्टि से देखा होता तो आपको मालुम होता कि देवता और कहीं नहीं हैं, कहीं बाहर जाने की जरूरत नहीं है, देवता 'माँ' के रूप में आपके घर में ही है। क्या शारदा, सरस्वती को जानने की जरूरत है या लक्ष्मी को देखने के लिए आपको मुम्बई जाने की जरूरत है? नहीं,'माँ के रूप में' लक्ष्मी आपके घर में बैठी हुई है। जहाँ आज हर आदमी मुआवजा चाहता है, बदला चाहता है, वहाँ त्याग की देवी, तपश्चर्या की देवी, अनुदान की देवी-आपकी धर्मपत्नी अपने माता-पिता, भाई-बहिन, कुटुम्ब-परिवार को छोड़कर आती है और आपकी सेवा में दिन-रात लगी रहती है। आप जिस तरीके से उसे रखते रहे, वह उसी तरीके से रही और जीवनभर अपना सारा श्रम निचोड़ती रही। धर्मपत्नी अपना रूप और यौवन, अपनी भावनाएँ आपके ऊपर निचोड़ती रहती है, परंतु बदले में आपसे कुछ नहीं चाहती।

साथियो! त्याग और बलिदान का देवता आपके घर में बैठा है। उस त्याग और बलिदान के देवता का नाम है- भगतसिंह। उस देवता का नाम है- महर्षि दधीचि। मित्रो! हमने महर्षि दधीचि को तो नहीं देखा, लेकिन दधीचि के रूप में अपनी पत्नी को देखा है, जिन्होंने अपने जीवन का उत्सर्ग कर दिया मकसद के ऊपर। आपकी आँखों में 'यदि कृतज्ञता के भाव आयें', तब आपको यह करना होगा कि नारी के उत्थान के लिए आपको

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

आगे आना होगा। आप जाते तो गायत्री माता के मंदिर में हैं, लेकिन औरत को लातों से मारते हैं। जब वह बेचारी दर्द व शर्म के मारे चिल्लाती है, तब आप उसके मुँह में कपड़ा ठूँस देते हैं। तब वह सिसक-सिसक कर रोती है। धिक्कार है ऐसे लोगों पर, जो ऐसे कुकर्म करते हैं। मन में यह भावना लेकर चले थे गायत्री माता को प्रसन्न करने, उनसे वरदान माँगने चले थे, ऐसे दुष्ट, पिशाच, नीच लोगों को धिक्कार है। ऐसे ही पापी लोग नरक में जाते हैं। ऐसे लोग जहाँ कहीं भी जाएँगे, नरक बना देंगे, घर में भी, बाहर भी वे लोग नरक बना देंगे। घर-बाहर, पृथ्वी-आकाश सारी जगह नरक ही विद्यमान रहेगा उनके लिए।

मित्रो! जो आँखें दुष्टता को देखती रहती हैं, दोष-दुर्गुणों को देखती हैं। जिनके भीतर कभी कोई संवेदना का भाव उत्पन्न नहीं होता। सारे जीवन में त्याग और सेवा के कृतज्ञता के भाव जब तक मनुष्य के जीवन में न आयें, तब तक स्वर्ग नहीं प्राप्त होता है। स्वर्ग अर्थात कृतज्ञता के भाव। ये भाव जब-जब हमारी आँखों व दिल में आ जाते हैं, तब हमें छोटी-छोटी चीजें देवता के रूप में दिखायी देती हैं। दूसरे लोग हमारे ऊपर हँसा करते हैं, कहते हैं ये हैं हिंदू। ये क्या पूजते हैं? पत्थर। ये क्या पूजते हैं? पीपल। ये क्या पूजते हैं? घूरा। बेवकूफ वे लोग हैं, नहीं, हम लोग उनसे ज्यादा बुद्धिमान हैं। महत्वपूर्ण यह है कि जिस जानदार या बेजान चीज ने हमारे ऊपर एहसान किया है, उनके चरणों पर हमारा मस्तक झुका रहता है। अगर वह बेजान है तो उससे हमें क्या मतलब। क्योंकि बेजान चक्की ही हमें अनाज पीस-पीसकर खिलाती है। जिस अन्न को हम ऐसे खा नहीं सकते थे, चबा नहीं सकते थे। उसको पीसकर हमारे खाने लायक बनाया। हमारे लिए पौष्टिक अन्न बनाया, जिसने हमारा पेट भरा। चक्की न हो तो हम कहाँ से पेट भरेंगे? देवता चक्की नहीं, तो कौन है? जिसने बिना पारिश्रमिक माँगे अपना श्रम जारी रखा। हम उसकी पूजा न करें तो किसकी पूजा करें। वह पत्थर है अवश्य, लेकिन इनसानों से तो पत्थर अच्छा है। उन देवताओं से तो पत्थर अच्छा है, जो देवता बकरा खाने के बाद, भैंसा खाने के बाद इनसान की सहायता करने को तैयार हों। ऐसे दुष्ट कसाई देवताओं से अच्छा तो पत्थर देवता है, जो हमारे चक्की पीसने के काम में आ जाता है।

घूरा-जो कूड़ा का ढेर भरा हुआ पड़ा रहता है। जिसने गंदगी एक स्थान पर एकत्र कर ली और अपने आप को गला दिया। गलाने के बाद अपने आप को खाद बना डाला, जो कि खेतों में डाली जाती है। जिससे कि अन्न की पैदावार चावल, गेंहू, मक्का, जौ, फल, सब्जी आदि अधिक मात्रा में होते हैं। अगर हम घूरे की पूजा नहीं करेंगे, तो किसकी पूजा करेंगे। ये बेजान घूरा है, बेजान चक्की है, पर हम तो बेजान नहीं हैं, हममें तो जान है। हर जानदार का एक फर्ज होता है कि जिन लोगों से हम सहायता लेते हैं और जिन लोगों की सेवाएँ प्राप्त कीं, जिन लोगों का स्नेह प्राप्त किया, उन सबके प्रति कृतज्ञता के भाव रखें। कृतज्ञता का भाव रखना मित्रो; केवल वैचारिक रूप से नहीं हो सकता। जिसके प्रति कृतज्ञता के भाव हैं, उसके प्रति कुछ प्रतिक्रिया-प्रतिध्वनि होनी ही चाहिए। हर ध्वनि की प्रतिध्वनि होती है। जैसे कूएँ में जो आवाज देते हैं, उसकी प्रतिध्वनि होती है और वही आवाज गूँजकर हमें पुनः सुनायी देती है। यहाँ मथुरा में एक प्रसिद्ध जगह है। जिसे पोतराकुण्ड कहते हैं। यहाँ पंडे लोग अपने यजमानों को ले जाते हैं। वहाँ उनसे कहलवाते हैं कि- 'यशोदा तेरा लाला जागै कि सोवै।' इसमें अंतिम शब्द 'सोवै' है। तालाब बहुत बड़ा है जिसमें से आवाज आती है 'सोवै'। अगर आप ऐसे कह दें कि यशोदा तेरा लाल सोवै कि जागै, तो एक सेकण्ड बाद जागै शब्द की प्रतिध्वनि आयेगी।

मित्रो! कृतज्ञता के भाव जो हमारे अंतरंग में जाकर के टकराते हैं, तो इस शरीर रूपी गुंबद से एक भाव उत्पन्न होता है, एक कल्पना उत्पन्न होती है, एक आकांक्षा होती है कि जिन लोगों ने हमें अनुदान दिये हैं, हमारी सेवा-सहायता की है, उन लोगों के प्रति हमारा कोई फर्ज नहीं है क्या? क्या उनके ऋणों से मुक्ति नहीं पायी जा सकती है? मनुष्य के मन में जिस दिन ये भाव उत्पन्न होते हैं, उस दिन उसे चारों ओर देवता दिखायी देते हैं। एक देवता वह अध्यापक दिखायी पड़ता है, जिसने प्राइमरी स्कूल में पढ़ाया था। जो रोज मुर्गा बनाता था और मार लगाता था, अगर मारता नहीं तो आज हम और आप गाय, भैंस, बैल चरा रहे होते। मारा तो क्या हुआ, मुर्गा बनाया तो क्या हुआ, पढ़ाया भी इसी तरीके से कि अच्छी डिवीजन आती रही और पास होता गया। धन्यवाद है उस गुरु को जिसने हमें पढ़ाया। कैसा प्यार भरा गुरु था वह जिसकी वजह से हमारे जीवन का सबसे स्वर्णिम समय बीता। छोटे-छोटे बालक, छोटे-छोटे स्कूलों में लम्बी-लम्बी जिंदगियाँ व्यतीत कीं, पर वैसा निर्मल और निश्चल प्रेम कहीं देखा हमने?

हमने आपको कोकाकोला पिला दिया और पान भी खिलाये, लेकिन इस खिलाने-पिलाने के पीछे भी एक चाल थी। आपकी बेटी की शादी है-साड़ी खरीद ले जाइये। कितने दाम की साड़ी है? अरे दाम का क्या सोचना, दाम तो बाद में भी मिल जाएँगे। आप साड़ी ले जाइये, अजी हमारे और आपके पिताजी दोस्त थे। कोकाकोला पिलाया था तब आपने मेरी जेब काट ली थी। हमने मित्रताएँ तो कर लीं, लेकिन स्वार्थ, छल-कपट और कामनाओं से भरी हुई। शतरंज की विसात के तरीके से हमारी मित्रताएँ बनी रहीं। जब हमारा काम पूरा हुआ तो हमने इस तरीके से आँखें फेर लीं, जैसे पिंजरे से निकलने के बाद तोता फेर लेता है। मित्रता का अर्थ हमारे जीवन से चला गया और अन्तःकरण तलाश करता फिर रहा है कि हमें कोई मित्र मिल जाये। परंतु मित्र कहाँ से मिले? मित्र के बिना, सखा के बिना, साथी के बिना पूरा जीवन एकाकी प्रेत-पिशाच-

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

सा मरघट में अकेले-अकेले बैठे रहते हैं, जिनका अपना कोई भी नहीं।

मित्रो! शिकार खेलने वाले जंगल-जंगल घूमते रहते हैं। जंगलों में रहने वाले जानते हैं कि एक्कड़ नाम का एक जानवर होता है। जो झुण्ड में से निकलकर अलग चला जाता है, वह एक्कड़ कहलाता है। एक्कड़ सुअर बड़ा भयानक होता है। जंगल में जब मैं रहा तो एक्कड़ जानवर को हमेशा तलाश करता रहा। झुण्ड से बाहर कभी हिरन रहने लगता है, तो वह बड़ा ही खूँखार हो जाता है । जहाँ भी मौका मिलता है, सींग घुसेड़ देता है किसी भी जानवर में। एक्कड़ बड़ा ही भयानक होता है, बड़ा ही खूँखार होता है, ऐसे ही अचानक हमला बोलता है। जंगल के सभी लोग जानते हैं कि इससे कैसे बचना चाहिए। इसी तरह जो व्यक्ति एक्कड़ के तरीके से रहते हैं, वे किसी को अपना सखा बना रहे हैं, किसी को मित्र बना रहे हैं, परंतु वस्तुत: उनका प्रेमी कोई भी नहीं। सब उनके लिए शतरंज की मोहरों के तरीके से हैं। जिनको यहाँ से उठाकर वहाँ रख देते हैं, जिससे गोटी लाल हो जाती है। अगर बात बन जाती है तो ठीक, अगर नहीं बनी तो उसको छोड़ देते हैं और दूसरी गोटी फिट करने की तिकड़म भिड़ाते रहते हैं।

मित्रो! हम याद करते हैं बचपन के उन लोगों की, जो कि ज्वार की रोटी लेकर आते थे और हम गेहूँ की रोटी ले जाया करते थे और आपस में मिल-बैठकर खाते थे। ब्राह्मण, बनिया और नाई सभी साथ बैठे हुए खाते थे। तब न तो किसी को जाति का ध्यान था, न ही ऊँच-नीच का, कि कौन ब्राह्मण है, कौन बनिया है और कौन नाई है? बड़े हो गये तो जाति-बिरादरी के हमारे सामाजिक बंधनों से हमारा जीवन नष्ट-भ्रष्ट हो गया। बचपन में हमने नाई के लड़के के साथ जो रोटियाँ खायी थीं, याद आता है वह निश्चल प्रेम, कृतज्ञता का भावभरा जीवन। मित्रो, आकांक्षा उत्पन्न होती है और निश्चल प्रेम याद आता है। मन करता है कि वैसा ही प्रेम भरा जीवन दुबारा मिल जाये। ऐसा मालूम होता है कि यह खूबसूरत दुनिया जो न जाने कितने हीरे-जवाहरातों से बनायी गयी है। छोटे बालक और अध्यापक जब याद आते हैं; जब हमको अपनी माँ याद आती है, जो हमको गोद में लिए फिरा करती थी, तब मालूम पड़ता है कि दुनिया कितनी खूबसूरत, प्यार से, आनन्द और उल्लास से भरी हुई है। हमको जब समाज का ज्ञान आता है तो मालूम पड़ता है कि न जाने हम कितने लोगों से शिक्षण पाते हुए चले गये। इतने लोग अपना ज्ञान हमारे पास रख गये।

मित्रो! आप एक गीता खरीद करके ले आते हैं, जिसमें भगवान श्रीकृष्ण की लीला का ज्ञान, जो अर्जुन को मिला था, पढ़ते हैं। धन्य है वह गीता, धन्य हैं-प्रेस वाले, धन्य है वह छापाखाना वाला और धन्य है वह कागज बनाने वाला टाटा मिल, जो कागज के रिम बनाता हुआ चला गया। धन्य है वह, जिसने छापने की मशीनें बनायीं, जिससे हमें ढाई आने की गीता पढ़ने को मिल गयी। धन्यवाद उन सब लोगों को जिनने इतना बेहतरीन काम किया, जिसकी वजह से गीता जैसी पवित्र व धार्मिक पुस्तक पढ़ने को मिल गयी। गहराई से सोचता हूँ तो पता चलता है कि दुनिया में कितने बेहतरीन और खूबसूरत लोग रहते हैं। हमको इन सबसे एक ही बात समझ में आती है कि दुनिया में चारों तरफ प्रेम और सौहार्द्र बिखरा हुआ है। मित्रो, यही अमृत है और इसकी लहरों में आप उड़ते हुए और सरकते हुए चल सकते हैं। स्वर्ग है मक्के की रोटी में, स्वर्ग है फटे कपड़ों में, स्वर्ग है गरीबी में। रेशमी वस्त्र तो अंगारे के समान लगते हैं। मिठाइयाँ जो आप मजे से स्वाद ले-लेकर खाते हैं, उसमें जहर भरा हुआ है- पोटेशियम सायनाइड भरा हुआ है, जो कि आपका पेट फाड़ देगा। इसलिए आपने जो आकांक्षा भौतिकता के रूप में गाड़ रखी है कि मकान आपको मिल जाएगा, चीजें आपको मिल जाएँगी तो आपको सुख-शांति मिल जाएगी-व्यर्थ है।

मित्रो! इससे आपके भीतर आकांक्षाएँ, तृष्णाएँ बढ़ती हुई चली जाती हैं कि अमुक चीज हमारे पास कम है और यह चीज हमको चाहिए। परंतु उनका उपयोग करना हमको कहाँ आता है? फिर भी उसको हम जोड़ना शुरू कर देते हैं। उसे जोड़ते हुए मुसीबतें हमारे पास आती हैं। बच्चे कहते हैं माँ जी हमको यह चीज दोगी? वह कहती है- नहीं। छोटी बच्ची कहती है माताजी हमको दोगी? कहती है नहीं। यह तो जमा करके रखा जाएगा। बहुत मुनाफा कमाया जाएगा। हमें वह कहानी याद आती है कि मधुमक्खी शहद जमा करती रही। एक दिन बंदर आया और छत्ता तोड़ करके चला गया। सारा-का-सारा शहद गिर पड़ा और सारी मक्खियाँ उसमें चिपककर मर गयीं। हमको जितना लाभ मिलता है, उसका हमको सदुपयोग करना आता है क्या? नहीं, हमको धन का सदुपयोग करना आता नहीं। हमको इतना सुंदर शरीर मिला है, उसका प्रयोग करना, उपयोग करना आता है क्या? नहीं। हमको इतना अच्छा स्वास्थ्य मिला हुआ है, उसका हमने सही उपयोग किया नहीं, फिर हम किस मुँह से ईश्वर के पास माँगने के लिए जाते हैं कि हमारा अच्छा

आज अज्ञान रूपी वृत्तासुर से सारा-का-सारा समाज ही आच्छादित है। जिनके कान हैं, वह समाज की पीड़ा और पतन की मर्मभेदी चीत्कार सुन सकते हैं तथा आँख वाले देख सकते हैं। यह समय व्यक्तिगत शौक-मौज का नहीं है। हम युगसंधि वेला में उपस्थित हैं। शीघ्र ही या तो हम सर्वनाश के गर्त में गिरेंगे या उन्नति के उच्च शिखर पर आरूढ़ होंगे। आज आवश्यकता है दधीचि जैसे आत्मदानियों की। शरीर तो नष्ट होगा ही, किंतु यदि अपने लक्ष्य को पूरा करने में नष्ट हो, तो ही इसकी सार्थकता है।

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

(वाङ्मय ३१, पृष्ठ-५.३८)

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

स्वास्थ्य बना दीजिए। आपको जो धन मिला है, उसका क्या आपने सही कामों में उपयोग किया ? नहीं। फिर आप किस मुँह से भगवान के पास धन माँगने के लिए जाते हैं।

साथियो, आपको जो बुद्धि मिली है उसका आपने सही इस्तेमाल किया ? नहीं। फिर आप भगवान से बार-बार क्यों माँगते हैं ? आपको इतनी विद्याबुद्धि मिली हुई थी कि आप दुनिया में शांति की धारा बहाते, उसको खूबसूरत बनाते, लेकिन आप तो संग्रह करने में लगे थे। जमा करने की बात सोचते रहे, स्वामी बनने की बात सोचते रहे, मालिक बनने की बात सोचते रहे, लेकिन आपके मन में उपयोग की बातें कहाँ आयीं ? यदि उपयोग की बातें आपके मन में आतीं तो आप सोचते कि जितना आपको मिला है वह पर्याप्त है, बहुत है। अगर आप इन सबका अच्छी तरह से प्रयोग कर सके होते तो हम सोचते कि जितना भी आपके पास जो विद्या है, स्वास्थ्य है, जो धन है, इतने से ही सदुपयोग करके आप स्नेह-सौहार्द्र की धाराएँ बहा सकते हैं। फिर आनंद, उल्लास और संतोष आपके चारों ओर उमड़ता हुआ चला जा सकता है। कृतज्ञता आपके मन में उमड़ती हुई चली जा सकती है। पर इस्तेमाल करना हमको कहाँ आया ?

मित्रो ! उस स्वर्ग की कल्पना करना व्यर्थ है, जो कि मरने के बाद मिलता है। क्योंकि आपको यदि स्वर्ग भेज दिया जाए तो थोड़े ही दिनों में आप स्वर्ग को भी नरक बना देंगे। अपने देश के एक प्रमुख नेता काहिरा मिश्र के एक होटल में ठहराये गये थे। वहाँ का खाना उनको पसंद नहीं आया, तो उन्होंने नौकर से कहा कि स्टोव पर चाय बना दे तथा खाना पका दे। स्टोव के धुएँ से कमरे की एक-दो दीवार काली हो गयीं, तो उस होटल के मैनेजर ने कहा कि आपने हमारे कमरे की दीवारें गंदी कर दीं। उसने लंबा-चौड़ा बिल बनाकर उन नेता जी के पास भेजा और वह बिल उनको चुकाना पड़ा। यदि हम स्वर्ग नाम के स्थान पर जाएँ तो वहाँ भी चारों तरफ गंदगी फैला देंगे और वही जगह थोड़े दिनों बाद नरक जैसी लगेगी। वहाँ कूड़े का ढेर लग जाएगा, लोग गाँजा, चरस-शराब आदि का सेवन भी करेंगे। ये लोग कौन आ गये ? ये भक्त आ गये, गायत्री स्तवन करने वाले आ गये। यहाँ लोग मंदिर के पीछे शौचालय की दीवारों पर पेशाब करते हैं। जगह-जगह गंदगी फैलाते हैं। बुरे व गंदे लोग जहाँ भी जाते हैं, वहाँ स्वर्ग को भी नरक बना देते हैं।

कभी-कभी हमें अकेले देहरादून एक्सप्रेस से हरिद्वार जाना पड़ता है। ट्रेन के डिब्बों पर लगी प्लेटों पर लिखा रहता है 'बम्बई से देहरादून' और जब हरिद्वार से मथुरा आना होता है तो उसी ट्रेन की प्लेटों पर लिखा होता है 'देहरादून से बम्बई'। इसका कारण जब हमने स्टेशन मास्टर से पूछा- तो उन्होंने बताया कि ये इन प्लेटों पर दोनों तरफ लिखा होता है। जब ट्रेन वापस जाती है तो प्लेटें पलट दी जाती हैं। विकृत दृष्टिकोण वाले लोगों को यदि स्वर्ग भेज दिया जाये तो थोड़े ही दिनों में वहाँ की पेंटिंग को भी बदल दिया जाएगा वहाँ का साइनबोर्ड बदल दिया जाएगा कि यह है-नरक। अच्छे दृष्टिकोण वाले लोग चाहे वे गरीबी में रहें, चाहे केवल मक्के की रोटी खाकर जीवित रहें, किसी भी तरीके से रहें,लेकिन वे लोग हर स्थिति में थोड़े ही दिनों में स्वर्ग पैदा कर सकते हैं।

एक संत इमरसन हुए हैं, जिन्होंने अँग्रेजी भाषा में आध्यात्मिक जीवन के ऊपर बहुत-सी किताबें लिखी हैं-उनका एक मंत्र है कि "मुझे नरक में भेज दो मैं उसे स्वर्ग बना दूँगा"। उनकी हर किताब के पहले पन्ने पर यही लिखा रहता है। किताब पहले पन्ने से शुरू होती है और हर किताब के पहले पन्ने पर लिखा है कि स्वर्ग कहीं होता नहीं है, बनाया जाता है, निर्मित किया जाता है। वह मनुष्य की आँखों में रहता है, भावनाओं में रहता है, अंत:करण में रहता है। आध्यात्मिकता का अंतिम परिणाम यही है। मित्रो ! स्वर्ग है-विचार करने का सही तरीका और चीजों का देखने का सही दृष्टिकोण। इसी का अँग्रेजी नाम है-फिलॉसफी और हिंदी में दर्शन। यदि दुनिया को सही ढंग से देखना शुरू करें, नये ढंग के साथ सोचना आरंभ करें तो न जाने क्या देखने को मिलेगा और आप आगे बढ़ते हुए, ऊँचे उठते हुए चले जाएँगे। यही है ईश्वर को प्राप्त करने का, रिश्ता मजबूत बनाने का सीधा व सरल मार्ग। आज की बात समाप्त।

ॐ शांति:

❋

अच्छा होता यदि सघन अंधकार में भटकते हुए जीवन धर्म को कहीं से प्रकाश की एक किरण हस्तगत होने का सुयोग बनता और भ्रांतियों की भयानकता से उबरने का सुयोग प्राप्त हो पाता। अपने संबंध में विचार करने और जो बचा है, उसका सही सदुपयोग करके कुछ तो बना लेने का परामर्श प्राप्त होता; पर वह भी कहाँ बन पाता है। कदाचित कहीं से उपयोगी सुझाव उभरता है, तो उसे अनसुना कर दिया जाता है, प्रकाश की ओर से मुँह मोड़ लिया जाता है। इस दयनीय-दुर्मति और उसके साथ जुड़ी हुई दुर्गति का आकलन करने वाला विवेक 'हा-हंत' कहकर, पेट में घूँसा मारकर, मुँह को हाथों में छिपाकर किसी कोने में जा बैठता है। जहाँ लाभ को हानि और हानि को लाभ समझने की सनक ठंडे उन्माद की तरह सिर पर सवार हो रही हो, वहाँ कोई करे भी क्या ? कहे भी क्या ?

-पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

(वाङ्मय ग्रंथ क्र.२८ पृष्ठ ७.४१)

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी—

विवेक की साधना और सिद्धि

(४ जून, १९६९ गायत्री तपोभूमि, मथुरा)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ बोलें- **ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।**

देवियो, भाइयो! महात्मा आनंद स्वामी ने एक बार एक व्यक्ति से कहा था कि तू जब तक अनीति द्वारा कमाया हुआ धन खाएगा तेरी प्रगति और बुद्धि नष्ट होती चली जाएगी। अतः हमें सात्विक अन्न खाना चाहिए। अन्नमय कोश की साधना के लिए आपको विशेष रूप से यह विचार करना होगा कि आपका आहार सात्विक है या नहीं। यहाँ अन्न से मतलब आजीविका से है। आजीविका शुद्ध होनी चाहिए। आजीविका ठीक होगी तो मन भी ठीक होगा। मनुष्य के जीवन में आजीविका का अपना महत्व है। अन्न का अपना महत्व है। यदि ये शुद्ध होंगे तो साधना से सिद्धि मिलने में देर नहीं होगी। सात्विकता से सिद्धियाँ स्वतः आती हैं।

एक तपस्वी महात्मा जी थे। वह एक पेड़ के नीचे बैठे थे कि एक चिड़िया ने बीट कर दिया। उन्होंने उसकी ओर देखा और वह जलकर भस्म हो गयी। महात्मा जी को अपनी सिद्धि पर अहंकार हो गया था। एक दिन वे एक गाँव में गए और एक महिला से भीख माँगने लगे। महिला ने कहा कि आप थोड़ी देर रुकें। थोड़ी देर बाद भी जब वह नहीं आयी तो महात्मा जी ने आवाज लगायी। महिला बोली कि इस समय हम योगाभ्यास कर रहे हैं। पति की सेवा करना, खाना खिलाना, बच्चों को स्कूल भेजना- यह मेरा योगाभ्यास है। जब यह खत्म हो जाएगा तो हम आपकी सेवा करेंगे।

महात्मा जी नाराज हो गए और उसे शाप देना चाहा। महिला बोली कि महात्मन्! हम चिड़िया नहीं हैं जो आप हमें जला देंगे। महिला के इस कथन से महात्मा जी को आत्मग्लानि हुई और वे सोच में पड़ गए। उन्होंने पूछा कि तुम कैसे जानती हो कि यह घटना घटित हो चुकी है। महिला बोली कि मैं पति को ही परमेश्वर मानकर उनकी सेवा करती हूँ, जो हमारे लिए भोजन-वस्त्र की व्यवस्था करते हैं, देखभाल करते हैं। यह उसी का परिणाम है। महात्मा जी को उसने एक और गुरु के पास भेजा। वे बनिया के पास गए। वह प्रातःकाल से सायं तक पूरे परिश्रम और ईमानदारी से अपनी दुकानदारी करता था। यही उसका नित्य का योगाभ्यास था। इसके बाद महात्मा जी एक भंगी के पास गए। वह भी ईमानदारी के साथ अपने कर्तव्य-कर्म-सफाई के काम में लगा रहता। शाम को माता-पिता की सेवा करता। उसने भी महात्मा जी को बतलाया कि देखा हमारा योगाभ्यास। हमारा यही है ईमानदारी का योगाभ्यास, परिश्रम का योगाभ्यास।

वस्तुतः ये तीनों ही शुद्ध अंतःकरण वाले व्यक्ति थे। पिप्पलाद ऋषि का नाम सुना या पढ़ा होगा आपने। उनके जीवन में जो भी चमत्कार होता चला गया, वह उनके सात्विक आहार का था। तपस्या-उपासना में जो बल देता है, उसका नाम अन्न है। यह सात्विक होना चाहिए। इससे मन पवित्र, स्थिर और शांत रहता है। अगर आपका मन ठीक नहीं रहता है, तो साधना-उपासना का मूल आप समझ नहीं पाये हैं, तपस्या का मूल आप समझ नहीं पाये। फिर मैं आपको कैसे समझा सकता हूँ, जब आपके दिमाग में कूड़ा भरा पड़ा है। उस गंदगी को आपके दिमाग से हम कैसे साफ कर सकते हैं। इसकी सफाई आपको स्वयं ही करनी होगी।

मित्रो! हमारा मन साधना-उपासना में बहुत लगता है। इसमें हमें जो आनंद आता है, उसका वर्णन हम नहीं कर सकते हैं। आपका भी मन लगे, इसके लिए आपको अन्न की सात्विकता अपनानी होगी, तभी प्रगति हो सकती है। हमने चौबीस साल तक अपनी जीभ को साधा तथा सात्विक अन्न का सेवन किया। आप अपने को साधना नहीं चाहते हैं, तो उपासना के क्षेत्र में आगे कैसे बढ़ेंगे? एक दिन हमने आपको आहार-विहार के बारे में बताया था, साथ ही यह भी चर्चा की थी कि समय का विभाजन करें और समय का मूल्य समझें। अगर आप अपनी जीभ को साध लें, तो चमत्कार उत्पन्न हो जाएगा। आहार-विहार के असंयम के कारण ही बीमारियाँ आपको घेरे रहती हैं। इसी के कारण अभी तक आप छोटे आदमी बने रहे।

मित्रो, चंद्रभान नामक एक व्यक्ति भारत-पाक विभाजन के बाद पाकिस्तान से यहाँ आये थे। वे वहाँ पर एक टेलीफोन ऑपरेटर थे। यहाँ आने पर उन्होंने अपना कागज वगैरह दिखाया तो उनको भारत में नौकरी मिल गयी। आज बीस वर्ष बाद वे इसी विभाग के डायरेक्टर बनकर उच्चतम पोस्ट पर पहुँच गए। मित्रो यही सिद्धि है। यह कैसे मिली? यह उनके व्यवहार, परिश्रम तथा सात्विक आचार-व्यवहार के कारण मिली और वे प्रगति-पथ पर आगे बढ़ सके। उन्होंने उपासना के साथ साधना भी की, जिसका लाभ उन्हें मिल गया। वे ऑपरेटर के साथ-साथ विभाग के अन्य पेंडिंग कार्य को भी पूरा करते रहे। उनके विभाग के लोग उनके कार्य एवं व्यवहार से प्रसन्न रहते थे।

मित्रो, जब हम आगरा में प्रेस में काम करते थे वहाँ एक हमारे मित्र थे, जो कहते थे, कि काम ऐसा करो कि मालिक के हाथ-पैर तोड़कर रख दो। हमने कहा कि आप हमें जेल भिजवाएँगे क्या? उन्होंने कहा कि इसका मतलब यह है कि मालिक का सारा कामकाज

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अपने जिम्मे ले लो, तो मालिक आप पर निर्भर हो जाएगा, साथ ही आपकी इज्जत भी करेगा। चंद्रभान जी, जिनके बारे में अभी मैंने बताया, वे इसी प्रकार अपने ऑफीसर के हाथ-पैर तोड़ते चले गए। आगे जब कभी मौका आता था तब अपने अफसर से कहते कि हमारा प्रमोशन नहीं हो सकता? अफसर कहता- अवश्य होगा। वे परीक्षा में बैठते और ऑफीसर उनका सहयोग कर देता था। इस प्रकार उनकी प्रगति होती चली गयी। उनका पहनावा-ड्रेस भी बहुत सीधा-सादा था। लोगों को उनकी सादगी से प्रेम था।

मित्रो! मैं आपको अभी व्यवहार की सिद्धियाँ बता रहा था। आहार की सिद्धियाँ बता रहा था कि आप अपनी जबान पर काबू पाइए तथा सबके मित्र बनते चले जाइए। पिछले दिनों हमने आपको बतलाया भी था कि जब हम अज्ञातवास में गए थे तो एक साल तक केवल शाक-भाजी पर जिंदा रहे। आप तो आडंबर में आकर न जाने क्या-क्या खाते चले गए। आपने प्राकृतिक चिकित्सा की पुस्तकें भी पढ़ीं, परंतु आपने कभी भी उस पर चलने का प्रयास नहीं किया। आपने समय का संयम भी नहीं किया। इस कारण आप उन्नतिशील भी न बन सके। जापान एवं अमेरिका के लोग सारे दिन भजन नहीं करते, परंतु वे कितनी प्रगति पर हैं। वे अपने समय का एक मिनट भी बर्बाद नहीं करते हैं। हमारा बच्चा जब कमाने लगता है और हम बूढ़े हो जाते हैं, तो घर में बैठे रहते हैं, मक्खी मारते रहते हैं। जबकि बुड्ढे को बहुत काम करना चाहिए। बुड्ढे गाँधी ने बहुत काम किया। बूढ़े जवाहर ने लगभग पिचहत्तर वर्ष की उम्र में भी अठारह-अठारह घंटे काम किया। जवान आदमी की तरह ही बूढ़े व्यक्ति को भी काम करना चाहिए। कामचोर-हरामखोर हमें पसंद नहीं हैं।

साधना, जो मनुष्य को उत्कृष्ट बना देती है, इसी संदर्भ में, मैं बतला रहा था जो आपको अपने दिमाग में बैठा लेना चाहिए। कल हमने आपको बतलाया था कि मन को काबू में कर लेने के बाद भगवान का ध्यान कैसे करना चाहिए? गायत्री माता का ध्यान कैसे करना चाहिए? उन्हें बार-बार घूम-घूमकर देखना होगा, ताकि आपका इधर-उधर भागने वाला मन काबू में रहे तथा आप उनसे संबंध रख सकें। इसके लिए आपको मन की साधना करनी पड़ेगी। मन की साधना के दो माध्यम हैं। पहला है- विवेक और दूसरा- साहस। इनके द्वारा ही हम ऋद्धि-सिद्धियों से भरते चले जाते हैं। अपने आहार-विहार को ठीक करने के बाद अपनी प्रगति होती चली जाती है। मनुष्य के अंत:करण में बैठा हुआ विवेक और साहस जब जाग्रत हो जाता है, तो इन दो आधारों पर ही मनुष्य जो चाहे प्राप्त करता हुआ चला जाता है।

मित्रो! राजस्थान में एक संस्कृत के अध्यापक थे-हीरालाल शास्त्री। शास्त्री जी की पत्नी की मृत्यु हो गयी। हमारे आपके साथ ऐसा हो जाने पर या तो आत्महत्या कर लेंगे या दूसरी शादी कर लेंगे, परंतु संस्कृत का वह अध्यापक गाँव चला गया। उसने कहा कि उस महान नारी ने हमें आनंद-उल्लास से भर दिया था, हमारे अंदर विवेक, साहस जाग्रत कर दिया था। उसके मरने के बाद उसकी याद में हम इस गाँव के अंतर्गत कुछ करना चाहते हैं। हम उसके प्रति अपना फर्ज अदा करना चाहते हैं। इस गाँव की कन्याओं को हम पढ़ाना चाहते हैं। वे नौकरी छोड़कर गाँव आ गए और एक पेड़ के नीचे बैठकर उस गाँव की कन्याओं को पढ़ाने लगे। तीस दिन की रोटी का प्रबंध तीस घरों से हो गया और वह अपने आदर्श-कर्तव्यों पर आरूढ़ हो गए तथा पूरी निष्ठा के साथ उस कार्य को करने लगे। आदर्श-सिद्धांतों का धनी वह उस स्कूल को चलाता चला गया। लोग आए और मदद करते चले गए। विद्यालय का काम सुचारु रूप से चलने लगा।

मित्रो, शीरी-फरहाद की कहानी आप जानते हैं। शीरी को फरहाद चाहता था। राजा ने इस समस्या का हल करना चाहा तथा फरहाद को इस रास्ते से अलग करने का मन बना लिया। उसने एक योजना बनायी। फरहाद से कहा कि देख- इस पहाड़ के उस पार एक नदी है। इसको काटकर उधर से नहर लानी है। फरहाद का प्रेम अमर था। उसने कहा कि ठीक है, हम वैसा ही करेंगे। उसने कुल्हाड़ी उठायी और पहाड़ को काटकर नहर ले आया। लोगों ने भी सहयोग दिया। इस साधना को देखकर राजा को शीरी का हाथ फरहाद के हाथ में देना पड़ा।

इसी प्रकार उस अध्यापक का भी विद्यालय चल पड़ा तथा कुछ ही दिनों में वह राजस्थान का एक महान विद्यालय बन गया। वह व्यक्ति राजस्थान का मुख्यमंत्री भी बन गया। उस हीरालाल शास्त्री को सब लोगों ने पसंद किया तथा उसे सर्वसम्मति से मुख्यमंत्री बनाया गया। मित्रो, इस तरह विवेक की सिद्धियाँ प्राप्त करने वाले लोग महान बनते चले गए, उनकी प्रगति के रास्ते खुलते चले गए।

साथियो! एक छोकरी थी। उसकी शादी एक दारोगा के लड़के के साथ हो गयी थी। दारोगा शराब पीता था तथा उसके लड़के को भी शराब की लत लग गयी थी। वह भी अठारह साल की उम्र से ही शराब पीने लगा। छोकरी ससुराल आयी, उसे घर का सारा दृश्य देखा, परंतु घबराई नहीं। अपने पति की सेवा करती रही और अपनी कर्तव्य-परायणता पर अडिग रही। उसका पति रोज बारह बजे रात में आता था, तब तक वह जागती रहती थी। उसको भोजन कराके ही वह भोजन करती थी। चूँकि उसके परिवार वालों ने बताया था कि पत्नी को पति को भोजन कराके खाना चाहिए।

एक दिन रात को दो बज गए। वह आया ही नहीं। आटा गूँधकर रखा था, चूल्हा जल रहा था। थोड़ी देर के बाद वह आया, तो काफी शराब पी रखी थी। आते ही उल्टी करने लगा। सारे कपड़े खराब कर दिए। पत्नी ने सफाई

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

की, नहलाया-धुलाया तथा सुला दिया। सुबह आँखें खुलीं तो उसने देखा कि चूल्हा जल रहा है, आटा गुँधा रखा है। उसने पत्नी से पूछा कि क्या तुमने खाना नहीं खाया? पत्नी बोली- भला मैं कैसे खा लेती। मेरे माता-पिता ने कहा है कि पति के खाने के बाद खाना तथा उसकी सेवा करना। कल रात्रि में जब आप आए तो काफी मात्रा में शराब पी रखी थी। हमने सफाई की, क्योंकि आपने उल्टी कर दी थी। आपने जब भोजन नहीं किया तो फिर हम कैसे कर लेते?

मित्रो! उस करुणा की देवी, वात्सल्य की देवी की आवाज उसकी आत्मा में पहुँची, वह द्रवित हो गया। उसे आत्मग्लानि हुई तथा उसी दिन से उसने शराब न पीने का संकल्प ले लिया। साथियो! आगे चलकर वही व्यक्ति मुंशीराम, स्वामी श्रद्धानंद के नाम से विख्यात हुआ। उनके द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय कितना महान है। वह मालवीय जी द्वारा स्थापित विश्वविद्यालय के समकक्ष एक दूसरा विश्वविद्यालय है।

विवेक के आधार पर आत्मचिंतन करने वाला व्यक्ति स्वामी श्रद्धानंद बन गया। आदर्शवादिता की ओर अग्रसर कर देने वाला विवेक बड़ा महान है। विवेक मनुष्य को कहाँ-से-कहाँ उछालकर ले जाता है। सिद्धियाँ मनुष्य के भीतर भरी पड़ी हैं। अगर विवेक के आधार पर हम चलें, तो सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं।

एक बार हम महाराष्ट्र गए और महर्षि कर्वे के आश्रम से यह सीखकर आए कि महिलाओं की सेवा किस तरह से हो सकती है ? बच्चों की सेहत को कैसे सुधारा जा सकता है? महर्षि कर्वे के आश्रम में जाकर मैंने यह सब सीखा। उन्होंने कहा कि मैं बंधन का जीवन नहीं जीना चाहता और न ही नौकरी करना चाहता हूँ। मैं तो देश, समाज तथा संस्कृति की सेवा करना चाहता हूँ। इस दुनिया के अंतर्गत जो भी पीड़ित और पतित हैं, उनकी मैं सेवा करना चाहता हूँ। जो दुखी हैं, उनकी आँखों के आँसू को मैं पोछना चाहता हूँ। उनके आश्रम में जाकर हमने भी एक प्रेरणा प्राप्त की थी कि नौकरी नहीं करेंगे तथा दूसरों को भी नौकर बनने की शिक्षा नहीं देंगे। महर्षि कर्वे ने भी जीवनभर गुलामी नहीं की, नौकरी नहीं की।

मित्रो! उनके पिताजी ने सभी लड़कों को तीन-तीन हजार रुपये दिए थे। महर्षि कर्वे ने उन्हें जमा कर दिया और सेवा में लग गए। साथियो, बच्चों को फोकट का खिलाना ठीक नहीं है। इससे बच्चे बिगड़ जाते हैं। यह अनीति एवं अत्याचार है। बच्चों को कुसंस्कारी, भ्रष्ट एवं दुराचारी बनाना है, तो उनके हाथों में बेकार के, मुफ्त के पैसे थमा दीजिए।

अगर आप अपने बच्चों को कर्त्तव्य-परायणता का पाठ पढ़ाते चले जाएँ तो आपके बच्चे हीरे एवं मोती के बनते चले जाएँगे, परंतु अगर आपने बेईमानी से कमाया तथा वह अन्न उन्हें खिलाया तो उसका असर उन पर अवश्य होगा। अगर आप फोकट का धन छोड़ते हैं तथा यह सोचते हैं कि इसे बेटा खाएगा, तो यह आपकी भारी भूल है। मित्रो, इस धन को बेटा नहीं खाएगा, वरन यह धन ही बेटे को खाएगा। उसे बर्बाद करेगा। विवेक की सिद्धियाँ अगर आपको प्राप्त करनी हैं, तो आप सरदार पटेल बनने का प्रयास करें। लालबहादुर शास्त्री को नाना ने ढाई रुपये दिए थे, जो उनके जीवन में चमत्कार करता हुआ चला गया। उनने जवाहरलाल नेहरू के ऊपर अपनी छाप छोड़ी और भारत के प्रधानमंत्री बने। यह है विवेक की सिद्धि, जिसे आप तो समझते ही नहीं हैं। इस पर सोचते भी नहीं हैं। विचार भी नहीं करते हैं। बच्चों को फिजूलखर्च बनाते चले जाते हैं ।

मित्रो, सातवलेकर ने रिटायर्ड होने के बाद अपने विवेक का साथ लिया और संस्कृत पढ़ना प्रारंभ किया, तो वह महानता को प्राप्त हो गये। उनने चारों वेदों का भाष्य किया और हिंदुस्तान में सम्मान प्राप्त किया। साथियो! यह है विवेक की उपासना, जो सातवलेकर ने की और उच्चतम स्थान तक पहुँच गए। मछली पानी को चीरती हुई आगे बढ़ती है, उसी प्रकार अध्यात्मवादी आदमी अपना रास्ता स्वयं बनाते हुए चले जाते हैं। उनका रास्ता कोई नहीं रोक सकता है।

मित्रो! मथुरा के राजा महेंद्र प्रताप ने विवेक की उपासना की थी। लोगों ने कहा कि आपके बच्चे नहीं हैं अतः आपको दूसरी शादी करनी चाहिए या फिर कोई बच्चा गोद ले लेना चाहिए, नहीं तो वंश कैसे चलेगा? उन्होंने कहा कि ऐसा संभव नहीं है। हमें देश, संस्कृति की सेवा करनी है। असंख्य ऐसे बच्च हैं जिनकी पढ़ाई नहीं होती है, जो गरीबी की मार से दबे रहते हैं, उनकी हमें सेवा करनी है। उन्होंने अपने मन में विचार किया और मालवीय जी को नामकरण संस्कार कराने के लिए बुलाया।

संस्कार के समय सब आश्चर्य में पड़ गए कि यहाँ तो कोई बच्चा नहीं है, किसका संस्कार होगा? लोगों ने सोचा दासी आती होगी और अपने साथ किसी बच्चे को लाएगी। थोड़ी देर बाद राजा साहब ने कहा कि रानी के बच्चे नहीं हुए हैं, हमारे बच्चे हुए हैं। लोग बड़े आश्चर्यचकित हुए कि कहीं राजा के भी बच्चे होते हैं? उन्होंने एक थाली में रखी चादर हटाई और लोगों को दिखाया कि यही हमारा बच्चा है, जिसका नाम आदरणीय मालवीय जी ने 'प्रेम महाविद्यालय' रखा है। यहाँ बच्चों की पढ़ाई होगी। बच्चे विवेकवान होंगे तथा देश, समाज और संस्कृति की सेवा करेंगे। हमारा नाम जो रोशन होगा, वह ऐसे बच्चों से ही होगा। उसमें देश के विभूतिवान व्यक्ति अध्यापक रखे गए थे। उसमें पढ़ाई भी आश्चर्यजनक हुई। इस विद्यालय से विवेकवान, विभूतिवान, आदर्शवान विद्यार्थी निकले, जिन्होंने देश, समाज तथा राजा महेंद्र प्रताप का नाम उज्ज्वल किया।

मित्रो! यह विवेक की सिद्धि महान थी, जिसने राजा महेंद्र प्रताप को ऊँचा उठा दिया। आज अज्ञान में डूबे लोग, तृष्णा में डूबे लोग, अहंकार में डूबे लोग उपासना के सही अर्थ को समझ नहीं पाते हैं। वास्तव में विवेक की सिद्धि महान स्थान रखती है। छोटे-से गाँव में पैदा हुए व्यक्ति डॉ० राजेंद्र प्रसाद भारत के प्रथम राष्ट्रपति हो गए। यह विवेक की सिद्धि है। ❋

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

(सूक्ष्मीकरण साधना की अवधि में जुलाई, १९८४ में दिया वीडियो संदेश)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐभूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो, भाइयो! अब हमारा जीवन एक नया मोड़ लेकर आया है। इतनी लंबी जिंदगी हमने अपने मित्रों से, भाइयों से, कुटुम्बियों से, भतीजों से, बच्चों से मिलजुलकर साथ-साथ में व्यतीत की है। ऐसा नहीं हुआ कि हम कभी अकेले रहे हों। रात को भी सोते रहे हैं, तो आप लोगों का चिंतन बराबर करते रहे हैं। समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का ख्याल करते रहे हैं। जनता के साथ हम बराबर रहे हैं। हमने अब अपने जीवन में एक नया मोड़ दिया है। नया मोड़ क्या है? अब आपके और हमारे मिलने-जुलने का क्रम बंद हो जाएगा। अब आप यह उम्मीद करें कि आप हमसे बात करेंगे, हमारी बात सुनेंगे, कठिनाइयों की अथवा जिज्ञासाओं की कोई बात हमारे सामने रखेंगे और हम उनका समाधान करेंगे। नहीं, अब यह संभव नहीं हो सकेगा। हमने अपना एक नया कार्यक्रम बना लिया है।

मित्रो, हमारे गुरु ने जो आदेश भेजा, उसी के आधार पर ही हमारा सारा-का-सारा जीवनक्रम चला है। अब तक की जिंदगी को हमने अपनी मर्जी से व्यतीत नहीं किया है। अपने कार्यक्रम स्वयं नहीं बनाये हैं। हमारे मास्टर, हमारे गुरु जिस ढंग से हमसे जो कराते हैं, हम करते हैं। इसी तरीके से हमारी सारी जिंदगी की गतिविधियाँ चलती रही हैं। अभी-अभी हमारा जो एक नया कार्यक्रम बना है, उन्हीं के आदेश के अनुसार बना है। क्या बना है? अब हमारा आपका संपर्क नहीं रहेगा। रहेंगे, तो हम जमीन पर ही, आसमान में थोड़े ही जाएँगे, लेकिन आप लोगों से संपर्क की जो जरूरत है, वह संभव नहीं हो सकेगी। आप लोग नीचे बैठे होंगे, हम ऊपर बैठे होंगे, तो क्या बातचीत नहीं करेंगे? नहीं, अब यह संभव नहीं हो सकेगा। यह हमारे जीवन का नया मोड़ है।

सकारण है जीवन का यह नया मोड़

आप लोग यह ख्याल कर सकते हैं कि इसका क्या कारण हो सकता है? आमतौर से कारण ऐसे ही होते हैं। कोई आदमी डर जाते हैं, भयभीत हो जाते हैं, शर्म के मारे बोलना बंद हो जाता है। कुछ व्यक्ति आलसी होते हैं और जगे पड़े रहते हैं। जब घर वाले आवाज देते हैं कि उठो भाई, कुछ करो, तब भी वे झूठमूठ खर्राटे लेते रहते हैं। ऐसे होते हैं आलसी और डरपोक आदमी। सुना है कि जो मिलेट्री में भर्ती होते हैं, उनमें से कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते हैं कि जब लड़ाई का मौका आता है, दनादन गोलियाँ चलती हैं, तो कोई-न-कोई बहाना बनाते हैं, जैसे पेटदर्द हो गया, पुट्ठे में दर्द हो गया। चला नहीं जाता है, ये बात हो गयी है, वो बात हो गयी है आदि दुनिया भर की बातें बना लेते हैं और युद्ध से भागने की कोशिश करते हैं। इन्हें पलायनवादी कहा जाता है। इस तरह आलसी एक, डरपोक दो और पलायनवादी तीन श्रेणी के व्यक्ति हुए।

तो क्या हम भी इन्हीं में से हैं? नहीं, हम इनमें से कोई भी नहीं हैं। जिन लोगों ने हमको नजदीक से देखा है, उनको स्पष्ट मालूम है कि उन तीनों में से एक भी ऐब गुरुजी के भीतर नहीं है। इन खराबियों को हमने शुरू से ही अपने भीतर से उखाड़ फेंका है। अब तो पचहत्तर साल होने को आये हैं। तो क्या इतने लंबे समय में वह बुराइयाँ कहीं छिपकर बैठ गयी होंगी? नहीं, हमने उन्हें कहीं छिपकर बैठने नहीं दिया है, साफ कर दिया है। फिर क्या कारण है कि हमको अलग एकांत में रहना पड़ा? अगले दिनों संकटों के घटाटोप और अधिक सघन होंगे, इसलिए उन्हें निरस्त करने और उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करने के लिए हमको अपनी शक्तियों के फैलाव को रोककर एक जगह इकट्ठा करना पड़ रहा है, ताकि वह इकट्ठी हुई शक्तियाँ आपके ज्यादा काम आ सकें। आप से मतलब है- समाज से, धर्म से, देश से, मानव जाति से, संस्कृति से। इसलिए फैलाव को- बिखराव को हमने बंद कर दिया है।

विशिष्ट वेला में विशिष्ट साधना

बिखराव को रोककर एक दिशा में सुनियोजन

मित्रो, आपने देखा होगा कि सूर्य की किरणें जब एक आतिशी शीशे के ऊपर एकत्रित कर देते हैं, तो वे कितनी पैनी हो जाती हैं। हमारी शक्ति भी वैसी ही हो जाएगी। इस संदर्भ में आप कहेंगे कि गुरुजी! आप तो फिर कमजोर हो जाएँगे? नहीं, बेटे! हम कमजोर नहीं होंगे। मान लीजिए, अगर हम कमजोर हो गये तो भी हमारे जो बच्चे होने वाले हैं, वे बहुत ताकतवर होंगे। आपने महाभारत पढ़ा होगा कि कुन्ती तो कमजोर हो गयी थी और अपनी जिठानी गांधारी के साथ जंगल में तप करने चली गयी थी। लेकिन उनके बच्चे कितने शानदार थे, अर्जुन, भीम और दूसरे सब बच्चे एक-से-एक समर्थ थे। कुन्ती मरी

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

नहीं थी, वरन अपनी जगह दूसरों को छोड़ गयी थी। हम भी अपनी जगह पर दूसरों को छोड़ जाने की कोशिश में लग रहे हैं, ताकि हमारी परंपरा बंद न होने पाये।

यों तो स्थूल रूप से हमारी परंपरा बंद भी हो सकती है। पिचहत्तर साल की उम्र के बाद में आदमी कहाँ तक जिएगा? अधिक-से-अधिक पाँच वर्ष और चुस्ती व फुर्ती के साथ। उसके बाद कोई जिएगा, तो बुड्ढा हो जाता है, कमजोर हो जाता है, इन्द्रियाँ साथ देना बंद कर देती हैं। बुढ़ापे में किसी को जवान देखा है, आपने? नहीं कोई जवान नहीं देखा है। फिर हम कैसे जवान रह सकते हैं? स्वयं भाग-दौड़ करके कैसे काम कर सकते हैं? इस भाग-दौड़ के लिए हमने नये आदमी तलाश किये हैं और उनको ही बनाने में लग रहे हैं।

तप एकांत में ही क्यों ?

आपने बिल्ली देखी है। बिल्ली जब बच्चा देती है, तो क्या सड़क पर देती है? नहीं, कोई ऐसा स्थान तलाश करती है जहाँ कोई आदमी न हो और उसे देखता न हो। ये छिपकर करने वाले काम हैं- एकांत के काम हैं। हम भी अब आप लोगों से अलग हटकर एकांत में जा रहे हैं, ताकि अपनी शक्तियों को एकत्र कर सकें और शक्तिशाली बन जाएँ। एकांत होने का मतलब यह है कि आपको हम दिखाई न पड़ें। दिखाई न देने से क्या आपको कोई नुकसान है? और दिखाई पड़ें, तो आपको कुछ फायदा है क्या? बताइये क्या, आपको अपना दिल दिखाई पड़ता है? नहीं दिखाई पड़ता। आपने अपने गुर्दे देखे हैं? किसी और के भले ही देखे होंगे, पर अपने नहीं देखे होंगे। फेफड़े आपने देखे हैं अपने? वह भी नहीं देखे हैं। शीशे में आपने अपने आँख और कान देखे हों तो देखे हों और वह भी प्रत्यक्ष नहीं देखे होंगे। इस प्रकार आप हर चीज को नहीं देख सकते। देखना कोई बहुत जरूरी नहीं। यदि जरूरी होता तो भगवान शंकर और पार्वती जी कैलाश पर्वत पर मानसरोवर, जो यहाँ से बहुत दूर है, तप करने क्यों जाते? दिल्ली के चावड़ी बाजार में क्यों नहीं बैठ जाते? तब उनके पास देखने वाले-दर्शन करने वाले हजारों आदमी आते? विष्णु भगवान के बारे में मैंने आपको बताया है कि वे कहाँ रहते हैं। वे क्षीरसागर में शेषशैया पर सोये रहते हैं और एकांत में रहते हैं। कोई काम नहीं करते।

मित्रो! एकांत का मतलब यहाँ वह भी नहीं है, जो अभी मैंने बताया है- भाग खड़े होना, आलसी हो जाना। यद्यपि एक मतलब यह भी होता है। दूसरा मतलब एकांत का है- अपनी शक्तियों को एकत्रित करना। माँ के पेट में जब बच्चा आता है, तो वह चुपचाप पड़ा रहता है। एकांत में चुपचाप बैठा रहता है। न किसी से बात करता है, न बोलता है और न हिलता-डुलता है। न अपनी आवश्यकता कहता है, न लड़ता है, न चिल्लाता है। चुपचाप नौ महीने तक माँ के पेट में बैठा रहता है। इससे क्या फायदा है? इससे यह फायदा है कि पानी की एक नन्हीं बूँद एक पूरे बच्चे के रूप में विकसित हो जाती है।

आजकल हमारा जो एकांत चल रहा है- सूक्ष्मीकरण चल रहा है, इसके बारे में आप उसी तरीके से समझिये। आप यह न सोचिये कि हम भाग खड़े हुए। आप यह भी न सोचिये कि हमने आपसे मुहब्बत खत्म कर दी। मुहब्बत हमारी जिंदगी से खत्म नहीं हो सकती। उन लोगों के बारे में सोचिये जो वैरागी हो जाते हैं, माँ-बाप को छोड़ देते हैं। भाइयों को, बच्चों को बिलखता छोड़ जाते हैं। ऐसे बैरागी हम कहाँ हो सकते हैं? ऐसा हमारे लिए संभव नहीं है, क्योंकि वह रास्ता जिन लोगों ने अख्तियार किया है, उन लोगों में से सभी को हमने रोका है। सबको मना कर दिया है और कहा है कि नहीं भाई, यह रास्ता गलत है। समाज की सेवा कीजिए, समाज के साथ रहिए। समाज के साथ में स्वयं भी आगे बढ़िये, अपने गुणों को बढ़ाइये और दूसरों को आगे बढ़ाइये। हमारी यही मनोकामना है।

अभी मैं आप से अलग होने की सफाई दे रहा था। इस संबंध में क्षीरसागर में बैठे भगवान विष्णु की सफाई दी, कैलाशवासी भगवान शंकर की सफाई दी- अकेले एकांत में रहने की। चलिए अभी मैं आपको और उदाहरण बताता हूँ। पांडिचेरी के अरविंद घोष का नाम सुना है न आपने, उन्होंने अपने सब काम कर लिए थे। अपनी ताकत, जितनी भी थी, सब खर्च कर ली थी। ताकतवर नौजवानों को साथ लेकर अँग्रेजों को भगाने का उनका मकसद था, पर वह पूरा न हो सका। फिर उन्होंने एक नेशनल कॉलेज खोला, उसमें विद्यार्थी पढ़ाये। इस नयी पीढ़ी के लोगों को समझाया कि आजादी की लड़ाई लड़नी चाहिए। वह प्रयास भी यूँ ही नकारा साबित हुआ। इसके बाद उन्होंने एक राजनैतिक पार्टी बनायी, बम चलाये। बम चलाकर अँग्रेजों को भगाने-डराने की बात कही, लेकिन वह बात भी उनकी सफल नहीं हुई।

फिर उनको दिखाई पड़ा कि सबसे बड़ी ताकत कौन-सी है जिससे कि बड़ी-से-बड़ी हुकूमतों से टक्कर लेना संभव है। तब उनको दिखाई पड़ा कि यह शक्ति केवल तप में है। तप कहाँ होता है? तप के लिए एकांत चाहिए। पांडिचेरी के अरविंद घोष तप के लिए एकांत में चले गये। मालूम है न आपको। उनके साथ जो माताजी रहतीं, वह भी एकांत में रहती थीं। दिनभर एक बार दर्शन देने के लिए माताजी बाहर आती थीं। अरविंद सालभर बाद-छह माह बाद-जब उनका मन होता था, दर्शन दे जाते थे। उसमें भी दूर ही रहते थे। इससे क्या फायदा हुआ? इसका फायदा यह हुआ कि उन्होंने सारे-के-सारे वातावरण को गरम कर दिया। ऐसा वातावरण गरम हुआ जैसे गर्मी में चक्रवात आते हैं और धूल-मिट्टी के बवंडर उठते हैं और लगातार आकाश की ओर ऊपर उठते रहते हैं। ऐसे ही कितने सारे चक्रवात यहाँ हिन्दुस्तान में तैयार हुए। उनमें से एक का नाम गाँधी, एक का नाम नेहरू, एक का नाम पटेल,

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

एक का नाम सुभाष, एक का नाम मालवीय था। एक साथ इतने सारे महामानव कहीं दुनिया के पर्दे पर पैदा नहीं हुए। आजादी की लड़ाई में, आन्दोलनों में लोग तो बहुत सारे एक साथ हुए हैं, पर जब से जमीन बनी है तब से कभी भी ऐसा नहीं हुआ, जब एक साथ किसी भी मुल्क में इतने सारे महापुरुष पैदा हुए हों, जितने कि अरविंद घोष के जमाने में हुए हैं।

महर्षि रमण का मौनतप

ठीक इसी तरह से महर्षि रमण का वाकया है। वे भी अकेले में रहते थे, मौन रहते थे, बात नहीं करते थे। उनका सत्संग होता था, हवन होता था। चिड़ियाँ आती थीं, दूसरे जानवर आते थे, उनके नजदीक बैठ जाते थे और उनकी मौनवाणी को सुना करते थे। आप भी हमारी मौनवाणी को बराबर सुनते रहेंगे। तेज वाणी को आपके कान बर्दास्त कर सकेंगे कि नहीं, यह तो मैं नहीं जानता, लेकिन हमारी यह आवाज जो दूसरी और तीसरी वाणी में होगी, अब वह बोलेगी। यह वैसी ही वाणी है जिसे, हम अभी आपके सामने बोल रहे हैं। इन्हीं वाणियों से हम आप से जिंदगी भर बात करते रहेंगे। इसके अलावा भी आदमी की तीन और वाणी हैं। एक है- मध्यमा वाणी, जो व्यक्ति के चेहरे से टपकती है। दूसरी है- परा वाणी, जो आदमी के विचारों से, दिमाग-से, निकलती है। तीसरी- 'पश्यन्ती' वाणी है, जो मनुष्य के अंतर्रात्मा के अन्दर रहती है। यह सत्संग की वाणी है। इन तीन वाणियों को कोई बंद नहीं कर सकता, इनमें कोई रुकावट नहीं डाली जा सकती है। मौन रहकर भी- एकांत में रहकर भी ये तीन वाणियाँ बराबर काम करती रहती हैं। हमारी भी ये तीनों वाणियाँ बराबर काम करती रहेंगी और आपको फायदा देती रहेंगी।

हमसे कुछ पाने का प्रयास कीजिए

मित्रो! यह कब फायदा देंगी? यह तब फायदा देंगी जब आप हमारे साथ घुलेंगे-मिलेंगे। अगर आप दूर-दूर रहेंगे तो बात कैसे बनेगी? दूर रहने से काम नहीं बनेगा, आपको हमारे पास आना पड़ेगा। पास आने का केवल यही मतलब नहीं है कि आप शांतिकुंज में, हमारे कमरे में आ जाते हैं, मिल जाते हैं, वरन पास आने का मतलब यह है कि आप हमारे विचारों के साथ में कितनी गहराई से जुड़ते हैं। हमारे पास क्या रखा है? हमने जो त्याग, तपश्चर्याएँ, उपासनाएँ की हैं, ऐसे ढेरों आदमियों के नाम बता सकता हूँ, जिन्होंने इस तरह की उपासनाएँ की हैं। लेकिन सही बात- ईमानदारी की बात यह है कि हमारे गुरु की शक्ति-गुरु की सामर्थ्य हमें बराबर मिलती रही है और उसी के आधार पर कठपुतली की तरह हम तमाशा करते रहे हैं। आप भी आइये, आपके लिए भी रास्ता खुला हुआ है।

हमसे पहले भी बहुत से आदमियों ने इस तरह से रास्ता खोल दिया है। रामकृष्ण परमहंस और विवेकानंद के जोड़े का नाम सुना है आपने। रामकृष्ण परमहंस केवल ध्यान करते थे। उन्होंने न कोई अनुष्ठान किया, न कोई विशिष्ट जप किया, न हिमालय गये, रामकृष्ण परमहंस की सारी आध्यात्मिक संपदा उनके शिष्य नरेन्द्र को मिल गयी। उसी को लेकर विवेकानन्द ने वह काम किया जो रामकृष्ण परमहंस अपने शरीर से नहीं कर सकते थे।

आपने विरजानन्द और महर्षि दयानन्द का नाम सुना है। कौन दयानंद? आर्य समाज वाले। उनके गुरु स्वामी विरजानंद मथुरा में रहते थे। वे आँखों से अंधे थे। उन्होंने अपनी सामर्थ्य को स्वामी दयानन्द को हस्तांतरित कर दिया। इसके बाद स्वामी दयानंद ने वह काम कर दिखाया, जिसे हजार आदमी भी एक समय में नहीं कर सकते। आपके लिए भी रास्ता खुला हुआ है। आप हमारी शक्ति का फायदा उठाना चाहें, जो आगे चलकर और भी ज्यादा हो जायेंगी, तो उठा लीजिए। पहले से भी ऐसे बहुत से लोग हैं, जो हमारे साथ चलते रहे हैं। हमारा कहना मानते रहे हैं हमारे निर्देश पर चलते रहे हैं, उन्हें लाभ ही हुआ है। गाँधीजी के साथ में मीरा बहिन चलती थी, नेहरू जी चलते थे, सुभाष चलते थे, विनोबा चलते थे उन्हें क्या मिला? सबको फायदा ही हुआ है।

आपने स्वामी रामदास और शिवाजी का नाम सुना है। शिवाजी कौन थे? शिवाजी वह व्यक्ति थे जिन्होंने हिंदुस्तान को आजाद कराने की तवारीख में पहला कदम उठाया और समर्थ गुरु रामदास वह थे जो संतप्रकृति के हो गये थे और इस बात की तलाश में थे कि संत के लिए आजादी की लड़ाई लड़ना, खून-खच्चर करना आदि मुनासिब नहीं है, इसलिए कोई दूसरा रास्ता तलाश करना चाहिए। उन्होंने शिवाजी को तलाश लिया। उनका इम्तिहान सिंहनी का दूध मँगाकर लिया और इसके बाद उन्हें भवानी के हाथ से-देवी के हाथ से एक ऐसी तलवार दिलायीं, जिसे लेकर के वे अक्षय हो गये अजेय हो गये। जहाँ कहीं भी वह तलवार गयी, उन्हीं की विजय हुई ।

जिस तरह शिवाजी और समर्थ गुरु रामदास का जोड़ा है, उसी तरीके से चाणक्य और चन्द्रगुप्त का जोड़ा है। चाणक्य के पास बहुत सामर्थ्य थी- शक्ति थी, किंतु चन्द्रगुप्त जो एक दासी का बेटा था, कुछ नहीं कर पाता था। लेकिन चाणक्य की शक्ति को जब उसने स्वीकार कर लिया, तो वह चक्रवर्ती सम्राट बन गया। "मैं आपकी शक्ति को स्वीकार करता हूँ" का मतलब यह होता है कि मैं आपके कहने पर चलूँगा। अगर आप यह कहते हैं कि क्या यह शक्ति हमें भी मिल जाएगी, तो यह बेकार की बात है, क्योंकि शक्तियाँ ऐसे कहीं किसी को नहीं मिली हैं। वे उद्देश्यों के लिए मिलती हैं। किसी काम के लिए मिलती हैं, किसी खास मकसद के लिए, किसी वजह के लिए मिलती हैं और किसी खास आदमी को मिलती हैं।

शक्ति-अनुदान विशेष उद्देश्यों के लिए

मित्रो! हम खास आदमी भी हैं और हमें जो शक्तियाँ मिली हैं, वे किसी खास मकसद में लगाने के लिए मिली

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

हैं। हमारे गुरु से तीन बार हमारा मिलना हुआ है, लेकिन वे निरंतर हमारा मार्गदर्शन किया करते हैं। ऐसा कभी नहीं हुआ कि उन्होंने धीरे से कान में आकर या जोर से कोई बात कही हो और हमने गौर से उनकी बात सुनी न हो। नाव को और राहगीर को जानते हैं न आप। नाव पार होती है, तो क्या राहगीर जो उस पर बैठा हुआ है, पार नहीं होगा? जिस राहगीर को तैरना नहीं आता, वह कैसे पार होगा? लेकिन जो नाव में सवार हो जाता है, उस नाव का मल्लाह नाव को भी पार लगा देता है और बैठे हुए मुसाफिरों को भी पार लगा देता है। आप सब हमारी नाव में बैठे हैं, हम उसको भी पार लगा देंगे और आपकी जिंदगी को भी पार लगा देंगे। आप जो इतना बड़ा काम करना चाहते हैं, हम उस काम को भी पूरा करा देंगे। आपको निश्चित रूप से हमारी शक्ति मिलती रहेगी, हमारा सहयोग मिलता रहेगा। यह काम हम पहले भी करते रहे हैं और अब एकांत में भी बराबर करते रहेंगे।

समय की विभीषिका बड़ी विकट

साथियो! अब कुछ ऐसा वक्त आ गया है कि इस भयंकर वक्त में कुछ बड़ा कदम उठाये बगैर काम चलने वाला था नहीं। इन्हीं दिनों समय की विभीषिका ऐसी हुई है, जिसे आप पढ़ते होंगे। भविष्यवाणियाँ पढ़ते होंगे। टोरंटो की भविष्यवक्ता कान्फ्रेन्स-समाचार आपने पढ़ा है न, कोरिया का समाचार पढ़ा है न। सारी परिस्थितियाँ यह बताती हैं कि यह समय बड़ा भयंकर है। इन दिनों हवा में इतना जहर मिल रहा है, पानी में इतना जहर मिल रहा है, खाद्यपदार्थों में जहर मिल रहा है। आप जानते हैं कि परमाणु-भट्टियों से, परमाणु-विस्फोटों से कितनी तेजी से जहर फैल रहा है, जिन-जिन देशों ने बिजली पैदा करने के लिए अपने यहाँ अणु भट्टियाँ लगायी हैं, उनसे विकिरण निकल रहा है। जनसंख्या में कितनी अंधाधुंध वृद्धि हो रही है। मक्खी-मच्छरों से भी ज्यादा मनुष्यों की वृद्धि हो रही है। अगले दिनों खड़े होने के लिए उन्हें कहीं एक जगह भी नहीं मिलने वाली है। सड़क पर चलना उनके लिए मुश्किल हो जाएगा। खाना उनके लिए मुश्किल हो जाएगा।

यह सब मुसीबतें नहीं- बहुत बड़ी मुसीबतें हैं। एटमी युद्ध से भी ज्यादा भयावह हैं ज्यादा बच्चों का पैदा होना। यह क्राइम को- अपराध को जन्म देगा। आपने देखा नहीं, आज आदमी की मनोवृत्ति अपराध करने की हो गयी है। ईमानदारी व भलमनसाहत किसी की समझ में ही नहीं आती। लाला जी दुकान पर बैठे हुए तो जरूर हैं, पर मिर्च में गेरू मिला रहे हैं। लोग मन्दिर में दर्शन करने जरूर जाते हैं, हनुमान चालीसा का पाठ जरूर करते हैं, लेकिन नीयत उनकी भी खराब है। आज सबकी नीयत खराब हो गयी है। यदि आदमी की नीयत खराब हो जाए, तो उससे भयंकर भला कौन हो सकता है?

ये सारी-की-सारी चीजें एक साथ मिल क्या गयी हैं, विश्व-मानवता के सामने मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा है। अब आप ही बताइये भला इतनी चीजों से टक्कर कौन ले? हर आदमी ले लेगा? आप ले लेंगे? चौराहे पर खड़े होकर भाषण देने वाले नेता लोग टक्कर ले लेंगे? न, यह बिल्कुल भी संभव नहीं है। इसके लिए तो कोई सामर्थ्यवान व्यक्ति चाहिए। जब तक कोई सामर्थ्यवान न हो तो इतनी बड़ी शक्तियों से टक्कर नहीं ली जा सकती। फिर टक्कर लेने वाले बहुत सारे तैयार भी तो करने हैं। दो काम करने हैं। एक तो जो भयंकरता हमारी आपकी ओर घनघोर घटाओं के तरीके से बढ़ती चली आ रही है, उससे टक्कर लेनी है। टकराव के लिए मजबूत आदमी चाहिए, मजबूत हस्तियाँ चाहिए, मजबूत आध्यात्मिक शक्ति चाहिए।

भागीरथी पुरुषार्थ की वेला

आपने पढ़ा होगा-सृष्टि के इतिहास में दो बार ऐसी ही घटनाएँ हो चुकी हैं। एक बार सब जगह पानी की कमी पड़ गयी। पानी कहीं था ही नहीं। भगीरथ स्वर्ग से गंगा को जमीन पर लाने के लिए तप करने लगे। गंगा जमीन पर आयीं और धरा चहुँओर लहलहा उठी। यह क्या है तप की शक्ति। इसी तरह दूसरी घटना है। बहुत समय पहले की बात है- वृत्रासुर नामक एक ऐसा राक्षस हुआ था। जिसने सारे देवताओं को मारकर भगा दिया था। तब उसका मुकाबला करने के लिए महर्षि दधीचि को अपनी हड्डियाँ देनी पड़ी थीं। उसका जो वज्र बना उससे वृत्रासुर मारा गया। जब यह सब आपने सुना है, तो एक बात और सुन लीजिए कि आप चाहें तो हमारी भी संगति उसी से बिठा सकते हैं।

वृत्रासुर हनन हेतु दधीचि ने दिया वज्र

आज इस तरह का समय आ गया है कि भगीरथ को फिर से इस धरती पर ज्ञान की गंगा लानी है, जिससे दुनिया में शांति पैदा हो। दूसरी ओर दधीचि का वज्र, जो इंद्र के हाथ में रहा था और जिसके प्रहार से वृत्रासुर का चूरा हो गया था, चूरा कर देने वाली ऐसी शक्ति चाहिए। वज्र की शक्ति और ज्ञान गंगा की शक्ति। इन दोनों शक्तियों का संतुलन करने के लिए हमारा कार्यक्रम चल पड़ा है। हम उसी के लिए तप कर रहे हैं। आप यह मत सोचिए कि हम भाग रहे हैं। हम भाग नहीं रहे । हम माँ के पेट में बैठ रहे हैं, ताकि अपनी शक्ति को बढ़ा करके और ज्यादा कर सकें। क्या आप यही ख्याल करते हैं कि औरों की तरीके से हम भी स्वर्गप्राप्ति के लिए कोशिश कर रहे हैं? या मुक्ति के लिए कुछ कर रहे हैं? आपका क्या यही ख्याल है कि सिद्धियाँ और ऋद्धियाँ पाने के लिए हम तप कर रहे हैं? नहीं बेटे, यह तो हमने बहुत पहले से ही प्राप्त कर लिए थे। स्वर्ग हमारी निगाहों में है, हमारी आँखों में है। स्वर्ग हमें हर जगह दिखाई पड़ता है।

इसी तरह मुक्ति का बंधन हम न जाने कब के काटकर फेंक चुके हैं। लोभ हमारे पास फटकता भी नहीं है, हमारे पास आता भी नहीं है। वासनाओं की सलाखें, अहंकार की जंजीरें जाने

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

कब की तोड़कर फेंक चुके हैं। मुक्ति के लिए भी प्रयास तो हम तब करें जब यहाँ रहना हो और सिद्धियाँ? सिद्धियों के लिए उसी को कोशिश करनी चाहिए जिसके पास यह न हों। हमारे पास सिद्धियाँ भी हैं और हम मुक्ति भी प्राप्त कर सकते हैं। हमारे पास स्वर्ग चारों ओर नजदीक ही घूमा करता है। हम अब अपने आपको तपा रहे हैं। हीरा देखा है। वह कोयला होता है और इसी कोयले को जब ज्यादा गर्मी दी जाती है, तो वह हीरा बन जाता है। एटम देखा है न आपने? वह एक धूल का कण है, जो जमीन पर पड़ा रहता है, लेकिन जब उसी को वैज्ञानिक विधि से अलग कर लिया जाता है और उसका विस्फोट किया जाता है, तो वह हिरोशिमा और नागासाकी जैसा विध्वंसकारी बन जाता है।

पंचमुखी गायत्री की उपासना पाँच वीरभद्रों का जागरण

मित्रो! अब हम पंचमुखी गायत्री की साधना करने जा रहे हैं। अब तक हमने एकमुखी गायत्री की उपासना की है। तो आपने हमें क्यों नहीं बताई पंचमुखी गायत्री की उपासना? इसलिए कि आप इसे नहीं कर सकते हैं। आपको तो एकमुखी गायत्री की उपासना करना ही मुश्किल है। माँ और बेटे का संबंध निभाना ही मुश्किल है। अब हम पंचमुखी गायत्री की, पाँच देवताओं की उपासना कर रहे हैं। पाँच इष्टों की उपासना कर रहे हैं, पाँच शक्तियों की उपासना कर रहे हैं, क्योंकि हमें पाँच क्षेत्रों में काम करना है। बुद्धिजीवियों के साथ से काम करना है। हमको राजनेताओं की अक्ल ठिकाने लगानी है। हम कलाकारों को एक खास रास्ते पर ले जाएँगे। हम संपन्न आदमियों से कुछ काम कराएँगे और आप जैसे लोगों से, जिनको हम भावनाशील कहते हैं। आप बुद्धिजीवी न सही, राजनेता न सही, किसी देश के प्रधानमंत्री न सही, उससे हमें क्या लेना-देना। कलाकार आप नहीं हैं, आपकी वाणी में जोश-खरोश और दूसरी अन्य गायन संबंधी विशेषताएँ नहीं हैं, तो न सही? आप संपन्न नहीं हैं, तो न सही, मरने दीजिए पैसे को; भावनाशील तो हैं आप। यह संसार की, सबसे बड़ी दौलत है। हमें आपको अग्रिम मोर्चे पर खड़ा करना है।

इसी तरह भावनाशीलों को, बुद्धिजीवियों को, कलाकारों को, राजनेताओं को, संपन्न व्यक्तियों को आगे से जाकर के हमको झकझोरना है और इस तरीके से रास्ते पर लाना है कि वे लड़ाई के मोर्चे पर हमारे साथ-साथ चलें। कंधे-से-कंधा मिलाकर चलें। पाण्डवों का नाम आपने सुना है न? वे पाँच भाई थे। अर्जुन धनुर्धर था, उसके साथ-साथ सभी भाई चलते थे। क्या मजाल कि कहीं कोई अलग हो जाए। हम इसी तरीके से प्रबंध कर रहे हैं। हमारी पाँच गुनी शक्ति बढ़ने जा रही है। हम पाँच वीरभद्र पैदा करने में जुट रहे हैं। हम आपसे दूर नहीं जा रहे हैं और न आपसे अलग हो रहे हैं।

मित्रो, अभी हम आपको अपनी सफाई दे रहे थे कि कहीं आप इस तरीके से न सोच लें कि गुरुजी अपनी मुक्ति के लिए, स्वर्गप्राप्ति के लिए हमको दगा दे रहे हैं और हमसे जो बातचीत करते थे, उस तरीके को भी उन्होंने बंद कर दिया। ऐसी बात नहीं है। हम तो आपके पीछे भूत के तरीके से लगे हैं। इसी तरह अब हम कलाकारों के पीछे, राजनेताओं के पीछे, बुद्धिजीवियों और संपन्न व्यक्तियों के पीछे भूत की तरह से लगेंगे। नया युग लाने के लिए हमें जिन भी शक्तियों की आवश्यकता पड़ेगी, उन्हें इस कार्य में नियोजित करेंगे। उसके लिए तब क्या करना पड़ेगा? हम आपसे अलग चले जाएँगे। लेकिन इसका यह मतलब नहीं समझना कि अलग चले जाने से कोई दुश्मनी होती है। माँ अपने बच्चे को गुरुकुल में पढ़ाने के लिए भेज देती है, तो क्या माँ बच्चे की दुश्मन होती है? धन कमाने के लिए कोई परदेश चला जाता है और परदेश में दो पैसे कमाकर अपने बच्चे को मनीऑर्डर से भेजता रहता है। आप क्या समझते हैं कि बाप, जो परदेश चला गया था, उसने अपने बच्चों से प्रेम-मुहब्बत कम कर दी? अपने माता-पिता से मुहब्बत कम कर दी? न, ऐसा मत कहिए। अलग होने का मतलब मुहब्बत कम करना नहीं होता। इस मुहब्बत को सार्थक करने के लिए ही हमारे ये नये कदम उठे हैं।

देते ही रहेंगे हम जीवन भर

आप हमको देख नहीं पाएँगे, तो कोई हर्ज की बात नहीं। जब आप अपने आमाशय, गुर्दे, जिगर, हृदय आदि को नहीं देख सकते, फिर भी वे काम करते हैं। आपका दिल आपके साथ धड़कता तो है, फिर आप क्या शिकायत करते हैं। अभी तो हम सन् २००० तक स्थूल या सूक्ष्म रूप में जिंदा रहने वाले हैं। यह ऐसा भयंकर समय है जिसमें कि आदमी की मुस्तैदी-चौकीदारी की बराबर जरूरत है। इस संधिकाल की संकट की वेला में हम बराबर काम करेंगे और आपके साथ रहेंगे। यह हमारी आवश्यकता भी है। इसमें कभी कमी नहीं आने देंगे। हमने जिंदगी भर दिया है और देते रहेंगे। आपके नजदीक न रहेंगे तो क्या? सूर्य आपके नजदीक है क्या? फिर भी आप धूप में बैठे हैं और वह आपके कपड़े सुखा जाता है। चन्द्रमा आपके नजदीक है क्या? हजारों मील दूर है। समुद्र आपके नजदीक है क्या? समुद्र जाने कितनी दूर है आपसे, फिर भी वह बराबर आपका ख्याल रखता है। आप जो पानी पीते हैं, स्नान करते हैं, कपड़े धोते हैं, वह पानी कहाँ से आता है? बादलों से आता है। बादल कहाँ से आते हैं? समुद्र से। समुद्र का दिया हुआ पानी आप पीते हैं, परंतु समुद्र को शायद ही आपने देखा हो। सूर्य और चन्द्रमा की शक्ल तो आपने देखी है, पर उसके नजदीक गये हैं क्या? उसके पास तक पहुँचे हैं कभी? नहीं पहुँचे हैं। वह आपसे बहुत दूर है। जब सब चीजें आप से बहुत दूर हैं, लेकिन दूर रहते हुए भी आपकी इतनी सेवा करते हैं कि आपकी जिंदगी को सँवारे बैठी हैं। यदि हवा आपको न मिले तो आपके प्राण निकल जाएँगे। हवा आपने देखी

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

नहीं। अतः देखने की बात आप अपने दिमाग में से हटा दें। आप हमको न देख पायें या हम आपको, इससे कुछ बनता-बिगड़ता नहीं है। हम एकांत में रहकर ज्यादा मजबूती से काम करेंगे और आपसे भी यही उम्मीद करेंगे कि आप भी ज्यादा मजबूती के साथ हमारे साथ-साथ कदम उठाएँगे।

आप हमारे विचारों के समीप आएँ

मित्रो! हम चाहते हैं कि आप हमारे नजदीक आयें, साथ-साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर चलें। हमारे नजदीक और पास नहीं आयेंगे और दूर बने रहेंगे, तो फिर हमारा शक्ति एकत्रित करना भी बेकार है। अगर आप बुद्धिजीवी हैं, राजनेता हैं, कलाकार हैं, संपन्न हैं, लेकिन भावनाशील नहीं हैं, तो हमारे किस काम के? आपको भावनाशील होना चाहिए। हमें भावनाशीलों की जरूरत है अन्यथा हमारे मुहल्ले-पड़ोस में ढेरों मजदूर काम करते हैं, तो किसी की कृपा या अनुग्रह उन पर हुई है क्या? हम अपने गुरुदेव के नजदीक हैं। तीन बार उनके पास गये हैं। बाकी चौबीसों घंटे उन्हीं का हुक्म बजाते हैं और कहते हैं कि आप आदेश दीजिए।

हम क्या कहते और चाहते हैं, उस बात को आप गौर से सुनना। अगर आप नहीं सुनेंगे तो फिर हमारे नजदीक रहने, न रहने से कोई फायदा नहीं। शंकर भगवान और पार्वती बहुत दूर रहते हैं कैलाश पर्वत पर, परंतु इतनी दूर रहते हुए भी आपकी सेवा में कोई कमी नहीं आने देते हैं। जब भी आप ध्यान करते हैं, वे कैलाश पर्वत से उतर करके आप तक आ जाते हैं। विष्णु भगवान क्षीरसागर छोड़ करके आप तक आ जाते हैं। अतः आप सिद्धांतों को सुनिये, सिद्धांतों को समझिये। बच्चों का सा मुँह मत देखिये कि आप हमारी शक्ल देखें और हम आपकी शक्ल देखें। दर्पण थोड़े ही है जिसमें आप हमारी शक्ल देखें और हम आपकी शक्ल को देख लें। देखना हो तो देख भी लेना, इंतजाम भी किये देते हैं। आप आमने-सामने से आवाज न सुन सकेंगे न सही, हम टेप कराये देते हैं, इसे आप सुन लेना। आपको संतोष तो हो। आपको संतोष हो जायेगा, तो हमको बहुत प्रसन्नता होगी।

आज आपको सफाई देने के लिए और आगे का काम बताने के लिए ही बुलाया है। सफाई इसके लिए नहीं कि अभी हमको सन् २००० तक जीवित रहना है। इस शरीर से न भी रहें, तो सूक्ष्मशरीर से रहेंगे। मनुष्य के तीन शरीर होते हैं-स्थूल, सूक्ष्म और कारण। स्थूल शरीर मर भी जाए. तो इससे क्या बिगड़ता है। जिंदा आदमी भी बहुत काम कर सकते हैं, किंतु स्थूलशरीर के न रहने पर उससे कई गुना अधिक काम सूक्ष्मशरीर से किया जा सकता है। गुरुजी तो फिर क्या आप हिमालय चले जाएँगे? हिमालय चले जायेंगे, तो आपको क्या दिक्कत आयेगी? हमारे गुरुजी भी तो हिमालय में रहते हैं और हिमालय में रहते हुए भी हमारी बहुत सेवा करते हैं। हम कहीं भी चले जाएँ, हिमालय चले जाएँ, शांतिकुंज में रहें, या इस शरीर को छोड़ जाएँ, पर आप यह विश्वास रखिये कि सन् दो हजार तक हम यहीं शांतिकुंज में मौजूद रहेंगे। इस अवधि में आप हमको बराबर अपने समीप पायेंगे और हम आपके लिए बराबर काम कर रहे होंगे। बस आपसे इतनी ही प्रार्थना है कि आप भी हमारे लिए कुछ काम कीजिए, तो मजा आ जायेगा और क्या कहूँ आगे। आज की बात खत्म करता हूँ। ॐ शांतिः।। ❋

माहिष्मती के प्रतापी सम्राट नृपेन्द्र का यश पूर्णिमा के चन्द्रमा की भाँति सर्वत्र फैल रहा था। राजकोष, सेना, स्वर्ण, सौन्दर्य, शक्ति किसी वस्तु का कोई अभाव न था। महाराज नृपेन्द्र प्रजावत्सल और न्यायकारी थे। संपूर्ण प्रजा भी उन्हें बहुत श्रद्धा की दृष्टि से देखती थी।

समय बीता। शक्तियाँ घटीं। शरीर टूटा। वृद्धावस्था बढ़ने लगी और उसके साथ ही नृपति के अंतर में उद्वेग और क्षोभ छाने लगा। उन्होंने बोलना-चालना बंद कर दिया। किसी से मिलते भी नहीं थे। उदास, बेचैन राजा न जाने किस चिंता में डूबे रहते?

एक दिन बड़े सबेरे सम्राट राज-उद्यान की ओर निकल गये। एक स्फटिक शिला पर पूर्वाभिमुख अवस्थित नृप अब भी कोई वस्तु खोज रहे थे। धीरे-धीरे प्रातः रवि उदित हुआ। राजसरोवर में उनकी बालकिरणें पड़ीं और सहस्त्र दल-कमल खिलने लगा। धीरे-धीरे कमल पूर्ण रूप से खिल गया और अपना सौरभ सर्वत्र बिखेरने लगा।

आत्मा से आवाज फूटी- क्या तुम अब भी रहस्य नहीं जान पाये कि सूर्य का प्रकाश कहाँ से आता है? प्रकाश उनकी अंतर स्फुरणा नहीं है क्या? कमल का सौरभ उसके भीतर से ही फूटता है। यह जो सर्वत्र जीवन दिखाई देता है वह सब विश्व-आत्मा के भीतर से ही फूटता है। आनन्द का स्त्रोत तुम्हारे भीतर है। उसे तुम्हें ही जगाना पड़ेगा। उसके लिए आत्मोन्मुख बनना पड़ेगा और साधना करनी पड़ेगी।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

बस एक ही विकल्प-भावसंवेदना

परमपूज्य गुरुदेव द्वारा लिखा गया क्रांतिधर्मी साहित्य उनके प्रत्यक्ष जीवन का अंतिम लेखन पुरुषार्थ है। वे जीवनभर लेखनी की साधना करते रहे और अगणित व्यक्तियों का कायाकल्प उनके विचारों के माध्यम से हुआ। १९८९-९० में महाप्रयाण के पूर्व उनने २० पुस्तकें लिखी थीं, जिनको वजन की दृष्टि से वे अपने अब तक के सृजे गए संपूर्ण साहित्य की तुलना में भारी बताते रहे। सूत्र रूप में लिखी इन पुस्तकों में से कुछ अंश आज की परिस्थितियों को दृष्टिगत रख प्रकाशित किए जा रहे हैं।

"समर्थता, कुशलता और संपन्नता से ऊपर उठकर एक चौथी शक्ति है- **भावसंवेदना**। यही दैवी अनुदान के रूप में, जब मनुष्य की स्वच्छ अंतरात्मा पर उतरती है तो उसे निहाल बनाकर रख देती है। जब यह अंत:करण के साथ जुड़ती है तो उसे देवदूत स्तर का बना देती है। यह भौतिक आकर्षणों, प्रलोभनों और दबावों से स्वयं को बचा लेने की पूरी-पूरी क्षमता रखती है। इस एक के आधार पर ही साधक में अनेकानेक दैवीतत्व भरते चले जाते हैं।"

✠ ✠ ✠

"युगपरिवर्तन के आधार को यदि एक शब्द में व्यक्त करना हो तो इतना कहने भर से भी काम चल सकता है कि अगले दिनों निष्ठुर स्वार्थपरता को निरस्त करके उसके स्थान पर उदार **भावसंवेदनाओं** को अंत:करण की गहराई में प्रतिष्ठित करने की, उभारने की, खोद निकालने की अथवा बाहर से सराबोर कर देने की आवश्यकता पड़ेगी।"

✠ ✠ ✠

"तथाकथित प्रगति का विशालकाय सरंजाम जुट जाने पर भी, भयानक स्तर की अवगति का वातावरण क्योंकर बन गया? इसका उत्तर यदि गंभीरता से सोचा जाए, तो तथ्य एक ही हाथ लगेगा कि बुद्धिभ्रम ने ही यह अनर्थ सँजोए हैं। फिर क्या बुद्धि को कोसा जाए? नहीं, उसका निर्धारण तो भावसंवेदनाओं के आधार पर होता है। भावनाओं में विषाक्तता का घुल जाना, उस क्षेत्र में विकृतियों का जखीरा जम जाना ही- एकमात्र ऐसा कारण है, जिसके रहते समृद्धि और चतुरता का विकास-विस्तार होते हुए भी, उलटी सर्वतोमुखी विपन्नता ही हाथ लग रही है। सुधार तलहटी का करना पड़ेगा। सड़ी कीचड़ के ऊपर तैरने वाला पानी भी अपेय होता है। दुर्भावनाओं के रहते दुर्बुद्धि ही पनपेगी और उसके आधार पर दुर्गति के अतिरिक्त और कुछ हाथ लगेगा नहीं।"

✠ ✠ ✠

"**संवेदना** आत्मीयता के रूप में विकसित होती है, तब मनुष्य दूसरों के दुख को अपना दुख और अन्यों के सुख को अपना सुख मानने लगता है। सहानुभूति के सहारे ऐसा व्यवहार करना संभव नहीं होता है, जिनसे किसी के अधिकारों का अपहरण होता हो अथवा किसी को शोषण का शिकार बनना पड़ता हो। जब प्रचलन इसी प्रकार का रहेगा, तो न दुर्व्यवहार ही बन पड़ेगा और न किन्हीं को अकारण त्रास सहना पड़ेगा।"

✠ ✠ ✠

"मात्र आतुरता और निष्ठुरता ही ऐसी दुष्प्रवृत्ति है, जो अनाचार के लिए उकसाती है और उसके फलस्वरूप अगणित संकटों का परिकर विनिर्मित करती है। यदि **भावसंवेदना** जीवंत और सक्रिय बनी रहे तो सृजन और सहयोग के आधार पर उत्थान और कल्याण का सुयोग ही सर्वत्र बन पड़ेगा।"

✠ ✠ ✠

"इस तथ्य को हजार बार समझा और लाख बार समझाया जाना चाहिए कि मन:स्थिति ही परिस्थितियों की जन्मदात्री है। इसलिए यदि परिस्थितियों की विपन्नता को सचमुच ही सुधारना हो तो जनसमुदाय की मन:स्थिति में दूरदर्शी विवेकशीलता को उगाया, उभारा और गहराई तक समाविष्ट किया जाए। यहाँ यह बात भी ध्यान में रखने की है कि मन:क्षेत्र एवं बुद्धि संस्थान भी स्वतंत्र नहीं है। उन्हें **भावनाओं**, आकांक्षाओं, मान्यताओं के आधार पर अपनी दिशा-धारा विनिर्मित करनी होती है।"

✠ ✠ ✠

"मन:क्षेत्र का आदर्शवादी उत्कृष्ट स्वरूप अंत:करण में **भावसंवेदना** बनकर रहता है। यही है वह सूत्र, जिसके परिष्कृत होने पर कोई व्यक्ति ऋषिकल्प, देवमानव बन सकता है। यह एक ही तत्व इतना समर्थ है कि अन्यान्य असमर्थताएँ बनी रहने पर भी मात्र अकेली विभूति के सहारे न केवल अपना, वरन समूचे संसार की शालीनता का पक्षधर कायाकल्प किया जा सकता है। २१वीं सदी के साथ जुड़े उज्ज्वल भविष्य का यदि कोई सुनिश्चित आधार हो तो वह एक ही है कि जन-जन की भावसंवेदनाओं को उत्कृष्ट, आदर्श, उदात्त बनाया जाए।"

✠ ✠ ✠

"इक्कीसवीं सदी **भाव-संवेदनाओं** के उभरने-उभारने की अवधि है। हमें इस उपेक्षित क्षेत्र को ही हरा-भरा बनाने में निष्ठावान माली की भूमिका निभानी चाहिए। यह विश्व-उद्यान इसी आधार पर हरा-भरा, फला-फला एवं सुषमा-संपन्न बन सकेगा। आश्चर्य नहीं कि वह स्वर्ग-लोक वाले नंदन वन की समता कर सके।"

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

कालनेमि की माया से बचें

गुरुपूर्णिमा २३-७-८६
परिजनों के नाम वीडियो संदेश

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ, **ॐ भूर्भुवः स्वः तत्स-वितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।**

भाइयो बहिनो! आज से लगभग पचास वर्ष पहले हमने गायत्री परिवार की स्थापना की थी और अखण्ड ज्योति पत्रिका निकालना शुरू किया था! बहुत लंबा समय हो गया। इस पचास साल में हमने क्या किया? जिस तरीके से समुद्र में डुबकी लगाने वाले मोती ढूँढ़-ढूँढ़कर लाते हैं, हमने भी उसी तरीके से संसार भर में डुबकी लगाई और यह देखा कि कौन से आदमी प्राणवान हैं, कौन जीवंत हैं? कौन ऐसे हैं जो आने वाले समय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में समर्थ होंगे। यह हमने बहुत गंभीरता से तलाश किया। हिंदुस्तान में हमको काफी लोग मिले, क्योंकि यह ऋषियों की भूमि है, देवताओं की भूमि है। यहाँ हमारे चौबीस लाख के करीब गायत्री परिवार के मेंबर हैं। फिर हमने देखा कि केवल हिंदुस्तान तक ही हमें सीमित नहीं रहना चाहिए वरन सारे संसार में निगाह डालनी चाहिए, सारे संसार में खोजबीन करनी चाहिए।

मित्रो! सारे संसार की खोज-बीन की तो सबसे पहले प्रवासी भारतीयों को देखा, क्योंकि वे ऋषि-भूमि की संतान हैं। उनको देखना, उनको समझना सुगम था। इसके अलावा वे लोग भी हैं, जो हिंदुस्तान के निवासी नहीं हैं, लेकिन संसार के निवासी तो हैं। उन सभी को देखा और देखकर सभी को हमने अपने कुटुंब में- अपने परिवार में एक माला के तरीके से गूँथ लिया। ये गुँथी हुई माला है। गायत्री परिवार क्या है? एक गुँथी हुई माला है। इसमें कौन-कौन हैं? इसमें मोती हैं, हीरे हैं, पन्ना हैं, जवाहरात हैं। इन सबको— एक-से-एक बढ़िया आदमी को जोड़ करके हमने रखा है। जिसमें से आप लोग हैं।

आपसे हमारा सम्पर्क कब से है? आपसे हमारे बहुत पुराने संपर्क हैं, जन्म-जन्मांतरों के भी संपर्क हैं। क्योंकि जब हमने तलाश किया तो अपनी आध्यात्मिक शक्ति से तलाश किया कि कौन आदमी हमारे हैं, कौन हमसे संबंधित हैं, कौन हमारे साथ जुड़े हुए हैं। हमने जब यह पता लगा लिया और अखण्ड ज्योति पत्रिका भेजी, चिट्ठियाँ भेजीं तो मालूम पड़ा कि आप लोग गायत्री परिवार में शामिल हो गए हैं। कब हुए थे? आज से पचास साल पहले । पचास वर्ष के बाद में पीढ़ियाँ बदलती चली गयीं। कुछ पुराने आदमियों का स्वर्गवास हो गया, कुछ नए बच्चे पैदा हो गए। कुछ पुराने आदमी चले गये। इस तरह से परंपरा ज्यों-की-त्यों बनी रही। हार ज्यों-का-त्यों रहा। यह मिशन ज्यों-का-त्यों रहा। उसमें कोई कमी नहीं आने पाई। आप लोग वही हैं जो बड़ा काम करने के लिए, जिस तरह के आदमियों की जरूरत पड़ती है, ठीक उसी तरह से हैं।

साथियो! हिंदुस्तान में भगवान बुद्ध हुए थे, सरदार पटेल हुए थे, जवाहरलाल नेहरू हुए थे, सुभाषचंद्र बोस हुए थे और बहुत से आदमी हुए थे। इसी तरह से प्रभावशाली व्यक्तियों में से हिंदुस्तान से बाहर भी हमने देखा कि इस तरह के कौन से आदमी हैं जो अपना मुल्क- अपना देश सँभाल सकें, वहाँ जाग्रति पैदा कर सकें और लोगों को ऊँचा उठा सकें, आगे बढ़ा सकें। यही सब बातें हमने देखीं और सबको एक सूत्र में बाँधकर रखा है। आप उसी शृंखला में बँधे हुए हैं।

भगवान राम जब लंका-विजय के लिए और राम-राज्य की स्थापना के लिए गये थे, तो उनके साथ चलने के लिए कोई भी तैयार नहीं हुआ। क्योंकि रावण से लड़ाई करने के लिए कौन तैयार हो? कुंभकरण से लड़ने के लिए कौन तैयार हो? कोई तैयार नहीं हुआ। रामचंद्र जी के भाई भी आये थे सेना को लेकर, जनक जी भी आये थे, जिनकी बेटी सीता को रावण हरण करके ले गया था, परंतु कोई भी साथ नहीं आया। कोई राजा-महाराजा, कोई सैनिक-सिपाही भी नहीं आया। मनुष्यों में से कोई तैयार नहीं हुआ। लेकिन रीछ-बंदर आगे आए। ये रीछ-बंदर कौन थे? वे देवता थे। इन देवताओं ने कहा कि भगवान! हम आपके साथ चलेंगे। उन्होंने अपना देवता का स्वरूप छोड़कर रीछ-बंदर का रूप बना लिया। देवताओं के रूप में आते तो उनको वाहन लाने पड़ते, अपने हथियार लाने पड़ते? फिर रामचंद्र जी की सेना में भर्ती कैसे होते यदि देवता बने रहते तो? अतः देवता नहीं, रीछ-बंदर बन गए। रीछ-बंदर बनकर उन्होंने वह काम किया जो भगवान का संकल्प था।

भगवान के दो संकल्प थे- एक तो यह कि जो दैत्य-राक्षस हैं और विध्वंस कर रहे हैं, उनको समाप्त

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

करें। दूसरा संकल्प यह था कि राम-राज्य की स्थापना करें, जिससे धरती पर सुख आए, शान्ति आए, चैन आए, उन्नति हो। ये उनके दो संकल्प थे। ये दोनों संकल्प जब तक पूरे नहीं हुए, तब तक वे देवता, जो रीछ-बंदरों का रूप लेकर आये थे, उनके साथ-साथ बने रहे। उन्होंने राम का साथ कभी नहीं छोड़ा। रामचंद्र जी भी समझते रहे कि ये देवता हैं, जो रीछ-बंदर की शक्ल बनाकर आ गये हैं। आप लोग भी कौन हैं? आपकी शक्ल कैसी है? आप लोग कोट पहनते हैं, पेंट पहनते हैं, तो क्या हुआ ? हैं तो मानव की शक्ल में देवता ही। जिस तरीके से राम ने रीछ-बानरों को देवता माना और अपनी छाती से लगाकर रखा, ठीक यही बात हमारे सामने भी है। **आप चाहे हिंदुस्तान में रहते हैं या हिंदुस्तान से बाहर रहते हैं, गायत्री परिवार के जितने भी लोग हैं, उनको हमने अपनी छाती से लगाकर रखा है। आपका काम करने की जिम्मेदारी हमारी है। आप हमारा काम करेंगे और हम आपका काम करेंगे।**

मित्रो ! कोई आदमी किसी के यहाँ नौकरी करता है, खेती-बाड़ी करता है, तो उसके बाल-बच्चों के गुजारा करने का इंतजाम वह आदमी करता है कि नहीं, जिसने उसको नौकर रखा है। आपको नौकर तो हमने बनाकर नहीं रखा है, लेकिन अपना कुटुंबी बनाकर रखा है। तो आपके कुटुंब की - जिसमें छोटे बच्चे भी हैं, घर वाले हैं और दूसरे लोग हैं, उनकी देखभाल करने की जिम्मेदारी हमारी है। आपके शरीर की देखभाल हम करेंगे। आपके पैसे की देखभाल हम करेंगे। आपके मन की देखभाल हम करेंगे और कोई मुसीबत आपके ऊपर आएगी तो हम आपके सामने खड़े होंगे और यह कहेंगे तथा करेंगे कि ये मुसीबत पहले हमारे ऊपर आए, बाद में इन लोगों के ऊपर आए।

साथियो! इस गुरुपूर्णिमा की पूर्व वेला में हमारा सभी परिजनों के नाम यह संदेश और आश्वासन है, आप इसे याद करके रखिए कि आप देवता थे और अब सामान्य मनुष्य के रूप में हैं। आपका जन्म विशेष काम के लिए हुआ है और वही विशेष काम आपको करना है और बच्चों का गुजारा भी करना है। अगर कोई मुसीबत आएगी तो आपकी मदद हम करेंगे। हमारी सहायता हमारा गुरु करता है। हमने अपने जीवन में बहुत बड़े-बड़े काम किए हैं और बड़े कामों में हमारे गुरु ने हमारी मदद की है। हमारे भगवान ने हमारी मदद की है। अगर आपके सामने कोई दिक्कत की बात होगी, कठिनाई की बात होगी, हैरानी की बात होगी तो हम आपकी मदद करेंगे- सहायता करेंगे। यह हमारा दूसरा आश्वासन याद रखिए।

गुरुपूर्णिमा के पावन अवसर पर आपको तीसरा संदेश यह है कि आप सब लोग संगठित होकर रहें, मिल-जुलकर रहें। प्रेम से रहें। भाई-चारा निभाएँ और मिशन के काम को आगे बढ़ाएँ। जो भी कार्य आगे बढ़ेगा, मिल-जुलकर ही आगे बढ़ेगा। बुहारी एक जगह पर एक साथ बँधी रहती है, तो झाड़ने में समर्थ होती है और अगर सींकें बिखेर दी जाएँ तो किसी काम की नहीं रहतीं। जिस तरीके से धागों के ताने-बाने मिले हुए होते हैं तो उससे कपड़ा बन जाता है। अगर धागों को निकालकर अलग-अलग बिखेर दें तो मुश्किल पड़ेगी। आप लोग सब गायत्री परिवार के सदस्य इस समय इस तरह संगठित होकर रहें, जिससे मिशन का काम ठंडा न होने पावे। कहीं भी हिंदुस्तान में, या जहाँ कहीं भी गायत्री परिवार हो, वहाँ का काम ढीला न पड़ने पाए, शिथिल न होने पाए। बराबर उत्साह बना रहे और आगे आगे बढ़ते जाने की स्कीमें चालू रखी जाती रहें।

यह तीसरा संदेश हो गया। चौथा एक और संदेश है। चौथा संदेश यह है कि जब किसी ने ऐसे ऊँचे काम किए हैं, तो उनके काम में विघ्न डालने वाले भी हुए हैं। आपको मालूम है न कि महर्षि विश्वामित्र भगवान राम की सहायता करने के लिए एक यज्ञ कर रहे थे। तो उसको विध्वंस करने के लिए ताड़का, सुबाहु और मारीचि तीनों मिलकर आ गए। आपको मालूम है न कि पूतना श्रीकृष्ण भगवान को जहर पिलाने आई थी। आपको यह भी मालूम होगा कि हनुमान जी जब समुद्र छलाँगने जा रहे थे तो कौन-कौन विघ्न पैदा करने के लिए आ गए थे। इसी तरह आपके काम में भी सैकड़ों विघ्न आएँगे। सैकड़ों विघ्न आने की संभावना इसलिए भी है, क्योंकि हमने सारे संसार भर को ऊँचा उठाने का काम जो बढ़ा लिया है।

मित्रो ! सारे संसार में जो महायुद्ध से लेकर महामारियों तक की जो मुसीबतें आने वाली हैं, उन सबसे हम लडाई लड़ेंगे, मोर्चा लेंगे। हमारे ऊपर हमले होंगे कि नहीं होंगे? हमारे ऊपर भी हमले होंगे। हमारे काम का मतलब है- हमारा मिशन, गायत्री परिवार मिशन, इस पर भी हमले होंगे। कैसे होंगे? पुराने जमाने में तो आमने-सामने की लड़ाई होती थी। खरदूषण और रावण जो था, उसकी लड़ाई होती थी। खरदूषण और रावण जो था, उसकी लड़ाई इस तरीके से होती थी कि वह जिसको देख लेता था, तलवार से मार डालता था। तीरकमान से मार डालता था। यह आमने-सामने की लड़ाई थी।

लेकिन रावण, कुंभकरण के साथ-साथ एक और भी था, जो सीधे तो नहीं मारता था, पर रुला-रुलाकर मारता था। उसका नाम था- कालनेमि। वह ऐसा करता था कि लोगों की बुद्धि भ्रष्ट कर देता था। किसी को भी उल्लू बना देना उसके बायें हाथ का काम था। उसने मंथरा का दिमाग खराब कर दिया और मंथरा ने कैकेयी का। उसने मंथरा को समझाया कि मैं तेरा भरत से ब्याह करा दूँगा और कैकेयी को समझाया कि तेरे भरत को राजगद्दी

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

दिलाऊँगा। यह बात कैकेयी की समझ में आ गयी और मंथरा की भी समझ में आ गयी और उन दोनों ने ऐसा ही किया। इसी तरह कालनेमि ने सूर्पणखा को भी ऐसे ही बहका दिया। उससे यह कहा कि यहाँ के राक्षस काले हैं। इनके साथ में यदि तेरा ब्याह होगा तो काली संतान उत्पन्न होगी। दो गोरे लड़के आए हुए हैं, बड़े सुंदर राजकुमार हैं। चल तू हमारे साथ और उनसे कहना कि वे तेरे साथ ब्याह कर लें। रामचंद्रजी खट से तुझसे ब्याह कर लेंगे। अरे उनके पिता जी के भी तो तीन ब्याह हुए थे। उनकी सीताजी रही आएँगी और तू भी रही आएगी।

बस, वह बेचारी कालनेमि के बहकावे में आ गयी। उसकी कैसी मिट्टी पलीद हुई? मंथरा की कैसी मिट्टी पलीद हुई? कैकेयी की कैसी मिट्टी पलीद हुई? आपने पढ़ा होगा। इसी तरह तपस्वी कुंभकरण ब्रह्माजी से यह वरदान माँगने को था कि मैं साल भर में एक दिन सोऊँ और छह महीने जागूँ। लेकिन कालनेमि ने उसको इस तरह से पट्टी पढ़ा दी जिससे वह यह वरदान माँग बैठा कि वह छह महीने सोया करे और एक दिन जागा करे। वह रावण का विरोधी था। कालनेमि किसी को भी चैन से नहीं रहने देना चाहता था। उसका मन था कि कोई भी चैन से न रहने पाए। मारीचि वरदान माँगता था कि मैं स्वर्ग जाऊँ। तप करने के बाद उसने स्वर्ग माँगा था। कालनेमि ने उसे भी पट्टी पढ़ाई कि तू यह माँग कि जब मैं चाहूँ तब मेरा शरीर सोने का हो जाए। सीताहरण के समय उसका शरीर सोने का हो गया। सोने का नहीं होता, मामूली मृग होता तो क्यों मारा जाता? लेकिन वह मारा गया।

मित्रो! यह कालनेमि इसी तरीके से किया करता है। बच्चों को चुरा ले जाने वाला कालनेमि अभी भी इस युग में सक्रिय है। मथुरा में संत - बाबा जी के रूप में ठग लोग आते हैं और बच्चों को चुरा ले जाते हैं। बच्चों को जहर की मिठाई खिला देते हैं। इसी महीने ४०-४५ लोग मारे गए। संत-बाबा जी का कपड़ा पहनकर कुछ लोगों ने व्यक्तियों को लड्डू खिलाकर बेहोश कर दिया और उनका माल लेकर भाग गए। आजकल कालनेमि की माया इस तरीके से भी चल रही है। शायद आपके यहाँ भी कोई कालनेमि जा पहुँचे, तो आप सावधान रहना। अपने प्रयास से-प्रयत्न से सावधान रहना। कहीं ऐसा मत करना कि अपनी मेहनत, अपना श्रम और अपना पैसा किसी ऐसे काम में लगा दें, जो किसी खास व्यक्ति के काम आए। वह न समाज के काम आए, न संस्था के काम आए, न मिशन के काम आए न जनता के काम आए, किसी काम नहीं आए वरन व्यक्ति के काम आए।

आपके यहाँ ऐसी कितनी ही घटनाएँ हैं कि जो आदमी कल तक दो कौड़ी के थे, आज देखो उनके यहाँ क्या हाल हो रहे हैं? कैसे-कैसे बँगले बने हुए हैं? कैसी-कैसी मोटरें आ रही हैं? करोड़ों रुपये कहाँ से इकट्ठा हो रहा है? आप अपने यहाँ देख लीजिए ना? निगाहें फेंकिए, आपको मालूम पड़ जाएगा कि पहले ये क्या थे और साल-दो- साल के भीतर क्या हो गए। इतने पर भी इनको संतोष नहीं होता तो मिशन को ही बदनाम करने पर तुल गए। अभी जो दो महीने पहले गुरु जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर पी-एच. डी. करते थे, वो ही हैं जो दो महीने बाद गालियाँ सुनाते हैं, चोर और बेईमान कहते हैं। नहीं बेटे, ये कभी भी विश्वास मत करना। अगर हम चोर और बेईमान होते तो जो हमारी पिताजी की दी हुई संपत्ति थी, वह सारी-की-सारी संपत्ति हम अपने गाँव का हाईस्कूल बनवाने के लिए क्यों दे जाते? इसके अलावा जो कुछ भी रह गया, वह सारा-का-सारा हमने गायत्री तपोभूमि बनाने में दान कर दिया। पैसा हमारे पास इतना था कि अगर हमने उसको सँभालकर रखा होता तो सात पीढ़ी तक काम आता। जितनी किताबें हमने लिखी हैं, उन सबका कापीराइट हमारे पास होता तो लाखों रुपये महीने की आमदनी होती। लेकिन हम तो वही रोटी खाते हैं जो माताजी के चौके में सबके लिए बनती हैं। इस संस्था के कपड़े पहनते हैं। इसके अलावा कानी कौड़ी भी हमारे पास नहीं है।

बच्चो! आपको यही कहना है कि इस तरह की बातों से आप बहकना मत। हाथी अपनी राह सड़क पर चला जाता है और कुत्ते भौंकते रहते हैं। भौंकने के बाद में जब वे थक जाते हैं, तो बैठ जाते हैं। हाथी पर कोई असर नहीं पड़ता। उसको जैसा चलना चाहिए, जिस दिशा में चलना चाहिए, उसी गंभीरता से, उसी तरीके से चलता रहता है। कुत्तों के ऊपर कोई ध्यान नहीं देता। सूरज के ऊपर कोई धूल फेंकता है, तो वह धूल उसी के ऊपर गिरेगी। इससे क्या सूरज गंदा हो जाएगा? सूरज मैला हो जाएगा? सूरज बदनाम हो जाएगा? नहीं, सूरज बदनाम नहीं हो सकता। सूरज बदनाम होगा तो अपने कामों से बदनाम होगा, किसी के करने से बदनाम नहीं हो सकता। अगर हम कभी बदनाम होंगे तो अपने कृत्यों से बदनाम होंगे। और कोई दूसरा हमें बदनाम नहीं कर सकता। अगर कोई हमको बदनाम कर रहा हो, शांतिकुंज को बदनाम कर रहा हो, तो आपको उसकी ओर जरा भी निगाह उठाने की जरूरत नहीं है। उससे क्या हम लड़ाई- झगड़ा करें? नहीं, उससे लड़ाई-झगड़ा क्या करना है? झूठ के पाँव कहाँ होते हैं? झूठ जिंदा रहता है क्या? झूठ जिंदा नहीं रहता। झूठ अगर जिंदा रहता तो चोर

युगसंधि की इस वेला में, जहाँ पके फोड़े के फटने और दुर्गंधभरा मवाद निकलने की संभावना है, वहाँ यह भी निश्चित है कि आपरेशन के बाद दर्द घटेगा, घाव भरेगा और संचित विकारों से छुटकारा मिलेगा

-परमपूज्य गुरुदेव

अखण्ड ज्योति नवंबर, १९८८

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

और उचक्के और उठाईगीर अब तक करोड़पति हो गए होते । लेकिन वे ऐसा थोड़े दिन ही कर पाते हैं, ज्यादा दिन तक उनका मायाजाल नहीं चल पाता।

आप सबसे हमारा निवेदन यही है कि मिशन को मजबूत बनाने के लिए, मिशन को सही रखने के लिए सही आदमियों को अपने आप में इकट्ठा रखिए और उनका मनोबल बढ़ाते रहिए, हिम्मत बढ़ाते रहिए। किसी आदमी के विरोध करने से, उलटा-सीधा बकने से आप कभी भी उसके चक्कर में मत आइए। आपको कोई बात तलाश करनी हो तो आप यहाँ आ सकते हैं। यहाँ के रजिस्टर खुले पड़े हैं। हम खुले पड़े हैं। हमारी जिंदगी खुली हुई है। हमारी जिंदगी खुली किताब के तरीके से है। इसमें कोई पन्ना ऐसा नहीं है जिसको कोई आदमी यह अँगुली उठा सके कि इसमें काला धब्बा लगा हुआ है। न हमारी जिंदगी में काला धब्बा लगा हुआ है और न हमारे विचारों पर-काला धब्बा लगा है। जिस किसी को-सबको हम चैलेंज करते हैं कि कोई भी आदमी यहाँ आए और देखे कि यहाँ कोई दाग-धब्बे की बात तो नहीं है। यहाँ दाग-धब्बे की बात आपको कभी नहीं मिलेगी। हमारा इतना ७६ वर्ष का जीवन हो गया है। इसे हमने कबीर की तरीके से रखा है-

"दास कबीर जतन से ओढ़ी,
ज्यों-की-त्यों धरि दीनी चदरिया।"

मित्रो! हमारा जीवन, हमारा मिशन, हमारा क्रिया-कृत्य ऐसा है जिसमें हमको भी घमंड है और आपको भी गर्व होना चाहिए, आपको भी प्रसन्न होना चाहिए, आप को भी संतोष होना चाहिए। संतोष और प्रसन्नता के साथ-साथ में आपको इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि आप किसी के भी बहकावे में न आवें। बल्कि पूरी हिम्मत के साथ में, अपना पूरा जोश कायम रखते हुए अपने संगठन को कायम रखें। इस मिशन की गतिविधियों में ढील न आने दें, वरन और भी अच्छे तरीके से करें।

साथियो! अभी मैंने अपनी बात समाप्त कर दी थी, लेकिन कुछ बातें एकाएक याद आ गयीं। वह यह कि किसी ने यह अफवाह फैला दी थी कि गुरु जी मर गए। किसी-किसी ने तो मुंडन भी करा लिया था। अभी हम मरे हैं क्या? नहीं बेटे, हम बिल्कुल जिंदा है और अभी बहुत दिनों तक जिंदा रहेंगे। अगर हम मरेंगे भी तो पाँच गुने होकर काम करेंगे। अभी तो हमारा मरने का कोई सवाल ही नहीं। सन २००० तक हम बराबर बने रहेंगे। जिस किसी ने यह अफवाह फैलाई हो और जिस किसी ने मुंडन कराया हो, यह आप उसी से पूछना और उससे कहना कि गुरुजी को तो हम अपनी आँखों से देखकर आए हैं और उनका टेप सुनकर आये हैं। माता जी भी जिंदा हैं, हम भी जिंदा हैं, हमारा क्रिया-कलाप भी जिंदा है और भी सब जिंदा है। किसी-किसी ने यह अफवाह फैलाई है कि गुरुजी ने शांतिकुंज अपने जमाई को दे दिया है। गायत्री परिवार अपने साढ़ू को दे दिया। इनं बेहूदी बातों के बारे में आप कभी विचार मत करना।

मित्रो ! यह सार्वजनिक संस्था है। इसका एक ट्रस्ट बना हुआ है। सात आदमी इसके ट्रस्टी हैं। जब कभी एक आदमी नहीं रहेगा तो उसके स्थान पर दूसरा आदमी नियुक्त हो जाएगा। किसी के बिना काम रुकेगा नहीं। यह कोई राजकुमार नहीं है, जो गद्दी पर लाकर के बैठाया जाए। यह कोई जमींदारी नहीं, दुकान नहीं, जिस पर लाकर किसी को बैठा दिया जाए। यह सार्वजनिक-पारमार्थिक संस्था है। चार्टर्ड अकाउंटेंट इसका हिसाब-किताब चैक करते हैं। अगर हमारा उत्तराधिकारी कोई होगा तो वह समर्पित कार्यकर्त्ताओं की टीम ही होगी, व्यक्ति नहीं। गायत्री तपोभूमि की भी कोई होगी तो टीम होगी। वहाँ युगनिर्माण योजना ट्रस्ट है। इसका भी कोई उत्तराधिकारी हुआ तो टीम होगी! कोई व्यक्ति विशेष नहीं हो सकता। व्यक्ति विशेष के मरने से इस संस्था पर कोई असर नहीं पड़ता। व्यक्ति विशेष के चले जाने या न रहने से भी कोई फर्क नहीं पड़ता, कोई बात नहीं बिगड़ती, क्योंकि इसको चलाने वाला भगवान है। इसको चलाने वाले हमारे गुरु हैं। अब तक जितना काम बढ़ा है, इसे आपने देखा है कि वह सौ गुना, हजार गुना हो चुका है। आगे भी हमारे रहते हुए भी और न रहते हुए भी यह काम हजार गुना होगा और सौगुना होगा-निरंतर बढ़ेगा, सारे विश्व में बढ़ेगा। यह विश्वास दिलाना रह गया था, सो दुबारा टेप करा दिया।

रेशम के कीड़े अपनी लार से अपना घर बनाते हैं और उसी में जकड़कर मरते रहते हैं, पर जो चतुर कीड़े होते हैं। वे उस लार से बने घर को काटकर बाहर निकल आते हैं और उड़ जाते हैं। मनुष्य अपने लिए बंधन आप अपने अज्ञान से खड़े करता है। उन्हीं में जकड़ा सड़ता-मरता रहता है। यदि वह चाहे तो विवेकरूपी मुख से उन्हें काट भी सकता है और रेशम के कीड़े की तरह बंधन से मुक्त भी हो सकता है।

गुरुपूर्णिमा का संदेश आपके लिए यही है आप सब लोग अच्छे रहें, सुखी रहें। आपके बच्चे सुखी रहें, आप फलें-फूलें, आपकी उन्नति हो।

सर्वे भवन्तु सुखिनः
सर्वे संतु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु
मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।

इन शब्दों के साथ हम अपनी बात समाप्त करते हैं।

॥ॐ शांति॥

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

हीरक जयंती की पूर्व वेला में श्रावणी का संदेश

परमपूज्य गुरुदेव का यह श्रावणी संदेश बड़ा मार्मिक एवं सामयिक है। आज मानवजाति जिन परिस्थितियों से जूझ रही है- संगठनात्मक स्तर पर जो हलचलें राष्ट्रभर में दिखाई देती हैं, उनमें यदि किसी को- शासनतंत्र को भी आशा है तो गायत्री परिवार से ही। परमपूज्य गुरुदेव ने सूक्ष्मीकरण अवधि के प्रथम वर्ष में अपनी हीरक जयंती की घोषणा की थी। यह १९८५ में मनायी गयी थी। उसी की पूर्व वेला में गुरुदक्षिणा के रूप में उन्होंने दस हजार हीरों की जीवनदानी नररत्नों की माला पहनने की बात कही थी। उसके बाद प्रायः पंद्रह वर्ष बीतने को आते हैं। क्या हम अब भी उनकी इस आकांक्षा को पूरा नहीं कर सकेंगे? क्या अभी भी अपने पारिवारिक दायित्वों के पूरा हो जाने पर भी कई प्रकार के बहाने बताकर बचते रहेंगे? देवसंस्कृति के विश्वविद्यालय स्तर की स्थापना की पूर्व वेला में आवश्यकता है ऐसे प्राणवानों की, जो गुरु की पीड़ा को समझ सकें। पढ़ें अमृतवाणी।

गायत्री मंत्र हमारे साथ बोलें, **ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।**

देवियो, भाइयो! आज रक्षा बंधन का सामूहिक पर्व है। यह संकल्प का पर्व है, कर्तव्य-निर्धारण का पर्व है। आज हमारे ध्यान के दो केंद्र हैं- एक तो भगवान, जो हमें धक्का देता रहता है और आगे बढ़ाता रहता है। दूसरा भगवान- आप लोग हैं, जो हमारे कंधे से कंधा मिलाकर चलते हैं। एक भगवान निराकार है तथा दूसरा साकार है। आप साकार भगवान हैं, जो हमारे कदम से कदम मिलाकर चलते हैं। हमारी बातों को मानते हैं तथा श्रम करते हैं। हमारे क्रियाकलापों में शामिल रहते हैं। आज हमारी इच्छा हुई कि आपसे अपने मन की बातें- जी की बातें करूँ। तो महाराज जी आप अपना कुशल समाचार बताएँ।

मित्रो! हमारे ऊपर भगवान की छाया है और जब तक वह बनी रहेगी, हमारा कुछ बिगड़ने वाला नहीं है। स्वास्थ्य हमारा ठीक है। थोड़े दिन पहले एक पगले व्यक्ति द्वारा वार करने के कारण कुछ चोट लग गयी थी, अब वह ठीक है। सेहत हमारी ठीक है। मन भी ठीक है। साधना भी ठीक है और कुछ कमी रह जाएगी, तो आप लोग कदम बढ़ा देंगे, तो वह भी पूरी हो जाएगी। हमने अब तक बहुत काम किया है। अभी हमारे सामने तो आपको पता नहीं चलता है, परंतु बाद में पता चलेगा कि हमने काफी काम किया है। हमने पेपरबाजी भी नहीं, विज्ञापन भी नहीं किया और भी कुछ नहीं किया, परंतु फिर भी हमने इतना काम कर लिया जितना किसी संस्था ने नहीं किया। न केवल हिंदुस्तान में, वरन उसके बाहर भी बहुत काम किया है। हमने ठोस काम किया है।

मित्रो! हम से मतलब आप सबके द्वारा है। आप हमारे मित्र हैं, सहयोगी हैं। हम एवं आपने मिलकर बहुत बड़ा काम किया है। एकाकी भगवान के लिए भी यह संभव नहीं था। गाँधी जी ने भी अकेले स्वतंत्रता संग्राम नहीं लड़ा था। उनके साथ भी एक सत्याग्रही सेना थी। उसके माध्यम से ही आंदोलन चलाया तथा अंग्रेजों को इस देश से खदेड़ बाहर किया एवं भारत को आजाद कराया। भगवान बुद्ध के लिए भी अकेले धर्मचक्र-प्रवर्तन संभव नहीं था। उन्होंने एक लाख परिव्राजक बनाए और उनके माध्यम से उन्होंने विचारों को जन-जन तक पहुँचाया। विनोबा ने भूदान का कार्य भी अनेक सर्वोदयी कार्यकर्ताओं के सहयोग से किया था।

भगवान राम ने समुद्र को पाटने एवं रावण पर विजय प्राप्त करने का कार्य क्या अकेला ही किया था? नहीं उसे उन्होंने हनुमान, अंगद, नल-नील आदि बानर एवं भालुओं के सहयोग से पूरा किया था। भगवान कृष्ण ने महाभारत यानी ग्रेटर इंडिया का कार्य क्या स्वयं अकेले किया था? नहीं, यह संभव नहीं था। तो क्या गोवर्धन उन्होंने स्वयं उठा लिया था? नहीं, यह भी संभव नहीं था। यह सब कार्य उन्होंने ग्वाल-बालों के सहयोग से पूरा किया।

जगत की परंपरा को जाग्रत एवं जीवंत बनाए रखने के लिए, भगवान के कार्य को पूरा करने के लिए हमने भी एक संगठन बनाया। आप हमारे साथी एवं सहयोगी हैं। आपको हमने बहुत मुश्किल से ढूँढ़ा है। आपने तो सोचा होगा कि हम पत्रिका के ग्राहक बन गए और गुरुजी के हो गए। नहीं बेटे, हमने आपको हिलाया है, झकझोरा है, प्रेरणा दी है, तब आप आए हैं। आपको हमने बुलाया है। हमने आपके पहले जन्म की बात पर विचार किया, जिसमें देखा कि इनमें संस्कार हैं, जो भगवान का काम कर सकते हैं, उन्हें हमने जगाया है। बहुत से बाबा जी आते हैं और न जाने क्या-क्या बातें बतला जाते हैं। उनकी बातों को कोई सुनता भी नहीं है, परंतु हमारे बारे में आपने ऐसा नहीं किया। आपने हमारी बातों को ध्यान से सुना, हृदय में धारण किया। इसके साथ ही उसे क्रिया में परिणत करने के लिए भी अपना समय, श्रम व अक्ल लगाने के लिए तैयार हो गए और लगा रहे हैं। यह बहुत प्रसन्नता की बात है। यह हमारे प्रयास के साथ ही साथ आपके पूर्व जन्म के संस्कार का ही फल है।

मित्रो! शेर का एक बच्चा भेड़ों के बीच में चला गया था और अपने

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

स्वरूप को भूल गया था। जब एक शेर ने उसे उसकी छाया दिखाई और उसका स्वरूप दिखलाया तो वह जाग्रत हो गया। हम एवं आप दोनों सिंह हैं। भेड़ वह होता है जो चौबीस घंटे पेट और प्रजनन की बात करता है। केवल अपनी औलाद की बात सोचता है। आप इससे आगे हैं। आपके सहयोग से ही यह मिशन आगे बढ़ पाया है। हमने आपको ढूँढ़ निकाला है। हमने गहरे पानी में डुबकी लगायी है और मोतियों को चुन-चुनकर इकट्ठा किया है। मोती इसी तरह सड़क पर नहीं पड़ा था, जो हमने केवल चुन लिया है। हमने काफी श्रम किया है, तब आपको पाया है। आपको बड़ी मुश्किल से जोड़ पाए हैं हम। आपको हमसे जुड़ा कहना चाहिए।

साथियो! आजकल हम सूक्ष्मीकरण साधना में हैं। दुनिया के सामने एक बड़ी मुसीबत आ गयी है। उसके समाधान के लिए हमें बड़ा काम करना है। आगे खुशहाली लाने के लिए हमें प्रयास करना है। यह प्रयास भगीरथ का गंगा अवतरण एवं दधीचि की हड्डी से वज्र बनाने से कम नहीं है, जो असुरता को समाप्त करने के लिए आवश्यक है। हमारा प्रयास उसी स्तर का है। इस महान कार्य को जब हम कर रहे हैं तो आपको हमारा सहयोगी एवं सहभागी अवश्य बनना चाहिए। आपको बनना ही पड़ेगा, चाहे आप मन से करें या बिना मन से।

आपको इसमें क्या करना पड़ेगा? हमने आपको दो काम बतलाए थे। आपको हमने एक बात यह कही थी कि सूर्योदय के समय एक माला गायत्री महामंत्र का जप आपको अवश्य करना चाहिए, ताकि हमारे इस महापुरश्चरण को- इस योजना को बल मिले। दूसरा हमने आपको यह कहा था कि आपको जब हमसे मिलना हो, बातें करनी हो तो आप बेतार का तार लगा लें। सूर्योदय के एक घंटे पहले से सूर्योदय के एक घंटे बाद तक जब आप हमारा चिंतन करेंगे तो आपको हमारा संदेश, मार्गदर्शन एवं सहयोग मिलेगा। इसके अलावा हम आपसे और क्या चाहेंगे। आप हमारे बच्चे हैं, हम जो कर रहे हैं, वह आप करें, यही हमारी इच्छा है। हम जिस परंपरा पर चले हैं, आपको भी उसी पर चलना चाहिए।

मित्रो, हमने ऋषिपरंपरा को ग्रहण किया है। हमने साधु-ब्राह्मण का, संत का जीवन ग्रहण किया है। आपको भी वही ग्रहण करना चाहिए। संत वह जो दुनिया को हिला दे। गाँधी, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद संत थे, जिन्होंने दुनिया को हिला दिया था। आपको भी वैसा ही बनने का प्रयास करना चाहिए। ब्राह्मण अपरिग्रही होता है तथा संत सेवाभावी होता है। आपको इन दोनों परंपराओं को कायम रखना चाहिए। हमने यही रास्ता अपनाया है। आप से जितना संभव हो, इसी परंपरा को अपनाने का प्रयास करें। आप अपनी निजी महत्वाकांक्षा में काट-छाँट करें। आपकी महत्वाकांक्षा कम होनी चाहिए। आपकी इच्छा कम होनी चाहिए। हिंदुस्तान के आम नागरिक की तरह आपका जीवन होना चाहिए। आपको अपने परिवार को ज्यादा नहीं बढ़ाना चाहिए। जो हैं, उनमें से प्रत्येक सदस्य को स्वावलंबी बनाने का प्रयास करें। इससे आपको व उनको दोनों को प्रसन्नता होगी। यदि आप ऐसा कर सकेंगे तो ही हमारे साथ चल सकेंगे।

अभी तो आप इस समय हमारे साथ जब उत्साह आता है, तो चलने लगते हैं और जब उत्साह कम हो जाता है तो मगर की तरह पानी में जा बैठते हैं। यह पानी के बुलबुले की तरह से काम करना क्या कोई शान की बात है? अगर चलना है तो फिर चलना ही है, रुकना नहीं। यही शान की बात होगी। हमारे गुरु ने हमारी शान रखी, हम आपकी शान रखेंगे। आप हमारी जिंदगी को देखिए, गाँधी जी की जिंदगी को देखिए, अन्य संतों की जिंदगी को देखिए, जिन्होंने जो संकल्प लिया, जो लक्ष्य बनाया, उसके लिए जीवन के अंत तक डटे रहे। बीच-बीच में वह भागे नहीं हैं। अगर बीच-बीच में वह व्यक्ति भागेगा तो वह वापस कैसे आएगा? महापुरुष आखिरी दम तक अपने उद्देश्य पर डटे रहे, संकल्प पर अडिग रहे, अपने स्थान पर बने रहे। वे बीच में भागे नहीं है। अगर बीच में भागोगे तो काम कैसे बनेगा? इससे बड़ी मुसीबत होगी। अगर कोई बैल मारने आएगा तो आप गोबर करने लगेंगे, तो काम कैसे चलेगा? आपको उत्साह आता है, उमंग आती है, तो आप काम करते हैं और जब आपकी हवा निकल जाती है तो आप चुपचाप हो जाते हैं। इससे काम कैसे चलेगा? अगर किसी काम को कीजिए तो पूरा कीजिए। थोड़ा-सा काम करने से क्या फायदा?

मित्रो! हमने तो हमेशा अर्जुन की तरह तीर की नोंक तथा चिड़िया की आँखें ही देखी हैं। हमेशा हमें अपना लक्ष्य दिखलाई पड़ा है। आपको भी जितना बन पड़े, त्याग करना चाहिए, परंतु बीच में काम बंद करके भागना ठीक नहीं है। ढीला-पोला होने में फायदा नहीं है। शानदार आदमी एकनिष्ठ रहते हैं, एक जैसे रहते हैं। आपसे भी जितना बने, मिशन के लिए त्याग करें, महाकाल के लिए त्याग करें। हमारा एक ही निवेदन है कि नवयुग लाने के लिए जनमानस का परिष्कार करना है। इसके लिए आपको बढ़-चढ़कर काम करना है। आपको मुस्तैदी का जीवन जीना चाहिए। आप वैसा बैल न बनें जो रास्ते में बैठ जाता है। आप एक निष्ठा से एक श्रद्धा से काम करें तथा लगे रहें। इससे आपका, हमारा तथा मिशन तीनों का कल्याण है। हमने अपना सारा जीवन एक लक्ष्य के लिए नियोजित किया है, आप भी अपने सारे जीवन को एक लक्ष्य के लिए नियोजित कीजिए।

एक बात और आप से कहनी है कि अब मिशन की रजतजयंती होने वाली है। अब हम पचहत्तर साल के हो गए। अरे हम तो जब से यह सृष्टि बनी है तभी से काम कर रहे हैं और जब तक यह रहेगी, हमें काम करना है। हमारी

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

मुक्ति नहीं होगी। इस संसार में जब तक सब आदमी मुक्ति नहीं पा लेंगे, हमें मुक्ति की अभिलाषा नहीं है। इस दुनिया के सभी आदमी जब मुक्ति पा लेंगे, तो हम सबसे आखिरी आदमी होंगे जो मुक्ति की अभिलाषा रखेंगे।

मित्रो! यह हीरक जयंती क्या बात है? जब आदमी पचहत्तर वर्ष का हो जाता है तो यह जयंती मनाई जाती है। सौ साल में शताब्दी मनाई जाती है। अब हमारा यह स्थूल शरीर विद्रोह कर रहा है। हम बहुत दिन जिएँगे नहीं, यह हमारी कामना नहीं है। अब हम सूक्ष्म एवं कारणशरीर में रहकर काम करना चाहते हैं। अब हम पाँच कोषों से, पाँच शरीरों से, पाँच मोर्चों पर लड़ेंगे। हीरक जयंती वसंत पंचमी से शुरू हुआ है और अगले वर्ष तक यह मनाया जाएगा। हमारे पास ढेरों पत्र आए हैं कि गुरु जी हम आपका जुलूस निकालेंगे, प्रदर्शनी लगाएँगे। इसी तरह न जाने क्या-क्या पत्र आए हैं। हमने विचार किया कि हमें इस जयंती वर्ष में क्या करना चाहिए? हम यानी हमारे मिशन का विस्तार कैसे हो? जन-चेतना को कैसे जगाया जाए?

हमने जुलूस आदि के लिए लोगों को मना कर दिया। इस धूमधड़ाका से कोई लाभ नहीं होगा। हमने एक सौ आठ व एक हजार आठ कुंडीय तक यज्ञ किए, जो शानदार थे, लेकिन देखा कि उसके दो साल बाद लोग उसे भूल गए। इस तरह इस धूमधड़ाके से कोई लाभ नहीं होता है। अब उससे मेरा मन भर गया है। अभी हम इन्हें नहीं मनाना चाहते। आपको हमारी बात मानना चाहिए। आगे जब जरूरी होगा, हम बता देंगे। अगर आप हमारी इच्छा के अनुसार मनाना चाहते हैं तो हमारी एक इच्छा रह गयी है। क्या रह गई है? फूल-माला हमने ढेरों मन पहन लिए हैं। अब हमें जेवर पहनने की इच्छा है। हमारे पास ढेरों आदमी हैं। हमारा मन है कि अब हम कदम से कदम मिलाकर चलने वालों की माला पहनें। हमने गायत्री शक्तिपीठें बनाई थीं। उस काम से भी अब मेरा मन भर गया है। अब केवल मंदिर बनकर रह गए हैं। वहाँ जाग्रति की - जनजागरण की कोई बात नहीं है। वहाँ एक देवी बैठी है, जिसकी सुबह-शाम आरती हो जाती है। हो सकता है अगले दिनों रचनात्मक क्रिया-कलाप चलें, उनका भी कायाकल्प हो, पर अभी तो सब देखकर हमें बहुत दुख होता है कि जनता के बहुत सारे पैसों को बर्बाद कर दिया गया व परिणाम स्वल्प ही हाथ आया।

हमारा मन है कि हमारे पास दस हजार ऐसे व्यक्ति हों जिनकी हम माला पहनें, जो हमारे साथ कदम-से-कदम मिलाकर चलें। हमारी व उनकी एक आवाज हो, एक दिशा हो तथा लगातार मिलकर लक्ष्य की ओर बढ़ते रहें। उन्हें किसी बात का डर या भय न हो। इस वर्ष हमारी इच्छा दस हजार हीरे का हार पहनने की है। अगर कोई व्यक्ति मरता है या फाँसी पर चढ़ाया जाता है तो उसकी एक इच्छा होती है जो पूरी की जाती है। जैसे किसी की इच्छा होती है कि हम मिठाई खाएँ तथा सिगरेट पिएँ, तो उसकी इच्छा पूरी कर दी जाती है। हमारा भी मन है कि इस वर्ष हम दस हजार हीरों का हार पहनकर शहर में निकलें। जब हमारा जुलूस निकले तो जनता यह समझे कि यह बहुत मालदार आदमी है। बहुत शानदार आदमी है, वजनदार आदमी है।

बेटे, आज मैं कबीर की तरह से पहेली कह बैठा। यहाँ दस हजार हीरों से मेरा मतलब है कि दस हजार ऐसे साथी हो जाएँ जो नियमित रूप से हमारे कार्य अर्थात मिशन के लिए समयदान दे सकें। पैसे की इच्छा नहीं है। इसका मतलब यह है कि हमारे हाथ-पाँव मजबूत हो जाएँ। हाथ-पाँव से हमारा मतलब आपसे है। आप हमारे चलते-फिरते हाड़-मांस के शक्तिपीठ बन जाएँ। हमने जो उम्मीद शक्तिपीठों से लगाई थी, वह आप स्वयं पूरा करना शुरू कर दें। हमें ज्ञानरथ के लिए नौकर नहीं चाहिए। हमें इसके लिए आपका समयदान चाहिए। विवेकानंद, गाँधी, विनोबा का काम स्वयं उन्होंने किया। इसी तरह यह काम आपको करने होंगे। आपके पास चौबीस घंटे हैं। आठ घंटे काम के लिए, सात घंटे सोने के लिए, पाँच घंटे नित्य काम के लिए रख लें, तो भी आपके पास चार घंटे बचते हैं। आपको नियमित रूप से चार घंटे नित्य मिशन के लिए, समाज के लिए, भगवान के लिए देना चाहिए।

समयदान आज की अनिवार्य आवश्यकता है। इसके लिए आपको समय निकालना ही चाहिए। मान लीजिए अगर आप बीमार हो जाएँ तो आपका समय बचेगा कि नहीं? आप यह समझें कि आप चार घंटे नित्य बीमार हो जाते हैं। आप कहेंगे कि गुरुजी हम किस काम के लिए समय दें। जैसा कि मैंने कहा है कि जनजाग्रति के लिए और किसके लिए- गुरु जी को पंखा झलने के लिए, पैर दबाने के लिए नहीं। बेटे हमें तो जनजागृति के लिए समय चाहिए। आप समय की माँग को पूरा कीजिए। इस माँग से हमारा कान फटा जा रहा है, दिमाग पर बोझ-सा धरा है। यह कार्य अकेले से पूरा नहीं हो सकता है। इस कार्य हेतु आपसे समयदान चाहता हूँ। आप हमारे हाथ-पैर बनें, सहायक बनें। हमारा साहित्य घर-घर पहुँचाकर क्रांति कर दें। आपके चार घंटे से हमारा काम बन जाएगा। दो घंटे से कम में तो बन ही नहीं सकता। अगर इतना न बने तो फिर आप वही हल्ला-गुल्ला करने वाले, जुलूस निकालने वाले बने रहें।

हरिश्चंद्र ने विश्वामित्र से, एकलव्य ने द्रोणाचार्य से, शिवाजी ने समर्थ गुरु रामदास से, विवेकानंद ने रामकृष्ण परमहंस से दीक्षा ली थी तथा गुरुदक्षिणा चुकायी थी। आपको भी गुरु-दक्षिणा के रूप में समय देना चाहिए। जनजाग्रति के लिए आपका समयदान हीरे-मोतियों से, जवाहरात से भी बढ़कर है। इससे कम में युगपरिवर्तन का लक्ष्य पूरा नहीं होगा। आप हमारे बेटे हैं, साथी-सहयोगी हैं। आपसे यही अपेक्षा है, आशा है।

ॐ शान्ति

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

नया व्यक्ति आएगा बनेगा नया युग

(पुनर्गठन वर्ष में ८ जुलाई १९७९ को शांतिकुंज परिसर में दिया गया प्रवचन)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो, भाइयो ! मध्यकालीन अंधकार युग समाप्त हुआ। हजार वर्ष तक हमने बार-बार ठोकरें खाईं। हजार वर्ष की गुलामी की ओर अगर हम दृष्टिपात करते हैं, तो आँखों में आँसू भर आते हैं। राजनैतिक, धार्मिक, बौद्धिक, सामाजिक, आर्थिक-प्रत्येक क्षेत्र में हम इस अवधि में भटकते रहे। इन हजार वर्षों में हम इतना कुछ गँवा बैठे कि इसे पूरा करने में हमें काफी समय लगेगा। यह अवसर पिछले समय की बातें करने का नहीं है। अब आवश्यकता इस बात की है कि हम भविष्य का निर्धारण करें और अपनी शक्ति उसी दिशा में नियोजित करें।

भगवान की इच्छा से अंधकार युग समाप्त हुआ। सूर्योदय का समय आया। अब से तीस साल पहले भारत को राजनीतिक स्वाधीनता मिली। अपने भाग्य का निर्माण अपने हाथों करने का समय आया। राजनीति को दो काम सौंपे गए। अर्थव्यवस्था को सुधारना राजनीति का पहला काम है। जन-साधारण को उद्दंडता एवं गलत कामों से रोकना, उसे दंड देना राजनीति का दूसरा काम है। आर्थिक एवं सामाजिक सुव्यवस्था-यही दो काम राजनीति के जिम्मे सौंपे गए। यह मनुष्य के भौतिक जीवन का पक्ष है, जिसकी जिम्मेदारी राजनीति को सौंपी गई।

दूसरा पक्ष मनुष्य का आंतरिक एवं आध्यात्मिक है। इसे प्रभावित करने की सामर्थ्य राजतंत्र में नहीं है। इसे पूर्ण करने की सामर्थ्य केवल धर्मतंत्र में है। आस्थाओं, विचारणाओं एवं गतिविधियों को नियंत्रित करें एवं उसे ऊँचा उठाकर उत्कृष्टता के साथ जोड़ें, यह उत्तरदायित्व धर्मतंत्र को सौंपा गया, ताकि देश को एक हजार वर्ष की गुलामी के कारण जो बौद्धिक, नैतिक एवं सामाजिक अस्तव्यस्तता हुई है, उसे पूरा किया जाए तथा हम प्रगति की ओर बढ़ सकें।

धर्मतंत्र को अपनी जिम्मेदारी निभानी थी, ताकि मनुष्य की खोई हुई गरिमा की पुनः स्थापना की जा सके। भारत के लोगों के आंतरिक खोखलेपन अर्थात अपनी पात्रता एवं व्यक्तित्व की कमी के कारण मध्य एशिया से थोड़े-से डाकू आए और उन्होंने हमला करके भारतवर्ष को डेढ़ हजार वर्ष तक गुलाम बनाए रखा। अँग्रेज बाद में आए। उन घावों को पूरा करना हमारा काम है। हमारे से मतलब परिष्कृत धर्मतंत्र से है। यह धर्मतंत्र का काम है कि वह देखे कि किन कमजोरियों के कारण व्यक्ति भीतर से खोखले एवं बाहर से कमजोर होता है। उसकी छानबीन करे। यह उत्तरदायित्व धर्मतंत्र को निभाना था। धर्मतंत्र के विनम्र प्रतिनिधि के रूप में यह उत्तरदायित्व युगनिर्माण योजना ने अपने कंधों पर उठाया और यह वचन दिया कि हम जनता में धर्मबुद्धि, विवेकबुद्धि उत्पन्न करेंगे तथा उच्चस्तरीय मान्यताओं को, आदर्शों को जनमानस में प्रतिस्थापित करेंगे, जिसके द्वारा व्यक्ति, परिवार और समाज मजबूत बनते हैं तथा उनका चिरस्थायी वर्चस बना रहता है।

मित्रो ! तीस वर्ष पूरे होने को आए, अपने युगनिर्माण योजना का कार्य करते हुए। इन तीस वर्षों में हमने क्या किया, इसके बारे में चर्चा करने का अभी समय नहीं है। इसके बारे में जिक्र करने का अभी समय नहीं है। यह तो आने वाला समय बतलाएगा कि इस छोटे-से मिशन ने कितना काम कर लिया तथा कितनी लंबी मंजिल पूरी कर ली है। अब हमें जो मंजिल पार करनी है, उसके लिए हमें और भी साहस एवं सामर्थ्य इकट्ठी करनी है। इस तीस साल में मिशन की किशोरावस्था समाप्त हुई । अब उसकी प्रौढ़ता का समय आया है। इस समय हम एवं हमारे परिजन अब भारी उत्तरदायित्व लेने की स्थिति में हैं। बच्चे का जब हम विद्यारंभ कराते हैं, तो सामान्य पूजन भर हो जाता है। उसके बैठने का स्थान भी सामान्य ही होता है, परंतु जैसे-जैसे वह बड़ा होता जाता है, उसका सारा क्रम, ढाँचा बदलता जाता है।

अपने मिशन का भी क्रम इसी प्रकार बढ़ता जा रहा है। प्रारंभ में इसका नाम 'गायत्री परिवार' रखा गया था। वह प्रारंभ था। उस समय लोगों को यह बतलाया गया था कि गायत्रीमंत्र भारतीय धर्म का मूल है। उसे लोगों को अपनाना चाहिए, जपना चाहिए, ताकि लोगों का भविष्य उज्ज्वल हो सके। इस प्रकार की बात हमने तथा हमारे मिशन ने प्रारंभ में बतलाई थी। इस बीज को लोगों को बतलाया गया था और यह कहा गया था कि जो व्यक्ति एक माला का नित्य जप करेंगे, उन्हें हम गायत्री परिवार का सदस्य मानेंगे। बचपन में यही था।

समय ने आगे के लिए कदम बढ़ाया। अपने परिवार एवं संगठन को एक और आयाम दिया गया। अब उसके साथ युगनिर्माण योजना को भी जोड़ दिया गया है। उसका अर्थ यह था जो कि हमने लोगो को बतलाया

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

कि हर व्यक्ति को एक माला गायत्री जप के साथ में नैतिक, बौद्धिक एवं सामाजिक क्रांति हेतु भी बढ़चढ़कर कुछ काम करने के लिए आगे आना चाहिए। उन्होंने उस समय व्यक्ति-निर्माण, परिवारनिर्माण एवं समाज-निर्माण के कार्यक्रम भी चलाए।

यह युगनिर्माण योजना के साथ जुड़कर मिशन के हुए विकास का क्रम था। हमने प्राइमरी कक्षा पूरी कर ली। हाईस्कूल की कक्षा भी हमारे मिशन ने पूरी कर ली है। अब हमने कॉलेज के स्तर की पढ़ाई प्रारंभ कर दी है, अर्थात अब हमारी प्रौढ़ावस्था आ गई है। अत: अब हमें कॉलेज स्तर का होना चाहिए। उसी स्तर के क्रियाकलाप एवं योजना होनी चाहिए। वही अब बन रही हैं, बनाई जा रही हैं, परंतु इस बारे में हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि हम जिस युगपरिवर्तन की बात कर रहे हैं, जिस समाज को बदलने की प्रतिज्ञा लेकर चले हैं, हम जिस नए समाज के निर्माण की बात करते हैं, उस संदर्भ में हमें विचार करना होगा कि युगनिर्माण क्या है ?

मित्रो ! युगनिर्माण का अर्थ होता है- नए समाज का निर्माण करना। समाज क्या है ? समाज व्यक्तियों का समूह मात्र है। लोगों का समुदाय इकट्ठा होकर ही समाज बनता है। उसके प्रत्येक घटक को समुन्नत बनाना, समृद्धिशाली बनाना हमारा काम है। यही है समाजनिर्माण का उद्देश्य। फूल इकट्ठे होकर ही माला बनते हैं। सींकें इकट्ठा होकर बुहारी बनती है। धागे इकट्ठा होकर रस्सा बनते हैं। इसी तरह समाज व्यक्तियों से बनता है। समाज के लोगों को देखकर ही युग की स्थिति देखी जा सकती है। अत: समाजनिर्माण के कार्य को प्रारंभ करने से पहले हमें आत्मनिर्माण का कार्य करना पड़ेगा। यह आज नहीं, वरन आज से तीस साल पहले बतला दिया था कि हमारे क्रियाकलाप क्या हैं तथा हमारी भावी योजना क्या हैं ?

समाजनिर्माण कैसे होगा ? इस संदर्भ में उन दिनों, एक युगनिर्माण सत्संकल्प के रूप में घोषणापत्र बनाया गया था, जिसमें यह बात स्पष्ट रूप से बतला दी गई थी कि व्यक्तिनिर्माण के संबंध में चार चीजें परम आवश्यक हैं। साधना, स्वाध्याय, संयम और सेवा, यह चार बातें आत्मनिर्माण के लिए परमावश्यक है। यह चार बातें ऐसी हैं जो एक-दूसरे के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़ी हुई हैं। इन चारों को पूरा कर लेने पर आत्मनिर्माण का उद्देश्य पूरा होता है। इसमें एक भी ऐसा नहीं है, जिसे छोड़कर केवल अन्यों में पूरा कर लेने पर आत्मनिर्माण का उद्देश्य पूरा हो सके। यह चारों चीजें एक दूसरे के साथ जुड़ी हुई हैं। इन चारों को मिलाकर ही बात बनती है।

यह बात वैसी ही है जैसे जीवननिर्माण के लिए चार चीजें आवश्यक हैं। वे हैं- आहार, श्रम, संयम और सफाई। इन चारों में से अगर हम एक को भी कम करेंगे तो हमारा जीवननिर्माण संभव न हो सकेगा। हमें फसल लेने के लिए भी चार चीजों की आवश्यकता पड़ती है। वे हैं- जमीन, बीज, खाद-पानी एवं सुरक्षा। इनके अभाव में किसान फसल प्राप्त नहीं कर सकता है। व्यापार करने के लिए हमें चार चीजों की आवश्यकता पड़ती है- पूँजी, अनुभव, वस्तुओं की माँग एवं ग्राहक । इसमें से अगर एक भी चीज की कमी होगी तो कोई भी व्यापार नहीं कर सकता है। मकान बनाना हो तो ईंट, चूना, लोहा, लकड़ी की आवश्यकता पड़ती है। इनमें से एक भी चीज की कमी हो जाएगी तो इमारत नहीं बन सकती है। उसी प्रकार व्यक्तिनिर्माण के लिए चार चरणों की आवश्यकता है। ये चारों चरण जब भी एक साथ मिल सकेंगे तो व्यक्ति के उत्कर्ष का आधार बनकर खड़ा हो जाएगा। मात्र एक से ही यह कार्य नहीं हो सकता है।

मित्रो ! हमें युगनिर्माण के लिए- नवनिर्माण के लिए दो कार्य करने हैं- पहला-जो आदमी इस उत्तरदायित्व को सँभाल रहे हैं, काम कर रहे हैं, उनका स्तर बढ़ना चाहिए। दूसरा- उनका विस्तार भी होना चाहिए। हम यह चाहते हैं कि व्यक्ति स्वयं विकसित होते हुए चले जाएँ तथा दूसरों को भी विकासकार्य में सहयोग दें तथा उन्हें आगे बढ़ाने का प्रयास करें, ताकि अपना विस्तार होता हुआ चला जाए। इस विस्तार के लिए शिक्षण के साथ-साथ टोलियों का कार्य बड़ा ही उत्तम रहता है। उसके माध्यम से विस्तार प्रक्रिया में तेजी आती है। टोलियों में जो काम करते हैं, वे सीखते भी हैं तथा सिखाते भी हैं। स्काउटिंग में जो लोग होते हैं, वे सीखते भी हैं और सिखाते भी हैं। टीचर-ट्रेनिंग जो होती है, उसमें वे सीखते भी जाते हैं तथा सिखाते भी जाते हैं। बुद्ध विहार में जो लोग रहते थे, वे साधना भी करते रहते थे तथा बाहर जाकर लोगों को सिखाते भी रहते थे। तीर्थयात्रा भी ऐसी ही प्रक्रिया थी, जो अपने आप का परिष्कार भी करते थे तथा लोकशिक्षण का काम भी करते थे। स्वयं तपते थे तथा लोगों को भी प्रेरणा देकर तप का महत्त्व समझाते थे।

साथियो ! हम विचारक्रांति आंदोलन को तीव्र करना चाहते हैं ताकि लोगों के विचार करने की प्रवृत्ति बदले। इस कार्य हेतु हमें अध्यात्म के सिद्धांतों को बतलाने की आवश्यकता है, ताकि जनमानस उसे अपने जीवन में उतार सके। अत: हमें नैतिक एवं सामाजिक क्रांति के लिए कटिबद्ध होना चाहिए। जनसाधारण को यह समझाया जाना चाहिए कि मन:स्थिति को सुधारा जाना परम आवश्यक है। अगर हम केवल भौतिकस्थिति को सुधारने का प्रयास करेंगे तो उससे काम नहीं बनने वाला। अगर मनुष्य को भौतिक लाभ मिल भी जाए, संपत्ति आ भी जाए तो उसे उतना लाभ नहीं मिल सकेगा, जब तक कि उसका आध्यात्मिक विकास न हो जाए। अत: हमारे लिए यह आवश्यक हो गया है कि हमारे चिंतन और चरित्र

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

में जहाँ कहीं भी विकृतियाँ आ गई हैं, उन्हें खोज-खोजकर निकाला जाए एवं उन्हें ठीक किया जाए। इसके लिए हमें प्रयास करना चाहिए।

मूढ़मान्यताएँ, अवांछनीयताएँ, अंधविश्वास आदि न जाने कितनी चीजें हमारे बौद्धिक क्षेत्र में हावी हो गई हैं। हमें उसे निकालने का प्रयास करना चाहिए। उसके स्थान पर हमें विवेकशीलता तथा दूरदर्शिता की स्थापना करने का प्रयास करना चाहिए कि जो उचित है उसे ही ग्रहण करें। जो उचित नहीं है उसे झाड़कर बुहारी से हमें फेंक देना चाहिए। जनमानस को उसी प्रकार की हमें शिक्षा देनी हैं, ताकि अनावश्यक चीजें, जो हमारे बौद्धिक क्षेत्र में घुस पड़ी हैं, उन्हें हम हटा सकें।

दूसरी बात है- नैतिक क्रांति। धर्मतंत्र का दूसरा काम है- नैतिक स्तर को बनाए रखना। इसके लिए जनमानस को चरित्रनिष्ठा की शिक्षा देनी चाहिए। इस काम को हमें अपने से प्रारंभ करना चाहिए। व्यक्तित्व की गरिमा का संरक्षण किया जाए तथा मनुष्य की आस्थाओं को उच्चस्तरीय बनाया जाए। नैतिकता मनुष्य की आकांक्षाओं पर टिकी हुई है। आज हर आदमी की इच्छाएँ बड़प्पन को, विलासिता को, अहंता को पूरा करने में लगी हुई हैं। अत: नैतिकता का पाठ पढ़ाने के लिए हर आदमी को सिद्धांतों का जीवन में महत्त्व एवं सिद्धांतों के मूल्य को समझाया जाना चाहिए। आदमी को यह समझाया जाए कि बड़प्पन की अपेक्षा महानता का मूल्य ज्यादा है। महानता मनुष्य के व्यक्तित्व के साथ जुड़ी हुई है। यह भौतिक संपदाओं के साथ कदापि नहीं जुड़ी है। हमें हर आदमी को यह समझाना होगा कि आप अपने जीवन की नीति 'सादा जीवन एवं उच्च विचार' को बनाएँ। मनुष्य अगर अपने अंदर सादा जीवन अपना ले तो उसे छल-कपट करने की, बेईमानी करने की आवश्यकता नहीं रह जाएगी।

वास्तव में बड़प्पन एवं ठाट-बाट के कारण मनुष्य की कामनाएँ बढ़ती जाती हैं और वह अपना नैतिक स्तर खो बैठता है। अगर हर मनुष्य को 'सादा जीवन के साथ उच्च विचार' की बात समझायी जा सके तो हमारा विश्वास है कि हम वैसा बन सकते हैं तथा हमारा स्तर वैसा हो सकता है जैसा कि हम प्राचीनकाल में थे। संयम, नम्रता, सज्जनता, ईमानदारी, जिम्मेदारी, कर्त्तव्यनिष्ठा जैसे सद्गुण हमारे स्वभाव में आ जाएँ तो हमारे नैतिक स्तर में विस्तार हो सकता है। इस बात की जानकारी हमें जनमानस को देनी ही चाहिए, साथ ही इस मिशन के सभी कार्यकर्त्ता आंशिक, पूर्ण समयदानी-जीवनदानी को भी इसे अपने जीवन में ग्रहण करना चाहिए। आदर्शों एवं सिद्धांतों को वे जीवन में जिएँगे तो हमें पक्का विश्वास है कि हमारा नैतिक स्तर बढ़े और हमारी खोई हुई गरिमा वापस मिल सकेगी।

हमारे बौद्धिक स्तर का इतना विकास होना चाहिए कि हमारे अंदर अवांछनीयता एवं अनुचित मान्यताओं के लिए कोई स्थान न हो। इस प्रकार की बातें अवश्य होनी चाहिए, ताकि किसी को भी हमारे ऊपर अँगुली उठाने का मौका न मिले और यह कहने का मौका न मिले कि हम चरित्र की दृष्टि से घटिया स्तर के बने हुए हैं। अगर हमारा स्तर बढ़िया होगा तो उसका प्रभाव जनमानस पर पड़ेगा तथा लोग हमारी बातों को मानने के लिए बाध्य होंगे।

तीसरा काम जो धर्मतंत्र का है, उसे सामाजिक क्रांति कहा जाता है। इसके द्वारा मनुष्य की अंत:चेतना का विकास होता है। सामाजिक क्रांति के लिए समाज के बीच में जो सामाजिक बुराइयाँ हमें दिखलाई पड़ती हैं, उन्हें हटाने के लिए विरोध एवं सामूहिक जनांदोलन करने की आवश्यकता तो है ही, श्रेष्ठ समाज बनाने के लिए जिन रचनात्मक बातों को जीवन में धारण करने की खास जरूरत है, वह वे उच्चस्तरीय सिद्धांत हैं, जो व्यक्ति को समाजपरायण बनाते हैं। 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' की मान्यता जन-जन के अंत:करण में जमाई जानी चाहिए। हमारे अंदर यह मान्यता होनी चाहिए कि हम दूसरों के साथ वही व्यवहार करेंगे जिनकी हमें दूसरों से अपेक्षा रहती है। सामाजिक क्रांति के लिए यह परम आवश्यक है। हर आदमी के मन में यह गहराई से प्रवेश कर जाना चाहिए। हमें हर आदमी के भीतर 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना जाग्रत करनी होगी। उनकी मान्यता यह होनी चाहिए कि हमारे कुटुंब में मात्र दो-पाँच आदमी ही नही हैं, वरन अनेक लोग हैं। सारी वसुंधरा के लोग हमारे हैं। जिस प्रकार हम अपने छोटे-से परिवार का ध्यान रखते हैं, उसी प्रकार हमें पूरे समाज के लोगों का ध्यान रखना चाहिए। हमें इस तरह का ध्यान रखना तथा प्रयत्न करना आवश्यक है, ताकि लोग सुखी-संपन्न रह सकें।

इस सामाजिक क्रांति के लिए आध्यात्मिक सिद्धांतों का प्रतिपादन करना आवश्यक है, जो हमारे ऋषियों ने बनाया था। इसे हमें व्यक्तिवादपरक न होकर समाजपरक बनाने की चेष्टा करनी चाहिए। 'आत्मवत सर्वभूतेषु' की मान्यता आ जाना आवश्यक है, तभी हम मिल-बाँटकर खा सकते हैं और सुखी एवं संपन्न रह सकते हैं। हम समाज में सुख बाँटने का प्रयास करें, हम उपार्जन तो करें, यह अच्छी बात है, परंतु सही उपयोग करना भी सीखें, तभी समाज में सुख-शांति आ सकती है।

समता हमारे जीवन का अंग होनी चाहिए। नर-नारी में भिन्नता भी नहीं होनी चाहिए। श्रेष्ठ समाज के लिए समता का होना परम आवश्यक है। जाति, लिंग की समानता के साथ ही आर्थिक समता भी होनी चाहिए। हममें से प्रत्येक नागरिक को श्रेष्ठ बनाने का प्रयास करना चाहिए। हममें से प्रत्येक नागरिक को सहकारिता के सिद्धांत को जीवन में उतारने का प्रयास

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

करना चाहिए। सामाजिक जीवन में हर काम की व्यवस्था बनानी चाहिए। समाज में जहाँ कहीं भी अनीति, अन्याय, अत्याचार दिखाई पड़े, उससे लड़ने के लिए हमें एवं आपको जटायु जैसा साहस दिखाना चाहिए।

आप जानते हैं कि हमारी भारतभूमि में भगवान के जितने भी अवतार हुए हैं, उन्होंने धर्म की स्थापना एवं अधर्म के विनाश के लिए प्रयास किया है। हमारे भीतर जब कभी भी भगवान की प्रेरणा आएगी तो हमें दोनों ही क्रियाकलाप समान रूप से अपनाने पड़ेंगे। अपने आचरण को सुधारना तथा दूसरों के आचरण को ठीक करना परम आवश्यक है। आसपास के वातावरण में जहाँ कहीं भी आपको लगता हो कि अनैतिकता, अन्याय का बोलबाला है तो आपको उसका डटकर विरोध करना चाहिए। इतना ही नहीं, संघर्ष के लिए भी तैयार रहना चाहिए। जहाँ कहीं भी अनाचार दिखलाई पड़ता हो, तो उससे लोहा लेने के लिए अपनी परिस्थिति के अनुसार असहयोग, संघर्ष जो भी संभव हो, अवश्य करना चाहिए। इसके लिए आप अपने अंदर साहस इकट्ठा करें।

मित्रो! समाज की सुव्यवस्था इसी आधार पर संभव है। डरपोक आदमी, कायर आदमी, पाप से भयभीत होने वाले आदमी, गुंडागर्दी के भय से मुँह छिपाने वाले आदमी कभी भी इन बुराइयों को दूर नहीं कर पाएँगे और इस तरह समाज में जहाँ सुव्यवस्था की आवश्यकता है, जहाँ अनीति के निवारण की इस प्रकार की आवश्यकता है, वह पूरी न हो पाएगी।

सामाजिक क्रांति के लिए साहस एवं हिम्मत को जगाने की आवश्यकता है। भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए हमें इन प्रयासों को करना ही होगा। आज संपूर्ण मानवजाति जहाँ सामूहिक आत्महत्या के लिए अग्रसर हो रही है, वहीं हमें उनके उत्थान के लिए प्रयास करने होंगे। इस कार्य के लिए हमें धर्मतंत्र को पुनः जाग्रत करना होगा। बड़ा काम हमेशा बड़े साधनों से होता है। यह बड़े ही आदमी इकट्ठा कर सकते हैं। यही है हमारा लक्ष्य। हम चाहते हैं कि हर आदमी में यह जागरूकता पैदा हो। हमारा निवेदन है कि हर व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत सुख-सुविधा को त्यागकर कुछ आगे बढ़-चढ़कर सामाजिक जीवन के लिए कदम बढ़ावें।

मित्रो, मिशन के पुनर्गठन से हमारा यही मतलब है कि हम नया व्यक्ति बनाएँ नया समाज बनाएँ। नया युग लाएँ। इसके लिए हमारा एवं आपका कर्त्तव्य है कि हम व्यक्ति-निर्माण के कार्य में जुट जाएँ, ताकि श्रेष्ठ व्यक्तित्व आगे आकर मोर्चे का काम सँभाल सकें। इसके बिना समाज के नवनिर्माण का कार्य होना संभव नहीं है। हमें इसके लिए भरपूर प्रयास करना है, तभी हमारे मिशन का कार्य आगे बढ़ सकता है।

॥ ॐ शांति ॥

क्रमशः

प्रतिभाओं को आमंत्रण

परमपूज्य गुरुदेव रचित वाङ्मय के ७० खंडों के प्रकाशन के बाद शेष ३८ खंडों का संपादन-प्रकाशन होना है साथ ही सभी १०८ ग्रंथों का गुजराती तथा अंग्रेजी संस्करण प्रकाशित किया जाना है। इस मिशन के साहित्य संपादन में जिन परिजनों की अभिरुचि हो तथा योग्यता प्राचार्य, प्रोफेसर, व्याख्याता स्तर की हो एवं समर्पण भाव से निम्न क्षेत्रों में से किसी में लगभग एक-दो वर्ष तक का समयदान दे सकते हों, कृपया संपर्क करें।

(क) अंग्रेजी अनुवाद

अन्य विवरण के साथ हिंदी से अंग्रेजी अनुवाद का अनुभव, प्रूफ रीडिंग अनुभव एवं अगस्त मास की अखण्ड ज्योति पत्रिका पृष्ठ क्रमांक ५५, ५६, ५७ का अनुवाद भी संलग्न करें।

(ख) गुजराती अनुवाद

अन्य विवरण के साथ हिंदी से गुजराती अनुवाद का अनुभव, प्रूफ रीडिंग अनुभव एवं अगस्त मास की अखण्ड ज्योति पत्रिका पृष्ठ क्रमांक ५५, ५६, ५७ का अनुवाद भी संलग्न करें।

(ग) हिंदी साहित्य

जिन परिजनों की हिंदी संपादन, प्रूफरीडिंग आदि में अभिरुचि हो, उसके अनुभव का उल्लेख करते हुए अन्य विवरण के साथ संलग्न करें।

वांछित अन्य विवरण - नाम, पता, फोन नं., आयु, पारिवारिक उत्तरदायित्व, योग्यता, स्वास्थ्य, पद/व्यवसाय, कार्य-अनुभव, समयदान की अवधि, गायत्री परिवार से जुड़ने का वर्ष।

संपर्क सूत्र

अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी-

कैसे करें कायाकल्प

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो, भाइयो! मनुष्य को दो दुख हैं। एक दुख का नाम 'नरक' है और दूसरे का नाम 'बंधन'। इन दो चीजों से आदमी निकल जाए, तो सारे संसार में सुख-ही-सुख है। बंधन क्या है? बंधन वह है जिसमें कि हम और आप जकड़ जाते हैं। कल्पना कीजिए उस पक्षी की, जो पिंजड़े में बंद किया हुआ है। जो कुछ आता या मिलता है, खा लेता है। दाना तो खा लेता है, लेकिन बंधन में जकड़ा हुआ होने की वजह से कुछ कर नहीं पाता। बंधन की वजह से न कहीं खुली हवा ले पाता है, न कहीं आकाश को देख पाता है, न कहीं बादलों को देख पाता है। कुछ नहीं देख पाता, केवल छोटे-से पिंजड़े में दिन गुजारता रहता है।

बंधन से बँधा हुआ व्यक्ति कैसा होता है? जेलखाने के कैदी के बारे में आप जानते हैं न, वह चारों ओर से जकड़ा हुआ होता है। हाथ जिसके बँधे हुए हैं, पैर जिसके बँधे हुए हैं, गले में जिसके रस्सा पड़ा हुआ है। आजकल तो इतना नहीं होता है, लेकिन पुराने जमाने में जेलखाने में जो आदमी रखे जाते थे, उनके हाथों में हथकड़ियाँ हर समय पड़ी रहती थीं। वे कुछ कर नहीं सकते थे। पैरों में बेड़ियाँ पड़ी रहती थीं। गले में रस्सा पड़ा रहता था। बेचारा कुछ कर नहीं सकता था। जैसे घोड़े को अगाड़ी व पिछाड़ी लगाम लगा देते हैं, इसी तरह से कैदी को रहना पड़ता था। जो लोग उस जमाने में रहते थे, आप उनके दुख की कल्पना कर सकते हैं कि तब मन को कितना मसोसना पड़ता रहा होगा।

मित्रो, हमारी योग्यता, प्रतिभा, भगवान् का दिया हुआ संसार और हमारी क्षमता—इन सबका हम कुछ भी उपयोग नहीं कर पाते हैं। सब कुछ गड़बड़ा जाता है। तब क्या करना चाहिए? हमारे शास्त्रों में आदमी के लिए सबसे बड़ा पुरुषार्थ एक ही बताया गया है। वह क्या बताया गया है? वह है- 'बंधनों से मुक्ति'। बंधनों मे अगर मुक्ति मिल जाए, तो आदमी कितना सुखी हो सकता है! मुक्ति का अर्थ लोग कुछ और तरह से समझते हैं। सायुज्य मुक्ति, सारूप्य मुक्ति, सान्निध्य मुक्ति और सालोक्य मुक्ति की कल्पना इस तरीके से लोगों ने अपने में बिठा रखी है कि भगवान् नाम का कोई व्यक्ति है। उसका एक बड़ा-सा कोई बैकुंठ नाम का गाँव है। इस गाँव में फालतू फंड के आदमी बैठे रहते हैं। भगवान् के समीप बस बैठे रहते हैं, न कुछ करते हैं और न करने देते हैं। बस उनके पास में सान्निध्य मुक्ति, सालोक्य मुक्ति के लोभ में रहते हैं। खाने-पीने की सब चीजें भरी पड़ी हैं। बस उसी में लगे रहते हैं। ये सालोक्य मुक्ति है, सारूप्य मुक्ति है। इसका रूप कैसा है? इसका रूप भगवान् जैसा है। भगवान् का रूप बहुत सुंदर है। हमारा भी रूप बहुत सुंदर हो गया है। खाने-पीने की सारी व्यवस्था सालोक्य में है। हम भी उसी में शामिल हो गए। सामीप्य में चौबीस घंटे बैठे रहे। क्या सुगंध आ रही है, पंखे झल रहे हैं, भगवान् जी के समीप। इस तरह की कल्पना मुक्ति के संबंध में लोगों ने कर रखी है। वास्तव में यह कल्पना बच्चों जैसी है। इससे क्या लाभ हो सकता है?

मुक्ति का माहात्म्य हर एक आध्यात्मिक शास्त्र ने सिखाया है और यह बताया है, सुनाया है कि जो आदमी मुक्ति के अधिकारी हो जाते हैं, वे जीवन में सफलता प्राप्त कर लेते हैं। जीवन-मुक्त और भगवान् की प्राप्ति समान अर्थों में ली गई है। जीवनमुक्त किसे कहते हैं? जीवनमुक्त उसे कहते हैं जिसका जीवन बंधनों से छूट गया, जो पिंजरे में से निकल गया, जो जेलखाने से छूट गया। जो बच्चा माँ के पेट में छोटे-से दायरे में बैठा रहता है, वह न हिल सकता है, न डुल सकता है, न बोल सकता है, न बात कर सकता है, न साँस ले सकता है। उसमें से जब डिलिवरी हो जाती है, जन्म हो जाता है, तब वह मुक्त हो जाता है। आप सांसारिक मुक्ति का अर्थ समझ गए होंगे न? अच्छा, अब उसकी बात सोचिए कि मोह से मुक्ति क्या है? बंधनों से मुक्ति क्या है?

बंधनों से मुक्ति यह है कि जिस तरीके से हमारी विचारणाएँ, भावनाएँ हैं और हमारी क्रियाशीलताएँ हैं, जिन बंधनों से जकड़ गई हैं, उन बंधनों को हम तोड़ डालें, छोड़ दें, तो हम जीवनमुक्त हो जाते हैं। असल में यही जीवनमुक्ति है। लोगों का जो ये ख्याल है कि स्वर्ग में जा करके मुक्ति मिलती है, व्यक्ति स्वर्ग में कहीं बैठा रहता है या भगवान् जी के मालगोदाम में कहीं जमा हो जाता है। बेटे! न कहीं भगवान् जी का मालगोदाम है और न कहीं आदमी बैठे रहते हैं। मुक्ति केवल जीवन में ही होती है! जीवनमुक्त आदमी होते हैं, जिनको ऋषि कहते हैं, तत्त्वदर्शी कहते हैं, जिनको मनीषी कहते हैं। मुक्ति केवल मानवजीवन में ही संभव है।

तो क्या करना चाहिए? यही तो मैं आपसे निवेदन कर रहा हूँ कि क्या करना चाहिए। आपको तीन बंधनों से छुटकारा पा लेना चाहिए। आप यहाँ शांतिकुंज में आए हुए हैं, कल्पसाधना कर रहे हैं, उपासना कर रहे हैं, तो आपको क्या करना चाहिए? आपको तीन बंधनों से मुक्ति प्राप्त करनी चाहिए। आप कोशिश

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

कीजिए कि तीनों बंधन तोड़ दें। अगर आप चाहें तो इन तीन बंधनों को तोड़ सकते हैं। मकड़ी जाला स्वयं बनाती है और उसमें स्वयं फँस जाती है और फँसने के बाद में जब उसका मन आता है कि जाला हमारे लिए नुकसानदायक है और जाले में हमको नहीं रहना चाहिए, तो वह क्या करती है कि सारे-के-सारे जाले को अपने मुँह में समेट लेती है और निगल जाती है तथा भाग खड़ी होती है।

मित्रो! यह हमारा बंधन भी, जो चारों ओर से हमको जकड़े हुए है, असल में किसी और बाहरी शक्ति की देन नहीं है। किसी बाहरी शक्ति में इतनी गुंजाइश और दम नहीं है कि वह आदमी को जकड़ सके। भगवान् के बेटे को भला कौन जकड़ सकता है। मनुष्य को बंधन में कोई नहीं रख सकता है। बंधनों में आपको कौन जकड़ सकता है? बंधनों में जकड़ने के लिए उसका अपना ही अज्ञान, अपनी ही बेवकूफी, अपने ही कुसंस्कार हैं, जिसने आपको जकड़ लिया है। वे कौन-कौन से बंधन हैं? उनमें से एक का नाम है- 'लोभ', एक का नाम है- 'मोह'और एक का नाम है- 'अहंकार'। ये तीन हमारे शत्रु हैं। गीता के तीसरे अध्याय में भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा है-

काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः।
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम् ।।

ये तीनों ही सबसे बड़े बंधन और बैरी हैं। अपने इन तीनों बैरियों से- रावण, कुंभकरण और मेघनाद से अगर आप निपट लें तो मजा आ जाएगा। अगर आप कंस, जरासंध आदि से निपट लें तो मजा आ जाएगा। ये तीन आपके दुश्मन हैं। उन्होंने आपकी जिंदगी को कैसा भयानक बना दिया है? कैसा पिछड़ा बना दिया है? कितना अस्त-व्यस्त बना दिया है? अगर ये आपके जीवन को अस्तव्यस्त न बनाएँ तो आप अपने आप को देख सकते हैं कि आपके जीवन में कितना कायाकल्प हो सकता है और आप वर्तमान परिस्थितियों की तुलना में थोड़े दिनों में कहाँ-से-कहाँ पहुँच सकते हैं। आप इन दुश्मनों से आगाह हो जाइए और इन्हें तोड़ने के लिए कोशिश कीजिए।

लोभ क्या है और इसे किस तरीके से तोड़ा जाए? लोभ कहते हैं अनावश्यक संग्रह को। लोभ यही है कि आदमी को गुजारे के लिए मुट्ठी भर चीजों की जरूरत है। मुट्ठी भर चीज चाहिए उसे। मुट्ठी भर से गुजारा हो जाता है। आदमी का पेट कितना छोटा होता है? भैंसे का पेट कितना बड़ा है? गधे का पेट कितना बड़ा है? घोड़े का पेट कितना बड़ा है? परंतु आदमी का पेट कितना छोटा है। जरा-सा है। उसके लिए थोड़ा-सा चार मुट्ठी अनाज काफी होना चाहिए। लेकिन आदमी के लोभ को देखा है न आपने, वह कितना लालची, कितना संग्रही, कितना विलासी होता है। कितना जमा कर ले, चौबीसों घंटे जमा करने के लिए मरता, खपता और छटपटाता रहता है।

संसार में बहुत से नशे हैं, जिनकी लोगों को हविश हो जाती है। शराबियों को नशे की हवस हो जाती है और वह बार-बार शराब माँगता है। इसी तरीके से लालच एक शराब है। आदमी की जरूरत क्या है और कितनी है? कुछ भी नहीं। व्यर्थ में अपने अहंकार को बढ़ाने के लिए, अपनी औलाद को और अपने घरवालों को तबाह और बरबाद करने के लिए, पीछे कलह उत्पन्न करने के लिए और दुर्व्यसन पैदा करने के लिए केवल धनसंग्रह करता रहता है। जिंदगी का सारे-का-सारा हिस्सा इसी में खर्च हो जाता है। आपको इस लालच को छोड़ना पड़ेगा। आपको इस लोभ को छोड़ना पड़ेगा।

इसके लिए आपको क्या करना पड़ेगा? आप क्या करेंगे? आपको सादा जीवन और उच्च विचार के सिद्धांतों को स्वीकार करना पड़ेगा। ऊँचे विचार सिर्फ उस आदमी के पास आ सकते हैं, जो सादा जीवन जिए। सादा जीवन का मतलब ठाटबाट से नहीं है, वरन् इसका मतलब लोभ और लालच से है। आप लोभ और लालच अपने मन से निकाल दें और निर्वाह की बात सोचें, तो आप थोड़े-से घंटे मेहनत करने के बाद में अपना पेट बड़े मजे में भर सकते हैं। रही कुटुंबियों की बात, तो कुटुंबियों की बात भी वैसी ही है, जिसको 'मोह' कहते हैं। लोभ का बढ़ा हुआ दायरा जो कुटुंब तक फैल जाता है, उसका नाम 'मोह' है और जो अपने आप तक सीमित रहता है, धन तक सीमित रहता है, उसका नाम 'लोभ' है और जो कुटुंबियों तक फैल जाता है, उसका नाम मोह है।

कुटुंबियों के प्रति आपकी जिम्मेदारियाँ तो हैं, ये तो मैं नहीं कहता कि आपकी जिम्मेदारी नहीं है। जिम्मेदारी तो आपकी सबके प्रति है। आपकी जिम्मेदारी आपके शरीर के प्रति भी है, मस्तिष्क के प्रति भी है। जीवन के प्रति भी आपकी जिम्मेदारी है। भगवान् के प्रति भी आपकी जिम्मेदारी है। आपकी बहुत जिम्मेदारियाँ हैं। इन सभी जिम्मेदारियों को आप सहयोग से निभाइए। उसमें आपका कुटुंब भी शामिल है। कुटुंबियों के शामिल होने का मतलब यह नहीं है कि कौन कैसा है? उन सबका लालच आप पूरा करते हैं क्या? कुटुंबियों का लालच आप मत पूरा कीजिए। कुटुंबियों की अनावश्यक आवश्यकताओं को और अनावश्यक माँगों को आप मानने से इनकार कर दीजिए। तो आप क्या करेंगे? अगर वे माँगते हैं तो भी नहीं और नहीं माँगते हैं तो भी नहीं। जिस चीज की जरूरत है उसे दीजिए।

आपके कुटुंबियों को किसकी जरूरत है? आपके कुटुंबियों को तीन चीजों की जरूरत है। पहली जरूरत है- शिक्षा। आपके कुटुंबियों को शिक्षित होना चाहिए। स्कूली शिक्षा की बात तो मैं नहीं कहता, पर मैं यह कहता हूँ कि स्कूली शिक्षा अगर आपके पास में न भी हो, तो भी जिसको शालीनता कहते हैं, सभ्यता कहते हैं, सज्जनता कहते हैं, वह तो होनी ही चाहिए। शिक्षा का मतलब सभ्यता, शालीनता और सज्जनता

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

से है। आप अपने घरवालों को बनाइए। उनका व्यवहार ऐसा बनाइए, उनके सोचने का तरीका ऐसा बनाइए, जानकार बनाइए, शिक्षित बनाइए। अगर ये बना देते हैं तब हम समझते हैं कि आपने अपने घरवालों को आजीविका से भी ज्यादा, जीवन बनाने से भी ज्यादा, रेशम के कपड़े बनाने से भी ज्यादा, सोने-चाँदी के जवाहरात बनाने से भी ज्यादा आपने उनकी मदद की। इसलिए आपको मोह की अपेक्षा शिक्षा में खर्च करना चाहिए।

मित्रो! शिक्षा के साथ-साथ में क्या करें? अपने हर कुटुंबी को स्वावलंबी बनाइए। किसी को परावलंबी मत बनने दीजिए। आप अपनी पत्नी को स्वावलंबी बनाइए, गुड़िया मत बनाइए। उसको आप यह मत कहिए कि आपको पानी नहीं भरना है, खेती नहीं करनी है। आप खाना मत पकाइए। आपके लिए खाना नौकरानी पकाएगी। कपड़े आपके नौकरानी धोएगी। बस, आप पंखे के नीचे बैठे रहा करिए। ऐसा मत कीजिए। आप उसे स्वावलंबी होने दीजिए।

भगवान् न करे कभी ऐसा खराब दिन आ जाए जब आप न हों। भगवान् न करे कि ऐसा दिन आ जाए कि आपकी संपत्ति चली जाए। फिर आप क्या करेंगे? आपने तो अपनी स्त्री को घूँघट में रख करके अपाहिज बना दिया। उसे मेहनत नहीं करने दी, परिश्रम नहीं करने दिया। उपार्जन के लिए योग्य बनाया नहीं, क्षमता बढ़ाई नहीं। आज हर आदमी के अंदर उपार्जन की क्षमता उत्पन्न होनी चाहिए। आप अपने कुटुंबियों में से हर एक में उपार्जन की क्षमता उत्पन्न होने दीजिए, बढ़ने दीजिए। बच्चे जरा बड़े हो गए हैं, तो उनको हाथ बँटाने दीजिए, ताकि जो वे घर का अनाज खाते हैं, उस संस्था का जरा सहयोग तो करें। उन्हें कुट्टी कूटना सिखाइए, पानी भरना सिखाइए, शाक-वाटिका लगाना सिखाइए, कपड़े धोना सिखाइए, ताकि वे अपने घर की आर्थिक स्थिति में कुछ मदद कर सकें। आप उन्हें स्वावलंबी बनाइए, परिश्रमशील बनाइए।

साथियो! अगर आपने अपने घर-गृहस्थी वालों को स्वावलंबी नहीं बनाया है, तो यह आपका मोह है। अगर आप अपने घरवालों की अनावश्यक इच्छाओं को पूरा करने के लिए जेवर खरीदने से लेकर सिनेमा दिखाने तक अर्थात् वे चीजें जो उनके जीवन को विकसित करने के लिए आवश्यक नहीं हैं, केवल उनके मनोरंजन के लिए, उनकी हविश और जो बुरी आदतें हैं, उनको पूरा करने के लिए जो वे माँगते हैं, आप उसको पूरा कर देते हैं, तो वह आपका 'मोह' हो जाता है। इसके स्थान पर आप उन्हें संस्कारवान् बनाइए, सभ्य बनाइए, शिक्षित बनाइए, स्वावलंबी बनाइए। अगर आप ये तीनों काम करने के लिए जितनी मेहनत करते हैं, हम समझते हैं कि आप अपने कुटुंबियों के लिए कर्त्तव्यपालन कर रहे हैं।

अगर आप कुटुंबियों की हविश, कुटुंबियों की इच्छा और कुटुंबियों का दबाव इसलिए पूरा करते हैं कि कुटुंबी आपसे प्रसन्न रहेंगे और प्रसन्न रह करके बच्चे आपकी आज्ञा मानेंगे और औरत आपकी कामवासना की पूर्ति के लिए मदद करेगी, इसलिए आपको उन्हें प्रसन्न करना चाहिए, तो आप गलती करते हैं। आप किसी को मत प्रसन्न कीजिए। प्रसन्न करना है, तो अपनी आत्मा को प्रसन्न कीजिए, अपने परमात्मा को प्रसन्न कीजिए। इसके अलावा इस संसार में आप जितना ही लोगों को प्रसन्न करने की कोशिश करेंगे, उतना ही आप हैरान होंगे और उतने ही आप खाली हाथ रह जाएँगे। इसलिए लोभ और मोह के दो बंधनों से लालच मत कीजिए। समय पर अगर आप अपने दिमाग को खाली कर दें कि हमको गुजारे भर के लिए कमाना है, तो आपका दिमाग, आपकी स्कीम, आपकी योजनाएँ, आपका परिश्रम और पुरुषार्थ सब बच जाएगा। फिर उस बची हुई शक्ति को-क्षमता को आप उन कामों में लगा सकेंगे, जिसस आपकी आत्मा की उन्नति होती है और समाज के प्रति अपना कर्त्तव्यपालन होता है और भगवान् के आदेशों का निर्वाह होता है। उससे कम में काम बनेगा नहीं।

आपका लालच चाहे पूरा होता हो या न होता हो, यह तो मैं नहीं कहता कि आप संपन्न हो गए हैं कि नहीं हो गए हैं, पर आप लालची मुझे जरूर मालूम पड़ते हैं। ऐसी स्थिति में आप संपन्न कैसे हो जाएँगे? अक्ल तो है नहीं, योग्यता तो है नहीं, विद्या तो है नहीं, पुरुषार्थ है नहीं, परिश्रम है नहीं, चांस है नहीं, पूँजी है नहीं तो कैसे धनवान् हो जाएँगे? आप तो गरीब-के-गरीब रहने वाले थे और गरीब ही रहने वाले हैं। क्योंकि आदमी को संपन्न बनाने के लिए तो अनेक साधन चाहिए। आपके पास तो कुछ भी साधन नहीं हैं, फिर संपन्न कैसे बनेंगे? परंतु अगर आपने लालच छोड़ दिया होता तो आप इतने ही साधनों में कम-से-कम समय में गुजारा कर सकते थे। लालच अभी जितना आपका समय खा जाता है, शक्ति खा जाता है, बुद्धि खा जाता है, उस सबको आपने बचा लिया होता। बचाने के बाद में वह काम कर लिया होता जो असंख्य लोगों ने किया है, पारिवारिक उत्तरदायित्वों का निर्वाह करते हुए भी।

कबीर की भी शादी हो गई थी। जवाहरलाल नेहरू की भी शादी हो गई थी। गाँधी जी की भी शादी हो गई थी। शंकर भगवान् की भी शादी हो गई थी। रामचंद्र की भी शादी हो गई थी। हमारी भी शादी हो गई है। शादी होना और पेट भरना इतना बड़ा काम नहीं है कि जिसके लिए यह कहा जा सके कि हमारी सारी शक्ति और सारी बुद्धि, सारा परिश्रम और सारा पुरुषार्थ इसी में खर्च हो जाता है। वस्तुतः ये लोभ और मोह के-व्यामोह के दो बंधन हैं, जो न आपकी अक्ल को चलने देते हैं, न परिश्रम को चलने देते हैं। आपका सारा परिश्रम लोभ के लिए विसर्जित हो गया, आपकी अक्ल और आपकी भावना मोह के लिए विसर्जित हो गई। लोभ के लिए आपका शारीरिक श्रम विसर्जित हो गया, मोह के लिए भावनाएँ एवं मानसिक क्षमता विसर्जित हो गई, तो फिर क्या रह गया

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

आपके पास ? तोड़िए न इन बंधनों को। आप यहाँ रह करके इस कल्पसाधना में अपने आपको बदल दीजिए और लोभ एवं मोह के बंधनों से अपने आपको पीछे हटाइए।

मित्रो! मैं यह थोड़े ही कहता हूँ कि आपको पेट भरने के लिए गुजारा नहीं करना चाहिए। गुजारा करना एक बात है और लालच के लिए मरते-खपते रहना दूसरी बात है। आपको अपना कुटुंब सीमित रखना चाहिए, फिर आप क्यों बढ़ाते चले जाते हैं ? किसने कहा था आपको रोज बच्चे पैदा करने के लिए ? आप बिना बच्चों के जिंदा नहीं रह सकते क्या ? कम बच्चों से आपका गुजारा नहीं हो सकता ? आपके जो कम बच्चे हैं, उनको आप क्या पर्याप्त नहीं मान सकते ? हमारा कहना मानिए अब बच्चे मत बढ़ाइए। जो बच्चे हैं, अगर उनकी क्वालिटी बढ़ाना चाहते हैं, तो आपको संख्या घटानी चाहिए। इससे आगे तो किसी भी हालत में आगे मत बढ़ाइए ; तब आपका मोह कम हो जाएगा। फिर आप एक माली के तरीके से अपने गृहस्थ का पालन कर रहे होंगे। तब आप एक सदाचारी और संयमी के तरीके से अपना गुजारा कर रहे होंगे। इन दोनों तरीकों से आप गुजारा कर लेंगे तो मजा आ जाएगा।

इनके अतिरिक्त आपको तीसरा एक और काम करना चाहिए। अहंकार को हटाना चाहिए। आप अपने अहंकार को भी हटाइए। आदमी अपना आत्मविज्ञापन करने के लिए, बड़ा आदमी बनने के लिए न जाने कितना ढंग और ढोंग बनाता रहता है। लिबास, फैशन, ठाटबाट ये सब अहंकार के लिए करता है। अहंकार के लिए—सब जगह से मेरी पदवी बढ़नी चाहिए, मेरे पास बढिया जेवर होना चाहिए, मुझको नेता बनना चाहिए, मुझे मंच मिलना चाहिए। अपने अहंकार की पूर्ति और बड़प्पन के लिए वह जाने क्या-क्या स्वाँग रचाता रहता है। अपने अतिरिक्त किसी और की उन्नति उसे सुहाती नहीं। 'मैं' और 'मेरा' बस यही उसके दो लक्ष्य बन जाते हैं। मित्रो ! यह अहंकार बड़ा हानिकारक है। यह आपको ले डूबेगा।

गुरु जी ! आप क्या कह रहे हैं ? बेटे ! मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि आपकी महत्त्वाकांक्षाएँ नहीं बढ़नी चाहिए। आपकी महत्त्वाकांक्षाएँ जरूर बढ़नी चाहिए। परंतु अहंकार के नाम पर, लोगों के सामने अपनी चकाचौंध पैदा करने के नाम पर, लोगों के सामने बड़ा आदमी बनने के नाम पर अगर आप अपने अहंकार का पोषण कर रहे होंगे, तो गलती कर रहे हैं। इस अहंकार की दिशा मोड़ दीजिए। फिर किसमें लगाएँ ? आप इस अहंकार को महानता की दिशा में लगाएँ कि हम महान् बनेंगे। आप महान् बनिए । यह विचार कीजिए कि दूसरों की तुलना में हमारे गुण, कर्म, स्वभाव अच्छे बनेंगे। आप ये विचार कीजिए न। क्या विचार करें ? आप ये विचार कीजिए कि हमको महान् बनना है। दूसरों के सामने आपको अपनी निशानियाँ छोड़ जानी हैं, ताकि वे आपके बारे में सोचते रहें, विचार करते रहें कि देखो यह आदमी कितना शानदार था, कितना मनस्वी था, कितना धैर्यवान् था, कितना साहसी था। आप इसको बड़प्पन पर न्योछावर कर सकते हैं।

संसार में जितने भी महान् आदमी हुए हैं, उन्होंने अपनी जिंदगी श्रेष्ठ कामों में लगा दी। वे लोगों के सामने उदाहरण छोड़कर चले गए। यही उनकी विरासत है। आप तो विरासत में क्या छोड़कर जाएँगे ? बेटे के लिए मकान बनाकर जाएँगे। बेटे के लिए मकान जरूरी नहीं है। फिर क्या जरूरी है ? आप बेटे के लिए यह विरासत छोड़कर जाइए, ताकि लोग यह कह सकें कि यह किसका बच्चा है। उससे आपका सम्मान बढ़ेगा। न केवल अपने बच्चों के लिए, वरन् सारे समाज के लिए विरासत छोड़कर जाइए। आप यह विरासत छोड़कर जाइए कि जिससे लोग यह कह सकें कि हमारे पूर्व पुरुष ऐसे थे, हमारे गाँव का निवासी ऐसा था। अमुक सज्जन ऐसा था। लोक-सम्मान अर्जित कीजिए न। आत्मसम्मान अर्जित कीजिए न। भगवान् का अनुग्रह अर्जित कीजिए न। आपको इसमें क्या दिक्कत पड़ती है ? इसमें तो कोई दिक्कत नहीं पड़नी चाहिए।

ये ही तीन बंधन हैं, जिन्होंने आपकी तीन चीजों को खत्म कर दिया है। पहला—आत्मसंतोष, जो आप पा सकते थे, उससे आप वंचित रह गए और उसे अब आप पा नहीं सकेंगे। क्यों ? क्योंकि लोभ तो आपको कहाँ पाने देगा ? लोभ तो आपको उचित और अनुचित काम करने के लिए लगाए रहेगा। लोभ आपको मेहनत करने के लिए लगाए रहेगा, कर्ज लेने के लिए लगाए रहेगा। लोभ आपको रिश्वत लेने के लिए मजबूर करता रहेगा। लोभ आपको बेईमानी करने के लिए मजबूर करता रहेगा। लोभ आपको आक्रामक और अनाचारी बनने के लिए मजबूर करता रहेगा। फिर आप किस तरीके से आत्मसंतोष पाएँगे ? आत्मा आपकी निरंतर जलती ही रहेगी, क्योंकि आपका लालच इतना बड़ा दुश्मन है जिसको आप छोड़ नहीं पाएँगे, तो उसके बदले में आपको आत्मसंतोष गँवाना-ही-गँवाना है।

एक दूसरी और चीज है—लोक-सम्मान। लोकसम्मान आप नहीं पा सकेंगे ? क्यों ? क्योंकि आपकी सारी शक्ति, सारा प्यार इन थोड़े-से आदमियों में केंद्रित हो गया है। आप अपनी औरत को ही सब कुछ समझ बैठे हैं। आप अपने बच्चों को ही सब कुछ समझ बैठे हैं। कहीं कोई समाज में भी रहता है क्या ? कहीं कोई संस्कृति भी है क्या ? कहीं कोई दीन-दुखियारे भी रहते हैं क्या ? समाज के प्रति भी कुछ कर्त्तव्य और फर्ज है क्या ? नहीं साहब ! जो हमने कमाया था, चार बेटों में बराबर बाँट दिया। और पड़ोसियों को ? और मोहल्ले वालों को ? और लोगों को ? और उन लोगों को, जिनके अहसान आपके ऊपर लदे हुए हैं। उनके लिए-जिन अध्यापक ने आपको पढ़ाया था और जो बेचारा आजकल भिखारी की तरह गुजारा कर रहा है। उसके प्रति भी कुछ फर्ज है आपका कि नहीं है ? नहीं,

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

साहब मैंने तो चार बेटों में बराबर बाँट दिया। ऐसा मत कीजिए। चार बेटों में बराबर मत बाँटिए। बच्चों को स्वावलंबी बनने दीजिए और जो कुछ भी आपकी संपत्ति है, उससे समाज को लाभ उठाने दीजिए। संस्कृति को लाभ उठाने दीजिए।

भाइयो! बहनो! अपने अहंकार का परिपोषण आप उस मायने में कीजिए कि हमको महापुरुष बनना है और हम महामानव बनते हैं। अपनी चाल-ढाल और चाल-चलन ऐसा शानदार बनाते हैं कि जिससे भगवान् का अनुग्रह भी हमको प्राप्त हो सके। अगर आप महानता की दिशा में नहीं जाएँगे, बड़प्पन की दिशा में जाएँगे, तो आपको लोभ, मोह और अहंकार इन तीन को पकड़ना पड़ेगा। इनके सहारे आपको नरक में गिरना पड़ेगा और बंधन में गिरना पड़ेगा। कदाचित् अगर आप एक कदम आगे बढ़ा दें और महानता की ओर चल पड़ें तब? तब आपको दूसरा काम करना पड़ेगा। तब फिर आपको औसत भारतीय की तरीके से सीमित में निर्वाह करना पड़ेगा। आपके सारे भाई जिस तरह का गुजारा करते हैं, आप क्यों नहीं कर सकते? आप सारे बच्चों को अपना क्यों नहीं मान सकते। कितने बच्चे हैं, जो विद्या के अभाव में बैठे रहते हैं। आप अपने बच्चों को कीमती कपड़ा पहनाएँ और अमुक चीज छोड़कर मरें और पड़ोसियों के बच्चों के लिए आप किताब तक खरीद कर नहीं दे सकते? ईश्वरचंद्र विद्यासागर के तरीके से आप क्या ऐसे नहीं कर सकते कि अपने घर का पचास रुपए से गुजारा कर लें और बची हुई चार सौ पचास रुपए की नौकरी को पड़ोस के विद्यार्थियों के लिए खर्च कर दें। ऐसा आप नहीं कर पाएँगे क्या?

मित्रो! लोभ, मोह को आप छोड़ दीजिए। आप अहंकार की, बड़प्पन की, अमीरी की और दूसरों की आँखों में चकाचौंध पैदा करने की हवस को छोड़ दीजिए। इसके स्थान पर आप दूसरी हवस पैदा कीजिए कि हम महान् बनेंगे। दूसरों के सामने उदाहरण पेश करेंगे। अपनी जिंदगी का नमूना पेश करेंगे और लोगों को अपने रास्ते पर चलने के लिए, पीछे चलने के लिए हम नया रास्ता बनाकर जाएँगे। ये महानता के रास्ते हैं। अगर आप महानता के रास्ते पर चल पड़े तो आपके जीवन की मुक्ति हो गई। जीवनमुक्त जैसे इसी जिंदगी में आनंद उठाते हैं, मजा उड़ाते हैं और सारे विश्व में पंख लगाकर स्वच्छंद उड़ते चले जाते हैं जैसे कि पखेरू सारे विश्व में उड़ता हुआ चला जाता है। वह कैसा सुंदर दृश्य देखता है? कैसी सुहावनी छवि का लाभ उठाता है, आप भी ठीक वैसी छवि का लाभ उठा सकते हैं, अगर आप जीवनमुक्त होने की दिशा में कोशिश करें तब। यह आपकी मुट्ठी में है और आप चाहें तो इसे खरीद भी सकते हैं। आप जरा हिम्मत तो कीजिए। लोभ, मोह और अहंकार का तिरस्कार कीजिए, फिर देखिए आपकी मुक्ति आपके चरणों में आती है कि नहीं। मुझे उम्मीद है कि आप यहाँ इस कल्पसत्र में आए हैं और जीवनमुक्त होकर जाएँगे। आज की बात समाप्त।

ॐ शांतिः

प्रतिभाओं को आमंत्रण

परमपूज्य गुरुदेव रचित वाङ्मय के ७० खंडों के प्रकाशन के बाद शेष ३८ खंडों का संपादन-प्रकाशन होना है साथ ही सभी १०८ ग्रंथों का गुजराती तथा अंगरेजी संस्करण प्रकाशित किया जाना है। इस मिशन के साहित्य संपादन में जिन परिजनों की अभिरुचि हो तथा योग्यता प्राचार्य, प्रोफेसर, व्याख्याता स्तर की हो एवं समर्पण भाव से निम्न क्षेत्रों में से किसी में लगभग एक-दो वर्ष तक का समयदान दे सकते हों, कृपया संपर्क करें।

(क) अंगरेजी अनुवाद

अन्य विवरण के साथ हिंदी से अंगरेजी अनुवाद का अनुभव, प्रूफरीडिंग अनुभव एवं अगस्त मास की अखण्ड ज्योति पत्रिका पृष्ठ क्रमांक ५५, ५६, ५७ का अनुवाद भी संलग्न करें।

(ख) गुजराती अनुवाद

अन्य विवरण के साथ हिंदी से गुजराती अनुवाद का अनुभव, प्रूफरीडिंग अनुभव एवं अगस्त मास की अखण्ड ज्योति पत्रिका पृष्ठ क्रमांक ५५, ५६, ५७ का अनुवाद भी संलग्न करें।

(ग) हिंदी साहित्य

जिन परिजनों की हिंदी साहित्य संपादन, प्रूफरीडिंग आदि में अभिरुचि हो, उसके अनुभव का उल्लेख करते हुए अन्य विवरण के साथ संलग्न करें।

वांछित अन्य विवरण-

नाम, पता, फोन नं., आयु, पारिवारिक उत्तरदायित्व, योग्यता, स्वास्थ्य, पद/व्यवसाय, कार्य का अनुभव, समयदान की अवधि, गायत्री परिवार से जुड़ने का वर्ष।

संपर्क सूत्र

अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

फिजाँ बदल देती है-अवतार की आँधी

पूर्वार्द्ध

३० अगस्त १९७५ जन्माष्टमी पर उद्‌बोधन

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्

देवियो, भाइयो! आज जन्माष्टमी का पुनीत पर्व है। आज से पाँच हजार वर्ष पूर्व इसी दिन पृथ्वी पर भगवान् की वह शक्ति अवतरित हुई, जिसने प्रतिज्ञा की थी कि हम सृष्टि का संतुलन कायम रखेंगे। भगवान् की उस प्रतिज्ञा के भगवान् कृष्ण प्रतिनिधि थे, जिसको पूरा करने के लिए उन्होंने अपनी सारी जिंदगी लगा दी। उसी प्रतिज्ञा के आधार पर उन्होंने जनसाधारण को विश्वास दिलाया है कि हम पृथ्वी को असंतुलित नहीं रहने देंगे और सृष्टि में अनाचार को नहीं बढ़ने देंगे। भगवान् ने यह प्रतिज्ञा की हुई है-

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥

मित्रो! मनुष्य के भीतर दैवी और आसुरी- दोनों ही वृत्तियाँ काम करती रहती हैं। दैत्य अपने आपको नीचे गिराता है। पानी का स्वभाव नीचे की तरफ गिरना है। पानी बिना किसी प्रयास के, बिना किसी 'परपज' के नीचे की तरफ गिरता हुआ चला जाता है। इसी तरह मनुष्य की वृत्तियाँ जब बिना किसी के सिखाए और बिना किसी आकर्षण के अपने आप पतन की ओर, अनाचार और दुराचार की ओर बढ़ती हुई चली जाती हैं, तब सृष्टि का संतुलन बिगड़ जाता है। व्यक्ति के भीतर भी और समाज के भीतर भी संतुलन बिगड़ जाता है। ऐसी स्थिति में समाज में सफाई की प्रक्रिया यदि न चलाई जाए, कमरे में झाड़ू न लगाई जाए, तो कूड़ा भरता चला जाएगा। दाँत पर मंजन न किया जाए, शरीर को स्नान न कराया जाए, तो उस पर मैल जमता चला जाएगा। इसी तरह अगर कपड़े को न धोया जाए, तो कपड़ा मैला होता चला जाएगा।

मलीनता को साफ करने की प्रक्रिया जब बंद हो जाती है या ढीली पड़ जाती है, तो सृष्टि में अनाचार बढ़ जाता है, यह सृष्टि के बहिरंग रूप में भी और अंतरंग रूप में भी फैल जाता है। अंतरंग रूप हमारा व्यक्तिगत रूप है। यह भी एक सृष्टि है। व्यक्ति अपने आप में सृष्टि है, व्यक्ति अपने आप में संसार है, विश्व है। अगर संघर्ष की गुंजाइश न हो, सफाई की गुंजाइश न हो, धुलाई की गुंजाइश न हो, तब इसके भीतर भी अनाचार बढ़ता हुआ चला जाता है। इसी तरह बहिरंग संसार में भी अगर सुधार की प्रक्रिया, संघर्ष की प्रक्रिया, सही करने की प्रक्रिया को जारी न रखा जाए, तब संसार में अनाचार बढ़ता चला जाता है।

कभी-कभी देव भी हार जाते हैं, जब समाज को ऊँचा उठाने वाले उनके सलाहकार धीमे पड़ जाते हैं, हारने लगते हैं। जब हम अपना संघर्ष बंद कर देते हैं और दुष्ट प्रवृत्तियों को खुली छूट दे देते हैं, तब हमारा भीतर वाला देव हारने लगता है और दुष्ट प्रवृत्तियाँ खुलकर खेलने लगती हैं। दुष्ट प्रवृत्तियाँ हमारे मस्तिष्क में छाई रहती हैं। दुष्ट प्रवृत्तियाँ हमारे स्वभाव और अभ्यास में बनी रहती हैं। चूँकि हम अपने भीतर से संघर्ष बंद कर देते हैं, दुष्प्रवृत्तियों को रोकते नहीं, काटते नहीं, तोड़ते-मरोड़ते नहीं, उनसे लोहा लेते नहीं और न ही उन्हें छोड़ते हैं, इसलिए वे हम से चिपक कर बैठी रहती हैं और उनको हमारे अंतरंग जीवन में खुलकर खेलने का मौका मिल जाता है।

और बहिरंग जीवन में? बहिरंग जीवन में भी यही बात है। बहिरंग जीवन में आप अनाचार को छूट दे दीजिए, उसे रोकिए मत, सुधारिए मत, प्रतिबंध लगाइए मत, तब वह चारों ओर से बढ़ता हुआ चला जाएगा। अनाचार आता बहिरंग से है, लेकिन उतरेगा अंतरंग जीवन में। इस कारण कभी-कभी आप में ऐसा असंतुलन पैदा होगा, जो विनाश की ओर ले जाएगा। जब कभी असंतुलन पैदा हो जाता है, तो यह मालूम पड़ता है कि दुनिया का विनाश होने वाला है। हमारी भीतर की दुनिया का भी और बाहरी दुनिया का भी विनाश होने वाला है। यह विनाश नहीं, वरन् विनाश के आधार हैं

मित्रो! विनाश का आधार एक ही है- अनाचार। अनाचार की वृद्धि अर्थात् विनाश। अनाचार और विनाश दोनों एक ही चीज हैं। इनमें जरा भी फरक नहीं है। एक दूध है तो एक दही। दूध अगर जमा दिया जाएगा, तो दही बन जाएगा और जीवन में अनाचार को बढ़ावा दिया गया होगा तो विनाश उत्पन्न हो जाएगा। यह प्रक्रिया न जाने कब से बार-बार बनती और चलती आ रही है। भगवान् को सृष्टिनिर्माण से पूर्व ही यह ख्याल था कि कहीं ऐसा न हो जाए और सृष्टि का संतुलन बिगड़ जाए। इसलिए सृष्टि का संतुलन जब कभी बिगड़ने लग जाता है, तो उसका बैलेंस ठीक करने के लिए भगवान् अपनी शक्तियों को लेकर अवतार लेते रहे हैं।

अब तक भगवान् ने जाने कितने अवतार लिए हैं, हम कह नहीं सकते। उनमें से एक अवतार यह भी है जिसका कि हम जन्मोत्सव मनाने के लिए, जन्मदिन मनाने के लिए, जिसकी जन्माष्टमी मनाने के लिए हम एकत्रित

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

हुए हैं। भगवान् के अवतार हमारे यहाँ हिंदू सिद्धांत के अनुसार दस और एक दूसरे सिद्धांत के आधार पर चौबीस हुए हैं। कोई कहता है कि दस अवतार हुए हैं, तो कोई कहता है कि भगवान् के चौबीस अवतार हुए हैं। यह तो मैं हिंदू समाज की बात कह रहा हूँ। लेकिन हिंदू समाज ही दुनिया में अकेला नहीं है। मुसलमान समाज अलग है। मूसा से लेकर मोहम्मद साहब तक ढेरों अवतार हुए हैं। ईसाइयों में भी न जाने कितने अवतार हो चुके हैं। बौद्धधर्म में न जाने कितने अवतार हुए हैं। पारसियों में कितने अवतार हो चुके हैं। हर मजहब में कितने अवतार हो चुके हैं, यह हम नहीं बता सकते। अवतार होने से हमें कोई शिकायत भी नहीं है।

मित्रो! चलिए इन अवतारों में हम एक और कड़ी जोड़ने को तैयार हैं। जितने भी महामानव, महर्षि, लोकसेवक एवं संसार को रास्ता बताने वाले हुए हैं, चलिए उन सबको हम अवतार मान लेते हैं। इस संबंध में हम यह नहीं कहेंगे कि यह अवतार नहीं था या वह अवतार नहीं था। हमारे ये सब अवतार हैं। मैं तो यहाँ तक कहता हूँ कि अवतार आपके भीतर में कई तरीके से प्रकट होता रहता है। कभी अनाचार को दबाने के लिए खड़ा हो जाता है, तो कभी पीड़ा-पतन निवारण के लिए खड़ा हो जाता है। तो कभी विकृतियों से जूझने के लिए खड़ा हो जाता है। जिस तरीके से कसाई बकरे को बाँधकर ले जाता है, उसी तरीके से हमारा आंतरिक अवतार न जाने कहाँ से कहाँ ले जाने के लिए हमें विवश कर देता है। दुनिया में ऐसी कौन-सी शक्ति है, कौन है वह जो हमें बताता है कि इस रास्ते पर चलना नहीं है। वह शक्ति हमें ऐसे रास्ते पर चलने से रोक देती है। जब कभी शौर्य का- साहस का उदय हमारे भीतर होता है, तो मित्रो हम कह सकते हैं कि अवतार का उदय हुआ।

अवतार का उदय कितने मनुष्यों के भीतर हुआ और उन्होंने कितनों का कायाकल्प कर दिया? एक उदाहरण बताता हूँ आपको समर्थ गुरु रामदास का। समर्थ गुरु रामदास शादी के लिए तैयार खड़े थे। पंडित पंचांग लेकर पति-पत्नी को एक-दूसरे के गले में वरमाला पहनाने को कह रहे थे। तभी समर्थ के सामने दो सपने आकर खड़े हो गए। सपना नंबर एक कि बीबी आएगी, हाथ-पाँव दबाया करेगी, सिर में तेल लगाया करेगी, खाना पकाया करेगी और बच्चा पैदा किया करेगी। दूसरा सपना इतना जबरदस्त आया कि चूहे के तरीके से रोटी के टुकड़े को देखकर मौत के पिंजड़े में जाने को तैयार है? यह पता नहीं कि जिंदगी कितनी कीमती है और इसके लिए क्या करना चाहिए? भगवान् आया और उसने समर्थ को आवाज दी-बुलाया। भगवान् हमारे और आपके पास भी रोज आता है। रोज संदेश देता है, आदेश देता है, निर्देश करता है। लेकिन भगवान् की पुकार हम और आप कब सुनते हैं? भगवान् आदर्श की, सिद्धांतों की, नैतिकता की, मर्यादा की बातें बताकर चला जाता है, लेकिन हम और आप यह सब सुनते हैं क्या? हमारे लिए तो भगवान् की पूजा करने के लिए ये खेल-खिलौने ही काफी हैं, जो हमने और आपने पकड़ रखे हैं। हमारी और आपकी समझ में तो भगवान् की आरती उतारनी चाहिए, जप कर लेना चाहिए, भगवान् को धूपबत्ती चढ़ा देनी चाहिए, भगवान् को चावल चढ़ा देना चाहिए और प्रसाद बाँट देना चाहिए। इतना काफी है। और कुछ? नहीं और ज्यादा न हमारी हिम्मत है, न हमारा मन है, न हमारी तबियत है, न हमारे अंदर जीवट है और न हमारे अंदर चिंतन है। बस, इन्हीं बाल-बच्चों जैसे खिलौनों से खेलते रहते हैं। भगवान् की पूजा के लिए इन खेल-खिलौनों के अतिरिक्त हम और हिम्मत नहीं कर सकते।

लेकिन भगवान् तो अपनी पूजा के लिए कुछ और ही चाहता है। वह धर्म स्थापना के लिए, समय की माँग को पूरा करने के लिए आपको रोज पुकारता है। धर्म की स्थापना के लिए भगवान् ने किसको-किसको पुकारा? समर्थ गुरु रामदास को पुकारा। उनसे कहा कि अरे! कहाँ चलता है नरक में, चल तेरे लिए दूसरा रास्ता खुला पड़ा है। उन्होंने कहा- भगवान् मैं आया। भगवान् मैं डूब रहा हूँ, इस भवसागर से आप मेरा त्राण कीजिए अर्थात् रक्षा कीजिए। भगवान् का तो संकल्प ही है- **"परित्राणाय साधूनां"** अर्थात् साधुओं का त्राण होता है, असाधुओं का नहीं। असाधुओं के त्राण के लिए भगवान् के पास कोई फुरसत नहीं है, कोई टाइम नहीं है और कोई मोहब्बत नहीं है। जो आदमी साधु-संत नहीं है अथवा साधु होकर भी पाप के गर्त में गिरते हुए चले जाते हैं, तो भगवान् क्यों करेंगे मोहब्बत उनसे और क्यों प्यार करेंगे उनसे? एक सिद्धांत वाले- उच्च आदर्शों वाले की ओर उन्होंने अपना हाथ बढ़ा दिया और समर्थ गुरु उठकर खड़े हो गए। शादी के मंडप से वे भाग खड़े हुए। लोगों ने कहा कि पकड़ना इन्हें, पर समर्थ गुरु उनकी पकड़ से दूर भाग खड़े हुए। उनकी होने वाली बीबी का ब्याह दूसरे व्यक्ति से कर दिया गया। समर्थ गुरु रामदास जाने कहाँ चले गए।

मित्रो! समर्थ गुरु रामदास वहाँ चले गए, जहाँ से हिंदुस्तान के अध्याय का नया इतिहास आरंभ हुआ। उन्होंने न जाने कितने शिवाजी तैयार कर दिए। महाराष्ट्र में उन्होंने न जाने कितने ज्ञानकेंद्रों, हनुमान् मंदिरों को स्थापित किया। एक-एक मुट्ठी अनाज घर-घर से एकत्र करके कितना अपार धन अर्जित किया और उसे राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए शिवाजी की सेना में लगा दिया। शिवाजी के नाम से जो संग्राम चला, उसके असली संचालक कौन थे? समर्थ गुरु रामदास। समर्थ गुरु रामदास का इतिहास- भगवान् का इतिहास है। आपका इतिहास? औरों का इतिहास- बंदरों का इतिहास है, शेरों का इतिहास है, चूहों का इतिहास है, जो केवल पेट के लिए जीते हैं, औलाद के लिए जीते हैं। हम और आप भी कोई भगवान् के भक्त हैं? नहीं, साहब हम तो भगवान् की शरण चाहते हैं। खाक चाहता है अभागा कहीं का। बस भक्ति के नाम

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

पर चंदन चढ़ाता हुआ चला जाता है, माला घुमाता हुआ चला जाता है। नहीं साहब! हम तो बद्रीनाथ जाते हैं, चंदन चढ़ाते हैं, माला घुमाते हैं, धूपबत्ती जलाते हैं। ये कुछ नहीं, मात्र तू खेल-खिलौना करता, मजाक करता और भगवान् को अँगूठा दिखाता है। आपके ये पूजा करने के ढंग भगवान् से दिल्लगीबाजी करने के समान हैं। पूजा करने के सही ढंग वे हैं, जो समर्थ गुरु रामदास के पास आए थे।

मित्रो! पूजा करने के सही तरीके वे हैं जो भगवान् की पुकार सुनने वालों ने अपनाए हैं। भगवान् की पुकार सुनने वालों में से एक नाम जगद्गुरु शंकराचार्य का भी है। एक ओर शंकराचार्य की माँ चाहती थी और ये कहती थी कि मेरा फूल-सा छोकरा ब्याह करके गोरी बहू लाएगा और नाती-पोते पैदा करेगा। कमाकर लाएगा, महल बनाएगा, कोठी बनाएगा, गाड़ी लाएगा और घर में पैसे इकट्ठे करेगा। एक ओर इस तरह शैतान वाला ख्वाब, पाप वाला ख्वाब, लोभ वाला ख्वाब,आकर्षण वाला ख्वाब था, दैत्य वाला ख्वाब था, तो दूसरी ओर शंकराचार्य के मन में देवत्व वाला ख्वाब था। भगवान् ने शंकराचार्य के कान में इशारे से कहा-अरे अभागे! जिस काम के लिए कुत्ते और बिल्ली, मेढ़क और चूहे अपनी सारी जिंदगी खर्च कर देते हैं, वह तेरे लिए काफी नहीं है। तेरे लिए दूसरा रास्ता खुला हुआ है, उस ओर चल।

शंकराचार्य ने अपनी माँ को समझाया, परंतु माँ की समझ में कहाँ और क्यों आने वाला था? उसकी समझ में तो यही आता था कि मुझे पोता चाहिए, पोती चाहिए, कोठी चाहिए। मित्रो! इन सब ख्वाबों को लात मार उठ खड़ा हुआ- शंकराचार्य। कौन खड़ा हो गया? चारों धाम की स्थापना करने वाला शंकराचार्य, बौद्ध नास्तिकवाद की जड़ें उखाड़कर हिंदुस्तान से बाहर करने वाला शंकराचार्य। उन दिनों बौद्धों का नास्तिकवाद हिंदुस्तान में लोगों के मन-मस्तिष्क में घुसता हुआ चला जा रहा था, तब शंकराचार्य ने कहा था कि हिंदुस्तान में आस्तिकता जिंदा रहेगी, नास्तिकता को हम जिंदा नहीं रहने देंगे। हिंदुस्तान से नास्तिकता को उन्होंने निकाल बाहर किया। फिर वह कहाँ चली गई? चाइना चली गई, कोरिया चली गई, मलयेशिया चली गई, जापान और वर्मा चली गई, नेपाल चली गई, श्रीलंका चली गई, कहीं भी चली गई, पर हिंदुस्तान से भाग गई। ये शंकराचार्य की हिम्मत थी। चारों धामों की स्थापना करके सारे हिंदुस्तान को एकता के सूत्र में पिरोने वाला वह शंकराचार्य, दिग्विजय करने वाला शंकराचार्य, अनूठे विचारों वाला शंकराचार्य अलग था। उसने भगवान् की पुकार सुन ली थी।

मित्रो! अगर शंकराचार्य ने भगवान् की पुकार न सुनी होती तब? तब बेटे यही होता जो हमारा- आपका हुआ है। क्या हो जाता? नौ बेटे और ग्यारह बेटियाँ होतीं। एक बच्चा गोद में बैठा होता तो एक सिर पर बैठा होता और एक माँ के पेट में। एक गालियाँ दे रहा होता, एक मूँछें काट रहा होता और एक मारपीट कर रहा होता। आपके जैसे उसकी भी मिट्टी पलीद हो गई होती। लेकिन भगवान् की पुकार को सुनने वाला शंकराचार्य उनकी कृपा से जीवन की दिशाओं को लेकर न जाने कहाँ से कहाँ चला गया। भजन इसी का नाम है, जिसमें कि आदमी के जीवन की दिशाधारा बनाई जाती है, विचार बनाए जाते हैं और काम करने के तरीके बदले जाते है। इसी का नाम है भजन। भजन माला घुमाना नहीं है, भगवान् की पुकार सुनने का नाम भजन है।

मित्रो! भगवान् की पुकार सुनने का प्रतिफल यही होता रहा है। कितने मनुष्यों के भीतर भगवान् की पुकार पैदा हुई और किन-किन सामाजिक परिस्थितियों में पैदा हुई? भगवान् समय-समय पर साकार रूप में भी और निराकार रूप में भी आते हैं। निराकार रूप में भगवान् किस-किसके पास आए और साकार रूप में किस-किसके पास आए, जैसा कि अभी मैंने आपको सुनाया। गुरुदेव अभी आप और उदाहरण सुनाएँगे? नहीं बेटे, अब मैं और नहीं सुनाऊँगा। अगर और हवाला देना पड़ा तो सारे विश्व का वह इतिहास आपके सामने पेश करना पड़ेगा, जिन्होंने नियमों के लिए, सिद्धांतों के लिए, आदर्शों के लिए कुरबानियाँ दीं, बलिदान दिए, कष्ट उठाए और दूसरों की नजरों में बेवकूफ कहलाए, बेकार कहलाए। लेकिन अपने आदर्शों के लिए, सिद्धांतों के लिए, दुनिया में शांति कायम रखने के लिए, दुनिया में शालीनता कायम रखने के लिए जिन्होंने अपने आपको, अपनी अक्ल को, अपनी ताकत को और अपनी संपत्ति को सर्वस्व न्योछावर कर दिया, ऐसे लोगों की संख्या सारी-की-सारी तादाद लाखों भी हो सकती है और करोड़ों भी। भगवान् की गाथाएँ सुनाने के लिए मुझे उन सबके इतिहास सुनाने पड़ेंगे। आप इन सबकी कथागाथा को भगवान् की कथागाथा मान सकते हैं।

इसी तरह गाँधीजी की कथागाथा को यह कहने में कोई ऐतराज नहीं है कि वह भगवान् की कथागाथा है। बुद्ध की, शंकराचार्य की कहानी कहने में मुझे कोई ऐतराज नहीं है कि वह भगवान् की कथागाथा है। दूसरे अन्य लोगों ने, जिन्होंने भी नेक जीवन, श्रेष्ठ जीवन जिया, आदर्श जीवन जिया, लोगों को प्रकाश देने वाला जीवन जिया, अपने आप में नमूने का जीवन जिया, मित्रो! वे सारे-के-सारे भगवान् थे, क्योंकि उनके भीतर भगवान् अवतरित हुआ होगा और भगवान् ने भगवान् की बाँह पकड़ ली होगी। भगवान् से उन्होंने कहा होगा कि हम आपके पीछे चलेंगे और आपकी छाया होकर रहेंगे।

साथियो! भगवान् का हुक्म जिन लोगों ने माना, वे सब आदमी भगवान् के अवतार कहे जा सकते हैं, देवता कहे जा सकते हैं और जिन लोगों ने भगवान् को ठोकर मारी, माला भले ही घुमाते रहे, उन्हें मैं कैसे कह सकता हूँ कि आप भगवान् के भक्त हो सकते हैं। मैं ऐसे किसी व्यक्ति को मानने को तैयार नहीं हूँ कि वह व्यक्ति भगवान् की इज्जत

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

करने वाला हो सकता है, भगवान् पर विश्वास करने वाला हो सकता है, जो सारा दिन माला घुमाता है, सारा दिन भजन करता है, लेकिन उसकी जिंदगी ऐसी घिनौनी है, जिसे देखकर घृणा आती है और नफरत होती है। ऐसे व्यक्ति भगवान् के भक्त नहीं हो सकते और न ही उनके अंदर भगवान् अवतरित हो सकता है।

भगवान् के अवतार मन में अवतरित हुए हैं, हृदय में अवतरित हुए हैं, आदर्शवादी सिद्धांतों और श्रेष्ठकर्मों के रूप में अवतरित हुए हैं। सृष्टि में हवा के रूप में, आँधी के रूप में निराकार भगवान् व्याप्त हैं। हवाएँ दिखाई नहीं देतीं, फिर भी अपना काम कर जाती हैं। इसी प्रकार निराकार भगवान् हैं। गाँधी जी के जमाने में एक हवा आई थी। गाँधी जी आगे-आगे चलते थे तो उनके पीछे-पीछे सब चल पड़ते थे। गाँधी जी अकेले थे? नहीं, मित्रो! वे अकेले नहीं थे, हजारों-लाखों आदमी उनके साथ काम करते थे। हजारों-लाखों लोगों की कुरबानियों- बलिदानों, लाखों लोगों की तबाही, लाखों लोगों का गोली खाना आदि तरह-तरह की मुसीबतों को झेलकर, सबसे मिलकर उनका संग्राम हुआ। तब देश को आजादी मिली।

मित्रो! इस देश में हर जमाने में एक-एक ऐसी हवा चली है, जिसने दुनिया की दिशाधारा ही बदल दी अन्यथा इस देश में नास्तिकवाद, अनाचारवाद फैल जाता। इस हवा को लेकर कौन आया? हवा के संदेश को लेकर कौन आया? संदेश लेकर के यहाँ भगवान बुद्ध आए थे। तो क्या भगवान् बुद्ध ने हिंदुस्तान का- सारे एशिया का बेड़ा गर्क नहीं कर दिया था? नहीं मित्रो! ऐसा नहीं हो सकता। यह काम पीछे वालों का अनुयायियों का तो हो सकता है, पर भगवान् बुद्ध का नहीं। बुद्ध भगवान् अकेले क्या कर सकते थे? एक अकेला चना भाड़ को नहीं फोड़ सकता। एक आँधी आती है, एक तूफान आता है, एक हवा आती है। जब आँधी आती है, तो हमें आगे का काम दिखाई पड़ता है। सेना जब चढ़ाई करने जाती है, तब एक विशेष रंग का झंडा आगे-आगे फहराता हुआ चलता है और सैनिक बढ़ते हुए चले जाते हैं। ठीक है जब चढ़ाई होती है तो झंडे के निशान आगे बढ़ते हुए दिखाई देते हैं, परंतु वह झंडा तो लड़ाई नहीं लड़ता, लड़ने वाली फौज होती है । हवाएँ कभी-कभी आती हैं। ये हवाएँ क्या काम करती हैं? ये हवाएँ यह काम करती हैं कि असंख्य मनुष्य उपकार में लगे दिखाई पड़ते हैं। गाँधी एक हवा थी, बुद्ध एक हवा थी, कृष्ण एक हवा थी, राम एक हवा थी। मित्रो! राम अकेले अगर रावण को मार सकते तो उन्होंने वहीं से क्यों नहीं मार दिया? नहीं साहब, अकेले राम नहीं मार सकते थे। हाँ, बेटे, अकेले नहीं मार सकते थे। उन्हें रीछों की सेना लेनी पड़ी, वानरों की सेना लेनी पड़ी, जमीन पर सोना पड़ा। मनुष्य होकर रहना पड़ा। विभीषण को साथ लेना पड़ा। ढेरों-के-ढेरों मनुष्यों को संग लेना पड़ा और तब एकत्रित सेना को लेकर रावण से युद्ध लड़ा। इस तरह से रावण का खात्मा हुआ। यह हवा थी एक जमाने में।

इसी तरह क्या कृष्ण भगवान् महाभारत युद्ध अकेले नहीं लड़ सकते थे? अगर अकेले लड़ सकते तो पांडवों की खुशामद क्यों करते? पांडव बार-बार यही कहते रहे कि हमें यह लड़ाई नहीं लड़नी है। वे हमारे रिश्तेदार लगते हैं। हम तो भीख माँगकर खा लेंगे, अपनी दुकान चलाकर खा लेंगे। हमें राजपाट नहीं चाहिए। हमें लड़ाई से छुट्टी दीजिए। हमरो अपने स्वजनों का खून-खराबा नहीं होगा। फिर भी कृष्ण भगवान् खुशामद करते रहे, हाथ-पाँव जोड़ते रहे, नाराज होते रहे, गालियाँ सुनाते रहे और कहते रहे कि तुम्हें लड़ना चाहिए। कृष्ण अगर अकेले महाभारत का युद्ध लड़ सकते, कंस को मार सकते, असुरों को मार सकते, सभी आततायियों को मार सकते तो फिर मैं सोचता हूँ कि सारे विश्वभर में निमंत्रण भेजकर सेनाओं को बुलाने की क्या जरूरत थी? अगर अकेले ही गोवर्द्धन उठा सकते थे तो ग्वालवालों को लाठी लगाने की क्या जरूरत थी?

मित्रो! अकेला आदमी कितना कर सकता है। मैं किसी तरह से यह विश्वास करने को तैयार नहीं हूँ कि एक व्यक्ति विशेष सारे-के-सारे समाज को रोक सकता है, बदल सकता है। ऐसा नहीं हो सकता। ये हवा है, जिसे पैदा करने की कोई मशीन काम करती होगी, इस बात का समर्थन करने को मैं तैयार हूँ। इस हवा में बहुत से ढेरों आदमी घिरे होते हैं। इनके दिमाग और दिल एक दिशा में चल पड़ते हैं, जैसे कि अपने आंदोलन में। आपके अपने इस आंदोलन में क्या एक आदमी संचालन करता है? नहीं, एक आदमी संचालन नहीं कर सकता। क्या एक आदमी नियम बनाने के लिए आश्वासन दे सकता है? नहीं, एक आदमी के बस की बात नहीं है। एक आदमी फिजाँ बदल सकता है? एक आदमी नया जमाना ला सकता है? एक आदमी लोक-समाज में हलचल पैदा कर सकता है? नहीं, ऐसा नहीं हो सकता।

एक अस्तव्यस्त युवक सुकरात के पास पहुँचा और बोला-"मुझे अध्यात्म के विषय में शिक्षा दीजिए।" सुकरात ने कहा- "पहला पाठ है- सफाई सीखो। नहा-धोकर आओ। बाल या तो कटवाओ और यदि रखे हो, तो साफ करके, तेल डालकर कंघी से सँभालकर आओ। अध्यात्म सुसंस्कारिता को कहते हैं। पहले अस्वच्छता का प्रत्यक्ष कुसंस्कार हटाओ, तब अन्य कुसंस्कार हटाने की बात सोची जा सकेगी।"

क्रमशः अगले अंक में

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी (उत्तरार्द्ध-१)

फ़िजाँ बदल देती है, अवतार की आँधी

(गतांक से आगे)

मित्रो! फिर यह हलचल कौन पैदा करता है? नया जमाना कौन लाता है? एक हवा आती है। ठीक है गुरुजी कहते हैं कि एक हवा आती है। नहीं बेटे, अकेले गुरुजी के कहने से कोई फायदा नहीं है। वास्तव में जब इस एक ही बात को असंख्य व्यक्ति कहते हैं, उसका समर्थन करते हैं कि हाँ ऐसा होना चाहिए, तब इस बात को— आवाजे हलक को 'नक्कारे खुदा समझो।' जब हलक से आवाज निकलती है, तो वह नक्कारे खुदा है। जब हम कहते हैं कि 'हम नया जमाना लाएँगे।' 'हम मनुष्य के भीतर देवत्व की स्थापना करेंगे।' हम इस संसार में पुन: स्वर्ग की स्थापना करेंगे' तो यह कौन कहता है— मैं ? नहीं, हम कहते हैं। हम और आप सब मिल करके— जमाने को मिला करके एक हवा है, एक दिशा है। ये कौन है? ये भगवान् हैं। जब कभी एक ठिकाने पर ये हवा पैदा होती है, जिन आदर्शों को पैदा करने के लिए यह आँधी-तूफान पैदा होता है, हलचलें पैदा होती हैं, तो आप समझ सकते हैं कि इसके पीछे भगवान् की हवा है। भगवान् की प्रेरणा काम कर रही है। भगवान् का अवतार काम कर रहा है। इसी को मैं अवतार मानता हूँ।

क्या व्यक्ति के रूप में भी भगवान् का अवतार होता है? चलिए अब मैं आपकी बात का भी समर्थन करने को तैयार हूँ कि व्यक्ति के रूप में अवतार होता है। साकार रूप में भगवान् होता है। आप निराकार की बात पर ज्यादा विश्वास नहीं करते। अत: मैं आपको साकार की बात बताऊँगा कि कैसे भगवान् लीलाएँ करने आते हैं। व्यक्ति आता है। आप भगवान् की कथाएँ तो सुनते हैं, पर गहरे में क्यों नहीं जाते? भगवान् की सारी-की-सारी लीलाएँ, कथा-गाथाएँ इस बात पर टिकी हुई हैं कि भगवान् एक है। यह बात अलग है कि उसने लोकशिक्षण का तरीका क्या अख्तियार किया। जब कभी भगवान् के अवतार होते हैं, तो प्रत्येक बार वह अपने आचरण से जन-जन को शिक्षा और प्रेरणा देते हैं। लोकशिक्षण का यही सबसे जानदार और सबसे सफल तरीका है।

मित्रो! लोगों के सामने बकवास करने की अपेक्षा, लोगों को उपदेश सुनाने या कथा सुनाने की अपेक्षा यह ज्यादा अच्छा है कि आपने लोगों के सामने जो उपदेश दिए हैं, उसे स्वयं के जीवन में उतारकर बताएँ कि हमने इस तरीके से जीवन जिया है। दुनिया में सबसे ज्यादा प्रभावशाली तरीका यही है। इससे बढ़िया और बेहतरीन तरीका और कोई है ही नहीं। आप इस तरीके से चलिए जिसे देखकर के लोग सोच सकें, समझ सकें कि जो सिद्धांत आप कहना चाहते हैं, समझना चाहते हैं, वे आपके रोम-रोम में इस कदर समा गए हैं कि आप इस तरह का रास्ता अख्तियार किए बिना जिंदा नहीं रह सकते। अगर आप इतना ज्यादा विश्वास लिए हुए बैठे हैं, तो आपके विचार आपकी वाणी से और आपके आचरण से टपकने चाहिए।

चलिए मैं तो यह भी कहता हूँ कि बिना वाणी के भी लोकशिक्षण किया जा सकता है। बहुत से लोगों ने अपनी जबान को बंद कर दिया था, लेकिन उनकी आस्थाएँ, उनकी निष्ठाएँ और जिंदगी का स्वरूप इतना शानदार और जबरदस्त था कि उन्होंने नई हवाएँ बना दीं, नई फिजाएँ पैदा कर दीं और न जाने दुनिया में कितनी हलचलें पैदा कर दीं। आदमी के समझाने का तरीका, सुझाने का तरीका, गुरु होने का तरीका वो है कि जबान से जो हमने लंबे-चौड़े व्याख्यान सुनाए हैं, कथाएँ सुनाई हैं, उनकी अपेक्षा अपनी जिंदगी का एक नमूना पेश करें।

भगवान् कृष्ण हों या भगवान् राम अथवा और कोई अवतार, उन्होंने लोकशिक्षण का जो तरीका अख्तियार किया है, वह उनकी जिंदगी जीने का एक ढंग था। वह उनके काम करने की एक शैली थी। इस शैली के द्वारा उन्होंने लोगों से कहा कि आप स्वयं निश्चय कीजिए और उन सिद्धांतों को ढूँढ़िए, जिसके लिए हमें जन्म लेना पड़ा और जिसके लिए निरंतर कष्ट सहने पड़े। भगवान् कृष्ण की लीलाएँ, जो हमारे लिए और आपके लिए बिलकुल सामयिक हैं, आधुनिक हैं, अति उत्तम और अति प्राचीनतम भी हैं, वे हमको बताती हैं कि सिद्धांतों को जीवन में कैसे उतारें। उन सिद्धांतों को अपनाए बिना कोई महापुरुष रहा नहीं। उन सिद्धांतों को आपके मन में प्रवेश कराने के लिए भगवान् ने लीलाएँ दिखाईं-क्रीड़ाएँ कीं ।

भगवान् श्रीकृष्ण की लीलाएँ क्या हैं? कृष्ण भगवान् जेलखाने में पैदा हुए, जो चारों तरफ से बंद था, जिसमें उनके माता-पिता बंद थे। जंजीरों से जकड़े हुए थे। उस स्थिति में एक बालक पैदा हुआ। सब ओर से घिरा हुआ जब बालक पैदा हुआ, तो उसके अंदर संकल्प की शक्ति थी। बालक यह संकल्प लेकर आया कि मुझे इन बंधनों से मुक्त होना है, और लोगों को बंधनों से मुक्त करना है। परिस्थितियाँ कितनी विपरीत और विषम थीं, लेकिन वे किस तरह से टूटती चलीं गईं— कच्चे धागे की तरह से।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

भगवान् श्रीकृष्ण के बारे में हम किताबों में पढ़ते हैं कि उनके जन्मकाल में जेलखाने से बाहर निकलने के लिए परिस्थितियाँ अनुकूल नहीं थीं। फिर भी भगवान् के संकल्प से सारे पहरेदार सो गए। सभी दरवाजे खुल गए, जंजीरें टूट गईं और पिता उस बच्चे को लेकर सुरक्षित रखने के लिए चल पड़े। भादों की घनघोर अँधेरी रात थी। जिस तरह आज की रात बादल छाए हुए हैं, पानी बरस रहा है, गंगा में बाढ़ आई हुई है, कुछ ऐसा ही दृश्य उस समय रहा होगा। जमुना में बाढ़ आई हुई थी। चारों ओर अँधेरा छाया हुआ था। कोई रास्ता सूझ नहीं रहा था। प्रकाश कहीं था नहीं। लेकिन प्रकाश देने वाली एक ज्योति, जो इनसान के भीतर जला करती है और सहारा देती रहती है, जो मझधार में से पार निकालती रहती है। हमें मझधार में से दूसरे लोग पार नहीं निकालते हैं। हमारी अंतर्ज्योति ही हमको पार निकालती है। उन विषम परिस्थितियों में भी वसुदेव श्रीकृष्ण को टोकरी में लिए हुए आगे बढ़ते चले गए और वहाँ जा पहुँचे जहाँ नंद-यशोदा का घर था। वहाँ उस बच्चे के रहने का इंतजाम कर दिया।

मित्रो! यह घटना हमें क्या सिखाती है? यह हमें सिखाती है कि इनसान संकल्प तो करके देखे, निश्चय तो करके देखे, विश्वास तो करके देखे फिर हमसे कहे। आप यह तजुर्बा करके लाइए, फिर आपको कहीं जाने की जरूरत नहीं पड़ती। आप आगे बढ़ते हुए चले जाएँगे और आपको सफलता मिलती हुई चली जाएगी। आदमी की हिम्मत के अलावा दुनिया में और कोई शक्ति नहीं है, जो उसे पार लगा सके। आदमी की हिम्मत सबसे बड़ी ताकत है। ज्वारभाटे की अपनी ताकत हो सकती है, लहरों की अपनी ताकत हो सकती है, समुद्र की अपनी ताकत हो सकती है, लेकिन इनसान के संकल्प के आगे कोई और ताकत नहीं है।

यही सब आदमी को सिखाने के लिए भगवान् ने अवतार लिया था। बेटे! अपने भीतर वाले को कमजोर मत होने दीजिए। भीतर वाले को मजबूत बनाइए। भीतर वाले को कमजोर बना देंगे, तो आप गिर जाएँगे। भीतर वाले को साहस के सहारे उठाएँगे, तो आप आगे बढ़ेंगे और दूसरा आदमी सहायता करने के लिए आएगा। अगर आप अपने को पीछे हटाएँगे, तो लोग आपसे पहले ही दूर हट जाएँगे। यह नसीहत कृष्ण भगवान् ने अपने जन्म के पहले दिन से ही आरंभ कर दी थी। उनके पिताजी ने भी यही बात बताई थी कि यदि परिस्थितियाँ अनुकूल रहती हैं, तो ठीक है, अन्यथा साहस और संकल्प के सहारे उन पर विजय पाई जा सकती है। अगर आपका उद्देश्य ऊँचा है और आपके अंदर साहस का अभाव नहीं है, तो परिस्थितियाँ आपके प्रतिकूल हो ही नहीं सकतीं। अगर आपका उद्देश्य नीचा है और आपके अंदर साहस का अभाव है, तो फिर आप गिरे या मरे ही समझना चाहिए। बेटे यदि आपका उद्देश्य ऊँचा है, साँहस आपका ऊँचा है, तो आपको सहायता देने के लिए सारी देवशक्तियाँ आगे आएँगी, चाहे कितना ही आपके मार्ग में अवरोध क्यों न हो। सारी सहायता आपको मिलती चली जाएगी।

आज जन्माष्टमी के दिन यह है शिक्षण नंबर एक, जो भगवान् श्रीकृष्ण ने, उनके पिता ने अपनी घटना के द्वारा, अपने क्रियाकलाप के द्वारा हमको दिया। हम और आप तो बकवास करना जानते हैं और व्याख्यान करना जानते हैं। लेकिन भगवान् ने जो उदाहरण प्रस्तुत किया, वह कितना शानदार है। देवकी इतना नहीं कर सकती थी, वसुदेव भी इतना नहीं कर सकते थे कि कंस का मुकाबला करें और उसे मार डालें। वे सामर्थ्यवान् नहीं थे, शक्तिवान् नहीं थे, विद्वान् नहीं थे, नेता नहीं थे, लेकिन साहसी थे। किन्हीं अच्छे कामों के लिए आप भी साहसी बन सकते हैं। रीछ-वानरों के तरीके से अच्छे कामों में सहायता कर सकते हैं।

रीछ और बंदर रावण को नहीं मार सकते थे, पर लंका जाने के लिए समुद्र पर पुल तो बना सकते थे। गिलहरी ज्यादा काम नहीं कर सकती थी, लेकिन समुद्र में मिट्टी तो डाल सकती थी। ठीक है, जो आदमी जिस हैसियत में रहता है, उससे आगे बढ़कर दूसरा काम नहीं कर सकता, वह अगली पंक्ति में नहीं खड़ा हो सकता, लेकिन अच्छे कामों में सहायता तो कर ही सकता है। गाय चराने वाले ग्वाले मामूली आदमी थे। उन्होंने कहा— ठीक है हम ज्यादा तो नहीं कर सकते, लेकिन भगवान् का उद्देश्य पूरा करने के लिए उनकी सहायता तो कर ही सकते हैं। गोवर्धन उठाने में अपनी लाठी का सहारा तो दे ही सकते हैं। अगर आप प्रेरणा लेना चाहें तो आप इनसे प्रेरणा व श्रद्धा ले सकते हैं।

भागवत् की कहानी कही जा रही है और लोगों द्वारा सुनी जा रही है। कहते हैं इसको सुनने से बड़ा भारी पुण्य मिलता है। बेटे! कहानी कहने और सुनने भर से कोई पुण्य नहीं हो सकता। पुण्य केवल उस स्थिति में होगा जब आप उससे प्रेरणा ग्रहण करेंगे, जीवन में उतारेंगे, प्रवेश करने देंगे और उसे बाहर अपने क्रियाकृत्यों में, व्यवहार में प्रकट होने देंगे। इससे कम में कोई पुण्य नहीं हो सकता। इसलिए मित्रो! भगवान्, भगवान् की क्रीड़ाएँ, लीलाएँ हमको दिशाएँ देती हैं, शिक्षण देती हैं। संघर्षों से लोहा लेना सिखाती हैं।

मित्रो! संघर्षों से आदमी समर्थ होता है। संघर्षों से आदमी की श्रद्धा निखरती है। गुरु जी! संघर्ष आते हैं, तो हमारे ऊपर बड़ी मुसीबत आती है। तो बेटा, मुसीबत के बिना कोई भी आदमी दुनिया में बड़ा नहीं हुआ, तीखा नहीं हुआ, कामयाब नहीं हुआ। नहीं साहब, मुसीबत दूर कीजिए। मुसीबत हम जरूर कम कर देंगे, लेकिन साथ-साथ यह शाप भी देंगे कि तू मंदबुद्धि हो जा, फालतू हो जा, निकम्मा हो जा, कीड़ा-मकोड़ा हो जा। महाराज जी आप ये क्या कहते हैं? बेटे, ये तो साथ-साथ होगा, क्योंकि जो आदमी आराम की जिंदगी, चैन की जिंदगी, मानसिक चिंता रहित जिंदगी जिएगा, वह निकम्मा हो जाएगा, बेकार हो जाएगा। उसकी

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

योग्यताएँ, प्रतिभाएँ, इच्छाएँ समाप्त हो जाएँगी और वह किसी काम का नहीं रहेगा, मुरदा बन जाएगा।

मित्रो! मनुष्य हमेशा से संघर्षों से घिरा पड़ा है। जो आदमी अपनी जिंदगी में संघर्षों से मुकाबला नहीं करते, वे जिंदगी का आनंद नहीं ले सकते। जो आदमी जरा भी श्रम नहीं करता, वह नींद का आनंद नहीं ले सकता। गहरी नींद का आनंद सिर्फ उस आदमी के हिस्से में आया है, जिसने कड़ी मशक्कत की है। हल जोतने वाला किसान दोपहर में आराम से बगीचे में जाकर हाथ का तकिया बनाकर खर्राटे भरता है और अपनी नींद पूरी कर लेता है। उसे आरामतलबों की तरह नींद के इंजेक्शन की कोई जरूरत नहीं पड़ती। रोज की गहरी नींद उनके हिस्से में आई है, दाल-रोटी उनके हिस्से में आई है, जिन्होंने कड़ी मशक्कत की है, जिन्होंने मेहनत की है। जिन्हें यही पता नहीं है कि जीवनसंघर्ष क्या होता है, कठिनाइयाँ क्या होती हैं, उनका भी कोई जीवन है।

साथियो, कठिनाइयाँ आदमी को निखारने के लिए, उभारने के लिए बेहद आवश्यक हैं। चाकू पर तब तक धार नहीं रखी जा सकती, जब तक कि उसे पत्थर पर घिसा नहीं जाएगा। इसके बिना पैनापन, तीखापन नहीं आ सकता। चाकू की धार नहीं निकल सकती। मित्रो! मुसीबतें हमारी सबसे बड़ी मित्र हैं और सबसे बड़ी सुधारक-अध्यापक हैं, जो हमारी सारी-की-सारी कमजोरियों को चूर-चूर कर डालती हैं और हमारे भीतर हिम्मत का, बहादुरी का माद्दा पैदा करती हैं। कठिनाइयाँ हमें संघर्ष करना सिखाती हैं और न जाने क्या-क्या सिखाती हैं। यह इतनी बड़ी पाठशाला है कि इसमें से होकर आदमी प्रतिभावान् निकलता है, नया जीवन लेकर निकलता है और जिन्होंने आराम की जिंदगी जी, हराम की जिंदगी जी, वे मिट्टी के होकर के रहे हैं, कीड़े होकर के रहे हैं। अमीरों के बच्चों को आप देख सकते हैं। अमीरी में पले हुए बच्चों का सत्यानाश हो गया। जो बच्चे गरीबी में पैदा हुए, कठिनाइयों में पैदा हुए, वे हीरे के तरीके से चमकते हुए निकले, तलवार के तरीके से दनदनाते हुए निकले।

मित्रो! भगवान् ने इसीलिए कहा कि मुसीबतों से घबड़ाना मत। कठिनाइयों से भागो मत, उनसे कुछ सीखने की कोशिश करो। कठिनाइयों से जूझने के लिए भीतर से हलचल होनी चाहिए। भगवान् श्रीकृष्ण का प्रारंभिक जीवन यही सिखाता है कि आदमी को यदि भगवान् बनना है, महान् बनना है, तो उसे कठिनाइयों का आलिंगन करना चाहिए। कठिनाइयों को जानबूझकर चैलेंज करना चाहिए। तपश्चर्या का मतलब ही होता है- कठिनाइयों को जानबूझकर अपनाना और यह अभ्यास करना कि हम मुसीबत में हैं। मुसीबत हमें सबसे पहले बहादुरी के साथ संयम करना सिखाती है। तप आदमी को न जाने क्या से क्या बना देता है।

संपत्ति, अमीरी आदमी को दुर्व्यसनी बनाती है, अनाचारी और दुराचारी बनाती है तथा असंख्य बुराइयाँ लेकर आती है। ऐय्याशी आदमी को गलाती है और उसे हजम कर जाती है। आदमी को गलत रास्ते पर ले जाती है। यह दौलत की लाभ-हानियाँ हैं और कठिनाइयाँ? कठिनाइयों में जहाँ मुसीबतें उठानी पड़ती हैं, असंख्य दिक्कतें आती हैं, वहीं मनुष्य को अपनी भट्टी में गलाकर कुंदन भी बनाती है। तो मित्रो! भगवान् श्रीकृष्ण ने अपनी जिंदगी से यही सिखाया है कि कठिनाइयों से भागो मत। कठिनाइयों का मुकाबला करो। कठिनाई आदमी की क्षमता को निखारती हैं। ये इम्तिहान है, मनुष्य के लिए कि उसने सिद्धांतों के लिए कितना कष्ट सहा। इसी के आधार पर हम फेल और पास होते हैं। इसके अतिरिक्त और कोई कसौटी नहीं है। कसौटी एक ही है कि सिद्धांतों के लिए उसने क्या किया, कौन-सी मुसीबतें उठाईं। जिसने ऐसा नहीं किया, जिसके जीवन में कोई प्यार नहीं, कोई सेवा नहीं, कोई बलिदान नहीं, कोई परिश्रम नहीं है, उसे हम महापुरुष नहीं कह सकते। धिक्कार है ऐसे जीवन को।

मित्रो! महापुरुषों को अपने जीवन में अनेकों कठिनाइयाँ झेलनी पड़ी हैं, इम्तिहान देना पड़ा है। भगवान् कृष्ण को सारी जिंदगी लड़ना पड़ा है। उन्हें मारने के लिए कौन-कौन आए? कालिया नाग आया, पूतना आई, कंस आया और न जाने कितने असुर आए। उनकी जिंदगी में कितने ही असुर जबरदस्ती मारने आए, जबकि वे अपनी गली में, घर में ग्वालवालों के साथ खेलते-विचरते रहते थे। वस्तुतः जो आदमी मौत के साथ में जद्दोजहद कर सकते हैं, कठिनाइयों के साथ लड़ सकते हैं, उनका यश चारों ओर फैलता है। जो मुसीबतों के लिए- कठिनाइयों के लिए तैयार रहते हैं, उनकी हिम्मत निखरती जाती है। हिम्मत के बिना सफलता के पहाड़ पर चढ़ना किसी के लिए भी संभव नहीं है।

भगवान् के जीवन की और कितनी ही सरस लीलाएँ मालूम पड़ती हैं। शुष्कजीवन, रूखा जीवन, नीरस जीवन कभी भी फलीभूत नहीं हो सकता। हँसने-हँसाने वाले जीवन में, हलकी-फुलकी जिंदगी में सरसता भरी रहती है और वह आप ही खिलती हुई चली जाती है। हँसी-खुशी की जिंदगी अगर आपकी है तो आप हँसोगे, खिलखिलाएँगे, गाना गाएँगे और नहीं तो मुँह फुलाए बैठे रहेंगे और जिंदगी भर ये शिकायत-वो शिकायत करते रहेंगे। ये कमी है, वो कमी है— का रोना रोते रहेंगे।

मित्रो! जो आदमी हँसता हुआ, खिलखिलाता हुआ रहता है, उसके चारों ओर खुशियाँ छाई रहती हैं। हँसने-हँसाने वाले खुद भी खिलखिलाते रहते हैं और दूसरों को भी हँसाते रहते हैं। भगवान् श्रीकृष्ण को देखिए- हँसने वाले भगवान् हँसाने वाले भगवान्, रास करने वाले भगवान्, नाचने वाले भगवान्, बाँसुरी बजाने वाले भगवान्, साहित्यकार और कलाकार भगवान्, संगीत से प्रेम करने वाले भगवान्, अरे आप इनसे कुछ तो सीखें और अपनी सारी जिंदगी को हलका बनाकर जिएँ। सारी जिंदगी हर समय मुँह फुलाकर रहने से जिंदगी जी नहीं जा सकती। इस तरह से आप खुद भी नाखुश रहेंगे और रोकर जिएँगे। शिकायतों पर जिएँगे, तो

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

आप मर जाएँगे। जिंदगी इतनी भारी हो जाएगी कि उसे फिर ठीक नहीं कर पाएँगे। उसके नीचे आप दब जाएँगे, कुचल जाएँगे। अगर आप लंबी उम्र तक जिंदा और स्वस्थ रहना चाहते हैं, तब आप हँसने-हँसाने की कला सीखें। अगर आपको हँसना आता है, तो समझिए कि जिंदगी के राज को आप समझते हैं।

साथियो! हँसी के लिए— हँसने-हँसाने के लिए ढेरों चीज हमारे पास हैं। आपके पास हर चीज नहीं है, तो क्या आप चिड़चिड़ाते हुए, शिकायत करते हुए बहुमूल्य जीवन को यों ही बरबाद कर देंगे? क्या आपको निखिल आकाश हँसता हुआ दिखाई नहीं देता। अगर आप कविहृदय हैं, सरस हृदय हैं, तो आपको सबकुछ हँसता हुआ दिखाई पड़ सकता है। आकाश में बादल आते हैं, घुमड़ते हुए-बरसते हुए दिखाई पड़ते हैं, क्या आप इनका आनंद नहीं ले सकते? नदियाँ कलकल करती हुई बहती हैं, क्या आप इनका आनंद नहीं ले सकते? आपको इनका आनंद लेना चाहिए और आप को कलाकार होना चाहिए। जिंदगी जीने की कला को आपको समझना चाहिए। जिंदगी में आनंद के अनुभव होने चाहिए। जीवन में हँसने का समय होना चाहिए, हँसाने का समय होना चाहिए।

भगवान् को हम कलाकार कहते हैं। श्रीकृष्ण भगवान् ने रासलीला के माध्यम से हलकी-फुलकी जिंदगी, हँसने-हँसाने वाली जिंदगी की कला सिखाई। रासलीला गाने की विद्या है, नृत्य की विद्या है। नहीं साहब! श्रीकृष्ण भगवान् ने तो हँसने-हँसाने की विद्या बहुत छोटेपन में सीखी थी, हम तो उम्र में बड़े हो गए हैं। नहीं बेटे, बड़ी उम्र के हों तो क्या, योगी हों तो क्या, तपस्वी हों तो क्या, ज्ञानी हों तो क्या, महात्मा हों तो क्या? हँसना आपको भी आना चाहिए, हँसाना आपको भी आना चाहिए। गाँधी जी के नजदीक मुझे बहुत दिन रहने का मौका मिला। शुरू में वे जिस कोठी में रहते थे, उससे मैं दूर रहता था, तो मुझे बार-बार उनके हँसने की आवाज आती थी। उन दासता के दिनों वे इतने गंभीर विषयों पर बातें करते थे जैसे कि जाड़े की समस्या, वेश्याओं की समस्या, अन्यान्य सामाजिक समस्या, करोड़ों लोगों के भाग्य के निर्माण की समस्या— इतनी समस्याओं के बीच भी मैंने उनको हँसते हुए देखा है। हमारे-आपके पास तो यह भी समस्या नहीं है। आपके पास क्या समस्या ह? बस एक ही समस्या है— बेटे की और पैसे की। देश, समाज और संस्कृति को तो आप जानते भी नहीं हैं कि उनके प्रति भी आपका कुछ उत्तरदायित्व है। लेकिन मैंने गाँधी जी को इन तमाम समस्याओं के बाद भी हँसते हुए देखा है। एक बार उनसे पूछा कि बापू एक बात तो बताइए कि आप इतने गंभीर रहते हैं, इतनी चिंताओं से घिरे रहते हैं, इतने गंभीर विषय आपके पास हैं। इतनी असफलताएँ आपके पास आती हैं, इतनी समस्याओं का समाधान सुझाते हैं, पर इस कदर आप हँसते कैसे हैं?

गाँधी जी ने कहा- ''मैं इसीलिए एक सही जिंदगी जी पा रहा हूँ। मेरे जिंदा रहने का और कोई तरीका नहीं। अगर मैं खुश नहीं तो मेरी मौत, मेरी हँसी नहीं तो मेरी मौत समझो। मित्रो! जिसके चेहरे पर हँसी नहीं आती है, उसे बस मरा ही समझो। श्रीकृष्ण भगवान् ने वह कला सिखाई, जिसको हम जिंदगी का प्राण कह सकते हैं, जीवन कह सकते हैं। 'रास' इसी का नाम है। नहीं साहब, इसमें तो बहुत रंगदारी है? नहीं बेटे, इसमें स्वाभाविकता है, शालीनता है। आप महाभारत पढ़ लीजिए, भागवत् पढ़ लीजिए, जिस समय तक उन्होंने रासलीला की है, तब उनकी उम्र दस साल की थी। दसवें साल तक सब रासलीला बंद हो गई थी। सात साल की उम्र से प्रारंभ हुई थी और दस साल की उम्र में सब रासलीला खत्म हो गई थी। दस साल से ज्यादा में कोई रासलीला नहीं खेली गई। उसमें कामुकता नहीं थी, ब्याह-शादी की कोई बात नहीं थी।

तब उसमें क्या बात थी? उसमें था हर्षमय-आनंदमय जीवन, उसमें कन्हैया ने चाहा कि छोटे-छोटे बच्चे हों, साथ-साथ घुलमिल कर हँसे-खेलें। स्त्री-पुरुष के बीच शालीनता का क्या फर्क होना चाहिए, शील और आचरण का क्या फर्क होना चाहिए, यह जानें। अगर एक दूसरे को अलग कर देंगे, काट देंगे, तो फिर आप किस तरह से जिएँगे। माँ-बेटे साथ-साथ नहीं रहेंगे, तो किसके साथ रहेंगे? बाप-बेटी, भाई-बहिन साथ-साथ नहीं रहेंगी। बेटी बाप की गोदी में नहीं जाएगी, क्योंकि वह स्त्री है और ये पुरुष है। दौनों को अलग कीजिए, छूने मत दीजिए। औरत को इस कोने में बैठाइए और मरद को उस कोने में बैठाइए। अरे भाई, ये कहाँ का न्याय है? स्त्री और पुरुष कंधे-से-कंधा मिलाकर काम करें, गाड़ी के दो पहियों के तरीके से काम करें, तो ही जीवन में आनंद है। प्रगति है। आज भी हमारे यहाँ रिवाज है कि मरद औरत को नहीं देखने पाए और औरत मरद को। वह घूँघट मारकर घर में रहे और पुरुष बाहर रहे। साथ-साथ नहीं चल पाएँ। ये भी कोई बात है।

मित्रो! श्रीकृष्ण भगवान् ने उस जमाने में लड़के-लड़कियों की एक सेना पैदा की और उसे एक दिशा दी। उन्होंने कहा कि लड़के और लड़कियों में अंतर करने से क्या होगा। हम और आप सब बच्चे हैं। स्त्री और पुरुष में क्या फर्क होता है? स्त्रियों को मूँछें नहीं आतीं और मरद को मूँछें आती हैं। मूँछ आने से क्या फर्क हो गया? स्त्रियाँ मूँछें लगा लें तब? तब फिर वे मरद हो जाएँगी और पुरुष मूँछ हटा लें तो वे औरत हो जाएँगे। अरे महाराज जी आप ये क्या कहते हैं? हाँ बेटा, यही फर्क है। उस जमाने का पुरुषवादी समाज, परस्त्रीगामी समाज, जिसमें पाप और अनाचार का बंधन नहीं लगाया गया था, केवल स्त्री-पुरुष को अलग रखने की व्यवस्था की गई थी। जहाँ शील आँखों में रहता है, उस पर ध्यान नहीं दिया गया था, केवल शारीरिक बंधनों से शील की रक्षा करने की कोशिश की गई थी, श्रीकृष्ण भगवान् ने उसे तोड़ने की कोशिश की।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

भगवान् श्रीकृष्ण का जीवन सिद्धांतों का जीवन था, आदर्शों का जीवन था। उनकी सारी लीलाएँ सिद्धांतों और आदर्शों को प्रख्यात करने वाले जीवन से ओतप्रोत थीं। भगवान् राम की लीलाएँ इससे आगे चली जाती हैं। उनके जीवन में एक कमी रह गई थी। क्या कमी रह गई थी? लोगों के साथ शराफत करने का वास्ता, जो उन्होंने पढ़ा था। उनके पिताजी बड़े शरीफ थे। उन्होंने आज्ञा दी कि आपको वनवास चले जाना चाहिए। रामचंद्र जी ने कहा— ठीक है ऐसे धर्मपरायण शालीन पिता यदि आज्ञा देते हैं और हमको वनवास जाने का मौका मिलता है, तो हमें चले जाना चाहिए। भरत जैसा भाई यदि राजपाट सँभाल लेता है, तो वह और अच्छी तरह से चलेगा। उसमें कोई कमी नहीं आने वाली है। प्रेमभाव भी बना रहेगा, मुझे भी शांति मिलेगी। अतः मैं वनवास चला जाता हूँ, तो हर्ज की क्या बात है। इस सिद्धांत को लेकर उन्होंने राजगद्दी भरत के हवाले कर दी और बाप का कहना मान लिया।

मित्रो! बात चल रही थी श्रीकृष्ण भगवान् की। कृष्ण भगवान् का रास्ता दूसरा था। रामावतार में जो अभाव रह गया था, जो कमी रह गई थी, जो अपूर्णता रह गई थी, वह उन्होंने पूरी की। इस बात से फायदा यह हुआ कि यदि शरीफों से वास्ता न पड़े, तब क्या करना चाहिए? खराब लोगों से वास्ता पड़े तब, खराब भाई हो तब, खराब मामा हो तब, खराब रिश्तेदार हों तब, क्या करना चाहिए? तब के लिए श्रीकृष्ण भगवान् ने नया रास्ता खोला। इसमें विकल्प हैं। इसमें शरीफों के साथ शराफत से पेश आइए। जहाँ पर न्याय की बात कही जा रही है, उचित बात कही जा रही है, इनसाफ की बात कही जा रही है, वहाँ पर आप समता रखिए और उसको मानिए और आप नुकसान उठाइए। लेकिन अगर आपको गलत बात कही जा रही है, सिद्धांतों की विरोधी बात कही जा रही है, तो आप इनकार कीजिए और उससे लड़िए और यदि जरूरत पड़े, तो उनका मुकाबला कीजिए और मारिए।

कंस श्रीकृष्ण भगवान् के रिश्ते में मामा लगता था। लेकिन वह अत्याचारी और आततायी था, अतः उन्होंने यह नहीं देखा कि रिश्ते में कंस हमारा कौन होता है। उन्होंने न केवल स्वयं ऐसा किया वरन् अर्जुन से भी कहा कि रिश्तेदार वो हैं, जो सही रास्ते पर चलते हैं। सही रास्ते पर चलने वालों का सम्मान करना चाहिए, उनकी आज्ञा माननी चाहिए, उनका कहना मानना चाहिए। उनके साथ-साथ चलना चाहिए। लेकिन अगर हमको कोई गलत बात सिखाई जाती है, तो उसे मानने से इनकार कर देना चाहिए। यह परंपरा कितने युगों से चली आ रही है कि पिता का कहना मानना चाहिए। लेकिन अगर कोई गलत बात मानने के लिए कही जाती है तब? तब पिता का कहना प्रधान नहीं है। तब कहना चाहिए कि मैं गलत बात नहीं मानूँगा। गलत बात कहता है और पिता बनता है। गलत बात कहने वाला व्यक्ति पिता नहीं हो सकता। नहीं बेटे, हम तो तेरे पिताजी हैं और तेरे दहेज में पच्चीस हजार रुपये लेंगे। देख तुझे मेरी आज्ञा माननी होगी। देख श्रवणकुमार ने अपने पिता की आज्ञा मानी थी और भीष्म पितामह ने आज्ञा मानी थी। श्रवणकुमार ने जिनकी आज्ञा मानी थी, वो ऋषि थे। भीष्म पितामह ने जिनकी आज्ञा मानी थी, वे शांतनु थे और राम ने जिनकी आज्ञा मानी थी, वो दशरथ थे। तू तो काम करता है चांडाल के, बात करता है कसाई की और हुक्म देता है। हमसे बात मनवाएगा। हम नहीं मानेंगे, चला है बाप बनने।

मित्रो कृष्ण भगवान् की दिशाएँ और शिक्षाएँ यही थी कि कोई हमारा रिश्तेदार नहीं है। हमारा रिश्तेदार सिर्फ एक है और उसका नाम है- धर्म। हमारा रिश्तेदार एक है और उसका नाम है- कर्त्तव्य। आप ठीक रास्ते पर चलते हैं, तो हम आपके साथ हैं और आपके हिमायती हैं। बाप के साथ हैं, रिश्तेदार के साथ हैं। अगर आप गलत रास्ते पर चलते हैं, तो आप रिश्ते में हमारे कोई नहीं होते। हम आपकी बात को नहीं मानेंगे और आपको उजाड़कर रख देंगे।

मित्रो! ये हैं श्रीकृष्ण भगवान् के जीवन की गाथाएँ, जो राम के जीवन की विरोधी नहीं हैं, वरन् पूरक हैं। राम के अवतार में जो कमी रह गई थी, उसे कृष्ण अवतार में पूरा किया। राम का वास्ता अच्छे आदमियों से ही पड़ता रहा। अच्छे संबंधी मिलते रहे। उन्हें सुमंत मिले तो अच्छे, कौशल्या मिलीं तो अच्छी, लक्ष्मण मिले तो अच्छे। उन्हें सब शरीफ ही मिलते गए। अगर शरीफ आदमी न मिलते तो क्या करते? तब श्रीकृष्ण भगवान् ने जो लीला करके दिखाई, वही वे भी करते। श्रीकृष्ण ने अर्जुन को समझाया कि तू लड़ चाहे तेरे गुरु हों या कोई भी क्यों न हों। गुरु हैं, तो क्या हुआ? भाई हैं, तो क्या हुआ? मामा हैं तो क्या हुआ? कोई भी क्यों न हों, जब गलत काम करते हैं तो हमारे कोई नहीं, सब विरोधी हैं। भगवान् ने यह शिक्षण अपने विरोधी मामा से लोहा लेकर के दिया।

आंध्र प्रांत बना तो उसके मुख्यमंत्री टी. प्रकाशन् बनाए गए। तब वे ८४ वर्ष के थे। टी. प्रकाशन् ने गरीबी के दिन देखे थे। पिता की मृत्यु पहले ही हो गई थी। उनकी माता एक छोटा होटल चलाकर परिवार का पालन करती। टी. प्रकाशन् ने अपनी माँ के स्वावलंबन प्रधान जीवन से ही शिक्षा ली, पुरुषार्थ से वकालत पास की और इंग्लैंड जाकर बैरिस्टर बनकर आए। अपनी आजीविका का एक बड़ा भाग वे पिछड़े लोगों की सहायता में लगाते रहे।

स्वतंत्रता आंदोलन में उन्होंने अग्रिम पंक्ति में भाग लिया। दैनिक 'स्वराज्य' सफलतापूर्वक चलाया। जेल जाते रहे और अनेकों में इसके लिए प्राण फूँकते रहे। उनके महामानव बनने के मूल में थे— माँ द्वारा बाल्यकाल में डाले गए संस्कार।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

भगवान् श्रीकृष्ण ने अपनी सारी जिंदगी बादलों के तरीके से जी। उन्होंने कहा— हमारा कोई गाँव नहीं है। सारा गाँव हमारा है। जहाँ कहीं भी हमारी जरूरत होगी, हम वहाँ पर जाएँगे। वे कहाँ पैदा हुए? वे मथुरा में पैदा हुए, फिर गोकुल में बसे, वहाँ गाय चराई। उज्जैन में पढ़ाई-लिखाई की। दिल्ली में-कुरुक्षेत्र में लड़ाई-झगड़े में भाग लिया और फिर न जाने कहाँ-कहाँ मारे-मारे फिरते रहे। आखिर में कहाँ चले गए? आखिर में द्वारिका चले गए। आपके ऊपर तो होम सिकनेस हावी हो गई है, जो घर से आपको निकलने नहीं देती। अरे साहब! घर से बाहर कैसे निकलें, हमें तो घरवालों की याद आती है, हमारा पोता याद करता होगा, पोती याद करती होगी। हम अपने घर से बाहर नहीं जाएँगे, गाँव में ही हवन कर लेंगे। सौ कुंडीय यज्ञ तो हमारे गाँव में ही होगा। मंदिर बनेगा तो हमारे गाँव में ही बनेगा। अस्पताल बनेगा तो हमारे गाँव में ही बनेगा। गाँव-गाँव रट लगाता रहता है। श्रीकृष्ण भगवान् ने इस मान्यता को समाप्त किया और और कहा कि सारे गाँव हमारे हैं। हर जगह हमारी जन्मभूमि है। वे दो बार मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, हिमाचल प्रदेश गए, दिल्ली गए। वे सब प्रदेशों में गए बादलों के तरीके से।

मित्रो! सिस्टर निवेदिता, एनीबेसेंट कहाँ पैदा हुईं? योरोप में पैदा हुईं। उन्होंने देखा कि हिंदुस्तान में महिलाओं की स्थिति गिरी हुई है। महिलाओं की-जो ऊँची स्थिति योरोप में है, वही हमको यहाँ करना है। यहाँ क्या करेंगे? जहाँ हमारी जरूरत होगी, वहाँ चले जाएँगे। सिस्टर निवेदिता हिंदुस्तान आ गईं, एनीबेसेंट हिंदुस्तान में आ गईं। सी. एफ. एण्ड्रयूज हिंदुस्तान में आ गए। वे कितने जबरदस्त थे, उनके यहाँ कुछ कमी नहीं थी, लेकिन हिंदुस्तान में उन्होंने अपनी-अपनी जिंदगियाँ खत्म कर दीं। हिंदुस्तान की मिट्टी में उनकी हस्ती तबाह हो गई। इसी तरह गाँधी जी पोरबंदर में पैदा हुए और कहाँ चले गए? साबरमती चले गए। जब तक स्वराज नहीं मिला, आजादी नहीं मिली वे दर-दर भटकते फिरे, गाँव-गाँव घूमते फिरे। महापुरुषों की कोई जन्मभूमि नहीं होती, कोई गाँव नहीं होता, वरन् सारा संसार ही उनका अपना घर होता है-

शेष अगले अंक में

प्रतिभाओं को आमंत्रण

परमपूज्य गुरुदेव रचित वाङ्मय के ७० खंडों के प्रकाशन के बाद शेष ३८ खंडों का संपादन-प्रकाशन होना है, साथ ही सभी १०८ ग्रंथों का गुजराती तथा अँग्रेजी संस्करण प्रकाशित किया जाना है। इस मिशन के साहित्य संपादन में जिन परिजनों की अभिरुचि हो तथा योग्यता प्राचार्य, प्रोफेसर, व्याख्याता स्तर की हो एवं समर्पण भाव से निम्न क्षेत्रों में से किसी में लगभग एक-दो वर्ष तक का समयदान दे सकते हों, कृपया संपर्क करें।

(क) अँग्रेजी अनुवाद

अन्य विवरण के साथ हिंदी से अँग्रेजी अनुवाद का अनुभव, प्रूफरीडिंग अनुभव एवं अगस्त मास की अखण्ड ज्योति पत्रिका पृष्ठ क्रमांक ५५, ५६, ५७ का अनुवाद भी संलग्न करें।

(ख) गुजराती अनुवाद

अन्य विवरण के साथ हिंदी से गुजराती अनुवाद का अनुभव, प्रूफरीडिंग अनुभव एवं अगस्त मास की अखण्ड ज्योति पत्रिका पृष्ठ क्रमांक ५५, ५६, ५७ का अनुवाद भी संलग्न करें।

(ग) हिंदी साहित्य

जिन परिजनों की हिंदी साहित्य संपादन, प्रूफरीडिंग आदि में अभिरुचि हो, उसके अनुभव का उल्लेख करते हुए अन्य विवरण के साथ संलग्न करें।

वांछित अन्य विवरण—नाम, पता, फोन नं, आयु, पारिवारिक उत्तरदायित्व, योग्यता, स्वास्थ्य, पता/ व्यवसाय, कार्य-अनुभव, समयदान की अवधि, गायत्री परिवार से जुड़ने का वर्ष।

संपर्क सूत्र

अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

किसी बदल चली है अवतार की आँधी

समापन किश्त (गतांक से आगे)

मित्रो ! लोग अपनी अपनी जन्मभूमि की रट लगाते रहते हैं कि यह मेरी जन्मभूमि है, वह मेरी जन्मभूमि है। अरे, जन्मभमि किसकी होती है ? जो केवल शरीर को ही सब कुछ मान लेते हैं, उन्हीं की जन्मभूमि होती है, श्रेष्ठ मनुष्यों की कोई जन्मभूमि नहीं होती। हमारी तो हर जगह जन्मभूमि है। जहाँ कहीं भी हमारी आवश्यकता पड़ेगी, हम वहीं बस जाएँगे। नहीं साहब, हमारी तो अमुक जगह जन्मभूमि है और हम वहीं जाएँगे। नहीं, कोई जन्मभूमि नहीं। शंकराचार्य कहाँ पैदा हुए थे ? केरल में पैदा हुए थे, परंतु वे सारे हिंदुस्तान में घूमते फिरे। उनकी प्रेरणा से दक्षिणभारत के लोग उत्तर में आ गए और उत्तरभारत के लोग दक्षिणभारत में चले गए। कुमारजीव कश्मीर में पैदा हुए थे और सूडान होते हुए मंगोलिया चले गए और चीन में मर खपकर खत्म हो गए। ईसा कहाँ पैदा हुए थे ? कहाँ जन्म लिया और कहाँ- से कहाँ चले गए। मोहम्मद साहब मक्का में पैदा हुए और मदीने चले गए। वहाँ रहे और बाद में उस गाँव को छोड़कर और कहीं चले गए।

नहीं साहब ! हम तो अपने गाँव में रहेंगे और गाँव को ही सब कुछ बनाएँगे और वहीं मरेंगे। नहीं मित्रो इसकी कोई जरूरत नहीं है। जहाँ कहीं भी जगह है; जहाँ कहीं भी भूमि है; जहाँ कहीं भी मौका है; जहाँ कहीं भी आपकी आवश्यकता है; आप वहाँ जाइए। नहीं साहब, हम तो गाँव में ही रहेंगे। गाँव में ही हमारे बच्चे रहेंगे। हमारे ही गाँव में पुस्तकालय बनेगा। नहीं, कोई जरूरत नहीं, जब आपके गाँव में बिना पढ़े-लिखे लोग हैं तो आप क्यों बनाते हैं अपने गाँव में पुस्तकालय। गाँव गाँव चिल्लाते हैं। यह 'होमसिकनेस' की, औरों से अपने को अलग करने की प्रवृत्ति है। नहीं साहब, इसके कारण तो सब छोड़कर चले गए। चले गए, तो चले गए, उनसे क्या मोहब्बत ? मोहब्बत करनी है तो सिद्धांतों से कीजिए, आदर्शों से कीजिए। गाँव से क्या मोहब्बत, क्या रिश्ता ? इसका सबसे अच्छा उदाहरण हमें श्रीकृष्ण भगवान् के जीवन में देखने को मिलता है। भगवान् की ये कथाएँ और प्रेरणाएँ हमें यही सिखाती हैं कि जहाँ हमारी आवश्यकता है, हमें वहीं बादलों के तरीके से जाना चाहिए।

मित्रो ! भगवान् श्रीकृष्ण की कथाएँ और प्रेरणाएँ हमको जाने क्या- क्या सिखाती हैं। श्रीकृष्ण का जीवन हमें अध्यात्म का सही स्वरूप जानने की प्रेरणा देता है। आपने तो अध्यात्म का जाने क्या क्या अर्थ निकाल रखा है। आपके हिसाब से अध्यात्म हो सकता है— भजन, ध्यान, कुंडलिनी जगाना और आज्ञाचक्र जगाना। दंड -कमंडल लेकर इधर-उधर निठल्ले बैठे रहते हैं और बेकार की बातें करते हैं। जब मुसीबत आती है, तो यहाँ वहाँ मारे-मारे भागते फिरते हैं। सनक में जीते हैं। बैठे- बैठे योगीराज बनने का ढोंग करते और चित्र-विचित्र स्वाँग रचते रहते हैं। ऐसे लोग अफीमची की तरह सनकते रहते हैं और फालतू बकवास करते रहते हैं। इसे हम अध्यात्म नहीं कह सकते

मित्रो ! अध्यात्म क्या हो सकता है ? अध्यात्म केवल वह है, जो हमारे क्रियाकलाप में शामिल हो। यह बात हमने शुरू में ही बताई है। अध्यात्म को हम आपके क्रियाकलाप में देखना चाहते हैं। आज्ञाचक्र जगने का मतलब आपका जीवन-चक्र घूमा कि नहीं घूमा ? नहीं महाराज जी, यह तो केवल सिर में घूमेगा। बेटे, सिर में कोई चक्र नहीं घूमता। घूमता है, तो सारे क्रियाकलापों में घूमता है। केवल घर में ही नहीं, सारे संसार में चक्र घूमता है। भगवान् ने अपनी लीला के माध्यम से धर्मचक्र को घुमाया। वह धर्मचक्र जो रुक गया था, जिसका पहिया जाम हो गया था। उस पहिए को उन्होंने घुमाया, न केवल हिंदुस्तान में, वरन सारे विश्व में घुमाया। धर्म का चक्र इसी को कहते हैं। नहीं महाराज जी, चक्र तो सिर में घूमता है, आज्ञाचक्र में घूमता है। पागल कहीं का, सनकता रहता है और बेसिरपैर की बातें करता है। चक्र को जाने क्या समझ लिया है।

इसलिए मित्रो, श्रीकृष्ण भगवान् ने गीता में अध्यात्म का सूत्र समझाया। गीता का कर्मयोग बतलाया। गीता के कर्मयोग में उन्होंने कहा कि कर्म करने का अधिकार मनुष्य को है, किंतु फल प्राप्त करने के लिए हैरान होने की, उतावली करने की आवश्यकता नहीं है। काम करो, ईमानदारी से काम करो, शराफत से काम करो। बस, वही काफी है आपके आत्मसंतोष के लिए। फल मिला या नहीं ? हम नहीं जानते कि फल क्या मिलेगा या क्या नहीं मिलेगा ? बहुत से आदमी दुनिया में ऐसे हुए हैं, जिन्होंने बेहद अच्छे अच्छे काम किए हैं, लेकिन ईसामसीह को फाँसी पर चढ़ा दिया गया, सुकरात को जहर का प्याला पिला दिया गया। न जाने कितने अच्छे-अच्छे आदमियों को क्या क्या किया गया। अत: हम सफलता की कोई गारंटी नहीं ले सकते, लेकिन हम आपको शांति की गारंटी दे सकते हैं।

मित्रो ! अगर आप शराफत के मार्ग पर चलेंगे और यह समझते रहेंगे कि हम नेक काम कर रहे हैं, शराफत का काम कर रहे हैं तो फिर जटायु के तरीके से आपको सफलता मिल जाए तो क्या और न मिले तो क्या— कोई अंतर नहीं पड़ेगा। आततायी रावण से सीता को छुड़ाते हुए जटायु मारा गया, उस नेक काम के लिए अपनी जिंदगी देनी पड़ी, लेकिन जटायु को आप हारा हुआ नहीं कह सकते। भगतसिंह को फाँसी लग गई— तख्त पर टाँगा गया। ईसा को कीलें गाड़ दी गईं, लेकिन हम

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

ईसा को हारा हुआ नहीं कहेंगे; भगतसिंह को मरा हुआ नहीं मानेंगे; जटायु को हारा हुआ नहीं मानेंगे। सफलता-असफलता से क्या बनता-बिगड़ता है ? सफलता-असफलता की कोई कीमत नहीं। आप ने सही काम किया; नहीं किया, आपके लिए इतना ही काफी है।

साथियो ! कर्मयोग में भगवान् ने यह बताया है कि आप यह मत देखिए कि उसमें फायदा हुआ कि नहीं ? हमने जो चाहा था, वह मिला कि नहीं मिला ? मिलना, न मिलना आपके हाथ की बात नहीं है। यह परिस्थितियों और प्रारब्ध की बात है। यह आपके प्रारब्ध की बात है कि दूसरे लोगों की सहायता या बिना सहायता के आप क्या कर सकते हैं ? किसी कार्य का क्या फल मिलता है, आपके हाथ में यह कुछ नहीं है। लेकिन एक बात पूरी तरह से आपके हाथ में है कि आप अपनी जिम्मेदारियाँ निभाएँ और कर्त्तव्य को पूरा करें। आप कर्त्तव्यों को पूरा करेंगे, जिम्मेदारियों को निभाएँगे, तो यकीन रखिए, आपको वह लाभ मिल जाएगा, जो कि योगी को मिलना चाहिए; संत को मिलना चाहिए और ज्ञानी को मिलना चाहिए। यही गीता का कर्मयोग है। गीता में अर्जुन को भगवान् ने कर्मयोग की शिक्षा दी और उसे कर्म में लगाया। उन्होंने अर्जुन से कहा कि कर्म कर, सारी-की- सारी जिंदगी की प्रतिक्रिया को अपना योग मान। गृहस्थ को योग मान। समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को योग मानकर अपने कर्त्तव्य को पूरा करता जा। मित्रो, यह उनका कर्मयोग था।

एक बार अर्जुन भगवान् श्रीकृष्ण से कहने लगा कि भगवान् मैं तो आपके विराट् स्वरूप का दर्शन करना चाहता हूँ। उन्होंने कहा कि भगवान् के दर्शन इन आँखों से नहीं हो सकते। इन आँखों से मिट्टी देखी जा सकती है, पत्थर देखे जा सकते हैं। इससे हाड़-मांस देखा जा सकता है। पंचतत्त्वों से बनी आँखें सिर्फ पंचतत्त्व देख सकती हैं। भगवान् पंचतत्त्व से बड़ा है, इसलिए कभी किसी ने भगवान् को नहीं देखा और इन आँखों से कोई देख भी नहीं सकता। भगवान् को देखने के लिए आँखें ही काफी नहीं हैं और आँख से भगवान् को देखने की कोई गुंजाइश भी नहीं है। किसी के लिए भी गुंजाइश नहीं है।

तो फिर भगवान् को कैसे देखा जा सकता है ? इस पर भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा—"दिव्यं ददामि ते चक्षुः" अर्थात् मैं तुझे दिव्य आँखें दूँगा, विवेक की आँखें दूँगा, ज्ञान की आँखें दूँगा। मात्र ज्ञान की आँख से ही भगवान् को देखा जा सकता है और किसी तरीके से नहीं। चमड़े की आँख से आप भगवान् को नहीं देख सकते। इससे आप पत्थर देख आइए। नहीं साहब, हम तो इसी से भगवान् को देखेंगे। नहीं, आप इससे भगवान् को नहीं देख सकते। जब यह चमड़े का विषय ही नहीं तो आप देख कहाँ से लेंगे ? आपने क्या ठंढक देखी है, नहीं साहब, हमने तो केवल बरफ देखी है, ठंढ तक नहीं देखी। तो क्या आपने गरमी देखी है ? नहीं गरमी भी नहीं देखी है, आग देखी है। आग की बात हम नहीं पूछते, गरमी की बात पूछते हैं। नहीं साहब, गरमी तो नहीं देखी है। अच्छा, तो हमारा प्यार देखा है ? महाराज जी ! प्यार तो आपका नहीं देखा। हाँ, आपके चेहरे की स्मिति, मुस्कान देखी है। मित्रो ! हम प्यार की बात पूछते हैं, मुस्कान की नहीं।

मित्रो ! अच्छा बताइए, आपने मेरा ज्ञान देखा है ? नहीं महाराज जी, ज्ञान भी नहीं देखा। ज्ञान आपने देखा नहीं, प्यार देखा नहीं, गरमी देखी नहीं, ठंढ देखी नहीं, तो फिर आप भगवान् को कैसे देखेंगे ? नहीं महाराज जी ! भगवान् दिखा दीजिए। पागल कहीं का— भगवान् देखेगा। भगवान् भी कोई देखने की चीज है ! भगवान् किसी ने नहीं देखा है। अर्जुन भी कह रहा था कि भगवान् को दिखा ही दीजिए। श्रीकृष्ण ने कहा— चल तुझे दिखाते हैं। उन्होंने अपना विराट् रूप दिखाया और कहा—देख यही है भगवान्। यही स्वरूप उन्होंने अपनी माता यशोदा को भी दिखाया था। राम ने भी अपनी माता कौशल्या को अपना विराट् रूप दिखाया था। उन्होंने काकभुशुंडि को दिखाया था और कहा था कि देख यही मेरा विराट् रूप है।

साथियो ! अगर आप आँखों से भगवान् को देखना चाहते हो तो संसार में जितनी दिव्यशक्तियाँ हैं, जितनी दिव्य विचारधाराएँ हैं और जितने दिव्यकर्म दिखाई पड़ते हैं, उनमें आप भगवान् की क्रीड़ा को देख सकते हैं। यही उनके क्रीड़ा करने योग्य स्थल हैं। उनको ही आप अक्षत चढ़ाइए, तेल चढ़ाइए, अगरबत्ती जलाइए। उसमें ही अपनी अक्ल लगाइए अर्थात् ध्यान कीजिए। ध्यान करने का मतलब है— भगवान् के लिए अपनी अक्ल खरच करना। 'अक्षतां समर्पयामि' का अर्थ है— अपनी कमाई का एक हिस्सा लोकमंगल में लगा देना। 'आचमनं समर्पयामि' एवं 'स्नानं समर्पयामि' अर्थात् पानी चढ़ा देने का भी यही मतलब होता है— समाज को श्रेष्ठ बनाने के लिए, लोगों को अच्छा बनाने के लिए, दुनिया में भलाई लाने के लिए अपना पसीना बहाइए, अपनी अक्ल लगाइए, अपना पैसा खरच कीजिए। नहीं महाराज जी, मैं तो तीन चम्मच पानी चढ़ाऊँगा, तो पुण्य हो जाएगा। हाँ बेटे, चाहे तीन चम्मच चढ़ा, चाहे चार, इससे कुछ बनता-बिगड़ता नहीं। अरे चढ़ाना है तो वह चढ़ा, जो इसके पीछे कुछ शिक्षा है, प्रेरणा है। नहीं महाराज जी ! भगवान् तो पानी चढ़ाने से ही प्रसन्न हो जाते हैं। तो फिर ठीक है, चम्मच से क्यों चढ़ाता है ? सावन के महीने में तीन घड़े पानी भर ले और उनकी पेंदी में सुराख करके भगवान् के ऊपर टाँग दे। चौबीस घंटे पानी टपकता रहेगा। सारे दिन 'आचमनं समर्पयामि' का पाठ चलता रहेगा और चौबीस घंटे का स्नान भी। न बार-बार नहलाना पड़ेगा, न धुलाना पड़ेगा, न बार-बार चम्मच डालना पड़ेगा, अपने आप बैठे-बैठे भगवान् जी नहाते रहेंगे। अरे मूर्ख, पानी चढ़ाने का अर्थ है—पसीना बहाना, श्रम करना। अच्छाई के लिए मेहनत करना। पूजा-अर्चना के पीछे, कर्मकांडों के पीछे छिपे हुए भाव, शिक्षा एवं प्रेरणाओं को समझना बहुत जरूरी है।

भगवान् ने गीता में हमें यही उपदेश सिखाया और यह कहा कि कोई भी श्रेष्ठ कार्य बिना श्रम और सहयोग के संभव नहीं है। उदाहरण के लिए, जब उन्होंने पहाड़ उठाया, तो ग्वाल-बालों से कहा कि आप जरा हिम्मत कीजिए, हमारे साथ आइए

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

और हमारी मदद कीजिए, अपनी लाठी का सहारा लगाइए। मित्रो! जनता को साथ लिए वगैर आप कुछ भी नहीं कर सकते। अकेले आप समाज को सुधारेंगे? नहीं, आप अकेले कुछ भी नहीं कर सकते। आप लोगों को साथ बुलाइए, साथ लेकर चलिए। नहीं साहब, हम बड़े ज्ञानी हैं, बड़े विद्वान् हैं। ठीक है, आप विद्वान् हैं तो बहुत अच्छी बात है, लेकिन आपके साथ में लोकशक्ति है कि नहीं? आप जनता के पास जाइए और लोकशक्ति को बढ़ाइए। लोकशक्ति को जगाए बिना राम का उद्धार नहीं हो सका; कृष्ण का उद्धार नहीं हो सका; बुद्ध का उद्धार नहीं हो सका और गाँधी का उद्धार नहीं हो सका; किसी का भी उद्धार नहीं हो सका और न कभी हो सकता है। जनशक्ति को जगाइए, जनता के पास जाइए, जनता को साथ लीजिए। जनसहयोग लीजिए। श्रीकृष्ण भगवान् का गोवर्द्धन उठाना, महाभारत में सेना को खड़ा कर देना, इस बात का सबूत है कि उन्होंने जो काम किए, मेहनत से किए और लोगों की सहायता से किए हैं— जनशक्ति का साथ लेकर किए हैं।

भगवान् श्रीकृष्ण के ब्याह-शादी के बारे में कितनी ही किंवदंतियाँ मालूम पड़ती हैं। अभी जो आपको हम भागवत् की कथा बताने वाले थे, उसमें पहला विषय श्रीकृष्ण भगवान् के शादी-ब्याह वाला किस्सा हो था। लोगों ने उनके विवाह और रास को इतना घिनौना बना दिया है, जिसे हम नहीं चाहते कि हमारे पिता के ऊपर-हमारे बुजुर्गों के ऊपर ऐसे गंदे और वाहियात आक्षेप लगाए जाएँ। हम इस बकवास को सुनना नहीं चाहते और न इस तरह की रासलीला को देखने का हमारा जरा-सा भी मन है और न फुरसत है। नहीं, गुरु जी, रास देख लीजिए। नहीं बेटे, हम रास नहीं देखना चाहते। हम शिक्षा वाला नाटक देखना चाहते हैं, जिसमें भगवान् श्रीकृष्ण ने यह करके दिखाया था कि अपना राज्य सुदामा को सुपुर्द कर दिया था और तप करने चले गए। यह हमें पसंद है और इसे हम हजार बार देखेंगे। क्यों महाराज जी, आपने तो गोपियों वाली रासलीला और वह कपड़े चुराने वाली लीला देखी है? नहीं बेटे, यह रासलीला हमको नापसंद है, क्योंकि यह समाज में अनाचार फैलाती है, समाज में भ्रष्टाचार फैलाती है, समाज में अनीति फैलाती है। हमारे आराध्य की हँसी उड़ाती है और हमारी संस्कृति के ऊपर कलंक लगाती है। यह हमें नापसंद है। इसे न हम देखना चाहते हैं और न सुनना चाहते हैं।

मित्रो! भगवान् श्रीकृष्ण के दांपत्य जीवन के बारे में जो वाहियात बातें सुनने को मिलती रही हैं, इसके संबंध में जब मैं गहराई में गया तो पता चला कि ये तमाम वाहियात बातें पीछे पंडितों ने मिलाई हैं। असल में उनका एक ही ब्याह हुआ था और रुक्मिणी को भी वे छीनकर नहीं लाए थे। रुक्मिणी के भाई रुक्म की रजामंदी से यह ब्याह हुआ था। जब महाभारत में यह कथा मैंने पढ़ी तो मुझे बहुत पसंद आई और तब से मैंने श्रीकृष्ण भगवान् की शादी-ब्याह के बारे में भी जिक्र करना शुरू कर दिया। पहले मैंने यह फैसला किया था कि श्रीकृष्ण के ब्याह के बारे में मैं कुछ लिखूँगा ही नहीं कि उनका ब्याह हुआ या वे कुँवारे रहे अथवा उन्होंने बहुत-सी औरतों से ब्याह किया था। यह सब मैं लिखना नहीं चाहता था। वस्तुतः श्रीकृष्ण भगवान् का ब्याह रुक्मिणी के साथ हुआ था, जिन्हें साथ लेकर के वे बारह वर्ष तक बद्रीनाथ तप करने चले गए।

बद्रीनाथ किसे कहते हैं? बद्री माने बेर, बेर माने बद्री। बेरों का जंगल था वहाँ, जहाँ आज बद्रीनाथ है। वे वहीं चले गए थे और अपनी धर्मपत्नी के साथ बारह वर्ष तक तप किया था। इसके पीछे सिद्धांत छिपा हुआ था— आदर्श छिपा हुआ था कि हमें एक ऐसी संतान चाहिए, जो कामुकता के संस्कारों से दूर हो। इसके पीछे उद्देश्य यह था कि श्रेष्ठ नागरिक होने के लिए संयम के साथ में, तप के साथ में, ज्ञान के साथ में एक सुसंस्कारी संतान देनी है। बारह वर्ष तक इसलिए तप करके आए थे। उनके केवल एक पुत्र उत्पन्न हुआ था। उसका नाम प्रद्युम्न था। नहीं साहब! उनके सोलह हजार एक सौ आठ रानियाँ थीं। नहीं बेटे, यह सब बातें गलत हैं और पीछे पंडितों के द्वारा जोड़ी गई हैं। बेकार की इन बातों से कोई फायदा नहीं है।

मित्रो! श्रीकृष्ण भगवान् का दांपत्य जीवन श्रेष्ठ वाला दांपत्य जीवन रहा है। उसमें इस तरह के बकवास की कोई गुंजाइश नहीं है कि उनकी हजारों रानियाँ थीं। उनकी जिंदगी की आखीर वाली दो घटनाएँ कितनी शानदार रही हैं। पहली घटना वह है जब उन्होंने संपत्ति इकट्ठी की और कहा कि इसका हिसाब होना चाहिए कि कितना धन किस राज्य में कहाँ-कहाँ स्थापित हो? एक बार जब सुदामा जी द्वारका राज्य में आए और कृष्ण भगवान् को बताया कि सुदामा नगरी का हमारा गुरुकुल टूटा-फूटा हुआ पड़ा है। हमारे यहाँ धन की कमी आ गई है। छात्रों के निवास के लिए स्थान की कमी पड़ गई है। पढ़ने के लिए पुस्तकें नहीं हैं। यह सुनकर उन्होंने सोचा कि पैसे का इससे अच्छा उपयोग और कुछ भी नहीं हो सकता है। आपके पास धन-संपदा हो तो आप सोचेंगे कि इसे मेरा बेटा खाएगा, पोता खाएगा, लेकिन अगर कोई और खाएगा तो मैं उसकी जान ले लूँगा। अपनी सारी कमाई किसको देगा? बेटे-पोते को देगा अगर और किसी को देगा तो तेरी जान निकल जाएगी।

मित्रो! क्या हुआ? कृष्ण भगवान् ने देखा कि राज्य इकट्ठा किया, पैसा इकट्ठा किया, लेकिन इसे खरच करना चाहिए था। आखिर इसे खरच कहाँ किया जाए? यह विचार कर ही रहे थे कि सुदामा जी आ पहुँचे। उन्होंने सोचा, बस हो गया मेरा काम। यही तो मैं तलाश कर रहा था कि कोई ऐसा ठीक स्थान मिले, जहाँ हमारे धन का अच्छे-से-अच्छा उपयोग हो सके। समझ में नहीं आ रहा था कि मैं किसको दूँ, किसको न दूँ? माँगने वाले तो हजारों आते हैं, लेकिन जहाँ आवश्यकता है, ऐसा कोई स्थान या व्यक्ति नहीं मिला। सुदामा जी, आप ठीक समय पर आ गए। चलिए, जो कुछ भी मेरे पास है, वह सब मैं आपको देता हूँ— सब आपके सुपुर्द करता हूँ। उनका जो सारे-का-सारा धन था, उसे सुदामापुरी भेज दिया और वहाँ का विद्यालय विश्वविद्यालय में बदल दिया गया।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

मित्रो ! यह उनके जीवन की निस्पृहता थी; उनका कर्मयोग था। कर्मयोग में आदमी की आसक्तियाँ और मोह कटते जाते हैं और उसे यह दिखाई देने लगता है कि हमें क्या चाहिए ? हमारे में कमाने का माद्दा है, लेकिन कमाने के माद्दे की सार्थकता तब है, जब इसे किसी अच्छे काम में लगा सकें। लेकिन आप तो कमाते जाते हैं और बेटों को, पोतों को चालाक बनाने के लिए, चोर बनाने के लिए, हैवान बनाने के लिए, व्यसनी बनाने के लिए और अनाचारी बनाने के लिए पाप की कमाई उनके ऊपर जमा करते जा रहे हैं। आप भी क्या यही करते हैं ? नहीं, महाराज जी ! हम ऐसा नहीं करते हैं। यदि आप भी ऐसा ही करते हैं तो अपना विचार बदल दें। मित्रो ! प्राचीनकाल में ऐसा ही होता रहा है। भगवान् श्रीकृष्ण ने भी अपना सारा धन सुदामा को सुपुर्द कर दिया और वे निस्पृह हो गए। ये सारी बातें उन्होंने अपने जीवन का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए सार्थक कर दिखाईं।

उनके जीवन की अंतिम कथा यह है कि उन्हें याद आया कि पहले जन्म में हमने बाली को छिपकर मारा था। छिपकर मारना हमारी गलती थी। उसे छिपकर नहीं मारना चाहिए था। यह कोई कायदा नहीं है कि आप छिप करके किसी को मारें। छिप करके मारने वाले को हत्यारा कहते हैं, कसाई कहते हैं और जल्लाद कहते हैं। लड़ाई का कायदा यह है कि आप सामने वाले को भी हथियार दीजिए और खुद भी हथियार लीजिए, फिर चैलेंज कीजिए कि आइए, आपको भी अपनी रक्षा करने का अधिकार है। इस लड़ाई में जान हमारी भी जा सकती है और आपकी भी जा सकती है। आप हमारे ऊपर हमला कीजिए और हम आपके ऊपर हमला करेंगे। दोनों बहादुर ये बातें एक-दूसरे से कहते हैं। लेकिन जो आदमी बैठा हुआ है, सोया हुआ है और आपने ताड़ के पीछे से छिप करके उसे मार दिया। सोए हुए को मार दिया, यह क्या घोटाला किया। रामचंद्र जी थे तो क्या हुआ, उन्होंने ऐसा करके गलती की थी।

मित्रो ! श्री भगवान् ने दिखाया कि गलती करने वाला कोई भी क्यों न हो, चाहे भगवान् ही क्यों न हो, गलती की सजा से माफी नहीं माँग सकता। वही बाली इस जन्म में बहेलिया हो गया और आकर के जब श्रीकृष्ण भगवान् पेड़ के नीचे बैठे हुए थे, तब उनको तीर मारा। तीर उनके पाँव में लगा, जिससे सुराख बन गया और सेप्टिक हो गया, टिटेनस हो गया। डाक्टरों ने इंजैक्शन लगाए, बहुतेरा चिकित्सा उपचार किया, लेकिन कोई फरक नहीं पड़ा। कृष्ण भगवान् वहीं ढेर हो गए। उनकी लाश वहीं पड़ी रही। बलराम ने भी देखा कि मैरा भाई मारा गया। अर्जुन भी वहाँ आ गए और जाकर उनका अंतिम संस्कार किया। इस सारी कथा का महाभारत में विशद् वर्णन है।

मित्रो ! इसी के साथ सारी कथा पूरी हो जाती है। रही बात अलौकिकता और चमत्कार की तो महान् व्यक्तियों के साथ इसका कोई लेना-देना नहीं है। चमत्कार तो आप जैसे लोगों के लिए है, जो इसे ही सब कुछ मानकर किसी की महानता का आकलन करते हैं और कहते हैं कि यदि चमत्कारी होगा तो महात्मा होगा; चमत्कारी होगा तो भगवान् होगा; चमत्कारी होगा तो गुरु होगा और अगर चमत्कारी नहीं हुआ तो कुछ नहीं, मात्र सामान्य व्यक्ति है। नहीं साहब, गुरु गोविंदसिंह ने तो एक से एक बड़े चमत्कार दिखाए थे, आप भी दिखाइए। नहीं भाईसाहब, गुरुगोविंद सिंह से जब एक व्यक्ति जिद करने लगा और कहने लगा था कि मेरा खुदा बड़ा चमत्कारी है। वह एक बीज से हजारों फल निकालता है। बादलों को पिघलाकर पानी की बूँदें बना देता है। आप भी बालों में से बालू निकाल दीजिए, कानों में से मेढक निकाल दीजिए, तो हम आपको चमत्कारी मानेंगे। उन्होंने कहा— तू बाजीगरी को चमत्कार मानता है। वास्तविक चमत्कार तो यह है कि आदमी के हृदय में भगवान् पैदा किया जा सकता है या नहीं ? जो आदमी पापी और पतित की जिंदगी जी रहा है, भीरु और परावलंबी जिंदगी जी रहा है, यदि वह अब स्वावलंबी और शानदार जिंदगी जीता है श्रेष्ठ जिंदगी जीता है, लोगों को तारने वाली, विकास वाली जिंदगी जीता है तो यही सबसे बड़ा चमत्कार है। इससे बड़ा और कोई चमत्कार नहीं हो सकता।

श्रीकृष्ण भगवान् चमत्कारी थे, लेकिन लौकिक दृष्टि से वे घोर असफल। गोपियों से प्यार करने थे, राधा से प्यार करते थे, लेकिन उन्हें छोड़कर वे कहाँ चले गए ? गोपियाँ चिल्लाती रह गईं। ब्याह किया, राजपाट बसाया, अर्जुन को राजा बनाया। आखीर में भागकर स्वयं द्वारका चले गए। अपना कुटुंब बसाया जो अंत में आपस में लड़-मरकर खत्म हो गए। ये कैसे भगवान् थे जिनके खानदान वाले सब खत्म हो गए। सारा खानदान चौपट हो गया। अर्जुन गोपियों को लेकर जा रहे थे। उनको रास्ते में भील मिल गए और गोपियों को ले गए। राधिका जी जाने कहाँ चली गईं। सब कुछ बिखर गया। आखीर में जो कुछ बचा-खुचा था, उसे भी लोग समेट ले गए और श्रीकृष्ण भगवान् खाली हाथ रह गए। आखिरी वक्त में यह भी नहीं हो सका कि कोई मुँह में गंगाजल ही डाल दे या गौदान करा दे। गौदान कराने वाले तो नहीं हुए, उलटे उनकी लाश जंगल में पड़ी रही और वह भी अर्जुन को जलानी पड़ी।

मित्रो ! इस तरह संसार की दृष्टि से भगवान् श्रीकृष्ण घोर असफल सिद्ध हुए, लेकिन आदर्शों की दृष्टि से- सिद्धांतों की दृष्टि से घोर सफल सिद्ध हुए। वे भगवान् जो आज के दिन पैदा हुए, जिन्होंने न केवल अपने क्रियाकलापों से कितना शिक्षण दिया वरन् असंख्य नर-नारियों को संसारसागर से पार लगाया। उनका शिक्षण इतना शानदार है कि अगर हम आज की जन्माष्टमी के दिन इन चरित्रों को, इन प्रेरणाओं को, इन दिशाओं को अपने जीवन में धारण करने में समर्थ हो जाएँ तो मजा आ जाए और आज का जन्माष्टमी का पर्व सार्थक हो जाए। हमारा समझाना भी सार्थक हो जाए, अगर ये प्रेरणाएँ जो भगवान् ने अपनी स्थूल जीवन की लीलाओं द्वारा दी थीं, इनको हम धारण कर पाएँ तब—गीता में हमको जो बताया गया है, उसे हम धारण कर सकें तब। अगर हममें से प्रत्येक के भीतर जीवंत भगवान् का वह सिद्धांत आदर्शवादिता के रूप में उतर सके, हर क्षण उसकी आवाज और वाणी को हम सुन सकें तो हमारा जीवन धन्य हो जाए और धन्य हो जाए आज का दिन और आज का हमारा लेक्चर। बस, आज की बात यहीं समाप्त। ।ॐ शांतिः। ✻

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.